Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु॥

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः

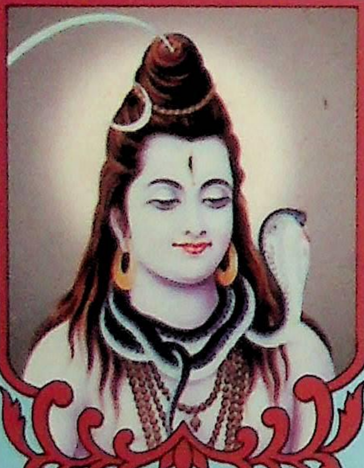

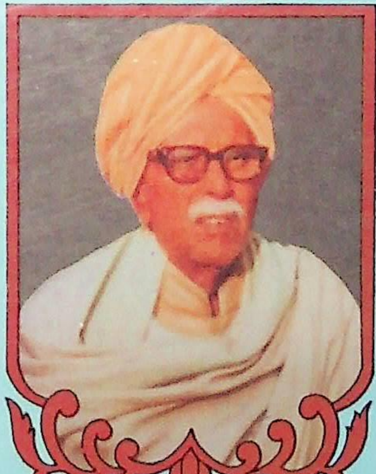

41

शोधनिबन्ध विशेषांक

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०७८, शक संवत् १९४३
सन् २०२१-२०२२, जय हिन्द संवत् ७४-७५

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व॰पं॰श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा मंगल

मंत्री मंगल

पञ्चांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व॰पं॰श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर स्व॰डॉ॰शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली ९४वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९८४

प्राप्ति स्थानः रुचिका पब्लिकेशन्स

टाईटल पर रुचिका पब्लिकेशन्स का होलोग्राम लगा हुआ देखकर ही पंचांग खरीदें।

मूल्य 120/-

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्वाधिकार– 'M/s श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली' द्वारा सुरक्षित है।

इस पञ्चाङ्ग के पाठकों के लिए आवश्यक निर्देशन

(i) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण चण्डीगढ़ (U.T.) के रेखांश पू. 76° 52′, अक्षांश उ. 30° 44′ के आधार पर किया गया है। अतः विशेष निर्देश न किया गया हो तो सूर्योदय, सूर्यास्त से हमारा अभिप्राय यहां सर्वत्र इसी स्थल के सूर्योदय, सूर्यास्त से रहता है।

(ii) यहां सूर्योदय, सूर्यास्तकाल किरणवक्रीभवन संस्काररहित (Free from Refraction) है, जो सूर्यबिम्बकेन्द्र का क्रमशः पूर्वापरक्षितिज से वास्तविक सम्पर्कक्षण है। सूर्य के इस उदयास्तकाल को **ज्योतिषशास्त्रीय उदयास्तकाल** कहा जाता है। लग्नादि–साधनार्थ इष्टकालादि–ज्ञान के लिए इसी को प्रयोग में लाया जाता है। इन्हें दृश्य (लोकव्यवहारोपयोगी) बनाने के लिए इनमें (उदय एवं अस्तकाल मे) लगभग 3½ मि. क्रमशः घटाने या जोड़ने होंगे।

(iii) भारतीय ज्योतिषानुसार यहां वार की प्रवृत्ति स्थानीय सूर्योदयकाल से मानी गई है, अतः यह जान लेना चाहिए कि– यहां रवि, चन्द्र आदि वार स्थानीय सूर्योदय से प्रारम्भ होकर परवर्त्ती सूर्योदय पर समाप्त होने वाले वार हैं। भारतीय ज्योतिषशास्त्र एवं धर्मशास्त्र में इसी वार का प्रयोग होता है। **ध्यान रहे**– सामान्य लोकव्यवहार में सर्वत्र प्रयोग मे आने वाला वार, जो पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी है, तो अंग्रेजी (Gregorian) तारीख के साथ रात्रि के 24घं 00मि (क्षेत्रीय स्टैं.टा.) पर ही बदल जाता है।

(iv) पंचांगगत सभी गणना ऋषियों, आचार्यों द्वारा अनुमोदित दृक्तुल्यपद्धति से की गई है।

(v) सर्वत्र निरयणगणना है। जहां कहीं सायनगणना का प्रयोग है, वहां इसका निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय स्पष्ट (धूननसंस्कृत) अयनांशों को प्रामाणिक माना गया है।

(vi) यहां प्रयुक्त भा.स्टैं.टा. (I.S.T.) 82° 30′ पूर्व रेखांशीय स्थल का स्थानीय मध्यमकाल (L.M.T.) है।

(vii) यहां दी गई दैनिक लग्नसारणियां निरयण लग्नों का समाप्तिकाल बतलाती हैं।

(viii) यहां प्राचीन परम्परानुयायी दैवज्ञों के लिए चैत्र शुक्लादि 24 पक्षों वाला तिथ्यादि पंचांग घटी–पलों में तथा सामान्य जनों के व्यवहारार्थ नवीन प्रणाली वाला **'जनवरी, फरवरी'** आदि मासानुसारी तिथ्यादि पंचांग घंटा–मिनटों (भा.स्टैं.टा.) में दिया गया है। घटी–पलात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति, ग्रहराशि–नक्षत्र प्रवेश आदि सभी काल घटी–पलों में दिए गए हैं, जो चण्डीगढ़ के सूर्योदय से व्यतीत घटी–पलात्मक काल बतलाते हैं। **किञ्च**– घण्टा–मिनटात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति आदि सभी काल भा.स्टैं.टा. में हैं। यहां यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि– घण्टा–मिनटात्मक, जो काल रात्रि के 24घं–00मि के बाद पड़ता है, उसे पंचांग में 24 घं. जोड़कर उसी भारतीय ज्योतिषानुसारी वार में लिखा गया है, जो परवर्त्ती सूर्योदय तक रहता है। इसलिए ऐसे स्थलों पर दिए गए समय के घण्टा–मिनटों में से 24 घं. घटाकर शेष घं. मि. को सामान्य व्यवहार में प्रचलित (पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी) परवर्त्ती वार का काल समझना चाहिए। **जैसे**– मान लीजिए– पंचांगानुसार एकादशी तिथि 10 मई शुक्रवार को 26 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त हो रही है। इसका अभिप्राय है– यह तिथि प्रचलित व्यवहारानुसारी 11 मई, शनिवार को रात्रि के 2 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त होगी।

(ix) घटी–पलात्मक पंचांगभाग वाले (24 पक्षों वाले) पृष्ठों पर नीचे की ओर बाईं और दाईं ओर लगभग साप्ताहिक (अष्टमी, अमा, पूर्णिमा के आसन्न दिनों के) प्रातः 5 घं. 30 मि. भा.स्टैं.टा. कालिक सूर्यादि स्पष्टग्रह दिए गए हैं। इनके नीचे इनकी कलादि दैनिक गति, इसके नीचे मा. (= मार्गी), व.(= वक्री), इसके नीचे उ. (= उदित), अ.(= अस्त) तथा सबसे नीचे इन ग्रहों के तात्कालिक नक्षत्रचरण निर्दिष्ट हैं।

(x) घटी–पलात्मक पंचांगभाग में करण केवल सूर्योदयव्यापी ही दिए गए हैं। यहां क्षीण तिथि–नक्षत्र–योगों के समाप्तिकाल ही दिए हैं, प्राचीन– पंचांग प्रणाली की तरह इनके पूर्ण भोगकाल नहीं– **यह ध्यान रहे।**

(xi) जहां जिस तिथि–नक्षत्र व योग के आगे घटी–पलात्मक में 60 घ. 00 प. और घण्टा–मिनटात्मक में ---(डैश) लिखा गया है, उसकी वहां वृद्धि समझनी चाहिए और उसका घटी–पलात्मक तथा घण्टा–मिनटात्मक समाप्तिकाल परवर्त्ती वार में देखिए।

(xii) यहां दिए गए ग्रहों के भोगांश तथा शर भूकैन्द्रिक (Geo-centric) हैं।

इस पञ्चांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द

अ.	–अस्त।
अं	–अंश।
उ.	–उदित, उत्तर।
क.	–कला।
कृ.	–कृष्णपक्ष, कृत्तिका(नक्षत्र)।
क्रां.सा.	–क्रान्तिसाम्य (महापात)।
गोधू.	–गोधूलि (लग्न)।
ति.	–तिथि।
द.	–दक्षिण।
दा.	–दानपूजन।
दि.	–दिन।
दि.ल.	–दिन का लग्न।
प्रा.	–प्रारम्भ।
भ.	–भद्रा।
मा.	–मार्गी।
मि.	–मिनट।
रा.	–राशि।
ल.	–लग्न।
व.	–वक्री।
वा.	–वार।
वि.	–विकला।
वै.	–वैष्णवों के लिए।
स.	–व्रत सबके लिए।
शु.	– शुक्लपक्ष, शुक्रवार, -- शुक्र (ग्रह)।
सं.	–संक्रान्ति, संवत्।
सां.का.	–साम्पातिक काल।
स्मा.	–स्मार्तों के लिए।

इस पंचांग की तिथ्यादि, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि–नक्षत्र–नक्षत्रचरण प्रवेश, उदयास्त, लोप–दर्शन तथा ग्रहण आदि की गणित **"प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A. अभिजित् प्रकाशन, 59/6, P.O पंचकूला(हरियाणा), Pin-134 109** के निर्देशन में सम्पादित Computer Program द्वारा की गई है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। 卐 त्रिकालदर्शि-प्रसरन्मयूखं 'मार्त्तण्ड-पञ्चांग' मिदं चकास्तु॥

श्री शंकरः शं करोतु। | भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत | पंचांग-प्रवर्तकः

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

शोधनिबन्ध विशेषांक

विक्रम संवत् २०७८, शक संवत् १९४३
सन् २०२१-२०२२, जय हिन्द संवत् ७४-७५

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व.पं.श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा मंगल | मंत्री मंगल

पञ्चांगप्रवर्तक
अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व.पं.श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य,

सम्पादक मण्डल
श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त,
दृक्सिद्धान्तभास्कर स्व.डॉ.शक्तिधर शर्मा M.Sc.,Ph.D.(Nuclear Physics)(U.S.A.),F.R.A.S. (LONDON),M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त,
ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

सर्वाधिकार- मै. श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली द्वारा सुरक्षित

गौरवशाली ९४ वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९८४

प्रकाशकः अग्रवाल बुक डिपो (रजि.)
460, खारी बावली, दिल्ली-6 फोन: 011-23943254, 23936116

मूल्य 120/-

विशेष नोट : टाईटल पर रुचिका पब्लिकेशन्स का होलोग्राम देखकर ही पंचांग खरीदें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संक्षिप्त विषयसूची (सं. 2078 वि.)

विषय	पृष्ठ
पंचांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द, आवश्यक निर्देशन	टा. पृ. 2
इनर टाइटल,	1
विषयसूची,	2
प्रमुख-प्रमुख एवं वर्गीकृत व्रतपर्व, सिक्खपर्व, अवकाश, मेले,	3-10
श्रीगणेश चतुर्थी/श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय,	11-12
संदिग्ध व्रतपर्व-व्यवस्था (सं. 2078 वि.)	13-17
गण्डमूल, पंचक,	18
कुम्भ महापर्व- हरिद्वार	19-22
ग्रहण-विवरण	23-25
संवत् 2078 वि. की कुल जन्म-वर्ष-प्रश्न-कुण्डलियां	26-36
श्रद्धाञ्जलि-श्री प्रियव्रत शर्मा	37-38
शनि-साढेसाती,	39-42
आकाशी कौंसिल (सं. 2078 वि.)	43-57
जलवायु एवं वर्षाविचार	58-62
व्यापारविमर्श (सं. 2078 वि.)	63-77
यंत्र, मंत्र, तंत्र साधनाकाल एवं चमत्कार,	78-85
नव संवत्सरारंभ-विधि	86-87
प्रसूति लग्नविचार, – नक्षत्र-राशिज्ञान चक्र आदि, — नवांशराशि बोधक सारणी	88-100
12 राशियों का मासिक फल (सं. 2078 वि.)	101-112
वर्षराजादि फल (सं.2078 वि.)	113-122
तिथ्यादि 24 पक्ष (सं. 2078 वि.)	123-146

विषय	पृष्ठ
घण्टा-मिनटात्मक तिथ्यादि (भा.स्टैं.टा.),	147-161
चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणप्रवेश (सं 2078 वि.)	162-166
दैनिक ग्रहस्पष्ट, स्पष्टराहु,	167-182
अक्षांश भेद से चन्द्रदर्शन की तारीखें	183
चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त (सं. 2078 वि.)	184-185
यूरेनस आदि के भोगांश, भौमादि ग्रहों के क्रान्तिशर,	186-190
ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्र-चरणचार, वक्र-मार्ग/उदय-अस्त,	191-196
अक्षांशदि सारणी,	197-206
दैनिक लग्नसारिणी (चण्डीगढ़ के लिए),	207-212
प्रमुख-प्रमुख नगरोंमें लग्नों का समाप्तिकाल,	213
प्राचीन पद्धति से लग्न एवं दशमसाधन आदि,	214-217
सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नई सरल विधि, साम्पातिक काल कोष्ठक आदि,	218-223
विंशोत्तरी दशान्तर्दशा सारणी,	224
सूर्यसिद्धान्तीय एवं सूक्ष्म-शुद्ध वर्षप्रवेश सारणी, ग्रहशील चक्र,	225-227
आवश्यक मुहूर्त्त,	228-230
मेलापक-सारणी देखने की रीति और अष्टकूट-परिहार, मेलापक-सारणी	231-238
लग्न-गण्डान्त, विवाहमुहूर्त्त में दस दोष, दिक्शूलादि विचार, यात्रा मुहूर्त्तादि,	239-252
शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. 2078 वि.)	253-259
सं. 2079 में सम्भावित शुद्ध -----	

विषय	पृष्ठ
----------- विवाहमुहूर्त्त	260
त्रिबलशुद्धि कोष्ठक (सं. 2078 वि.)	261-263
अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. 2078 वि.)	264-265
मुण्डन, उपनयन, देवप्रतिष्ठा आदि मुहूर्त्त,	266-269
श्री गणेश, शिव, गौरी, दुर्गा आदि द्वादश देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त ———	270
सर्वार्थसिद्धि आदि योग	271-273

इसवर्ष की नई विशेष सामग्री

विषय	पृष्ठ
कुम्भ महापर्व- हरिद्वार	19-22
नव संवत्सरारंभ-विधि	86-87
श्री गणेश, शिव, गौरी, दुर्गा आदि द्वादश देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त ———	270

शोधनिबन्ध विशेषांक *

प्रणय विवाह का मुहूर्त्त	277-278
शकुन शास्त्र विचार	279-280
चन्द्रमा का उपच्छाया ग्रहण	281-282
तिथि से अंग्रेजी तारीख का ज्ञान	283-288
भारत में लग्नों का प्रारम्भकाल	289-301

'अभिजित् प्रकाशन',
Kothi No. 59, Sector 6,
Panchkula (HARYANA)
की अब तक प्रकाशित पुस्तकों के बारे निर्देश पृष्ठ 275 पर देखें।

अनन्त श्रीविभूषित श्रीकांचीकामकोटि-पीठाधिपति, जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद

(मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस-परिव्राजकाचार्यवर्य्य - श्रीमच्छंकर-भगवत्पाद-प्रतिष्ठित - श्रींकांचीकामकोटिपीठाधिप-जगद्गुरु-श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिव आप्टे-महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मभिः प्रवर्तितम् अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म-श्रीशक्तिधरशर्म-श्रीमदिन्दुशेखर-शास्त्रिभिः तन्त्रद्वारा शुद्ध-स्फुट-गणितरीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पंचांगं धर्मशास्त्रसम्मतैकमात्र-दृग्गणितपद्धत्यनुसारि व्रत-पर्वादि-धार्मिक-कृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्-इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डॉ. शक्तिधरशर्मा ज्योतिष-गणितादि-विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं "दृक्सिद्धान्तभास्करः' इति विरुदेन पूर्वमेव सभाजितः। अधुना श्रीमार्त्तण्ड-पंचांगमेतत् स्वर्णजयन्ती-महोत्सवमनुभवत्, अशेषास्तिक-लोकोपकारकं सत् श्रीचन्द्रमौलीश-कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

कांचीक्षेत्रम् नारायणस्मृतिः
'अनल' चैत्रामावस्या
(सन् १९७६ ई.)

आगामी वर्ष (सं. 2079 वि.) में विशेष अगले वर्ष (सं. 2079 वि.) के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग में भी अनेक ज्ञानवर्धक विषय एवं महत्त्वपूर्ण विषयसामग्री देने का हमारा पूरा प्रयास रहेगा। — संपादक

* इस विशेषांक की विषयसूची के लिए पृष्ठ 275 भी देखें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2021 ई. से 1 अप्रैल, सन् 2022 ई. तक)

(प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित पुस्तक "व्रत-पर्व विवेक" पर आधारित)

जनवरी (सन् 2021 ई.)		
इंग्लिश नववर्ष 2021 ई. प्रा.	1 जन.	शु.
लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर)	13 जन.	बु.
मकर संक्रान्ति	14 जन.	गु.
पौषी पूर्णिमा	28 जन.	गु.
माघस्नान प्रारम्भ	28 जन.	गु.
श्री गणेश (संकष्ट) चतुर्थी	31 जन.	र.
फरवरी (सन् 2021 ई.)		
मौनी अमावस	11 फर.	गु.
माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	12 फर.	शु.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	14 फर.	र.
वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी	15 फर.	चं.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	16 फर.	मं.
लक्ष्मी एवं सरस्वती पूजन	16 फर.	मं.
रथसप्तमी/आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	18 फर.	गु.
भीष्माष्टमी	20 फर.	श.
माघ गुप्त नवरात्र समाप्त	21 फर.	र.
भीष्म द्वादशी	24 फर.	बु.
माघी पूर्णिमा	27 फर.	श.
माघस्नान समाप्त	27 फर.	श.
मार्च (सन् 2021 ई.)		
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	11 मार्च	गु.
महाविषुव दिन	20 मार्च	श.
होलाष्टक प्रारम्भ	21 मार्च	र.
गोविन्द द्वादशी	25 मार्च	गु.
होलिकादहन	28 मार्च	र.
होलाष्टक समाप्त	28 मार्च	र.
वसन्तोत्सव	29 मार्च	चं.
होलामेला श्री आनन्दपुर सा. (पं.)	29 मार्च	चं.
अप्रैल (सन् 2021 ई.)		
चान्द्र संवत् 2077 वि. पूर्ण	12 अप्रै.	चं.
चान्द्र संवत् 2078 वि.प्रा.	13 अप्रै.	मं.
कुम्भ महापर्व हरिद्वार	13 अप्रै.	मं.
वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रै.	मं.
वासन्त चैत्र नवरात्र प्रारम्भ	13 अप्रै.	मं.
वर्षफलश्रवण	13 अप्रै.	मं.
तैलाभ्यंग/ध्वजारोहण	13 अप्रै.	मं.
श्री मत्स्य जयन्ती	15 अप्रै.	गु.
गौरी तृतीया (गणगौर)	15 अप्रै.	गु.
आन्दोलन तृतीया	15 अप्रै.	गु.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	17 अप्रै.	श.
हयव्रत	17 अप्रै.	श.
नागपंचमी	17 अप्रै.	श.
स्कन्दषष्ठी	18 अप्रै.	र.
श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी	20 अप्रै.	मं.
श्रीरामनवमी	21 अप्रै.	बु.
वासन्त नवरात्र समाप्त	21 अप्रै.	बु.
नवरात्र-व्रतपारणा	22 अप्रै.	गु.
दोलोत्सव	23 अप्रै.	शु.
विष्णुदमनोत्सव	24 अप्रै.	श.
अनंग त्रयोदशी	25 अप्रै.	र.
श्रीमहावीर जयन्ती	25 अप्रै.	र.
शिवदमनोत्सव	26 अप्रै.	चं.
वैशाखस्नान प्रारम्भ	27 अप्रै.	मं.
मई (सन् 2021 ई.)		
श्रीपरशुराम जयन्ती	14 मई	शु.
अक्षय तृतीया	14 मई	शु.
श्रीगंगा जन्म	18 मई	मं.
श्रीजानकी जयन्ती	20 मई	गु.
श्रीनृसिंह जयन्ती	25 मई	मं.
श्रीकूर्म जयन्ती	26 मई	बु.
वैशाखी पूर्णिमा	26 मई	बु.
श्रीबुद्ध जयन्ती, श्रीबुद्ध पूर्णिमा	26 मई	बु.
वैशाखस्नान समाप्त	26 मई	बु.
जून (सन् 2021 ई.)		
भद्रकाली एकादशी (पं.)	6 जून	र.
वटसावित्री व्रत (अमापक्ष)	10 जून	गु.
भावुका अमावस	10 जून	गु.
रम्भा तृतीया	13 जून	र.
अरण्यषष्ठी	16 जून	बु.
विन्ध्यवासिनी पूजा	16 जून	बु.
श्रीगंगा दशहरा	20 जून	र.
निर्जला एकादशी व्रत	21 जून	चं.
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष)	24 जून	गु.
जुलाई (सन् 2021 ई.)		
आषाढ़ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	11 जुला.	र.
रथयात्रा (पुरी)	11 जुला.	र.
कुमार षष्ठी	15 जुला.	गु.
विवस्वत् सप्तमी	16 जुला.	शु.
आषाढ़ गुप्त नवरात्र समाप्त	18 जुला.	र.
श्रीविष्णुशयनोत्सव	20 जुला.	मं.
कोकिला व्रत	23 जुला.	शु.
शिवशयनोत्सव	23 जुला.	शु.
गुरु पूर्णिमा (व्यास-पूजा)	24 जुला.	श.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रा.	24 जुला.	श.
अगस्त (सन् 2021 ई.)		
श्रावण-शिवरात्रि	6 अग.	शु.
हरियाली अमावस	8 अग.	र.
मधुस्रवा तृतीया/संधारा तीज	11 अग.	बु.
नागपंचमी	13 अग.	शु.
ऋक्-उपाकर्म	13 अग.	शु.
श्रीदुर्गाष्टमी	15 अग.	र.
रक्षाबन्धन (राखी)	22 अग.	र.
श्रावणी पूर्णिमा	22 अग.	र.
शुक्ल-कृष्ण यजु-उपाकर्म	22 अग.	र.
श्री अमरनाथ यात्रा (ज.क.)	22 अग.	र.
कज्जली तृतीया	25 अग.	बु.
श्रीगणेश(संकष्ट) चतुर्थी	25 अग.	बु.
बहुला चतुर्थी	25 अग.	बु.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)	30 अग.	चं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)	30 अग.	चं.
दूर्वाष्टमी	30 अग.	चं.
गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव)	31 अग.	मं.
श्रीगुग्गा नवमी	31 अग.	मं.
सितम्बर (सन् 2021 ई.)		
कुशोत्पाटिनी अमावस	6 सितं.	चं.
पिठोरी अमावस	6 सितं.	चं.
साम उपाकर्म	9 सितं.	गु.
गौरी तृतीया	9 सितं.	गु.
हरितालिका तृतीया	9 सितं.	गु.
कलंक चतुर्थी	10 सितं.	शु.
सिद्धिविनायक व्रत	10 सितं.	शु.
ऋषि पंचमी	11 सितं.	श.
सूर्यषष्ठी व्रत	12 सितं.	र.
मुक्ताभरण सप्तमी व्रत	13 सितं.	चं.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	13 सितं.	चं.
श्रीराधाष्टमी	14 सितं.	मं.
श्रीचन्द नवमी	15 सितं.	बु.
श्रीवामन जयन्ती	17 सितं.	शु.
श्री अनन्त चतुर्दशी	19 सितं.	र.
प्रोष्ठपदी श्राद्ध	20 सितं.	चं.
पूर्णिमा श्राद्ध	20 सितं.	चं.
महालय प्रारम्भ	20 सितं.	चं.
पितृपक्ष प्रारम्भ	20 सितं.	चं.
चन्द्रषष्ठी व्रत	26 सितं.	र.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त	28 सितं.	मं.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2021 ई. से 1 अप्रैल, सन् 2022 ई. तक)

(प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित पुस्तक "व्रत-पर्व विवेक" पर आधारित)

अक्टूबर (सन् 2021 ई.)

गजच्छाया योग	6 अक्तू.	बु.
महालय/श्राद्ध समाप्त	6 अक्तू.	बु.
शारद (आश्विन) नवरात्र प्रारम्भ	7 अक्तू.	गु.
उपाङ्गललिता व्रत	10 अक्तू.	र.
सरस्वती आवाहन	11 अक्तू.	चं.
सरस्वती पूजन	12 अक्तू.	मं.
श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी	13 अक्तू.	बु.
सरस्वती के लिए बलिदान	13 अक्तू.	बु.
महानवमी (पूजा, उपवास के लिए)	14 अक्तू.	गु.
महानवमी (बलिदान के लिए)	14 अक्तू.	गु.
नवरात्र समाप्त	14 अक्तू.	गु.
सरस्वती विसर्जन	14 अक्तू.	गु.
विजयादशमी (दशहरा)	15 अक्तू.	शु.
नवरात्रपारणा	15 अक्तू.	शु.
भरतमिलाप	16 अक्तू.	श.
कोजागर व्रत	20 अक्तू.	बु.
शरत् पूर्णिमा	20 अक्तू.	बु.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	20 अक्तू.	बु.
कार्त्तिकस्नान प्रारम्भ	20 अक्तू.	बु.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	24 अक्तू.	र.
अहोई अष्टमी (पंजाब)	28 अक्तू.	गु.

नवम्बर (सन् 2021 ई.)

गोवत्स द्वादशी	1 नवं.	चं.
यम-प्रीत्यर्थ दीपदान	2 नवं.	मं.
धन त्रयोदशी	3 नवं.	बु.
श्रीहनुमान् जयन्ती (उ.भा.)	3 नवं.	बु.
नरक चतुर्दशी	3 नवं.	बु.
दीपावली, श्रीमहालक्ष्मीपूजा	4 नवं.	गु.
गोवर्धन पूजा, बलिपूजा	5 नवं.	शु.
अन्नकूट, गोक्रीड़ा	5 नवं.	शु.
यमद्वितीया, भाईदूज	6 नवं.	श.
श्रीविश्वकर्मा पूजा	6 नवं.	श.
सूर्यषष्ठी (बिहार)	10 नवं.	बु.
गोपाष्टमी	11 नवं.	गु.
अक्षय नवमी	12 नवं.	शु.
कूष्माण्ड नवमी	12 नवं.	शु.
भीष्म पंचक प्रारम्भ	14 नवं.	र.
हरिप्रबोधोत्सव	14 नवं.	र.
तुलसी विवाह	15 नवं.	चं.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त	15 नवं.	चं.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	17 नवं.	बु.
त्रिपुरोत्सव	18 नवं.	गु.
भीष्म पंचक समाप्त	18 नवं.	गु.
श्रीगुरुनानक जयन्ती	19 नवं.	शु.
कार्त्तिकस्नान समाप्त	19 नवं.	शु.
कार्त्तिक पूर्णिमा	19 नवं.	शु.
श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	27 नवं.	श.

दिसम्बर (सन् 2021 ई.)

स्कन्द, गुहषष्ठी	9 दिसं.	गु.
चम्पा षष्ठी	9 दिसं.	गु.
मित्र सप्तमी	10 दिसं.	शु.
श्रीगीता जयन्ती	14 दिसं.	मं.
श्रीदत्त जयन्ती	18 दिसं.	श.

जनवरी (सन् 2022 ई.)

इंग्लिश नववर्ष 2022 ई. प्रा.	1 जन.	श.
लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., जम्मू-कश्मीर)	13 जन.	गु.
मकर संक्रान्ति	14 जन.	शु.
पौषी पूर्णिमा	17 जन.	चं.
माघस्नान प्रारम्भ	17 जन.	चं.
श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी	21 जन.	शु.

फरवरी (सन् 2022 ई.)

मौनी अमावस	1 फर.	मं.
महोदय योग	1 फर.	मं.
माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	2 फर.	बु.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	3 फर.	गु.
वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी	4 फर.	शु.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	5 फर.	श.
लक्ष्मी/सरस्वती पूजन	5 फर.	श.
रथसप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	7 फर.	चं.
आरोग्य सप्तमी	7 फर.	चं.
भीष्माष्टमी	8 फर.	मं.
माघ गुप्त नवरात्र समाप्त	10 फर.	गु.
भीष्म द्वादशी	13 फर.	र.
माघी पूर्णिमा	16 फर.	बु.
माघस्नान समाप्त	16 फर.	बु.

मार्च (सन् 2022 ई.)

श्रीमहाशिवरात्रि व्रत (शिवयोग)	1 मार्च	मं.
होलाष्टक प्रारम्भ	10 मार्च	गु.
गोविन्द द्वादशी	15 मार्च	मं.
होलिकादहन	17 मार्च	गु.
होलाष्टक समाप्त	18 मार्च	शु.
वसन्तोत्सव	19 मार्च	श.
होलामेला श्री आनन्दपुर सा. (पं.)	19 मार्च	श.
महाविषुव दिन	20 मार्च	र.
वारुणी पर्व	30 मार्च	बु.
मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.)	30 मार्च	बु.

अप्रैल (सन् 2022 ई.)

चान्द्र संवत् 2078 वि.पूर्ण	1 अप्रै.	शु.

आगामी वर्ष (वि.सं. 2079) के लिए प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व

नाम मेला/पर्व	तारीख
(सन् 2022 ई.)	
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	2 अप्रैल
श्रीदुर्गाष्टमी	9 अप्रैल
श्रीरामनवमी	10 अप्रैल
मेष संक्रान्ति (वैशाखी)	14 अप्रैल
श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	14 अप्रैल
श्रीपरशुराम जयन्ती	3 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	16 मई
श्रीगंगा दशहरा	9 जून
गुरु पूर्णिमा	13 जुला.
रक्षाबन्धन	11 अग.
संकष्ट चतुर्थी	15 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	18 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	19 अग.
श्राद्ध प्रारम्भ	10 सितं.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	26 सितं.
श्रीदुर्गाष्टमी	3 अक्तू.
दशहरा (विजयादशमी)	5 अक्तू.
शरत् पूर्णिमा	9 अक्तू.
श्रीवाल्मीकि जयन्ती	9 अक्तू.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	13 अक्तू.
दीपावली	24 अक्तू.
भाईदूज	26 अक्तू.
श्रीगुरु नानक जयन्ती	8 नवं.
श्रीभैरवाष्टमी	16 नवं.
(सन् 2023 ई.)	
मकर संक्रान्ति	14 जन.
वसन्त पंचमी	26 जन.
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	5 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	18 फर.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2021 ई. से 1 अप्रैल, सन् 2022 ई. तक)

एकादशी व्रत

(सन् 2021 ई.)

पौष कृष्ण	9 जन.
पौष शुक्ल	24 जन.
माघ कृष्ण (स्मा.)	7 फर.
माघ शुक्ल	23 फर.
फाल्गुन कृष्ण	9 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	25 मार्च
चैत्र कृष्ण	7 अप्रैल.
चैत्र शुक्ल	23 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	7 मई
वैशाख शुक्ल (स्मा.)	22 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	6 जून
ज्येष्ठ शुक्ल	21 जुन
आषाढ़ कृष्ण	5 जुला.
आषाढ़ शुक्ल	20 जुला.
श्रावण कृष्ण	4 अग.
श्रावण शुक्ल	18 अग.
भाद्रपद कृष्ण	3 सितं.
भाद्रपद शुक्ल	17 सितं.
आश्विन कृष्ण	2 अक्तू.
आश्विन शुक्ल	16 अक्तू.
कार्त्तिक कृष्ण	1 नवं.
कार्त्तिक शुक्ल (स्मा.)	14 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	30 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	14 दिसं.
पौष कृष्ण	30 दिसं.
(सन् 2022 ई.)	
पौष शुक्ल	13 जन.
माघ कृष्ण	28 जन.
माघ शुक्ल	12 फर.
फाल्गुन कृष्ण (स्मा.)	26 फर.
फाल्गुन शुक्ल	14 मार्च
चैत्र कृष्ण	28 मार्च

(स्मा. - स्मार्तों का व्रत)

वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "स्मा." नहीं लिखा है, वह व्रततिथि स्मार्त और वैष्णव दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् 2021 ई.)

पौष शुक्ल	14 जन.
माघ कृष्ण	29 जन.
माघ शुक्ल	12 फर.
फाल्गुन कृष्ण	28 फर.
फाल्गुन शुक्ल	14 मार्च
चैत्र कृष्ण	29 मार्च
चैत्र शुक्ल	13 अप्रैल
वैशाख कृष्ण	27 अप्रैल
वैशाख शुक्ल	12 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	27 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	11 जून
आषाढ़ कृष्ण	25 जून
आषाढ़ शुक्ल	11 जुलाई
श्रावण कृष्ण	25 जुलाई
श्रावण शुक्ल	9 अगस्त
भाद्रपद कृष्ण	23 अगस्त
भाद्रपद शुक्ल	7 सितं.
आश्विन कृष्ण	21 सितं.
आश्विन शुक्ल	7 अक्तू.
कार्त्तिक कृष्ण	21 अक्तू.
कार्त्तिक शुक्ल	5 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	20 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	5 दिसं.
पौष कृष्ण	20 दिसं.
(सन् 2022 ई.)	
पौष शुक्ल	3 जन.
माघ कृष्ण	18 जन.
माघ शुक्ल	2 फर.
फाल्गुन कृष्ण	17 फर.
फाल्गुन शुक्ल	3 मार्च
चैत्र कृष्ण	19 मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिये गये पक्ष कृष्णादि हैं।

श्रीसत्यनारायण व्रत

(सन् 2021 ई.)

पौष	28 जन.
माघ	26 फर.
फाल्गुन	28 मार्च
चैत्र	26 अप्रैल
वैशाख	25 मई
ज्येष्ठ	24 जून
आषाढ़	23 जुलाई
श्रावण	21 अगस्त
भाद्रपद	20 सितं.
आश्विन	20 अक्तू.
कार्त्तिक	18 नवं.
मार्गशीर्ष	18 दिसं.
(सन् 2022 ई.)	
पौष	17 जन.
माघ	16 फर.
फाल्गुन	17 मार्च

दशावतार जयन्तियां (सन् 2021 ई.)

श्रीमत्स्य जयन्ती	15 अप्रैल
श्रीरामनवमी	21 अप्रैल
श्रीपरशुराम जयन्ती	14 मई
श्रीनृसिंह जयन्ती	25 मई
श्रीकूर्म जयन्ती	26 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	26 मई
श्रीकल्कि जयन्ती	13 अग.
● श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	30 अग.
श्रीवराह जयन्ती	9 सितं.
श्रीवामन जयन्ती	17 सितं.

● अर्धरात्रि (चन्द्रोदय) व्यापिनी अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद्भागवत एवं स्कन्द-विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं।

श्रीगणेशचतुर्थी व्रत

(सन् 2021 ई.)

पौष	2 जन.
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	31 जन.
फाल्गुन	2 मार्च
चैत्र	31 मार्च
वैशाख	30 अप्रैल
ज्येष्ठ	29 मई
आषाढ़	27 जून
श्रावण	27 जुला.
भाद्रपद (संकष्ट चतुर्थी)	25 अग.
आश्विन	24 सितं.
कार्त्तिक	24 अक्तू.
मार्गशीर्ष	23 नवं.
पौष	22 दिसं.
(सन् 2022 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	21 जन.
फाल्गुन	20 फर.
चैत्र	21 मार्च

श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

(सन् 2021 ई.)

पौष	16 जन.
माघ	15 फर.
फाल्गुन	17 मार्च
चैत्र	16 अप्रैल
वैशाख	15 मई
ज्येष्ठ	14 जून
आषाढ़	13 जुलाई
श्रावण	12 अगस्त
भाद्रपद	10 सितं.
आश्विन	9 अक्तू.
कार्त्तिक	8 नवं.
मार्गशीर्ष	7 दिसं.
(सन् 2022 ई.)	
पौष	6 जन.
माघ	4 फर.
फाल्गुन	6 मार्च

प्रदोष व्रत

(सन् 2021 ई.)

पौष कृष्ण	10 जन.
पौष शुक्ल (भौम)	26 जन.
माघ कृष्ण (भौम)	9 फर.
माघ शुक्ल	24 फर.
फाल्गुन कृष्ण	10 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	26 मार्च
चैत्र कृष्ण	9 अप्रैल
चैत्र शुक्ल (शनि)	24 अप्रैल
वैशाख कृष्ण (शनि)	8 मई
वैशाख शुक्ल (सोम)	24 मई
ज्येष्ठ कृष्ण (सोम)	7 जून
ज्येष्ठ शुक्ल (भौम)	22 जून
आषाढ़ कृष्ण	7 जुलाई
आषाढ़ शुक्ल	21 जुलाई
श्रावण कृष्ण	5 अग.
श्रावण शुक्ल	20 अग.
भाद्रपद कृष्ण (शनि)	4 सितं.
भाद्रपद शुक्ल (शनि)	18 सितं.
आश्विन कृष्ण (सोम)	4 अक्तू.
आश्विन शुक्ल (सोम)	18 अक्तू.
कार्त्तिक कृष्ण (भौम)	2 नवं.
कार्त्तिक शुक्ल (भौम)	16 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	2 दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	16 दिसं.
पौष कृष्ण	31 दिसं.
(सन् 2022 ई.)	
पौष शुक्ल (शनि)	15 जन.
माघ कृष्ण	30 जन.
माघ शुक्ल (सोम)	14 फर.
फाल्गुन कृष्ण (सोम)	28 फर.
फाल्गुन शुक्ल (भौम)	15 मार्च
चैत्र कृष्ण (भौम)	29 मार्च

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2021 ई. से 1 अप्रैल, सन् 2022 ई. तक)

मासिक शिवरात्रिव्रत (सन् 2021 ई.)

पौष	11 जन.
माघ	10 फर.
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	11 मार्च
चैत्र	10 अप्रैल
वैशाख	9 मई
ज्येष्ठ	8 जून
आषाढ़	8 जुलाई
श्रावण	6 अगस्त
भाद्रपद	5 सितं.
आश्विन	4 अक्तू.
कार्तिक	3 नवं.
मार्गशीर्ष	2 दिसं.
(सन् 2022 ई.)	
पौष	1 जन.
माघ	30 जन.
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	1 मार्च
चैत्र	30 मार्च

पूर्णिमा व्रत (सन् 2021 ई.)

(स्नान-दानार्थ, उदयव्यापिनी पूर्णिमा में)

पौष	28 जन.
माघ	27 फर.
फाल्गुन	28 मार्च
चैत्र	27 अप्रैल
वैशाख	26 मई
ज्येष्ठ	24 जून
आषाढ़	24 जुलाई
श्रावण	22 अग.
भाद्रपद	20 सितं.
आश्विन	20 अक्तू.
कार्तिक	19 नवं.
मार्गशीर्ष	19 दिसं.
(सन् 2022 ई.)	
पौष	17 जन.
माघ	16 फर.
फाल्गुन	18 मार्च

संक्रान्तियां (सन् 2021 ई.)

माघ	14 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	13 अप्रैल
ज्येष्ठ	14 मई
आषाढ़	15 जून
श्रावण	16 जुलाई
भाद्रपद	16 अग.
आश्विन	16 सितं.
कार्तिक	17 अक्तू.
मार्गशीर्ष	16 नवं.
पौष	15 दिसं.
(सन् 2022 ई.)	
माघ	14 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च

अमावस्याएं (स्नान-दानार्थ) (सन् 2021 ई.)

पौष	13 जन.
माघ	11 फर.
फाल्गुन (शनैश्चरी)	13 मार्च
चैत्र (सोमवती)	12 अप्रैल
वैशाख (भौमवती)	11 मई
ज्येष्ठ	10 जून
आषाढ़ (शनैश्चरी)	10 जुलाई
श्रावण	8 अग.
भाद्रपद (भौमवती)	7 सितं.
आश्विन	6 अक्तू.
कार्तिक	4 नवं.
मार्गशीर्ष (शनैश्चरी)	4 दिसं.
(सन् 2022 ई.)	
पौष	2 जन.
माघ (भौमवती)	1 फर.
फाल्गुन	2 मार्च
चैत्र	1 अप्रैल

मासिक दुर्गाष्टमी व्रत (सन् 2021 ई.)

पौष	21 जन.
माघ	20 फर.
फाल्गुन	22 मार्च
चैत्र	20 अप्रैल
वैशाख	20 मई
ज्येष्ठ	18 जून
आषाढ़	17 जुलाई
श्रावण	15 अग.
भाद्रपद	14 सितं.
आश्विन	13 अक्तू.
कार्तिक	11 नवं.
मार्गशीर्ष	11 दिसं.
(सन् 2022 ई.)	
पौष	10 जन.
माघ	8 फर.
फाल्गुन	10 मार्च

मासिक कालाष्टमी व्रत (सन् 2021 ई.)

पौष	6 जन.
माघ	4 फर.
फाल्गुन	6 मार्च
चैत्र	4 अप्रैल
वैशाख	3 मई
ज्येष्ठ	2 जून
आषाढ़	1 जुलाई
श्रावण	31 जुलाई
भाद्रपद	30 अग.
आश्विन	29 सितं.
कार्तिक	28 अक्तू.
मार्गशीर्ष (श्रीभैरवाष्टमी)	27 नवं.
पौष	27 दिसं.
(सन् 2022 ई.)	
माघ	25 जन.
फाल्गुन	23 फर.
चैत्र	25 मार्च

अरुणाय त्रयोदशी

श्रीसंगमेश्वर महादेव, अरुणाय (पिहोवा) के शिवत्रयोदशी पर्व (उदयव्यापिनी कृष्णा त्रयोदशी) (सन् 2021 ई.)

पौष	11 जन.
माघ	9 फर.
फाल्गुन	11 मार्च
चैत्र	9 अप्रैल
वैशाख	9 मई
ज्येष्ठ	8 जून
आषाढ़	7 जुलाई
श्रावण	6 अग.
भाद्रपद	5 सितं.
आश्विन	4 अक्तू.
कार्तिक	3 नवं.
मार्गशीर्ष	2 दिसं.
पौष	31 दिसं.
(सन् 2022 ई.)	
माघ	30 जन.
फाल्गुन	28 फर.
चैत्र	30 मार्च

आश्विन कृष्णपक्ष के श्राद्ध (सन् 2021 ई.)

प्रोष्ठपदी/पूर्णिमा ✥	20 सितं.
प्रतिपदा	21 सितं.
द्वितीया	22 सितं.
तृतीया	23 सितं.
चतुर्थी/भरणी श्राद्ध	24 सितं.
पंचमी	25 सितं.
षष्ठी	27 सितं.
सप्तमी	28 सितं.
अष्टमी	29 सितं.
❁ नवमी	30 सितं.
दशमी	1 अक्तू.
एकादशी	2 अक्तू.
✻ द्वादशी/संन्यासियों का श्राद्ध	3 अक्तू.
मघा श्राद्ध	3 अक्तू.
त्रयोदशी	4 अक्तू.
✳ चतुर्दशी	5 अक्तू.
सर्वपितृ, अमावस श्राद्ध (पूर्णिमा एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का महालय श्राद्ध)	6 अक्तू.
नाना/नानी का श्राद्ध	7 अक्तू.

क्रिश्चियन त्योहार (सन् 2021 ई.)

इंग्लिश नया साल प्रारम्भ	1 जन.
पाम सण्डे	28 मार्च
गुड फ्राई डे	2 अप्रैल
ईस्टर सण्डे	4 अप्रैल
क्रिस्मस डे	25 दिसं.
(सन् 2022 ई.)	
इंग्लिश नया साल प्रारम्भ	1 जन.

✥ "जिनकी मृत्युतिथि पूर्णिमा हो, उनका महालय श्राद्ध प्रोष्ठपदी पूर्णिमा को करना चाहिए"—यह शास्त्रीय मत है। लेकिन पंजाब, हरियाणा आदि प्रदेशों में पूर्णिमा मृत्युतिथि वालों का महालय सर्वपितृ अमा को करने की लोक-परम्परा है।
❁ सौभाग्यवती स्त्री का श्राद्ध सर्वदा नवमी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई अन्य हो।

✻ संन्यासी का श्राद्ध हमेशा द्वादशी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई अन्य हो।
✳ शस्त्र-विष आदि से मृतों (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध चतुर्दशी के दिन होता है, भले ही उनकी मृत्युतिथि कोई अन्य हो। चतुर्दशी में सामान्य मृत्यु से मरने वालों का महालय श्राद्ध अमावस्या में करना चाहिए।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2021 ई. से 1 अप्रैल, सन् 2022 ई. तक)

जैन व्रत-पर्व (सन् 2021 ई.)

आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा दिवस	4 जन.
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	8 जन.
श्रीमेरुत्रयोदशी	9 फर.
मर्यादा महोत्सव	19 फर.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	21 अप्रैल
श्रीमहावीर जयन्ती	25 अप्रैल
श्रीमहावीर केवलज्ञान दिवस	22 मई
श्रीमहावीर च्यवन दिवस	16 जुलाई
तेरापन्थ स्थापना दिवस	24 जुलाई
चातुर्मास्य व्रत-नियम आदि-प्रारम्भ	24 जुलाई
श्रीजयाचार्य निर्वाण दिवस	4 सितं.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	5 सितं.
संवत्सरी महापर्व	11 सितं.
श्रीकालू निर्वाण दिवस	12 सितं.
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	15 सितं.
आचार्य भिक्षु निर्वाण दिवस	18 सितं.
श्रीमहावीर निर्वाण दिवस	4 नवं.
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	6 नवं.
ज्ञानपंचमी	9 नवं.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि-समाप्त	19 नवं.
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	29 नवं.
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा दिवस	24 दिसं.
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	29 दिसं.
(सन् 2022 ई.)	
श्रीमेरुत्रयोदशी	30 जन.
मर्यादा महोत्सव	7 फर.

महापुरुषों के जन्मदिन (सन् 2021 ई.)

श्रीनेता जी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
स्वामी विवेकानन्द	4 फर.
श्रीरामानन्दाचार्य	4 फर.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	13 फर.
श्रीगुरु रविदास जी	27 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	11 मार्च
श्रीरामकृष्ण परमहंस	15 मार्च
श्रीचैतन्य महाप्रभु	28 मार्च
डॉ. अम्बेडकर	14 अप्रैल
श्रीवल्लभाचार्य	7 मई
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई
श्रीछत्रपति शिवाजी	13 मई
आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य	17 मई
श्रीरामानुजाचार्य (उ.भा.)	18 मई
श्रीमहाराणा प्रताप	13 जून
लो. मा. बालगंगाधर तिलक	23 जुलाई
गोस्वामी तुलसीदास जी	15 अगस्त
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं.
श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.
श्रीलालबहादुर शास्त्री	2 अक्तू.
महाराज अग्रसेन जी	7 अक्तू.
श्रीमाध्वाचार्य	15 अक्तू.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू.
श्रीजवाहर लाल नेहरु	14 नवं.
श्रीवीर वैरागी	17 नवं.
भगवान श्रीसत्यसाई बाबा	23 नवं.
(सन् 2022 ई.)	
श्रीनेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	25 जन.
स्वामी विवेकानन्द	25 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	2 फर.
श्रीगुरु रविदास जी	16 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	26 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	4 मार्च
श्रीचैतन्य महाप्रभु	18 मार्च

मुस्लिम त्योहार (सन् 2021 ई.)

जन्म श्री हज़रत अली	26 फर.
* शब-ए-मिराज	12 मार्च
शब-ए-बरात	30 मार्च
रमज़ान का पहला दिन	14 अप्रैल
शहादत-ए-हज़रत अली	4 मई
जमतुल-विदा	7 मई
* शब-ए-कद्र	10 मई
ईद-उल-फित्र	14 मई
इदुलज्जुहा (बकरीद)	21 जुलाई
मुहर्रम (ताज़िया)	19 अग.
चेहल्म	27 सितं.
आखिरी चहार शम्बा	6 अक्तू.
शहादत-ए-इमाम हसन	6 अक्तू.
ईद-ए-मिलाद	19 अक्तू.
ईद-ए-मौलाद	24 अक्तू.
फतिहा यज़दहुम	17 नवं.
(सन् 2022 ई.)	
जन्म श्री हज़रत अली	15 फर.
* शब-ए-मिराज	1 मार्च
* शब-ए-बरात	19 मार्च

* ये त्योहार पूर्ववर्त्ती रात्रि में मनाये जाते हैं।

सूचना—सभी मुस्लिम त्योहार चन्द्रदर्शन (नया चाँद दिखाई देने) पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थानभेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे-पीछे हो जाने पर इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अन्तर सम्भव है। इसकी सूचना T.V. आदि द्वारा प्रसारित कर दी जाती है।

क्या किससे पूछें?

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' गत विषयों से सम्बद्ध अपनी शंकाओं का समाधान ऐसे प्राप्त करें।)—प्रियव्रत शर्मा

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' में सिद्धान्त, गणित, फलित, मुहूर्त्त, व्रत-पर्व, तेजी-मन्दी आदि अनेक विषयों का समावेश रहता है। इन विषयों से सम्बद्ध शंकाएं हमारे जिज्ञासु पाठकों के मस्तिष्क में कई बार उत्पन्न होती हैं, जिनके समाधानार्थ वे ठीक से समझ नहीं पाते कि—किससे सम्पर्क साधा जाये। किस विषय की शंका के समाधानार्थ किससे सम्पर्क करना उचित है—यह हम यहां स्पष्ट किये देते हैं—

(i) तिथ्यादि पंचांग, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि-नक्षत्र-नक्षत्रचरण-प्रवेश, वक्रता-मार्गिता, उदयास्त, लोप-दर्शन, ग्रहण, ग्रहयुति आदि खगोलीय चमत्कार, अयनांश, अक्षांश, रेखांश, लग्न, सन्दिग्ध व्रतपर्व-निर्णय, विवाहादि मुहूर्त्त तथा अन्य सभी सिद्धान्त-गणित-फलित-सम्बन्धी जिज्ञासाओं के शान्त्यर्थ हमसे निम्नांकित पते पर सम्पर्क करें।

(ii) राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र, राजनैतिक दलों के चुनाव-चक्र में जय-पराजय, राजनेताओं का उत्थान-पतन, पाक्षिक-मासिक-वार्षिक फलादेश, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र-रहस्य, वृष्टि, वायुमण्डल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, भूकम्प आदि दैवी एवं प्राकृतिक आपदा तथा विश्वशान्ति-विप्लव आदि से सम्बद्ध पंचांगगत भविष्यवाणियों के विषय में तथा जन्मकुण्डली, टेवा, प्रश्नलग्न आदि के निर्माण एवं इनकी फीस वगैरह की जानकारी एवं वायदा-हाज़र बाजार के चांस, सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स, चना, गेहूं, ग्वार आदि अनाज; तिल, सरसों, बिनौला आदि तिलहन तथा रुई, कपास, ऊन आदि जिन्स की पंचांग में प्रकाशित वार्षिक-मासिक-पाक्षिक-दैनिक तेज़ी-मन्दी-सम्बन्धी पूछताछ के लिए हमसे सम्पर्क कीजिये—

पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,
पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली,
जिला मोहाली (पंजाब), PIN 140 103,
Phone : 0160-2641277, 09988407010

इसके अतिरिक्त पंचांग में प्रकाशित अन्य किसी लेख आदि के विषय में अपनी शंकाओं के निवारणार्थ उस लेख के लेखक से ही सम्पर्क करना चाहिए।

उत्तर के लिए हमें जवाबी पत्र या Postal Stamps आदि न भेजें। आपकी उचित शंकाओं का निवारण हम अपने व्यय से ही कर देंगे। लेकिन हम इसके लिए किसी तरह से बाधित नहीं हैं, यह ध्यान में रखें।

—सम्पादक मण्डल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सिक्ख पर्व (सं. 2078 वि.) (13 अप्रैल, 2021 ई. से 1 अप्रैल, 2022 ई. तक)

नाम श्रीगुरु साहिबान	पुरातन परम्परा [विक्रमी कैलेण्डर (तिथियों)] के अनुसार						नानकशाही कैलेण्डर अनुसार (ग्रेगोरियन तारीखों के अनुसार स्थिर)		
	प्रकाश दिवस		गुरयाई मिली		जोतीजोत समाए		प्रकाश दिवस	गुरयाई मिली	जोतीजोत समाए
	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख	तारीख	तारीख	तारीख
श्री गुरु नानकदेव जी	कार्तिक शु.15	19 नवं.	अवतार दिन से		आश्वि.कृ.10	1 अक्तू.	19 नवं.	अवतार दिन से	22 सितं.
श्री गुरु अंगददेव जी	वैशाख शु.1	12 मई	आश्वि.कृ.5	26 सितं.	चैत्र शु.4	16 अप्रैल	18 अप्रैल	18 सितं.	16 अप्रैल
श्री गुरु अमरदास जी	वैशाख शु. 14	25 मई	चैत्र शु. 1	13 अप्रैल	भाद्र.शु. 15	20 सितं.	23 मई	16 अप्रैल	16 सितं.
श्री गुरु रामदास जी	कार्तिक कृ. 2	22 अक्तू.	भाद्र.शु. 13	18 सितं.	भाद्र.शु. 3	9 सितं.	9 अक्टू.	16 सितं.	16 सितं.
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	वैशाख कृ. 7	3 मई	भाद्र.शु. 2	8 सितं.	ज्ये. शु.4	14 जून	2 मई	16 सितं.	16 जून
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	आषाढ़ कृ. 1	25 जून	ज्ये.कृ. 8	2 जून	चैत्र शु. 5	17 अप्रैल	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
श्री गुरु हरिराय जी	माघ शु. 13	14 फर.,'22	चैत्र कृ. 13	30 मार्च,'22	कार्ति.कृ. 9	30 अक्तू.	31 जन.	14 मार्च	20 अक्टू.
श्री गुरु हरकिशन जी	श्राव कृ. 9	2 अग.	कार्ति. कृ. 9	30 अक्तू.	चैत्र शु. 14	26 अप्रैल	23 जुलाई	20 अक्टू.	16 अप्रैल
श्री गुरु तेगबहादुर जी	वैशाख कृ. 5	1 मई	चैत्र शु. 14	26 अप्रैल	मार्ग. शु. 5	8 दिसं.	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवं.
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	पौष शु. 7	9 जन.,'22	मार्ग शु. 3	6 दिसं.	कार्ति. शु. 5	9 नवं.	5 जन.	24 नवं.	21 अक्टू.

ध्यान दें:— 'नानकशाही कैलेण्डर', जिसके अनुसार सभी सिक्खपर्वों का निर्णय अंग्रेजी तारीखों के आधार पर किया गया है, सन् 2003 ई. में लागू किया गया। चूंकि, सभी सिक्खपर्व विगत शताब्दियों से पुरातन परम्परा (विक्रमी कैलेण्डर/तिथियों) के अनुसार ही मनाये जाते रहे हैं, अतः कई सिक्ख सम्प्रदाय एवं पटना, नान्देड़ आदि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटियां भी सिक्खपर्वों को 'पुरातन परम्परा वाले विक्रमी कैलेण्डर' के अनुसार ही मनाने के पक्ष में हैं। इस प्रकार इस विषय में उत्पन्न मतभेद को शान्त करने के लिए सिक्ख-धर्म की सर्वोच्च संस्था S.G.P.C. (शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्ध कमेटी) अमृतसर द्वारा पर्वों के निर्णय के लिए अब पुनः विक्रमी कैलेण्डर को ही मान्यता दी गयी है—यह ध्यान देने योग्य है।

पुरातन परम्परा के अनुसार इस वर्ष (सं. 2078 वि.) की संक्रान्तियां—वैशा. 13-4-21, ज्ये. 14-5-21, आषाढ़ 15-6-21, श्रावण 16-7-21, भाद्र. 16-8-21, आश्वि. 16-9-21, कार्तिक 17-10-21, मार्ग. 16-11-21, पौष 15-12-21, माघ 14-1-22, फाल्गुन 12-2-22, चैत्र 14-3-22.

नानकशाही कैलेण्डर के अनुसार संक्रान्तियां (सं. 2078 वि.)—इस कैलेण्डर के अनुसार चैत्र की संक्रान्ति हमेशा 14 मार्च को होती है, चैत्र से श्रावण तक के पांच महीने हमेशा 31-31 दिनों के और शेष 6 महीने हमेशा 30-30 दिनों के होते हैं, लीप इयर में फाल्गुन मास के 32 दिन माने गये हैं।

भारत सरकार के अवकाश (1 जनवरी, सन् 2021 ई. से 1 अप्रैल, सन् 2022 ई. तक)

(ध्यान दें—अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गजट की सूची से अवश्य मिला लें।)

(सन् 2021 ई.)		गुड़ी पड़वा	13 अप्रैल	श्रीगणेश चतुर्थी	25 अग.	क्रिस्मस डे	25 दिसं.
इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन.	वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रैल	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	30 अग.	(सन् 2022 ई.)	
मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.	श्रीरामनवमी	21 अप्रैल	जन्मदिन श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.	इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन.
पोंगल	14 जन.	श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	25 अप्रैल	श्रीदुर्गाष्टमी	13 अक्तू.	जन्मदिन श्री गुरुगोबिन्द सिंह जी	9 जन.
जन्मदिन श्रीगुरु गोविन्द सिंह जी	20 जन.	जमतुल विदा	7 मई	दशहरा	15 अक्तू.	मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.
भारतगणतन्त्र दिवस	26 जन.	इदुल-फित्र	14 मई	ईद-ए-मिलाद	19 अक्तू.	पोंगल	14 जन.
जन्म हजरत अली	26 फर.	रथयात्रा (पुरी)	11 जुलाई	श्रीवाल्मीकि जयन्ती	20 अक्तू.	भारतगणतन्त्र दिवस	26 जन.
जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	27 फर.	इदुलज्जुहा	21 जुलाई	दीपावली	4 नवं.	जन्म श्री हज़रत अली	15 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	11 मार्च	भारतस्वतन्त्रता दिवस	15 अग.	भाईदूज	6 नवं.	जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	16 फर.
होला, वसन्तोत्सव	28 मार्च	मुहर्रम (ताजिया)	19 अग.	श्री गुरुनानक जयन्ती	19 नवं.	श्री महाशिवरात्रि व्रत	1 मार्च
गुड फ्राई डे	2 अप्रै.	रक्षाबन्धन (राखी)	22 अग.	बलिदानदिन गुरु तेगबहादुर जी	8 दिसं.	होला, वसन्तोत्सव	19 मार्च

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2021 ई. से 1 अप्रैल, सन् 2022 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2021 ई.)	तारीख
जनवरी सन् 2021 ई.	
लोहड़ी दाऊं (मोहाली) (पं.)	14 जन.
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़) (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब.सं.बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
ब.सं.बा. अतर सिंह जी (मस्तुआणां) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी सन् 2021 ई.	
बलिदान दिवस बाबा दीपसिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़-पं.)	10 फर.
वसन्त पंचमी	16 फर.
ज.दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा-कुराली (पं.)	25 फर.
मार्च सन् 2021 ई.	
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	11 मार्च
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी-गढ़वाल)	11 मार्च
ज.दि.सं.बा. अतर सिंह जी (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
ज.दि.सं.बा. निधानसिंह जी (श्री हजूरसाहिब वाले, ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
मेला पीर भीखनशाह(घड़ाम, पटियाला) प्रा.	25 मार्च
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	29 मार्च
श्रीवीरमदास, बधौछी (पटियाला)	30 मार्च
अप्रैल सन् 2021 ई.	
शीतला माता (कुराली) पं.	1 अप्रैल
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	2 अप्रैल

नाम मेला/पर्व (सन् 2021 ई.)	तारीख
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	10 अप्रैल
कशाधा नहयाणी सह (कुल्लू) प्रा.	15 अप्रैल
माईसर खाना (पंजाब)	18 अप्रैल
ज्वालामुखी (हरचोवाल-गुरदासपुर)	20 अप्रैल
ज.दि. भाई दित्तसिंह ज्ञानी	21 अप्रैल
मेला माता कांसादेवी (कांसल, मोहाली) प्रा.	25 अप्रैल
मेला माता नैनादेवी, दाचर (करनाल)	26 अप्रैल
देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	26 अप्रैल
पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	28 अप्रैल
मई सन् 2021 ई.	
आनी आऊटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	7 मई
पिंजौर (हरि.)	11 मई
ढूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	14 मई
बंजार (कुल्लू) प्रा.	14 मई
ज.दि.सं.बा. तेजासिंह जी, बदरीपुर, पांवटा सा. (हि.प्र.) प्रा.	14 मई
साढ़ी जातर, नगर (हि.प्र.) प्रा.	18 मई
समागम (8 दिन) हरिहरघाट, मणिकर्ण (हि.प्र.) प्रा.	20 मई
जून सन् 2021 ई.	
पाण्डवों का बाड़ी मेला (सरयांझ) सोलन	15 जून
भून्तर (कुल्लू) प्रा.	15 जून
पुण्यतिथि सतगुरु साईं टेऊँराम जी सप्तसरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	16 जून
क्षीरभवानी (जम्मू-कश्मीर)	18 जून
श्रीगंगा दशहरा	20 जून
सपोर यात्रा-धारलदा (उधमपुर)	20 जून

नाम मेला/पर्व (सन् 2021 ई.)	तारीख
नमाणी एकादशी, नौवें गुरु, बरहे (बठि.) पं.	21 जून
पीपलू, ऊना (हि.प्र.)	21 जून
शुद्ध महादेवयात्रा (उधमपुर)	24 जून
उर्स माणकपुर शरीफ (मोहाली) प्रारम्भ	25 जून
यादगारी दिवस बीबी शरणकौर जी, गु. श्रीअमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	29 जून
जुलाई सन् 2021 ई.	
ब.सं.बा. तेजासिंह जी, नानकसर चीमा (पं.)/बड़ू साहिब (हि.प्र.) प्रा.	1 जुलाई
ब.बा. सन्तोख सिंह जी/भा. दर्शन सिंह गुरुद्वारा जन्मस्थान नानकसर, चीमा प्रा.	9 जुलाई
धाटा गोशयन मेला (मण्डी, हि.प्र.) प्रा.	16 जुलाई
जयन्ती सतगुरु साईं टेऊँराम जी सप्तसरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	16 जुलाई
शरीक भवानी (जम्मू-कश्मीर)	18 जुलाई
गुरु पूर्णिमा, नदीपार आश्रम (कुराली) पं.	24 जुलाई
मुड़िया पूनौ (गोवर्धन), मथुरा (उ.प्र.)	24 जुलाई
गाड़ा गोशयन मेला (मण्डी, हि.प्र.) प्रा.	30 जुलाई
अगस्त सन् 2021 ई.	
ब.सं.बा. निधानसिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	4 अगस्त
बरसी सं. बाबा प्यारासिंह जी, गुरुद्वारा श्री अमरगढ़ साहिब, चमकौर साहिब प्रा.	5 अगस्त
ज.दि.सं.बा. ईशरसिंह जी (राड़ा सा. वाले), आलोवाल पटि.	5 अगस्त
नागपंचमी (जैत), मथुरा (उ.प्र.)	13 अगस्त
श्रीनयना देवी (हि.प्र.)	15 अगस्त

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2021 ई. से 1 अप्रैल, सन् 2022 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2021 ई.)	तारीख
श्री चिन्तपूर्णी (हि.प्र.)	15 अगस्त
ब.सं.बा. हरचन्द सिंह लौंगोवाल	20 अगस्त
श्री अमरनाथ यात्रा (कश्मीर)	22 अगस्त
श्रीकृष्णजन्माष्टमी, मथुरा (उ.प्र.)	30 अगस्त
सितम्बर सन् 2021 ई.	
कैलाशयात्रा (कश्मीर) प्रा.	5 सितं.
ब.भा. दित्तसिंह ज्ञानी, नन्दपुर-कलौड़ (पं.)	6 सितं.
श्रीगोसाईं आणां, कुराली (पंजाब)	8 सितं.
श्रीगणेशोत्सव (मण्डी, ऊना) हि.प्र. प्रारम्भ	10 सितं.
मेला पट्ट (कश्मीर) प्रारम्भ	11 सितं.
श्रीगर्गाचार्य जयन्ती	11 सितं.
मेला श्रीबलदेव छठ, पलवल, हरियाणा	12 सितं.
गुरुणगोविन्द (छटीकरा, मथुरा) (उ.प्र.)	14 सितं.
श्रीवामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	17 सितं.
बाबा सोढल (जालन्धर)	19 सितं.
छपार (पं.)	19 सितं.
श्रीगोईंदवाल साहिब (तरनतारन) पं.	20 सितं.
अक्टूबर सन् 2021 ई.	
श्री आशापति यात्रा (कश्मीर) प्रा.	5 अक्तू.
श्रीज्वालामुखी (हि.प्र.)	13 अक्तू.
श्रीतारादेवी (हि.प्र.)	13 अक्तू.
ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर) पं.	13 अक्तू.
दशहरा (कुल्लू) प्रा.	15 अक्तू.
पर्वत मेला (मण्डी-हि.प्र.)	18 अक्तू.
श्रीशाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	19 अक्तू.
मेला माता नयनादेवी, दाचर (करनाल)	19 अक्तू.
[illegible] (कुरुक्षेत्र)	19 अक्तू.

नाम मेला/पर्व (सन् 2021 ई.)	तारीख
ब.सं.बा. गुरुचरण सिंह जी, गु. अमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	24 अक्तू.
भण्डारा श्री हरिओम् जी (माणकपुर शरीफ)	31 अक्तू.
नवम्बर सन् 2021 ई.	
दीपावली (अमृतसर)	4 नवं.
रेणुका (नाहन) हि.प्र.	14 नवं.
बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना, हि.प्र.) प्रा.	14 नवं.
धनेश्वर मेला, सिरमौर (हि.प्र.)	14 नवं.
बाल मेला	14 नवं.
ज.दि. श्रीवीर वैरागी (नकोदर) (पं.)	17 नवं.
मेला बग्गीदेहरी कुण्डे लालोवाल (गुरदासपुर) प्रा.	18 नवं.
श्रीरामतीर्थ (अमृतसर-पं.)	19 नवं.
कपालमोचन (हरि.)	19 नवं.
श्रीपुष्करराज (राज.)	19 नवं.
दिसम्बर सन् 2021 ई.	
पुरमण्डल, देविकास्नान (जम्मू)	3 दिसं.
ब.सं.बा. विसाखासिंह, दुदेहर सा.(तारनतारन)	5 दिसं.
ब.सं.बा.रामसिंह/बूटासिंह, नानकसर चीमा	13 दिसं.
ब. बीबी तेजकौर जी, मानपुर, फतेहगढ़ सा.	23 दिसं.
ज.दि.सं.बा. किशनसिंह जी (राड़ा सा. वाले), मसीतां (सिरसा-हरि.)	24 दिसं.
जोड़मेला श्रीफतेहगढ़ साहिब, (पं.) प्रा.	26 दिसं.
संगीत मेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर) प्रा.	27 दिसं.
ब.सं.बा. किशन सिंह जी, गु. कर्मसर साहिब, राड़ा साहिब (लुधि.) प्रा.	30 दिसं.

नाम मेला/पर्व (सन् 2022 ई.)	तारीख
जनवरी सन् 2022 ई.	
लोहड़ी दाऊं (मोहाली) (पं.)	14 जन.
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़) (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब.सं.बा. अतरसिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
ब.सं.बा. बख्शीशसिंह जी	26 जन.
ब.सं.बा. अतरसिंह जी (मस्तुआणां) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी सन् 2022 ई.	
वसन्तपंचमी	5 फर.
बलिदान दिवस बाबा दीपसिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़-पं.)	10 फर.
ज.दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा-कुराली (पं.)	14 फर.
मार्च सन् 2022 ई.	
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	1 मार्च
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी-गढ़वाल)	1 मार्च
मेला पीर भीखनशाह (घड़ाम) पटि. प्रा.	15 मार्च
ज.दि.सं.बा. अतरसिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	19 मार्च
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	22 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	22 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	24 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	30 मार्च

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रोदय- श्रीगणेश–चतुर्थी एवं श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2078 वि.), (भा. स्टैं. टा.)

नगर	चन्द्रोदय (I.S.T.) श्री गणेश–चतुर्थी												श्री कृष्ण–जन्माष्टमी	
													स्मार्त	वैष्णव
	30 अप्रैल 2021	29 मई 2021	27 जून 2021	27 जुलाई 2021	25 अगस्त 2021	24 सित 2021	24 अक्तू. 2021	23 नवम्बर 2021	22 दिस. 2021	21 जन. 2022	20 फर. 2022	21 मार्च 2022	30 अगस्त 2021	30 अगस्त 2021
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अजमेर	22 54	22 40	22 10	22 00	21 01	20 34	20 23	20 43	20 28	21 13	22 00	21 56	23 51	23 51
अमृतसर	23 07	22 53	22 19	22 03	21 00	20 26	20 10	20 28	20 15	21 07	22 02	22 02	23 38	23 38
अलवर	22 48	22 35	22 04	21 52	20 53	20 25	20 13	20 32	20 17	21 04	21 53	21 49	23 40	23 40
अलीगढ़	22 47	22 30	21 58	21 46	20 47	20 18	20 06	20 25	20 10	21 04	21 47	21 43	23 34	23 34
अहमदाबाद	22 54	22 41	22 12	22 06	21 10	20 47	20 40	21 00	20 44	21 25	22 07	21 59	24 07	24 07
अयोध्या	22 23	22 10	21 39	21 29	20 30	20 03	19 51	20 11	19 56	20 41	21 29	21 24	23 19	23 19
आगरा	22 41	22 28	21 57	21 46	20 47	20 19	20 08	20 27	20 12	20 58	21 46	21 42	23 35	23 35
इन्दौर	22 40	22 26	21 58	21 52	20 56	20 34	20 27	20 47	20 31	21 12	21 54	21 46	23 54	23 54
इलाहाबाद	22 21	22 07	21 38	21 29	20 32	20 06	19 56	20 16	20 00	20 44	21 30	21 24	23 24	23 24
उज्जैन	22 41	22 28	21 59	21 53	20 57	20 34	20 26	20 47	20 31	21 12	21 54	21 47	23 54	23 54
उदयपुर (राज.)	22 53	22 40	22 09	21 57	20 57	20 23	20 17	20 36	20 21	21 08	21 57	21 54	23 45	23 45
ऊना	23 01	22 17	22 14	21 57	20 54	20 21	20 04	20 22	20 09	21 01	21 26	21 57	23 33	23 33
कपूरथला	23 04	22 50	22 17	22 01	20 58	20 24	20 08	20 26	20 13	21 05	22 00	22 00	23 36	23 36
करनाल	22 52	22 39	22 07	21 53	20 51	20 20	20 03	20 24	20 11	21 00	21 52	21 51	23 34	23 34
कांगड़ा	23 02	22 18	22 15	21 57	20 54	20 20	20 00	20 20	20 08	21 00	21 56	21 57	23 31	23 31
कानपुर	22 30	22 16	21 46	21 36	20 38	20 11	20 00	20 19	20 04	20 49	21 36	21 32	23 27	23 27
कुरुक्षेत्र	22 37	22 18	21 50	21 47	20 52	20 32	20 27	20 47	20 30	21 09	21 49	21 39	23 54	23 54
कुल्लू	22 58	22 45	22 11	21 54	20 51	20 17	20 00	20 17	20 05	20 57	21 23	21 54	23 28	23 28
कोटा	22 46	22 32	22 02	21 54	20 56	20 31	20 21	20 41	20 26	21 09	21 55	21 49	23 49	23 49
कोलकाता	21 47	21 34	21 05	21 01	20 05	19 43	19 35	19 56	19 39	20 20	21 01	20 53	23 03	23 03
गुरदासपुर	23 06	22 52	22 18	22 01	20 58	20 23	20 07	20 24	20 11	21 04	22 00	22 01	23 35	23 35
ग्वालियर	22 39	22 25	21 55	21 45	20 47	20 20	20 09	20 29	20 14	20 59	21 46	21 41	23 37	23 37
चण्डीगढ़	22 56	22 42	22 09	21 54	20 52	20 19	20 04	20 22	20 09	20 59	21 53	21 53	23 32	23 32
चंबा	23 04	22 53	22 19	21 59	20 55	20 18	19 59	20 17	20 05	20 59	21 58	22 01	23 28	23 28
चूरू	22 57	22 44	22 12	22 00	21 00	20 30	20 18	20 36	20 22	21 10	22 00	21 57	23 45	23 45
चैन्नई	22 00	21 47	21 22	21 27	20 39	20 27	20 28	20 51	20 31	21 02	21 31	21 15	23 55	23 55
जम्मू	23 10	22 56	22 22	22 04	21 00	20 24	20 07	20 24	20 12	21 05	22 03	22 04	23 35	23 35
जयपुर	22 50	22 36	22 06	21 55	20 56	20 28	20 17	20 37	20 22	21 08	21 55	21 51	23 45	23 45
जालन्धर	23 04	22 50	22 17	22 01	20 58	20 25	20 09	20 27	20 14	21 05	22 00	22 00	23 37	23 37
जैसलमेर	23 11	22 57	22 26	22 15	21 16	20 49	20 38	20 57	20 42	21 28	21 16	22 12	23 05	23 05
जोधपुर	23 00	22 47	22 16	22 06	21 08	20 41	20 30	20 50	20 35	21 20	22 07	22 02	23 36	23 36
दरभंगा	22 06	21 53	21 23	21 13	20 15	19 48	19 38	19 57	19 42	20 26	21 13	21 08	23 28	23 28
दिल्ली	22 49	22 35	22 04	21 51	20 51	20 21	20 08	20 26	20 12	21 00	21 51	21 48	23 31	23 31

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रोदय- श्रीगणेश–चतुर्थी एवं श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2078 वि.), (भा. स्टैं. टा.)

नगर	चन्द्रोदय (I.S.T.) श्री गणेश–चतुर्थी																								श्री कृष्ण-जन्माष्टमी			
																									स्मार्त		वैष्णव	
	30 अप्रैल 2021		29 मई 2021		27 जून 2021		27 जुलाई 2021		25 अगस्त 2021		24 सित. 2021		24 अक्टू. 2021		23 नवबर 2021		22 दिसं. 2021		21 जन. 2022		20 फर. 2022		21 मार्च 2022		30 अगस्त 2021		30 अगस्त 2021	
	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि
देहरादून	22	50	22	36	22	04	21	49	20	47	20	15	20	00	20	18	20	05	20	55	21	48	21	47	23	28	23	28
नाहन	22	53	22	40	22	07	21	52	20	50	20	18	20	02	20	21	20	07	20	58	21	51	21	51	23	31	23	31
पटना	22	08	21	54	21	24	21	16	20	18	19	52	19	42	20	01	19	46	20	30	21	16	21	10	23	09	23	09
पटियाला	22	57	22	43	22	10	21	56	20	54	20	22	20	07	20	25	20	12	21	02	21	55	21	54	23	35	23	35
पठानकोट	23	05	22	51	22	18	22	00	20	57	20	22	20	05	20	22	20	10	21	03	21	59	22	00	23	33	23	33
पूना	22	38	22	25	21	58	21	57	21	04	20	47	20	44	21	05	20	47	21	24	22	00	21	48	24	11	24	11
फगवाड़ा	23	03	22	49	22	16	21	59	20	56	20	23	20	06	20	24	20	11	21	03	21	58	21	59	23	35	23	35
फिरोजपुर	23	06	22	52	22	19	22	03	21	01	20	28	20	13	20	31	20	18	21	08	22	03	22	02	23	41	23	41
बंगलौर	22	11	21	58	21	33	21	38	20	50	20	38	20	39	21	02	20	43	21	13	21	42	21	26	24	06	24	06
बरेली	22	39	22	25	21	54	21	42	20	41	20	12	19	59	20	18	20	04	20	51	21	41	21	38	23	27	23	27
बिलासपुर (हि. प्र.)	22	58	22	44	22	11	21	55	20	52	20	19	20	03	20	21	20	05	20	59	21	54	21	54	23	31	23	31
बीकानेर	23	09	22	50	22	18	22	06	21	06	20	37	20	25	20	44	20	30	21	17	22	06	22	03	23	53	23	53
बूंदी	22	47	22	34	22	04	21	55	20	57	20	31	20	21	20	41	20	26	21	10	21	56	21	50	23	49	23	49
भटिण्डा	23	03	22	49	22	16	22	01	21	00	20	28	20	13	20	31	20	18	21	08	22	01	22	00	23	41	23	41
भरतपुर	22	44	22	30	22	00	21	49	20	49	20	21	20	10	20	29	20	14	21	01	21	40	21	45	23	38	23	38
भोपाल	22	34	22	20	21	51	21	45	20	49	20	26	20	18	20	39	20	23	21	04	21	47	21	39	23	46	23	46
मण्डी (हि. प्र.)	22	58	22	45	22	11	21	51	20	54	20	17	20	01	20	19	20	06	20	58	21	53	21	54	23	29	23	29
मथुरा	22	44	22	30	21	59	21	48	20	49	20	20	20	09	20	28	20	13	21	00	21	18	21	44	23	36	23	36
मुम्बई	22	43	22	30	22	03	22	02	21	09	20	50	21	00	21	08	20	51	21	28	22	04	21	53	24	14	24	14
रोपड	22	58	22	44	22	11	21	56	20	53	20	20	20	05	20	23	20	10	21	01	21	55	21	55	23	33	23	33
रोहतक	22	50	22	36	22	05	21	53	20	59	20	24	20	11	20	30	20	16	21	03	21	52	21	50	23	39	23	39
लखनऊ	22	29	22	15	21	45	21	34	20	36	20	08	19	57	20	16	20	01	20	47	21	34	21	30	23	24	23	24
लुधियाना	23	01	22	47	22	14	21	58	20	56	20	23	20	07	20	26	22	10	21	03	21	57	21	57	23	36	23	36
वाराण्सी	22	16	22	03	21	33	21	25	20	22	20	01	19	52	20	11	21	48	20	40	21	25	21	19	23	19	23	19
बनारस																												
शिमला	22	56	22	42	22	09	21	53	20	50	20	17	20	02	20	20	22	04	20	58	21	52	21	52	23	30	23	30
श्रीनगर (क.)	23	14	23	00	22	25	22	05	21	00	20	23	20	03	20	20	22	09	21	04	22	03	22	07	23	32	23	32
संगरूर	22	59	22	45	22	12	21	58	20	56	20	24	20	09	20	28	22	11	21	04	21	57	21	56	23	37	23	37
सहारनपुर	22	52	22	38	22	06	21	51	20	50	20	18	20	04	20	22	22	05	20	58	21	51	21	50	23	32	23	32
सीकर	22	54	22	41	22	10	21	58	20	59	20	30	20	18	20	37	22	17	21	10	21	55	21	55	23	46	23	46
हरिद्वार	22	48	22	35	22	02	21	48	20	46	20	15	20	00	20	19	22	01	20	55	21	48	21	46	23	28	23	28
हिसार	22	56	22	43	22	11	21	57	20	56	20	26	20	12	20	31	22	13	21	06	21	57	21	55	23	40	23	40
होशियारपुर	23	02	22	48	22	15	21	58	20	56	20	22	20	06	20	24	22	08	21	03	21	57	21	58	23	34	23	34

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

हिसार	22 56	22 43	22 11	21 57	20 56	20 26	20 12	20 31	22 13	21 06	21 57	21 55	23 40	23 40
होशियारपुर	23 02	22 48	22 15	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	21 57	21 58	23 34	23 34

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

सन्दिग्ध व्रत-पर्व-व्यवस्था (सं. 2078 वि.)

लेखक—प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला(हरियाणा)—134109,

(यदि इस स्तम्भ में चर्चित या अन्य किसी व्रत-पर्व की तिथि के बारे में किसी को सन्देह/शंका हो तो पत्र देकर हमसे स्पष्टीकरण मांग लेना चाहिए,—सम्पादक)
(सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

श्रीगंगाजन्म (वैशाख शुक्ल सप्तमी)

मध्याह्न-व्यापिनी वैशाख शुक्ल-सप्तमी को यह पर्व मनाया जाता है— **" वैशाखशुक्ल-सप्तम्यां गंगोत्पत्तिः तस्यां मध्याह्नव्यापिन्यां गंगापूजनं कार्यम्।"—(धर्मसिन्धु)**

इस वर्ष यह सप्तमी दो दिन (18 और 19 मई, 2021 ई. को) मध्याह्न को व्याप्त कर रही है। सप्तमी दो दिन यदि मध्याह्न को व्याप्त या अव्याप्त करे तो यह पर्व पहले दिन मनाया जाये, ऐसी शास्त्राज्ञा है। **इस नियम अनुसार यह पर्व इस वर्ष (सं. 2078 वि. में) 18 मई, 2021 ई. को मनाया जायेगा, यह स्पष्ट है।**

श्रीजानकी जयन्ती (वैशाख शुक्ल नवमी)

वैशाख शुक्ल-नवमी, मंगलवार को श्रीजानकी जी का जन्म मध्याह्न में हुआ था—ऐसे शास्त्रवचन अधिकतर ग्रन्थों में मिलते हैं—" **पुष्यान्वितायां तु कुजे नवम्यां श्रीमाधवे मासि सितहलाग्रतः। भुवोऽर्चयित्वा जनकेन कर्षणे सीता विरासीत् व्रतमत्र कुर्यात्॥"—(वैष्णव मताब्ज-भास्कर)**

निर्णयसिन्धुकार ने फाल्गुन कृष्ण अष्टमी को सीताजी का जन्म माना है, जो सर्वथा भ्रान्तिपूर्ण है। इसे किसी भी अन्य धर्मग्रन्थकार ने बिल्कुल भी मान्यता नहीं दी है। मध्याह्नव्यापिनी वैशाख शुक्लनवमी को श्री सीताजी का जन्म हुआ था—यही अधिकतर (लगभग सभी) शास्त्रकारों का मत है। **स्पष्ट है—**वैशाख शुक्ल नवमी जिस दिन मध्याह्नव्यापिनी हो, उसी दिन यह व्रत किया जायेगा।

इस वर्ष यह तिथि (नवमी) 20 और 21 मई '21 ई. को (दो दिन) मध्याह्नव्यापिनी है। दो दिन मध्याह्न में नवमी की व्याप्ति/अव्याप्ति में यह पर्व पहले दिन (युग्मवाक्यानुसार मध्याह्न-व्यापिनी अष्टमीविद्धा नवमी के दिन) ही मनाया जाये—यही शास्त्रनिर्णय है। **स्पष्ट है—यह पर्व इस वर्ष 20 मई '21 ई. को मानाया जायेगा।**

मोहिनी एकादशी व्रत (स्मा.) (वैशाख शुक्ल एकादशी)

एकादशी का व्रत स्मार्त एवं वैष्णव सम्प्रदाय के लोगों द्वारा अपने-अपने सम्प्रदाय के सिद्धान्तों के आधार पर प्रत्येक पक्ष की एकादशी को सम्पन्न किया जाता है। हालांकि, वैष्णव लोग द्वादशी में भी इस व्रत को करते हैं।

इस वर्ष 22 मई, 2021 ई. को 9 घं. 16 मि. (भा.स्टैं.टा.) तक दशमी है। तदनन्तर एकादशी और आगे द्वादशी का क्षय है। द्वादशी का क्षय हो जाने पर स्मार्त्तों को दशमीयुता एवं वैष्णवों को द्वादशी-त्रयोदशीयुता एकादशी के दिन यह व्रत करना चाहिए—यह शास्त्रनिर्णय है।

इस नियमानुसार इस वर्ष स्मार्त्त सम्प्रदाय द्वारा किया जाने वाला यह एकादशी (मोहिनी एकादशी) व्रत 22 मई, 2021 ई. को (सूर्योदय-वेधवती दशमी के दिन) लिखा गया है। **ध्यान दें—**वैष्णव सम्प्रदाय द्वारा किया जाने वाला मोहिनी एकादशी व्रत इससे अगले ही दिन यानी 23 मई, 2021 ई. को (द्वादशी-त्रयोदशी-युता एकादशी वाले दिन) होगा—यह भी स्पष्ट है।

श्रीसत्यनारायण व्रत (वैशाख पूर्णिमा)

यह व्रत प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा के दिन किया जाता है—**"सत्यनारायणं देवं यजेच्चैव निशामुखे।"** यहां **'निशामुख' 'सूर्यास्तकाल'** को कहा गया है और इसे ही **'प्रदोषारम्भ-काल'** भी कहते हैं।

इस वर्ष यह व्रत वैशाख पूर्णिमा 25 मई, 2021 ई. को होगा, क्योंकि इसी दिन पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी है। हालांकि, पूर्णिमा 26 मई, 2021 ई. को भी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विद्यमान है, लेकिन यह यहां प्रदोष से काफी पहले ही (16 घं. 44 मि. पर ही) समाप्त हो जाती है। **स्पष्ट है—यह व्रत इस वर्ष 25 मई, 2021 ई. को ही शास्त्रसम्मत है।**

अपरा एकादशी व्रत (ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी)

इस वर्ष (सं. 2078 वि. में) यह 'अपरा एकादशी व्रत' स्मार्त्त एवं **वैष्णव—दोनों सम्प्रदायों द्वारा 6 जून, 2021 ई. को किया जायेगा**, क्योंकि यहां एकादशी की वृद्धि है। एकादशी की वृद्धि होने पर सभी (स्मार्त्त एवं वैष्णव—दोनों) को द्वादशीविद्धा एकादशी में ही यह व्रत करना चाहिए—ऐसा शास्त्रनिर्णय है।

अतः इस नियमानुसार इस वर्ष यह एकादशी व्रत 6 जून, 2021 ई. को ही होगा।

ऋक् उपाकर्म (श्रावण शुक्ल)

ऋग्वेदियों के उपाकर्म के तीन काल हैं—

(i) श्रावण शुक्ल में श्रवण नक्षत्र।

(ii) श्रावण शुक्ल पंचमी।

(iii) श्रावण शुक्ल अन्तर्गत हस्त नक्षत्र।

इनमें श्रवण नक्षत्र इनके उपाकर्म का मुख्य काल है। यह उपाकर्म पूर्वाह्ण में किया जाये—ऐसा भी शास्त्रादेश है। इस वर्ष श्रावणी पूर्णिमा 22 अग., 2021 ई. को पूर्वाह्ण में विद्यमान है, लेकिन यहां श्रवण का सर्वथा अभाव है। अतः इस दिन यह उपाकर्म नहीं हो सकता। इससे पहले 13 अग., 2021 ई. को श्रावण शुक्ल पंचमी के दिन यह उपाकर्म होना चाहिए, क्योंकि इस दिन यहां श्रावण शुक्ल पंचमी पूर्वाह्ण में विद्यमान है और हस्त नक्षत्र का संयोग भी (प्रातः 7 घं. 59 मि. तक) यहां पूर्वाह्ण में कुछ समय के लिए है ही।

अतः इस वर्ष यह उपाकर्म (ऋक् उपाकर्म) 13 अग., 2021 ई. को ही होगा—यह स्पष्ट है।

श्री दुर्गाष्टमी (श्रावण शुक्लाष्टमी)

सूर्योदयानन्तर कम से कम त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी यानी नवमीविद्धा श्रावण शुक्ल अष्टमी में यह व्रत करने का शास्त्रनिर्देश है। त्रिमुहूर्त्तन्यून अष्टमी होने पर यह व्रत पहले ही दिन किया जाये—ऐसा शास्त्रादेश है।

इस वर्ष 16 अग., 2021 ई. को अष्टमी त्रिमूहूर्त्ताल्प है। अतः इस दिन यह व्रत नहीं हो सकता। **स्पष्ट है—इस वर्ष 15 अग., 2021 ई. को ही यह 'दुर्गाष्टमी व्रत' किया जायेगा।**

श्रीसत्यनारायण व्रत (श्रावणी पूर्णिमा)

इस बारे में हम पहले भी लिख आये हैं कि—यह व्रत प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा के दिन किया जाता है। इस वर्ष श्रावण शुक्ल में 22 अग., 2021 ई. को पूर्णिमा 17 घं. 32 मि. (भा.स्टैं.टा.) तक विद्यमान है, जोकि प्रदोष से पहले ही समाप्त हो रही है और 21 अग., 2021 ई. को यह पूर्णिमा प्रदोष के काफी भाग को व्याप्त कर रही है। **स्पष्ट है—यह व्रत हमने इस वर्ष 21 अग., 2021 ई. को लिखा है, जोकि शास्त्रसम्मत है।**

दूर्वाष्टमी व्रत (भाद्र. शुक्लाष्टमी)

भाद्र. शुक्लाष्टमी में यह व्रत स्त्रियों द्वारा किया जाता है। इस व्रत को 'रौहिणमुहूर्त्त' (दिन के नवम मुहूर्त्त) में व्याप्त अष्टमी में करने का शास्त्रनिर्देश है। ज्येष्ठा/मूल नक्षत्रकाल में और अगस्त्य तारा के उदय की स्थिति में यह व्रत नहीं किया जाता और कन्यार्क में भी इसे करने का शास्त्र निषेध करते हैं।

इस स्थिति में इस व्रत को भाद्र. शुक्ल से निरन्तर (क्रमशः) पूर्ववर्ती ऐसे किसी भी पक्ष की अष्टमी में करने का निर्देश है, जहां अगस्त्य तारा लुप्त (अस्त) हो।

इस वर्ष भाद्र. शुक्ल अष्टमी 14 सितं., 2021 ई. को पड़ रही है। इन दिनों अगस्त्य तारा उदित चल रहा है। स्पष्ट है—इस दिन यह व्रत नहीं किया जा सकता।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इस वर्ष भाद्र. कृष्ण अष्टमी (30 अगस्त, 2021 ई.) को अगस्त्य तारा अस्त है। इस दिन यह अष्टमी 'रौहिण' यानी दिन के नवम मुहूर्त्त को भी पूर्णत: व्याप्त कर रही है। ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र, जो इस पर्व को दूषित करते हैं, उनका भी इस दिन पूर्ण अभाव है।

स्पष्ट है—यह 'दूर्वाष्टमी व्रत' 30 अग., 2021 ई. को होगा।

ध्यान दें कि—इस दिन स्मार्त/वैष्णव—दोनों का श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत भी है। जन्माष्टमी-व्रतानुष्ठान अर्द्धरात्रि में और दूर्वाष्टमी का पूजन रौहिण (दिन के नवम) मुहूर्त्त में होगा। स्पष्ट है—दोनों का अनुष्ठेय काल पर्याप्त भिन्न होने से इनके व्रतियों को यहां कोई कठिनाई नहीं होगी।

कुशोत्पाटिनी अमा (भाद्र. अमा)

भाद्रपद अमा में कुशोत्पाटन (कुशा-संचयन) किया जाता है। इस दिन संचित कुशा वर्षभर पवित्र रहती है—

" अयातयामास्ते दर्भा विनियोज्याः पुनः पुनः।"

यहां कुशचयन का विधान द्वितीय प्रहरव्यापिनी भाद्रपद अमा में माना गया है—**" समित्पुष्प-कुशादीनां द्वितीयः प्रहरो मतः।"**

इस वर्ष 7 सितं., 2021 ई. को यह अमा प्रातः 6 घं. 21 मि. पर (द्वितीय प्रहरारम्भ से बहुत पहले ही यानी प्रथम प्रहर में ही) समाप्त हो जाती है। अत: इस दिन कुशोत्पाटन नहीं किया जा सकता। पहले दिन 6 सितं., 2021 ई. को प्रातः 7 घं. 39 मि. के बाद सारा दिन अमावस विद्यमान है और यह यहां द्वितीय प्रहर को भी पूर्णरूप से व्याप्त कर रही है।

स्पष्ट है—6 सितं., 2021 ई. को ही (द्वितीय प्रहरव्याविनी अमा में) कुशोत्पाटन होगा।

श्रवण द्वादशी/विष्णुशृंखल योग (भाद्र. शुक्ल द्वादशी)

भाद्र. शुक्ल द्वादशी जिस दिन एक मुहूर्त्त या इससे अधिक काल को व्याप्त कर, श्रवण से योग करे, उस दिन '**श्रवण द्वादशी व्रत**' किया जाता है।

इस वर्ष 18 सितं., 2021 ई. को यह द्वादशी 1 मुहूर्त्त तक तो विद्यमान है, लेकिन इस दिन इसके साथ श्रवण का योग बिल्कुल नहीं है। पिछले दिन (17 सितं., 2021 ई. को) यह द्वादशी 8 घं. 8 मि. (भा.स्टैं.टा.) के बाद सारा दिन श्रवण से योग कर रही है। **स्पष्ट है—श्रवणयोगवती द्वादशी वाले दिन यानी 17 सितं., 2021 ई. को ही यह श्रवण द्वादशी पर्व मनाया जायेगा।**

श्रवण द्वादशी यदि एकादशी और श्रवण से सम्पर्क करे तो इस दिन '**विष्णुशृंखल नामक योग**' बनता है। इस वर्ष 17 सितं., 2021 ई. को प्रातः 8 घं. 8 मि. तक एकादशी और उसके बाद सारा दिन द्वादशी विद्यमान है। इन दोनों तिथियों के साथ श्रवण नक्षत्र का सम्पर्क भी यहां है। अतः इस दिन (17 सितं., 2021 ई. को) यह '**विष्णुशृंखल**' नामक योग भी बन रहा है—

" संस्पृश्यैकादशीं राजन्! द्वादशीं यदि संस्पृशेत्।
श्रवणं ज्योतिषां श्रेष्ठं ब्रह्महत्यां व्यपोहति॥"—(नारद)

षष्ठी श्राद्ध (आश्विन कृष्ण षष्ठी)

यह पार्वण श्राद्ध है और सभी पार्वणश्राद्ध अपराह्णव्यापिनी तिथियों में किये जायें—यह शास्त्रनिर्देश है—**" पार्वणन्त्वपराह्णके।"** अतः आश्विन कृष्ण षष्ठी का यह श्राद्ध अपराह्णव्यापिनी तिथि में किया जायेगा—यह स्पष्ट है।

इस वर्ष 26 और 27 सितं., 2021 ई. को दो दिन यह षष्ठी लगभग समान रूप से अपराह्णव्यापिनी है। ऐसी स्थिति में धर्मशास्त्र का नियम है कि—यह तिथि यदि षष्टिघट्यधिका (60 घड़ी से अधिक) हो तो यह श्राद्ध दूसरे दिन किया जाये।

इस निर्णयानुसार इस वर्ष हमने यह श्राद्ध 27 सितं., 2021 ई. को लिखा है, जोकि पूर्णतः शास्त्रसम्मत है। 26 सितं. '21 ई. को अपराह्णकाल 13 घं. 25 मि. से 15 घं. 47 मि. तक और 27 सितं., 2021 ई. को यह अपराह्णकाल 13 घं. 22 मि. से 15 घं. 44 मि. तक रहेगा।

(ध्यान दें—इस वर्ष 26 सितं., 2021 ई. को कोई भी तिथिश्राद्ध नहीं होगा।)

श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त (आश्विन कृष्णाष्टमी)

चन्द्रोदयव्यापिनी आश्विन कृष्ण अष्टमी के दिन यह व्रत सम्पन्न (पूर्ण)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

किया जाये—यही शास्त्रनियम है।

इस वर्ष यह अष्टमी 28 सितं., 2021 ई. को चन्द्रोदयव्यापिनी है। अतः हमने इस व्रत का समापन इसी दिन (28 सितं., 2021 ई. को ही) लिखा है।

ध्यान दें—अगले दिन यानी 29 सितं., 2021 ई. को भी यह अष्टमी 20 घं. 30 मि. (भा.स्टै.टा.) तक मौजूद है, लेकिन इस दिन यह चन्द्रोदय से पूर्व ही समाप्त हो रही है। अतः इस दिन यह व्रत नहीं हो सकता।

सोमप्रदोष व्रत (आश्विन शुक्ल त्रयोदशी)

प्रत्येक पक्ष की प्रदोषकालव्यापिनी त्रयोदशी तिथि में यह व्रत किया जाता है। यह नक्तव्रत है।

इस वर्ष 18 अक्तू., 2021 ई. को यह तिथि पर्याप्त प्रदोष को व्याप्त कर रही है, जबकि 17 अक्तू., 2021 ई. को भी यह तिथि अत्यल्प काल (कुछ ही मिनटों) के लिए प्रदोषव्यापिनी है। ऐसी स्थिति में, जबकि यह तिथि दो दिन प्रदोष को समान या असमानरूप से व्याप्त करे अथवा व्याप्त न भी करे तो यह व्रत हमेशा दूसरे ही दिन होता है—

"प्रदोषव्यापिनी नक्ते तिथिः व्याप्तिः दिनद्वये।
अव्याप्तिर्वाऽथवांशेन व्याप्तिः स्यात्सर्वथोत्तरा॥"—(कालमाधव)

स्पष्ट है—आश्विन शुक्ल का यह 'सोमप्रदोष व्रत' 18 अक्तू., 2021 ई. को ही होगा।

श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (पौष कृष्ण चतुर्थी)

यह व्रत प्रत्येक चान्द्रमास के कृष्ण पक्ष की चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी में किया जाता है। मातृ(तृतीया)विद्धा चतुर्थी में इस व्रत को करने का विशेष महत्त्व है—"**चतुर्थी गणनाथस्य मातृविद्धा प्रशस्यते।**"

इस वर्ष 22 और 23 दिसं., 2021 ई. को दो दिन चतुर्थी विद्यमान है, लेकिन 22 दिसं., 2021 ई. को यहां चतुर्थी चन्द्रोदयव्यापिनी भी है और तृतीया से विद्ध भी, जबकि 23 दिसम्बर को यह तिथि चन्द्रोदय से काफी पहले ही समाप्त हो जाती है। **स्पष्ट है—22 दिसं., 2021 ई. को ही 'श्रीगणेश चतुर्थी व्रत' होगा।**

प्रदोष व्रत (माघ कृष्ण त्रयोदशी)

यह हम पीछे बतला चुके हैं कि यह व्रत प्रत्येक पक्ष की प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी में सम्पन्न किया जाता है और यह नक्त व्रत है।

इस वर्ष 30 जनवरी, 2022 ई. को त्रयोदशी प्रदोष के काफी भाग में विद्यमान है, जबकि 29 जनवरी, 2022 ई. को यह त्रयोदशी प्रदोषसमाप्ति (20 घं. 32 मि.) के अनन्तर 20 घं. 38 मि. पर शुरु होती है। अतः इस दिन यह प्रदोष को बिल्कुल भी स्पर्श नहीं करती। **स्पष्ट है—यह प्रदोषव्रत 30 जनवरी, 2022 ई. को (प्रदोष-कालव्यापिनी त्रयोदशी में) ही होगा।**

होलिका-दहन (फाल्गुन पूर्णिमा)

भद्रारहित प्रदोषकालव्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा के दिन होलिका-दहन किया जाता है।

इस वर्ष 17 मार्च, 2022 ई. को पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी है, जबकि अगले दिन 18 मार्च, '22 को यह दोपहर को 12 घं. 47 मि. पर ही समाप्त हो जाती है। इसलिए इस वर्ष होलिकादहन प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा वाले दिन 17 मार्च, 2022 ई. को किया जाये, यह सिद्ध होता है। लेकिन इस दिन पूरा का पूरा प्रदोष भद्रा से दूषित है और भद्रा में होलिकादहन का शास्त्र सर्वदा निषेध करते हैं—"**भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी-फाल्गुनी तथा।**"

इस स्थिति में भद्रापुच्छ में 'होलिकादहन' का निर्देश धर्मशास्त्रियों ने दिया है। वे आपात-स्थिति में भद्रापुच्छ में 'होलिकादहन' को शुभ मानते हैं—"**भद्रापुच्छे जयः।**"

भद्रापुच्छकाल इस दिन (17 मार्च, 2022 ई. को) 21 घं. 1 मि. से 22 घं. 13 मि. के मध्य रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इसी काल (भद्रापुच्छकाल) के मध्य इस वर्ष आपको इस दिन (17 मार्च, 2022 ई. को) 'होलिकादहन' सम्पन्न करना होगा।

मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.) (चैत्र अमा)

यह पार्वण श्राद्ध तिथिदिन है। अपराह्णव्यापिनी चैत्र कृष्ण चतुर्दशी के दिन हरियाणा प्रदेश के सुप्रसिद्ध तीर्थस्थल पिहोवा में इस दिन एक बड़े मेले का आयोजन होता है। दूर-दूर से धर्मनिष्ठ लोग आकर इस दिन यहां अपने-अपने पितरों के निमित्त, उनकी तृप्त्यर्थ श्राद्धान्न, तिल-तर्पण आदि अर्पित कर स्वयं को पुण्यभागी मानते हैं। यह मेला इस तीर्थस्थल पर चैत्र कृष्ण चतुर्दशी, जिस दिन अपराह्णव्यापिनी हो, उस दिन होता है। हालांकि, मध्याह्नव्यापिनी चैत्र कृष्ण-चतुर्दशी से लेकर चैत्र अमा पर्यन्त यहां तिल-तर्पण-श्राद्ध आदि करने की परम्परा धर्मनिष्ठ जनता लिये हुए है। किन्तु शास्त्र तो पार्वणपद्धति अनुसार इसकी वैधता चैत्र कृष्ण पक्ष की अपराह्णव्यापिनी चतुर्दशी में ही सिद्ध करते हैं, जबकि एकोद्दिष्ट श्राद्ध मध्याह्नव्यापिनी तिथि में सम्पन्न करने का निर्देश भी शास्त्रकार हमें देते ही हैं।

इस वर्ष चैत्र कृष्ण चतुर्दशी 31 मार्च, 2022 ई. को 12 घं. 22 मि. (भा.स्टैं. टा.) तक है, जो मध्याह्न के कुछ भाग में तो है, परन्तु अपराह्णारम्भ से पूर्व ही समाप्त हो जाती है। 30 मार्च, 2022 ई. को यह चतुर्दशी 13 घं. 19 मि. (भा.स्टैं. टा.) पर शुरु होकर आगे पूरा दिन, पूरी रात व अगले दिन दोपहर (मध्याह्न के कुछ भाग) तक चलेगी।

30 मार्च, 2022 ई. को अपराह्णकाल 13 घं. 41 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर शुरु होगा और इस दिन चतुर्दशी 13 घं. 19 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर शुरु हो जायेगी। **स्पष्ट है—इसी दिन यह सम्पूर्ण अपराह्णव्यापिनी है, अतः हमने यह पिहोवा का श्राद्ध-पर्व-मेला (मेला पिहोवा तीर्थ) 30 मार्च, 2022 को लिखा है, जो पूर्णतः शास्त्रसम्मत है।**

— — —

ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन

मिलानसम्बन्धी प्रत्येक समस्या का पूर्ण शास्त्रीय समाधान

लेखकः- प्रियव्रत शर्मा, एम.ए., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य, साहित्याचार्य,

पुस्तक में छः अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में अष्टकूट का विस्तृत विवेचन, द्वितीय में कुज (मङ्गली) दोष पर विस्तृत विमर्श, तृतीय में विवाहमुहूर्त्त के साधन की सुबोध प्रक्रिया, चतुर्थ अध्याय में भारत के 800 प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैं. अं., भारत के किसी भी नगर का सूक्ष्म दैनिक लग्नसमाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) बतलाने वाली मौलिक सारणियां एवं सन् 1971 से 2000 ई. तक के चन्द्रसहित सूर्यादि सभी ग्रहों के सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) दिए गए हैं, जिनकी मदद से 30 वर्षों में (1971 से 2000 ई. तक) पैदा हुए वर / कन्याओं की जन्मकुण्डली 10-15 मिनटों में ही बनाकर दैवज्ञ उनकी ग्रहस्थितियों का मिलान तथा अष्टकूटों के गुण आदि का निर्णय सरलता से कर सकता है। पांचवें और छठे अध्याय में शोधपूर्ण 11 निबन्ध हैं।

वर / कन्या के नक्षत्रचरणों के आधार पर 36 पृष्ठों पर फैली गुणमिलान-सारणी है, जिसमें सभी अष्टकूटों के गुण और दोष तथा उनके परिहार एक ही दृष्टि में तुरन्त जाने जा सकते हैं।

गण, षडष्टक, नाड़ी आदि दोषपूर्ण कूटों के बारे में उपलब्ध अनेक **"नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्"** आदि तथा मंगलदोष के बारे में प्रचलित **"चन्द्र-मंगलसंयोगे भौमदोषो न विद्यते"**—आदि अनेक परिहारवाक्यों का सप्रपंच खण्डन-मण्डन किया गया है।

कुज (मंगली) दोष की मात्रा के सूक्ष्मतापूर्वक निर्णय के लिए 7 कुजदोष कोष्ठक दिए गए हैं, जिनकी मदद से मौखिक जोड़-घटाव द्वारा ही वर-कन्या के कुजदोष की मात्राओं के आंकिक मान कुछ एक मिनटों में ही जानकर, उनकी तुलना द्वारा विवाहसम्बन्ध की शक्याशक्यता का निर्णय किया जा सकता है।

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य Rs. 550/- M.O. अथवा D.D. द्वारा नीचे लिखे पते पर अपना Address साफ-साफ लिखते हुए भेजिए। V.P.P. नहीं की जाएगी। द्वितीय संस्करण उपलब्ध है।

Mrs. Veena Chaturvedi, ABHIJIT PRAKASHAN,
Kothi No.59, Sector-6,
P.O. PANCHKULA, (Haryana)- PIN-134 109,
Phone- 0172-2565303, 09041330161,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2021 से 1 अप्रैल, सन् 2022 ई. तक)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
2021 ई.	घं.	मि.	2021 ई.	घं.	मि.	2021 ई.	घं.	मि.	2021 ई.	घं.	मि.
1 जन.	20	15	3 जन.	19	56	29 अप्रै.	14	29	1 मई	10	15
10 जन.	10	49	12 जन.	7	37	8 मई	14	46	10 मई	20	25
19 जन.	9	54	21 जन.	15	36	18 मई	14	55	20 मई	15	57
29 जन.	3	50	31 जन.	2	28	27 मई	1	15	28 मई	20	2
6 फर.	17	17	8 फर.	15	20	4 जून	20	47	7 जून	2	27
15 फर.	18	28	17 फर.	23	48	14 जून	20	36	16 जून	22	14
25 फर.	13	17	27 फर.	11	18	23 जून	11	48	25 जून	6	40
5 मार्च	22	37	7 मार्च	20	59	2 जुला.	3	49	4 जुला.	9	5
15 मार्च	2	19	17 मार्च	7	30	12 जुला.	2	21	14 जुला.	3	40
24 मार्च	23	12	26 मार्च	21	39	20 जुला.	20	32	22 जुला.	16	25
2 अप्रै.	5	19	4 अप्रै.	2	38	29 जुला.	12	2	31 जुला.	16	37
11 अप्रै.	8	57	13 अप्रै.	14	19	8 अग.	9	19	10 अग.	9	52
21 अप्रै.	7	58	23 अप्रै.	7	41	17 अग.	3	2	19 अग.	0	7

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
2021 ई.	घं.	मि.	2021 ई.	घं.	मि.	2021-22 ई.	घं.	मि.	2021-22 ई.	घं.	मि.
25 अग.	20	47	28 अग.	0	47	23 दिसं.	0	44	25 दिसं.	4	9
4 सितं.	17	45	6 सितं.	17	51	31 दिसं.	22	4	2 जन.	16	23
13 सितं.	8	23	15 सितं.	5	55	9 जन.	7	10	11 जन.	11	9
22 सितं.	5	6	24 सितं.	8	53	19 जन.	6	42	21 जन.	9	42
2 अक्तू.	2	57	4 अक्तू.	3	26	28 जन.	7	10	30 जन.	2	49
10 अक्तू.	14	44	12 अक्तू.	11	26	5 फर.	16	8	7 फर.	18	58
19 अक्तू.	12	12	21 अक्तू.	16	16	15 फर.	13	48	17 फर.	16	10
29 अक्तू.	11	38	31 अक्तू.	13	16	24 फर.	13	30	26 फर.	10	32
6 नवं.	23	38	8 नवं.	18	49	5 मार्च	1	51	7 मार्च	3	50
15 नवं.	18	8	17 नवं.	22	42	14 मार्च	22	7	17 मार्च	0	20
25 नवं.	18	49	27 नवं.	21	43	23 मार्च	18	52	25 मार्च	16	7
4 दिसं.	10	47	6 दिसं.	4	54	1 अप्रै.	10	39	—	—	—
12 दिसं.	23	59	15 दिसं.	4	40						

पंचकों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2021 से 1 अप्रैल, सन् 2022 ई. तक)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
2021 ई.	घं.	मि.	2021 ई.	घं.	मि.	2021 ई.	घं.	मि.	2021 ई.	घं.	मि.
15 जन.	17	5	20 जन.	12	36	4 मई	20	43	9 मई	17	28
12 फर.	2	10	16 फर.	20	56	1 जून	3	58	5 जून	23	27
11 मार्च	9	21	16 मार्च	4	43	28 जून	12	59	3 जुलाई	6	13
7 अप्रै.	15	0	12 अप्रै.	11	29	25 जुलाई	22	47	30 जुलाई	14	2
						22 अग.	7	57	26 अग.	22	28

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
2021 ई.	घं.	मि.	2021 ई.	घं.	मि.	2022 ई.	घं.	मि.	2022 ई.	घं.	मि.
18 सितं.	15	25	23 सितं.	6	43	5 जन.	19	53	10 जन.	8	49
15 अक्तू.	21	15	20 अक्तू.	14	1	2 फर.	6	45	6 फर.	17	9
12 नवं.	2	51	16 नवं.	20	14	1 मार्च	16	31	6 मार्च	2	29
9 दिसं.	10	9	14 दिसं.	2	4	28 मार्च	23	54	—	—	—

रविवार-कैलेण्डर (1 जनवरी, सन् 2021 से 1 अप्रैल, सन् 2022 ई. तक)

2021 ई.	रविवार की तारीखें					2021 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	3	10	17	24	31	मई	2	9	16	23	30
फरवरी	7	14	21	28	—	जून	6	13	20	27	—
मार्च	7	14	21	28	—	जुलाई	4	11	18	25	—
अप्रैल	4	11	18	25	—	अगस्त	1	8	15	22	29

2021 ई.	रविवार की तारीखें					2022 ई.	रविवार की तारीखें				
सितम्बर	5	12	19	26	—	जनवरी	2	9	16	23	30
अक्टूबर	3	10	17	24	31	फरवरी	6	13	20	27	—
नवम्बर	7	14	21	28	—	मार्च	6	13	20	27	—
दिसम्बर	5	12	19	26	—						

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

13 अप्रैल, सन् 2021 ई. को हरिद्वार में 'कुम्भ-महापर्व'

(कुम्भपर्व का माहात्म्य और उसकी स्नान-तिथियां)

लेखक—प्रियव्रत शर्मा

समुद्रमन्थन से प्राप्त अमृतकलश को इन्द्र का पुत्र जयन्त राक्षसों से दूर देवताओं की अनुमति से लेकर भागा तो राक्षसों और देवताओं के मध्य अमृतप्राप्ति के लिए बारह दिव्य दिन (बारह सौर वर्ष) तक घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध के दौरान अमृतकलश को राक्षसों से बचाने के लिए उसे कभी प्रयाग, कभी उज्जैन, कभी हरिद्वार और कभी गोदावरी तट पर नासिक में छिपाया गया। इन चारों स्थलों पर अमृतकलश से अमृत के बिन्दु छलक कर गिरे। इसीलिए इन चारों स्थलों पर बारह सौर वर्षों में एक-एक बार कुम्भ पर्व मनाया जाता है। इस अमृतकलश को देवासुरसंग्राम के दिनों में सूर्य ने फूटने से बचाया और गुरु (बृहस्पति) ने इसकी देखभाल (सुरक्षा) की। यही कारण है कि—इन दोनों की विशेष राशियों में स्थिति के समय इन चार स्थलों पर कुम्भपर्व मनाये जाते हैं। कहीं ऐसा भी लिखा है कि—दैत्य-देवों की छीना-झपटी में अमृतकलश से अमृत की चार बूंदें हरिद्वार आदि में गिरीं, इसलिए इन स्थलों पर कुम्भपर्व मनाये जाते हैं।

कुम्भ राशिस्थ बृहस्पति के समय जिस दिन सूर्यदेव मेष राशि में प्रवेश करते हैं, उस दिन हरिद्वार में कुम्भपर्व मनाया जाता है। इस दिन हरिद्वार में गंगास्नान से मोक्ष की प्राप्ति होती है—

"कुम्भराशिगते जीवे मेषराशिगते रवौ।
हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृत्ति-वर्जनम्॥"

इस वर्ष (संवत् 2078 वि. में) 13 अप्रै., 2021 ई. को 26 घं. 31 मि., यानी 14 अप्रैल, 2021 ई. के दिन भा. स्टैं. टा. अनुसार 2 बजकर 31 मिनट पर सूर्यदेव मेषराशि में प्रविष्ट होंगे। इस समय बृहस्पति कुम्भ राशि में होगा। इसलिए इस दिन (13 अप्रैल को) शास्त्रानुसार हरिद्वार में कुम्भ-महापर्व पर गंगास्नान एवं दान, जप से महापुण्य प्राप्त होगा। मेष संक्रान्ति का पुण्यकाल अगले दिन (14 अप्रैल, 2021 ई. को) मध्याह्न तक रहेगा—**"मध्यरात्रात् परतः संक्रान्तौ परदिनस्य पूर्वार्धं पुण्यम्।"** (अर्थात् यदि संक्रान्ति अर्धरात्रि के बाद हो तो उसका पुण्यकाल दूसरे दिन के पूर्वार्ध में रहता है) —(धर्मसिन्धु)। क्योंकि संक्रान्ति के पुण्यकाल में भी तीर्थस्थानों, पवित्र नदियों में स्नान एवं दान-जप आदि का विशेष महत्त्व शास्त्रों में स्थान-स्थान पर वर्णित है, अतः हरिद्वार के कुम्भपर्व पर एकत्रित धार्मिक लोगों को 14 अप्रैल, सन् 2021 ई. को भी मेष संक्रान्ति के पुण्यकाल में (सूर्योदय से पहले अरुणोदयकाल से लेकर मध्याह्न तक) हरिद्वार में गंगास्नान, दान-जप आदि करने से चूकना नहीं चाहिए।

यहां विशेष शास्त्रीय निर्देश के अनुसार बेशक हरिद्वार के इस कुम्भपर्व का वास्तविक योग 13 अप्रैल, 2021 ई. को बना है, किन्तु 14 अप्रैल, 2021 ई. को मेष संक्रान्ति के पुण्यकाल में भी स्नान-दानादि का विशेष महत्त्व है। हालांकि इस दिन पुण्यकालानन्तर भी सारा दिन स्नान-दानादि का माहात्म्य समानरूप से माना गया है, अतः श्रद्धालु जनता इस दिन पुण्यकालरहित काल में भी धर्मकृत्यों का सम्पादन निःसन्देह कर सकती है।

ध्यान रहे कि—इस हरिद्वार कुम्भमहापर्व का प्रमुख शाही स्नान (जिसमें पूज्य जगद्गुरु शंकराचार्य एवं अखाड़ों के प्रमुख साधु-सन्त, महन्तश्री आदि गंगा में स्नान करते हैं) 13 अप्रैल को ही होगा।

कुम्भपर्व पर स्नान का माहात्म्य

कुम्भपर्व पर समस्त भारत ही नहीं, विश्व के विभिन्न देशों से असंख्य ब्रह्मनिष्ठ, तपोधन महात्मा लोग हरिद्वार में एकत्र होकर गंगा में स्नान करने के लिए अपने-अपने सम्प्रदाय के महात्माओं के साथ विशिष्ट साज-सज्जा के साथ शोभायात्रा के रूप में निकलते हैं, जिनके दर्शन से धार्मिक लोग अपने जीवन को कृत-कृत्य करते हैं। इस अवसर पर तपःपूत मूर्धन्य महान् आत्माओं का यह अपूर्व सम्मेलन वस्तुतः दर्शनीय होता है। इस महापर्व पर श्रीगंगाजी में स्नान से मोक्ष की प्राप्ति तथा सभी प्रकार की लौकिक कामनाओं की उपलब्धि की शास्त्रों में चर्चा है। **शास्त्र कहते हैं—इस पर्व पर गंगास्नान**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

से उपलब्ध होने वाले माहात्म्य का बखान करना तो ब्रह्माजी के लिए भी सम्भव नहीं—

"कुम्भराशिगते जीवे यद्दिने मेषगो रविः।
हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृत्ति-वर्जनम्॥
लोके 'कुम्भ' इति ख्यातः जानीयात् सर्वकामदः।
गंगायां स्नानमाहात्म्यं नालं वक्तुं चतुर्मुखः॥"

एक परम्पराप्राप्त वाक्य में तो कुम्भपर्व पर किये गये गंगास्नानजन्य फल को हजारों अश्वमेध एवं सैकड़ों वाजपेय यज्ञों तथा समस्त पृथ्वी की लाख बार की गयी प्रदक्षिणा से प्राप्त फल से भी कहीं बढ़कर बतलाया गया है—

"अश्वमेध – सहस्राणि वाजपेयशतानि च।
लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भस्नानेन तत्फलम्॥"

सन् 2021 ई. में हरिद्वार कुम्भ-महापर्व के विशेष स्नानदिन

कुम्भपर्व पर स्नान-दान से पुण्यार्जन करने के इच्छुक असंख्य श्रद्धालु लोग तो कुम्भपर्व के प्रधान स्नान-दिन से दो-अढाई मास पूर्व ही श्रीगंगा के तट पर आ बसते हैं। ऐसे श्रद्धालुओं के लिए पुण्यार्जन-निमित्त किये जा रहे तीर्थप्रवास के इन दिनों में अनेक विशेष पर्व आते हैं, जिनमें गंगास्नान का परम्परया बहुत विशेष माहात्म्य माना गया है। इन स्नान-दिनों को कुम्भपर्व का ही अंग माना गया है। **इस वर्ष हरिद्वार के इस कुम्भपर्व का प्रमुख स्नान तो 13 अप्रैल को ही होगा, लेकिन इसके अंगभूत अन्य स्नानदिन (जिनमें धार्मिक लोग गंगास्नान करके परमपुण्य प्राप्त कर सकेंगे) इस प्रकार है—**

1. माघी अमा (11 फर., 2021 ई.)—इस दिन को 'मौनी अमा' के रूप में माना जाता है और इस दिन अमा का प्रभुत्त्व सारा दिन विद्यमान है, अतः इस अवधि में स्नान-दानादि से धर्मनिष्ठ सज्जनों को बिल्कुल चूकना नहीं चाहिए।

2. वसन्त पंचमी (16 फरवरी)।

3. आरोग्य(रथ) सप्तमी (18 फरवरी)।

4. भीष्माष्टमी (20 फरवरी)।

5. माघी पूर्णिमा (27 फरवरी)।

6. श्री महाशिवरात्रि व्रतदिन (11 मार्च)—यह कुम्भपर्व का विशेष स्नानदिन है। इस दिन **'प्रथम शाही स्नान'** होगा, जिसमें दशनाम सम्प्रदाय के संन्यासी स्नान करते हैं। इस दिन स्नान-दानादि का विशेष माहात्म्य शास्त्रप्रतिपादित है, अतः इस दिन स्नान-दान से धर्मप्रवृत्त लोगों को पुण्यार्जन अवश्य करना चाहिए।

7. शनैश्चरी अमा (13 मार्च)।

8. मीन संक्रान्ति (14 मार्च)।

9. महाविषुवदिन (20 मार्च)।

10. चैत्री अमावस/सोमवती अमावस (12 अप्रैल)—यह भी कुम्भपर्व का विशेष स्नानदिन है। इस दिन कुम्भपर्व का **'द्वितीय शाही स्नान'** होगा, जिसमें षड्दर्शन के संन्यासी स्नान करते हैं।

11. मेष संक्रान्ति (13 अप्रैल)—**कुम्भपर्व का यह प्रमुख स्नानदिन है, जहां 'तृतीय(प्रमुख)शाही' स्नान होगा।** इस स्नान में षड्दर्शन के शंकराचार्यादि सन्त-महात्मा अपने विद्वान् शिष्यों सहित शान-शौकत से भाग लेते हैं। **ध्यान दें**—इस दिन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/नवरात्र/नववर्ष-प्रारम्भदिन भी है, जिससे इस कुम्भपर्व के स्नानादि का माहात्म्य और भी बढ़ जाता है। **ध्यान रहे**—जैसा कि पीछे भी लिख आये हैं कि—मेष संक्रान्ति-पुण्यकाल अगले दिन (14 अप्रैल, 2021 ई. को) मध्याह्न तक रहेगा, अतः 14 अप्रैल को भी धर्मिष्ठ जनता को स्नान-दानादि सम्पादित कर पुण्यार्जन अवश्य करना चाहिए।

12. श्रीरामनवमी (21 अप्रैल)।

13. चैत्री पूर्णिमा (27 अप्रैल)।

14. भौमवती अमा (11 मई)।

15. वृषसंक्रान्ति एवं श्री परशुराम जयन्ती/अक्षय तृतीया (14 मई)।

16. श्रीशंकराचार्य जयन्ती (17 मई)।

17. श्रीगंगा-जन्म (18 मई)।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

18. वैशाखी पूर्णिमा (कुम्भपर्व का अन्तिम स्नानदिन) (26 मई)।

इन स्नानदिनों के अतिरिक्त कुम्भपर्व पर हरिद्वार में प्रवास करने वाले धार्मिक जनों को सभी एकादशी व्रतों के दिनों अथवा अन्य विशेष पर्वदिनों में भी गंगास्नान का पुण्य प्राप्त करना चाहिए।

कुम्भपर्व पर गंगास्नान-पूजन-विधि

(प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित "व्रत-पर्व विवेक" से उद्धत)

नित्य स्नान, पूजा आदि के पश्चात् प्रमुख स्नान के दिन (13 अप्रैल, 2021 ई. को) अरुणोदयकाल में स्नान से पूर्व स्नानकर्त्ता यह संकल्प करे—

ओम् विष्णुः विष्णुः विष्णुः अद्य ब्रह्मणो वयसो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराह-कल्पे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे राक्षस-नामसंवत्सरे मेषसंक्रान्तिपर्वणि कुम्भस्थे गुरौ भौमवासरे अमुकगोत्रः अमुकनामाऽहम् अद्यावधि बोधाबोधपूर्वं कृतानां पापानां मार्जनाय जन्म-मरणावर्त्तान्मुक्तये च भगवत्या गंगायाः श्रीशिवस्य च षोडशोपचार-पूजनं विधाय गंगायाः पावनधारायाम् इह हरिद्वारे स्नानमाचरिष्यामि।

इस संकल्प के अनन्तर भगवत्स्मरणपूर्वक गंगास्नान करें। इस कुम्भ महापर्व के पर्वदेव **'शिव और गंगा'** हैं, अतः इस दिन पापापहारिणी भगवती गंगा एवं जगद्रक्षक भगवान् शिव की षोडशोपचार पूजा करके गंगा में पुष्पांजलि-अर्पणपूर्वक स्नान करते हुए यह मन्त्र पढ़ें—**"ओम् पापानि हर मे गंगे मुक्तिं देहि परां गतिम्।"**

(ध्यान रहे—कुम्भपर्व की अन्य तिथियों में भी उक्त विधि का ही अनुसरण धर्मनिष्ठ व्यक्ति को करना चाहिए। यदि स्नान अरुणोदय में न किया जा सके तो दिन के किसी भी भाग में स्नान किया जा सकता है किंवा स्नानकर्ता षोडशोपचार पूजा करने में यदि उस समय असमर्थ हो तो पंचोपचार अथवा मानसिक पूजा ही उसे उस समय कर लेनी चाहिए।)

स्नानानन्तर गंगा के तट पर बैठकर **"ॐ नमः शिवाय"** का जाप तथा **"गंगालहरी"** एवं **"शिव-स्तोत्र"** आदि का पाठ करना चाहिए। आगे दिये जा रहे भगवान् शिव के **'पंचाक्षरस्तोत्र'** एवं **'श्रीगंगाष्टक'** का पाठ भी इस दिन अभीष्ट फलप्रद माना जाता है।

श्रीशिव-पंचाक्षर-स्तोत्र

(श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचित)

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय॥१॥
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय॥२॥
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥३॥
वसिष्ठ-कुम्भोद्भव- गौतमार्य-मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय॥४॥
यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥५॥
पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥६॥

श्रीगङ्गाष्टकम्

(महर्षि वाल्मीकिकृत)

मातः शैलसुतासपत्नि वसुधाशृङ्गारहारावलि
स्वर्गारोहणवैजयन्ति भवतीं भागीरथि प्रार्थये।
त्वत्तीरे वसतस्त्वदम्बु पिबतस्त्वद्वीचिषु प्रेङ्खत-
स्त्वन्नाम स्मरतस्त्वदर्पितदृशः स्यान्मे शरीरव्ययः॥१॥
त्वत्तीरे तरुकोटरान्तरगतो गङ्गे विहङ्गो वरं
त्वन्नीरे नरकान्तकारिणि वरं मत्स्योऽथवा कच्छपः।
नैवान्यत्र मदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टघण्टारण-
त्कारत्रस्तसमस्तवैरिवनितालब्धस्तुतिर्भूपतिः॥२॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उक्षा पक्षी तुरग उरगः कोऽपि वा वारणो वा
वारीणः स्यां जननमरणक्लेशदुःखासहिष्णुः।
न त्वन्यत्र प्रविरलरणत्कङ्कणक्वाणमिश्रं
वारस्त्रीभिश्चमरमरुता वीजितो भूमिपालः॥३॥

काकैर्निष्कुषितं श्वभिः कवलितं गोमायुभिर्लुण्ठितं
स्त्रोतोभिश्चलितं तटाम्बुलुलितं वीचीभिरान्दोलितम्।
दिव्यस्त्रीकरचारु-चामर-मरुत्संवीज्यमानः कदा
द्रक्ष्येऽहं परमेश्वरि त्रिपथगे भागीरथि स्वं वपुः॥४॥

अभिनवबिसवल्ली पादपद्मस्य विष्णो-
र्मदनमथनमौलैः मालतीपुष्पमाला।
जयति जयपताका काप्यसौ मोक्षलक्ष्म्याः
क्षपितकलिकलङ्का जाह्नवी नः पुनातु॥५॥

एतत्ताल-तमाल-सालसरल - व्यालोलवल्लीलता-
च्छन्नं सूर्यकरप्रतापरहितं शङ्खेन्दु-कुन्दोज्ज्वलम्।
गन्धर्वामर-सिद्ध- किन्नरवधूतुङ्ग-स्तनास्फालितं
स्नानाय प्रतिवासरं भवतु मे गाङ्गं जलं निर्मलम्॥६॥

गाङ्गं वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतम्।
त्रिपुरारिशिरश्चारि पापहारि पुनातु माम्॥७॥

पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि।
झङ्कारकारि हरिपादरजोऽपहारि
गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि॥८॥

गङ्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते
वाल्मीकिना विरचितं शुभदं मनुष्यः।
प्रक्षाल्य गात्र-कलिकल्मष-पङ्कमाशु
मोक्षं लभेत्पतति नैव नरो भवाब्धौ॥९॥

———

श्री मार्त्तण्ड पंचांग एवं ज्योतिष कार्यालय

यह शताब्दी-पुराना उत्तरभारत का एकमात्र ऐसा ज्योतिष कार्यालय है, जिसने लोगों की जटिल से जटिलतर समस्याओं का फलितशास्त्रीय चमत्कृतिपूर्ण समाधान प्रस्तुत कर भारी अक्षुण्ण यश अर्जित किया है। इस कार्यालय के अधिष्ठाता

विश्वविख्यात ज्योतिषाचार्य पं. श्री इन्दुशेखर शर्मा

एवं श्री संयमी शर्मा एम.ए., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य हैं।

त्रिस्कन्ध ज्योतिष के पारदृश्वा आप द्वारा विगत वर्षों की गरिमामय अवधि में ऐसा शोधपूर्ण चिन्तन पाठकों को दिया गया है, जिससे इस शास्त्र में परम्परागत विचारधारा से अपने आप में एक विलग क्रान्तिकारी दर्शन भारतीय ज्योतिष जगत् में प्रतिष्ठापित हुआ है। आप भारतीय आर्ष ज्योतिष विद्या के सुपरीक्षित गूढ़ दिव्य सिद्धान्तों के आधार पर आपकी समस्याओं को निरस्त कर खोई हुए शान्ति लौटाने की अद्भुत क्षमता रखते हैं।

गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

ध्यान दें—बाहर से आने वाले महानुभाव टेलीफोन द्वारा पण्डित जी से मिलने का दिन व समय निश्चित अवश्य कर लें, अन्यथा सम्भव है—आपको कार्यालय पहुंचने पर समय न मिल पाये और निराश लौटना पड़े। प्रातः कार्यालय में आकर अपना क्रमांक (Token No.) कार्यकर्ता से प्राप्त कीजिये। इसी क्रमांक के अनुसार आप पण्डित जी से मिल सकेंगे। क्रमांक निकल जाने पर कार्यकर्ता से सम्पर्क करें। आप कार्यालय में आकर व हमारे लैंड-लाईन नं. 0160-2641277 पर 7.30 A.M. के बाद फोन कर अपना क्रमांक (Token No.) प्राप्त कर सकते हैं।

हमारे यहां से चित्रापक्षीय निरयण गणनापद्धति द्वारा क्षेत्रीय (Zonal) जन्मसमय, जन्मतारीख और जन्मस्थान के शुद्ध अक्षांश आदि के आधार पर सूर्योदयास्त आदि में सभी अपेक्षित संस्कार देकर भारतीय/विदेशी जन्मपत्र, टेवा और निवासस्थानीय अक्षांश आदि से वर्षफल बनाये जाते हैं। व्यापारिक मशवरे (सोना-चांदी आदि धातुओं एवं चना, ग्वार आदि अनाजों की तेजी-मन्दी) तथा किसी भी ग्रह किवा राशि के रत्न/उपरत्न के लिए प्रत्यक्ष मिलें अथवा फोन से सम्पर्क करें। श्री नवग्रहयन्त्र, सिद्ध श्री महालक्ष्मी आदि यन्त्र प्रत्यक्ष आकर प्राप्त करें। यदि आप प्रत्यक्ष प्राप्त करने में असमर्थ हों, तो मनिऑर्डर भेजकर रजिस्ट्री द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

"ईश्वरेच्छा से भूत-भविष्य में जो कुछ ग्रहगोचरवश अनुभव किया है, वह आपके समक्ष रख दिया है। जो घटित हो चुका है, उसके आप प्रत्यक्षदर्शी हैं। जो भविष्य है, उस पर आप भूतानुसंधान के आधार पर विश्वास करें।"

"By God's grace whatever has been experienced with regard to Past, Present and Future has been highlighted and shared with you. Whatever has so far occured has also been witnessed by the masses. Therefore, you can trust and have faith on the basis of our research, experience, expertise and level of accomplishment in the past."

Sanyami Sharma

श्री मार्त्तण्ड पंचांग एवं ज्योतिष कार्यालय

नजदीक-रेलवे स्टेशन, मु.पो. कुराली (मोहाली) पंजाब, पिन-140 103, भारत।

For Appointment - Inquiry Contact: 0160-2641277

www.shrimartand.com +91 9988407010

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहण-विवरण (सं. 2078 वि.)

गणक-परिलेखक—प्रियव्रत शर्मा, ग्रहणफल—इन्दुशेखर शर्मा,

इस वर्ष (सं. 2078 वि.) में भूमण्डल पर निम्नांकित चार ग्रहण घटित होंगे—

1. खग्रास चन्द्रग्रहण (26 मई, 2021 ई.)
2. कंकणाकृति सूर्यग्रहण (10 जून, 2021 ई.)
3. खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (19 नवं., 2021 ई.)
4. खग्रास सूर्यग्रहण (4 दिसं., 2021 ई.)

नोट करें—उल्लिखित चारों ग्रहणों में से केवल 'खग्रास चन्द्रग्रहण' पूर्वी भारत एवं 'खण्डग्रास चन्द्रग्रहण' पूर्व एवं उ.भारत में ग्रस्तोदय (छायाग्रहण) रूप में ही दिखाई देंगे। यद्यपि 'सूर्य सिद्धान्त' के अनुसार ये ग्रहण 'अंगुलाल्पत्वादनादेश्य' लिखे हैं। फिर भी ये ग्रहण आंशिक रूप में जिस भाग में दृश्य होंगे वहां उसका वेध भी लगेगा।

ध्यान दें—इन दोनों आंशिक चन्द्रग्रहणों के बिम्ब पूर्वी भारत के अन्तिम सीमाक्षेत्र के हैं। अतः इनका विशेष प्रभाव भारत के अन्य भागों में कहीं भी नहीं होगा।

1. खग्रास चन्द्रग्रहण (26 मई, सन् 2021 ई.)

वैशाख शुक्ल पूर्णिमा, बुधवार के दिन, अनुराधा नक्षत्र एवं वृश्चिक राशि में यह ग्रहण खण्डग्रास-रूप में पूर्वी भारत, आसाम की ओर ग्रहस्तोदय दिखाई देगा।

यह ग्रहण पूर्व एशिया, ऑस्ट्रेलिया, पैसिफिक सागर और अमेरिका में दिखाई देगा। भा.स्टैं.टा. के अनुसार इसका प्रारम्भ-समाप्ति निम्नांकित है—

छाया-ग्रहण-स्पर्श	14 घं. 17 मि. 42 से.
ग्रहण-स्पर्श	15 घं. 15 मि. 0 से.

ग्रहण चित्र—1

(26-05-2021 ई. का दृश्य खण्डग्रास चन्द्रग्रहण

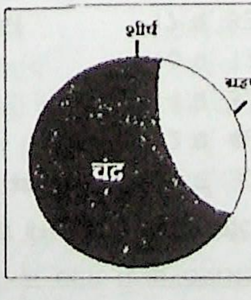

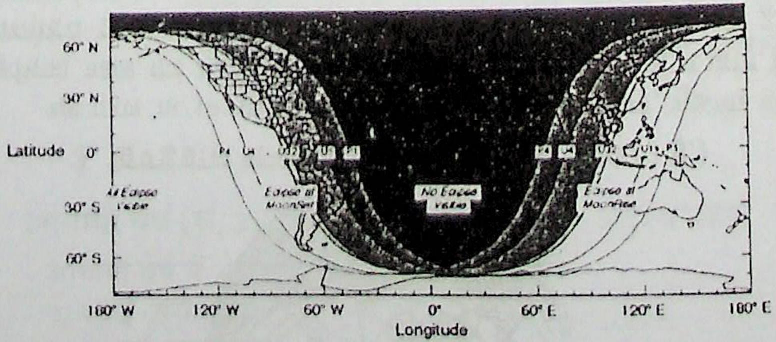

ग्रहण-सम्मीलन	16 घं. 41 मि. 27 से.	भा.स्टैं.टा. (26 मई, '21 ई.)
ग्रहण-मध्य	16 घं. 48 मि. 42 से.	
ग्रहण-उन्मीलन	16 घं. 55 मि. 57 से.	
ग्रहण समाप्त	18 घं. 22 मि. 24 से.	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

छाया-ग्रहण समाप्त	19 घं. 19 मि. 42 से.
खग्रास-समय	0 घं. 14 मि. 30 से.
खण्डग्रास-समय	3 घं. 7 मि. 24 से.
छाया-ग्रहण-समय	5 घं. 2 मि. 00 से.
क्रान्तिवृत्त में प्रतियुति	16 घं. 43 मि. 52 से.
ग्रहण का ग्रासमान	1.0095
छाया ग्रहण का ग्रासमान	1.9541

2. कंकणाकृति सूर्यग्रहण (10 जून, सन् 2021 ई.)

ज्येष्ठ कृष्ण अमावस, गुरुवार के दिन, मृगशिरा नक्षत्र और वृष राशि में यह ग्रहण घटित होगा। यह ग्रहण खण्डग्रास रूप में उत्तरी अमेरिका, यूरोप एवं एशिया में दिखाई देगा। लेकिन कंकणाकृतिरूप उत्तर कैनेडा, ग्रीनलैण्ड एवं रसिया में दिखाई देगा। **यह ग्रहण भारत में कहीं भी दृश्य न होने से यहां इसका ग्रहण-वेध नहीं माना जायेगा।**

इस ग्रहण की क्रमिक स्थिति निम्नांकित है—

ग्रहण-स्पर्श	13 घं. 42 मि. 20 से.	
ग्रहण-सम्मीलन	15 घं. 19 मि. 48 से.	
ग्रहण-मध्य	16 घं. 11 मि. 56 से.	
ग्रहण-उन्मीलन	16 घं. 53 मि. 00 से.	भा.स्टैं.टा. (10 जून, 2021 ई.)
ग्रहण समाप्त	18 घं. 41 मि. 21 से.	
क्रान्तिवृत्त में युति	16 घं. 21 मि. 39 से.	
भूमध्यरेखा में युति	16 घं. 11 मि. 05 से.	
खग्रास-समय	0 घं. 03 मि. 51 से.	
ग्रहण का ग्रासमान	0.9435	
ग्रहण का आच्छादन	0.8903	
ग्रहण की मध्यवर्ती रेखा की चौड़ाई	526.8 कि. मी.	

यह ग्रहण उत्तर शरीय है।

ग्रहणचित्र-2
(10 जून, 2021 ई.)

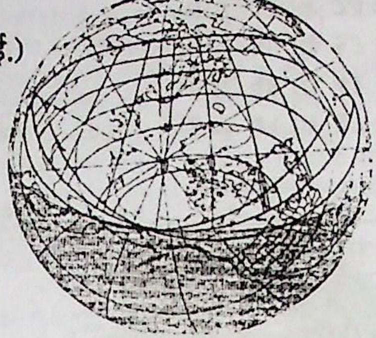

3. खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (19 नवम्बर, सन् 2021 ई.)

यह ग्रहण 18/19 नवम्बर, सन् 2021 ई. में कार्तिक पूर्णिमा, शुक्रवार को कृत्तिका नक्षत्र एवं वृष राशि में घटित होगा। यह ग्रहण पूर्व एवं उ.भारत में **ग्रस्तोदय-छाया-ग्रहणरूप में** दृश्य होगा। जबकि पूर्वी भारत में 96 अंश 23 कला पूर्व एवं 28 अंश 30 कला उत्तर के आसपास ग्रस्तोदयरूप में 01 से 05 मि. तक खण्डग्रासरूप में दृश्य होगा। यह अमेरिका, उत्तरी यूरोप, पूर्व एशिया, ऑस्ट्रेलिया और पैसिफिक सागर में खण्डग्रासरूप में दृश्य होगा।

भा.स्टैं.टा. अनुसार इस ग्रहण के प्रारम्भादि इस प्रकार हैं—

छाया-ग्रहण का स्पर्श	11 घं. 32 मि. 09 से.	
ग्रहण-स्पर्श	12 घं. 48 मि. 42 से.	
ग्रहण-मध्य	14 घं. 32 मि. 55 से.	
ग्रहण समाप्त	16 घं. 17 मि. 6 से.	
छायाग्रहण समाप्त	17 घं. 33 मि. 43 से.	
खण्डग्रास-समय	3 घं. 28 मि. 24 से.	भा.स्टैं.टा. (19 नवम्बर, 2021 ई.)
छायाग्रहण-समय	6 घं. 01 मि. 34 से.	
क्रान्तिवृत्त में प्रतियुति	14 घं. 27 मि. 00 से.	
भूमध्य रेखा में प्रतियुति	14 घं. 14 मि. 00 से.	
ग्रहण का ग्रासमान	0.9742	
छायाग्रहण का ग्रासमान	2.0770	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

यह ग्रहण उत्तर शरीय है।
छायाग्रहण का ग्रासमान 2.0770

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यह ग्रहण उत्तर शरीय है।

ग्रहणचित्र-3

(19-11-2021, खण्डग्रास चन्द्रग्रहण)

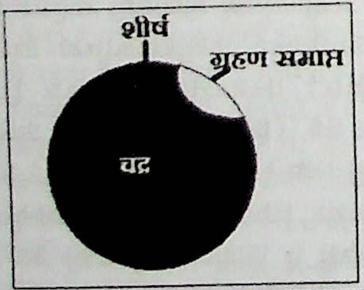

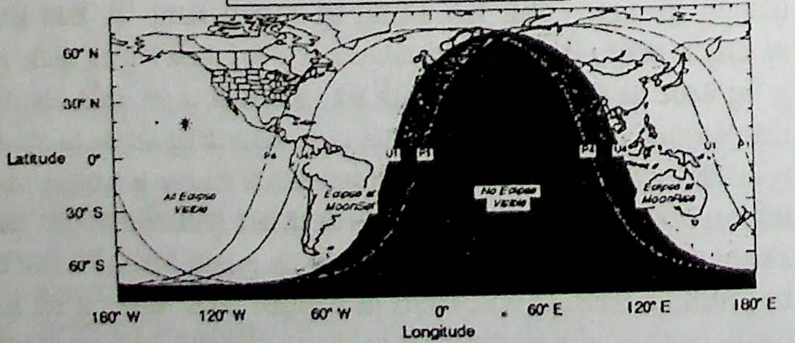

4. खग्रास सूर्यग्रहण (4 दिसम्बर, सन् 2021 ई.)

यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं। 4 दिसम्बर, सन् 2021 ई., मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस, शनिवार के दिन ज्येष्ठा नक्षत्र व वृश्चिक राशि में घटित होगा। यह ग्रहण खण्डग्रास के रूप में अंटार्कटिका के कुछ भाग में, दक्षिण अफ्रीका एवं दक्षिण अटलाण्टिक में दिखाई देगा, लेकिन खग्रासरूप में अंटार्कटिका में ही दिखाई देगा।

ग्रहण की क्रमिक-स्थिति-समय (भा.स्टैं.टा.)—

ग्रहण-स्पर्श	10 घं. 59 मि. 16 से.	
ग्रहण-सम्मीलन	12 घं. 30 मि. 06 से.	
ग्रहण-मध्य	13 घं. 03 मि. 27 से.	
ग्रहण-उन्मीलन	13 घं. 30 मि. 45 से.	
ग्रहण समाप्त	15 घं. 07 मि. 29 से.	भा.स्टैं.टा.
क्रान्तिवृत्त में युति	13 घं. 13 मि. 00 से.	(4 दिसम्बर,
भूमध्यरेखा में युति	13 घं. 26 मि. 10 से.	2021 ई.)
खग्रास-समय	0 घं. 01 मि. 54 से.	
ग्रहण का ग्रासमान	1.0368	
ग्रहण का आच्छादन	1.0749	

ग्रहण की मध्यवर्ती रेखा (मार्ग) की चौड़ाई 418.8 कि.मी.

यह ग्रहण दक्षिण शरीय है।

ग्रहणचित्र-4

(4 दिसं., 2021 ई.)

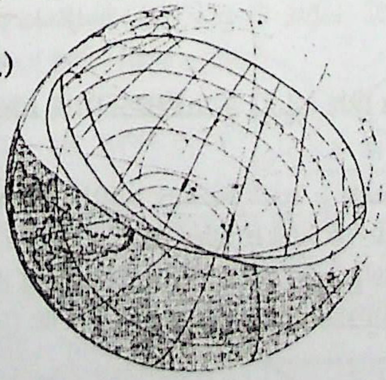

खग्रासरूप में अण्टार्कटिका में ही यह 4 दिसं. का सूर्यग्रहण दिखाई देगा।

आगामी वर्ष (सं. 2079 वि.) में भारत में दृश्य-अदृश्य ग्रहण

आगामी वर्ष में भूगोल पर चार ग्रहण घटित होंगे—

1. 1 मई-सूर्यग्रहण,
2. 18 मई-चन्द्रग्रहण,
3. 25 अक्तूबर-सूर्यग्रहण,
4. 8 नवम्बर-चन्द्रग्रहण

नोट—इनमें से 25 अक्तूबर का सूर्यग्रहण एवं 8 नवम्बर का चन्द्रग्रहण ही भारत में दिखाई देंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् 2078 वि. की कुल जन्म-वर्ष-प्रश्न-मुहूर्त्त-कुण्डलियां

इन कुण्डलियों के श्रमसाध्य निर्माण में पूर्ण सहयोग के लिए "श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय"—कुराली (पं.) के अनुभवी कार्यकर्त्ता ग्राम सुन्हाड़—सौर, सोलन (हि.प्र.) निवासी प्रबुद्ध ज्योतिर्विद्वान् आचार्य श्रीकृष्ण शर्मा, शास्त्री, **M.A.**, साहित्याचार्य, वेदाचार्य को आशीर्वाद पुरस्सर धन्यवाद दिये बिना मैं नहीं रह सकता।—**प्रियव्रत शर्मा**

यद्यपि जातकपद्धति एवं ताजिक ग्रन्थों में द्वादश-भाव-साधनपूर्वक बनायी गयी भावकुण्डली द्वारा भावफलादेश कहने का निर्देश है, तथापि लगभग सभी दैवज्ञ जातक-जन्मकालिक, प्रश्नकालिक, वर्षप्रवेश-कालिक तथा विवाहादि मुहूर्त्तकालिक आदि राशि-कुण्डलियों को ही फलादेशार्थ प्रयुक्त करने की परम्परा बनाये हुए हैं। जन्म, प्रश्न, वर्षप्रवेश या मुहूर्त्तकालीन लग्नराशि को प्रथम भाव राशि तथा तदुत्तरवर्ती राशियों को क्रमशः द्वितीय आदि भावों की राशियां मानकर बनायी गयी जन्मकुण्डली द्वारा ही समस्त फलादेश कहने का बहुत बड़ा सम्प्रदाय फलित ज्योतिष में व्यापक प्रभाव बनाये हुए है। सच बात तो यह है—फलित में भावचक्र तो केवल सिद्धान्तरूप में ही दिखाई पड़ता है, इसका प्रयोगात्मक-रूप तो लगभग लुप्त-सा ही हो गया है। इसे दृष्टि में रखते हुए यहां सं. 2078 वि. में बनने वाली सभी (कुल 206) कुण्डलियां दी जा रही हैं। **"किस तारीख के कितने बजे से, किस तारीख के कितने बजे तक"**—कौन-सी कुण्डली बनती है (यानी सूर्यादि ग्रह किन-किन राशियों में स्थित हैं), यह भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम अनुसार प्रत्येक कुण्डली के ऊपर यहां निर्दिष्ट है। इन कुण्डलियों के आधार पर दैवज्ञ लोग इस वर्ष में उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली (जन्मकालिक ग्रहस्थिति—कुण्डली), इस वर्ष घटित होने वाले वर्षप्रवेश-कालानुसारी वर्षप्रवेश-कुण्डली (वर्षप्रवेश- कालिक ग्रहस्थिति-कुण्डली) तथा अभीष्टकालिक प्रश्नकुण्डली (प्रश्नकालिक ग्रहस्थिति-कुण्डली) एवं अभीष्ट विवाहादि मुहूर्त्तकालिक ग्रहस्थिति-कुण्डली तुरन्त जान सकेंगे और तात्कालिक स्थानीय लग्न ज्ञात कर इन ग्रहस्थिति-कुण्डलियों को लग्नकुण्डलियां अनायास ही बना सकेंगे।

ध्यान दें—यहां दी गयीं ये कुण्डलियां विवाहादि मुहूर्त्तकालिक लग्नों के निर्णय में भी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई हैं। लग्ननिर्णयार्थ अपेक्षित ग्रहस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यहां दी गयीं इन कुण्डलियों द्वारा दैवज्ञ स्वयं भी लग्न की शुद्धि-अशुद्धि का यथार्थ निर्णय अत्यन्त आसानीपूर्वक अनायास ही कर सकते हैं।

क्योंकि, आगे दी जा रही ये सभी कुण्डलियां भारतीय स्टैण्डर्ड टाईमानुसार हैं, अतः भारत में इन्हें बिना किसी परिवर्तन के प्रयोग में लाया जायेगा। यदि इन्हें भारत से अन्य किसी भी देश के लिए प्रयोग में लाना हो, तब उस देश के स्थानीय स्टैण्डर्ड टाइम को केवल भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में बदलकर इन्हें तुरन्त प्रयोग में लाइये।

स्पष्टता के लिए आगे उदाहरण दे रहे हैं। यहां पहले भारतस्थलीय उदाहरण लेते हैं—

उदाहरण (1)—चण्डीगढ़ (U.T.) में 15 अप्रैल, 2021 ई. को 10 घं. 50 मि. (भा.स्टैं. टा.) पर उत्पन्न होने वाले जातक की जन्मकुण्डली ज्ञात करनी है?

क्योंकि, इस जातक का जन्म **"15 अप्रैल, 00 घं. 9 मि. से 16 अप्रैल 20 घं. 55 मि."** के मध्य हुआ है, अतः इसकी जन्मकालिक कुण्डली (ग्रहस्थिति-कुण्डली) यहां दी गयी इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरूप होगी। **किंच**—चण्डीगढ़ में 15 अप्रैल को 10 घं. 50 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर मिथुन लग्न है। अतः इस जातक की जन्मलग्न-कुण्डली यह बनी—

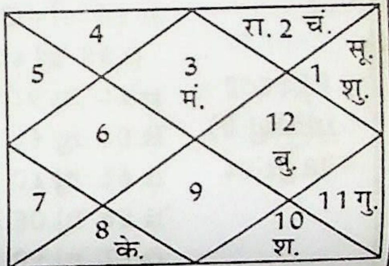

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अब भारतेतर देश का उदाहरण लेते हैं—

उदाहरण (2)—15 जून, 2021 ई. को Madrid (Spain) में 08 घं. 30 मि. पर पैदा होने वाले जातक की जन्मलग्नकुण्डली ज्ञात करनी है?

Madrid (Spain) में D.S.T. (ग्रीष्मकालीन समय) चलता है, जो क्षेत्रीय स्टैं.टा. से एक घण्टा आगे रहता है। इन दिनों (गर्मियों में) यह लागू है। **स्पष्ट है**—इस जातक का यह जन्मसमय D.S.T. अनुसार है। अत: Spain स्टैं.टा. अनुसार इस समय इस जातक का जन्मकाल 7 घं. 30 मि. होगा। Madrid (Spain) के स्टैं.टा. से भा.स्टैं.टा. 4 घं. 30 मि. आगे रहता है, अत: इस जातक की जन्मकालिक भारतीय तारीख 15 जून, 2021 ई. और जन्मकाल 12 घं. 00 मि. (भा.स्टैं.टा.) बने। क्योंकि, इस जातक का जन्म भा.स्टैं.टा. अनुसार **"15 जून, 6 घं. 1 मि. से 15 जून 21 घं. 41 मि."** के मध्य हुआ है, अत: इसकी जन्म-कालिक-कुण्डली (ग्रहस्थिति-कुण्डली) यहां दी गयी इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरूप होगी। **किंच**—Madrid में इसके जन्म के समय लग्न मिथुन होगा। तदनुसार इसकी कुण्डली यह बनेगी—

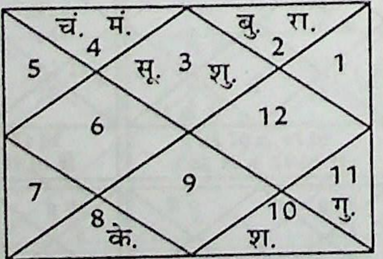

अब वर्षकुण्डली का उदाहरण ले रहे हैं—

उदाहरण (3)—भारत (हि.प्र.), सोलन में 15 अगस्त, 1974 ई. (गुरुवार) को 11 घं. 14 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर जन्मे एवं सम्प्रति मोहाली (पं.) में रहने वाले जातक की ई. सन् 2021-22 की वर्षकुण्डली जाननी है?

इस जातक के गताब्द यहां 47 मिले और 48वां वर्षप्रवेश 15 अगस्त, 2021 ई. (रविवार) को 12 घं. 25 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर होगा।

क्योंकि, इस जातक का वर्षप्रवेश **"13 अगस्त 19 घं. 28 मि. से 15 अगस्त 22 घं. 44 मि."** के मध्य हुआ है, अत: इसकी वर्षकुण्डली (48वें वर्ष की) यहां दी गयी इसी कुण्डली अनुरूप होगी। **किंच**—इस जातक के निवासस्थान मोहाली (पं.) में इस समय (15 अगस्त, 2021 ई. को 12 घं. 25 मि. पर) तुला लग्न है, अत: इस जातक की वर्षकुण्डली यह बनेगी—

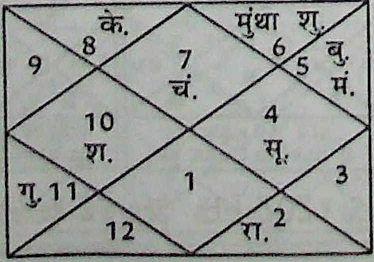

अब प्रश्नकुण्डली का उदाहरण भी ले लेते हैं—

उदाहरण (4)—मान लें, 13 अप्रैल, 2021 ई. को (नव संवत्सर 2078 वि. के प्रथम दिवस पर) 11 घं. 15 मि. (भा.स्टैं. टा.) पर आपके पास चण्डीगढ़ (U.T.), भारत में आकर कोई प्रश्नकर्त्ता कार्यसिद्धि/असिद्धि का प्रश्न करता है। इसकी प्रश्नकुण्डली जाननी है?

यहां प्रश्नकालिक तारीख 13 अप्रैल, 2021 ई. और प्रश्नकाल 11 घं. 15 मि. आगे इस स्तम्भ में दिये गये **"13 अप्रैल 6 घं. 1 मि. से 14 अप्रैल 1 घं. 13 मि."** के मध्य पड़ता है, अत: यहां यह प्रश्न-कुण्डली इसी अवधि के अन्तर्गत आने वाली इस कुण्डली के अनुरूप होगी। **किंच**—यहां प्रश्नस्थल (चण्डीगढ़) में इस समय लग्न मिथुन है, अत: यहां इस प्रश्नकर्त्ता की कुण्डली इस तरह बनेगी—

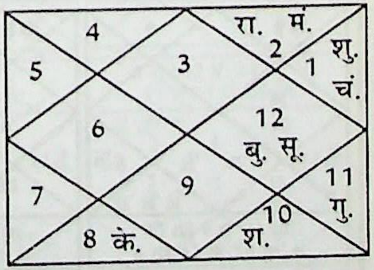

आगे मुहूर्त्तकुण्डली का उदाहरण ले रहे हैं—

उदाहरण (5)—हमारे इस पंचांग (श्रीमार्त्तण्ड) में 25 अप्रैल, 2021 ई. को पृष्ठ 254 पर दिये सिंह लग्न वाले विवाहमुहूर्त्त की कुण्डली जाननी है?

इस लग्न (सिंह) का काल इस दिन (25 अप्रैल, 2021 ई. को) चण्डीगढ़ में 13 घं. 19 मि. से 15 घं. 39 मि. तक है और यह लग्नकाल इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिये गये **"24 अप्रै. 11 घं. 55 मि. से 26 अप्रै. 12 घं. 30 मि."** के मध्य पड़ता है, अत: यह मुहूर्त्त-कुण्डली (सिंह लग्न की) यहां दी इसी कुण्डली के अनुरूप इस तरह बनेगी—

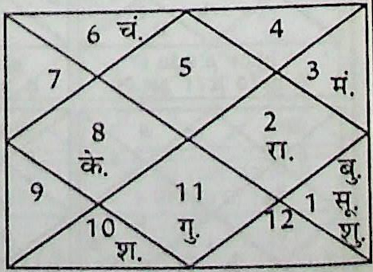

इस प्रकार पाठक समझ गये होंगे—जन्म, वर्षप्रवेश, प्रश्न, मुहूर्त्त आदि कालिक लग्नकुण्डलियां बनाना अत्यन्त सरल है।

ध्यान रहे—कुण्डली की ग्रहस्थिति (ग्रहों की राशि आदि) स्थानभेद से बिल्कुल नहीं बदलती, केवल लग्न ही बदला करता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

13 अप्रैल से 23 मई, सन् 2021 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

13 अप्रैल 6 घं. 1 मि. से
14 अप्रैल 1 घं. 13 मि.

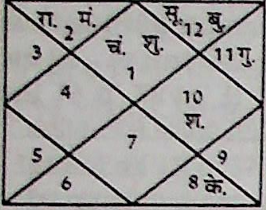

14 अप्रैल 1 घं. 14 मि. से
14 अप्रैल 2 घं. 30 मि.

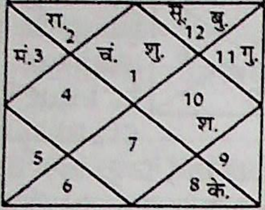

14 अप्रैल 2 घं. 31 मि. से
15 अप्रैल 0 घं. 8 मि.

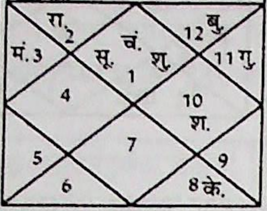

15 अप्रैल 0 घं. 9 मि. से
16 अप्रैल 20 घं. 55 मि.

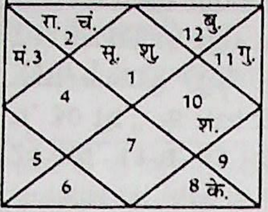

16 अप्रैल 20 घं. 56 मि. से
17 अप्रैल 13 घं. 08 मि.

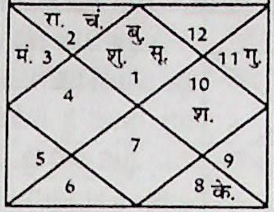

17 अप्रैल 13 घं. 09 मि. से
20 अप्रैल 0 घं. 27 मि.

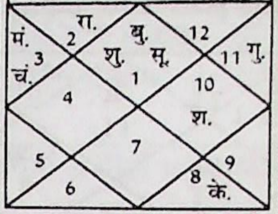

20 अप्रैल 0 घं. 28 मि. से
22 अप्रै. 8 घं. 14 मि.

22 अप्रै. 8 घं. 15 मि. से
24 अप्रै. 11 घं. 54 मि.

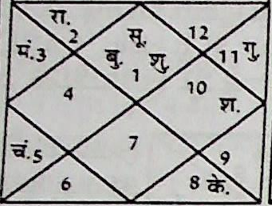

24 अप्रै. 11 घं. 55 मि. से
26 अप्रै. 12 घं. 30 मि.

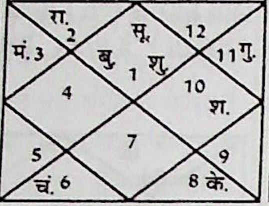

26 अप्रै. 12 घं. 31 मि. से
28 अप्रै. 11 घं. 54 मि.

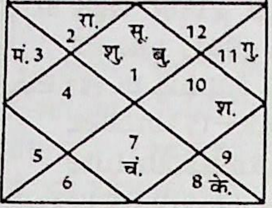

28 अप्रै. 11 घं. 55 मि. से
30 अप्रै. 12 घं. 06 मि.

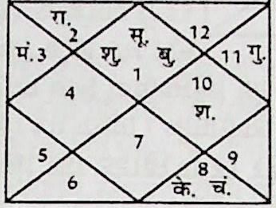

30 अप्रै. 12 घं. 07 मि. से
1 मई 5 घं. 40 मि.

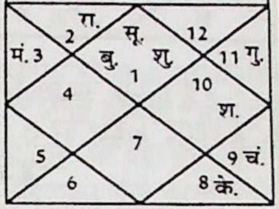

1 मई 5 घं. 41 मि. से
2 मई 14 घं. 44 मि.

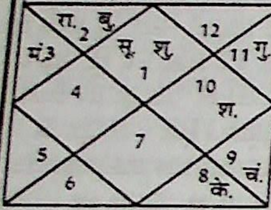

2 मई 14 घं. 45 मि. से
4 मई 13 घं. 25 मि.

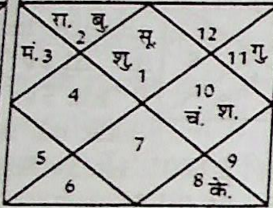

4 मई 13 घं. 26 मि. से
4 मई 20 घं. 42 मि.

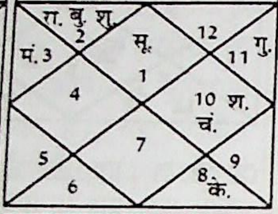

4 मई 20 घं. 43 मि. से
7 मई 5 घं. 53 मि.

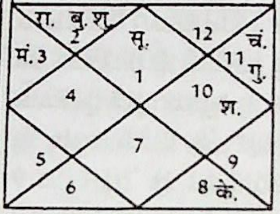

7 मई 5 घं. 54 मि. से
9 मई 17 घं. 27 मि.

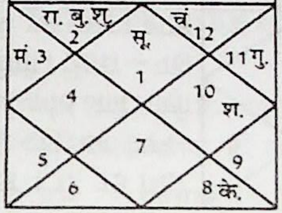

9 मई 17 घं. 28 मि. से
12 मई 6 घं. 17 मि.

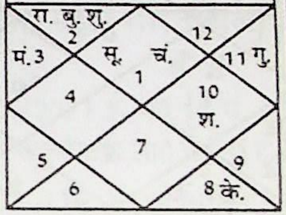

12 मई 6 घं. 18 मि. से
14 मई 19 घं. 12 मि.

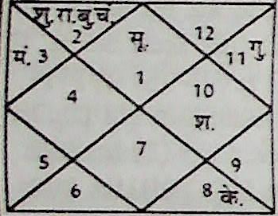

14 मई 19 घं. 13 मि. से
14 मई 23 घं. 23 मि.

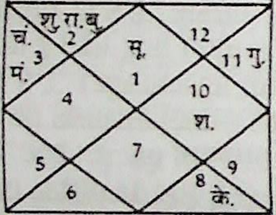

14 मई 23 घं. 24 मि. से
17 मई 6 घं. 51 मि.

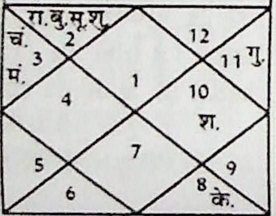

17 मई 6 घं. 52 मि. से
19 मई 15 घं. 47 मि.

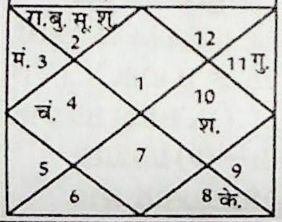

19 मई 15 घं. 48 मि. से
21 मई 21 घं. 05 मि.

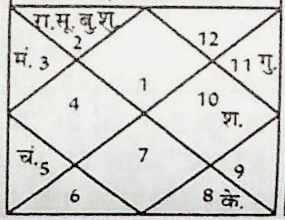

21 मई 21 घं. 06 मि. से
23 मई 23 घं. 02 मि.

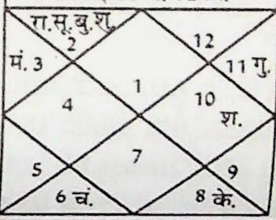

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

23 मई से 3 जुलाई, सन् 2021 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

23 मई 23 घं. 3 मि. से 25 मई 22 घं. 54 मि.

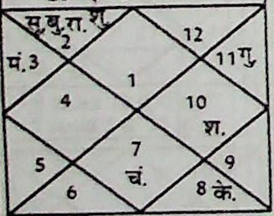

25 मई 22 घं. 55 मि. से 26 मई 8 घं. 55 मि.

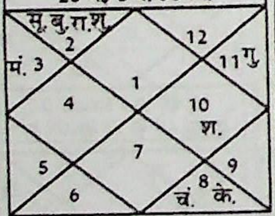

26 मई 8 घं. 56 मि. से 27 मई 22 घं. 28 मि.

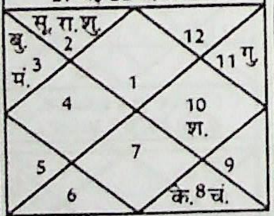

27 मई 22 घं. 29 मि. से 28 मई 23 घं. 59 मि.

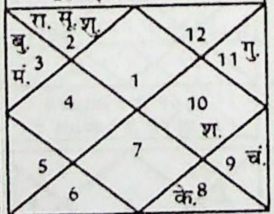

28 मई 24 घं. 00 मि. से 29 मई 23 घं. 38 मि.

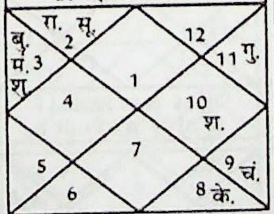

29 मई 23 घं. 39 मि. से 1 जून 3 घं. 57 मि.

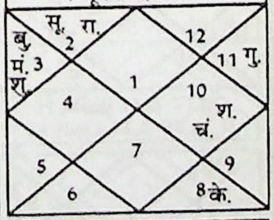

1 जून 3 घं. 58 मि. से 2 जून 6 घं. 50 मि.

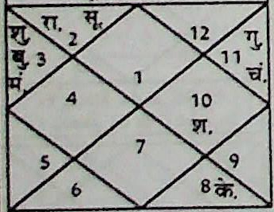

2 जून 6 घं. 51 मि. से 3 जून 2 घं. 12 मि.

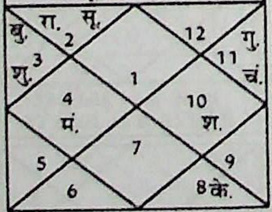

3 जून 2 घं. 13 मि. से 3 जून 12 घं. 06 मि.

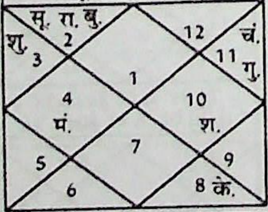

3 जून 12 घं. 07 मि. से 5 जून 23 घं. 26 मि.

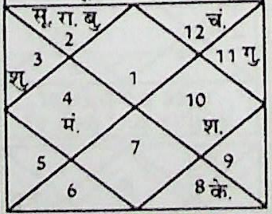

5 जून 23 घं. 27 मि. से 8 जून 12 घं. 22 मि.

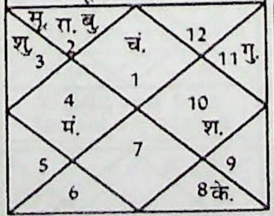

8 जून 12 घं. 23 मि. से 11 जून 1 घं. 08 मि.

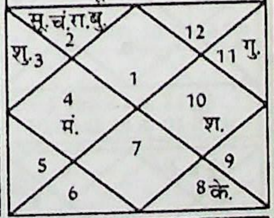

11 जून 1 घं. 09 मि. से 13 जून 12 घं. 31 मि.

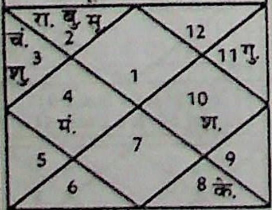

13 जून 12 घं. 32 मि. से 15 जून 6 घं. 00 मि.

15 जून 6 घं. 01 मि. से 15 जून 21 घं. 41 मि.

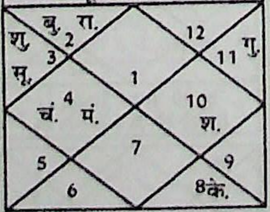

15 जून 21 घं. 42 मि. से 18 जून 4 घं. 06 मि.

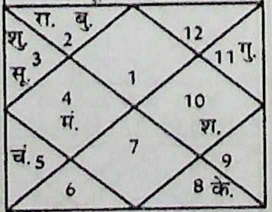

18 जून 4 घं. 07 मि. से 20 जून 7 घं. 41 मि.

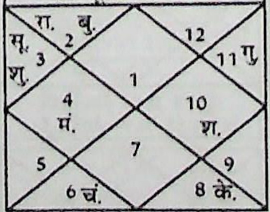

20 जून 7 घं. 42 मि. से 22 जून 8 घं. 58 मि.

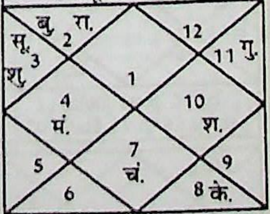

22 जून 8 घं. 59 मि. से 22 जून 14 घं. 20 मि.

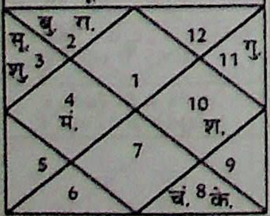

22 जून 14 घं. 21 मि. से 24 जून 9 घं. 09 मि.

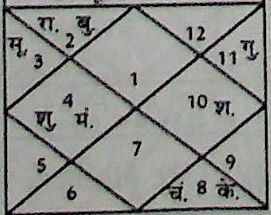

24 जून 9 घं. 10 मि. से 26 जून 9 घं. 54 मि.

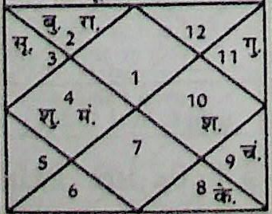

26 जून 9 घं. 55 मि. से 28 जून 12 घं. 58 मि.

28 जून 12 घं. 59 मि. से 30 जून 19 घं. 42 मि.

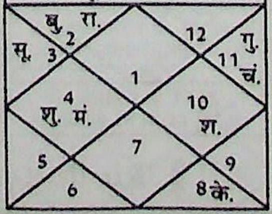

30 जून 19 घं. 43 मि. से 3 जुलाई 6 घं. 12 मि.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

3 जुलाई से 11 अगस्त, सन् 2021 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

3 जुलाई 6 घं. 13 मि. से
5 जुलाई 18 घं. 58 मि.

5 जुलाई 18 घं. 59 मि. से
7 जुलाई 11 घं. 04 मि.

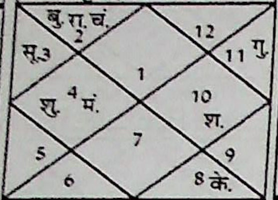

7 जुलाई 11 घं. 05 मि. से
8 जुलाई 7 घं. 40 मि.

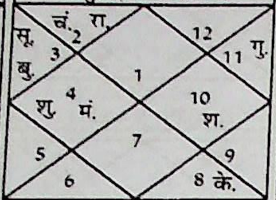

8 जुलाई 7 घं. 41 मि. से
10 जुलाई 18 घं. 36 मि.

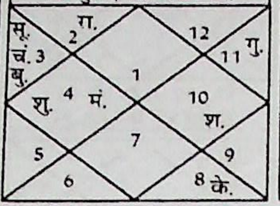

10 जुलाई 18 घं. 37 मि. से
13 जुलाई 3 घं. 13 मि.

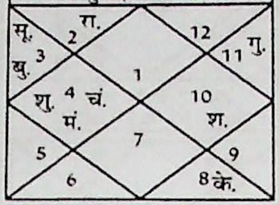

13 जुलाई 3 घं. 14 मि. से
15 जुलाई 9 घं. 38 मि.

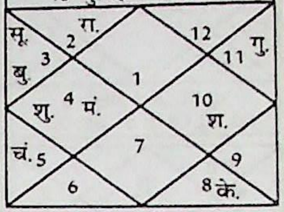

15 जुलाई 9 घं. 39 मि. से
16 जुलाई 16 घं. 52 मि.

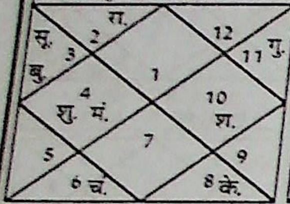

16 जुलाई 16 घं. 53 मि. से
17 जुलाई 9 घं. 25 मि.

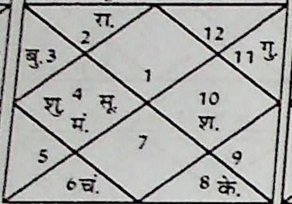

17 जुलाई 9 घं. 26 मि. से
17 जुलाई 14 घं. 06 मि.

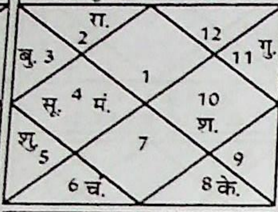

17 जुलाई 14 घं. 07 मि. से
19 जुलाई 16 घं. 52 मि.

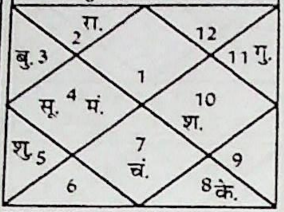

19 जुलाई 16 घं. 53 मि. से
20 जुलाई 17 घं. 54 मि.

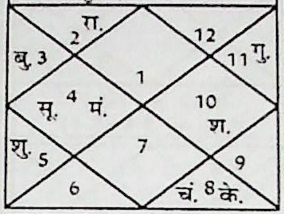

20 जुलाई 17 घं. 55 मि. से
21 जुलाई 18 घं. 28 मि.

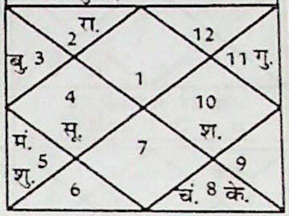

21 जुलाई 18 घं. 29 मि. से
23 जुलाई 19 घं. 56 मि.

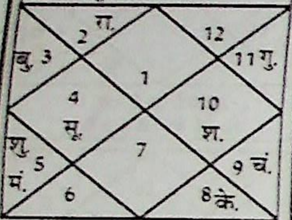

23 जुलाई 19 घं. 57 मि. से
25 जुलाई 11 घं. 39 मि.

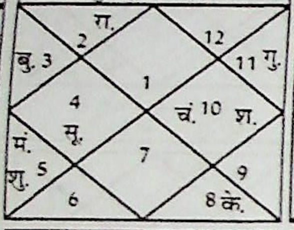

25 जुलाई 11 घं. 40 मि. से
25 जुलाई 22 घं. 46 मि.

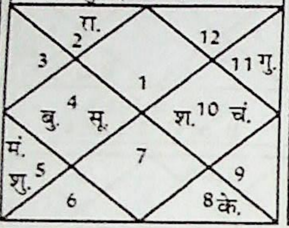

25 जुलाई 22 घं. 47 मि. से
28 जुलाई 4 घं. 32 मि.

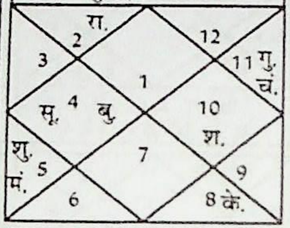

28 जुलाई 4 घं. 33 मि. से
30 जुलाई 14 घं. 01 मि.

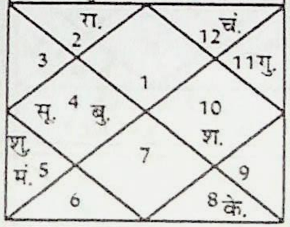

30 जुलाई 14 घं. 02 मि. से
2 अगस्त 2 घं. 21 मि.

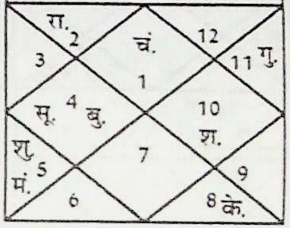

2 अगस्त 2 घं. 22 मि. से
4 अगस्त 15 घं. 06 मि.

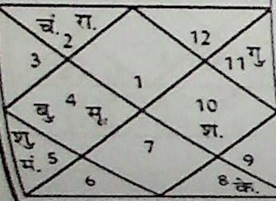

4 अगस्त 15 घं. 07 मि. से
7 अगस्त 1 घं. 53 मि.

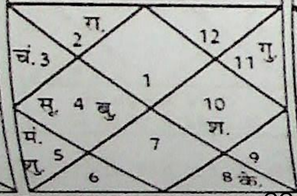

7 अगस्त 1 घं. 54 मि. से
9 अगस्त 1 घं. 33 मि.

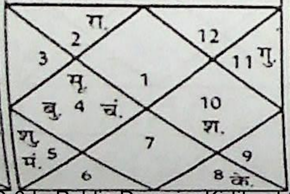

9 अगस्त 1 घं. 34 मि. से
9 अगस्त 9 घं. 49 मि.

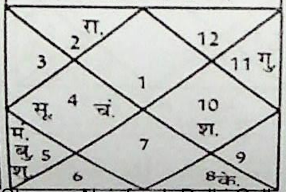

9 अगस्त 9 घं. 50 मि. से
11 अगस्त 11 घं. 31 मि.

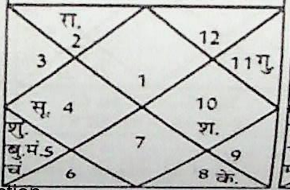

11 अगस्त 11 घं. 32 मि. से
11 अगस्त 15 घं. 22 मि.

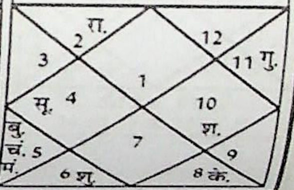

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

11 अगस्त से 20 सितम्बर, सन् 2021 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

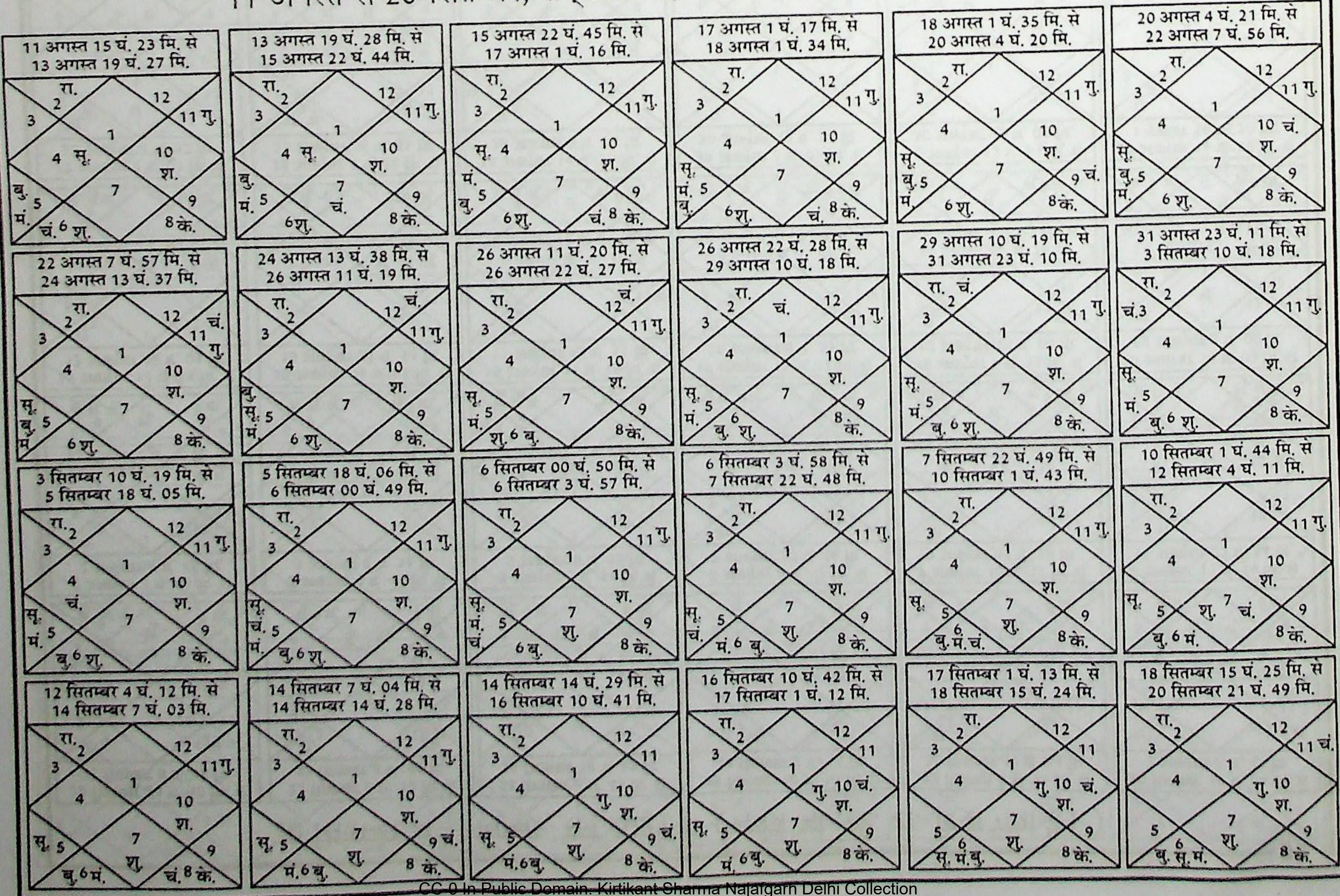

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

20 सितम्बर से 1 नवम्बर, सन् 2021 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

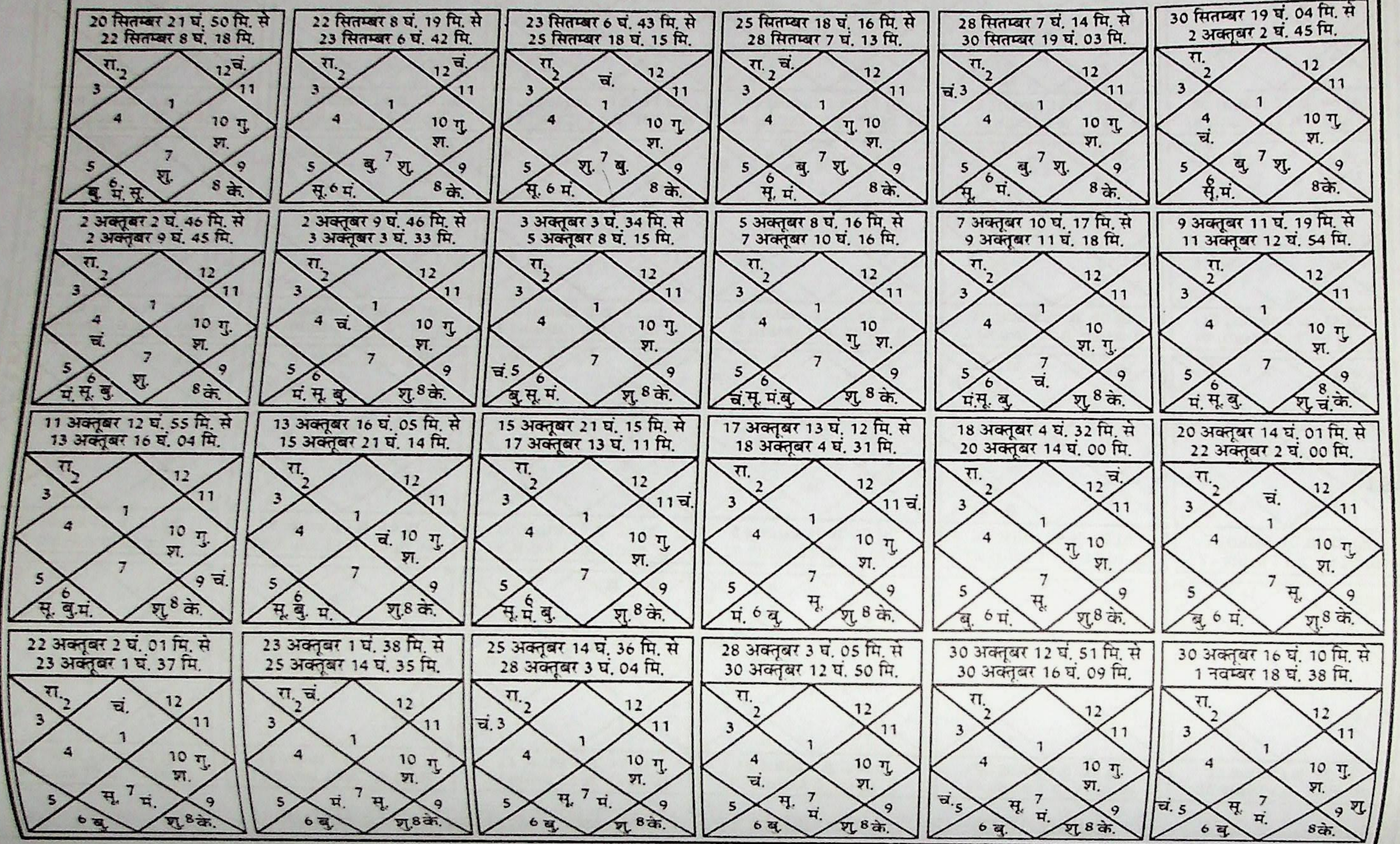

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

1 नवम्बर से 10 दिसम्बर, सन् 2021 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

1 नवम्बर 18 घं. 39 मि. से 2 नवम्बर 9 घं. 51 मि.

2 नवम्बर 9 घं. 52 मि. से 3 नवम्बर 20 घं. 52 मि.

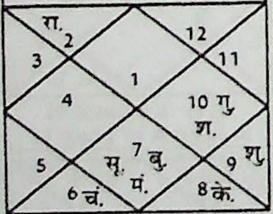

3 नवम्बर 20 घं. 53 मि. से 5 नवम्बर 21 घं. 03 मि.

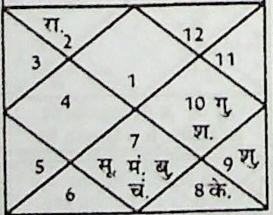

5 नवम्बर 21 घं. 04 मि. से 7 नवम्बर 21 घं. 03 मि.

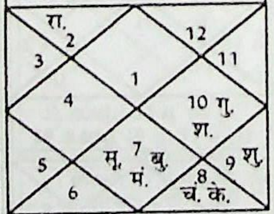

7 नवम्बर 21 घं. 04 मि. से 9 नवम्बर 22 घं. 35 मि.

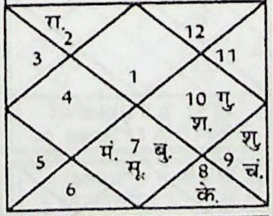

9 नवम्बर 22 घं. 36 मि. से 12 नवम्बर 2 घं. 50 मि.

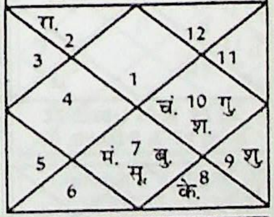

12 नवम्बर 2 घं. 51 मि. से 14 नवम्बर 10 घं. 10 मि.

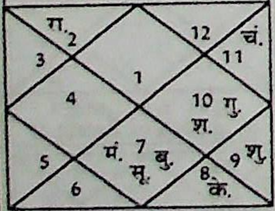

14 नवम्बर 10 घं. 11 मि. से 16 नवम्बर 13 घं. 01 मि.

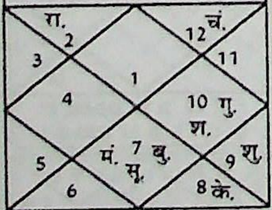

16 नवम्बर 13 घं. 02 मि. से 16 नवम्बर 20 घं. 13 मि.

16 नवम्बर 20 घं. 14 मि. से 19 नवम्बर 8 घं. 12 मि.

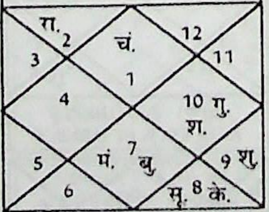

19 नवम्बर 8 घं. 13 मि. से 20 नवम्बर 23 घं. 20 मि.

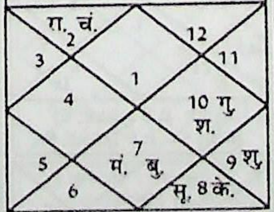

20 नवम्बर 23 घं. 21 मि. से 21 नवम्बर 4 घं. 49 मि.

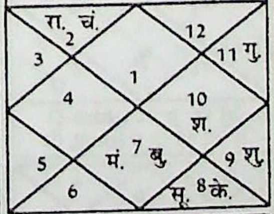

21 नवम्बर 4 घं. 50 मि. से 21 नवम्बर 21 घं. 08 मि.

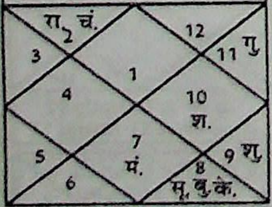

21 नवम्बर 21 घं. 09 मि. से 24 नवम्बर 9 घं. 48 मि.

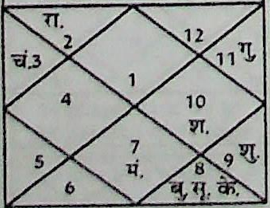

24 नवम्बर 9 घं. 49 मि. से 26 नवम्बर 20 घं. 35 मि.

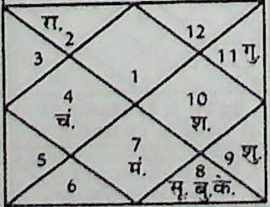

26 नवम्बर 20 घं. 36 मि. से 29 नवम्बर 4 घं. 02 मि.

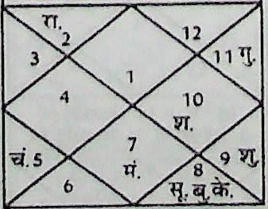

29 नवम्बर 4 घं. 03 मि. से 1 दिसम्बर 7 घं. 44 मि.

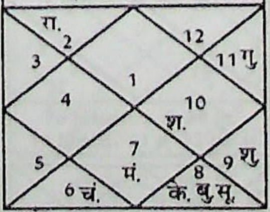

1 दिसम्बर 7 घं. 45 मि. से 3 दिसम्बर 8 घं. 25 मि.

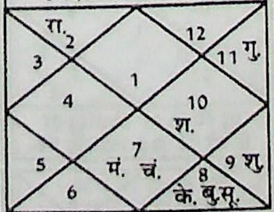

3 दिसम्बर 8 घं. 26 मि. से 5 दिसम्बर 5 घं. 56 मि.

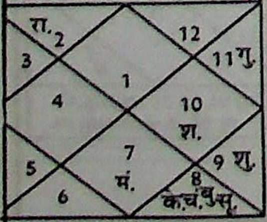

5 दिसम्बर 5 घं. 57 मि. से 5 दिसम्बर 7 घं. 46 मि.

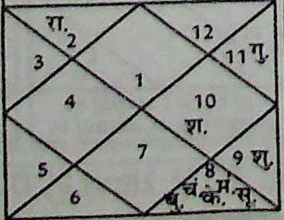

5 दिसम्बर 7 घं. 47 मि. से 7 दिसम्बर 7 घं. 43 मि.

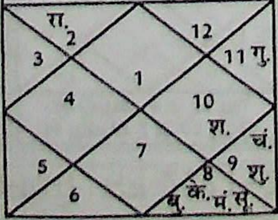

7 दिसम्बर 7 घं. 44 मि. से 8 दिसम्बर 13 घं. 51 मि.

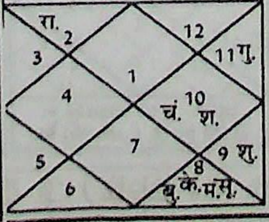

8 दिसम्बर 13 घं. 52 मि. से 9 दिसम्बर 10 घं. 08 मि.

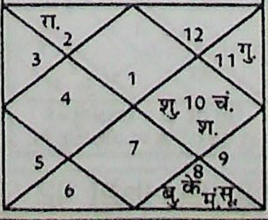

9 दिसम्बर 10 घं. 09 मि. से 10 दिसम्बर 6 घं. 05 मि.

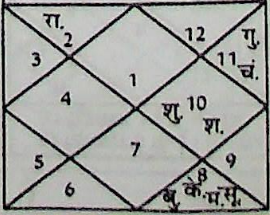

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoF-IKS

10 दिसम्बर से 22 जनवरी, सन् 2021-22 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

10 दिसम्बर 6 घं. 06 मि. से 11 दिसम्बर 10 घं. 15 मि.

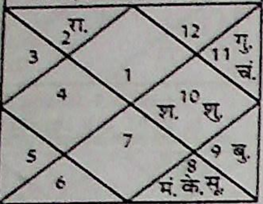

11 दिसम्बर 10 घं. 16 मि. से 14 दिसम्बर 2 घं. 03 मि.

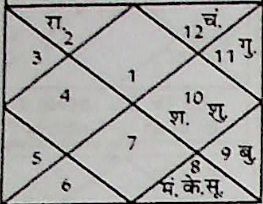

14 दिसम्बर 2 घं. 04 मि. से 16 दिसम्बर 3 घं. 43 मि.

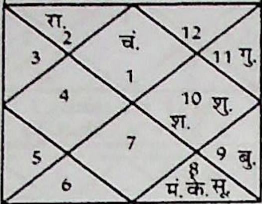

16 दिसम्बर 3 घं. 44 मि. से 16 दिसम्बर 14 घं. 19 मि.

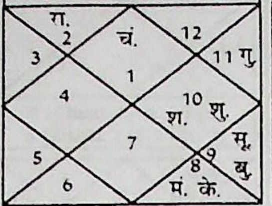

16 दिसम्बर 14 घं. 20 मि. से 19 दिसम्बर 3 घं. 20 मि.

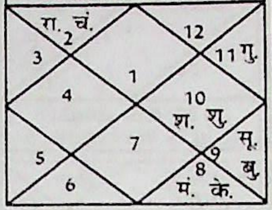

19 दिसम्बर 3 घं. 21 मि. से 21 दिसम्बर 15 घं. 45 मि.

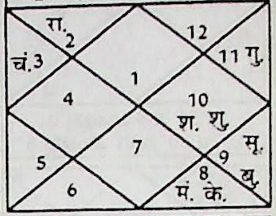

21 दिसम्बर 15 घं. 46 मि. से 24 दिसम्बर 2 घं. 40 मि.

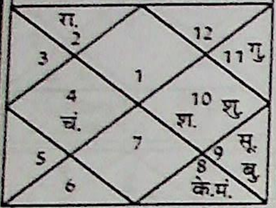

24 दिसम्बर 2 घं. 41 मि. से 26 दिसम्बर 11 घं. 12 मि.

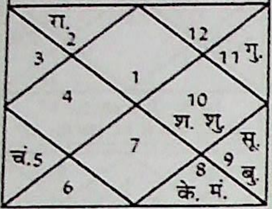

26 दिसम्बर 11 घं. 13 मि. से 28 दिसम्बर 16 घं. 42 मि.

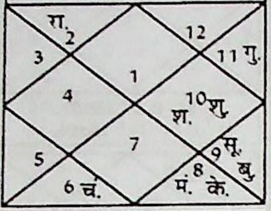

28 दिसम्बर 16 घं. 43 मि. से 29 दिसम्बर 11 घं. 31 मि.

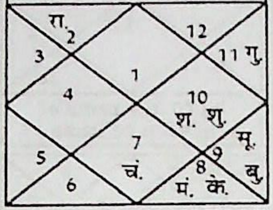

29 दिसम्बर 11 घं. 32 मि. से 30 दिसम्बर 7 घं. 59 मि.

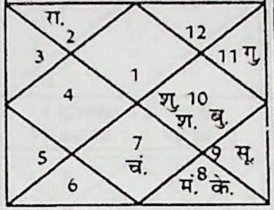

30 दिसम्बर 8 घं. 00 मि. से 30 दिसम्बर 19 घं. 06 मि.

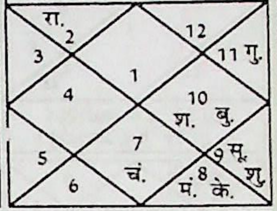

30 दिसम्बर 19 घं. 07 मि. से 1 जनवरी 19 घं. 16 मि.

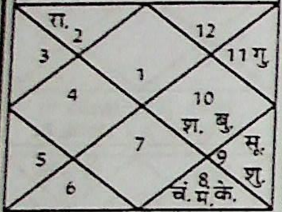

1 जनवरी 19 घं. 17 मि. से 3 जनवरी 18 घं. 51 मि.

3 जनवरी 18 घं. 52 मि. से 5 जनवरी 19 घं. 52 मि.

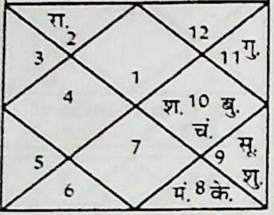

5 जनवरी 19 घं. 53 मि. से 8 जनवरी 0 घं. 14 मि.

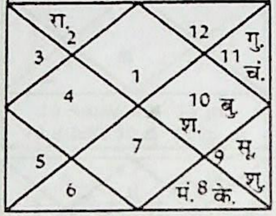

8 जनवरी 0 घं. 15 मि. से 10 जनवरी 8 घं. 48 मि.

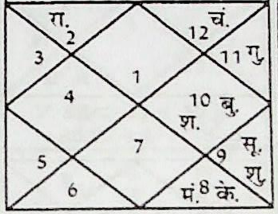

10 जनवरी 8 घं. 49 मि. से 12 जनवरी 20 घं. 44 मि.

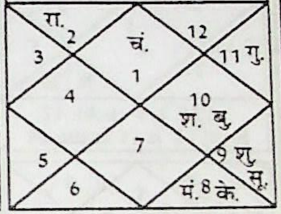

12 जनवरी 20 घं. 45 मि. से 14 जनवरी 14 घं. 28 मि.

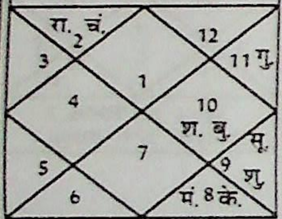

14 जनवरी 14 घं. 29 मि. से 15 जनवरी 9 घं. 49 मि.

15 जनवरी 9 घं. 50 मि. से 16 जनवरी 16 घं. 30 मि.

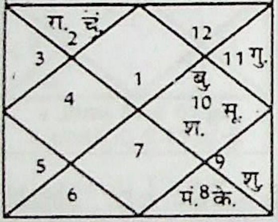

16 जनवरी 16 घं. 31 मि. से 17 जनवरी 22 घं. 01 मि.

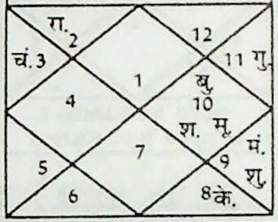

17 जनवरी 22 घं. 02 मि. से 20 जनवरी 8 घं. 23 मि.

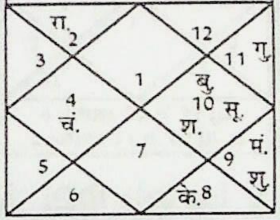

20 जनवरी 8 घं. 24 मि. से 22 जनवरी 16 घं. 47 मि.

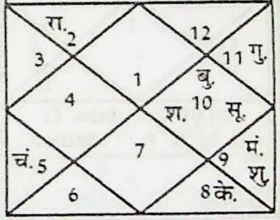

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

22 जनवरी से 8 मार्च, सन् 2022 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

22 जनवरी 16 घं. 48 मि. से
24 जनवरी 23 घं. 07 मि.

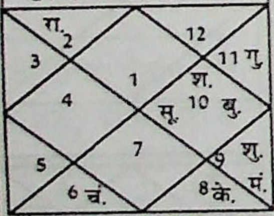

24 जनवरी 23 घं. 08 मि. से
27 जनवरी 3 घं. 11 मि.

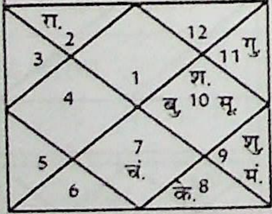

27 जनवरी 3 घं. 12 मि. से
29 जनवरी 5 घं. 06 मि.

29 जनवरी 5 घं. 07 मि. से
31 जनवरी 5 घं. 44 मि.

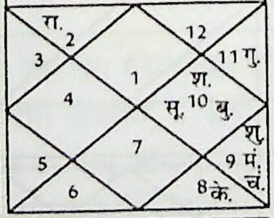

31 जनवरी 5 घं. 45 मि. से
2 फरवरी 6 घं. 44 मि.

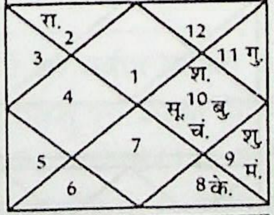

2 फरवरी 6 घं. 45 मि. से
4 फरवरी 10 घं. 01 मि.

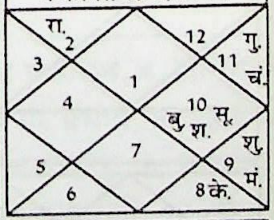

4 फरवरी 10 घं. 02 मि. से
6 फरवरी 17 घं. 08 मि.

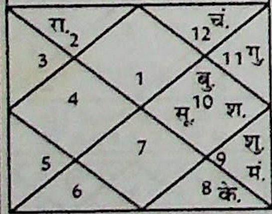

6 फरवरी 17 घं. 09 मि. से
9 फरवरी 4 घं. 08 मि.

9 फरवरी 4 घं. 09 मि. से
11 फरवरी 17 घं. 04 मि.

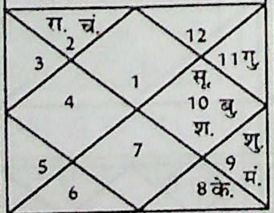

11 फरवरी 17 घं. 05 मि. से
13 फरवरी 3 घं. 26 मि.

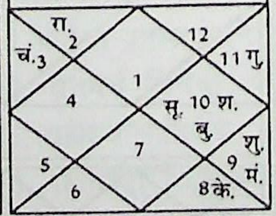

13 फरवरी 3 घं. 27 मि. से
14 फरवरी 5 घं. 17 मि.

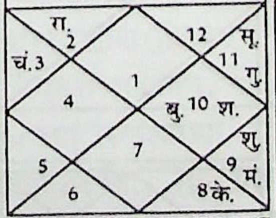

14 फरवरी 5 घं. 18 मि. से
16 फरवरी 15 घं. 12 मि.

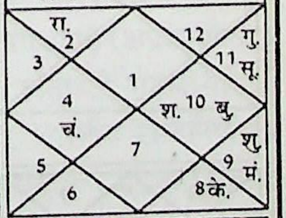

16 फरवरी 15 घं. 13 मि. से
18 फरवरी 22 घं. 45 मि.

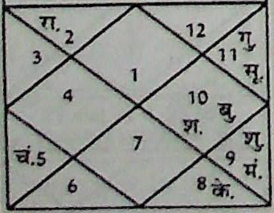

18 फरवरी 22 घं. 46 मि. से
21 फरवरी 4 घं. 30 मि.

21 फरवरी 4 घं. 31 मि. से
23 फरवरी 8 घं. 54 मि.

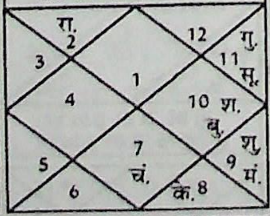

23 फरवरी 8 घं. 55 मि. से
25 फरवरी 12 घं. 06 मि.

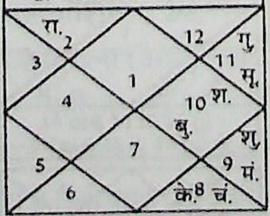

25 फरवरी 12 घं. 07 मि. से
26 फरवरी 15 घं. 49 मि.

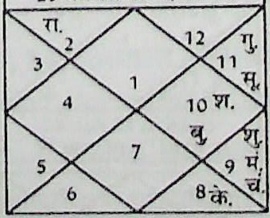

26 फरवरी 15 घं. 50 मि. से
27 फरवरी 10 घं. 16 मि.

27 फरवरी 10 घं. 17 मि. से
27 फरवरी 14 घं. 20 मि.

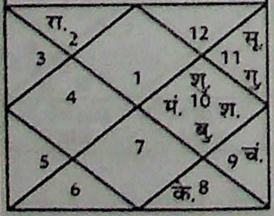

27 फरवरी 14 घं. 21 मि. से
1 मार्च 16 घं. 30 मि.

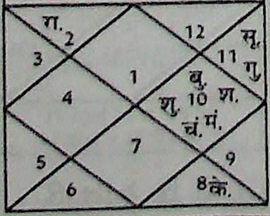

1 मार्च 16 घं. 31 मि. से
3 मार्च 20 घं. 02 मि.

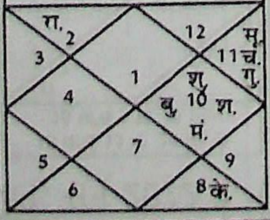

3 मार्च 20 घं. 03 मि. से
6 मार्च 2 घं. 28 मि.

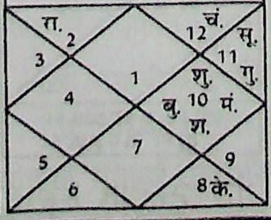

6 मार्च 2 घं. 29 मि. से
6 मार्च 11 घं. 19 मि.

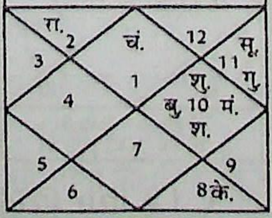

6 मार्च 11 घं. 20 मि. से
8 मार्च 12 घं. 29 मि.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

8 मार्च से 2 अप्रैल, सन् 2022 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

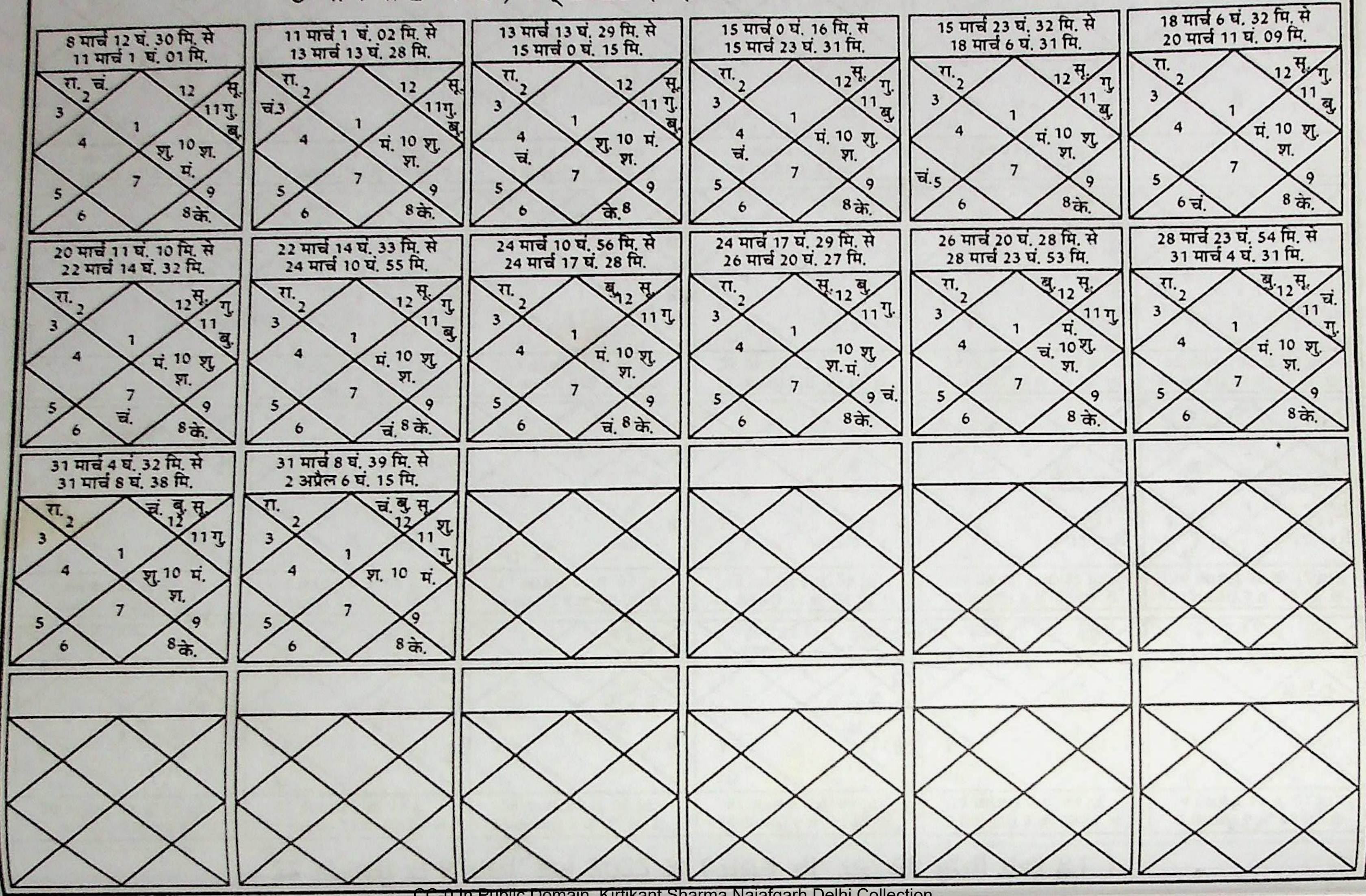

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

परमपूज्य श्रीप्रियव्रत शर्माजी का महाप्रयाण

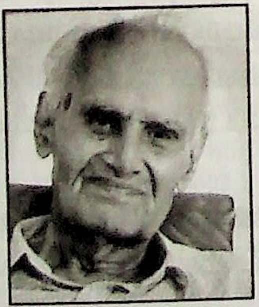

श्रीमार्तण्ड पंचांग-समूह के वरिष्ठ सम्पादक, विश्वप्रसिद्ध, माता सरस्वती के वरद पुत्र, सदैव सारस्वत कार्यों में बिना अनुशंसा-प्रशंसा से रंचमात्र भी निरीह, संस्कृत-संस्कृति के अहर्निश-पोषक, ज्योतिष-शास्त्र के पारंगत-तलान्तस्पर्शी प्रकाण्ड विद्वान्, साहित्य-धर्मशास्त्र एवं सिद्धान्त-ज्योतिष के मर्मज्ञ श्रीप्रियव्रत शर्मा जी के स्वर्गारोहण से भारतीय ज्योतिष-क्षितिज एवं उद्भट विद्वान् समाज में असह्य शून्यता अनुभव हो रही है। श्री प्रियव्रत जी के 6 दिसम्बर, सन् 2019 ई. को महाप्रयाण से आर्षविद्या के समुपासक अवाक् रह गये हैं।

श्रीप्रियव्रत शर्मा जी ने पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री, महाराज संस्कृत कॉलेज, जयपुर से प्रथम श्रेणी में साहित्याचार्य परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। आपने **सिद्धान्त ज्योतिष का अध्ययन** बनारस हिन्दु यूनिवर्सिटी के ज्योतिष-विभागाध्यक्ष, पोस्टाचार्य, सिद्धान्त-फलित ज्योतिषाचार्य स्व. श्री अच्युतानन्द झा जी की सन्निधि में किया। तत्पश्चात् पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ से M.A. (संस्कृत) की उपाधि भी प्रथम श्रेणी में प्राप्त की। आपके गणित, फलित एवं धर्मशास्त्रीय मौलिक अनुसन्धानपूर्ण लगभग 500 लेख हैं। इसके अतिरिक्त लगभग 250 कठिनतम फलित-सिद्धान्त-मुहूर्त एवं धर्मशास्त्रीय ऐसी समस्याओं के समाधान का श्रेय भी आपको प्राप्त है, जोकि भारतीय दैवज्ञों को बुरी तरह उलझाये हुए थीं। प्रत्येक समाधान अपने-आप में एक मौलिक लेख है।

आपने निम्नांकित मौलिक ग्रन्थों की रचना की है

1. क्षयाधिमास विमर्श, 2. अयनदोलन विमर्श एवं क्षयमास निर्णय, 3. भारतीय पंचांगविवाद में अशास्त्रीय साहित्य का प्रकाशन, 4. शास्त्रीय पंचांग मीमांसा, 5. हैली धूम्रकेतु एवं उसका विश्व पर प्रभाव, 6. ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन, 7. गणक मार्त्तण्ड (110 वर्षीय पंचांग), 8. भारतीय वास्तुशास्त्र के सिद्धान्त (अप्रकाशित), 9. विश्व-लग्न सारणी, 10. हमारे अवतार एवं महापुरुषों की कृत्रिम जन्मकुण्डलियां (अप्रकाशित), 11. फलित-शास्त्र के निराधार सिद्धान्त (हिन्दी एवं अंग्रेजी में) (अप्रकाशित), 12. व्रतपर्व विवेक, 13. मुहूर्त्त गजानन, 14. शताब्दी ग्रहभोगांश, 15. ग्रहोदयास्तनिर्णय, 16. लघु लग्नसारणी, 17. भारतीय लग्ननिर्णय, 18. शताब्दी विश्वकुण्डली दर्पण, 19. ग्रहणादर्श (अप्रकाशित), 20. भारतीय चन्द्रोदयास्त (अप्रकाशित), 21. नव्य जातक पद्धति (अप्रकाशित), 22. समस्या एवं समाधान (अप्रकाशित), 23. ज्योति-र्निबन्धमाला (अप्रकाशित), 24. मेघमाला (व्याख्यान ग्रन्थ) (अप्रकाशित)।

फलित-ज्योतिष में निर्मूल विचारपद्धतियों की शास्त्रीय तर्कसंगत आलोचना करने के कारण विद्वत् परिषदों में आपको '**क्रान्तिकारी ज्योतिर्विद्**' माना जाता रहा है। श्री शर्मा H.P. की शिक्षासेवा में **प्रथम श्रेणी के 'राजपत्रित अधिकारी'** (H.P.P.E.S.) रहे हैं। सन् 1989 में आप वरिष्ठ प्राध्यापक पद गवर्नमेण्ट कॉलेज, सोलन से सेवानिवृत्त हुए, तत्पश्चात् सरस्वती-सेवा में ही अहर्निश लगे रहे हैं।

श्री शर्माजी की ज्योतिष-योग्यता एवं साहित्यिक प्रतिभा का सम्मान करते हुए **" पं. गोस्वामी गिरधारी लाल फाउण्डेशन, दिल्ली" के तत्त्वावधान में आपको भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह जी ने 'ज्योतिष सम्राट्' पदवी से अलंकृत किया।** भारत सरकार की **Positional Astronomy Centre** द्वारा प्रकाशित किये जाने वाले **Indian Nautical Almanac** की '**व्रतपर्व-**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

निर्णायिका-समिति' के भी आप सम्मानित सदस्य रहे हैं।

भारत के सभी पंचांगकर्त्ता गहनचर्चा आदि में आपके निर्णय को ही अधिमान देते रहे हैं।

महागुजरात पंचांग विद्वत् परिषद्, नवरंगपुरा, अहमदाबाद ने आपके शिवलोकगमन पर हार्दिक दुःख व्यक्त करते हुए लिखा है—" श्री प्रियव्रत जी के जाने से खगोलवेत्ताओं एवं मूर्धन्य पण्डितों की शृंखला में भारी कमी हुई है। भारत के सभी पंचांगकर्त्ता चिरंकाल तक आपकी स्मृति एवं आपके द्वारा दिये गये ज्ञान से लाभान्वित होते रहेंगे।" इसी प्रकार **सनातन धर्मसभा सोलन** ने भी आपके न रहने पर गहन दुःख व्यक्त किया है और असंख्य ज्योतिष-प्रेमियों के शोक-सन्देश/संवेदनापत्र प्राप्त हुए हैं। सचमुच आपका इहलोक से गमन है ही एक अपूरणनीय क्षति, जिसका भरण हो पाना शीघ्र शायद ही सम्भव है।

आखिर में, मैं आपका अनुज एवं समस्त मार्त्तण्ड परिवार, आपके वैदुष्य की थाह को समझने में कुछ तो चूक ही गया। कोई प्रखर पण्डित पैदा होगा, जोकि आपकी कृतियों एवं आपके वैदुष्य का मूल्यांकन जरूर कर सकेगा—

" उत्पत्स्यतेऽस्ति तव कोऽपि समानधर्मा कालोह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी।" इन भावनाभरे शब्दों से आपको सादर प्रणाम करता हुआ दु:ख-भरे हृदय से विराम लेता हूं।

शोकसंतप्त एवं दुखी हृदय
इन्दुशेखर शर्मा,
संयमी शर्मा एवं समस्त परिवार
एवं समस्त मार्त्तण्ड पंचांग कार्यालयीय कर्मचारी वर्ग

– – –

(पृष्ठ 87 का शेष)

पारणा के दिन आसन बिछाकर गणेश-बटुक तथा कन्याओं को एक पंक्ति में बैठाकर पहले गणपति-ध्यान करें। फिर **'ॐ बटुकाय नमः'** से बटुक का, फिर **'ॐ कुमार्यै नमः'** से कन्याओं का पूजन करें। बाद में हाथ में पुष्प लेकर निम्नांकित मन्त्र से प्रार्थना करें;—

" मन्त्राक्षर-मयीं लक्ष्मीं मातृणां रूप-धारिणीम्।
नवदुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम्॥
जगत् पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्व-शक्ति-स्वरूपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते॥"

विसर्जन—विसर्जन से पूर्व कड़ाही (हलवा) बनाकर अन्नपूर्णा का ध्यान करके ज्योति:प्रकाश करके ही कन्या-पूजन करें। विसर्जन से पूर्व भगवती माता की गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि से पूजा करके निम्न प्रार्थना करें—

" रूपं देहि यशो देहि भाग्यं भगवति देहि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे॥"

इस प्रकार प्रार्थना करके हाथों में अक्षत एवं पुष्प लेकर भगवती का निम्नमन्त्र से विसर्जन करें;—

" गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठे स्वस्थानं परमेश्वरि।
पूजाराधन-काले च पुनरागमनाय च॥"

– – –

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शनि की साढेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पादविचार और गुरु-राहु का गोचरफल (सं. 2078 वि.)

लेखक—इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभ ग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अन्तर शुभ चल रहा हो तो ढैय्या और साढेसाती का अशुभ फल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढेसाती व ढैय्या महान् अशुभ, चिन्ता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु-पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश हो तो भी ढैय्या, साढेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11 में स्थित हो तो सुख-सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है। शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ; कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है।

शनि की साढेसाती किसे कहते हैं? समझ लें—शनि की गोचर स्थिति को ध्यान में रखते हुए जब किसी व्यक्तिविशेष की जन्मराशि किंवा नामराशि से पहले, दूसरे या बारहवें स्थान में शनि हो तो गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार जातक 'साढेसाती' के प्रभाव में रहता है, अर्थात् उस व्यक्ति पर साढेसाती चल रही होती है—

"द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः।
सार्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुःखैर्युतो भवेत्॥"

व्यक्तिविशेष के लिए साढेसाती का फल इस प्रकार लिखा है—

"राशौ द्वादशे मूर्ध्नि जन्महृदये पादौ द्वितीये शनिः।
नानाक्लेशकरो हि दुर्जनभयं पुत्रान् पशून् पीडयेत्॥"

"शनि की ढैय्या" किसे कहते हैं? यह भी जान लें—गोचर अनुसार किसी व्यक्तिविशेष की जन्म राशि किंवा नामराशि से जब शनिदेव चौथे या आठवें स्थान पर हों तो उस व्यक्तिविशेष पर 'शनि की ढैय्या' चल रही है, ऐसा जानें। ढैय्या का फल इस प्रकार है—

"ढैय्या तु प्रददाति वै रविसुतश्चेद्राशेश्चतुर्थाष्टमे।
व्याधिं बन्धुविरोध-विदेशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्॥"

ध्यान दें—शुभ एवं क्रूरग्रहविचार में गुरु-शुक्र स्थितिविशेष-विचार से शुभ एवं शनि-मंगल अशुभ फलप्रद माने गये हैं—

"तेषामतीव शुभदौ गुरु-दानवेज्यौ।
क्रूरौ दिवाकरसुत-क्षितिभौ भवेताम्॥"

—(फलितमार्त्तण्ड)

शनि के लगभग अढाई वर्ष तक एक ही राशि में संचार करने के कारण इसे 'मन्द' किंवा 'शनैश्चरति इति शनिः' की संज्ञा दी गयी है। लेकिन शनिग्रह की वक्र एवं मार्गी गति के कारण अनेकदा अपने अढाई वर्ष के काल में न्यूनाधिकता भी कर देता है। कभी-कभी शनि अपनी वक्र-मार्ग गति एवं शनि के अतिचार के कारण एक वर्ष में दो राशियों को भी स्पर्श कर लेता है, जोकि मेदिनी ज्योतिष एवं तत्तद्-राशि के व्यक्ति एवं देश के लिए कठिन परिस्थितियों को जन्म देता है।

अनेकदा शनि-मंगल दोनों क्रूर ग्रह वर्ष में वक्रगति से चलें या दोनों में से कोई एक वक्रगति से चलकर एकराशि-सम्बन्ध बना ले तो अधिक नेष्ट फलप्रद हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में जातकविशेष को साढेसाती किंवा ढैय्या शारीरिक कष्ट, वायु-रक्त-पित्त-विकार, त्वचारोग, आर्थिक संकट, शत्रुपक्ष से मानसिक परेशानी, दुर्घटना से हानि आदि फल करते हैं। देश-विशेष के लिए राजनीतिज्ञों में विरोध, सत्तासंघर्ष, प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु, आर्थिक/ सामाजिक अव्यवस्था, असन्तोष, भूकम्प, तूफान, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप, सीमाप्रान्तों पर अशान्ति आदि आपदाएं उपस्थित करता है—"क्रूराः वक्राः महाक्रूराः"।

शनि-पादविचार

"जन्मांग-रुद्रेषु सुवर्णपादं द्विपञ्चनन्दे रजतस्य पादम्।
त्रि-सप्त-दिक् ताम्रपादं वदन्ति शेषेषु राशिष्विह लौहपादम्॥"

पादफल-विचार—

"लौहे धनविनाशः स्यात् सर्वं दुःखं च काञ्चने।
ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं च राजते भवेत्॥"

शनि के राशि-परिवर्तन के समय यदि चन्द्र 1, 6, 11 स्थान में हो तो स्वर्णपाद; 2, 5, 9 स्थान में हो तो रजतपाद; 3, 7, 10 स्थान में चन्द्र हो तो ताम्रपाद। यदि शनि के राशि-परिवर्तन के समय चन्द्र 4, 8, 12 में हो तो लौहपाद होता है। स्वर्णपाद सभी प्रकार के दुःखों को देने वाला, रजतपाद सुख-सौभाग्यप्रद, ताम्रपाद मध्यम फलद एवं लौहपाद धन-धान्य का नाशक होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मकर राशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का विचार

संवत् 2076 वि. में 24 जनवरी, सन् 2020 ई. को उ.षा. नक्षत्र एवं मकरस्थ चन्द्र के समय 9 घं. 52 मि. पर शनिदेव मकर राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2078 वि. के अन्त तक मकर राशि में ही रहेंगे।

मकरराशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का फल

(24 जनवरी, सन् 2020 ई. से संवत् 2078 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		शुभाशुभ फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
मिथुन	ढैय्या	लौहपाद	—	—	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, स्त्री-कष्ट, पुत्र किंवा पशुपीड़ा, व्यापार में हानि एवं आर्थिक संकट का सामना करना पड़े।
तुला	ढैय्या	लौहपाद	—	—	शरीर कष्ट, रक्तविकार, स्त्री-पुत्र-कष्ट, व्यापार में हानि, आर्थिक संकट एवं पशुपीड़ा हो।
धनु	साढेसाती	रजतपाद	पाद	उतरती	व्यापार में प्रगति, धन-धान्य-समृद्धि, सुख-सम्पदालाभ, प्रभाव क्षेत्र बढ़े, घर में मंगलकृत्य हों, राजपक्ष से सम्मान।
मकर	साढेसाती	सुवर्णपाद	हृदय	—	शत्रु प्रबल, निज-जन-विरोध, रोगभय, परिवार में क्लेश, धनहानि हो, चिन्ता आदि से कष्टप्रद समय।
कुम्भ	साढेसाती	लौहपाद	मस्तक	चढ़ती	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, स्त्री-पुत्र-पशु-पीड़ा, व्यापार में हानि, राजपक्ष से भय-कष्ट, आर्थिक संकट भी रहे।

नोट—यहां दिये गये कोष्ठक में जिन राशियों का निर्देश (ज़िक्र) नहीं किया गया है, उन राशि वाले जातकों के लिए इस साल सं. 2078 वि. में मकर राशिस्थ शनि की समयावधि में साढेसाती या ढैय्या नहीं है, यह समझ लें।

साढेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का सामान्यतया अशुभ फल कब होगा—

मेष राशि वालों के बीच के अढाई वर्ष खराब हैं। **वृष** को पहले अढाई वर्ष, **मिथुन** को अन्त के अढाई वर्ष, **कर्क** को बीच के अढाई वर्ष, **सिंह** को पहले 5 वर्ष, उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष खराब हैं। **कन्या** को पहले 5 वर्ष, उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। **तुला** को आखिर के अढाई वर्ष, **वृश्चिक** को अन्तिम 5 वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। **धनु** को प्रारम्भ के अढाई वर्ष, **मकर** को पहले 5 वर्ष, उनमें भी पहले अढाई वर्ष विशेष खराब हैं। **कुम्भ** को आदि एवं अन्त के पांच वर्ष, विशेषत: अन्त के अढाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। **मीन** को पूरे साढेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढाई वर्ष विशेष अशुभ फल देने वाले होते हैं।

शनिजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय

शनि की साढेसाती/ढैय्या के नेष्टफल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23,000 की संख्या में विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरान्त दशांश हवनादि करें। शनिवार के दिन सतनाजा-दान, लौहपात्र में तैलदान, शनिस्तोत्र का पाठ करना/कराना श्रेयस्कर रहता है। इसके अतिरिक्त शुभ वेला में 'नीलम' रत्न एवं 'शनियन्त्र' धारण करना भी आश्चर्यजनक रूप से लाभप्रद रहता है। परन्तु रत्नधारण करने से पूर्व शनि के अंशादि का अध्ययन करवाकर किसी दैवज्ञ का परामर्श ले लेना श्रेयस्कर होगा।

शनि का बीज मन्त्र—"ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।"

प्रतिदिन 3 माला मन्त्रजाप करें। मन्त्रजाप से पहले **"अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, शनैश्चर-नेष्टफलशान्त्यर्थम् शनि-मन्त्रजापमहं करोमि"**—इस प्रकार संकल्प करके शनि-मन्त्रजाप करें।

शनिवारी अमावस वाले दिन सूर्यास्तसमय (गोधूलि वेला में) शनि-मन्त्रजाप, स्तोत्र-पाठ करें एवं तेल में मुंह देखकर, उसमें एक लौंग डालकर दान करें और सायंकाल पीपल के नीचे दीपक जलायें।

मन्त्रजाप की विधि—अनुष्ठान शनिवार को करें। सूर्यास्त-समय स्नान करके कम्बलासन पर बैठकर, पश्चिमाभिमुख होकर (पश्चिम की तरफ मुंह करके) लोहे के खुले बर्तन में जौ, लौंग एवं काले तिल प्रत्येक 200 ग्राम लेकर एक अंजलिभर चावल और 7 सुपारी रखें। मौली, धूप, लाल चन्दन, दो अपूप (पूड़े) भी सामने रख लें। मिट्टी के बर्तन में तेल का दीपक प्रज्वलित करें एवं एक स्टील का लोटा तेल से भरकर सामने रखकर "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"—इस मन्त्र का कुल 23 हज़ार जाप करें। मन्त्रजाप पूर्ण होने के बाद सारी सामग्री, जो सामने रखी थी, को जलप्रवाह कर दें। तेलभरी गड़वी (लोटा) में लौंग डालकर शनि वाले डकौत को दें। सामग्री को जलप्रवाह करते समय निम्नांकित मन्त्र का उच्चारण करें—

"ॐ नमः कृष्णाय नीलाय शिति-कण्ठनिभाय च।
नमः कालाग्नि-रूपाय कृतान्ताय च ते नमः॥"

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

इस मन्त्रोच्चारण के बाद "दूर जाते हुए शनि को पृष्ठभाग" से नमस्कार करके घर को जायें। किसी अच्छे विद्वान् दैवज्ञ के परामर्श से (कुण्डली दिखाकर) 'नीली' या 'नीलम' नग धारण करना भी ठीक रहेगा।

'नीलम' रत्न का काम देने वाली वनौषधि

शनिदोष-निवारण के लिए अनेक व्यक्ति 'नीलम' धारण करते हैं, परन्तु सबको अनुकूल बैठने वाला शुद्ध 'नीलम' रत्न बहुत कम मिलता है। उसकी भले-बुरे की परीक्षा भी कठिन है और यह रत्न बहुमूल्य (महंगा) होता है। अत: सर्वसाधारण मनुष्य खरीद नहीं सकते। ऐसे व्यक्ति नीलम के अभाव में **'बिच्छू बूटी'** की जड़ का प्रयोग करें। बिच्छू बूटी हिमाचल प्रदेश में बहुत होती है। कोमल कांटेदार पत्तों को स्पर्श करने से वृश्चिकदंश जैसी पीड़ा होने लगती है। अत: इसका नाम बिच्छू बूटी है। शुक्लपक्ष शनिवार को प्रात: (यदि पुष्य नक्षत्र भी मिल जाये तो अत्युत्तम) बिच्छू बूटी की जड़ उखाड़कर ले आयें। पहले दिन शुक्रवार की सन्ध्या को निमन्त्रण दे आयें। इस जड़ के टुकड़े को चांदी के तावीज में भरकर शनिमन्त्र से धारण करें। यह हर व्यक्ति का शनिदोष निवारण करती है।

शनिजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ वैदिक मन्त्र

"ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शंय्योरभिस्रवन्तु न:। शं शनये नम: ॐ॥"

शनिजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ शनैश्चर-स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच—

"ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते।
नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥"

इस स्तोत्र का पाठ शनिवार को पीपल के नीचे बैठकर एवं अन्य दिनों में भगवान् शंकर से प्रार्थनापूर्वक शिवमन्दिर या घर में भी बैठकर प्रात: करने से साढ़ेसाती व ढैय्या की दु:खद पीड़ा नहीं होती है, अनुभूत है।

शनिजन्य नेष्टफल-परिहारार्थ तुलादान करायें—

विधि—शनि ग्रह से पीड़ित व्यक्ति अपने जन्मदिन पर या शनैश्चरी अमावस शनिवार को दिन में लगभग 11/12 बजे गेहूं, काले चने, चावल, बाजरा, कालीदाल (माह), जौ, मूंग आदि (सात) अनाजों से अपने वजन के बराबर तौल कर दान (तुलादान) करें। साथ ही तेल में मुंह देखकर दक्षिणासहित शनि का दान लेने वाले (ढौंसी) को दे दें। बाद में तुलादान के समय पहने हुए कपड़े भी स्नान करके, दान कर दें।

नोट—तुलादान से पहले यदि कोई बहुमूल्य आभूषण आदि शरीर पर धारण किया हुआ हो, वह भी पहले ही उतार दें, अन्यथा वह भी दान करना होगा।

संवत् 2078 वि. में गुरु ग्रह का गोचर फल

गुरुदेव का कुम्भ राशि में प्रवेश

गत. सं. 2077 में चैत्र कृष्ण नवमी, मंगलवार, तदनुसार 6 अप्रैल, 2021 ई. को 0 घं. 25 मि. पर उ.षा. नक्षत्र, सिद्ध योग एवं मकरस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव कुम्भ राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2078 वि. में 14 सितम्बर, 2021 ई. तक कुम्भ राशि में ही रहेंगे।

कुम्भ राशिस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(6 अप्रैल से संवत् 2078 वि. में 14 सितं., 2021 ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय	आधि-व्याधि

गुरु का पुन: मकर राशि में प्रवेश

सं. 2078 वि. में भाद्र. शुक्ल नवमी, मंगलवार, तदनुसार 14 सितं., 2021 ई. को मूल नक्षत्र एवं धनु:स्थ चन्द्र के समय 14 घं. 34 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर वक्रगति से गुरु पुन: मकर राशि में प्रवेश करके 20 नवं., 2021 ई. तक मकर राशि में ही रहेगा।

मकर राशिस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(14 सितं. से 20 नवं., 2021 ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	धनलाभ	धनलाभ होकर हानि	कष्ट	धनलाभ	भय	आधि-व्याधि	प्रगति

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मकर राशिस्थ गुरु का विश्व पर प्रभाव

"मकरे च गुरौ चैव दुर्भिक्षं घोर-दारुणम्।
विग्रहं यान्ति राजानः त्रिमासान्ते शुभं भवेत्॥"

अर्थात्—राजनीतिज्ञों में विग्रह (वैमनस्य), कहीं घोर दुर्भिक्ष पड़े। तीन मास बाद सुभिक्ष रहे।

कुम्भ राशि में गुरु का पुनः प्रवेश

सं. 2078 वि. में मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष द्वितीया, शनिवार, तदनुसार 20 नवं., 2021 ई. को रोहिणी नक्षत्र एवं वृषस्थ चन्द्र के समय 23 घं. 15 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर गुरुदेव मार्गी गति से पुनः कुम्भ राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2078 वि. के अन्त तक कुम्भ राशि में ही रहेंगे।

कुम्भ राशिस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(20 नवम्बर से संवत् 2078 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय	आधि-व्याधि

गुरुजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ उपाय

गुरुग्रह जन्मांग में या गोचर में नेष्टफलप्रद हो तो—गुरुवार को (विशेषतः गुरुवारी अमावस वाले दिन) केले के वृक्ष को सींचना चाहिए। पीली वस्तु (चना, पीला फल, हल्दी) को पीले कपड़े में बांधकर दान करें। सोना, गुड़, शर्करा, लड्डू आदि द्वारा वृद्ध ब्राह्मण का यथाशक्ति सम्मान करें। गुरु ग्रह के बीजमन्त्र का 19 हज़ार जाप करें। **गुरु का जपनीय बीज मन्त्र यह है**—"ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।" केसर किंवा हल्दी का तिलक धारण करें। पीला 'पुखराज' 5/7 रत्ती पुरुष दायें हाथ की एवं स्त्रियां बायें हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण करें।

सं. 2078 वि. में वृषस्थ राहु का शुभाशुभ फल

सं. 2077 वि. में आश्विन शुक्ल पक्ष सप्तमी बुधवार, तदनुसार 23 सितम्बर, सन् 2020 ई. को ज्येष्ठा नक्षत्र, आयुष्मान् योग, वृश्चिकस्थ चन्द्र के समय राहु 12 घं. 16 मि. (I.S.T.) पर वृष राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2078 वि. के अन्त तक वृष राशि में ही रहेगा।

वृष राशिस्थ राहु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(संवत् 2078 वि. के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धननाश	राजभय	सुख	धनहानि	अपमान	सौभाग्य

राहु जन्मांग या गोचर में नेष्ट फलप्रद हो तो—कम्बल, तिल-तैल, नारियल, लौंग एवं काले या भूरे रंग के वस्त्र में सतनाजा बांधकर दक्षिणासहित सायंकाल के समय दान करें। साथ ही कम्बलासन पर बैठकर राहु के **बीजमन्त्र (ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः)** का 18 हज़ार की संख्या में जाप करें। शान्ति रहेगी। दैवज्ञ के परामर्श से राहुशान्त्यर्थ **'गोमेद'** नग 5/7 रत्ती भी धारण कर लेना हितकर रहेगा।

क्या आपको मालूम है कि "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" संक्षिप्तरूप में "श्री बटुक पञ्चांग" के नाम से प्रकाशित होता है ? "श्री बटुक पञ्चांग" पॉकेट साईज़ में है और इसमें प्रमुख-प्रमुख एवम् वर्गीकृत व्रत-पर्व, गण्डमूल, पंचक, ग्रहणविवरण, राशिफलादेश, वर्षराजादि फलविचार, २४ पक्ष, तिथ्यादि पंचांग, दैनिक-लग्नसारणी, विवाहादि मुहूर्त्त और मेलापक सारणी आदि वह सभी कुछ उपलब्ध है, जिसकी दैवज्ञों/आम लोगों को हर समय ज़रूरत रहती है।

आज ही अपनी प्रति बुकसेलर से सुरक्षित कराएं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आकाशी कौंसिल का विचार (सं. 2078 वि.)

(संसार की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का ग्रहगोचर के अनुसार सर्वेक्षण)

★ संवत् 2078 वि. 'राक्षस-नामक' संवत्सर है। इस संवत्सर में प्राकृतिक आपदा से जनहानि हो एवं खाद्य पदार्थों की कमी अनुभव होगी। उग्रवाद एवं देश में साम्प्रदायिक उपद्रवों से अशान्ति भी सम्भव है।

★ इस संवत्सर का राजा एवं मन्त्री—दोनों पद 'मंगल' को प्राप्त हैं, अतः यह संवत्सर प्रधान नेताओं के लिए विषम परिस्थितियों को लेकर आ रहा है।

★ चूंकि क्रूर ग्रह मंगल इस संवत्सर में बली है, अतः सीमान्त-प्रदेशों में उग्रवादजन्य गतिविधियों को कण्ट्रोल करने के लिए सैन्यबल का प्रयोग अनिवार्य रहेगा।

★ 2 जून से 20 जुलाई 2021 ई. तक शनि-मंगल की स्थिति भयंकर अग्निकाण्ड एवं उग्रवाद से भारी हानि का संकेत देती है।

★ 20 जून से 18 अक्तूबर 2021 ई. तक का समय यान-दुर्घटनाकारक एवं प्रधान नेतृत्व के लिए भयावह है।

★ 14 सितं. से 19 नवं. 2021 ई. के मध्य महामारी आदि से विषम स्थिति रहे।

★ 22 फर., 2022 ई. से सं. 2078 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति भारत के सीमाप्रान्तों की सुरक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। कोई विरोधी देश अचानक युद्धात्मक स्थिति से वातावरण अशान्त कर सकता है। इसी दौरान भारी प्राकृतिक आपदा से जन-धनहानि के योग भी बनते हैं।

★ उल्लिखित समयावधि में प्रधान नेताओं को अपनी सुरक्षा का विशेष ध्यान रखना होगा।

आकर्षण-विकर्षण से प्रभावित अनन्तकोटि खगोलीय पिण्ड अपनी वक्र-मार्ग, अतिचार, मन्द आदि अनेकविध गतियों द्वारा भौतिक किंवा ऐहलौकिक क्रिया-कलापों में सामयिक परिवर्तनों से ज्योतिषशास्त्र की वैज्ञानिकता का साक्षित्व अनन्तकाल से ही प्रस्तुत करते आ रहे हैं। प्रत्येक पिण्ड उस जगत् पिता की अदृश्य-अलौकिक-शक्ति से प्रभावित होकर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को प्रभावित करता है। प्रभावित वर्ग ग्रहों की गति एवं प्रकृति के अनुरूप ही कर्मानुष्ठान करने को प्रेरित होता है। ग्रहगतिजन्य इस परिणाम को हम 'भवितव्यता' किंवा 'ईश्वरेच्छा' कहकर स्वीकार करने को विवश हैं।

इस प्रकार इस ग्रहगति से प्रभावित व्यक्ति किंवा घटनाचक्र की स्थिति तीव्र वायुवेग से प्रभावित एक तिनके की भांति होती है, जो एक ही क्षण में अपने अस्तित्व को खोकर वायुवेग से प्रताड़ित होकर, तदनुसार (वायुवेग के अनुकूल दिशा में) चलने को विवश हो जाता है। स्पष्ट है कि—

"संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता है। एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक भी अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाये, तो विराट् ब्रह्माण्ड एक क्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्नि-ज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे।" यह नियामक विधान किसी अदृश्य सत्ता के अस्तित्व को प्रमाणित करता है। इसी प्रकार यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्रभु के एक निश्चित विधान के अनुसार ही चल रहा है। इस विधान का साक्षात् कृतधर्मा ऋषियों ने जो अध्ययन व चिन्तन किया है, उसका परिणाम ही 'ज्योतिष' है। ज्योतिष के अनुसार ब्रह्माण्ड के सभी क्रिया-कलाप ग्रहों द्वारा नियन्त्रित हैं। आकाश में जो भी ग्रह-नक्षत्र हैं, उनसे यह पृथ्वी किंवा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अप्रभावित नहीं रहते—यह ज्योतिष का एक मूलभूत सिद्धान्त है।

इस सिद्धान्त की प्रामाणिकता में सन्देह करना तो दुराग्रह ही है। विज्ञान, कार्य-कारण के सिद्धान्त पर ही आधारित है। परन्तु आज भी असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हैं। सिद्धान्तों के व्यभिचार-मात्र से शास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्य-सिद्धान्तों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अ़नुसन्धान की आवश्यकता है।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार कालात्मा सूर्य को सब ग्रहों का प्रधान माना गया है। **'शुक्ल यजुर्वेद'** की इस ऋचा पर ध्यान दें—

"आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्येन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्॥"

अर्थात्—सूर्यनारायण सम्पूर्ण भुवनों को देखते हुए परिभ्रमण करते हैं। सभी ग्रहों में एकमात्र सूर्यदेव ही तो हैं, जो प्रत्यक्षरूप से दृष्टिगोचर होते रहते हैं। सम्पूर्ण दिशाओं को प्रकाश देने वाला कालात्मा—सूर्य, स्थावर, जंगम जगत्, ग्रह, पृथ्वी, जल, वायु आकाश किंवा समस्त भूचक्र का भेद जानता है। सूर्य की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तर होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। अत: स्पष्ट है, कि आकाशीय पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीय घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है। इस तथ्य को वैज्ञानिक-विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।

ज्योतिष शायद सबसे पुराना विषय है और एक अर्थ में सबसे ज्यादा उपेक्षित विषय भी। उपेक्षित इसलिए, कि—फलितशास्त्र में शोध के लिए शासन उपेक्षा भाव लिये है। मनुष्य जाति के इतिहास की जितनी भी खोज हो सकती है, उसमें ऐसा कोई भी समय नहीं था, जबकि ज्योतिष मौजूद न रहा हो। इसलिए इसे पुरातनतम भी माना गया है।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भौतिक ज्योतिष की अनेक शाखाओं का विकास हुआ है, जिनके आधार पर फलित शास्त्र की सत्यता के बारे में प्रमाण मिलते ही जा रहे हैं। सूर्य-कलंक-चक्रों, चन्द्रमा एवं ज्वारभाटा-सम्बन्धी सिद्धान्तों के परिशीलन तथा ग्रहों के आकर्षण-सिद्धान्त की प्रक्रिया के आधार पर विवेचन करने से प्राणीशास्त्र-वनस्पतिशास्त्र एवं प्रकृति के प्रत्येक पहलु पर ग्रहों का प्रभाव सत्य सिद्ध हो चुका है। यही कारण है, कि—आजकल के वैज्ञानिक युग में पाश्चात्य एवं पूर्वीय सभी देशों में इस शास्त्र के प्रति आस्था प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। इस विषय में हम मिन्नेसोटा विश्वविद्यालय (अमेरिका) (University of Minnesota) में डा. मार्क ग्रोबार्ड (Dr. Mark Graubard) के तत्त्वाधान में हुए फलित शास्त्रसम्बन्धी शोध के परिणामों का विवेचन ग्राफ द्वारा प्रस्तुत करना उचित समझते हैं।

आलेख—(पाश्चात्त्य देशों में फलित ज्योतिष पर विश्वास में वृद्धि तथा न्यूनता का समय-सापेक्ष आलेख)

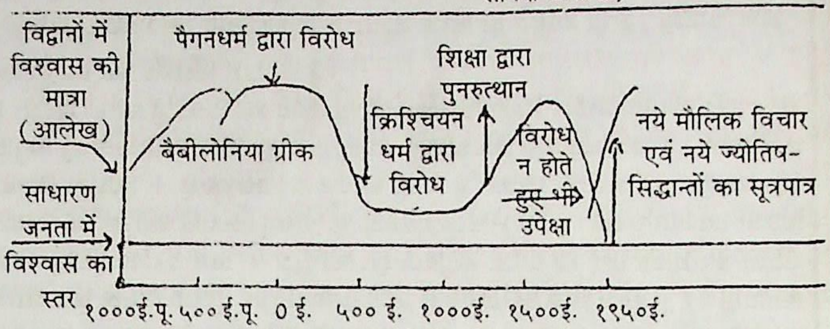

(0 ई.पू. स्वल्पान्तर से छोड़ दिया गया है।)

यहां प्रस्तुत आलेख में पाश्चात्य जनता एवं विद्वानों के फलित-ज्योतिष पर विश्वास को अंकित किया गया है। इस आलेख से स्पष्ट है कि ईसा पूर्व कुछ शताब्दियों में अफ्रीकन-पैगान-धर्मद्वारा फलितशास्त्र का विरोध होने पर भी फलितशास्त्र के प्रति विद्वानों की निष्ठा यथावत् बनी रही है। पांचवीं शताब्दी में क्रिश्चियनधर्म द्वारा फलित ज्योतिष का विरोध होने पर यद्यपि आस्था कुछ कम हुई थी, परन्तु यह क्रिश्चियनों का प्रभाव भी स्थायी न रह सका। ज्यों ही शिक्षा का क्षेत्र बढ़ता गया, फलितशास्त्र पर 1500 ई. के लगभग लोगों की निष्ठा पुन: दृढ़ होकर पूर्वस्थिति को प्राप्त हो गयी। 17वीं शताब्दी से अब तक विरोध न होने पर भी एकमात्र उपेक्षावृत्ति के कारण लोगों में आस्था की कमी देखी गयी है। परन्तु साथ ही साथ नये मौलिक विचार एवं नये ज्योतिष सिद्धान्तों का सूत्रपात हो जाने से इस शास्त्र के प्रति आस्था बढ़ती गयी है और ये विद्वान् लोग इस शास्त्र में विशेष परिवर्तन से नये रूप की आशा रखते हैं।

ऋग्वेद् में पचानवें हज़ार वर्ष पूर्व ग्रहनक्षत्रों का वर्णन उपलब्ध है। महर्षियों द्वारा प्रस्फुरित इस शास्त्र पर गुरु-शिष्यपरम्परया चिन्तन व संशोधन-संवर्धन होते रहे हैं। प्रत्येक ग्रह जब अपनी गतिस्थिति में अन्तर लाता है, तभी विश्व का घटनाचक्र प्रभावित होता देखा गया है। इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं, वह सब ग्रहों के वक्र-मार्ग आदि के ही परिणाम हैं। इस ग्रहगतिजन्य संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, **"श्रीमार्त्तण्ड पंचांग"** के माध्यम से अपने प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित कर देते हैं और यह इस प्रकाशन का

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

94वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

श्री वि. संवत् 2078 की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं की भविष्यवाणी प्रस्तुत करने से पहले हम अपने विद्वान्, प्रबुद्ध पाठकों का आभार व्यक्त कर देना उचित समझते हैं, जिन्होंने लगातार 93 वर्षों तक हमारी भविष्यवाणियों का सही मूल्यांकन करके हमें आज 94वें वर्षप्रवेश पर भी इस बारे में कुछ लिखने को प्रोत्साहित किया है। पाठको! आपका यह पंचांग अपनी सर्वांगशुद्ध गणित एवं आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों के लिए भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विश्रुत है।

विगत वर्षों में कुछ सत्यसिद्ध भविष्यवाणियां यहां प्रस्तुत कर देना चाहते हैं। देखिये—

1A. भारत के अन्तरिक्ष विज्ञान में आश्चर्यजनक प्रगति की भविष्यवाणी—सं. 2075 वि. के पंचांग, पृष्ठ 52, कॉलम 1/2 पर की गयी थी कि—

"गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत इस वर्ष किंवा आगामी वर्षों में अन्तरिक्ष विज्ञान (Space-Science) में आश्चर्यजनक प्रगति करेगा। जिसमें अन्य कुछ देश भी सहायकरूप में मददगार रहेंगे।"

1B. इस संवत् 2077 का सेनाधिपति (दुर्गेश) सूर्य होने से भारत सैन्यबल को **सुसमृद्ध करके सर्वोपरि प्राथमिकता-सम्पन्न सशक्त देश बनेगा। देश अन्तरिक्ष विज्ञान में भी आश्चर्यजनक चमत्कारों से नवीन शस्त्रास्त्रों के परीक्षण से आश्चर्यजनक प्रगति करेगा।**

इन भविष्यवाणियों की सत्यता को समाचारपत्रों ने इस प्रकार प्रसारित किया—

ISRO continues to make India proud

It was yet another year of jubilation for Indian Space Research Organisation (ISRO) for it achieved a historic feat of having launched a massive 104 satellites using its Polar Satellite Launch Vehicle (PSLV).

इसके अतिरिक्त भारत की अन्तरिक्ष विज्ञान में प्रगति से चीन एवं पाक भी प्रभावित हुए हैं।

2. 12 अप्रैल, सन् 2018 ई. को हरिकोटा में I.R.N.S.S.-1 आई. का परीक्षण सफल, सदमे में चीन-पाक (पंजाब केसरी 13/4/18)

Space-Science की इस सफलता की भविष्यवाणी श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में 4 जून, 2017 को की गयी थी, जोकि आश्चर्यजनक-रूप से सत्य सिद्ध हुई।

3. श्री मार्त्तण्ड पंचांग सं. 2076 वि. पृ. 55 पर जगत् लग्नेश कुण्डली के आधार पर स्पष्ट भविष्यवाणी इस प्रकार की गयी थी—

वर्षेश लग्न में राहु एवं शनि की परिधि में ही सभी प्रभावी ग्रह हैं। अत: कुछ राष्ट्रों में प्राकृतिक आपदा (प्राकृतिक प्रकोप), अग्निकाण्ड, भयंकर तूफान, भूकम्प आदि से मई 2019 तक भारी जनधनहानि के योग बन रहे हैं।

तदनुसार अनेक राष्ट्रों एवं प्रान्तों में भयंकर समुद्री तूफान, जलप्रलय किंवा भयंकर प्राकृतिक आपदा का सामना करना पड़ा।

4. कोरोना महामारी से सन् 2020 ई. का पूर्वार्द्ध व इससे आगे आने वाला समय और भी भयंकर रहेगा—यह भविष्यवाणी सं. 2077 वि. के पंचांग में पृ. 50 पर, कॉलम 1 में स्पष्ट की गयी है, पढ़ें:

"अग. सन् 2020 ई. के लगभग से शनि-मंगल की दृष्टि और दशम-चतुर्थ-सम्बन्ध होने से भारत में हरियाणा, हिमाचल, उत्तराखण्ड आदि प्रान्तों में भयंकर प्राकृतिक आपदा (महामारी कोरोना) से जनधनहानि सम्भव है, भगवान् रक्षा करें।"

5. भारत सरकार द्वारा पुरातन एवं देशहित के विपरीत परिस्थितियों के दूर करने के लिए मुस्लिम-विवाहप्रथा के दोष एवं विदेशी व्यक्तियों के बहिर्गमन की नीति (CAA) से भारतसरकार को देशव्यापी उपद्रवों एवं शाहीनबाग आदि पर भारी संकटों का सामना करना पड़ा है—इस भविष्यवाणी को सं. 2077 वि.के पंचांग में पृ. 50 पर निम्नांकित शब्दों में लिखा गया था—

"कर्क लग्न पर शनि एवं मंगल की पूर्ण दृष्टि भी है। यह दृष्टिसम्बन्ध लगभग 3 मई तक प्रभावी रहेगा। यह समय देश की पुरातन एवं देशहित के विपरीत नयी परिस्थितियों को दूर करने के लिए कठिन परिस्थितियों का संकेत देता है।"

6. सं. 2077 वि. में चीन-अमेरिका एवं कुछ अन्य देशों के साथ कोरोना महामारी के कारण अघोषित युद्ध जैसी स्थिति रही है। इस भविष्यवाणी को सं. 2077 वि. के श्रीमार्तण्ड पंचांग में निम्नांकित शब्दों में लिखा गया था, पढ़ें पृ. 51, कॉलम 1 पर।

"इस वर्ष (सं. 2077 वि. में) शनि-मंगल-सूर्य एवं शुक्र की स्थिति वर्ष के मध्य उत्तर एवं दक्षिण की ओर से शत्रुदेश की गतिविधि अघोषित युद्ध जैसा वातावरण बना सकती है; भारतीय सैन्यबल सशक्त सिद्ध होगा। वर्षप्रवेश-कुण्डली में शनि की सूर्य

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

एवं मंगल पर दृष्टि पाक में आन्तरिक क्रान्ति किंवा विभाजन का संकेत देती है।"

7. सं. 2077 वि. में भाजपा शीर्षक के अन्तर्गत पृ. 52, कॉलम 1 पर स्पष्ट रूप से भाजपा के लिए भारी समस्याओं वाला लिखा था; तदनुसार भाजपा-नेतृत्व को देश की सुधारात्मक नीति के कारण दिल्ली आदि में हिन्दु-मुस्लिम उपद्रव एवं जामिया J.N.U. आदि में होने वाली विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है। पंचांग पृ. 52 पर सत्यापित भविष्यवाणी यह थी, पढ़ें—

"अब आगामी गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार धनु:स्थ गुरु एवं मकरस्थ शनि भी भाजपा के सामने परीक्षा की घड़ी उपस्थित करेगा। क्योंकि समय-समय पर शनि-मंगल किंवा शनि-राहु का एक साथ रहना भारी समस्याओं को उपस्थित करेगा। इस समयावधि में प्रधान नेताओं की सुरक्षा-व्यवस्था को सुदृढ़ रखना होगा।"

8. प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदीजी के बारे में सं. 2077 वि. में जो अंकित किया था, वह अक्षरशः सत्य सिद्ध हुआ है, पढ़ें पृ. 52, कॉलम 2 पर इन, पंक्तियों में—

"चतुर्थ-भाव (सहयोगी वर्ग) में मौजूद गुरु की मदद से **अनेक समस्याओं को हल करने का श्रेय भी मोदी को अवश्य मिलेगा। ताकतवर देशों से सन्तुलन साधने की क्षमता से श्री मोदी को गौरव प्राप्त होगा। अपने शपथग्रहण में 'विम्सटेक देशों' को न्योता विश्व में भारत की धाक जमाने का प्रथम चरण है, जो देश को यश-मान देकर प्रतिष्ठित देशों की श्रेणी में स्थापित करेगा। श्री मोदी की विदेशनीति से भारत गौरवान्वित एवं प्रगतिपथ पर अग्रसर रहेगा; इसमें सन्देह नहीं।**

श्री मोदी की 30 मई को सायं 7 बजे शपथ-ग्रहणकालीन ग्रहस्थिति के निरीक्षण से स्पष्ट है कि—वृश्चिक लग्नस्थ गुरु की मीनस्थ चन्द्र एवं कर्मेश सूर्य पर विशेष दृष्टि है। **अतः श्री मोदी महाभाग को देश की आन्तरिक एवं बाह्य समस्याओं को हल करने के लिए आश्चर्यजनक सफलता मिलेगी। देश प्रतिष्ठित देशों की श्रेणी में आर्थिक एवं राजनैतिक दृष्टि से श्रेय प्राप्त करेगा।"**

तीन तलाक का निरस्तीकरण, धारा 370/35A का जम्मू-कश्मीर से हटा इस प्रान्त को नयी दिशा देना और श्रीराम मन्दिर-निर्माणारम्भ-प्रक्रिया का श्रीगणेश आदि बड़े कार्य श्रीमोदीजी व देश-प्रेमियों के लिए गौरव की बात है।

9. यूरोपीय देशों के बारे में सं. 2077 वि. के पंचांग में पृ. 46, कॉलम 1 पर की गयी भविष्यवाणी भी कम आश्चर्यजनक नहीं। पढ़ें, यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. (1)—

"अणुशस्त्र, सीमाविवाद, शस्त्रास्त्रों की मारक-क्षमताजन्य उन्माद एवं शक्ति-सम्पन्नता प्रदर्शन से हालात बिगड़ेंगे। यूरोप के देशों में विचार-वैमनस्य से द्विधाविभक्त किंवा विशेष ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति घातक रहेगी, इससे विश्वशान्ति को भी खतरा पैदा हो सकता है।"

उ.कोरिया, चीन एवं यू.एस.ए. आदि शस्त्रास्त्र-परीक्षण करके विश्वशान्ति को चुनौती देते रहे हैं।

10. जम्मू-कश्मीर शीर्षक के अन्तर्गत सं. 2077 वि. में अंकित निम्नांकित पंक्तियों की सत्यता स्वतः सिद्ध है। पढ़ें, पृ. 54, कॉलम 1 पर—

" संवत् 2077 वि. की गोचर ग्रहस्थिति कश्मीर की राशि पर मंगलयुत 'शनि की दृष्टि' होने से कश्मीर-समस्या का हल सहज सम्भव नहीं। इस जलते सीमाप्रान्त पर पाक की कुदृष्टि इस संवत् में भयावह स्थिति को जन्म दे सकती है। ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि—तिब्बत, कश्मीर एवं अन्य सीमान्त-प्रदेशों में भारत के साथ पाक-चीन, जिस स्थिति को जन्म दे रहे हैं, वह भारत एवं विश्वजनीन शान्ति के लिए भयावह सिद्ध होगी।"

कश्मीर में प्रतिदिन उग्रवादजन्य अपराध एवं सैन्य संघर्ष प्रायः होते रहते हैं। तथा तिब्बत-लद्दाख-मिजोरम आदि में चीन का दखल भी जगजाहिर है। अभी 13 मई के पंजाब केसरी समाचार पत्र में समाचार था—" **पूर्वी लद्दाख में दिखे चीनी हैलीकॉप्टर" जवाब में भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमानों ने भी वायुसीमा में उड़ान भरी।"** इस प्रकार उल्लिखित सं. 2077 वि. की पंक्तियों की सत्यता स्पष्ट हो गयी है।

हालांकि चाईना द्वारा किये इस युद्धोन्माद में स्वयं चीन ही सर्वत्र घिरा दिखा और विश्व के अधिकतरदेश भारत के समर्थन में दिखाई दिये। यह सभी जानते ही हैं।

पाठको! स्थानाभाव के कारण इस वर्ष की सभी सफल भविष्यवाणियों की चर्चा नहीं कर पा रहे हैं, विद्वान् पाठक स्वयं ही मूल्यांकन करें।

मार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गयीं या की जा रहीं भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनता-जनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन **पाठकों के आभारी हैं, जो विभिन्न प्रान्तों किंवा विदेशों से पत्राचार द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् 2078 वि. की ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव

विज्ञान '**कार्य-कारण के सिद्धान्त**' को ही प्राथमिकता प्रदान करता है। परन्तु असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक भी अपने-आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं। अतः सिद्धान्तों के व्यभिचारमात्र से ज्योतिष शास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्यसिद्धान्तों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसन्धान की आवश्यकता है।

जिस तरह पृथ्वी पर 'लोकतान्त्रिक राज्य' की स्थापना के लिए प्रधानमन्त्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण-कर्म-स्वभाव-योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों एवं शासनतन्त्र पर पड़ता है, उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसारचक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती 'आकाशी कौंसिल' का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुरूप संसार में जो उलट-फेर एवं अघटित घटनाएं घटित होती हैं; इस घटनाचक्र को त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा निर्दिष्ट संकेतों के आधार एवं वि. सं. 2078 की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार कुछ आगामी घटनाओं के बारे में यहां लिखने की चेष्टा कर रहे हैं।

संवत् 2078 वि. के प्रारम्भ में बार्हस्पत्यमान से 'राक्षस' नामक संवत्सर है। संहिता-ग्रन्थ के अनुसार इसका फल इसप्रकार है—

" राक्षसः क्षयकरोऽनलस्तथा, ग्रीष्मधान्य-जननोऽत्र राक्षसो वह्निकोप-मरक प्रदोऽनलः।"

अर्थात्—राक्षस संवत्सर में सर्वत्र प्राकृतिक प्रकोप (रोग) व अग्निकाण्ड, जल प्रलय व अवर्षण आदि से हानिकारक दृश्य दिखाई देंगे। विशेषतया राक्षस संवत्सर में ग्रीष्मसस्य अच्छे होने पर भी जनता लाभान्वित नहीं होती।

एक अन्य संहिता ग्रन्थ में 'राक्षस' संवत्सर का फल इसप्रकार लिखा है—

**" नश्यन्ति सर्वसस्यानि रोगार्तिश्च महर्घता।
प्रजानाशो भयं घोरं राक्षसे गौरि! पीड़नम्॥"**

अर्थात्—राक्षस नामक (इस) संवत्सर में अनेकत्र खड़ी फसलों को अतिवर्षण किंवा अवर्षण से दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। पेयजल की समस्या रहे किंवा प्राकृतिक प्रकोप से जनता स्थानान्तरण के लिए विवश भी हो सकती है। महंगाई बढ़ेगी। देश में अनेकत्र प्रकृति-विपर्यय के लक्षणों एवं अनेकविध रोगों से जनता परेशान रहे। अनैतिक कृत्यों किंवा भूकम्प, सीमाप्रान्तों पर उग्रवादजन्य गतिविधि से जनधनहानि के योग भी दृष्टिगोचर हों।

'वर्षप्रबोध' ग्रन्थानुसार भी इसी प्रकार का फल है—

**" स्व-स्व कार्ये रताः सर्वे, मध्य-सस्यार्घवृष्टयः।
राक्षसाब्देऽखिला लोका राक्षसा इव निष्क्रियाः॥"**

तात्पर्य यह है कि—वर्षा मध्यम, खाद्यान्न महंगे हों, जनता एवं कुछ सीमावर्ती देश के जनजीवन के लिए वर्ष भारी कष्टप्रद रहे।

अर्थात्—राक्षसी वृत्ति के (उग्रवादी) लोकनिरीह लोगों के जीवन के लिए खतरा बने रहेंगे।

मेघ महोदयानुसार 'राक्षस' नामक संवत्सर का फल इसप्रकार है—

" राक्षसे शुक्रः स्वामी, धान्य-संग्रहः कार्यः, चैत्रे कारकाः पतन्ति, वैशाखे-ज्येष्ठे च तैलं महर्घम्, गुड़-खण्डादिकं महर्घम्, श्रावणेऽल्प-मेघः, अन्नं महर्घम्, भाद्रपदे महामेघः, कार्त्तिके रोगार्तिः, मार्गशीर्षादि चत्वारो मासाः महर्घाः, मार्गे सुखं सुभिक्षम्।"

संक्षेप में—इस संवत्सर में आपात स्थिति का सामना करने के लिए अन्न-संग्रह करना चाहिए। अकालिक वर्षा व ओलावृष्टि से हानि सम्भव है। घी, तेल, गुड़, खाण्ड एवं अन्य जन-जीवनोपयोगी वस्तुएं महंगी हों। श्रावण एवं भाद्रपद में कहीं दुर्भिक्ष, कहीं बाढ़ आदि व प्रकृति विपर्यय किंवा महामारी से जनधनहानि का भय है।

संवत् 2078 वि. के राजा एवं मन्त्री का पद मंगल ग्रह को प्राप्त है। साथ ही मेघेश (बादल-वर्षा के स्वामी) का पद भी मंगल ग्रह को ही प्राप्त है। मंगल का इन तीन महत्त्वपूर्ण पदों पर होना देश एवं देश की शान्ति-सुरक्षा की दृष्टि से भयावह है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

'बृहत्संहिता' अनुसार राजा मंगल का फल इसप्रकार है—

" वातोद्धतश्चरति वह्निरति प्रचण्डो, ग्रामान् वनानि नगराणि च सन्दिधिक्षुः।
हाहेति दस्युगणपात-हता रटन्ति, निःस्वीकृता विपशवो मुनि-मर्त्यसंघाः॥"

अर्थात्—इस वर्ष भयंकर अग्निकाण्डों से नगर-पतन व जंगलों को हानि पहुंचेगी। जनधनहानि अधिक होगी। तूफानों व प्राकृतिक प्रलयंकारी घटनाओं से अनेकत्र हानि हो।

किञ्च—इस वर्ष कुछ प्रान्त बाढ़ग्रस्त एवं कुछ प्रान्त दुर्भिक्षग्रस्त रहेंगे। राजनीतिज्ञ जनता के अनुरूप व्यवहार वाले सिद्ध न हों।

'संवत्सरसंहिता' के अनुसार संवत्सरेश मंगल का फल ठीक उपरोक्त आशय को ही व्यक्त करता है—

" अग्नि-तस्कर-रोगाद्यो नृप-विग्रह-दायकः।
गत-सस्यो बहुव्यालो भौमाब्दो बालहा भृशम्॥"

सं. 2078 वि. में मन्त्री पद भी मंगल को ही प्राप्त है। मंगल के मन्त्री होने से चौरादि अनैतिक कृत्य करने वाले व्यक्तियों एवं नानाविद्य रोगों से जनता परेशान रहेगी। कुछ सीमान्त-क्षेत्रों में उग्रवादजन्य अशान्ति रहे—

" अवनिजे ननु मन्त्रिपदं गते-
भवति दस्यु-गदारिज-वेदना।
जनपदेषु क्वचित् सुखिनो जना-
न गोषु पयो द्विजकर्म च॥"

इस वर्ष राजा-मन्त्री—दोनों पद क्रूर ग्रह मंगल को प्राप्त होने से—

" स्वयं राजा स्वयं मन्त्री अग्नि-चौरादिजं भयम्। "—

इस प्रमाणानुसार इस वर्ष भयंकर अग्निकाण्डों से महानगरों, जंगलों एवं बड़े कारखानों में भारी हानि के योग हैं एवं चोर एवं ड्रग आदि के व्यापारी भी सक्रिय रहेंगे। शासनतन्त्र को सावधान रहना होगा।

इस संवत् का मेघेश भी मंगल है, अतः इस वर्ष कहीं जलाप्लाव, कहीं सूखा (दुर्भिक्ष) होने से कृषक वर्ग परेशान रहे। अनेकत्र पेयजल का संकट बनेगा।

इस वर्ष जून-जुलाई में शनि-मंगल का समसप्तक एवं लगभग सितम्बर-मध्य से 20 नवं. तक वक्री गुरु का शनि के साथ मेल भारतीय गणतन्त्र में अघटित घटनाओं का सूचक है, प्रधान नेताओं की सुरक्षा-व्यवस्था को सुदृढ़ रखना होगा। लेकिन यह संवत् भारत को महाशक्ति-सम्पन्न/सर्वसमर्थ बनाने वाला अवश्य है।

संवत् 2078 वि. की गोचर ग्रहस्थिति एवं जगत्-लग्नकुण्डली की ग्रहस्थिति के अनुसार सांसारिक घटनाओं पर एक नज़र

इस वर्ष जगत् लग्न का उदय मकर लग्न में हुआ है। जगत् नाम राशि भी मकर ही है, अतः यह वर्ष विश्व की जीवनशैली में आश्चर्यजनक परिवर्तन करने वाला है।

वर्षेश (जगत्) लग्नकुण्डली
(संवत् 2078 वि.)

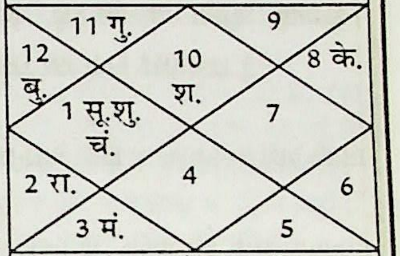

[13/14 अप्रै., 2021 ई., 2 घं. 31 मि. (I.S.T.)]

गत सं. 2077 वि. के 'श्रीमार्तण्ड पंचांग' में जगत्-लग्नकुण्डली की ग्रहस्थिति के अनुसार स्पष्ट घोषणा की थी कि—

" भारत की प्रभावराशि मकर में क्रूर ग्रहों की स्थिति काफी कठिन परिस्थितियों को उपस्थित करने वाली है। संवत् के शुरु से 3 मई सन् 2020 ई. तक एवं आगे 13 मई को गुरु के वक्रत्वकाल में लगभग अगस्त तक के समय में धार्मिक एवं साम्प्रदायिक कलह से सचेत रहना होगा।

वर्षेश कुण्डली में सभी ग्रह राहु एवं केतु से घिरे और संवत्सर के मन्त्री चन्द्र की परिधि में हैं। अतः इस वर्ष कुछ राष्ट्र भूकम्प, तूफान, अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक आपदा से भयंकर जन-धनहानि की चपेट में आ सकते हैं। यह स्थिति मई से सितम्बर के मध्य सम्भव है।"

तदनुसार देहली एवं देश के अन्य भागों में साम्प्रदायिक अग्निकाण्ड एवं प्राकृतिक आपदा (कोरोना महामारी), भूकम्प, सैन्यसंघर्ष आदि से जो जनधनहानि हुई है, वह सर्वविदित है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इस सं. 2078 वि. में जगत् लग्नकुण्डली में भारत की प्रभावराशि मकर में मकरेश शनि की स्थिति शुभ है।

ध्यान देने योग्य बात तो यह है कि—शनि का शत्रु मंगल नीचाकांक्षी होने पर भी गुरु-दृष्ट है, अत: इस कुण्डली में शनि-मंगल का षडष्टकयोग होने पर भी विपक्षी पार्टियां सत्तारूढ़ दल द्वारा देश-हितार्थ किये गये निर्णय किंवा योजनाओं को निरस्त नहीं कर सकेंगी। परिणामस्वरूप, देश आर्थिक संकट से निकलकर चहुंमुखी प्रगतिपथ पर आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर रहेगा। भारी विषम परिस्थिति में भी भारत विश्ववन्द्य एवं महाशक्ति व आर्थिक सामर्थ्य के रूप में उदित होगा।

जगत् लग्नकुण्डली की ग्रहस्थिति का चिन्तन करने से ज्ञात होता है कि—अफ्रीकन देश, पाक, टर्की, अफगानिस्तान, चीन, पाक-अधिकृत कश्मीर, गिलगित, सिन्ध, बाल्टिस्तान आदि में आन्तरिक समस्याएं कहीं सिविल वार का रूप लेकर अशान्ति का कारण बनेंगी। चीन की नामराशि मेष का स्वामी मंगल नीचाकांक्षी है, अत: यू.एस.ए. के साथ व्यापारिक सम्बन्ध विषम/विकट रूप धारण कर सकते हैं, जिससे विश्वजनीन शान्ति को खतरा पैदा हो सकता है। **सं. 2078 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सूर्य-शुक्र की पोजीशन,इस संवत् में मंगल के राजा-मन्त्री दोनों पदों पर अधिष्ठित होने एवं राहुजन्य नेष्टफल-स्वरूप चीन की विस्तारवादी नीति, पाक के उग्रवाद एवं उ.कोरिया आदि की स्वच्छन्दता से सीमाप्रान्तों पर सभी को विशेष सावधान रहना होगा। इस वर्ष कहीं घोषित किंवा अघोषित युद्धात्मक स्थिति से भारत को भी सावधान रहना होगा।**

वर्षलग्नकुण्डली के अनुसार वैशाख, आषाढ़ से आश्विन के मध्य किंवा फाल्गुन में कहीं महामारी, भूकम्प, भयंकर बाढ़ (सुनामी) या कहीं सूखाग्रस्त रहने से जनधनहानि के योग भी बनते हैं।

शनि की दृष्टि एवं गति के आधार पर किसी मुस्लिम-राष्ट्रविशेष की नीति शक्ति-सम्पन्न राष्ट्र की मदद से सीमाप्रान्त अशान्त रहेंगे। शनि की स्थिति कहीं युद्धात्मिका स्थिति बना सकती है;—

"मारिर्दक्षिण-देशे स्यात् तथा बंगेष्युपद्रवः।
लोके दुःखं विजानीयात् पश्चिमे ननु विग्रहः॥"

संवत् 2078 वि. की ग्रहस्थिति का यूरोप के देशों पर प्रभाव (एक संक्षिप्त सर्वेक्षण)

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. (1)

(1 जनवरी से 31 दिसम्बर, सन् 2021 ई. तक)

यूरोपीय देशों की कुण्डली (1)
(1 जन. से 31 दिसं., 2021 ई. तक)
(मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.)

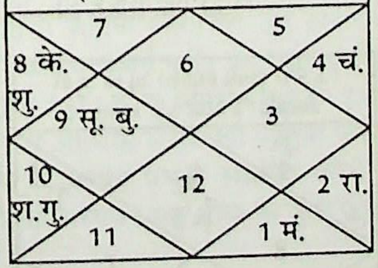

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. (1) की ग्रहस्थिति के अनुसार शुक्र-केतु एवं राहु के अर्धवलय में ग्रहबाहुल्य होने से सशक्त यूरोपीय देशों की अस्मिता कहीं युद्धात्मक स्थिति बना सकती है। इस कुण्डली में गुरु के क्षेत्र में **'बुधादित्य योग'** एवं शनियुत नीचस्थ गुरु की स्थिति में अशान्त वातावरण एवं उग्रवादजन्य अपराधों से मुक्त होने में अनेक राष्ट्रों का सहयोग तो प्राप्त होगा, लेकिन कुछ शस्त्रास्त्र-परीक्षण से सम्बन्धित मसले अशान्ति का कारण भी बनेंगे। जिससे विश्वव्यापी उग्रवाद के पोषक तत्त्वों को सबक भी मिलेगा।

कुण्डली नं. 1 की कुछ दिन पूर्व की ग्रहस्थिति से पूर्ववर्ती वातावरण अधिक चिन्तनीय मालूम देता है। कोरिया, पाक, चीन, रूस, ईरान आदि देश अमेरिका के प्रभुत्व को क्षीण करने के लिए ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, उ.कोरिया किंवा चीन आदि द्वारा सुदूर मारक शस्त्रास्त्रों के परीक्षण से वातावरण को अशान्त कर सकते हैं। भारत की भूमिका इस क्षण में प्रशंसनीय रहेगी।

अमेरिका इस वर्ष ईरान, अफगानिस्तान आदि में संघर्षात्मक रुख अपना सकता है, लेकिन स्थिति को गुरुग्रह संयत रखेगा, फिर भी कुछ देश शस्त्रास्त्रों के निर्माण को गुप्तरूप से जारी ही रखेंगे।

यह वर्ष कहीं युद्धात्मक स्थिति, प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, अग्निकाण्ड, तूफान व अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप से यूरोप में जनधनहानि करे, ऐसी ग्रहस्थिति दृष्टिगोचर हो रही है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

प्रकृति के दोहन एवं पर्यावरण से सम्बन्धित समस्याएं भी विश्व के यूरोपीय देशों को संकटमय स्थिति का समाधान ढूंढ़ने के लिए विवश कर देंगी।

परिणामस्वरूप, उ. कोरिया, चीन, पाक, ईरान आदि अन्य मुस्लिम देश शस्त्रों की मारक-क्षमता को बल देने वाले हथियारों के निर्माण में लगे रहेंगे। इस कुण्डली नं. 1 के अन्तिम चरणों की ग्रहस्थिति एवं आगे की ग्रहस्थिति तो विश्वशान्ति को क्षुब्ध करने वाली ही है। सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. 2

(1 जनवरी से 31 दिसम्बर, सन् 2022 ई. तक)

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. 2 की ग्रहस्थिति का अनुशीलन करने से स्पष्ट ज्ञात होता है कि—लग्नेश एवं कर्मेश बुध, शनि के क्षेत्र में शनि के साथ है। अत: यूरोपीय इटली, फ्रांस, जर्मनी आदि समर्थ देश भी आर्थिक मन्दी की गिरफ्त में आ सकते हैं। 19 दिसं., सन् 2021 ई. को धनेश एवं नवमेश शुक्र वक्रगति से चलने लगेगा, साथ ही लग्नेश-कर्मेश बुध के भी लगभग 14 जनवरी, सन् 2022 ई. को वक्री होने से यूरोपीय देशों के लिए भारी युद्धात्मक किंवा विपदात्मक स्थिति बन सकती है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सूर्य शनि की स्थिति जनवरी, 2022 ई. से आगे संवत् 2078 वि. के अन्त किंवा आगे तक 6 से 8 महीने की ग्रहस्थिति के अनुसार मिथुन-प्रभावराशि देश अमेरिका के प्रभुत्व को क्षीण करे एवं **महाशक्ति की होड़ में ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, अमेरिका, उ. कोरिया, रूस के साथ चीन द्वारा विकसित शस्त्रास्त्रों के विरुद्ध आवाज उठेगी।** परिणाम संघर्षात्मक स्थिति को जन्म देंगे। चीन, रूस, जर्मनी किंवा जापान आदि में परस्पर शस्त्रास्त्रों की होड़ से विश्वशान्ति भंग हो सकती है।

यूरोपीय देशों की कुण्डली (2)
(1 जन., 2022 ई. से सं. 2078 के अन्त तक)
(मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.)

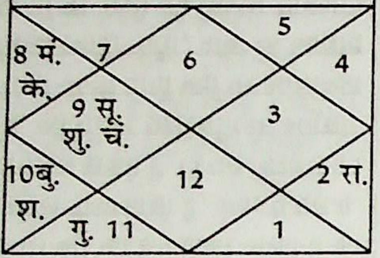

लगभग 26 फर., 2022 ई. के बाद 7 अप्रैल, सन् 2022 ई. तक शनि-मंगल का मकर राशि में योग यूरोपीय देशों की नीति विश्वव्यापी अशान्ति किंवा अघोषित युद्ध का वातावरण बना सकती है। गुरु, शुक्र एवं शनि, मंगल की स्थिति इस संवत् 2078 वि. में कहीं भयंकर प्राकृति आपदा, भूकम्प, तूफान, किंवा अग्निकाण्ड आदि से अप्रत्याशित जनधनहानि के योग बनाती है।।

संवत् 2078 वि. में मुस्लिम राष्ट्रों के हालात

मुस्लिम देशों की कुण्डली (नं. 1)

हिजरी सन् 1442 (1 मुहर्रम)

संवत् 2077 वि. में भाद्रपद शुक्ल तृतीया शुक्रवार, तदनुसार 21 अगस्त, सन् 2020 ई. को 1 मुहर्रम, हिजरी सन् 1442 का आगाज हुआ था। इसलिए इस हिजरी सन् का बादशाह **शुक्र** है।

शुक्रवारी गुर्रा होने से महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी। घी, गुड़, खाण्ड आदि में विशेष तेजी रहे। जून से अगस्त के अन्त तक साम्प्रदायिक सौहार्द बिगड़ेगा। उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों से जनता स्थानान्तरण को विवश हो। रोग एवं प्राकृतिक आपदाओं से जनजीवन त्रस्त रहे।

कुण्डली नं. (1) में लग्नेश शनि व्यय स्थान में मंगल के साथ दशम-चतुर्थसम्बन्ध में होने से ईरान, पाक में मौजूद उग्रवाद के स्वयंभू नेताओं के लिए भयावह स्थिति बने। भारत की प्रभावराशि मकर में शनि स्वस्थ होने से भारत का प्रभावक्षेत्र बढ़े। मुस्लिम राष्ट्रों पर विशेष शान्त्यर्थ प्रयास होते रहेंगे।

मुस्लिम देशों की कुण्डली (1)
हिज़री सन् 1442 (1 मुहर्रम)

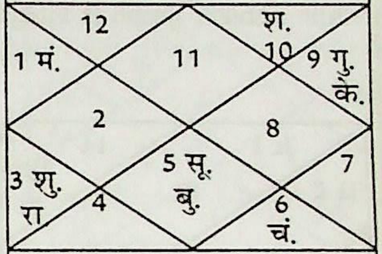

21 अगस्त, सन् 2020 ई., शुक्रवार, 18 घं. 54 मि. (सूर्यास्त समय) (I.S.T.)

भारत की प्रभावराशि के प्रबल एवं मंगल के स्वस्थ होने से भारत अपने शत्रुभूत मुस्लिम राष्ट्रविशेष को हतप्रभ कर देगा। लेकिन कश्मीर के अंगभूत गिलगित, बाल्टिस्तान एवं पाक के पख्तूनिस्तान आदि में तथा सीमाप्रान्तीय विवादों पर भारत का पाक एवं चीन के साथ परस्पर विवाद उग्ररूप धारण कर सकता है।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार कूटनीति किंवा युद्धात्मक स्थिति से ही कश्मीर की समस्या का हल सम्भव है।

कुण्डली नं. 1 के सप्तम भाव में **'बुधादित्य योग'** तो श्रेष्ठ है, लेकिन बुध पाक **की प्रभावराशि कन्या का स्वामी है। कन्याराशि के स्वामी बुध पर गुरु की दृष्टि**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भी है। अतः मुस्लिम राष्ट्रनायकों की नीति एवं भारत के साथ व्यवहार में सुधार सम्भव है।

20 फरवरी, 2020 ई. के बाद संवत् 2077 के अन्त तक की ग्रहस्थिति, षड्ग्रही-योग एवं राहु-मंगल का समसप्तक पाक, अफगानिस्तान, पख्तूनिस्तान, गिलगित, कश्मीर आदि में चिन्तनीय स्थिति बनायेगा। इस दौरान प्राकृतिक प्रकोप एवं अनेकत्र उग्रवादजन्य अपराधों से जनधनहानि के योग हैं।

22 मार्च, सन् 2020 ई. के बाद 4 मई, सन् 2020 ई. तक शनि-मंगल की मकर राशि में स्थिति मुस्लिम राष्ट्रों के लिए अघटित घटना का संकेत देती है। **क्योंकि शनि, मंगल, गुरु का एक साथ, एक राशि में रहना पाक-प्रधान-नेतृत्व के भयावह परिस्थिति बनायेगा।** सिन्ध, गिलगित एवं POK में भयंकर परिस्थिति से निपटना प्रधान नेता को सम्भव न होगा। परिणाम दूरगामी होंगे—

"मकरस्थो यदा भौमः क्रूर-ग्रह-समन्वितः।
त्रिभागशेषा पृथिवी मांस-शोणित-कर्दमैः॥"

सं. 2077 वि. की मार्गशीर्ष कृ. पक्ष द्वादशी का क्षय भी पाक, इराक, ईरान एवं उ.कोरिया, चीन आदि देशों के लिए भयावह है;—

"मार्गशीर्षादि-मासेषु कृष्ण पक्षे तिथिक्षयः।
छत्रभंगं विजानीयात् दुर्भिक्षं वा समादिशेत्॥"

मुस्लिम देशों की कुण्डली (नं. 2)

मुस्लिम देशों की कुण्डली (2)
हिज़री सन् 1443 (1 मुहर्रम)

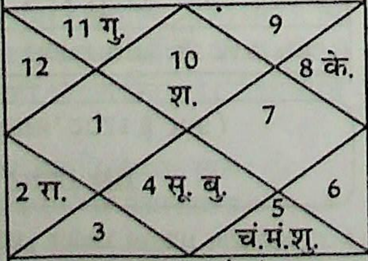

10 अगस्त, सन् 2021 ई., मंगलवार,
19 घं. 24 मि. (सूर्यास्तसमय) (I.S.T.)

10 अगस्त को मंगलवार वाले दिन 1 मुहर्रम प्रारम्भ होगा। इस हिजरी सन् का राजा मंगल मुस्लिम देशों की शासनसत्ता एवं जनजीवन में भारी उलटफेर करने वाला है। क्योंकि मुस्लिम कुण्डली नं. 2 में **मकरस्थ शनि का सूर्य, बुध के साथ समसप्तक एवं शुक्र-मंगल का शनि के साथ षडष्टक यहां के प्रधान नेता के लिए परीक्षा की घड़ी सिद्ध करेगा, क्योंकि 10 अग. (हिजरी सन् के प्रारम्भ) से ही शुक्र-शनि वक्रगति से चल रहे हैं और 14 अग. के लगभग क्रूर शनि के साथ गुरु भी वक्रगति** से मकर राशि में ही मेल करता है। इस प्रकार सूर्य-बुध का नीच गुरु व शनि के साथ समसप्तक बनता है। अतः

"क्रूराणां सह यौम्यैश्च यदि स्यात् समसप्तकम्।
अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीड़ा महत्यपि॥"

इस वर्ष की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार लगभग 5 सितं. को मंगल पाक की प्रभावराशि कन्या में आयेगा। अतः अक्तूबर 2021 ई. तक पाक के ब्लूचिस्तान, सिन्ध एवं कुछ अन्य प्रान्तों में भयंकर अराजकता के परिणामस्वरूप पाक में सिविलवार सम्भव है और इस दौरान प्रधान शासक को अपना पदत्याग करने को बाध्य भी होना पड़ सकता है। सैन्य-संघर्ष आन्तरिक अशान्ति को शान्त नहीं कर सकेगा। POK, बलूचिस्तान, सिन्ध आदि में सैनिक अत्याचार एवं अनाचार पाक के विखण्डन का कारण बन जायें तो कोई आश्चर्य नहीं। हां, सबसे कठिन परिस्थिति तो 21 अक्तूबर से 4 दिसम्बर, सन् 2021 ई. के लगभग तक है। इसमें मुस्लिम राष्ट्रों को (विशेषतः पाक को) भारी आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। चीन की विस्तारवादी नीति पाक पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सफल रहेगी, परिणामस्वरूप, चीनी भाषा का अध्ययन यहां पाक के कुछ प्रान्तों में अनिवार्य होगा।

पाक की इस संवत् 2078 वि. की ग्रहस्थिति की विषमता से संकेत मिलता है, कि—इस वर्ष 'पाक अधिकृत कश्मीर' पाक से विलग हो सकता है। परिणामस्वरूप, पाक को चीन आदि कुछ देश अपनी स्वार्थपरक नीति से छद्म युद्ध के लिए प्रेरित कर सकते हैं, जोकि पाक के लिए हानिकारक रहेगा।

संवत् 2078 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं भारत-सरकार में घटित होने वाले घटनाचक्र का आकलन

सभी शुभाशुभ घटनाएं मनुष्य की पहुंच से बाहर समझी जाती हैं, लेकिन जो रहस्य साधारणतः इन्द्रियों की पहुंच से बाहर हैं अथवा भूत-भविष्य के गर्भ में निहित हैं, वे ज्योतिषशास्त्र-द्वारा प्रत्यक्ष जान लिये जाते हैं। हमारे ऋषियों ने वेद-चक्षु इस ज्योतिषशास्त्र की रचना की है, जोकि भारत के लिए गौरव की बात है—

"ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तद्ज्ञानमतीन्द्रियम्।
प्रणीतं भवता येन पुमान् वेद परावरम्॥"—(श्रीमद्भागवतपुराण)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इस प्रकार जगत्पिता की अदृश्य, अलौकिक शक्ति ग्रहों के आकर्षण-विकर्षण के आधार पर ब्रह्माण्ड को प्रभावित करती है, संचालित करती है। ग्रहगतिजन्य इस परिणाम को हम **"भवितव्यता"** किंवा **"ईश्वरेच्छा"** कहकर स्वीकार करते हैं।

स्वतन्त्र भारत का 74वां वर्ष

(14 अगस्त, सन् 2020 ई. 13 अगस्त, 2021 ई. तक)

स्वतन्त्र भारत का 74वां वर्ष

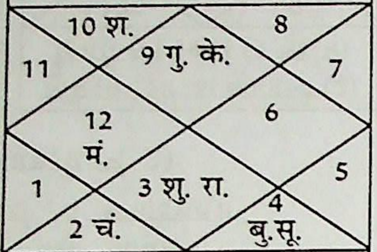

14 अग., 2020 ई.,
17 घं.9 मि. (I.S.T.).

स्वतन्त्र भारत के 74वें वर्ष की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत की प्रभावराशि मकरस्थ शनि की मीन राशिस्थ मंगल पर दृष्टि आर्थिक और सामाजिक अनेक समस्याओं को जन्म देने वाली है, लेकिन लग्नस्थ गुरु-केतु सभी समस्याओं को हल करेंगे, क्योंकि केन्द्रस्थ केतु केन्द्रेश गुरु के साथ है—

" यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां त्रमोग्रहौ।
नाथेनान्यतरेणापि सम्बन्धाद् योगकारकौ ॥"

लेकिन गुरु-केतु का शुक्र-राहु के साथ समसप्तक होने से अनेक राष्ट्रीय समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, पुनरपि, स्वतन्त्र भारत के 74वें वर्ष की कुण्डली में नवमेश सूर्य एवं दशमेश बुध का 8वें भाव में **'बुधादित्य योग'** प्रधान नेता द्वारा प्रभावशाली ढंग से सभी वर्गों का विश्वास जीतकर समस्याओं का समाधान करने में सफल करता है।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत के अन्तरिक्ष विज्ञान में विश्व के प्रतिष्ठित देशों में अग्रणी कोटि में आने के योग हैं। अमेरिका, जापान, चीन आदि प्रतिष्ठित देश भी भारत की प्रभुसत्ता से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेंगे।

श्री मोदीजी के प्रधान-मन्त्रित्वकाल में भारत सबसे तेज विकास वाला प्रगतिप्रद देश रहेगा। लेकिन औद्योगिक चाल को सुचारु, सुव्यवस्थित रखने में काफी प्रयास करने होंगे। अनेक देशों द्वारा भारत में औद्योगिक निवेश से भारत में बेरोजगारी घटेगी एवं भारत एक समृद्ध एवं सशक्त देशों की कोटि में नजर आयेगा, यह गर्व की बात होगी। समर्थ शक्तिशाली देशों में भारत की स्थिति से सभी वर्ग लाभान्वित होंगे।

मकरस्थ शनि की स्वतन्त्र भारत की प्रारम्भिक अवस्था में सूर्य-बुध के साथ सम-सप्तक होने से मकरस्थ शनि का फल इस प्रकार अनुभव होगा—

" पृथ्वीशाः क्रोधपूर्णाः भवति पथिभयं सर्वरोगाद्विनाशः।
चिन्तास्थानं नृपाणां भवति सति बले सूर्यपुत्रे मृगस्थे॥"

74वें वर्ष के प्रारम्भ में विपक्षी दल शासनतन्त्र में बाधक रहें। देश में चिकित्सा-व्यवस्था को सुव्यवस्थित करना होगा। रास्ते में चोर-उचक्कों को भी नियन्त्रित करना होगा। इन स्थितियों में देश को प्राथमिक दृष्ट्या सुनियन्त्रित करना होगा।

अग. सन् 2020 ई. के लगभग से शनि-मंगल की दृष्टि और दशम-चतुर्थ-सम्बन्ध होने से भारत में कहीं भयंकर प्राकृतिक आपदा से भयंकर जनधनहानि सम्भव है, भगवान् रक्षा करें।

इस संवत् के कठिन क्षण—

इस संवत् की प्रारम्भिक ग्रहस्थिति के अनुसार 25 मार्च से 4 मई तक एवं 18 जून, 2020 ई. से **15 अग. तक, आगे 4 अक्तू. से 24 दिसम्बर, 2020 ई. तक एवं फर. , सन् 2021 ई. से संवत् 2077 वि. के अन्त तक और सं. 2078 वि. के प्रारम्भिक कुछ मासों तक की ग्रहस्थिति अनेकत्र भीषण प्राकृतिक प्रकोप, सुनामी, भूकम्प एवं धार्मिक/सामाजिक उपद्रव किंवा उग्रवादजन्य हत्याकाण्ड का संकेत देती है। इस समय अनेक देशों में घटित इस घटनाचक्र से शासनतन्त्र भी असमर्थ अनुभव करेगा।**

स्वतन्त्र भारत का 75वां वर्ष

(14 अगस्त, सन् 2021 ई. से संवत् 2078 वि. के अन्त तक)

स्वतन्त्र भारत का 75वां वर्ष

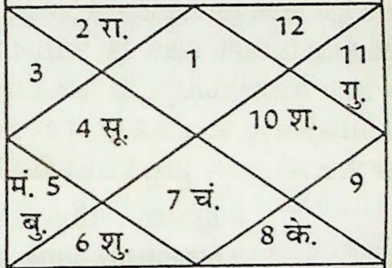

14 अग., 2021 ई.,
23 घं. 18 मि. (I.S.T.).

स्वतन्त्र भारत के 75वें वर्ष की ग्रहस्थिति का परिशीलन करने से स्पष्ट है कि—शनि-**सूर्य का समसप्तक यहां की जनता एवं प्रशासक वर्ग के लिए भारी उलझनों वाला सिद्ध होगा।** देश में आन्तरिक, साम्प्रदायिक उलझनों में विदेशी हाथ होने से कुछ प्रान्तों में संकटापन्न स्थिति बनेगी।

क्योंकि **भारत की प्रभावराशि मकर है, शनि-गुरु लगभग अक्तूबर-मध्य तक वक्र गति से चलेंगे, गुरु शनि की राशि कुम्भ में**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

है। इस स्थिति में शुभ मन्त्रणा देने वाला देश भी सहायक सिद्ध न होगा, विदेशनीति में निजीदेश के विपक्षी नेता ही देश के लिए विपरीत परामर्श एवं अविमृश्यकारिता का परिचय देंगे। अपि च—शनि सारा साल मकर राशि में ही रहेगा, गुरु-शुक्र के वक्रत्वकाल में अक्तूबर-मध्य के लगभग तक देश में भयंकर महामारी से जनता परेशान रहेगी। पड़ोसी देश चीन, पाक एवं कुछ अरब देश भी देश के सीमाप्रान्तों पर युद्धात्मक नीति से भारी चिन्तनीय स्थिति बना सकते हैं;—

" पृथ्वीशाः क्रोधपूर्णा भवति पथिभयं सर्वरोगाद् विनाशः।
चिन्तास्थानं नृपाणां भवति सति पथे सूर्यपुत्रे मृगस्थे॥"

14 सितं. को वक्रगति से गुरु मकर राशि में आकर शनि के साथ एकराशिसम्बन्ध बनायेगा। इस समय शनि भी वक्री ही है। मंगल, सूर्य, बुध के साथ शनि-गुरु का नवपंचम-सम्बन्ध कहीं भयंकर बाढ़, अग्निकाण्ड एवं तूफान आदि से हानि के योग बनायेगा।

21 अक्तूबर को मंगल तुला राशि में आकर 4 दिसं. तक शनि के साथ परस्पर दृष्टिसम्बन्ध बनायेगा। 26 फर., 2022 ई. से संवत् 2078 वि. के अन्त तक शनि-मंगल दोनों मकर राशि में एक साथ चलेंगे। स्पष्ट है कि—21 अक्तूबर से संवत् के अन्त तक देश कश्मीर, बलूचिस्तान, सिन्ध, गिलगित आदि पाक की समस्याओं के कारण भारत चीन, तिब्बत, मिजोरम एवं अन्य सीमावर्ती समस्याओं से चीन की विस्तारवादी नीति से युद्ध जैसी स्थिति से अशान्त रहेगा। इस वर्ष पाक, चीन, नेपाल—ये तीनों देश भारत के लिए समस्यात्मक रहेंगे।

संवत् 2078 वि. की गोचर ग्रहस्थिति का भारत पर प्रभाव

पाठको! ग्रहगतिजन्य प्रभाव से प्रताड़ित समस्त ब्रह्माण्ड, देश-समाज एवं व्यक्ति की स्थिति ठीक उस तिनके की भांति ही अनुभव की गयी है, जो वायुवेग से प्रताड़ित होकर अपने अस्तित्व को खोकर इधर-उधर भागता फिरता है। 'नैषधचरित' में स्पष्ट लिखा है—

"अवश्य भव्येष्वनवग्रह ग्रहा यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा।
तृणेन वात्येव तयानुगम्यते लोकस्य चित्तेन भृशाऽवशात्मना॥"
—(नैषधचरित)

यह बात भी नितान्त सत्य है कि—ग्रहों की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तरण होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि—आकाशीय पिण्डों (ग्रहो) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है—इस तथ्य को वैज्ञानिक, विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।

ग्रहगतिजन्य संकेतों का अध्ययन करके हम मनीषी-महर्षियों के द्वारा निर्दिष्ट सिद्धान्तों के अनुसार भारत की राजनीति एवं अन्य पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्धों पर अपने विचार लिखने की चेष्टा कर रहे हैं। **विद्वज्जनों के आशीर्वाद की याचना है, क्योंकि ग्रहगतिजन्य संकेतों को ठीक-ठीक पकड़ने में अनेकदा चूक भी हो सकती है। विद्वज्जन स्वयं संकेत को सुधारकर हमें आशीर्वाद दें—प्रार्थना है।**

संवत् 2078 वि. की प्रवेशकालीन कुण्डली

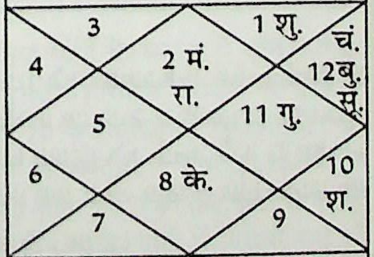

12 अप्रैल, सन् 2021 ई., 8 घं.00 मि. (I.S.T.)

चैत्र कृष्ण अमावस चन्द्रवार, तदनुसार 12 अप्रैल, सन् 2021 ई. को 8 A.M. पर मीनस्थ चन्द्र के समय वृष लग्न में सं. 2078 वि. (नववर्ष) का प्रवेश होगा। कुण्डलीगत ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नस्थ मंगल, राहु एवं लग्नेश शुक्र का व्यय स्थान में मंगल के क्षेत्र में होना उत्तर दिशा के सीमाप्रान्तों पर भारी अशान्ति का संकेत देता है। संकेत मिलता है कि—उत्तरी प्रान्तों एवं देशों में भयंकर प्राकृतिक (भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट, तूफान आदि) आपदा किंवा उग्रवादजन्य परेशानी से अशान्ति रहे। कश्मीर में उग्रवादजन्य उपद्रवों एवं विस्फोट आदि से जनधनहानि होगी।

13 अप्रैल को मंगल मिथुन राशि में आकर जून 2021 के प्रारम्भ तक शनि के साथ षडष्टकयोग बनाता रहेगा। **इन दिनों रूस, नेपाल, चीन एवं पाक की नीति केवल अमेरिका, भारत एवं पश्चिमी देशों को ही प्रभावित नहीं करेगी, चीन की विस्तारवादी नीति से नेपाल में माओवाद गति पकड़ेगा। पाक अपनी सत्ता को क्षीण करेगा, समुद्री क्षेत्रों में चीन का वर्चस्व छद्म युद्ध का कारण बनेगा। भारत, नेपाल, पाक के सीमाप्रान्त अशान्त रहने से सैन्यबल का प्रयोग अनिवार्य होगा।**

इस वर्ष राजा एवं मन्त्री पद मंगल को ही प्राप्त हैं, अतः इस वर्ष भारत के कुछ प्रान्तों एवं पश्चिमी-उत्तरी देशों में भयंकर अग्निकाण्ड, विस्फोट, हिंसा, साम्प्रदायिक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उपद्रव आदि की घटनाएं एवं भारत देश की आन्तरिक देशद्रोही घटनाएं भी अशान्ति का कारण बनेंगी।

संवत् 2078 में 20 जुलाई, सन् 2021 ई. से संवत् के अन्त तक शनि, मंगल, गुरु की स्थिति निश्चितरूप से किसी देश के मानचित्र में परिवर्तन करेगी, कहीं भयंकर उग्रवाद या युद्धात्मक वातावरण से जनधनहानि के योग भी बन रहे हैं।

ध्यान दें—वर्षप्रवेशकुण्डली में भारत की प्रभावराशिपति मकरेश शनि की उपस्थिति संवत्सर 2078 वि. के अन्त तक मकर में ही रहेगी। अतः भारत के व्यापारक्षेत्र एवं भारत की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए नये आयाम बनेंगे एवं आश्चर्यजनक रूप में विदेशी निवेश भारत में होंगे, जिससे भारत की आर्थिक स्थिति आगे उत्तरोत्तर सुदृढ़ होती जायेगी। **देश महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर रहेगा।**

भारतीय गणतन्त्र का 72वां वर्ष

भारतीय गणतन्त्र की ग्रहस्थिति

26 जन. 2021 ई., 15 घं.10 मि. (I.S.T.)

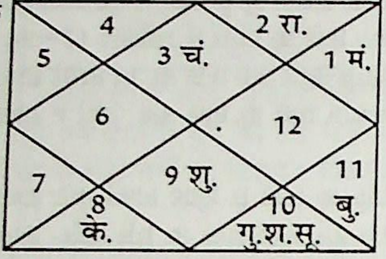

भारतीय गणतन्त्र के 72वें वर्ष का उदय 26 जनवरी, सन् 2021 ई. को 15 घं. 10 मि. (I.S.T.) पर हुआ है। मुन्थेश शनि सूर्य एवं गुरु के साथ निजक्षेत्र में है।

गणतन्त्र का उदय मंगलवार, आर्द्रा नक्षत्र एवं वैधृति योग में होने से प्राकृतिक प्रकोप एवं प्रतिपक्ष की आलोचनात्मक क्षति से विशेष सचेत रहना पड़ेगा। क्योंकि प्रधान नेतृत्व के देश को विश्वगुरु रूप में स्थापित करने के लिए उठाये गये कदमों (प्रोग्रामों) को सीमावर्ती विरोधी देश एवं विपक्षी पार्टियां सहज में न लेकर हा-हुल्ला (विरोध-प्रदर्शन) करेंगी, लेकिन दशाब्दियों पुराने उलझे हुए मसलों को गणतन्त्र की दशा निरस्त करेगी—ऐसा दृष्टिगोचर होता है। जम्मू-कश्मीर की प्रभावराशि मकर और भारत की प्रभावराशि में राश्यैक्य होने से भारत को प्राचीन उलझी हुई समस्याओं का हल करने की स्थिति में लाकर खड़ा करेगा—ऐसा योग है। सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

अप्रैल से जून, 2021 ई. तक शनि, मंगल का षडष्टक एवं आगे शनि-मंगल का समसप्तक 20 जुलाई, सन् 2021 के लगभग तक और आगे शनि-मंगल का षडष्टक 5 सितं. तक भारतीय गणतन्त्र के लिए उलझनपूर्ण अवश्य है।

इन दिनों जलवायु-विचार से कर्नाटक, आसाम, महाराष्ट्र एवं कुछ अन्य प्रान्तों में कहीं सूखा एवं पेयजल की समस्या रहेगी। सूखाग्रस्त क्षेत्रों में सरकार को विशेष उपाय एवं संसाधनों को जुटाना होगा। जून से अगस्त, सन् 2021 ई. के मध्य अनेकत्र बाढ़ एवं सीमाओं पर सुरक्षा की दृष्टि से सैन्यबल को सुसन्नद्ध रखना होगा।

गतवर्ष के पंचांग सं. 2077 वि. में पृ. 51, कॉलम 2 पर की गयी भविष्यवाणी की सफलता आप आज के वातावरण से स्पष्ट अनुभव करें;—पढ़ें।

" (सं. 2077 वि. मे) शनि-मंगल की स्थिति चीन, कश्मीर (पाक-अधिकृत) एवं अन्य सन्देहास्पद सीमासुरक्षा का हल अन्ततः बलपूर्वक ही करना पड़ेगा। ऐसी ग्रहस्थिति भावी समय में संकेत देती है।"

आगे 29 अक्तूबर, सन् 2021 ई. से लगभग 4 दिसं. तक शनि-मंगल का परस्पर दृष्टिसम्बन्ध अनेकत्र अग्निकाण्ड एवं भूकम्प आदि से हानि का संकेत देता है। इस समयावधि में उग्रवादजन्य दुर्घटनाओं से हानि के योग भी हैं।

26 फरवरी, सन् 2022 ई. से संवत् के अन्त तक मकर राशि में शनि-मंगल का एकत्र रहना तो मेषराशि-प्रधान, मकरराशि-प्रधान नेताओं एवं कुम्भ, तुला राशिप्रधान नेताओं के लिए उलझनपूर्ण है। सुरक्षा एवं सीमासुरक्षा की दृष्टि से अत्यधिक सावधानी रखनी होगी। इन दिनों प्राकृतिक आपदा, महामारी एवं उग्रवादजन्य जघन्य कृत्यों से सावधान रहना आवश्यक है।

भारत के प्रमुख राजनैतिक दल

भाजपा-स्थापनाकालीन ग्रहस्थिति

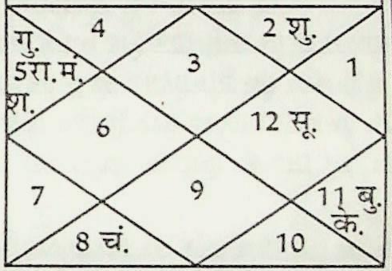

भारतीय जनता पार्टी—स्थापनाकालीन ग्रहस्थिति के अनुसार शनि, मंगल, राहु एवं गुरु का एकत्र होना भाजपा के लिए संघर्षपूर्ण स्थिति का संकेत देता है।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार 2 जून, सन् 2021 ई. तक शनि-मंगल का षडष्टक एवं 20 जून से 18 अक्तूबर, सन् 2021 ई. तक गुरु- शनि का वक्रगति से चलना भी कहीं वामपंथी एवं क्रिश्चियनों का हिन्दुत्व के विरुद्ध किंवा हिन्दु-मुस्लिम आदि साम्प्रदायिक विवाद देश में शान्ति भंग कर सकता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इस वर्ष 21 अक्तूबर से 21 दिसं., 2021 ई. तक, 14 सितं. से 19 नवं. तक तथा 22 फरवरी (सन् 2022 ई.) से **संवत् के अन्त तक शनि-मंगल व शनि-गुरु की स्थिति एवं शनि-मंगल का मकरस्थ होना भारत देश की शासनसत्ता के लिए भारी कठिनतम रहेगा एवं भारत के सीमाप्रान्तों पर युद्धात्मक स्थिति से भारत दशाब्दों से चली आ रही समस्याओं को हल करने में सफलता प्राप्त कर सकेगा। शासन-सत्ता भारत में विकास-क्रान्ति का सूत्रपात करने में भी सफल अवश्य रहेगी।**

कांग्रेस-स्थापनाकालीन ग्रहस्थिति

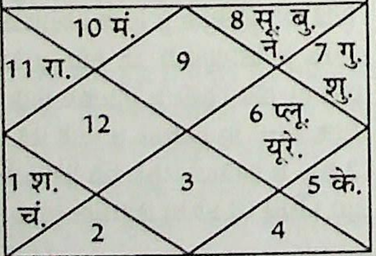

कांग्रेस पार्टी—कांग्रेस-स्थापनाकालीन ग्रहस्थिति के अनुसार भाग्येश एवं कर्मेश सूर्य-बुध व्ययस्थान में होने से अभी समय प्रगतिप्रद नहीं है। क्योंकि 20 जून, 2021 ई. से 18 अक्तूबर तक शनि-गुरु दोनों ही वक्री रहेंगे, अत: राजनैतिक गतिविधि विपक्षी प्रधान पार्टी के तौर पर देश के हित में अनुभव नहीं की जायेगी।

हां, गुरु के मीन राशि में आने पर लगभग 13 अप्रैल, सन् 2022 ई. के बाद सन् 2030 ई. के मध्य कांग्रेस पार्टी पुन: कुछ प्रभाव पकड़ेगी। पार्टी को अभी सुचिर मन्थन की आवश्यकता है।

आम आदमी पार्टी (आप)—पार्टी अध्यक्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार भाग्येश (नवमेश)-दशमेश शनि व्ययस्थान में नीच होकर चन्द्र के साथ है। सप्तमेश एवं व्ययेश मंगल सूर्य के साथ पराक्रम स्थान में नीच है। अत: उक्त ग्रहस्थिति पार्टी अध्यक्ष एवं पार्टी के भविष्य के लिए उज्ज्वल तो नहीं।

प्रशासनात्मक उलझनों एवं अनेक राजनैतिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

इस समय सूर्य में सूर्यान्तर, चन्द्रान्तर, मंगलान्तर एवं राह्वन्तर, जोकि 10-1-2021 ई. तक प्रभावी रहेंगे, यह समय जनता की समस्या को हल करने के लिए बहुत कठिन रहेगा। तत्पश्चात् 19-2-21 ई. से आगे का समय इस पार्टी एवं पार्टी अध्यक्ष के लिए गरिमामय एवं राजनैतिक प्रगतिप्रद रहेगा;—ऐसा ग्रहस्थिति से ज्ञात होता है।

कुछ प्रतिष्ठित राजतनीतिज्ञ

श्रीनरेन्द्रमोदी महाभाग—श्री नरेन्द्रमोदी जी का जन्म 17 सितं., सन् 1950 में गुजरात स्थित वाड नगर (Vad Nagar) (मेहसाना) में 11 घं. 00 मि. A.M. पर हुआ। इनकी जन्मकालिक ग्रहस्थिति इस प्रकार है—

जन्माङ्गकालिक ग्रहस्थिति श्रीनरेन्द्रमोदी

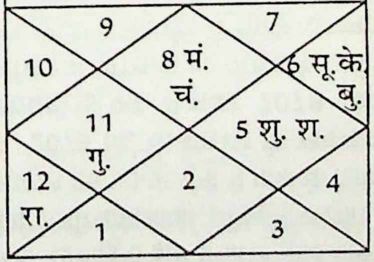

इस समय चन्द्र में शुक्रान्तर 3-5-2021 ई. तक चलेगा, जोकि देश में व्याप्त अनेक आपदाओं से परेशान रखेगा। **लेकिन भाग्येश चन्द्र लग्न में नीच होकर स्वराशिस्थ मंगल के साथ योग करता है। मंगल जोकि 'रुचक योग' बनाता है, चन्द्रयुति में विशेष प्रभावी नहीं, फिर भी इस समय देश में व्याप्त सभी कठिनाइयों के बावजूद यह योग "शास्त्री- मन्त्र जपाधिकार-कुशलो राजोऽथवा तत्समः"—प्रमाणानुसार श्री मोदीजी को 27-4-2022 ई. के बाद 20-4-2024 ई. तक सात्त्विक, धर्मात्मा होने से भारत को दूरदर्शिता से आत्मनिर्भर, लोकतन्त्र को नयी दिशा देने वाला एवं उपलब्धियों से गौरवान्वित करने वाला सिद्ध होगा।** इनके संरक्षण में देश विश्वबन्द्य एवं सर्व-समर्थ देशों में अग्रणी स्थान प्राप्त कर सकेगा।

श्रीमती सोनिया गांधी—श्रीमती सोनिया गांधी के जन्मांग में शनि कर्कस्थ (शत्रुक्षेत्र में) एवं लग्नेश चन्द्र व्यय स्थान में है। अत: शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से कष्टप्रद परिस्थिति का संकेत मिलता है। इस वर्ष 20 जून से लगभग 18 अक्तूबर, सन् 2021 ई. तक गुरु-शनि के वक्रत्व काल में एवं 21 अक्तूबर से संवत् 2078 वि. के अन्त तक शनि-मंगल की युति या षडष्टक इनकी सेहत एवं राजनैतिक दृष्टि से काफी उलझनपूर्ण एवं नकारात्मक ऊर्जा का संकेत देते हैं। कांग्रेस पार्टी में विरोधी स्वर भी सिरदर्द बन सकते हैं। पार्टी का नेतृत्व नयी नेत्री या युवा नेता के हाथ में अधिक प्रभावी रहेगा।

श्री राहुल गांधी—श्री राहुल गांधी जी की जन्मकालिक ग्रहस्थिति में भाग्येश-कर्मेश शनि व्यय स्थान में नीच होकर नीचाकांक्षी मंगल को देख रहा है। इस साल गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार शनि-मंगल का समसप्तक 2 जून से 20 जुलाई, सन् 2021 तक एवं 22 फर. से संवत् 2022 ई. तक शनि-मंगल का मकरराशि (श्री राहुलजी के भाग्य स्थान) में एकत्र रहना इनकी राजनैतिक चर्चा के लिए अभ्युदयकारक प्रतीत नहीं होता; सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

श्रीमती प्रियंका वाड्रा—श्रीमती प्रियंका वाड्रा की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार कर्मेश गुरु स्वस्थ है एवं भाग्येश शनि व्ययस्थान में मित्रक्षेत्री है। गोचर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहस्थिति के अनुसार श्रीमती प्रियंका को शुक्र की महादशा में गुरु एवं शनि का अन्तर, जोकि 14-3-2022 से 12 जनवरी, सन् 2023 ई. तक प्रभावी रहेगा, इस समयावधि में पार्टी में कुछ ऊर्जा फूंक सकने का अवसर मिलेगा, जिससे पार्टी को कुछ लाभ रहेगा।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब—इस प्रान्त की प्रभावराशि मीन एवं नामराशि कन्या है। भारतीय गणतन्त्र की 72वें वर्ष की कुण्डली में मीन राशि का स्वामी गुरु मकरराशि में सूर्य-शनि के साथ है। शनि की मीन राशि पर दृष्टि है। संवत् के लगभग आरम्भ से ही शनि-मंगल का षडष्टक 2 जून तक चलेगा एवं 2 जून से 20 जुलाई, 2021 ई. तक शनि-मंगल का समसप्तक बना हुआ है। यहां प्राकृतिक आपदा से कृषिकर्म को हानि पहुंचेगी एवं सरकार को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा।

ध्यान दें—20 जून से 18 अक्तू., 2021 ई. के मध्य गुरु-शनि दोनों वक्रगति से चलेंगे, अतः कुछ अवांछित तत्त्व प्रान्त की शान्ति को भंग कर सकते हैं। 22 फर. सन् 2022 ई. से संवत् के अन्त तक शनि-मंगल का मकर राशि में रहना इस प्रान्त के लिए उलझनपूर्ण है, क्योंकि सीमान्तक्षेत्रों पर एवं आन्तरिक कुछ अव्यवस्था को नियन्त्रित करने के लिए प्रधान नेता को कठोर पग उठाने होंगे।

हरियाणा—इस प्रान्त की प्रभावराशि मीन एवं नामराशि मिथुन है। मिथुन राशि का स्वामी बुध सं. 2078 वि. की प्रवेशकालीन कुण्डली एवं वर्षेशकुण्डली में नीच है। जून से अक्तू. 2021 ई. तक की गोचर ग्रहस्थिति इस प्रान्त में शासकों के समक्ष कठिन परिस्थितियां उपस्थित करेगी, क्योंकि गुरु-शनि दोनों वक्रगति में रहेंगे। यहां 14 सितं. से 19 नवं., 2021 ई. तक शनि-गुरु के मकर में रहने पर राजनीतिज्ञों में परस्पर राजनैतिक वैमनस्य से प्रान्त की योजनाओं को कार्यान्वित करने में कठिनाई पैदा होगी। लेकिन यहां के कुशल शासक सारी स्थिति को नियन्त्रित करने में सफल रहेंगे। प्रान्त कृषि आदि में नयी योजनाओं से प्रगतिपथ पर रहेगा।

हिमाचल प्रदेश—इस प्रान्त की प्रभावराशि मीन एवं नामराशि कर्क है। कर्क राशि पर शनि की क्रूर दृष्टि सालभर रहेगी। 2 जून को कर्क राशि में मंगल का प्रवेश एवं शनि-मंगल का समसप्तक लगभग जुलाई 2021 ई. तक चलेगा। **इस ग्रहस्थिति का नेष्ट प्रभाव लगभग 18 अक्तू. 2021 ई. तक कहीं भूकम्प, तूफान, भूस्खलन एवं अन्यविध प्राकृतिक आपदा के रूप में सम्भव है। इस समयावधि में यहां प्रधान शासक को राजनैतिक उलझनों का भी सामना करना पड़ेगा। यद्यपि इस प्रान्त की** नयी योजनाएं एवं आकर्षण इस प्रान्त के लिए प्रगतिप्रद रहेंगे। बागवानी एवं नयी योजनाएं यहां के प्रधान शासक को यश एवं स्थायीत्व प्रदान करेंगी। प्रधान नेतृत्व की देखरेख एवं केन्द्र की सहायता से यह प्रान्त प्रगतिपथ पर ही अग्रसर रहेगा।

उत्तर प्रदेश—इस प्रान्त की नामराशि वृष एवं प्रभावराशि धनु है। राहु ग्रह सारा साल इस प्रान्त की नामराशि में ही रहेगा एवं धनु राशि का स्वामी गुरु वक्रगति से 14 सितं. से 19 नवं., 2021 ई. तक शनि के साथ मकर राशि में रहेगा।

यह ग्रहस्थिति इस प्रान्त में खाद्य पदार्थों में महंगाई करेगी एवं शासक को समस्या हल करने के लिए केन्द्र से सहायता लेनी होगी—

"मकरस्थो यदा जीवः करोति वक्र-गामिताम्।
महर्घत्वं भवति धान्यस्य नात्र कार्या विचारणा॥"

क्योंकि इस प्रान्त की नामराशि वृष में सारा साल राहु रहेगा एवं दिसं. 2021 से जन. 2022 ई. के लगभग तक राहु-मंगल का समसप्तक इस प्रान्त में उग्रवादजन्य किंवा प्राकृतिक आपदा से भारी संकटापन्न स्थिति पैदा करेगा। महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी, महामारी आदि प्राकृतिक आपदा से भी जनता परेशान रहेगी—

"वृषे राहुर्यदा याति दुःखं सर्वजनेषु च।
दुर्लभानि च धान्यानि नान्यथा ऋषि-भाषितम्॥"

2 जून से 20 जुलाई तक और आगे अक्तू., 2021 ई. तक एवं 22 फर., सन् 2022 ई. से संवत् के अन्त तक का समय इस प्रान्त के लिए कठिन परिस्थितियों वाला है। लेकिन उत्तर प्रदेश का कुशल नेतृत्व स्थिति पर नियन्त्रण करने में यशस्वी रहेगा।

जम्मू-कश्मीर—इस प्रान्त की नामराशि मकर एवं प्रभावराशि तुला है। मकर राशि का स्वामी शनि लगभग 2 जून, 2021 ई. तक मंगल के साथ षडष्टकयोग बनायेगा। आगे शनि-मंगल का समसप्तक जुलाई तक इस प्राप्त में उग्रवादियों द्वारा वातावरण को अशान्त रखेगा। पाक की नीति यहां उग्रवादियों द्वारा प्रसारित नीति पाक के लिए ऐतिहासिक रूप से विघातक सिद्ध होगी। परिणाम पाक-अधिकृत कश्मीर, सिन्ध एवं ब्लूचिस्तान के क्षेत्रों में भी भारी आपदाग्रस्त एवं उग्र-प्रदर्शनों से पाक के लिए स्वयं दुःखदायी सिद्ध होंगे। सम्भव है कि—सं. 2078 वि. के प्रारम्भ के लगभग **किंवा 20 जून से18 अक्तूबर, 2021 के मध्य एवं 22 फर. से संवत् 2078 के अन्त तक पाक के पार्ट के विखण्डन या मानचित्र में परिवर्तन का योग बने। इसी समयावधि में पाक की शासनसत्ता में परिवर्तन के साथ कश्मीर में शान्तिस्थापना करने में भारत को उग्रवादग्रस्त क्षेत्र में शान्ति की ओर बढ़ने का अवसर मिलेगा।**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गत वर्ष के पंचांग सं. 2077 वि. में पृष्ठ 54, कॉलम 1 पर जो जम्मू-कश्मीर शीर्षक के अन्तर्गत हमने स्पष्ट घोषणा की थी, वह अद्यतनीन दृश्य की साक्षी है; पढ़ें—

"संवत् 2077 वि. की गोचर ग्रहस्थिति कश्मीर की राशि पर मंगलयुत 'शनि की दृष्टि' होने से कश्मीर-समस्या का हल सहज सम्भव नहीं। इस जलते सीमाप्रान्त पर पाक की कुदृष्टि इस संवत् में भयावह स्थिति को जन्म दे सकती है। ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि—तिब्बत, कश्मीर एवं अन्य सीमान्त-प्रदेशों में भारत के साथ पाक-चीन, जिस स्थिति को जन्म दे रहे हैं, वह भारत एवं विश्वजनीन शान्ति के लिए भयावह सिद्ध होगी।"

दिल्ली—इस प्रान्त की प्रभावराशि मकर एवं नामराशि मीन है। इस वर्ष मकर राशि में स्थित शनि के साथ मंगल के पहले षडष्टक, फिर शनि-मंगल के समसप्तक एवं अक्तूबर मध्य तक गुरु-शनि के वक्रत्वकाल में दिल्ली में साम्प्रदायिक उपद्रव एवं प्रच्छन्न अराजक तत्त्वों से भारी अशान्ति के योग हैं। शिक्षण-संस्थानों में पनप रहे देशद्रोही एवं कुछ बाह्य साम्प्रदायिक तत्त्वों से अशान्ति को कण्ट्रोल करने में शासनतन्त्र को कठोर पग उठाने पड़ेंगे। आगे 22 फर. से संवत् 2078 के अन्त तक यहां भारी प्राकृतिक प्रकोप एवं संकट से हानि के योग भी हैं। लेकिन भारत पर सुयोग्य शासकों का हाथ सर्वत्र स्थिति को कण्ट्रोल करके देश को प्रगतिपथ ही रखेगा।

देशहितार्थ "भारत की राजनीति पर पुनः सुयोग्य राजनीतिज्ञों का वरद हाथ रहेगा। जनता राजनीतिक वंशवाद से विमुख होती नजर आयेगी और भारत को चहुंमुखी प्रगति की ओर ले जाने वाला नेतृत्व उभरकर देशहित में काम करेगा।"

पाठको! प्रभुकृपा से भूत-भविष्य में जो कुछ (ग्रहगोचरवश) अनुभव किया, आपके सामने रख दिया है। जो घटित हो चुका, वह आपने देख लिया। जो भविष्य है, उस पर आप भूतानुसन्धान के आधार पर विश्वास करें—

"समस्तमेतद् गतमागतं तथा भविष्यमप्यक्षरशो यथोत्तरम्।
निबोधितं शास्त्र-परम्परावशाद् भवादृशां भारतवासिनां पुरः॥"

लेख पूर्ण होने की तिथि—
1 जून, सन् 2020 ई.
(श्री गंगादशहरा)

शुभचिन्तक—
पं. इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा

———

श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली (मोहाली) पंजाब के इन युवा-कर्मठ विद्वान् कार्यकर्ताओं का पंचांग-प्रकाशन में भारी सहयोग वस्तुतः प्रशंसनीय है—

"श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली" के प्रबन्धक, हमारे पूज्यपिता जी के प्रिय शिष्य चि. प्रेमचन्द शर्मा; ग्राम सुन्हाड़—सौर (सोलन) (हि.प्र.) निवासी श्रीकृष्ण शर्मा, शास्त्री, M.A., साहित्याचार्य, वेदाचार्य; नालाबलोग (पंचकूला) निवासी चि. सुरेशानन्द शर्मा, B.A. एवं चि. रविसन्धु (सुपुत्र राणा रणजीत सिंह जी) श्रीमार्त्तण्ड पंचांग (हिन्दी), बटुक पंचांग एवं शिरोमणि तिथपत्रिका (पंजाबी) के पाण्डु-लिपि-लेखन एवं प्रूफरीडिंग आदि का काम बड़ी तत्परता, सावधानी और आदरभाव से करते हैं। पंचांग के प्रकाशन-कार्य में हमारा भार इन युवाओं के स्वत्व से भरे इस उत्साहपूर्ण सहयोग से काफी हल्का हुआ है। एतदर्थ इनके निरन्तर प्रगतिमय परम-उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारा इन्हें सस्नेह आशीर्वाद है।

—प्रियव्रत शर्मा, इन्दुशेखर शर्मा,
(सम्पादक—श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् 2078 वि. में भारत की जलवायु एवं वर्षा-विचार

आगामी वर्षों की ग्रहस्थिति अनेक प्रान्तों में जलवायु, प्राकृतिक प्रकोप एवं पर्यावरण-विचार से भारी कठिन परिस्थिति को लेकर आ रही है;— पढ़ें इस लेख में

— संयमी शर्मा,

जलवायु एवं वर्षा-विचार के मूलभूत सिद्धान्तों, मानवीय भूलों, प्रबन्धन की अदूरदर्शिता, प्राकृतिक स्रोतों का दोहन एवं प्राकृतिक रहस्यों की उपेक्षा विश्व के लिए जल्दी ही भयावह सिद्ध होगी—इसे जनता, नेतागण एवं देश की प्रबन्धन-समितियों को गम्भीरता से अतिशीघ्र लेना होगा, अन्यथा **"यद्भावी न तद्भावी भावी चेन्न तदन्यथा"**—(जो होना है, वह होना ही है)—यह सोचकर कब तक प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर पाएंगे—यह तो भगवान् ही जानें। **लेकिन ग्रहचाल के अनुसार प्राकृतिक आपदाओं के भयंकर दुष्परिणाम शीघ्र ही स्थावर-जंगम जगत् को विनाश के कगार पर ले जाने वाले मालूम होते हैं।** जलवायु-वर्षा-विचार के साथ इस लेख में एतत्-सम्बन्धित आधारभूत रहस्यों की चर्चा भी सूक्ष्म रूप से की गयी है।

जल, वायु, अनाज किंवा अन्य कृषि उत्पादन—ये जीवनाधायिका-चतुष्टयी ही संवत्सर के फल की दिशा व दशा को निर्धारित करती है। यदि वर्ष के ये चार स्तम्भ सुदृढ़ हों तो वर्ष सुदृढ़, जनजीवन स्वस्थ एवं समृद्ध रहेगा—ऐसी मान्यता है। लेकिन "जल एवं वायु"—ये संवत् के प्रमुख स्तम्भों में से हैं। इन्हीं के आधार पर "अन्नस्तम्भ" की कल्पना की जा सकती है। जलवायु के बिना प्राणियों के जीवनाधायक अन्न की भी उपज सम्भव नहीं। अत: सं. 2078 वि. के जलवायु का ग्रहयोग के आधार पर यहां संक्षिप्त निर्देश नीचे दे रहे हैं। **आशा करते हैं कि—यह संक्षिप्त लेख किसानों/बागवानों के लिए एक दिशा-निर्देशक सिद्ध होगा एवं पर्यावरण में विषाक्त तत्त्वों से वैज्ञानिकों को सावधान रहना होगा, अन्यथा 'ग्लोबल वार्मिंग' से अण्टार्कटिका एवं हिमालय खण्डों में तापमान बढ़ने से आगामी 30/35 वर्ष की ग्रहस्थिति विश्वजजीन भयंकर परिणामों का संकेत देती है।**

गोचर-ग्रहस्थिति के अनुसार उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव, जोकि समस्त विश्व के मौसम को स्थिर रखने में सर्वोच्च भूमिका निभाते हैं, 'ग्लोबल वार्मिंग' के कारण उत्तरी ध्रुव में बढ़ रहा तापमान आगे आने वाले लगभग 15/16 वर्षों की ग्रहस्थिति के अनुसार मंगल, शनि, राहु एवं केतु कुछ वर्षों में ही विश्व के लिए खतरे की घण्टी बजा सकते हैं। **कहने का तात्पर्य यह है कि—"ग्लोबल वार्मिंग" विश्व के जलवायु के लिए भयंकर किंवा विपरीत परिस्थितियां बनाएगी। जिससे ध्रुवों के आसपास के देशों को ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को ही दुष्परिणाम झेलने पड़ेंगे। अनेकत्र 'ऋतु-विपर्यय' अनुभव होने से वैश्विक तापमान किंवा प्रकृति में महानद और अन्य जलस्रोत सूखने लगेंगे। समुद्र एवं महानदों के तटों पर प्रलयंकारी दृश्य उपस्थित होंगे। वृक्षों से ऑक्सीजन कम प्राप्त होने लगेगी—इत्यादि आश्चर्यजनक परिवर्तन होंगे, जिससे रोग बढ़ेंगे।** मौसम में इस प्रकार के उतार-चढ़ाव प्रकृति के साथ चल रहे खिलवाड़ के कारण जारी हैं। प्रकृति में हो रहे असामान्य किंवा अप्राकृतिक परिवर्तन को समझने में तो आधुनिक वैज्ञानिक भी सकते में हैं। मौसम की अनिश्चितता से कृषिक्षेत्र में सम्भावित जोखिम कम करने के लिए सरकार को व्यापक रणनीति बनानी होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सभी समुदायों के धार्मिक ग्रन्थों में पर्यावरण-हितैषी बनने के लिए कहा गया है। मनुस्मृति में एक वृक्ष को दस पुत्रों के बराबर की संज्ञा दी गयी है। कुरान कहती है कि जल ही जीवन है। 'वेद' पानी के महत्त्व की गाथाओं से भरे पड़े हैं। ईसाई समुदाय में भी प्रकृति-प्रेम को श्रेष्ठता प्रदान की गयी है। इस वर्ष की गोचर ग्रह-स्थिति के अनुसार अलनीनो गर्मी को बढ़ायेगा, परिणामस्वरूप कहीं सूखा, कहीं भयंकर बाढ़ से जनधनहानि का संकेत मिलता है। 'अलनीनो' ऐसी प्राकृतिक घटना है, जिससे प्रशान्त महासागर का गर्म पानी उत्तर एवं दक्षिणी अमेरिका की ओर फैलता है। परिणामस्वरूप, पूरी दुनिया का तापमान बढ़ेगा। मौसम का सामान्य जलवायु-चक्र बिगड़ जायेगा, कहीं विनाशकारी बाढ़, कहीं सूखे के हालात बनेंगे। अमेरिका, चीन एवं भारत आदि में विगत कई वर्षों से बाढ़ एवं उत्तरी भारत में सूखा भी इन्हीं कारणों से सम्भव हुआ है।

आगे बर्फ के पिघलने से विश्व में समुद्री-तूफान आदि विनाशकारी लीलाएं देखने को भी मिलेंगी। आर्द्रा-प्रवेश-कालीन ग्रहगति के अनुसार जम्मू-कश्मीर, गुजरात, बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, उड़ीसा, राजस्थान, मिजोरम आदि में इस वर्ष प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। महाराष्ट्र (मुम्बई) में भी प्राकृतिक प्रकोप दिखाई देगा।

समुद्रतटवर्ती महानगरों एवं विश्व के देशों में इस वर्ष (सं. 2078 वि.) से ही विशेष प्राकृतिक प्रकोप से हानि के योग स्पष्ट रूप से ग्रह स्थिति संकेत देती है।

भारत में वर्षा एवं वायु के योग

जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है, लगभग उसी समय से भारत के प्रान्तों में वर्षा का आगमन ग्रहगोचर के अनुसार माना गया है। ज्योतिष-शास्त्रानुसार वर्षा, वायुमण्डल, समुद्री तूफान एवं चक्रवात आदि प्राकृतिक उत्पातों का विचार भी सूर्य के आर्द्राप्रवेश, रोहिणीवास, चतुर्मेघविचार एवं गोचर ग्रहस्थिति पर निर्भर करता है। अतः सर्वप्रथम सूर्य की आर्द्रा-प्रवेशकालीन कुण्डली के आधार पर विचार करते हैं।

सं. 2078 वि. में ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी, मंगलवार, तदनुसार 22 जून, 2021 ई. को 5 घं. 37 मि. (I.S.T.) पर तुलास्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे।

सूर्य की आर्द्राप्रवेशकालीन ग्रहस्थिति निम्नांकित है—

सूर्यार्द्रा-प्रवेशकुण्डली

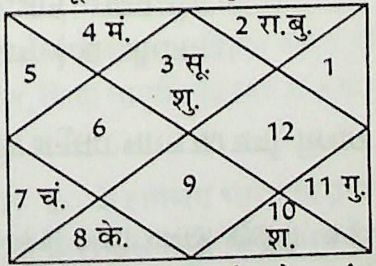

[22 जून, 2021 ई. को 5 घं. 37 मि. (I.S.T.)]

आर्द्राप्रवेश कुण्डली में तृतीयेश सूर्य एवं पंचमेश-व्ययेश शुक्र ये दोनों ग्रह लग्न (केन्द्र) में स्थित हैं। शेष कोई भी ग्रह केन्द्र में नहीं है। प्रातःकाल सूर्योदय के लगभग सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश देश में अनेकत्र भयंकर महामारी का संकेत देता है—

"सूर्योदये रोगकरी स्मृतार्द्रा"— प्रमाणानुसार इस वर्ष सरकार को जल-वायु-विकार से जनता को सुरक्षित रखने एवं रोगों से मुक्ति के लिए विशेष व्यय करना होगा। किंच—दिन में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र का प्रवेश भी कहीं भयंकर बाढ़ व अनेकत्र दुर्भिक्ष का संकेत देता है—"दिवार्द्रां याति चेद्भानुर्जलभक्षण-कारकः।"

अपि च—सूर्य मंगल(अंगारक)वार वाले दिन आर्द्रा में दाखिल होगा। अतः भीषण गर्मी से यह वर्ष भयंकर रोगों किंवा अग्निकाण्ड आदि से जनता को परेशानीकारक मालूम देता है—

"रवौ भौमे तथा मन्दे रौद्रभं याति भास्करः।
तदा न शुभदः प्रोक्तः शुभदः शेषवासरे॥"

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहस्थिति के अनुसार इस वर्ष किसानों के लिए टिड्डी-दल-प्रकोप किंवा वर्षा की कमी से अनेकत्र राजस्थान, गुजरात, पंजाब एवं प. उ.प्र. में हानि के योग भी हैं।

आर्द्राप्रवेश-कुण्डली में **नीचस्थ मंगल का शनि के साथ समसप्तक-योग इस वर्ष देश में पनप रही देशद्रोही प्रवृत्ति किंवा सीमाप्रान्तों पर भयंकर युद्धात्मक स्थिति का प्रभाव भी जल-वायुविकार एवं जनता को परेशानी का कारण बनेगा।**

इस वर्ष वर्षेश एवं वर्ष का मन्त्री मंगल है और आर्द्राप्रवेशदिन—ये सब मंगलवार को होने से ग्लोबल-वार्मिंग और मौसमचक्र के बदलाव के कारण पारा सामान्य से 1.5 डिग्री अधिक रहेगा। मई-जून में भी अप्रत्याशित गर्मी रहेगी।

शनि-मंगल की पोजीशन इस वर्ष कहीं भयंकर बाढ़, कहीं अप्रत्याशित दुर्भिक्ष, किंच कहीं कृषि की क्षति से जनधन के लिए हानिप्रद रहेगी।

इस संवत् में रोहिणी का वास तट पर होगा, अत: महानद एवं समुद्रतटवर्ती क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदा से हानि होगी।

इस वर्ष शनि के मकरस्थ होने से शनि की दृष्टि उत्तर की ओर रहेगी। अत: उत्तरी कोरिया एवं उत्तर दिशावर्ती भारतीय भूखण्ड पर शस्त्रास्त्रों के परीक्षण से पोल्यूशन का प्रकोप बढ़ेगा। सीमाप्रान्त आतंकग्रस्त रहेंगे।

इस वर्ष मेघेश मंगल होने से "**क्वचिदवर्षण-वर्षणजं भयं क्वचिदथो बहुताप-भयप्रद:**"—इस प्रमाण के अनुसार वर्षा, बाढ़, सूखे (दुर्भिक्ष) के कारण जनजीवन त्रस्त रहेगा।

इस संवत् में '**चतुर्मेघों**' में '**संवर्त**' नामक मेघ है,-"**संवर्ते वायुपीड़नम्**"—प्रमाणानुसार कुछ प्रान्तों में वायुवेग एवं भूकम्प आदि से अप्रत्याक्षित हानि के योग हैं।

'**नवमेघों**' में '**आवर्त**' नामक मेघ है,—"**आवर्ते वृष्टिहानि: स्यात्**"—प्रमाणानुसार अनेकत्र दुर्भिक्ष का संकेत मिलता है।

इस वर्ष '**सप्तवायु**'-विचार से '**उद्वह**' नामक वायु होने से कहीं भूकम्प से हानि, वर्षा के दिनों में मेघ-संचार होने पर भी मेघों के इतर-तितर हो जाने से फसलों को हानि पहुंचेगी।

इस वर्ष **जलस्तम्भ** 13.2 प्रतिशत एवं **तृणस्तम्भ** के अभाव होने से इस साल मानसून-समयानुसार वर्षा न होगी, खड़ी फसलों को हानि होने से कृषक परेशान रहें। **पाठको! गर्म हवाओं का प्रकोप आज की ही समस्या नहीं। इसके दूरगामी प्रभावों के प्रति हमें सावधान अभी से रहना होगा। ग्रहगोचर के अनुसार आगामी वर्षों में तापमान दो से चार डिग्री सैल्सियस तक बढ़ सकता है। यह मानवता एवं जीवन्त सृष्टिमात्र के लिए बड़ी चुनौती है। वैज्ञानिकों को इस बारे में सावधान कर देना उचित समझते हैं।** इस संवत् में '**रोहिणी**' का वास '**तट**' पर होने से कहीं खड़ी फसलें सूखेंगी, कहीं पेयजल का अभाव परेशान करेगा।

अब संवत् 2078 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार भारत का वर्षा-विचार संक्षेप से लिखना उचित समझते हैं—

"वृष्टिमूला कृषि: सर्वा वृष्टिमूलं च जीवनम्।
तस्मादादौ प्रयत्नेन वृष्टिज्ञानं समाचरेत्॥"

—(कृषि पाराशर)

सं. 2078 वि. में प्रत्येक मास में वायु-वर्षाविचार इस प्रकार है—

अप्रैल (सन् 2021 ई.)—2, 5, 6, 9, 10, 11, 13, 16, 20, 24, 27, 29 एवं 30 अप्रैल को पू. असम, पू. बिहार, बंगाल एवं बर्मा के कुछ क्षेत्रों में बादलचाल एवं खण्डवृष्टि के योग हैं। उ.भारत में गर्मी बढ़ने लगेगी।

मई (सन् 2021 ई.)—1, 4, 5, 6, 11, 12, 14, 15, 16 एवं 21, 23, 27 से 29 और 31 मई तक शनि-मंगल का षडष्टक कहीं भयंकर सूखे, कहीं अग्निकाण्ड का संकेत देता है। **तथा च**—महाराष्ट्र, भूटान, उड़ीसा, शिलांग,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

काठमाण्डु, जम्मू-कश्मीर, उ.प्र. के कुछ भाग, उ.खण्ड, बिहार एवं हि.प्र. में वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं। 14 से 16 एवं 28 से 31 मई के लगभग विशेष वायुवेग एवं वर्षा के योग हैं।

जून (सन् 2021 ई.)—1, 2, 3, 14 से 18 जून के मध्य, 20, 21, 22, 24, 25, 29 जून के लगभग उ.खण्ड, हि.प्र., जम्मू-कश्मीर, उ.प्र. एवं उत्तरी भारत के कुछ भागों में वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं।

नोट—1, 12, 18, 19 से 22 जून के लगभग तक शनि-मंगल की पोजीशन कहीं भारी बाढ़, समुद्री तूफान, नदी प्रवाह से फसलों को हानि, सीमाप्रान्तों पर अशान्ति एवं आकाशीय बिजली गिरने से पर्वतीय क्षेत्रों में अनेकत्र भूस्खलन एवं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि के योग बनाती है।

जुलाई (सन् 2021 ई.)—जुलाई 5 से 8, 12, 16, 17, 19, 20, 21, 23, 24, 25, 28, 29 को शनि, गुरु-मंगल एवं सूर्य की पोजीशन अनेक प्रान्तों में भारी बाढ़, वर्षा, कहीं सूखा एवं पेयजल की कमी से भारी परेशानी का संकेत देती है। **किंच**—उड़ीसा, असम, कश्मीर, चण्डीगढ़, दिल्ली एवं केरल, हि.प्र., उ.प्र., उ.खण्ड एवं उ. भारत में वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं। कहीं वर्षा, कहीं भयंकर सूखा रहने से दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। **इस मास में सूर्य-शनि का समसप्तक वायुवेग एवं अनेकत्र प्राकृतिक प्रकोप से हानिकारक मालूम देता है।**

अगस्त (सन् 2021 ई.)—इस मास में शनि-सूर्य का समसप्तक एवं शनि-शुक्र का मंगल के साथ षडष्टक 1 से 3, 8 से 19 एवं 24 से 31 अगस्त तक भारत के अनेक प्रान्तों में कहीं बाढ़, कहीं सूखा व दुर्भिक्ष की स्थिति वारे। कश्मीर, उ.खण्ड, महाराष्ट्र, उ.प्र., चण्डीगढ़ एवं दिल्ली आदि व राजस्थान, बिहार, बंगाल एवं म.प्र. के कुछ क्षेत्रों में कहीं बादलचाल के साथ खण्डवृष्टि हो, हवा का जोर रहे।

इस मास में कहीं भूकम्प, अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि के योग हैं।

सितम्बर (सन् 2021 ई.)—2, 5, 6, 10 से 16 सितं. तक एवं 21, 23, 25 तथा 27 सितम्बर के लगभग नेपाल, दार्जीलिंग, विन्ध्यप्रदेश, उ. प्रदेश, हि. प्र., कश्मीर एवं उत्तराखण्ड में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो। हि.प्र., उ. खण्ड एवं कश्मीर के कुछ हिस्सों में हिमपात के समाचार भी मिलेंगे।

नोट—यहां शनि-गुरु की वक्र पोजीशन में सीमाप्रान्त तो अशान्त रहेंगे, साथ ही आगे प्राकृतिक आपदाएं भी जनता के लिए भयावह ही हैं।

अक्तूबर (सन् 2021 ई.)—अक्तू. 2 से 6, 9 से 11, 15 से 22 एवं 30, 31 अक्तूबर को लगभग श्रीलंका, आसाम, बंगाल, उ.प्र., किंवा भारत के पश्चिमी भूभाग पर कहीं बादलचाल, तूफान, किंवा वायुवेग के साथ वर्षा हो। उ.भारत के तापमान में गिरावट आने लगेगी।

नोट—अक्तू. 2, 5, 9, 10, 18, 19, 20 के लगभग भारत के प्रान्त विशेष में प्राकृतिक आपदा किंवा दुर्घटना विशेष से हानि भी सम्भव है।

नवम्बर (सन् 2021 ई.)—2, 6, 7, 9, 13, 14, 16, 19, 20, 21 एवं 29, 30 नवं. के लगभग कश्मीर, उ.खण्ड, हि.प्र., जम्मू-कश्मीर आदि में बादलचाल रहे, कहीं भारी हिमपात से यातायात अवरुद्ध रहे। उ.भारत (हरियाणा, चण्डीगढ़ आदि) में बादलचाल, खण्डवृष्टि एवं शीतलहर व धुन्ध किंवा दिल्ली आदि में पर्यावरणविक्षोभ से यातायात बाधित हो। शीतलहर से हानि के समाचार मिलें। 21 अक्तू. से 29 नवं. तक धुन्ध आदि व यान-दुर्घटना से हानि सम्भव है।

दिसम्बर (सन् 2021 ई.)—1, 2, 4, 5, 7, 8, 9, 10, 15, 16, 18, 22, 23, 26, 28 एवं 30 दिसम्बर के लगभग, विशेषत: 7 से 10 एवं 18, 20, 22 दिसं. को उ.भारत में वायु, वर्षा एवं धुन्ध के कारण भयंकर शीतलहर चलेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

धुन्ध से यातायात अवरुद्ध होगा। कश्मीर, उ.खण्ड, हि.प्र. आदि में जोरदार हिमपात हो एवं भारत के उ.भागों में कहीं खण्डवृष्टि भी हो।

जनवरी (सन् 2022 ई.)—जनवरी 2, 5, 7, 8 एवं 11 से 19 जनवरी तक तथा 22, 23, 24, 29, 30 जनवरी को कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि हो। उत्तरी भारत के भयंकर शीतलहर की चपेट में आने से अनेकत्र यान-दुर्घटना आदि के अशुभ समाचार मिलेंगे। उ.खण्ड, जम्मू-कश्मीर एवं किसी देश-विशेष व क्षेत्र में हिमखण्ड-स्खलन किंवा शीत लहर से हानि होगी। पर्वतीय प्रान्तों में हिमपात और कहीं बादलचाल/खण्डवृष्टि भी सम्भव है।

फरवरी (सन् 2022 ई.)—2, 3, 5, 6, 7, 12, 13, 16, 19 से 21, 22, 24, 25, 26, 27 एवं 28 फरवरी को हवा का जोर रहे। उ.भारत के कुछ भागों में कहीं बादलचाल किंवा वायुवेग से कहीं खण्डवृष्टि हो। 19 फर. के बाद ऋतु (मौसम) में परिवर्तन अनुभव होने लगेगा।

इस मास के मध्य से वसन्त ऋतु के आगमन से सुहावना वातावरण बनने लगेगा। 26 फर. के बाद शनि मंगल का ऐक्य देश एवं मौसम में विषम परिस्थिति बना सकता है।

मार्च (सन् 2022 ई.)—मार्च 1, 2, 3, 4, 6, 7, 10, 12, 14, 15, 18, 20, 21, 24, 25, 26, 29 एवं 31 के लगभग मध्यप्रदेश, बंगाल, आसाम, मुम्बई, प. राजस्थान एवं कश्मीर में कहीं तेज हवाओं के साथ खण्डवृष्टि हो। उ.भारत में वायुवेग रहे एवं गर्मी का प्रकोप बढ़ने लगेगा।

जलवायु एवं वर्षा विषयक कुछ विशेष योग—

संवत् 2078 वि. के प्रारम्भ में लगभग 13 अप्रैल से जून 2022 ई. के प्रारम्भ तक शनि-मंगल का षडष्टक भारत के छत्तीसगढ़, बिहार, उ.खण्ड एवं तटवर्ती इलाकों में प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, तूफान आदि से हानिप्रद रहे। तत्पश्चात् शनि-मंगल का समसप्तकयोग लगभग 20 जुलाई, 2021 ई. तक एवं 16 जुलाई से 15 अग. तक शनि की सूर्य पर दृष्टि किसी प्रान्त या देश-विशेष में भारी प्राकृतिक आपदा (सुनामी, तूफान, भूकम्प आदि) से भयंकर हानि की सूचक है। इस समय अनेकत्र अनावृष्टि किंवा दुर्भिक्ष से हानि भी सम्भव है—

"क्रूराणां सह सौम्यैश्च यदि स्यात् समसप्तकम्।
अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीड़ा महत्यपि॥"

20 जुलाई, 2021 ई. से लगभग 5 सितम्बर तक शनि-मंगल का षडष्टक चलेगा—यह समयावधि कहीं समुद्री तूफान, कहीं अतिवर्षण किंवा कहीं दुर्भिक्ष से परेशानी का संकेत देती है।

लगभग 18 जून, 2021 ई. से 9 अक्तू. एवं आगे 19 अक्तू. तक शनि-गुरु वक्रगति से चलने के कारण भारत एवं विश्व के कुछ देशों की जलवायु को प्रभावित करेंगे।

17 अक्तू. एवं लगभग 21 अक्तूबर, सन् 2021 ई. से सूर्य-मंगल पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी, साथ ही मंगल का शनि से चतुर्थ-दशमसम्बन्ध भी पर्यावरण एवं जलवायुविचार से परेशानीकारक मालूम देता है।

21 अक्तू., 2021 ई से लगभग 11 दिसं. तक शनि-मंगल का दशम-चतुर्थसम्बन्ध किसी देश-विशेष में भयंकर महामारी से परेशानी वाला रहे—ऐसा योग है।

लगभग 14 जनवरी, 2022 ई. से 11 फर. तक शनि-सूर्य का राश्यैक्य कहीं विषैली गैस के उत्सर्जन से जनधनहानि का संकेतक है।

26 फर. (सन् 2022 ई.) से संवत् 2078 वि. के अन्त तक मकर राशि में शनि-मंगल का एकत्र होना भी देश-विशेष में आन्तरिक अशान्ति, शस्त्रास्त्रों के परीक्षण एवं राजनैतिक हत्याकाण्ड से अशान्ति एवं जलवायु के अप्रत्याशित परिवर्तन से कृषि एवं शासनतन्त्र के लिए चिन्तनीय रहेगा।

— — —

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्यापार-विमर्श (संवत् 2078 वि.)

(संवत् 2078 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं एवं शेयर बाज़ारों में आने वाली तेज़ी एवं मन्दी का मासिक विवरण)

लेखक—इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,

संसार के सभी पदार्थों पर ग्रहों का नियन्त्रण है और सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशिभोग करता है, तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक वस्तुएं ग्रहविशेष की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तुओं में परिवर्तन आते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से बाज़ारों में घटाबढ़ी होती है, जिसे हम **'तेज़ी-मन्दी'** कहते हैं।

हम यहां **'व्यापार विमर्श'** में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेज़ी-मन्दी का मशवरा अपने ग्राहकों को देते हैं। व्यापारियो ! निराश न हों। हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे।

व्यापारी सज्जनो! 1 जनवरी, सन् 2021 ई. से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी-मन्दी की रिपोर्ट या वायदा/हाजर बाज़ार का चांस अर्थात् सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स, चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों किंवा बिनौला आदि तिलहन; जीरा, धनिया, हल्दी, लाल-कालीमिर्च, रुई एवं कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट चाहते हैं तो फीस Rs. 5100/- (इक्यावन सौ रुपये) प्रतिमास प्रतिजिन्स के हिसाब से Advance भेजकर Report प्राप्त करें। एक वर्ष की प्रतिजिन्स फीस Rs. 51,000/- (इक्यावन हज़ार रुपये) है।

Note: व्यापारियों से निवेदन है कि वे अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि के लिए सम्पादक/लेखक जिम्मेदार न होंगे।

संवत् 2078 वि. में ग्रहस्थिति के अनुसार तेज़ी-मन्दी का आकलन

संवत् 2078 वि. में तेज़ी-मन्दी का विस्तृत विवरण देने से पहले हम इस संवत् के नाम, वर्ष के राजा, मन्त्री, सस्येश, धान्येश, मेघेश आदि ग्रहपरिषद् का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ेगा? इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर देना प्रासंगिक समझते हैं, जोकि निम्नांकित है—

संवत् 2078 वि. का **राजा** एवं **मन्त्री**—ये दोनों महत्त्वपूर्ण पद **'मंगल'** ग्रह को प्राप्त हैं। परिणामस्वरूप इस वर्ष भयंकर आगजनी (अग्निकाण्डों) से जंगलात एवं महानगरों में जनधनहानि के योग बनेंगे। सरहदों पर विरोधी देशों की अतिक्रमणकारी नीति एवं चोर-उचक्कों की नीति से विदेशी व्यापार प्रभावित होगा। पाक, चीन एवं कुछ अन्य मुस्लिम देशों से व्यापारिक सम्बन्ध ठीक न रहने से सोना-चांदी के व्यापार में अप्रत्याशित उछाल आयेगा। कुछ देशों से आयात-निर्यातसम्बन्धी नीति में विषमता के कारण तेल, कॉटन, बादाम, दालों, नमक एवं सूखा मेवा आदि में भारी तेजी से व्यापारी लाभ लेंगे। **ध्यान दें—इस वर्ष मंगल मेघेश भी है, अतः कहीं जोरदार तूफान (झंझावत), कहीं भयंकर दुर्भिक्ष, कहीं बाढ़ आदि से सरकार एवं कुछ अन्य देशों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।**

इस संवत् का दुर्गेश चन्द्र होने से देश को सैन्यशक्ति को समृद्ध बनाना पड़ेगा एवं सीमाप्रान्तों पर विशेष सचेत रहना होगा।

इस वर्ष चतुर्मेघों में **'संवर्त'** एवं नवमेघों में **'आवर्त'** नामक मेघ हैं। स्पष्ट है कि—उड़ीसा, महाराष्ट्र, कर्णाटक, केरल आदि में वायुवेग, तूफान आदि किंवा अतिवर्षण से अनेकत्र हानि हो। कुछ प्रान्तों के दुर्भिक्ष की चपेट में आने से व्यापार जगत् में भारी हलचल रहेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्यापारी ध्यान दें—संवत् 2078 वि. में ग्रहों के वक्र/मार्ग, युति/प्रतियुति के अनुसार इस वर्ष चावल, गेहूं, चना, ग्वार आदि अनाज; गुड़, दालवाना, विशेषत: रुई, कपास, नरमा, मैंथा, तेल एवं सरसों आदि तिलहन; लाल-कालीमिर्च, जीरा, लौंग, सोना, चांदी में तेजी-मन्दी के भयंकर रिएक्शन्स आएंगे। **दूर-दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आयें। आने की असमर्थता में सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स में से किसी भी धातु, अनाज, दालवाना, गुड़, शेयर बाज़ार या तिलहन की लिखित रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए एक मास की फीस Rs. 5100/- (इक्यावन सौ) रुपये प्रतिजिन्स/ प्रतिधातु के हिसाब से भेजकर आगामी मास की दैनिक तेज़ी-मन्दी की रिपोर्ट प्राप्त करें।**

नोट—संवत् 2078 वि. के प्रारम्भ में शनि-मंगल का षडष्टक एवं जून से लगभग 20 जुलाई, सन् 2021 ई. तक शनि-मंगल का समसप्तक, 5 सितं. तक शनि-मंगल का षडष्टक और आगे लगभग 26 फर., सन् 2022 ई. से संवत् 2078 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति राजनैतिक एवं व्यापारिक दृष्टि से विषम परिस्थितियों वाली है। व्यापारी सावधान रहें। इस समयावधि में व्यापारिक मशवरा लें, उत्तम लाभ ले सकेंगे।

सन् 2021-22 ई. (संवत् 2078 वि.) में व्यापारिक क्षेत्र में विशेष उतार-चढ़ावों का विवरण आगे लिखने का प्रयास कर रहे हैं, व्यापारी लोग पूर्ण लाभ उठा सकेंगे।

अप्रैल (सन् 2021 ई.)

मासारम्भ में राहु वृष राशि में चल रहा है, जोकि लगभग 13 अप्रैल तक प्रभावी रहेगा। अत: मासारम्भ से ही तिलहन, गुड़, शक्कर, रुई, सोना, चांदी, दालों एवं लोहा, तांबा, निक्कल में अच्छी तेजी का वातावरण रहेगा। क्योंकि कुछ क्षेत्र जलवायु-विचार से चिन्तनीय रहेंगे, अत: अनाजों में विशेष तेजी रहेगी—"**महाभयं च सस्यानां न च वृष्टि: प्रजायते॥**"

2 अप्रैल को बुध उ.भा. और मंगल मृगशिरा नक्षत्र में दाखिल होगा। तिल, चांदी, रुई में तेजी और अन्य व्यापारिक चीजों में मन्दा रहे।

5 अप्रैल को गुरु धनिष्ठा के तीसरे चरण और कुम्भ राशि में दाखिल होगा। अनेकत्र जलवायु अनुकूल न होने से खड़ी फसलों को हानि पहुंचे, कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति से बाजार डांवाडोल रहेंगे;—

"कुम्भ-राशिंगते जीवे मेघ: स्वल्पाम्बु वर्षति।
कृषिनाशं च दुर्भिक्षं पूर्वदेशे महर्घता॥"

गेहूं, चावल, जौ, चना में तजी का रुख बनेगा। रुई में 6 मास तक तेजी के बाद मन्दी होगी। रुई और सफेद चीजें खरीदकर 6 मास में बेचने से लाभ मिलेगा। तांबा, कांसी, पीतल, लोहा, सीसा, सोना में 3 मास तक मन्दी के बाद तेजी होगी। **ध्यान दें**—5 अप्रैल के लगभग बुध पूर्व में अस्त होगा। इस समय घी, रुई और दालवाना में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो।

9 अप्रैल को बुध रेवती नक्षत्र में दाखिल होगा। इसलिए 11 दिन में कुसुम्भ, लाल चन्दन, गेरु और लालमिर्च में तेजी बनेगी। गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, रुई और चांदी में मन्दी के आसार हैं।

10 अप्रैल को शुक्र अश्विनी नक्षत्र में दाखिल होगा। यह योग अच्छी मन्दी का मालूम होता है। अलसी, गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, तिल, तेल, सरसों, रुई, कपास, ऊन, जौ, चना, गेहूं, उड़द, अरहर, मूंग, मोठ में मन्दी के योग हैं। सोना, चांदी के व्यापारी पहले घटाबढ़ी के बाद, अन्त में तेजी से लाभ ले सकेंगे।

नोट—10 से 16 अप्रैल तक शेयर बाजार जोरदार तेज रहेंगे।

13 अप्रैल को सूर्यदेव मंगलवार के दिन अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में प्रविष्ट होंगे। साथ ही इसी दिन मंगल मिथुन राशि में दाखिल होगा। **जब मंगल-सूर्य का एक साथ राशिपरिवर्तन होता है, तो सोना-चांदी एवं अनाजों में तेजी के व्यापार से लाभ मिलता है—यह अनुभव में आया है। ध्यान दें—अकेला सूर्य मेष राशि में बाजारों में मन्दी करता है। अत: इस समय यदि बाजार मन्दी के लगें, तो तुरन्त मन्दी में रहें, तभी लाभ मिलेगा।**

16 अप्रैल को बुध भी मेष राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। **व्यापारी इस**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

समय तेजी में रहें, क्योंकि बुध-सूर्य का मेल बाजार में जोरदार तेजी का वातावरण बनाता है। सरसों, तारामीरा, रुई, तेल, तिलहन में तेजी से लाभ रहेगा।

इस प्रकार 19 अप्रैल तक बाजारों में तेजी-मन्दी के रिएक्शन्ज़ चलेंगे।

20 अप्रैल के लगभग शुक्र भरणी नक्षत्र में प्रवेश करेगा एवं शुक्र पश्चिम में उदित होगा। इस समय 13 अप्रैल से शनि-मंगल का षडष्टकयोग भी चल रहा है। यह योग अच्छी तेजी का रहेगा। अतः सोना, चांदी, अफीम, सरसों, तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द, चना, मूंग, मोठ, ज्वार, अरहर, रुई में घटाबढ़ी के बाद जोरदार तेजी बनेगी। **22 अप्रैल को भरणी नक्षत्र के बुध का मेल भरणी नक्षत्र में शुक्र के साथ होगा। अतः चावल, गेहूं आदि अनाजों में 8 दिन में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा।**

24 अप्रैल को मंगल आर्द्रा नक्षत्र में एवं लगभग इसी दिन गुरुदेव धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में आकर गेहूं, चना, जौ, चावल, सोना, चांदी में घटाबढ़ी करे, लेकिन रुई, सूत, कपास, अलसी, एरण्ड आदि तिलहन, गुड़, खाण्ड, नमक में तेजी रहेगी।

(24 से 27 अप्रैल तक शेयर बाजारों में जोरदार मन्दी एवं तेजी के झटके आयेंगे।)

27 अप्रैल को सूर्य भरणी नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय 28 अप्रैल तक सोना, चांदी, तांबा, मूंगा, पीतल, निक्कल, कांसा आदि में अच्छी तेजी का झटका आयेगा। गेहूं, जौ, चना, चावल, मूंग, मोठ, अलसी, रुई, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी तेज रहेंगे।

29 अप्रैल को बुध के कृत्तिका एवं 30 अप्रैल के लगभग वृष राशि में प्रविष्ट होने पर चांदी और अफीम में खास घटाबढ़ी होकर मन्दी रहे, अनाज एवं रुई तेज रहें। तेल, तिलहन में भी तेजी रहे।

नोट—30 अप्रैल के लगभग वृष राशि में बुध पश्चिम में अस्त होगा। वायदा बाजार तेज एवं अनाज मन्दे रह सकते हैं, सावधानी से काम करें।

मई (सन् 2021 ई.)

इस मास की प्रारम्भिक ग्रहस्थिति के अनुसार शनि-मंगल का षडष्टक चल रहा है, मंगल पर गुरु की दृष्टि है। मासारम्भ में ही शुक्र कृत्तिका में एवं **4 मई के लगभग शुक्र वृष राशि में आकर राहु और बुध के साथ एकराशिसम्बन्ध भी बना रहा है।** अतः बाजारों में मन्दे की उम्मीद होने पर भी हमारे विचार से बाजार तेज रहेंगे। जौ, चावल, हींग, तेल, तिल, सरसों, रुई, सूत, कपास, चांदी, सोना, हीरा, मोती में कुछ घटाबढ़ी के बाद तेजी रहेगी, सावधान रहें।

(मासारम्भ में शेयर बाजार तेज रहेंगे।)

6 मई को बुध रोहिणी नक्षत्र में दाखिल होगा। दो दिन में रुई, कपास, सोना, चांदी, तिलहन, चावल, गुड़, खाण्ड तेज रहेंगे। राई, तूअर, सण व रेशमी-सूती वस्त्र मन्दे रहेंगे। रुई में तेजी के बाद मन्दी रहे।

(ध्यान दें—6 से 10 मई तक बाजारों में जोरदार तेजी-मन्दी के रिएक्शन्ज़ रहेंगे, सावधान रहें।)

11 मई को कृत्तिका नक्षत्र का सूर्य घी, सोना, चांदी, रुई, अलसी, एरण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल, राई, सरसों में तेजी का वातावरण करेगा—तुरन्त लाभ लें।

12 मई के लगभग शुक्र के रोहिणी में आने पर अफीम, राई, अरहर एवं ऊन में तो तेजी रहेगी, लेकिन रुई, सूत, कपास, तिलहन, तेल, चावल, गुड़, खाण्ड में मन्दी रहे।

13 मई को वृष राशि में चन्द्रदर्शन होने से सभी अनाज, दालवाना, तेल, तिलहन तेज रहें।

नोट—14 मई को सूर्य वृष राशि में आकर बुध-शुक्र एवं राहु के साथ मेल करेगा। यह योग हाजर एवं वायदा बाजार में जोरदार लाभ देगा—सावधानी से काम करें।

हमारे विचार से इस समय विशेषतः चांदी, सोना में खास बिकवाली एवं

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

खरीददारी होगी। गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, सण, बादाम, सुपारी, नारियल, तेल, तिलहन में जोरदार तेजी से लाभ होगा। अनाज एवं दालवाना में भी तेजी से लाभ रहेगा।

15 मई को बुध मृगशिरा नक्षत्र में दाखिल होकर 8 दिन में रुई में तेजी करेगा तथा चांदी में घटाबढ़ी एवं अनाज, तिलहन में मन्दी करेगा।

16 मई के लगभग मंगल पुनर्वसु नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। इसका प्रभाव लगभग 20 मई तक बाजारों में तेजीकारक रहेगा। यह रुई, चांदी, नमक, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों आदि तिलहन में तेजीकारक रहेगा। **21 मई को शतभिषक् नक्षत्र का गुरु 22 मई तक** गेहूं आदि अनाजों, दालवाना, हल्दी, सुपारी, केसर, मजीठ, सोना, तांबा, कॉपर आदि में मन्दी एवं तेजी के रिएक्शन से लाभ देगा, सावधानी से काम करें।

23 मई को मृगशिरा नक्षत्र का शुक्र, शनि ग्रह का वक्रगति से चलना एवं शनि-मंगल का षडष्टक—ये योग गेहूं, चना, ज्वार, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, तिलहन, अनाज, दालवाना में अच्छी तेजी करेंगे। यह तेजी 25 मई तक रहेगी।

25 मई को सूर्य रोहिणी नक्षत्र में आकर तेल, घी, सरसों आदि तिलहन, गुड़, खाण्ड, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, मिर्च, सुपारी आदि में अच्छी तेजी से लाभ देगा। चांदी में अचानक मन्दी बन सकती है।

26 मई को बुध मिथुन राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा तथा **शनि के साथ मंगल-बुध का षडष्टकयोग होने से बाजारों में मन्दे की अफवाह होने पर भी बाजार तेजी की तरफ ही रहेंगे, ग्रहस्थिति ऐसी ही बन रही है।** रुई, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, दालों, पेट्रोल, गैस, सरसों, तारामीरा एवं अनाजों में तेजी का वातावरण रहेगा।

नोट करें कि—28 मई के लगभग मिथुनस्थ बुध वक्री होगा और इसी दिन शुक्र भी मिथुन राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा एवं इन पर शनि की दृष्टि भी रहेगी। रुई, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, सूत, पाट, वारदाना, एरण्ड, तिल, तेल, सरसों, अरहर एवं ग्वार आदि में **भयंकर मन्दी या तेजी बनेगी। बाजार का रुख देखकर काम करें। हमारा विचार इस मास के अन्त तक अच्छी तेजी का है।** अलसी, गुड़, घी में जोरदार घटाबढ़ी रहे। गेहूं, जौ, चना, चावल आदि अनाजों में तेजी रहेगी।

जून (सन् 2021 ई.)

1 जून को मंगल अपनी नीच राशि कर्क में आकर शनि के साथ समसप्तक योग बनायेगा एवं राहु रोहिणी नक्षत्र के दूसरे चरण में और केतु अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में आता है, राहु सूर्य एवं वक्री बुध के साथ 2 जून को एक राशिसम्बन्ध भी बना रहा है।

यद्यपि कर्क राशि का मंगल रुई, तेल, तिलहन में मन्दी करता है, परन्तु मौजूदा ग्रहस्थिति से बाजारों में इस समय जोरदार तेजी मालूम देती है। अतः वायदा व्यापारी तेजी का काम करें, लाभ रहेगा। राजनीतिक गतिविधि विषम परिस्थिति बनायेगी, जिससे बाजार तेजी की तरफ ही बढ़ेंगे। रुई, तेल, तिलहन, चांदी, सोना, सभी अनाज, गुड़, शक्कर, मसूर आदि दालों, काला जीरा, चना, चावल, मटर, कपास, सूत, अफीम, घी एवं तेलों, पैट्रोल-डीजल में तेजी रहेगी।

व्यापारी नोट करें—1 जून के लगभग ही बुध पश्चिम में अस्त होगा। अतः रुई में अचानक जोरदार मन्दी भी आ सकती है, सावधान।

(शेयरों में जोरदार तेजी और मन्दी 1 से 5 जून तक रहेगी।)

3 जून को शुक्र आर्द्रा नक्षत्र में आकर अनाजों में अचानक मन्दी कर सकता है, मन्दी के व्यापारी लाभ में रहेंगे या माल स्टॉक करें। यह चाल 5 जून तक रहेगी।

5 जून को मंगल पुष्य नक्षत्र में आकर 12 दिन में चांदी व रुई में घटाबढ़ी करे, लेकिन सोने में जोरदार तेजी करेगा।

8 जून को सूर्य मृगशिरा नक्षत्र में आकर लगभग 10 जून तक रुई, सूत, रेशम, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चांदी, उड़द, मूंग, मोठ, चना, बाजरा एवं घी, अलसी आदि तिलहन/तेलों में तेजी का वातावरण बनायेगा। लेकिन 11 जून को मिथुन राशि में चन्द्रदर्शन होने एवं 14 जून को शुक्र के पुनर्वसु नक्षत्र में प्रवेश करने से सरसों, तिल, तेल, अनाज एवं ऊन में मन्दी बनेगी। रुई, चांदी, सोना, धान्य, बिनौला में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

15 जून को सूर्य मिथुन राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा एवं गुरु की इन पर विशेष नजर रहेगी। लेकिन 18 जून के लगभग गुरु भी वक्री हो रहा है। अतः पाट, बारदाना, रेशम, सूत, कपास, रुई, सरसों आदि तिलहन, लोहा, निक्कल, सोना, चांदी, घी, तेल, गुड़, शक्कर, चीनी, गेहूं, चावल आदि अनाजों में अच्छी तेजी का झटका आयेगा। इसी बीच 16 जून को **वक्री बुध** रोहिणी नक्षत्र में आकर रुई में पहले मन्दी, फिर तेजी कर सकता है।

20 जून के लगभग बुध पूर्व में उदित होगा। बुध का मेल राहु के साथ है। 21 जून को सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में दाखिल हो रहे हैं एवं 22 जून को शुक्र कर्क राशि में आकर मंगल के साथ मेल करके शनि की दृष्टि में शुक्र, मंगल आ जायेंगे। यह योग जोरदार तेजी का है। गेहूं, चावल, चना, घी, पाट, हैसियन, लालमिर्च, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, जौ, सोना, चांदी, घी, गुड़, खाण्ड एवं शक्कर तेज रहेंगे। **ध्यान दें—22 जून के लगभग** रुई में पहले अच्छी मन्दी आयेगी, बाद में तेजी से लाभ मिलेगा। तेजी-मन्दी का यह सिलसिला 23 जून तक चल सकता है।

24 जून को बुध के मार्गी होने पर घी, तेल, तिलहन, गुड़, रुई एवं ऊन में मन्दी का वातावरण रहेगा। बाद में अनाज, रुई में तेजी सम्भव है।

25 जून को शुक्र पुष्य नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। शुक्र-मंगल के मेल पर शनि की दृष्टि है। अतः रुई, सूत, सण, ऊन, चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, चांदी एवं सोने आदि धातुओं में तेजी का रुख रहेगा।

28 जून को मंगल आश्लेषा नक्षत्र में दाखिल होगा। **नोट रहे कि—शनि-मंगल का समसप्तक चल ही रहा है,** इस समय चांदी में झटके की मन्दी आकर, तुरन्त बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे। इस समय चांदी और रुई में मन्दी आने पर माल पकड़े, जल्दी ही लाभ होगा।

29 जून को बुध मृगशिरा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। इस समय बुध का मेल राहु के साथ है। मासान्त तक रुई में तेजी, चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी, गेहूं, तिल, सरसों, उड़द भी मन्दे रहें। लेकिन मासान्त में एकदम तेजी बनेगी।

जुलाई (सन् 2021 ई.)

जुलाई मास की प्रारम्भिक ग्रहस्थिति के अनुसार मिथुनस्थ सूर्य वृषस्थ राहु-बुध एवं कर्कस्थ मंगल-शुक्र से आक्रान्त है। मंगल-शुक्र पर शनि की दृष्टि भी है। अतः शेयर बाजारों एवं सोना-चांदी के व्यापार में भारी उठापटक रहेगी।

5 जुलाई के लगभग पुनर्वसु नक्षत्र में सूर्य के आने पर रुई, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, कपास, तेल, घी, सभी तिलहन, लाख, देवदारु, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, हरड़, सुपारी, मंजिष्ठा, केसर एवं करयाणा की सभी चीजें तेज रहेंगी। लेकिन 6 जुलाई को शुक्र के आश्लेषा नक्षत्र में आने पर 18 दिन में रुई, मसूर, चावल में झटके की मन्दी आने के योग हैं, सावधान रहें।

7 जुलाई को बुध मिथुन में दाखिल होकर सूर्य के साथ मेल करेगा। **जब भी सूर्य के साथ बुध का मेल होता है, बुध बली एवं जोरदार तेजीकारक हो जाता है—यह अनुभव में आता है।** अतः 7 जुलाई के लगभग से 10 जुलाई तक व्यापारी तेजी की तरफ रुख करें। रुई, सोना, चांदी, घी, तेल, दालों, तिलहन में जोरदार तेजी-मन्दी के रिएक्शन्ज़ आयेंगे, तेजी प्रधान रहेगी।

आगे 11 से 15 जुलाई तक की ग्रहस्थिति मन्दीप्रधान रहेगी। 11 जुलाई को चन्द्रदर्शन एवं 12 जुलाई को आर्द्रा नक्षत्र में बुध के दाखिल होने पर तेल, तिल, गेहूं, उड़द, जौ, चना, मूंग, मोठ, रुई में मन्दी का वातावरण रहे। चांदी में तेजी से लाभ मिल सकता है।

16 जुलाई को सूर्य कर्क राशि में आकर नीचस्थ मंगल के साथ एकराशि-सम्बन्ध बनायेगा। ध्यान दें—इस वक्त सूर्य-मंगल पर शनि की दृष्टि भी रहेगी। मंगल जमीन से होने वाले प्रत्येक कृषिकर्म से सम्बन्ध रखता है। मंगल-सूर्य का प्रभाव मौसम, हवा, बरसात पर विशेषरूप से देखा गया है। कभी-कभी बरसात की कमी या बाढ़ से बाजारों में तूफानी तेजी आ जाती है। शनि-मंगल के योग या दृष्टिसम्बन्ध से बाजारों में जोरदार उठापटक देखी गयी है। इस समय पैदावार कम या खराब होने की अफवाहों से बाजारों में जोरदार तेजी सम्भव है। हमारे विचार से गेहूं आदि अनाज, सोना, तांबा, लोहा, जौ, तेल, तिलहन, घी, चना, खाण्ड, शक्कर में

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तेजी के व्यापारी लाभ ले सकेंगे। लेकिन रुई, चांदी में मन्दी का झटका आकर तेजी हो।

17 जुलाई को शुक्र मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आता है और यहां सूर्य, मंगल एवं शुक्र एकत्र हो जाते हैं। यह योग घी, तेल, तिलहन, दालों एवं मोटे अनाजों में तेजी को बढ़ावा देगा। सोना, तांबा, लाल चन्दन, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में भी तेजी रहे। रुई और चांदी में 4-8 दिन मन्दी के बाद तेजी बन सकती है। **इस प्रकार तेजी के बाजारों में 19 जुलाई को सूर्य पुष्य नक्षत्र में आकर तेजी को और बढ़ा सकता है।** हमारे विचार से आगामी 14 दिनों में तेल, घी, सरसों आदि तिलहन, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गुल, मोम, हींग, हल्दी, लाख, सण, ऊनी वस्त्र, सिक्का एवं सोना, चांदी तेज रहें। रुई में तेजी होकर मन्दी हो।

आगे 2/3 दिन बहुत समझ से व्यापार करने के हैं, क्योंकि 20 जुलाई को बुध पुनर्वसु नक्षत्र में, इसी दिन मंगल मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में, साथ ही गुरु वक्रगति से धनिष्ठा के चतुर्थ चरण में दाखिल होगा। **अतः जोरदार तेजी-मन्दी के रिएक्शन्ज़ बाजारों में आयेंगे। हमारे विचार से इस समय मंगल का गुरु के साथ समसप्तक होने से कुछ चीजों में मन्दी प्रधान रहेगी।**

चांदी, रुई, कपास, सूत, सण में अच्छी मन्दी रहे। लेकिन मूंग, मोठ, उड़द, तिल, सरसों, मूंगफली, राई एवं गेहूं आदि अनाजों, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, रुई, लालमिर्च और घी में तेजी से लाभ मिले।

लगभग 21 जुलाई को बुध पूर्व में अस्त होगा। अनाज, घी में मन्दी, रुई में पहले तेजी, फिर मन्दी, फिर तेजी रहे। सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो।

22 जुलाई को वक्री शनि श्रवण नक्षत्र के दूसरे चरण में आकर अनाज, अलसी, गुड़, खाण्ड, नमक में तेजी करेगा। 23 से 24 जुलाई तक बाजार ऊपर-नीचे रहेंगे।

25 जुलाई को बुध कर्क राशि में आकर सूर्य से मेल करेगा तथा इनका शनि के साथ समसप्तकयोग बनेगा। बाजार तेज रहेंगे। रुई, चांदी, गुड़, तिलहन, सोना एवं अनाजों में तेजी का रुख रहे।

26 जुलाई के लगभग बुध पुष्य नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय सोना, चांदी में मन्दी के झटके आयेंगे। रुई में घटाबढ़ी से 10/12 टका की मन्दी सम्भव है। मणि, जवाहरात एवं ऊनी कपड़े तेज होंगे। आगे 28 जुलाई को शुक्र पू.फा. नक्षत्र में आकर मासान्त तक गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, चना, तेल-तिलहन एवं घी में कुछ मन्दी करे।

अगस्त (सन् 2021 ई.)

अगस्त के प्रारम्भ में ही सूर्य-चन्द्र-बुध पर शनि की दृष्टि है। पहले बाजार कुछ मन्दे रहकर एकदम उठेंगे, मन्दी में माल पकड़ें एवं आगे जल्दी ही लाभ मिलेगा। इन दिनों कहीं अनावृष्टि से दुर्भिक्ष की स्थिति बनने से बाजार अचानक तेज होंगे।

2 अगस्त को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में आकर 14 दिन में सोना, चांदी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिलहन, मिर्च, मजीठ एवं नीलम तेज करेगा। इस तेजी में तुरन्त लाभ लेना ठीक रहेगा, वरना मन्दी से हानि सम्भव है।

3 अगस्त को रोहिणी-1 में राहु एवं अनुराधा के तीसरे चरण में केतु के आने पर रुई, सूत, सण, सोना, चांदी आदि धातुएं, मिर्च, चन्दन, केसर तेज रहें, लेकिन अनाज मन्दे रह सकते हैं। 4 से 7 अग. तक बाजार ऊपर-नीचे जा सकते हैं।

8 अगस्त को बुध मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आकर शुक्र-मंगल के साथ मेल करेगा—इन पर इस समय गुरु की नजर भी रहेगी। अतः चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, तिलहन तेज रहेंगे। शेयर बाजार मन्दे रहेंगे। इन दिनों शुक्र उ.फा. में आयेगा, जोकि चांदी के बाजार में अचानक मन्दी करेगा।

10 अग. को मंगल पू.फा. में एवं **11 अग. को शुक्र कन्या में आयेगा। यह ग्रहस्थिति वायदा एवं सामान्य बाजारों में जोरदार उठापटक करेगी, बहुत सावधानी से काम करें।** हमारे विचार से तेल, घी, तिलहन एवं गुड़, चीनी, शक्कर व अनाजों में अच्छी तेजी का उछाल आयेगा।

14 अगस्त को अचानक मन्दी का काम करने से लाभ होगा, लेकिन **16 अगस्त को सूर्य मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में दाखिल होगा। इस समय सूर्य-मंगल-बुध का एकसाथ रहना बाजारों में जोरदार तेजी करेगा।** तेल, तिलहन, चीनी, घी, दालवाना,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गुड़, शक्कर एवं रुई, कपास, ऊन में अच्छी तेजी से लाभ ले सकते हैं।

16/17 अगस्त की ग्रहस्थिति बाजारों में अचानक मन्दे का वातावरण करेगी। यदि चीनी, घी एवं दालवाना में मन्दी आये तो तुरन्त स्टॉक करें, आगे लाभ की स्थिति बनेगी। 17 अगस्त के लगभग बाजार यदि मन्दे हों, तो वायदा व्यापारी तेजी खेलकर लाभ लें।

18 एवं 19 अगस्त को शुक्र एवं वक्री गुरु की स्थिति हाजर एवं वायदा बाजारों में अच्छी पोजीशन का इशारा कर रही है। यह स्थिति 23 अगस्त तक रहेगी।

24 अगस्त को बुध उ.फा. में एवं 26 अग. को कन्या राशि में दाखिल होगा। हमारे विचार से 7 दिन में उड़द, मूंग, मसूर, अरहर आदि में तेजी रहेगी। गुड़, शक्कर, खाण्ड एवं हल्दी में भी तेजी रहे। रुई और चांदी में मन्दी सम्भव है।

नोट—अगस्त-मासान्त में उत्तम तेजी से हाजर एवं वायदा बाजारों में व्यापारी लाभ में रहेंगे।

30 अगस्त को सूर्य पू.भा. में, 31 अगस्त को शुक्र चित्रा में एवं 31 अगस्त को ही मंगल उ.भा. में प्रविष्ट होगा।

परिणामस्वरूप जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों आदि तिलहन, तेल, घी, गुड़, चीनी, गेहूं, ज्वार, चावल, रुई, ऊन, सूत, सोना तथा दालवाना के बाजार तेज रहेंगे। चांदी में घटाबढ़ी के बाद अच्छी तेजी हो। मासान्त में मक्की, बाजरा, चन्दन, कपूर, अगर, नारियल, जौ, चना भी तेज रहेंगे।

सितम्बर (सन् 2021 ई.)

सितम्बर के प्रारम्भ में लगभग 2 सितम्बर को बुध हस्त नक्षत्र में दाखिल होगा। गेहूं, जौ, चना, चावल आदि अनाजों में मामूली मन्दी बनेगी। स्टॉक कर सकते हैं। यह मन्दी लगभग 4 सितम्बर तक उत्तम-मध्यमरूप से चल सकती है।

5 सितम्बर को शुक्र तुला में एवं मंगल कन्या में प्रविष्ट होगा। इस समय शुक्र पर शनि की दृष्टि भी रहेगी। अतः इन दिनों बाजार जोरदार ऊपर उठेंगे। रुई, सोना, ऊन, सूत, गुड़, खाण्ड में अच्छी तेजी से लाभ होगा। चांदी में पहले कुछ मन्दी के बाद जोरदार तेजी आयेगी। तेल, तिलहन, गेहूं, चना में तेजी से लाभ रहेगा।

8 सितम्बर को चन्द्रदर्शन होने से अफीम, गुड़, खाण्ड तेज, रुई में घटाबढ़ी रहे। जौ मन्दे हों।

10 सितम्बर को वक्री शनि श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण में आयेगा। इस समय गुरु भी वक्री पोजीशन में है। यह योग राजनैतिक दृष्टि से देश में संवेदनशील वातावरण बनाता है। इसका प्रभाव व्यापार पर भी स्पष्ट नजर आयेगा। इस समय तेजी के व्यापारी लाभ उठायेगे। इस वक्त गेहूं, जौ, चना, चावल, बाजरा, रुई, अलसी, तिलादि, तिलहन, तेल, घी में जोरदार तेजी आयेगी। दालवाना, गुड़, खाण्ड, नमक में भी तेजी आयेगी। स्टॉकिस्ट माल निकालकर, तुरन्त नफा बुक कर लें।

11 सितम्बर का स्वाती नक्षत्र का शुक्र 11 दिन में गुड़, खाण्ड में तेजी एवं अनाजों में मन्दी का वातावरण बना सकता है।

12 सितम्बर को बुध चित्रा नक्षत्र में आयेगा, **इस समय बुध कन्या राशि में मंगल के साथ है।** अतः रुई, सोना, चांदी में घटाबढ़ी के बाद अच्छी तेजी बनेगी। सभी अनाज भी तेज होंगे।

13 सितम्बर को सूर्य उत्तरा-फाल्गुनी में आकर रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चांदी, लोहा, तेल, तिलहन, घी, दालवाना, नारियल, मूंज, बांस, नील में तेजी करेगा। **ध्यान दें—इस समय शनि के साथ सूर्य का षडष्टक भी चल रहा है, अतः तेजी खेलें।**

14 सितम्बर को विशेष नोट करें। 14 सितं. को गुरु वक्री पोजीशन में भारत की प्रभाव राशि मकर में आकर शनि के साथ मेल करेगा। यह योग विशेष है। इस समय रुई के व्यापारी अगर रुई में मन्दी आये तो खूब स्टॉक कर लें, आगे 100 से 125 रुपये की तेजी बनेगी या पहले ही स्टॉक करें, तब लाभ रहेगा। इस समय जौ, चना, गेहूं, चावल, दालों आदि में जोरदार तेजी से उत्तम लाभ मिलेगा। मूंगफली, तेल, घी, सारे तिलहन, तांबा, सोना, चांदी में भी भयंकर तेजी आयेगी।

16 सितम्बर को सूर्य कन्या राशि में आकर बुध और मंगल के साथ मेल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

करेगा। यह योग भी विशेष है। **हमारा अनुभव है कि—जब सूर्य मंगल-बुध के साथ मेल करता है तो रुई, चांदी, सोने के बाजारों में तेजी का विशेष जोश आता है।** व्यापारियों में खरीदने की जोरदार चाल बनती है। कपड़ा, सूत, ऊन में तेजी, एक्सपोर्ट की अफवाहों से कई बाजार तेज होते हैं। **हमारे विचार से इस समय** तेल एवं सारे तिलहन, घी, रुई, सुपारी, चीनी, चावल, गुड़, शक्कर में भारी तेजी से लाभ रहेगा। चांदी, सोना व शेयर बाजार मन्दे रह सकते हैं।

नोट करें कि—20 सितम्बर से आगे 6 अक्तूबर तक सोना, चांदी के व्यापार मन्दे रहेंगे।

21 सितं. को बुध तुला राशि में आयेगा एवं मंगल हस्त में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। इस समय रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम तेज रहें। चांदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला एवं मूंगफली में मन्दी सम्भव है। इन दिनों दालवाना, घी, गुड़, खाण्ड, नमक भी तेज रहेंगे।

25 सितं. को विशाखा नक्षत्र का शुक्र 15 दिन में रुई व अनाजों में मन्दी करे, लेकिन 25 सितं. को कन्या राशि में बुध वक्री होगा, सूर्य-मंगल के साथ बुध का मेल भी है। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज होंगे। अनाजों में जोरदार तेजी या झटके की मन्दी सम्भव है, सावधान रहें।

27 सितं. को विशाखा नक्षत्र का शुक्र रुई एवं अनाजों में कुछ मन्दे का वातावरण बनायेगा।

27 सितम्बर को सूर्य हस्त नक्षत्र में आयेगा। मंगल एवं वक्री बुध इस समय सूर्य के साथ हैं। मासान्त तक जौ, ज्वार, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी आदि में जोरदार तेजी से अच्छा लाभ मिलेगा।

अक्तूबर (सन् 2021 ई.)

अक्तूबर के प्रारम्भ में ही लगभग 2 अक्तूबर को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा, साथ ही लगभग 3 अक्तूबर को वक्री बुध कन्या राशि में आकर सूर्य एवं मंगल के साथ मेल करेगा। इस समय रुई, चांदी, अफीम में कुछ मन्दी के बाद तेजी, गुड़, गेहूं, जौ, मोठ, चना, उड़द, मूंग एवं बाजरा आदि अनाज, तिलहन, तेल, घी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में तेजी का झटका आयेगा।

(मास के प्रारम्भ में शेयर बाजार मन्दे रहेंगे।)

5 अक्तूबर को शुक्र अनुराधा में, राहु कृत्तिका 4 में एवं इसी दिन अनुराधा 2 में केतु दाखिल होगा। इस समय गुड़, खाण्ड, नमक, चावल, सोना, चांदी, तांबा एवं घी, तिलहन में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा। मिर्च, केसर, चन्दन, कपास, अनाज एवं कपूर में भी तेजी रहेगी।

8 अक्तूबर को **वक्री बुध** हस्त में आयेगा एवं इसी दिन तुला राशि में चन्द्रदर्शन भी होगा। इस समय गेहूं आदि अनाज एवं दालों में कुछ मन्दी का रुख बनेगा, लेकिन रुई, कपास, सूत, बर्तन, सोना, चांदी में तेजी का झटका आ सकता है।

9 अक्तूबर के लगभग मकरस्थ शनि के मार्गी होने पर वायदा एवं हाजर बाजारों की लाईन अचानक बदल जाती है, व्यापारी सावधान रहकर काम करें। इस समय रुई मन्दी होकर, तेजी की ओर बढ़ेगी। तिल, तेल, घी, हींग, सभी तिलहन, सरसों, मिर्च में जोरदार मन्दी या तेजी बनेगी, बाजार का रुख देखकर काम करें। हमारा विचार बाजारों में मन्दी का है। यह मन्दी ठहरेगी नहीं, स्टॉक कर सकते हैं।

10 अक्तूबर को सूर्य और मंगल चित्रा नक्षत्र में आयेंगे। यह योग जोरदार तेजीकारक है। यह तेजी उत्तम-मध्यम तौर पर 17 अक्तू. तक चल सकती है। हमारे विचार से इन दिनों रुई, सूत, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, अरहर, मोती आदि रत्न, जौ, चना, तिल, नारियल, सण, केसर, कपूर, गेहूं, चावल, चना, उड़द, मूंग में अच्छी तेजी से लाभ रहेगा।

आगे 15 से 17 अक्तूबर तक की ग्रहस्थिति के अनुसार 17 अक्तू. को तुला राशिस्थ सूर्य पर शनि की दृष्टि भी आ रही है। अतः 15 अक्तू. को रुई और चांदी में कुछ मन्दी आकर, तेजी बनेगी। गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना, तांबा, घी, तिलहन, लालमिर्च, लाल चन्दन, श्रीफल, सुपारी में तेजी बनेगी। हमारा मशवरा है कि—18 अक्तूबर से पहले तेजी से नफा बुक कर लें। 18 अक्तूबर को बुध के मार्गी होने पर तेल, तिलहन, घी, गुड़, रुई में मन्दी के बाद बाजार सुधरेंगे। सोना तेज ही रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

19 अक्तूबर को मकर राशिस्थ गुरु मार्गी होगा। गुरु नीच है, शनि के सन्निकर्ष में है। अतः इस समय बहुत समझ से व्यापार करें। रुई में मन्दी का झटका आकर तेजी बनेगी। चांदी, सोना, अलसी आदि तिलहन तेज होंगे। **हमारे अनुभव में आया है कि—गुरु के मार्गी होने पर व्यापार की लाईन बदल जाती है, अगर पहले मन्दी है, तो बाजार तेज हो जाते हैं, यदि बाजार तेज हैं, तो मन्दे हो जाते हैं। अतः सावधान रहें, बाजार की चाल को देखकर काम करें।**

21 अक्तूबर को मंगल तुला राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। साथ ही यहां बहुत ध्यान देने लायक यह है कि—इस समय मंगल-सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि भी रहेगी। मंगल (भौम) अर्थात् पृथ्वी का पुत्र है, सूर्य कृषि/खेती फसलों को पकाता है, लेकिन शनि-मंगल का दशम-चतुर्थसम्बन्ध कुदरती प्रकोप से खड़ी फसलों को भारी हानि पहुंचा देता है, अतः बाजारों में तेजी का उछाल आता है और शेयर बाजार भी गड़बड़ा जाते हैं। बहुत सावधान रहें। हमारे विचार से रुई, कपास, सूत, सण, पाट, बारदाना, मूंगफली आदि तिलहन, घी, तेल, खाण्ड, गुड़, शक्कर, गेहूं, उड़द, मूंग आदि अनाज, सोना, चांदी आदि में भयंकर तेजी बनेगी।

सूर्य 23 अक्तूबर को स्वाती में आकर सूत, सण, रेशम, कपड़ा, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग और गुग्गुल में तेजी करेगा। यह तेजी 28 अक्तूबर तक रहेगी। 24 अक्तूबर के लगभग बुध की पोजीशन बाजारों में टैम्परेरी मन्दी कर सकती है।

28 अक्तूबर को बुध चित्रा नक्षत्र में आकर रुई, चांदी में घटाबढ़ी करे एवं अनाजों में तेजी करे।

30 अक्तूबर को शुक्र मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में आ रहा है। इस समय सोने में घटाबढ़ी होकर कुछ मन्दी सम्भव है। लेकिन हमारे विचार से गेहूं, जौ, चना, चांदी, सोना, तांबा तेज ही रहेंगे। शेयर बाजार भी तेज रहेंगे।

31 अक्तूबर को मंगल स्वाती नक्षत्र में दाखिल हो सूर्य के साथ मेल करेगा। रुई, सूती एवं रेशमी वस्त्र, गेहूं, तिल, तेल तेज होंगे। चांदी में घटाबढ़ी एवं सोना कुछ मन्दा रहे।

नवम्बर (सन् 2021 ई.)

मासारम्भ में लगभग 2 नवं. को **बुध तुला राशि में** आकर सूर्य-मंगल के साथ मेल करेगा। **ध्यान दें—बुध शुक्र की राशि में यद्यपि मन्दी सूचक माना गया है, बाजारों में मन्दी के झटके लाता है, लेकिन जब कुछ सूर्य एवं मंगल के साथ होता है तो तिलहन बाजारों एवं सोना, चांदी एवं दालवाना, घी में तेजीकारक अनुभव किया गया है। यह तेजी आगे तक चलेगी।**

6 नवम्बर को सूर्य विशाखा में व बुध स्वाती में आयेगा एवं इसी दिन वृश्चिक में चन्द्रदर्शन भी होगा। 14 दिन में चावल आदि अनाज, गुड़, खाण्ड, तेल, तिलहन, घी एवं अफीम में तेजी बनेगी। रुई में मन्दी एवं तेजी के रिएक्शन्ज़ आयेंगे। इस समय सोना, चांदी एवं तिलहन में अच्छी तेजी भी बन सकती है, सावधान रहें।

7 से 13 नवम्बर के मध्य बुध-शुक्र एवं शनि की पोजीशन से सभी अनाज, घी, तेल, तिलहन, दालवाना में तेजी से लाभ मिलेगा। **ध्यान रहे**—7 नवम्बर को अनाज, घी में मन्दी का झटका भी आ सकता है। रुई और सोना, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

14 नवम्बर को विशाखा नक्षत्र के बुध-सूर्य पर शनि की दृष्टि है। अनाजों में कहीं मन्दी, कहीं तेजी रहे। रुई के बाजारों में जोरदार मन्दी का झटका यदि आये तो स्टॉक करें, आगे जल्दी लाभ होगा। तांबा, सोना, चांदी, ऊनी वस्त्र एवं लाल रंग की चीजों में अच्छी तेजी से उत्तम लाभ मिलेगा।

16 नवम्बर को सूर्य मंगल की राशि वृश्चिक में आकर राहु के साथ समसप्तकयोग बना रहा है। ध्यान दें—इस समय शनि-मंगल भी दशम-चतुर्थसम्बन्ध बनाये हुए हैं। अतः आने वाले 14 दिनों में गेहूं, चना, चावल, मोठ, सभी दालों, ऊन, सोना, चांदी, तांबा आदि धातुएं, गेहूं, मिर्च, तेल, घी, तिलहन में अच्छी तेजी के बाद मन्दी आने की सम्भावना है, तुरन्त लाभ लें।

19 नवम्बर को सूर्य अनुराधा नक्षत्र में राहु के साथ समसप्तकयोग बना ही रहा है। **इस प्रकार मंगल के क्षेत्र में स्थित सूर्य सोना, चांदी, तांबा, लोहा एवं अन्य**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

धातुओं, चना, बाजरा, गेहूं, दालवाना में अच्छी तेजी का संकेत देता है। तेल, तिलहन, मिर्च में उठापटक के बाद तेजी रहेगी।

नोट—नवम्बर के प्रारम्भ से 15 नवं. तक सूर्य-मंगल-बुध पर शनि की दशम दृष्टि राजनैतिक स्थिति एवं प्राकृतिक प्रकोप आदि से व्यापार को विशेष रूप से प्रभावित करेगी—ऐसा विचार है। अत: हमारा अनुरोध है कि—इन दिनों तेजी के वायदा या हाजर व्यापारी साथ-साथ लाभ बुक करते रहें, आखिरी वक्त का इन्तजार न करें।

20 नवम्बर को बुध भी मंगल की राशि वृश्चिक में आकर सूर्य के साथ एक-राशिसम्बन्ध बना लेता है। मंगल की राशि में बुध तेजीसूचक रहता है। इस स्थिति में बुध का सबसे ज्यादा असर तिलहन, दालवाना एवं घी आदि के बाजारों पर देखा गया है। घी, तेल, सरसों, रुई, चांदी, सोना एवं दालवाना तेज रहेंगे।

इसी दिन (अर्थात् 20 नवं. को ही) मंगल विशाखा में, गुरु धनिष्ठा के तीसरे चरण एवं कुम्भ राशि में दाखिल होगा। यह योग नोट कर लें—कुम्भ राशि में गुरु के आने पर प्रकृति-विपर्थय अनुभव हो। प्राकृतिक प्रकोप, दुर्भिक्ष आदि की स्थिति से बाजारों में जोरदार तेजी या मन्दी बनती है, सरकार को व्यापार में दखल देना पड़ता है, अत: सावधानी से व्यापार बढ़ायें—

"कुम्भ-राशिंगते जीवे मेघः स्वल्पाम्बु वर्षति।
कृषिनाशं च दुर्भिक्षं पूर्वदेशे महर्घता॥"

बाजार मन्दे हों, तो तेलवाना, पाट, बारदाना, रुई, चीनी, हल्दी का स्टॉक करें, 6 मास बाद उत्तम तेजी से लाभ मिलेगा। सोना, तांबा, कांसी, पीतल एवं लोहे में तीन मास तक मन्दी के बाद तेजी रहे।

22 नवम्बर को बुध अनुराधा नक्षत्र में दाखिल होगा। **नोट करें कि—**इस समय बुध, सूर्य, केतु एक साथ हैं। रुई, सूत, सण, सोना, चांदी के व्यापारी मन्दी का झटका आये तो स्टॉक करें, लेकिन हमें इस समय तेजी के व्यापार से लाभ नजर आ रहा है।

29 नवम्बर को मंगल के उदय होने पर अनाजों के बाजार नीचे जायेंगे, लेकिन रुई, उड़द, तेल, तिलहन, घी में तेजी रहे—ऐसा प्रतीत हो रहा है।

30 नवम्बर को बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में आयेगा। इस समय सूर्य-केतु के साथ बुध बैठा है, अत: बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे। घी, गुड़, खाण्ड, चावल, जौ, दालवाना एवं मोटे अनाज भी तेज रहेंगे।

दिसम्बर (सन् 2021 ई.)

मास के प्रारम्भ में ही **शुक्र उ.षा. में है, जोकि शुक्र के शत्रु गुरु का राशि-नक्षत्र है। 2 दिसम्बर के लगभग सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्र में आयेगा।** 15 दिन में सोना, चांदी, चावल, गेहूं, जौ, चना आदि अनाज, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, गुड़, खाण्ड में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा। रुई में पहले मन्दी, फिर तेजी का वातावरण रहेगा।

4 दिसम्बर को मंगल वृश्चिक में आयेगा। इस समय सूर्य-बुध-केतु भी मंगल के साथ हैं। यहां क्रूर-ग्रह योग होने से अच्छी तेजी का झटका आयेगा, अत: तेजी का काम करें। गुड़, रुई, सोना, चांदी आदि धातुएं तेज रहें। इस समय व्यापारिक वस्तुएं तेज रहें। तेजी खेलने वाले व्यापारी लाभ में रहेंगे।

5 दिसम्बर की ग्रहस्थिति के अनुसार एवं 7 दिसं. के लगभग राहु कृत्तिका नक्षत्र के दूसरे चरण में एवं केतु अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण में आकर मिर्च, केसर, चन्दन, कपूर, कपास में तेजी रहे।

8 दिसम्बर को शुक्र मकर राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। शनि-शुक्र दोनों मित्र हैं। शेयर बाजार तेज रहेंगे। अफीम, गुड़, खाण्ड, घी, शक्कर, गेहूं, चना, जौ, ज्वार, दालवाना आदि अनाज तेज होंगे। रुई, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। यह तेजी 8 दिसम्बर तक चल सकती है।

9 दिसम्बर को बुध मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में प्रवेश करेगा। इस समय बाजार का रुख मन्दे की तरफ रहेगा—सावधानी से काम करें। रुई, कपास, सूत, तिल, तेल, घी, सोना, चांदी में मन्दी का रुख रहेगा। **नोट करें—**धनु राशि में अकेला बुध मन्दीकारक ही रहता है।

9 दिसम्बर को मंगल अनुराधा नक्षत्र में आयेगा, अत: शीघ्र ही मन्दीकारक बुध का प्रभाव समाप्त होकर बाजार 9 दिसम्बर सायंकाल तक तेज रहेंगे। रुई, कपास, गेहूं,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लालमिर्च, सोना, तांबा आदि लाल एवं पीली चीजें तेज होकर मन्दी होंगी। इस प्रकार तेजी-मन्दी का यह वातावरण लगभग 14/15 दिसम्बर तक चलेगा, व्यापारी बहुत ही सावधानी से व्यापार बढ़ायें।

15 दिसम्बर को सूर्य मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में आयेगा। इस समय रुई, कपास, सूत, ऊन, तिलहन, तेल, घी, सोना, चांदी में तेजी रहकर, एकदम मन्दी बने। अनाजों में कुछ मन्दी रहे।

16 दिसम्बर को गुरु धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में आयेगा एवं शुक्र वक्रगति से चलने लगेगा। इस समय शुक्र का मेल शनि के साथ है एवं गुरु शनि के क्षेत्र में है। घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना तेज रहें। **लेकिन नोट करें कि—**गुरु के धनिष्ठा नक्षत्र में आने पर गुड़, खाण्ड, शक्कर की आमद बाजारों में ज्यादा होती है। गुड़, खाण्ड में भारी मन्दी के कारण रुपये के 50 पैसे रह जाते हैं। यदि वर्षा की कमी हो तो गेहूं आदि अनाज तेज हों। नमक, तिल, तेल, घी, सोना, चांदी आदि धातुएं मन्दी रहें। **ध्यान दें—**अगर गत कार्त्तिक में घी, तेल, तिलहन मन्दे हों तो स्टॉक करें। आगे चैत्र में तेजी से लाभ मिलेगा।

18 दिसं. के लगभग बुध पू.षा. नक्षत्र में आकर बिनौला में तेजी करे। लेकिन अनाजों एवं सोना, चांदी में झटके की मन्दी बन सकती है। वायदा एवं हाजर व्यापारी सावधानी से काम करें।

22 दिसम्बर को शनि श्रवण में आयेगा। शनि-शुक्र एक राशि में ही हैं। इस प्रकार इस समय शनि, शुक्र एवं बुध ग्रह की पोजीशन को देखकर गुड़, खाण्ड, नमक, तेल, घी, तिलहन, सभी मोटे अनाज एवं दालवाना में दुर्भिक्ष आदि से जोरदार तेजी का अनुमान है। यह तेजी 27 दिसम्बर तक चल सकती है।

28 दिसम्बर को सूर्य पू.षा. में एवं मंगल ज्येष्ठा में आ जाता है। 14 दिन में तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी एवं ऊनी वस्त्र तेज होंगे। चांदी एवं रुई में घटाबढ़ी रहेगी।

30 दिसम्बर को शुक्र वक्रगति से धनु राशि में आकर सूर्य एवं बुध के साथ मेल करेंगे।

इन दिनों गेहूं, जौ, चना आदि अनाज, चांदी, सोना, तांबा, पीतल आदि धातु एवं शेयर बाजार तेज रहेंगे। रुई, सूत, कपास में पहले मन्दी होकर बाद में तेजी सम्भव है, सावधान रहें।

जनवरी (सन् 2022 ई.)

मासारम्भ में ही गुरु शतभिषा नक्षत्र में आयेगा। इस समय 2 जनवरी को कुम्भस्थ गुरु पर मंगल की विशेष दृष्टि होने से गेहूं, जौ, चना, चावल, सोना, चांदी और रुई में जोरदार घटाबढ़ी के बाद जोरदार तेजी बनेगी। यह घटाबढ़ी 3 जनवरी तक चल सकती है।

4 जनवरी को श्रवण नक्षत्र में मंगलवार को चन्द्रदर्शन होने से तेल, तिलहन, घी, मूंग, दालें, मोटे अनाज एवं अन्य व्यापारिक वस्तुएं तेज होंगी।

5 जनवरी को वक्री शुक्र पू.षा. में आयेगा। शुक्र-सूर्य-बुध एक साथ हैं। इस समय गेहूं, जौ, चना, चावल एवं दालें तेज रहेंगी। तेल, तिलहन, घी, अफीम मन्दे रहें। इस समय 10 जनवरी तक बाजारों में तिलहन, तेलों में जोरदार उठापटक रहेगी।

7 जनवरी के लगभग शुक्र के पशिचम में अस्त होने पर तिलहन बाजार मन्दे एवं अनाज तेज रहेंगे।

11 जनवरी को सूर्य उ.षा. नक्षत्र में आयेगा। इस समय मंगल-शनि ये दोनों ग्रह सूर्य को 'कर्तरीयोग' बनाकर घेर रहे हैं।

उड़द, मूंग, चना, गेहूं, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, सरसों, मूंग आदि दालें, चमड़ा एवं पट्टसूत्र तेज रहेंगे।

12 जनवरी को बुध श्रवण में आयेगा। इस समय बुध शनि के साथ मकर राशि में है। 10 दिन में गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, चना, चावल, घी, तेल, तिलहन में तेजी से लाभ लें।

13 एवं 14 जनवरी को शुक्र एवं सूर्य की पोजीशन को ध्यान में रखकर काम करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

14 जनवरी को सूर्य मकर राशि में दाखिल होकर शनि-बुध के साथ मेल करेगा। 14 जनवरी के लगभग ही बुध वक्री भी हो रहा है। अत: इन दिनों रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली तेल, सरसों आदि तिलहन, कपास, अनाज, सोना, चांदी, हल्दी, कालीमिर्च एवं शेयर बाजारों में विशेष प्रभाव सूर्य का होगा। इस समय तिलहन, घी, अनाज, दालवाना, शेयर बाजार एवं सोना, चांदी के बाजारों में प्रचण्ड तेजी से लाभ मिलेगा, तुरन्त लाभ लें।

16 जनवरी को मंगल मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। ध्यान दें—यह योग भी तेजी का बढ़ावा देगा। चावल, चना, जौ, मूंग, मोठ आदि दालें, रुई, कपास, सूत, सण, पाट, बारदाना, मूंगफली, गुड़, खाण्ड, घी, सोना, चांदी एवं रुई में अच्छी तेजी रहे।

नोट—14 से 16 जनवरी तक वायदा एवं हाजर बाजार तेज रहेंगे।

17 जनवरी के लगभग बुध के पश्चिम में अस्त होने पर रुई में जोरदार मन्दी का झटका आयेगा और चांदी और शेयर बाजार भी मन्दे रहें।

नोट—क्योंकि इस समय बुध मकर राशि में सूर्य-शनि के साथ है, अत: उल्लिखित चीजों में कदाचित् अचानक मन्दी तेजी में बदल जाये तो आश्चर्य नहीं, सावधानी से काम करें।

18 जनवरी को गुरु शतभिषा-दूसरे चरण में दाखिल होगा।

इस समय गेहूं आदि अनाज, चावल, घी, तिलहन, हल्दी, सुपारी, केसर, मजीठ एवं सोना मन्दे रहें। **लेकिन 18 जनवरी को ही शनि अस्त हो रहा है। शनि इस समय मकर राशि में सूर्य-बुध के साथ होने से अनाज, तिलहन, शेयर बाजार एवं सोना, चांदी में तेजी कर सकता है। 18 जनवरी को मन्दी से तेजीकारक योग प्रबल मालूम देते हैं, सावधान रहें।**

22 जनवरी को श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण में शनि, 23 जनवरी को वक्री बुध उ.षा. के तीसरे चरण में और 24 जनवरी को सूर्य भी श्रवण नक्षत्र में आकर शत्रुग्रह शनि के साथ एकनक्षत्रसम्बन्ध बनायेगा। शनि, सूर्य, बुध—ये तीनों ग्रह मकर राशि में रही हैं।

इस समय गुड़, खाण्ड, नमक, गेहूं आदि अनाज, रुई, सूत, सण, घी, दालवाना, लौंग में तेजी से लाभ ले सकते हैं।

29 जनवरी को बुध की स्थिति रुई में मन्दी के बाद अच्छी तेजी करेगी। अनाज, तेल, घी एवं लालमिर्च में तेजी रहे।

30 जनवरी को शुक्र के मार्गी होने पर अगर अनाज मन्दे हों तो स्टॉक करें। तिल, तेल, सरसों, हींग, मिर्च तेज रहेंगे। रुई में मन्दी के बाद तेजी होगी।

फरवरी (सन् 2022 ई.)

मासारम्भ में मकर राशि में शनि, सूर्य और बुध—ये तीनों ग्रह एकत्र हैं। सूर्य और शनि परस्पर परम शत्रु हैं। इस समय शनि और सूर्य—दोनों श्रवण नक्षत्र में हैं। अत: अनाज, दालें, तेल, तिलहन, घी एवं सोना, चांदी तेज रहेंगे।

2 फरवरी को गुरु शतभिषा नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय गुरु पर मंगल की दृष्टि भी है। 3 फरवरी तक तेल, तिलहन, घी, नारियल, सुपारी, रुई, सूत, हल्दी, सोना, चांदी में तेजी का रुख रहेगा।

5/6 फरवरी के लगभग बुध-सूर्य की स्थिति अनाज, सोना, चांदी, जवाहरात, अलसी एवं रुई में तेजी का संकेत देती है।

7 फरवरी को राहु कृत्तिका-2 एवं केतु विशाखा-4 में दाखिल हो रहा है। **वृष राशि में स्थित राहु का मंगल के साथ षडष्टक चल रहा है।** अत: अनाज, हल्दी, सुपारी, केसर, मजीठ के व्यापार में मन्दी का झटका आ सकता है, सावधान रहें। हालांकि तेल, तिलहन, नारियल, रुई, सूत, सोना, चांदी, गेहूं, चना, चावल में जल्द ही बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे।

यह तेजी उत्तम, मध्यमरूप से 11 फरवरी तक चलेगी।

12 फरवरी को सूर्य शनि की राशि कुम्भ में आकर बृहस्पति के साथ मेल करेगा। कुम्भस्थ गुरु-सूर्य पर मंगल की दृष्टि भी है। इस स्थिति में बाजारों में अफवाहों से तेजी-मन्दी के झटके आ सकते हैं, बाजार का रुख देखकर काम करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हमारे विचार से 12 से 15 फरवरी के मध्य घी, तेल, तिलहन में तेजी के अच्छे झटके आयेंगे। राई, पाट, अलसी, एरण्ड, अनाज, गुड़, शक्कर एवं खाण्ड के व्यापारी मन्दी खेलकर तेजी में रहें, तो लाभ में रहेंगे।

16 फरवरी को कुम्भस्थ गुरु शतभिषा के चतुर्थ चरण में आकर गेहूं आदि अनाज, हल्दी, सुपारी, केसर, मजीठ एवं सोने में कुछ मन्दी कर सकता है।

19 फरवरी को सूर्य शतभिषा नक्षत्र, बुध श्रवण एवं शनि धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में आयेगा। यह योग बाजारों में जोरदार तेजी करेगा। सूत, सण, सोना, चांदी, तेल, तिलहन, सोंठ, छुहारा, हल्दी, गेहूं, दालवाना, चावल, ज्वार, बाजरा एवं गुड़, खाण्ड में अच्छी तेजी रहे, लेकिन शक्कर, गुड़, खाण्ड में जल्दी ही मन्दा भी बन सकता है। सावधानी से काम करें।

21 फरवरी को मंगल उ.षा. नक्षत्र में दाखिल होगा। लगभग इसी दिन शनि भी उदित होगा। इन दिनों लोहा, जस्ता, तांबा, सीसा, सोना, धान, घी, तिल, तेल, सरसों, उड़द, चावल, गुड़, खाण्ड तेज रहेंगे।

नोट करें—इन दिनों रुई में विशेष तेजी या मन्दी का झटका आयेगा।

22 फरवरी को धनु राशिस्थ शुक्र उ.षा. में नक्षत्र में आयेगा। इस समय शुक्र मंगल के साथ मेल करेगा। सभी अनाज तेज रहेंगे, रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे। गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड के बाजार कुछ मन्दे रह सकते हैं, लेकिन 24 फरवरी के लगभग गुरु की पोजीशन के अनुसार रुई एवं शेयर बाजार तेज रहेंगे। सोना, चांदी और अनाजों में मन्दी का रुख सम्भव है।

26 फरवरी को मंगल मकर राशि में आकर शनि-बुध से मेल करेगा। यहां से सभी धातुएं, तेल, गुड़, शक्कर, चीनी, अनाज एवं तिलहन में तेजी का संचार हो जायेगा। वायदा व हाजरा बाजार मासान्त तक तेज रहेंगे। इस समय ताजा मशवरा प्राप्त करें, उत्तम लाभ मिलेगा।

27 फरवरी को शुक्र अपने मित्र ग्रह शनि की राशि मकर में प्रविष्ट होगा। इस समय शनि-मंगल-शुक्र एवं बुध यह चतुर्ग्रही योग बनेगा। यह योग राजनैतिक दृष्टि एवं प्राकृतिक आपदा के कारण बाजारों में जोरदार तेजी-मन्दी करेगा, बहुत सावधानी से काम करें। हमारे विचार से शेयर बाजार तेज रहेंगे और अफीम, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, सभी तिलहन, गेहूं, चना आदि सारे अनाज तेज रहेंगे। रुई, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे। सोना, तांबा, पीतल, लोहा आदि धातुओं में भी उछाल आयेगा।

मार्च (सन् 2022 ई.)

1 मार्च को बुध धनिष्ठा नक्षत्र में आयेगा। ध्यान दें—इस समय शनि-मंगल एवं शुक्र के साथ बालग्रह बुध है। लगभग मार्च के प्रारम्भ से पूर्व ही शनि भी उदय हो रहा है। इस समय सभी अनाज, सोना, चांदी, रुई, सूत, सण, ऊन, कपास, तेल, घी, तिलहन, गुड़, खाण्ड तेज रहेंगे।

2 मार्च को गुरु पू.भा. में आता है, इस समय गुरु कुम्भ राशि में सूर्य के साथ है। दालें, घी, सभी अनाज, हल्दी, सोना, चांदी, सूत, सण एवं रुई में तेजी रहे। हां, रुई के व्यापारी सावधान रहें, रुई में अचानक मन्दी भी आ सकती है।

4 मार्च को पू.भा. नक्षत्र के सूर्य एवं चन्द्रदर्शन के विचार से 14 दिन के अन्दर सोना, चांदी, गेहूं, चना, उड़द, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल, पिप्पलामूल एवं रुई में अच्छी तेजी का झटका आयेगा। लेकिन ध्यान दें कि—चन्द्रदर्शन के कारण कभी इन चीजों में कुछ मन्दे का रुख भी बन सकता है। **यदि मन्दे का वातावरण बने तो 7 मार्च तक चल सकता है,—सावधानी से काम करें।** हमारे विचार से रुई, चांदी को छोड़कर अन्य चीजों में तेजी ही रहनी चाहिए। **क्योंकि 6 मार्च को बुध सूर्य एवं गुरु के साथ कुम्भ राशि में आयेगा।** अलसी, रुई, चांदी मन्दी के बाद तेज होगी। घी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना तेज रहेंगे।

10 मार्च को बुध शतभिषा में आकर चांदी, सोना आदि में तेजी ही करेगा।

11 मार्च को श्रवण नक्षत्र का शुक्र भी तेजी का इशारा करता है। चांदी, सोना, खाण्ड, शक्कर, मूंग, मोठ, उड़द, अनाज कुछ मन्दे होकर तेज हों। रुई में मन्दी के बाद तेजी और तेल, तिलहन में भी तेजी रहे।

11 मार्च को मंगल भी श्रवण नक्षत्र में आयेगा—यह योग अच्छी तेजी का है। सोना, चांदी, अनाज, तेल, तिलहन में तेजी से ही लाभ मिलेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

15 मार्च को गुरु पू.भा. में आकर अनाज, सोना, चांदी, सूत में तेजी एवं रुई में मन्दी करेगा।

18 मार्च को सूर्य उ.भा. में एवं बुध पू.भा. में आकर 15 दिन में गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, दालों, तेल, तिलहन में तेजी करेगा। लेकिन इसी दिन पू.भा. का बुध सोना, चांदी, लोहा, अनाज एवं रुई में मन्दी कर सकता है। बाजार का रुख देखकर काम करें।

20 मार्च को शनि धनिष्ठा नक्षत्र के दूसरे चरण में आकर रुई, जौ, गेहूं, मोठ, चावल, मूंग, सभी दालों, बाजरा एवं ज्वार में तेजी, शक्कर, गुड़, खाण्ड में मन्दा करे।

21 मार्च को बाजारों में भारी उठापटक रहेगी।

24 मार्च को बुध मीन में दाखिल होकर सूर्य के साथ मेल करेगा। सूर्य-बुध पर शनि की दृष्टि भी है। इस समय सोना, चांदी में जोरदार घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे। अनाज, तेल, तिलहन भी तेज रहें। रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में जोरदार उठापटक से तेजी ही सम्भव है। क्योंकि 24 मार्च को ही शुक्र धनिष्ठा में आता है, अत: यह वक्त तेजीप्रधान रहेगा।

25 मार्च को बुध के उ.भा. में आने एवं 25 मार्च को ही गुरु के उदित होने पर रुई, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं आदि अनाजों एवं चांदी के बाजार तेजी की तरफ ही बढ़ेंगे।

29 मार्च को मंगल धनिष्ठा एवं गुरु पू.भा. तृतीय चरण में आयेगा। **इस समय शनि-मंगल एक साथ चल रहे हैं।** इस समय रुई, सूत, सोना, चांदी, पीतल, जस्ता, लोहा, सूत, गुड़, खाण्ड, घी एवं दालों में तेजी ही रहे—ऐसा विचार है।

31 मार्च के लगभग सूर्य, बुध रेवती में एवं 31 मार्च को ही शुक्र कुम्भ में दाखिल होगा। इस समय सूर्य, बुध—दोनों लगभग रेवती में ही आ रहे हैं एवं एक साथ मीन में हैं। शुक्र कुम्भ राशि में गुरु के साथ आ रहा है। ऐसी ग्रह स्थिति 14 दिन में सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, मोती, लाख, रुई, गेहूं, जौ, चना, चावल में तेजी का संकेत देती है। लेकिन कुम्भ राशि का शुक्र सफेद चीजों में मन्दी करता है, अत: विचारपूर्वक काम करें।

— — — —

श्री मार्त्तण्ड पंचांग एवं ज्योतिष कार्यालय

यह शताब्दी-पुराना उत्तरभारत का एकमात्र ऐसा ज्योतिष कार्यालय है, जिसने लोगों की जटिल से जटिलतर समस्याओं का फलितशास्त्रीय चमत्कृतिपूर्ण समाधान प्रस्तुत कर भारी अक्षुण्ण यश अर्जित किया है। इस कार्यालय के अधिष्ठाता

विश्वविख्यात ज्योतिषाचार्य पं. श्री इन्दुशेखर शर्मा
एवं श्री संयमी शर्मा एम.ए., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य हैं।

त्रिस्कन्ध ज्योतिष के पारदृश्वा आप द्वारा विगत वर्षों की गरिमामय अवधि में ऐसा शोधपूर्ण चिन्तन पाठकों को दिया गया है, जिससे इस शास्त्र में परम्परागत विचारधारा से अपने आप में एक विलग क्रान्तिकारी दर्शन भारतीय ज्योतिष जगत् में प्रतिष्ठापित हुआ है। आप भारतीय आर्ष ज्योतिष विद्या के सुपरीक्षित गूढ़ दिव्य सिद्धान्तों के आधार पर आपकी समस्याओं को निरस्त कर खोई हुए शान्ति लौटाने की अद्भुत क्षमता रखते हैं।

गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

ध्यान दें—बाहर से आने वाले महानुभाव टेलीफोन द्वारा पण्डित जी से मिलने का दिन व समय निश्चित अवश्य कर लें, अन्यथा सम्भव है—आपको कार्यालय पहुंचने पर समय न मिल पाये और निराश लौटना पड़े। प्रात: कार्यालय में आकर अपना क्रमांक (Token No.) कार्यकर्ता से प्राप्त कीजिये। इसी क्रमांक के अनुसार आप पण्डित जी से मिल सकेंगे। क्रमांक निकल जाने पर कार्यकर्ता से सम्पर्क करें। आप कार्यालय में आकर व हमारे लैंड-लाईन नं. 0160-2641277 पर 7:30 A.M. के बाद फोन कर अपना क्रमांक (Token No.) प्राप्त कर सकते हैं।

हमारे यहां से चित्रापक्षीय निरयण गणनापद्धति द्वारा क्षेत्रीय (Zonal) जन्मसमय, जन्मतारीख और जन्मस्थान के शुद्ध अक्षांश आदि के आधार पर सूर्योदयास्त आदि में सभी अपेक्षित संस्कार देकर भारतीय/विदेशी जन्मपत्र, टेवा और निवासस्थानीय अक्षांश आदि से वर्षफल बनाये जाते हैं। व्यापारिक मशवरे (सोना-चांदी आदि धातुओं एवं चना, ग्वार आदि अनाजों की तेजी-मन्दी) तथा किसी भी ग्रह किवा राशि के रत्न/उपरत्न के लिए प्रत्यक्ष मिलें अथवा फोन से सम्पर्क करें। श्री नवग्रहयन्त्र, सिद्ध श्री महालक्ष्मी आदि यन्त्र प्रत्यक्ष आकर प्राप्त करें। यदि आप प्रत्यक्ष प्राप्त करने में असमर्थ हों, तो मनिऑर्डर भेजकर रजिस्ट्री द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

"ईश्वरेच्छा से भूत-भविष्य में जो कुछ ग्रहगोचरवश अनुभव किया है, वह आपके समक्ष रख दिया है। जो घटित हो चुका है, उसके आप प्रत्यक्षदर्शी हैं। जो भविष्य है, उस पर आप भूतानुसंधान के आधार पर विश्वास करें।"

"By God's grace whatever has been experienced with regard to Past, Present and Future has been highlighted and shared with you. Whatever has so far occured has also been witnessed by the masses. Therefore, you can trust and have faith on the basis of our research, experience, expertise and level of accomplishment in the past."

Sanyami Sharma

श्री मार्त्तण्ड पंचांग एवं ज्योतिष कार्यालय

नजदीक-रेलवे स्टेशन, मु.पो. कुराली (मोहाली) पंजाब, पिन-140 103, भारत।

For Appointment - Inquiry Contact: 0160-2641277

www.shrimartand.com +91 9988407010

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

–:व्यापारियों के लिए विशेष सुविधा:–
तेज़ी–मन्दी की प्रतिमास लिखित Advance Report

अर्थात् आगामी माह की दैनिक तेज़ी–मन्दी की लिखित रिपोर्ट

व्यापारी सज्जनो ! *1 जनवरी, सन् 2021 ई.* से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी–मन्दी या **वायदा–हाजर बाजार** का चांस अर्थात् सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़, चना, ग्वार आदि अनाज, तिल, तेल, सरसों किंवा **बिनौला** आदि तिलहन; जीरा, धनिया, हल्दी, लाल–कालीमिर्च, रुई एवम् कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट चाहते हैं तो फीस **Rs.** 5100/- (**इक्यावन सौ रु.**) **प्रतिमास** प्रतिजिन्स के हिसाब से भेजकर **Advance Report** प्राप्त करें। एकवर्ष की प्रतिजिन्स फीस **Rs.** 51000/- (**इक्यावन हज़ार रु.**) है।

ध्यान दें–यदि आप लिखित Report के अतिरिक्त प्रतिदिन Telephone से तेज़ी–मन्दी का विचार करना चाहते हैं तो उसकी फीस अलग से होगी।

नोट– पहली बार यदि प्रत्यक्ष मिलें तो अधिक सन्तोषजनक जानकारी मिल सकेगी। दूर से आने वाले व्यक्ति आने से पहले टेलिफोन करके आने का समय निश्चित कर लें।

पत्र या **M.O.** फार्म पर अपना नाम, पता एवम् फोन नं. साफ–साफ लिखें एवम् धनादेश किस जिन्स की तेज़ी–मन्दी जानने के लिए भेज रहे हैं– यह अवश्य लिखें। **M.O.** या **D.D.** भेजने के बाद आप अपना रजिस्ट्रेशन नंबर टेलिफोन से अवश्य प्राप्त करें।

Payment Advance आने पर ही अगले माह की रिपोर्ट भेजी जाएगी। **D.D.** या **M.O.** नीचे लिखे पते पर भेजें–

संयमी शर्मा , **M.A.**, ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
सुपुत्र पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, **M.A.**, ज्योतिषाचार्य,
श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय ,कुराली – **PIN** 140 103
(मोहाली) पंजाब।

PHONE: 0160-2641 277
Mob. 0 99 88 40 7010

नोट:– गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र-साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(1 जनवरी, सन् 2021 ई. से 1 अप्रैल, सन् 2022 ई. तक)

जप एवं यन्त्र-मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य-चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य-चन्द्रग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिषग्रन्थों में इस विषय के अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्टरूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्त-शिरोमणि' में कहा है कि क्रान्तिसाम्य के काल में विवाहादि मंगलकृत्य करना तो निषिद्ध है, लेकिन यदि इस समय जप, अनुष्ठानादि किया जाये, तो उसकी वृद्धि होती है— *"पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान-जप-होमदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्॥"* यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों की साधना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे 1 जनवरी, 2021 ई. से 1 अप्रैल, सन् 2022 ई. तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यन्त्र-तन्त्रों के निर्माण एवं मन्त्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण के पर्वकाल को भी मन्त्रादि-साधना के लिए साधकों को उपयोग में लाना चाहिए। सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य-चन्द्रग्रहण के पर्वकाल के अलावा मन्त्रादि साधना के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहा-वारुणीपर्व, महावारुणीपर्व और वारुणीपर्व भी महत्त्वपूर्ण माने गये हैं। ये अर्धोदय आदि योग कभी-कभी ही आते हैं।

सावधान—यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिये, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायनसंक्रान्ति-पुण्यकाल (भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2021 ई.					
19 जन.	19	47	20 जन.	8	35
18 फर.	9	51	18 फर.	22	39
20 मार्च	8	45	20 मार्च	21	33
19 अप्रै.	19	39	20 अप्रै.	8	27
20 मई	18	43	21 मई	7	31
21 जून	2	38	21 जून	15	26
22 जुला.	13	32	23 जुला.	2	20
22 अग.	20	38	23 अग.	9	29
22 सितं.	18	27	23 सितं.	7	15
23 अक्तू.	3	57	23 अक्तू.	16	45
22 नवं.	1	40	22 नवं.	14	28
21 दिसं.	15	05	22 दिसं.	3	53
सन् 2022 ई.					
20 जन.	1	45	20 जन.	14	33
18 फर.	15	49	19 फर.	4	37
20 मार्च	14	40	21 मार्च	3	28

निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भांति निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल में भी यन्त्र-मन्त्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2021 ई.					
10 जन.	11	50	10 जन.	19	40
23 जन.	15	33	23 जन.	22	32
5 फर.	5	40	5 फर.	10	36
18 फर.	0	54	18 फर.	6	1
2 मार्च	19	29	2 मार्च	23	23
15 मार्च	8	49	15 मार्च	13	17
9 अप्रैल	17	44	9 अप्रैल	22	17
23 अप्रैल	9	46	23 अप्रैल	14	10
5 मई	4	55	5 मई	10	16
19 मई	3	6	19 मई	9	28
31 मई	0	40	31 मई	8	2
14 जून	3	11	14 जून	13	22
23 जून	17	50	24 जून	2	41
7 जुलाई	4	36	7 जुलाई	13	52
20 जुलाई	7	25	20 जुलाई	13	28
2 अगस्त	0	48	2 अगस्त	6	52
15 अगस्त	3	0	15 अगस्त	7	28
27 अगस्त	13	31	27 अगस्त	18	12
9 सितं.	18	58	9 सितं.	22	47
22 सितं.	2	1	22 सितं.	6	12

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2021-22 ई.					
5 अक्तू.	13	30	5 अक्तू.	17	18
17 अक्तू.	14	25	17 अक्तू.	18	46
31 अक्तू.	8	15	31 अक्तू.	12	53
12 नवं.	4	1	12 नवं.	9	13
26 नवं.	1	17	26 नवं.	8	3
8 दिसं.	4	26	8 दिसं.	11	35
31 दिसं.	19	25	1 जन.	2	34
13 जन.	14	30	13 जन.	21	53
27 जन.	1	31	27 जन.	6	34
8 फर.	6	4	8 फर.	11	10
21 फर.	17	10	21 फर.	21	16
5 मार्च	19	49	5 मार्च	23	55
19 मार्च	8	22	19 मार्च	11	54
31 मार्च	11	24	31 मार्च	15	19

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य

सूर्य-चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किये जाने वाले क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ-समाप्ति काल नितान्त स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ-समाप्तिकाल महापातगणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। यह सर्वथा सूक्ष्म है। विवाहादि मुहूर्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को ही वर्जित किया गया है।

गजच्छाया योग (सन् 2021 ई.) (भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
6 अक्तू.	सू.	उ.	6 अक्तू.	16	35
महोदय योग (सन् 2022 ई.)					
1 फर.	सू.	उ.	1 फर.	11	15
वारुणी पर्व (सन् 2022 ई.)					
30 मार्च	सू.	उ.	30 मार्च	10	48

सूर्य-चन्द्रग्रहण

ऊपर लिखे अनुसार यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र-साधन के लिए सूर्य एवं चन्द्र ग्रहणों का पर्वकाल विशेष महत्त्व रखता है। एतदर्थ पृष्ठ ..23 .. देखिये।

ध्यान रहे—मन्त्रसाधना में उच्चारणादि की शुद्धि परमावश्यक है। उच्चारणादि की अशुद्धि साधक के लिए सुफलप्रद कदापि नहीं होती। मन्त्रोच्चारणादि की अशुद्धि व अनभिज्ञता स्पष्टरूप से वज्रपात-सम घातक (विनाशकारी) मानी गयी है—

"मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा
मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति
यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्॥"

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यन्त्र-मन्त्र एवं तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र गतवर्षों से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिये गये मन्त्रों को शुभ मुहूर्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल में दृढ़-निश्चयपूर्वक अनुष्ठान करके सिद्ध कर लेना चाहिए। **ध्यान रहे**—दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्त्वपूर्ण रात्रियों में किंवा उल्लिखित समयावधियों में इन मन्त्र-तन्त्रों को सिद्ध करके इनका चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र-मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है—**"सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।"**

मन्त्र ऐसे दिव्य शब्दों का समूह है, जिसे दृढ़ इच्छाशक्तिपूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्त शब्द ही मन्त्र हैं। इनमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है, कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कम्पन उत्पन्न होती है, जिसमें अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल-प्रच्छन्न शक्ति होती है—

"मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः॥"

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तान्त्रिक प्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्तिसम्पन्न किया। इसी प्रकार कलियुग में शिवावतार श्री शाबरनाथ जी ने शाबरमन्त्रों को अद्‌भुत शक्ति प्रदान की। शाबरमन्त्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जोकि अर्थहीन मालूम देते हैं, परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मन्त्र अवन्ध्य प्रभाव रखते हैं—**"अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश-प्रतापू॥"** अतः शाबरमन्त्रों को यथावत् उच्चारण करें, किसी प्रकार से इनमें न्यूनाधिकता न करें।

नोट—मन्त्र का पुरुश्चरण करते समय गुप्त रखें। प्रकट होने पर पुरुश्चरण अर्थहीन हो जाता है—**"गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।"**

बालरक्षा-विधि (अनुभूत प्रयोग)

यदि दृष्टिदोष या नजर-टोना आदि के कारण बालक के शरीर में कोई परेशानी हो तो निम्नलिखित चार मन्त्रों से देसी गाय के गोबर की शुद्ध भस्म या त्रिशक्ति (गुग्गुल, लौंग, लोबान) की धूप-जन्य विभूति से अभिमन्त्रित करके बालक के मस्तक-कण्ठ या हृदयादि अंगों पर लगाने से बालक का कष्ट तुरन्त दूर हो जाता है; अनुभव करें।

मन्त्रः—"ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनावर्जनो हरिः।
रक्षति त्वरितं बालं मुंच मुंच कुमारकम्॥
कृष्ण! रक्ष शिशुं शंख-मधुकैटभ-मर्दन।
यद्‌गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृ-ग्रहानपि॥
बालग्रहान् विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्।
त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्॥"

सर्वविध कष्ट-हरण मन्त्र

"ॐ श्री हरिः ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतः क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः ॐ श्री हरिः ॐ॥"

विधि—गुग्गुल, लौंग, लोबान की धूप घर में करते हुए इस मन्त्र का उच्चारण करें; एवं जो इनसे विभूति प्राप्त होगी उसको थोड़ा जल में डालकर घर को धो दें, स्नान करें; सभी संकट दूर हो जायेंगे।

शिशु-रक्षक कवच

निम्नलिखित कवचमन्त्रों को दीपावली या शिवरात्रि की रात्रि में लिखकर रखें। शिशु-रक्षा के लिए इसे लाल कपड़े में बांधकर गर्भिणी स्त्री के गले में डालें या प्रसूति के बाद शिशु के गले में डालें। शिशु चिरंजीव रहेगा, कोई कष्ट नहीं आयेगा। इस कवच को **'कार्तिकेयाक्ष - कवच'** भी कहते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्वप्रथम इस कवच को जागृत करने के लिए पूर्णरूप से बारम्बार पढ़ें तथा विनियोगपूर्वक पाठ करें। जब इसका प्रयोग करना हो तो केवल "**ॐ बाहुलेयः शिरः पायात् स्कन्दः शंकर-नन्दनः।**" यहां से प्रारम्भ करके "**राधिकायास्तथा पुत्रो निर्जरैरपि दुर्जयम्**" तक हल्दी या चन्दन से लिखकर चार तहों में लाल कपड़े से बांधकर गले में डालें, प्रसूति के बाद धूप देकर बच्चे के गले में डालें, बच्चा निरोग, चिरंजीव रहे।

रक्षाकवच-पाठ

देव्युवाच

ये ये मम सुता जातास्ते ते कंसनिषूदिताः।
कथं मे सन्ततिस्तिष्ठेद्ब्रूहि मे मुनिपुंगव॥

नारद उवाच

ये नो पायेन लोकेऽस्मिन् सन्ततिश्चिरंजीविका।
तत् ते सर्वं प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय॥

ॐ अस्य स्कन्दाक्षयकवचस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप् छन्दःसेनानीर्देवता वत्सरक्षणे विनियोगः। (यहां जल का त्याग करें)।

ॐ बाहुलेयः शिरः पायात्स्कन्दः शंकरनन्दनः।
मुण्डं मे पार्वती-पुत्रो हृदयं शिखिवाहनः॥
कटिं पायात् शक्तिहन्ता जंघे द्वे तारकान्तकः।
गुहो मे रक्षतां पादौ सेनानीर्वत्समुत्तमम्॥
स्कन्दो मे रक्षतामंगं दशदिग्वह्निभूमयः।
षाण्मातुरो भये घोरे कुमारोऽव्यात् श्मशानके॥
इति ते कथितं भद्रे कवचं परमाद्भुतम्।
धृत्वा पुत्रमवाप्नोति सुभव्यं चिरंजीविनम्॥
नारदस्य वचः श्रुत्वा कवचं विधृतं तया।
कवचस्य प्रसादेन तस्याः पुत्रो जनार्दनः॥
राधिकायास्तथा पुत्रो निर्जरैरपि दुर्जयम्॥
॥ उमयामले कार्त्तिकेयाक्ष-कवचं सम्पूर्णम्॥

रोग-शान्ति एवं आरोग्य-लाभार्थ

"ॐ मां भयात् सर्वतो रक्ष श्रियं वर्धय सर्वदा।
शरीरोग्यं मे देहि देव देव नमोऽस्तुते ॐ॥"

उल्लिखित मन्त्र को ग्रहण के समय या दीपावली की रात्रि में सिद्ध कर लें। तत्पश्चात् बर्तन में शुद्ध जल लेकर बर्तन को हाथ से ढककर सात बार इस मन्त्र का जप विश्वासपूर्वक करके रोगी को पिलायें। प्रतिदिन ऐसा करने से रोगी रोग से शीघ्र ही मुक्त हो जायेगा।

सिद्ध नृसिंह मन्त्र

"ॐ नमो भगवते वीर-नृसिंहाय, ज्वालामालिने दीप्तदन्ताय, अग्निनेत्राय, सर्वरक्षोघ्नाय, सर्वभूत-विनाशनाय, सर्वज्वरविनाशनाय, हन हन, दह दह, पच पच, बन्ध बन्ध, रक्ष रक्ष, हुं फट् स्वाहा।"

विधान—उपरोक्त मन्त्र कृष्ण चतुर्दशी को प्रारम्भ करके पांच हजार जाप करके सिद्ध कर लें। फिर इस मन्त्र को 11 बार पढ़कर झाड़ने या जल अभिमन्त्रित करके देने से भूत-प्रेत, नजर, ज्वररोग तथा ग्रहजन्य पीड़ा से तुरन्त मुक्ति मिलती है।

भूतप्रेत-बाधाशान्त्यर्थ अनुभूत मन्त्र

"ॐ क्लीम् दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्।
रक्षोभूत-पिशाचानां पठनादेव नाशनम् क्लीम्॥"

विधि—त्रिशक्ति (गुग्गुल, लौंग, लोबान) धूप को इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके भूत-प्रेत से पीड़ित व्यक्ति के घर में धूप देने से निश्चित रूप से पीड़ित व्यक्ति को लाभ एवं घर में सुख-शान्ति हो जाती है। प्रेतबाधा से मुक्ति सुनिश्चित है।

धनधान्य-समृद्ध्यर्थ लक्ष्मीप्राप्ति-मन्त्र

निम्नांकित लक्ष्मी-प्राप्ति 'मन्त्र-सिद्धि' के लिए विनियोगपूर्वक प्रतिदिन ऋष्यादि न्यासपूर्वक पाठ करें। शीघ्र ही आर्थिक लाभ के साधन बनेंगे; घर में

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लक्ष्मी माता की अपार कृपा अनुभव होने लगेगी।

लक्ष्मी-प्राप्ति का मन्त्र

"ॐ अस्य श्रीसप्तविंशत्यक्षर-सर्वसमृद्धिकरण-रमामन्त्रस्य ब्रह्मात्रऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री महालक्ष्मीर्देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः लक्ष्मी-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।"—(यहां जल का त्याग करें)।

ऋष्यादिन्यासः—"ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि। ॐ गायत्री छन्दसे नमो मुखे। ॐ श्रीमहालक्ष्म्यै देवतायै नमो हृदि। ॐ श्रीं बीजाय नमो गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्त्यै नमः पादयोः॥ (मूलेन करौ प्रमृज्य)। ततः कर—पंचांगन्यासौ—ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः (हृदयाय नमः)। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः (शिरसे स्वाहा)। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः (शिखायै वौषट्)। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः। (कवचाय हुम्)। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं करतल पृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्राय फट्)। (करन्यास पूर्ण करके पीछे उपरोक्त इन्हीं मन्त्रों से हृदयादि न्यास करें)—(मानसोपचारैः सम्पूज्य)।

ध्यानम्—

"सिन्दूरारुण-कान्तिमब्जवसतिं सौन्दर्य-वरांनिधाम्।
कोटी-राङ्गद-हार-कुण्डल-कटि सूत्रादिभिर्भूषिताम्॥
हस्ताब्जैर्वसुपात्रमब्ज युगलादर्शौ वहन्तीं परामावीतां
परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत् प्रियांग - शार्ङ्गिणः॥"

मूल मन्त्रः—"ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।"

इस मन्त्र का पहले 1,25,000 जप एवं तदनन्तर दशांश हवनादि करें। इस मन्त्र की सिद्धि से व्यापारादि में अतुल धन-राशि की प्राप्ति होती है।

ऋणनिवृत्ति व धन-प्राप्त्यर्थ विशेष मन्त्र

मन्त्र—"ॐ श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रियः पतिः श्रीः परमः श्रीः निकेतनः श्रीधराय नमः ॐ।"

विधान—शुक्लपक्ष के पुष्य नक्षत्र में उपरोक्त मन्त्र की 108 माला जाप करके मन्त्र को सिद्ध कर लें। फिर प्रतिदिन एक माला जाप करते रहें। निश्चित रूप से कर्जा दूर होकर परिवार में धनधान्य-समृद्धि आती है। यह सिद्धमन्त्र अग्निपुराण में मिलता है।

अनुभूत सिद्ध लक्ष्मीमन्त्र

श्रीसूक्त से उद्धृत इस मन्त्र को बिल्व वृक्ष के नीचे बैठकर श्रद्धा-विश्वासपूर्वक विधिपूर्वक विधिवत् जाप करने से सद्यः सिद्धि प्राप्त होती है। इस मन्त्र का अनुष्ठान-प्रकार नारायण विहार, दिल्ली निवासी श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा के सौहार्द से जनहितार्थ यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

विधि—श्री महालक्ष्मी की मूर्ति या चित्र को सामने रखकर उसकी षोडशोपचार पूजा करके अंगन्यास, करन्यास, ध्यान, मुद्रा आदि करके नियमपूर्वक मन्त्र का जाप किया जाता है। एकान्त स्थान में धूप-दीप जलाकर पवित्र आसन पर बैठकर लक्ष्मी मन्त्र की 31,000 आवृत्ति 40 दिन के अन्दर करके हवन, तर्पण, ब्राह्मणभोजन आदि कराके उसे सिद्ध किया जाता है। सात्त्विक आहार, ब्रह्मचर्य का पालन, भूमि पर शयन के साथ-साथ सभी यमनियमों का पालन करते हुए नित्य नियम से निश्चित संख्या का जाप किया जाता है। शुद्ध घृत का अखण्ड दीपक जलाया जाता है। एकाग्रचित और श्रद्धा विश्वास के साथ विधिपूर्वक साधना करने से 31000 जप से ही मन्त्र सिद्ध हो जाता है और कोई-न-कोई अलौकिक अनुभव होता है। जैसे दीपक की लौ पर ध्यान करते हुए मन्त्रजाप कर रहे हों तो वह ज्योति शरीर में प्रवेश करती हुई प्रतीत होती है, या महालक्ष्मी की मूर्ति अथवा चित्र प्रकाश व तेज से पूर्ण हो जाता है, उसमें से तेज निकलकर तुम्हारे शरीर में प्रवेश करता हुआ प्रतीत होगा, आदि-आदि। महालक्ष्मी का सिद्ध मन्त्र निम्न प्रकार है—

" ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॐ॥"

उपरोक्त मन्त्र श्रीसूक्त के 16 मन्त्रों में से एक प्रमुख है। इसके सिद्ध करने से न केवल दरिद्रता का नाश, अपितु सुख-समृद्धि, उत्तम बुद्धि, स्वास्थ्य आदि की

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भी वृद्धि होती है। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर उसका नित्य जाप करते रहना चाहिए और होली, दीवाली, शिवरात्रि, ग्रहण आदि के अवसर पर भी जप, हवन आदि करते रहना चाहिए। इससे आपको धन की कमी कभी नहीं होगी। आवश्यकता के अनुसार धनार्जन के साधन बनते रहेंगे, आपकी उचित आवश्यकताओं की पूर्ति निर्विघ्न होती रहेगी। जब भी कभी आपको अपने किसी उचित कार्य के लिए विशेष द्रव्य की आवश्यकता पड़े, इस मन्त्र की कुछ मालाएं जपें, आप देखेंगे कि किस प्रकार दैवी-सहायता प्राप्त होती है; अनुभूत है।

यशोलाभार्थ वैदिक मन्त्र

"ॐ ह्रीं मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ह्रीं ॐ॥"

विधि—इस मन्त्र का ग्रहणवेला या दीपावली की रात्रि में निष्ठापूर्वक जाप करने से यशलाभ, वाहनसुख, मनोकामना सिद्धि प्राप्त होती है।

स्वप्न में सिद्धि-असिद्धि ज्ञानार्थ चामत्कारिक मन्त्र

"ॐ ऐं दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थ-साधिके।
मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्वं प्रदर्शय ऐं ॐ॥"

विधि—साधक को नवरात्र-दिनों, ग्रहणवेला, मन्त्रसाधनाकाल व दीपावली के पर्व पर '**निशीथकाल**' में इस मन्त्र की साधन कर, सिद्ध कर लेना चाहिए। इस मन्त्र के साथ '**देव्यथर्वशीर्ष**' का सद्यः पाठ करने से पूर्ण लाभ होता है। सिद्धि के बाद रात्रि सोते समय इस मन्त्र को जपकर सोने से स्वप्न में सोचे हुए कार्य की सिद्धि/असिद्धि का ज्ञान होने लगता है—अनुभव करें।

शत्रुभय-मुक्तयर्थ किंवा अभियोग (मुकद्दमे) में विजयार्थ अनुभूत मन्त्र

"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॐ।"

विधि—उल्लिखित मन्त्र का जाप श्रद्धापूर्वक श्रीभगवती माता का ध्यान करके प्रतिदिन करें। इस मन्त्र के जाप से पूर्व '**सिद्धकुंजिका स्तोत्र**' का पाठ करें; तत्पश्चात् इस मन्त्र की एक माला प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक करें। तत्पश्चात् पुनः सिद्धकुंजिका स्तोत्र का पाठ करके भगवती के समक्ष समर्पण-भावनया, शत्रुभय-मुक्तयर्थ किंवा अभियोग में विजयार्थ विनम्र प्रार्थना करें; अवश्य लाभ होगा, अनुभृत है।

वश्यमुखी मन्त्रप्रयोग

निम्नांकित मन्त्र को दीपमाला की रात्रि में सिद्ध कर लें। जब किसी को अपने अनुकूल (वश में) करना हो तो बायें हाथ की हथेली में तेल लेकर अनामिका अंगुली (Ring-Finger) से उस तेल को तीन बार अभिमन्त्रित करके सिर एवं चेहरे पर लगा लें, तो सभी लोग वशंवद हो जाते हैं।

"ॐ राजमुखि वश्यमुखि स्वाहा।"

सर्वेष्ट-सिद्ध्यर्थ नृसिंह मन्त्र

निम्नांकित श्लोकरूप मन्त्र के जाप से व्यक्ति सर्वविध कष्टों से मुक्ति पा सकता है। शारदातिलक तन्त्रशास्त्र में इस मन्त्र को मनोरथ-सिद्ध्यर्थ एवं महामारी से मुक्ति पाने के लिए प्रत्यक्ष फलप्रद कहा है।

मन्त्र—"ॐ उग्रवीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्यु-मृत्युं नमाम्यहम्॥"

विधि—इस श्लोकात्मक मन्त्र की सूर्याभिमुख होकर प्रातः तीन माला प्रतिदिन करने से मनोवांछित फल मिलता है, घर में रोगकष्ट नहीं होता।

स्वप्न में कार्यसिद्धि किंवा कार्यहानि-ज्ञानार्थ मन्त्र

रात्रि में स्नान करके शुद्ध आसन पर बैठकर, कम-से-कम तीन माला निम्नांकित मन्त्र का जाप करके, भगवती दुर्गा का ध्यान करके शयन करें। रात्रि में स्वप्न में आपको मनोभिलषित कार्यसिद्धि किंवा असिद्धि का ज्ञान हो जायेगा, अनुभव करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

"ॐ ह्रीं दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थसाधिके।
मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्वं प्रदर्शय ह्रीं ॐ॥"

सुरकात्यायनी-मन्त्र-प्रयोग

मन्त्र—"ॐ भ्रूं हुं फट्।"—इस चार अक्षरों के मन्त्र में अवन्ध्य प्रभाव निहित है।

विधानम्—"शून्यं देवालयं गत्वा अष्टसहस्त्रं जपेत्। तदा स्वयमेव सुरकात्यायनी महाट्टहासं कृत्वाष्टशत परिवारेण नियतमागच्छति। आगतायै चन्दनोदकेन अर्घो देयः। तुष्टा भवति रस-रसायनं प्रयच्छति। भविष्य-कथने सामर्थ्यं ददाति।" —(मन्त्र महार्णवः)

अर्थात्—उपेक्षित-शून्य मन्दिर में बैठकर, आठ हजार मन्त्रजाप करें। सुरकात्यायनी सपरिवार अट्टहासपूर्वक सामने आयेगी। सुरकात्यायनी भगवती के आने पर जल में चन्दन मिलाकर अर्ध्य दें। इस प्रकार माता अनेकविध भोज्य पदार्थ देती हैं और भविष्यकथन में सामर्थ्य प्रदान करती हैं।

मनोकामना शीघ्र पूर्ण करने के लिए अनुभूत मन्त्र

आपके कार्य में देरी हो रही हो या बनते-बनते कार्य बिगड़ने की शंका हो तो निम्नांकित मन्त्र को एकादशी का व्रत रखकर 1008 बार जाप करें, मनोकामना अविलम्ब पूर्ण होगी।

मन्त्र—"ॐ नमः कामाक्षायै देव्यै नमः। ॐ ह्रीं क्रीं श्रीं अं कं चं टं तं पं यं शं ऐं सां ऐं मनोकामनां पूर्णां कुरु कुरु स्वाहा।"

नौकरी (कारोबार) प्राप्ति के लिए साबर मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरु का धरती में बैठ्या लोहे का पिण्ड राख लगाता गुरु गोरखनाथ आवन्ता जावन्ता धावन्ता हांक देत धार धार मार मार शब्द सांचा फुरो वाचा।"

विधि—मृगछाल (मृगचर्म) पर बिनासिला कपड़ा पहनकर बैठें। 108 बार रुद्राक्ष की माला से इस मन्त्र का जाप करके, खीर की 108 आहुतियां डालें, आहुतियां एक सप्ताह जाप करके डालें, आजीविका का साधन बन जायेगा। शुक्ल पक्ष की द्वितीया से मन्त्रजाप शुरू करें।

प्रेतबाधा-शान्त्यर्थ मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो काली-कपाली दहि दहि स्वाहा।"

इस मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित करके प्रेताविष्ट व्यक्ति पर छिड़कना चाहिए। जल के छींटें पड़ते ही प्रेत चिल्लाकर भाग जायेगा।

बालक को दृष्टिदोष (नजर) से मुक्त करने के लिए साबरी मन्त्र

मन्त्र—"ॐ डायन मोर जादू बाण। चौंक उठे बालक के प्राण। रोए बालक फक्का फाड़। चीखें मार करे चीत्कार। दोहाई कामाक्षा देवी की, तुझे शंकर की आन। ॐ नमः रुद्राय। ॐ नमः कामाक्षादेव्यै ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा।"

यदि सोया हुआ बच्चा चौंक कर उठता हो, अकारण रोता रहता हो, तो झाड़ू की एक तिल्ली लेकर बच्चे को उल्लिखित मन्त्र पढ़ते हुए झाड़ दें, तिल्ली को आग में जला दें, बच्चा पूर्णतया प्रसन्न रहेगा।

भूत-पिशाच-बाधा से मुक्ति पाने के लिए अनुभूत मन्त्र प्रयोग

मन्त्र—"ॐ ह्रीं दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्। रक्षो-भूत-पिशाचानां पठनादेव नाशनम् ह्रीं ॐ॥"

विधि—(क) उल्लिखित मन्त्र दीपावली की रात्रि में 11 हजार बार जाप से ही सिद्ध हो जाता है। दशांश हवन करना भी अनिवार्य है। यदि घर में नित्य कलह, अकारण भय, बाधा बनी रहे, धनहानि हो, दरिद्रता-आतंक रहे, भूत-प्रेत पिशाच की छाया हो, किसी ने घर पर अनिष्टकारक प्रयोग किया हो, तो इस चामत्कारिक मन्त्र को शुभवेला में, शुद्ध कागज पर अनार की कलम से लिखकर, मन्त्र का विधिवत् पूजन करके धूप-दीप करने के बाद दायीं भुजा में बांधने पर या लाल कपड़े में बांधकर, घर में शुद्ध स्थान पर रखने से सर्वविध शान्तिलाभ होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(ख) यदि सारे घर के सदस्य भूत-प्रेत बाधा से परेशान हों तो घर में ही इस मन्त्र का जाप करायें। मन्त्रजाप पूरा होने पर दशांश हवन करायें। हवन पूर्ण होने पर खैर की लकड़ी, 8 लोहे की कीलें, 8 पीली कौड़ी, 8 हल्दी की गांठें, डोडी वाले 8 लौंग लेकर, उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके मन्त्रोच्चारण करते हुए आग्नेय कोण से शुरू करके आठों दिशाओं में एक हाथ का गड्ढा खोदकर, इन चीजों को कौड़ी चित्त करके गाड़ें। ऐसा करने से भूत-प्रेत बाधा से घर पूर्णतया सुरक्षित रहेगा। यह प्रयोग अनेकत्र अनुभूत है। उल्लिखित मन्त्र से उपद्रवग्रस्त स्थान भी सुखद होता देखा गया है।

अचानक आया संकट तुरन्त दूर हो

आजकल विश्व में अशान्त वातावरण से आत्मरक्षा के लिए किंवा समयानुसार सर्वविध संकटों से मुक्ति पाने के लिए आप आगे लिखे गये मन्त्र का जाप करें—

"ॐ ह्रीं सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति - समन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रय-भूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ह्रीं ॐ॥"

ऐसी स्थिति में जबकि घर का कोई सदस्य भारी संकट में हो, राजभय किंवा आतंक का साया सिर पर हो तो अपने विश्वस्त विद्वान् पण्डित से उक्त जाप करायें अथवा स्वयं जाप करें। समय कम होने की अवस्था में उल्लिखित मन्त्र का यथाशक्ति जाप करें एवं एक पान पर शाकल्य, 1 कमलगट्टा, 1 सुपारी, 2 लौंग, 1 इलायची, गुग्गुल की आहुति दें, मन्त्रजाप करते रहें, तुरन्त आपत्ति का निराकरण होगा।

बालरक्षार्थ मन्त्र

यदि अबोध बालक अकारण रोता रहे, सांस चढ़ा ले, नीला होता जाये, तो समझें कि किसी बुरी छाया का प्रभाव है। ऐसी स्थिति में निम्नांकित मन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध या केवल लालचन्दन की मसी (स्याही) लेकर अनार की कलम से लिखें। गुग्गुल की धूप देकर, इस मन्त्र को बच्चे के गले में डाल दें, आश्चर्यजनक रूप से बच्चे को शान्ति मिलेगी।

"रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर, ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुंच मुंच कुमारकम्॥"

इस मन्त्र का कुलपुरोहित या विद्वान् पण्डित से जाप करा सकते हैं, मन्त्रजाप से ही यह मन्त्र पूर्णरूपेण फलद है।

मृतवत्सा (अठरहा) रोग-निवृत्ति-मन्त्र

मन्त्र—"ॐ परब्रह्म परमात्मने 'अमुकी' गर्भे दीर्घजीवि सुतं कुरु कुरु स्वाहा।"

मृतवत्सादोष निवारण के लिए ज्येष्ठ मास की पूर्णमासी को 1008 बार मन्त्र को विधिपूर्वक जपें एवं दीपावली की रात्रि अथवा ग्रहण के समय जाप से सिद्ध करें। तत्पश्चात् मन्त्र में **'अमुकी'** शब्द के स्थान पर स्त्री का नाम लिखें। मन्त्र को अष्टगन्धादि से लिखकर, स्त्री अपने पास भुजा आदि पर बांधे रखे, मृतवत्सा रोग शान्त होगा।

दृष्टिदोष (नजर) दूर करने के लिए मन्त्र

कुछ बच्चे अकारण रोते रहते हैं, रात्रि में भी सोते नहीं, जबकि वैद्य उन्हें ठीक बताता है। ऐसे लक्षण दृष्टिदोष युक्त बालक के हैं। ऐसी स्थिति में बालक को सामने बैठाकर मोरपंख से झाड़ा दें एवं निम्नांकित मन्त्र का उच्चारण करते रहें—

"ॐ अंजनि-गर्भ-संभूतं कुमारं ब्रह्मचारिणम्।
दृष्टिदोष-विनाशाय हनुमन्तं स्मराम्यहम्॥"

नोट—इस मन्त्र को दीपावली की रात्रि में, होली, मंगलवार की रात्रि में या ग्रहण के समय 1008 बार जप करके सिद्ध कर लेना आवश्यक है।

सिरदर्दनिवारक सिद्ध साबर मन्त्र

"हजारघर चाले एक घर खाय, आगे चले तो पीछे जाय।
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा, मेरे गुरु का वचन सांचा॥"

विधि—शनिवार या मंगलवार के दिन श्रीमहावीर जी की प्रतिमा के चरणभाग

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

से थोड़ा-सा सिन्दूर लें। सिरदर्द वाले रोगी के माथे पर, उल्लिखित मन्त्र बोलते हुए उस सिन्दूर से तिलक करें, तुरन्त लाभ अनुभव होगा।

प्रेतपीड़ा या टोने आदि से बचने के लिए मन्त्र

बारह वर्ष से कम आयु की कन्या के काते हुए कच्चे सूत के सात धागे लेकर, उन पर सात गांठें लगा लें। प्रत्येक गांठ पर सात बार निम्नांकित मन्त्र को पढ़ें–

"ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्म - शूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि॥
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थ-घोराणि तैरक्षास्मान् तथा भुवम्॥"

यह प्रयोग अत्यन्त सफल है। गर्भावस्था में गर्भपातभय से मुक्ति एवं शत्रुकृत टोना किंवा प्रेतादि शान्ति के लिए अनुभूत है।

सिद्ध आकर्षण विधान

कोई स्त्री-पुरुष या बालक घर से रूठकर चला गया हो या विदेश गया हुआ व्यक्ति वापस घर आने का विचार न रखता हो तो निम्नांकित विधान उसे घर बुलाने में अमोघ सिद्ध होता है।

कुम्हार के घर स्वयं जाकर एक नया पक्का घड़ा (जो कहीं से फूटा या रिसता न हो) एवं एक कसोरा ले आइये।

ध्यान रहे—इनमें कहीं भी काला दाग न हो। घड़े के ऊपर और कसोरे के बीच निम्नांकित नवार्ण मन्त्र का यन्त्र केसर से लिखें, साथ ही एक नवार्ण मन्त्र-यन्त्र केसर की मसी (स्याही) से भोजपत्र पर लिखकर, उसी घड़े में डाल दीजिये और तांबे के चार पैसे भी उसी में डाल दें। पैसे ज्यादा-कम न हों। यदि पैसे न मिलें तो तांबे के चार गोल पत्र डालें। कसोरे से ढककर घड़े को बायीं तरफ को सात बार घुमाते हुए **"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"**-इस मन्त्र को पढ़ते जायें। घड़े को मन्त्रोच्चारणपूर्वक सात बार बायीं ओर घुमाकर एकान्त में रख दीजिये। ऐसा सात दिन करें। अर्थात् उसी घड़े के साथ यह प्रयोग सात दिन करें। सात दिन के अन्दर ही व्यक्ति चल पड़ेगा या किसी माध्यम से अपना पता देगा।

घड़े के अन्दर एवं भोजपत्र पर लिखा जाने वाला यन्त्र यह है–

ऐं	ह्रीं	क्लीं
डा	मुं	चा
यै	वि	च्चे

नोट—इस आकर्षण-विधान करने से पहले नवार्णमन्त्र का नियमपूर्वक सवालक्ष जप करें एवं उल्लिखित यन्त्र को दीपावली की रात में लिखकर सिद्ध कर लेना चाहिए।

गृहक्लेश दूर करने के लिए मन्त्र

निम्न मन्त्र को उत्तराभिमुख होकर रात के 9 बजे के बाद साढ़े 11 बजे से पहले प्रारम्भ करें। धूप-ज्योति जगाकर पांच-पांच माला मन्त्र जाप 33 दिन तक प्रतिदिन करें। तर्पण करें तथा ब्राह्मण भोजन करायें। दीपावली की रात्रि या ग्रहण के समय निम्न मन्त्र को सिद्ध करके, लिखकर देने से एवं घर में हवन करने से घर में क्लेश दूर होकर, गृह में शान्ति हो जाती है।

"ॐ दमयन्ती-नलाभ्यां तु नमस्कारं करोम्यहम्।
अभिवादो भवेदत्र कलिदोष - प्रशान्तिदः॥
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथग्धियाम्।
निर्वैरता च जायेत संवादाग्ने प्रसीद मे॥"

कुपथगामी-पति किंवा पत्नी के वशीकरण के लिए मन्त्र

"ॐ कामातुरे काममेखले विद्योषिणि नीललोचने।
अमुकं मे वश्यं कुरु कुरु ह्रीं स्वाहा॥"

विधि—इस उल्लिखित मन्त्र से मिठाई या किसी मीठी भक्ष्यवस्तु को सात बार अभिमन्त्रित करें, फिर दुबारा उस व्यक्ति का नाम लेकर उस व्यक्ति का ध्यान करें कि वह व्यक्ति आपके चरणें में गिर रहा है, क्षमायाचना कर रहा है, ऐसा ध्यान करके, इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करें और उस चीज को कुपथगामी व्यक्ति को खिला दें। ऐसा ही चालीस दिन करें, व्यक्ति अवश्यमेव वश में हो जायेगा।

ध्यान दें—इस मन्त्र में जहां 'अमुकं' लिखा है, वहां कुमार्गगामी व्यक्ति का नाम बोलना चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नवसंवत्सरारम्भ-विधि

त्रिविध दु:खों के निवारण के लिए हमारे ऋषियों ने दर्शनशास्त्रों का उपदेश दिया है—"**दु:खत्रयाभिघातात् जिज्ञासा तदपघातके हेतौ।**", सर्वसाधारण गृहस्थियों या जन-सामान्य के लिए व्रतपर्वों के अनुष्ठान करने को प्राथमिकता दी है। इस वर्ष से हम यहां व्रतपर्वों के अनुष्ठान की विधि का निर्देश संक्षेप में करने का प्रयास कर रहे हैं। आशा है—पाठक लाभान्वित होंगे।

—**सम्पादक**

नवसंवत्सर का शुभारम्भ

चैत्र मास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तिथि से नवसंवत्सर का शुभारम्भ शास्त्रविहित है। यह अत्यन्त पवित्र तिथि है। इसी तिथि से ब्रह्माजी ने सृष्टिनिर्माण-प्रारम्भ किया था—

"चैत्रे मासि जगद्ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्लपक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदये सति॥"

– (स्मृति कौस्तुभ)

युगत्रयी में प्रथम '**सत्ययुग**' का प्रारम्भ भी इसी तिथि को हुआ था, अत: यह तिथि ऐतिहासिक महत्त्व की है। इसी दिन सम्राट् चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने शकों पर विजय प्राप्त की थी और चिरस्थायी विक्रम संवत्सर का प्रारम्भ किया था।

संवत्सर मंगलमय रहे, अत: '**संवत्सर-पूजन**' करना चाहिए। **पूजन-विधि**—उक्त इस तिथि को प्रात: नित्यकर्म से निवृत्त होकर तेल का उबटन लगाकर, स्नानादि से पवित्र होकर, हाथ में गन्ध, अक्षत, पुष्प एवं जल लेकर देश-काल-उच्चारणपूर्वक निम्नांकित संकल्प करें;—

"मम सुकुटुम्बस्य सपरिवारस्य स्वजन-परिजन-सहितस्य वा आयुरारोग्यैश्वर्यादि-सकल-शुभफलोत्तरोत्तराऽभिवृद्ध्यर्थं ब्रह्मादि-संवत्सर-देवानां पूजनमहं करिष्ये।"

उक्त संकल्प उच्चारण करके नव-निर्मित चौरस चौकी या बालू की वेदी पर स्वच्छ श्वेत वस्त्र बिछाकर उस पर हल्दी या केसर से रंगे अक्षतों (चावलों) से अष्टदल-कमल बनाकर, उस पर स्वर्णनिर्मित (या यथाशक्ति) ब्रह्माजी की मूर्ति स्थापित करें। गणेशाम्बिका-पूजन के पश्चात् "**ॐ ब्रह्मणे नम:**"—इस मन्त्र से ब्रह्माजी का आवाहन करके षोडशोपचार-पूजन करें।

पूजन के अनन्तर विघ्नों के नाशार्थ एवं समग्र संवत्सर में कल्याण एवं मंगलमय कामना के लिए ब्रह्माजी से निम्न प्रार्थना की जाती है;—

"भगवंस्त्वत् प्रसादेन वर्षं क्षेममिहास्तु मे।
संवत्सरोपसर्गा मे विलयं यान्त्वशेषत:॥"

इस प्रकार पूजन के पश्चात् विविध प्रकार के उत्तम-सात्त्विक पदार्थों से ब्राह्मणों को भोजन कराने के बाद ही स्वयं भोजन करें।

इस दिन पंचांग-(वर्षफल)-श्रवण का भी विशेष माहात्म्य है—

"इतीदं वत्सर-फलं वत्सरादि तिथौ शुभम्।
य: श्रृणोति नरो भक्तया स सुखी वत्सरं भवेत्॥"

नवीन पंचांग से संवत्सर के राजा-मन्त्री-सेनाध्यक्ष आदि के फल का श्रवण करके मन्दिर या विद्वान् सदाचारी ब्राह्मण को सामर्थ्यानुसार 'पंचांग-दान' करने का भी विशेष महत्त्व है। इस दिन प्याऊ (जलस्रोत) की स्थापना भी परमपुण्यप्रद लिखी है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इस दिन नवीन वस्त्र धारण करना एवं घर को ध्वज, पताका, बन्दनवार आदि से सजाना चाहिए।

आज के दिन निम्ब के कोमल पत्ते, निम्ब के पुष्पों का चूर्ण बनाकर, इनमें कालीमिर्च, नमक, हींग, जीरा, मिस्त्री एवं अजवायन मिलाकर खाने से वर्षभर रुधिरविकार नहीं होते। आरोग्य की प्राप्ति होती है।

इस दिन नवरात्र के लिए '**घट-स्थापन**' एवं तिलकव्रत भी किया जाता है। तिलकव्रत में यथासम्भव नदी, सरोवर अथवा गंगाजल से घर पर स्नान करके संवत्सर की (कल्पित) मूर्ति बनाकर या संवत्सर का रक्तचन्दन से नाम लिखकर "**ॐ चैत्राय नमः, वसन्ताय नमः**" आदि मन्त्रों से पूजन करें। तत्पश्चात् विद्वान् ब्राह्मण को पूजन-अर्चन-पूर्वक भोजन कराकर दक्षिणा दें।

वासन्तिक नवरात्र
(चैत्र-शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक)

चैत्र, आषाढ़, आश्विन और माघ के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन '**नवरात्र**' कहलाते हैं। इस प्रकार एक संवत्सर में चार नवरात्र घटित होते हैं। इनमें चैत्र नवरात्र '**वासन्तिक नवरात्र**' माने जाते हैं। आश्विन-नवरात्र '**शारदीय नवरात्र**' कहलाते हैं और आषाढ़/माघ के नवरात्र '**गुप्त नवरात्र**' माने जाते हैं। इन नवरात्रों में आद्या शक्ति भगवती दुर्गा की आराधना का विशेष महत्त्व है।

पूजाविधि—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से पूजन प्रारम्भ करें। ध्यान दें;—अमायुक्ता प्रतिपदा में पूजन प्रारम्भ न करें। '**सम्मुखी प्रतिपदा**' को ही शुभ एवं ग्राह्य माना गया है। सर्वप्रथम स्नानादि से निवृत्त होकर गोमय (गाय के गोबर) से पूजास्थान को पवित्र करके प्रातःकाल '**घटस्थापन**' करें। चित्रा या वैधृति योग में घटस्थापन न करें। मध्याह्न में, अभिजित् मुहूर्त में घटस्थापन करना शास्त्रविहित है।

नवरात्र व्रत '**स्त्री-पुरुष**' दोनों कर सकते हैं। परिस्थितिवश यदि स्वयं न कर सकें तो पति, पत्नी, पुत्र या विद्वान् ब्राह्मण को अपना प्रतिनिधि बनाकर व्रत पूर्ण कराया जा सकता है। व्रत में उपवास, '**अयाचित**' (विना मांगे प्राप्त भोजन), '**नक्त**' (रात्रि में भोजन करना) या '**एकभुक्त**' (एक बार भोजन करना), इस प्रकार जो सम्भव हो सके, यथा-सामर्थ्य करें।

नोट—यदि नवरात्रों में घटस्थापन के बाद सूतक (अशौच) हो जाये, तो कोई दोष नहीं लगता। घटस्थापन के पहले सूतक होने पर पूजनादि अन्य ब्राह्मण से ही करायें। इन दिनों '**पातक**' स्थिति (अत्यावश्यकता) में यह पूजनादि का कार्य किसी ब्राह्मण द्वारा तीर्थ या मन्दिर में करा सकते हैं।

घटस्थापन के लिए पवित्र मिट्टी से वेदी का निर्माण करके, उसमें जौ और गेहूं बोयें तथा उस पर यथाशक्ति मिट्टी, चांदी, तांबा या स्वर्णनिर्मित कलश स्थापित करें। तत्पश्चात् पंचांग-पूजन, गणेशाम्बिका, वरुण, षोडश-मातृका, सप्तघृत-मातृका एवं नवग्रह आदि देवों का पूजन तथा पुण्याहवाचन ब्राह्मण द्वारा करायें या स्वयं करें।

इसके बाद कलश पर देवी की मूर्ति स्थापित करके षोडशोपचारपूर्वक पूजन करें। फिर **श्री दुर्गासप्तशती** का ससम्पुट किंवा साधारण पाठ यथाशक्ति करें। पाठ की पूर्णाहुति के दिन दशांश हवन विधिवत् करें।

दीपक-स्थापन—पूजा के समय शुद्ध घी का दीपक जलाना चाहिए। दीपक की गन्धाक्षत-पुष्प आदि से पूजा करें। दीपक-स्थापना का मन्त्र इस प्रकार है;—

"भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं ह्यंधकार-निवारकः।
इमां मया कृतां पूजां गृह्णंस्तेजः प्रवर्धय॥"

कुमारी-पूजन—नवरात्र-पारणा किंवा नवरात्रों में कुमारी-पूजन अनिवार्य है। कुमारिकाएं जगदम्बा के प्रत्यक्ष विग्रह के रूप में मानी जाती हैं। सामर्थ्यानुसार नवरात्रों में नौ दिन तक नौ, सात, पांच या तीन किंवा एक कन्या को देवी मानकर श्रद्धापूर्वक भोजन करायें। कुमारी-पूजन में ब्राह्मण-कन्या को प्रशस्त माना है।

(शेष पृष्ठ 38 पर)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रसूति–लग्न विचार

मेष—जन्मसमय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवम् मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल, मलिन थे। ४। ११। १६। ४४। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे; इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष— माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व में सूतिका–स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १। २८। ३३। ४४। ६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन— माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे। ४। १०। १४। ३८। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवाएं। यदि इन वर्षों से बचे, तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव से पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसुन आदि का चिह्न, देर से रोया। ५। २५। ४०। ५८। ६२— इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश के समय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह— माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्मसमय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान। ५। १३। २८। ३६। ४८— इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और ब्राह्मणों को मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्ठान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्मसमय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया, घर के नैर्ऋत्यकोण में सूतिका–स्थान। ४। १६। २३। ३६। ५५— ये वर्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला— माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्मसमय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहरकर अर्धशब्द करके रोया, घर के पश्चिमभाग में सूतिकास्थान। ८। १५। ... इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी २ आईं, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घ केश, घर के पश्चिमभाग में प्रसवस्थान। ११। २८। ३८। ५२। ६२— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान। २। १०। १८। ३१। ३८। ४२। ६७— इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मणभोजन श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर— माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला व जीर्ण कमजोर वस्त्र; गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्मसमय स्त्रियां २, पीछे से एक आई। दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तरभाग में पुराना सूतिकास्थान। ५। १३। २७। ३६। ५७। ६३। ८७— इन कष्टकारक वर्षों से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के शुरु में शिवार्चन, मृतसंजीवनी आदि का जाप रखे।

कुम्भ—माता का सिर पश्चिम को, जीर्ण, धुम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर–शीत शाकादि का भोजन, कष्ट अधिक, जन्मसमय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आईं, उन में एक स्त्री गर्भिणी भी हो, दीपक स्वास्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्धशब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तरभाग में सूतिका–गृह। २। २८। ३३। ४८। ६४— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जयजप हितकारक है। इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन— माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका–स्थान। १। ८। १३। ३६। ४८— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह–शान्ति–हवन, मृतसञ्जीवनीमन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। **स्मरण रहे**—अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें – वही बालक का जन्मलग्न जानना चाहिए, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष जन्मज्ञान— (१) जन्मलग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध–शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनि चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो– इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना चाहिए।

जन्मकुण्डली में दिशाज्ञान— प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय–तृतीय ईशान, चतुर्थ उत्तर, ... सप्तम पश्चिम, अष्टम–नवम नैर्ऋत्य, दशम दक्षिण, एकादश ...

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहरकर अर्धशब्द करके रोया, घर के पश्चिमभाग में सूतिकास्थान। ८। १५। ३१। ३५। ६२। ६८— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रहों का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि

जन्मकुण्डली में दिशाज्ञान— प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय–तृतीय ईशान, चतुर्थ उत्तर, पञ्चम–षष्ठ वायव्य, सप्तम पश्चिम, अष्टम–नवम नैर्ऋत्य, दशम दक्षिण, एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना चाहिए।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रसूतिस्थान से पाकशालादि का विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य, मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना चाहिए। इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। **दोहा— लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार।।** केन्द्र (१। ४। ७। १०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें, जो बली (स्वराशि, मित्रोच्च, व मूलत्रिकोण राशि का) केन्द्रस्थान में स्वमित्र, शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो, उसकी दिशा में अथवा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है।

ग्रहों की दिशा— सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनि की पश्चिम और राहु, केतु की नैर्ऋत्य।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्— चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहें। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना।

सो०— तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशुजन्म तब आई, तब कही दीपकतैल नहीं। सित–शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशुजन्म में तब वाम, दीपकतैल सौं युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्तिज्ञानम्— जन्मलग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहें, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैःस्युरुपसूतिकाः— यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्रपर्यन्त जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करें, अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें, अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्न–चन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करें और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करें, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के, अस्त होवें, उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान रखने योग्य है, कि— वह लग्न, चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तमभावपर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तमभाव से लग्न के भुक्तांशपर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना चाहिए। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहां हों तो, धर्मशील, सौभाग्यवती स्त्रियां कहें, अशुभ ग्रहों से विधवा, दुश्चरित्रा कहें।

शय्या–शिर व पादविचार

"लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषट्क्रान्त्येषु पादाः।" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहें। अर्थात् १। २ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४। ५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७। ८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०। ११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जानें। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना चाहिए। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों, वहां सूतिका के पलंग का पावा फटा, टूटा समझना चाहिए।

दो०— मीन–मिथुन–सिंह–तुला–मेष होय तत्काल।
अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल।।

अथचिह्नज्ञानम्— दोहा–षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामे कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण।। भानु तथा सौरी तनधन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाहु।। सुहृद् भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वामपाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न।। नौमे पांचे भृगु बसे तनु व चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।"

प्रसवकष्ट दूर हो— प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकण्डा) की जड़ें लाकर, घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ॐ मुक्ताः आशा विपाशश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर–माचिर स्वाहा।।"— इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र ही प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख, धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। **स्मरण रहे कि—** पहले उपरोक्त मंत्र तथा **यन्त्र** ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दोः— "द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खग ना बसै, वेगि ताहियमलीन।। बसैचन्द्रा द्वादसे अष्टभवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव।।"

अथकाणयोगः— "तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसै त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय।। तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिकघर नाथ।। चन्द भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान।। भानु राहु दहनों नयन, बुधजन कहत बखान।।"

मूक योगः— "पञ्चमेश गुरुयुक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौ न भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय।। शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।।"

दुःखदयोग— रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पापयुक्त लग्नेश। जन्मसमय जाके परे ताको अंग कलेश।। पापयुक्त तनुभवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस।। पापग्रहयुत लग्नपति परै लग्न में आय। वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय।।

बन्धनयोग— क्रूर रहै धन नवम व्यय और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार।।

सर्पवेष्टितयोग— यदि अष्टमेश लग्न में राहुसहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित पैदा होता है।

यमल जन्मयोग— चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धनु के

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहें। अथवा आधानलग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे– शनि, मंगल से ५/७/९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु–समय–विचार – जिन अरिष्ट योगों में मरणकाल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु कहें। अथवा– जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो, जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु होनी बताएं। अथवा चन्द्रमा जब लग्नराशि में आता है, तब मृत्यु का होना कहें। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मृत्यु कहनी चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके, तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इसलिए आयु का प्रथम विचार करें, फिर मृत्यु कहें।

सुखदयोग – अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग।। जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्रदृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय।।

क्लीब (नपुंसक) योगः – दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्रभवन से रिष्फ षट् मन्द बसे क्लिब मान।।

कुष्ठयोग :– लग्नप बुध कुज शशियुते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु।। भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अतिरुष्ट।। जलजगंडयुत, चन्द जो ग्रन्थिगंड कुजसाथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनुनाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयोरोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।।

केमद्रुम योग :– आगे–पीछे चन्द्र के जो ना परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय।। उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग् केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।।

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है भूलि न व्याहेउ कोय।। जाके कुज दशम बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूरयुक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पापदृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करै है भंग।। राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन।। द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम।। पापग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुवो भाषत कविकुलवृन्द।। सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृग बसै बुधजन कहत विचारि।

वैधव्य–विषकन्यायोग :– चौ.–रविवार द्वितीया जो होय। आश्लेषा ताहि दिन में जोय।। १ ।। कृत्तिका होय शनिश्चर वार–साते तिथि को करो विचार ।। २ ।। होय शतभिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार।। ३।। इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जाने सोय।।४।। जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय। एक पाप ग्रह नभ (१०) में जोय ।।५।। शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रैह मानो। ता कन्या को विधवा जानो।। ६।। अश्लेषा द्वितीया को होय। मंदवारयुत लीजो जोय।।७।। परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ।। ८।। रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ।। ९।। ऐसो योग लखी जो परै। तो कन्या को विधवा करै ।। १०।। दो0– धर्मसदन में भूमिसुत जन्मसदन शनि जान। सूर्य होत सुतसदन में कन्या विधवा मान।। ११।।

वैधव्य–विषकन्याभंगयोग :– जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय।।

काकवन्ध्यादि योग :– ज्ञे अष्टमे काकबन्ध्यामन्दार्कावष्टमे बन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या।।

स्त्रीणां राजयोगाः – चौपाई– केन्द्रधाम नभगा शुभ होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत वाके–चन्द्रज तुग बसे तनु जाई लाभ धन गुरु आवे धाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षड्वर्ग शुद्ध गुरु होई शशि दृग् केन्द्र में भवन में होई।। ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनभारी।। **दोहा–** कर्क चन्द्रमा सातवें जीवदृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरयुत ताकौ पति नृप शूर।। लाभभवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन।।

स्त्रीणां पुत्रभावविचार :– पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्।।

अशुभ प्रसवमास :– कार्त्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चे जन्में तो 6 मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन के समय घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र हो। **स्मरण रहे कि–** यहां सर्वत्र सौरमासग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर, व्याहृतिमन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करें, बच्चा जन्मे तो कार्त्तिकशान्ति करने से शुभ होता है।

त्रिखलजन्मफल :– यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्टप्रद होते हैं। कृपणता छोड़कर, त्रिखलशान्ति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चान्दी, तांबा) दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दान्त निकले हों तो माता–पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम–बार ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पाचवें में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, सातवें में पितृसुख, आठवें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में निकले तो धनी हो।

अथैकनक्षत्रजनन–फलम् :– वृद्धगर्ग कहते हैं, कि यदि भ्राताओं व पिता–पुत्र, माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। यहां स्वर्णदान से कल्याण होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

जन्मकुण्डली से विशेष विचार

लघुभ्राता का जन्मसमय जानना :– (१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें, जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु आए तो भाई या बहन का जन्म होता है। (२) यदि भ्रातृ–प्रतिबन्धक योग न हो तो तृतीयेश, तृतयस्थ ग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना

(१) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटाएं, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है, तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेशस्पष्ट में से तृतीयेशस्पष्ट घटाएं, शेष में से दशमेशस्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटाएं– शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब, भ्रातृकष्ट होता है।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम– इन चारों स्पष्टों को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है, उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काणराशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानिए।

माता की मृत्यु का समय जानना :– जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटाएं, शेष की राशि में या त्रिकोणराशि में या उस शेष राशि के नवांशराशि में जब गोचर का शनि व गुरु होगा, तब माता की मृत्यु का समय जानें।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

स्थानम	शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्योः	जंघाः	जान्वोः	पादे
घटी	४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०
फलम्	पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य

अथ कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१/२/३ च.)	आश्लेषा (२/३/४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च.)
फलम्	ससुरहानिः	सासनाशः	ज्येष्ठनाशः	देवरनाशः

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः।।

तिथिगण्डान्त– पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो–दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

कोष्ठकोक्त ये छः नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक अथवा बालिका माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र का छः मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए; तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणों में जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

अथ मूल पुरुषचक्रम्

स्थानं	मूर्ध्नि	मुखे	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्योः	जान्वोः	पादयोः
घटी	५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६
फलम्	राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.

मूलजनने वृक्षविभागफलम्

विभाग	मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
घटी	७	८	१०	११	१२	५	४	३
फल	मूलनाश	वंशनाश	मातृ–क्लेश	मातुल–नाश	मन्त्री–पद	मन्त्री–पद	विपुल–लाभ	अल्प–जीवन

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आश्वि. मा. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२/५/८/११	३/६/९/१२	१/४/७/१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार– दोनों प्रकार से भूमि पर आए तो महाभयप्रद होता है। यहां अन्य एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी–शनि–भौम–समन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातःसंहरते कुलम्।। यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्।। दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गण्डातिगंडे च परिघे यमघण्टके।। ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्।। यथा सर्पविषं चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते।। रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निसृतेन जलेन हि।। बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्।। विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः।।

अथाभुक्तमूलविचारः– ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी (किसी के मत से एक घटी) एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इस समय जो बच्चा जन्म ले, उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष; असमर्थ हों तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे।

धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चामुक्तर्क्षे विशेषतः।।

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

समय	प्रातः	दिन में	रात्रि में	सन्ध्या में
नक्षत्र	सभी गण्डमूल नक्षत्र	मूल, ज्ये.	मघा, आश्ले.	रे. अश्वि.
फल	पशु हानि	पिता को भय	माता को भय	शरीर को भय

अश्विनीजातस्य फलम्–अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्रीतुल्य, चतुर्थ में नृपतिसमान होता है।

मघाफलम्– मघा के प्रथमचरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन, विद्यालाभ होंगे।

ज्येष्ठापादफलम्– प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। " ज्येष्ठाद्यपाद जो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलक्षै मातरं पितरं तथा।"

रेवतीपादफलम् –रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृपसमान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख–सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश–योग– (१) पाप ग्रहयुक्त चन्द्रमा सातवें भाव में हो, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र हो, (३) पापग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे–सातवें पापग्रह हो, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य और लग्न में मंगल हो, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो– इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप–दान करना चाहिए।

पितृनाशयोग– (१) सूर्य, मंगल दसवें वा नवम में गए हों, (२) दशमेश रवि, मंगल से युक्त हो, (३) शत्रुराशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो– इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाशयोग– भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय।।

सन्तानसुखनाशयोग– गुरु ते पंचम गेहपति, जाय परे त्रिकभाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिकधाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोग– शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोग – सहज सप्तम धनसदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई।। सिंहलग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहुसंग सप्तमभाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।।

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रह फलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सक्रम
धन	2	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी,गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	3	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	4	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहानि	दुःखी
सुत	5	सुतहानि	धनी,पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	6	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री	7	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहानि
मृत्यु	8	अल्पायु	योगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म	9	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म	10	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पत्तिवान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ	11	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय	12	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रहफलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	क्रोधिनी	गतायु	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	बन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन	2	दरिद्रा	बहुधना	बन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्ता
सहज	3	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत्	4	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहानि
सुत	5	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सुगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	6	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति	7	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु	8	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म	9	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	बन्ध्या	बन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म	10	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साधवी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ	11	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय	12	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिणी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गोचरग्रहाणां द्वादशभाव–फलबोध–चक्रम्

भाव→ ग्रह↓	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सुख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

अथग्रहाणामेक भोगफल–समयादि ज्ञानम्

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के.
एकार्थभोग	मास 1	दिन 2¼	मास 1½	मास 1	मास 12	मास 1	मास 30	मास 18
फलसमयः	आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते
गंतव्यराशेः प्राक्फलम्	मास 5	घटी 3	दिन 8	दिन 7	मास 2	दिन 7	मास 6	मास 3

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थ धारणाय मणयः

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालम्	पन्ना	पुष्पराग:	हीरा	नीलम:	गोमेदम्	रौप्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	लोहम्	वैदूर्यम्	लाजवर्त:	लाजवर्त:

जारजयोग – भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न।। रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार।।

पूतनाग्रस्तलक्षण एवं शान्ति– बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे–बैठे गिर पड़े, या यूं मालूम हो कि–किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि– उसे महा पूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लाभादि के वश में आकर वनदेवता या नागदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूलमाला पहिनाकर बाहिर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है। सिर खुले, जूठे बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्य रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता–खेलता गिर जाए अथवा उसे उल्टी हो या हाथ–पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल–मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्यकर्म संध्या–वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं, जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि, धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

उद्वर्तनम्– दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज–इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते, मुलट्ठी, लसूड़े के पत्ते– इनका काढ़ा बनाकर स्नान कराए, तो यह रोग दूर होगा।

चेष्टाः– जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आए, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जाए–उसे ग्रहाविष्ट जानना चाहिए

सर्वबालग्रह–शान्त्यर्थं देवालये ज्योतिदर्शनं निवासश्च तत्ररात्रौ – ''ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।''– इत्यस्य जापः, ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीप दधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः।।

अथ बालरक्षाविधि (प्रयोगसारे)– यदि दुष्टदृष्टि (नज़रादि दोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग, कष्ट हो जाए तो– "ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षतु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।। १।। कृष्ण रक्ष शिशुं शंख–मधुकैटभ–मर्दन। प्रातः–सङ्गव–मध्याह्न–सायाह्नेषु च सन्ध्ययोः।। २।। महानिशि सदा रक्ष कंसारातिः निषूदन। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि।। ३।। बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्। त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्।। ४।। – इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित की गई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है	मूर्ति–निर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलि–विधान व समय	स्नान, पूजा, मार्जनमंत्र	धूप
प्रथम दिन–मास–वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5, आटे के सतिए 5, कपूर, लोहवान,	श्वेतभात, 5 पूर्ण पोली (सुहाली) 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्बपत्र, गोघृत
द्वितीय दिन–मास–वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	10 दीपक, 10 झण्डी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिए 10,	भात एक सेर, आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस, सध्यासमय, पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्थानादाज्ञया स्वाहा।	
तृतीय दिन–मास–वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, श्वेत–ध्वजा, दीपक 10, गेहूं के आटे के सतिए 10,	एक सेर लालभात, आधा सेर पूर्ण पौली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोश्रृंग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
चतुर्थ दिन–मास–वर्ष में मुख मंडिका	तिल–चूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा 5, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प,	भात, सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्ण पौली, सायं, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन–मास–वर्ष में विडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेत ध्वजा 5, गेहूं के आटे के सतिए,	श्वेत भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखें,	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहाण अस्त्र ठः ठः चामुंडे सर्वारि चण्डिके ठः ठः स्वाहा।	
षष्ठ दिन–मास–वर्ष में षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 5 मिठाई, 5 सुहाली, 7 पूड़ियां, 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखें,	योगिनी विधानोक्त	कूट, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत।
सप्तम दिन–मास–वर्ष में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन–मास–वर्ष में कामिनी	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5,	गेहूँ की रोटी, मसूर की दाल, हरासाग, छागमांस, संध्या में चौरास्ते पर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
नवम दिन–मास–वर्ष में मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प, 5 दीपक, 5 रंग की झंडी 5,	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखें	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हन् हन् हुं फट् स्वाहा।	गोश्रृंग, लहसुन, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशम दिन–मास–वर्ष में रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, 25 झण्डी, 25 दीपक, 25 सतिए,	गुड़ के घी भुने चावल, गौघृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन् हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन–मास–वर्ष में सुदर्शना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, 25 दीपक, 25 सफेद झण्डी, 25 आटे के सतिए,	श्वेतभात, 7 पूड़े, सुहाली 7, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास, वजहस्ताय ज्वल ज्वल दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन–मास–वर्ष में अद्भुता	चावलों का आटा एक सेर	13 दीपक, 13 झण्डी, 13 सतिए आटे के,	सुहाली, पूड़े 7, पूड़ियां 7, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन् हन् शोषय शोषय मर्दय मर्दय तापय तापय हुँ हुँ हुँ हन् हन् दुष्टानां ह्रां ह्रां स्वाहा।	

अथ बालपूतना–विधान

यहां लिखे बाल–कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान– स्पर्श निम्न–लिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान–विधि तीन दिन निरंतर करें। चौथे दिन पलाश, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ– इनके पत्रों को उबालकर बालक को मंत्र–पाठपूर्वक स्नान करावें। तदनन्तर कल्याणार्थ यथाशक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान भोजन कराएं। तदनन्तर "ओं द्यौः शांतिरन्तरिक्ष............" इत्यादि शांतिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखास्थान स्पर्शपूर्वक यह मंत्र पढ़ें– " ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर। ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।

"ओं सर्वमातर इमं ग्रहं संहरंतु हुं रोदय–रोदय, स्फोटय –स्फोटय स्वाहा। गर्ज–गर्ज सः गृहाण–गृहाण आमर्दय– आमर्दय ह्रीम्–ह्रीम् हन् हन् एवं सिद्धिरुद्रो ज्ञापय स्वाहा।।"

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

अथ नक्षत्र–कष्टावली

रोग–नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोगदिन–संख्या				रोगशान्त्यर्थ जपनीय मन्त्र	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
		1	2	3	4		
अश्विनी	भोजनदान	9	11	1	20	मृत्युञ्जयमंत्र	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य दें।
भरणी	गो–अन्नादि दान	0	80	40	11	यमायतवेति मंत्रः	हाथी के मुख में तिल चावल दें।
कृत्तिका	स्वर्णदान	9	11	16	28	अग्निर्मूर्धेति	कछुए के मुख में घी दें।
रोहिणी	घृतदान	3	9	18	30	ब्रह्मायये़ति	सर्प को दूध–दही खिलाएं।
मृगशिरा	तिलदान	9	5	7	10	इमं देवेति मंत्र	खरगोश को दूध पिलाएं।
आर्द्रा	गोदान	0	18	0	0	नमस्ते रुद्र इति मंत्र	बकरे के मुख में रक्त डालें।
पुनर्वसु	पीतलदान	7	14	2	21	अदितिर्द्यौरिति मन्त्रः	सूअर को धान्य खिलाएं।
पुष्य	तैलान्नदान	6	7	10	21	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डालें।
आश्लेषा	गो–अजादि दान	0	0	41	0	नमोस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलाएं।
मघा	वस्त्राज्यदान	15	7	17	20	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलाएं।
पू.फा.	भोजनदान	0	15	0	30	भगम्प्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दें।
उ.फा.	अन्नदान	7	14	7	60	दध्यावद्धेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलाएं।
हस्त	तैलदान	15	17	15	0	उदत्यं जातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलाएं।
चित्रा	दुग्धदान	11	9	9	16	त्वष्टा तुरगेति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर–धतूरे के फूल वन में रखें।
स्वाती	गौघृतदान	60	17	30	0	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़, चावल खिलाएं।
विशाखा	गौ–स्वर्णदान	15	0	4	13	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़, भात की बलि दें।
अनुराधा	गौघृतदान	60	12	36	30	नमो मित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुल्थीसहित भात, गुड़ दें।
ज्येष्ठा	तिलदान	69	9	6	4	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्रः	बंदरों को गुड़, तिल डालें।
मूल	रौप्यपात्रदान	0	9	15	6	माता पुत्रेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलाएं।
पू.षा.	गोमुक्तादान	0	15	24	10	आपोधर्मेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोथे की बलि दें।
उ.षा.	भोजनदान	30	24	26	16	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डालें।
श्रवण	श्रीफलदान	60	24	6	9	विष्णोररराटेति मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें।
धनिष्ठा	अश्वान्नदान	15	4	20	21	वसोः पवित्रेति मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दहीं, अन्न की बलि दें।
शतभिषा	भोजनान्नदान	4	45	3	22	वरुणस्तम्भेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलाएं।
पू.भा.	भोजनदान	0	12	21	19	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि छोड़ें।
उ.भा.	अन्नदान	10	3	9	15	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	गाय को चावल खिलाएं।
रेवती	फलदान, कन्यापूजन	18	10	9	20	पूषन्नयेति मन्त्रः	हाथी के मुख में पूरी–पूओं की बलि छोड़ें।

नोट– इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक्–पृथक् लिखा है, उसे न जप सकें तो महामृत्युंजय मन्त्र ही जपें। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है, उस चरणानुसार कष्ट व दिन जानें, शून्य से विशेष भय जानें। दान, जप करे। जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है, उसे यहां कष्टावली में रोगनक्षत्र का नाम दिया गया है। रोगनक्षत्र को जानकर, इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्त्यर्थ बलिदान' वाले कॉलम में घोड़ी, हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलिद्रव्य देकर धूप–दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें– ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	आश्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गऐ गए ना बुहरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय

(1) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़ें। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों की त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब पुत्र–संतान उत्पन्न होती है।

(2) चंद्र, लग्न, गुरु– इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में पुत्रसंतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीसुख) होने का समय

(1) जन्मलग्नेश, सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो, उस राशि में जब गोचर का गुरु हो, तब विवाह होता है।

(2) चन्द्रराशीश और अष्टमेश को जोड़ने पर प्राप्त राशि में जब गोचर का गुरु आए, तब विवाह होता है।

(3) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो, उस राशि से द्वितीयभाव में जब गोचर में गुरु–चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(4) शुक्र–चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय

(1) गुलिक स्पष्ट से सूर्य स्पष्ट घटाएं, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो, तब पिता की मृत्यु होती है।

(2) सूर्य से 1/2/7/12 भाव में जो पापग्रह हो, उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(1) रोग के शुरुआती दिन में जन्मराशि, नक्षत्र, लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र या यमघंट कुयोग हो।

(2) सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी, अनुराधा नक्षत्र हो।

(3) सोमवार को आर्द्रा या उ. षा. नक्षत्र हो।

(4) मंगलवार को कृत्तिका, मघा व शतभिषा या नन्दा (1/6/11) तिथि हो।

(5) बुधवार को अश्विनी, विशाखा या भद्रा (2/7/12) तिथि, आश्लेषा हो।

(6) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (3/8/13) तिथि व मघा, हस्त हो।

(7) शुक्रवार–अष्टमी व अश्विनी या आश्ले., श्रवण या रिक्ता (4/9/14) तिथि, आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(8) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा (5/10/15) तिथि व भरणी हो।

(9) सूर्य, मंगल, शनि वारों को 4। 6। 9। 12/14/30 तिथि, भरणी, कृत्ति. आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वा. 3, विशा., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र हों तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च– जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना चाहिए। क्योंकि– बिना मारकेश आए मृत्यु तो होती ही नहीं। हां– ऐसे योग में कष्ट ज़रूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जयजप करना कल्याणप्रद है।

बाल–रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिल्का, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी–इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "खुं खुर्दनं हुं फट् स्वाहा–" इस मन्त्र का उच्चारण करें।

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

प्रथमा	आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.
मध्या	पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू.भा.	अश्वि.	रो.
अन्त्या	पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.

सूर्यनक्षत्र, दिन, जन्म और नाम नक्षत्र रोगत्रिनाड़ीचक्र में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले, उसी दिन निःसन्देह रोगी की मृत्यु कहनी चाहिए। यह रोगत्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना चाहिए।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिननक्षत्र से नामनक्षत्र 5/13/23 संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार 10/18वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो, उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की हालत मृत्युपर्यन्त होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह–युद्ध में जाने पर काल के मुख–दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

कालांगचक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अङ्गविशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु–विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर, निम्नलिखित कालांगचक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति कराएं। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभग्रहदृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांगचक्र

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	वस्ति/मूत्राशय	लिङ्ग/गुदा	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद–युगल

तिथिकष्टावली यन्त्रम्

तिथि	तिथीश	कष्ट–दिन	बलि	दान
1	अग्नि	12	शर्कराज्यबलि	घृतदान
2	ब्रह्मा	5	पायसबलि	भोजनदान
3	काम	7	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
4	गणेश	16	मोदकान्नबलि	मूंगादान
5	सर्प	21	पायसबलि	दुग्धदान
6	स्कन्द	12	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
7	सूर्य	8	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
8	ईश्वर	13	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
9	दुर्गा	18	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
10	यम	25	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
11	विश्वेदेव	7	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
12	विष्णु	7	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
13	काम	10	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
14	शिव	60	मिष्ठान्नबलि	क्षौद्रशाकभोजन
15	चन्द्र	3	दध्योदनबलि	रौप्यदान
30	पितर	18	अपूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली–यंत्रम्

वार	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	5	पायसबलि, सूर्यदान
चं.	गौरी	8	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	5	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	7	मुद्गान्नबलि, बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	5	घृतपक्वबलि, गुरुदान
शु.	इन्द्र	7	तिलयवाज्यमधुबलि, शुक्रदान
श.	यम	15	माषान्नबलि, शनिदान

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहगोचराद्यैर्दशा-क्रमाद्यैर्ग्रह-कृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां दान-पदार्थाः												जपसंख्या	जपनीयमन्त्राः	दानसमय	हवनसमिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तपुष्प	मूंग, रक्तगाय	रक्तचन्दन	7000	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	शंख	श्वेतपुष्प	कर्पूर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	11000	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तकनेर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	10000	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घटी 2 शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	हाथीदांत	सर्वपुष्प	कर्पूर, शस्त्र	फल	19000	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घटी 5 शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	हल्दी	पीतपुष्प	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	19000	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	सन्ध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	सुगंध	श्वेतपुष्प	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	16000	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्योदय	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुल्थी	तेल	कृष्णवस्त्र	कस्तूरी	कृष्णपुष्प	कृष्णांग भैंस	उपानह	23000	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	खड्ग	कृष्णपुष्प	कंबल, घोड़ा	शूर्प	18000	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रि	दूर्वा
केतु	लहसुनिया	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	नारियल	धूम्रपुष्प	कंबल, बकरा	शस्त्र	17000	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रि	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	कपूर	श्वेतपुष्प	मसरी, श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्थेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः	मुन्थेशकाल	मुन्थेशवत्

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा–अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत–विधान ब्रह्मचर्यपूर्वक करने से अशुभ फल की निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि–सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्षपर्यन्त तीस या कम से कम 12 व्रत करें। उस रोज केवल गेहूं की रोटी, घी और लालखाण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डालकर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खाएं। भोजन से पूर्व हो सके तो लालवस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज–मन्त्र की माला का जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत, रक्तपुष्प दूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। अपने मस्तक में लालचन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन कराएं। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणत हो जाएगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्ररोग, चर्मरोग एवम् अन्य शारीरक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्यशान्ति का सरल उपचार :–लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग करें– जैसे– लालचादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि– चन्द्रमा का व्रत शुक्ल–पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार को प्रारम्भ करके 54 या 10 व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके ऊपर चक्रलिखित बीज–मन्त्र की 11 या 3 माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही–चावल, घी, खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके खीर–खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन कराएं। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों से शान्ति होती है। विशेष कार्यसिद्ध्यर्थ भी यह पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्रशान्ति का सरल उपचार :– सफेद जुराब, रुमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दहीं का उपयोग, चान्दी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके 21 या 45 व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लालवस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 1, 5, या 7 माला जप करें। नमक सेवन न करें, यह ज़रूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी खाएं। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलाएं। मंगलवार का व्रत ऋण–हर्ता तथा सन्तति–सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके लालवस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन कराएं।

मंगलशान्ति का सरल उपचार :– लालरंग की वस्तुओं का उपयोग, रात को लालवस्त्र पहनें, तांबे के बर्तनों का प्रयोग, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से प्रारम्भ कर 21 या 45 व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 17 या 3 माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमकरहित, खाण्ड–घी से बने पदार्थ, जैसे– मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करें। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खाएं। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन–पूर्णाहुति करके छोटे बच्चों या अन्नहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन–लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्यलाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रहजन्य नेष्टफल से मुक्ति मिलती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बुधशान्ति का सरल उपचार :– हरा रंग, हरे वस्त्र तथा शृंगार की अन्य वस्तुएं, हरा रुमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी का व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्षपर्यन्त या 16 व्रत करें। उस दिन पीतवस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 11 या तीन माला जप करें। पीतपुष्पों से पूजन–अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की घी–खाण्ड से बनी मिठाई, लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खाएं और इन्हीं का दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डूभोजन कराएं। स्वर्ण, पीत–वस्त्र, चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्याप्रद है। धन की स्थिरता तथा यशवृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पतिशान्ति का सरल उपचार :– पीले वस्त्र, रुमाल आदि, पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ कर, 31 या 21 व्रत करें। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 3 या 21 माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथाशक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, तब हवन–पूर्णाहुति के बाद खीर–खाण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मणबटुकों को खिलाएं। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्रीसुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्रशान्ति का सरल उपचार :–सफेद वस्त्र, सफेद रुमाल, सफेद फूल धारण करना आदि, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिवपूजन।

शनि के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करे। व्रत 51 या 31 करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 19 या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल–वृक्ष की जड़ में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तेलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन–पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी (चमड़े का) जूता तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह–मशीनरी, कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनिशान्ति का सरल उपचार :– घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रुमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु–केतु के व्रत की विधि :– शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से ही यह व्रत भी शुरु करना चाहिए। व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीजमन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर, पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी, समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर होता है तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहु–केतुशान्ति का सरल उपचार :– नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट–निवृत्त्यर्थ स्नानविधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।।
तथा स्नान–विधानेन ग्रह–दोषः प्रणश्यति।।

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी–कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारू, मुलट्ठी, लाल फूल, केसर पानी में उबालकर स्नान करें। चन्द्र शान्त्यर्थ **सोमवार के व्रत** के दिन खिरनी की जड़, श्वेत चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबालकर स्नान करें। ऐसे ही **मंगलव्रत के** दिन अनन्तमूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल–ये सब उबालकर; **बुधव्रत के दिन** गोबर, मधु, चावल, विधारा; **गुरुव्रत के** दिन भारंगी, मुलट्ठी, श्वेत सरसों, मालती पुष्प; **शुक्रव्रत के** दिन इलायची, मजीठ तथा **शनिव्रत के** दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमरवेल, सफेद बिनौला– उबालकर स्नान करें। ऐसे ही राहु–केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबालकर स्नान करें, तो ग्रहशान्ति मिलती है।

नोटः– स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो, तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविधशान्ति के लिए सामान्य औषधस्नान

लाजवन्ती (छुई–मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध– इन औषधियों के जल एवं सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व जो दान कह चुके हैं, उनके करने से शान्ति मिलती है। गुरुवचन, देवता, ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते।– (श्रीपतिः)।

शनिविचार-अथ लघुकल्याणी (ढैया) फलम्:-

कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः
बन्धुविरोधं देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्।
मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि–वह्नेर्भयं
लोहशस्त्रभयं सदैव–असुखं कुर्यादसौ सर्वदा।। १।।

वृहत्कल्याणी साढेसाती फलम् :–........राशौ द्वादश (12) मूर्ध्नि जन्म (1) हृदये पादौ द्वितीये (2) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्।। हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् , रामात्रृद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा।। २।।

सप्तधान्य– उड़द, मूंगी, गेहूं, चने, जौ, धान्य (तंडुल), कंगनी।

अष्टगंध–स्याही :–अगर, कस्तूरी, कुंकुम, कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन, देवदारु।

अष्टगंध–धूप– अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर–कचरी, गुग्गुल, देवदारु, गोधृत, सफेद चन्दन।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्र–राशिज्ञान–चक्र

राशि→	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र→ चरण ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
प्रथम चरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे
द्वितीय चरण	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो
तृतीय चरण	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०
चतुर्थ चरण	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०

राशि→	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्र→ चरण ↓	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	अभिजित	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
प्रथम चरण	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय चरण	०	रे	तू	०	नी	या	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय चरण	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ चरण	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

राशिज्ञाने विशेषः– नक्षत्र व राशि में 'श' और 'स' तथा 'व' और 'ब' में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें– **संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्।**

ध्यान दें – नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो 'ङ' की जगह 'घ', 'ञ' की जगह 'दु', तथा 'ण' की जगह 'पू' से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

"बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर–विशारदैः।। प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शाब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स स्वर एव हि।।

अथ जन्मराशि–नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते–

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता।। कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते।। विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। काममाकृचिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा।।

अभिजित्निर्णय :– वैश्यप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति–तिथि–भागतोऽभिजित्स्यात्।।

"उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण और श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करे। उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करें। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक–एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे, उसके चार भाग करें; उसको श्रवण के १–१ चरण मानें। सामान्य गणक के ज्ञानार्थ ही यह यहां लिखा गया है।

राशिज्ञानम्– चू ल अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम्।।
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो ष ण ठ पो कन्या।।
राते तुला, तो ना यू वृश्चिकः, ये घफढभे धनुः।।
भोजा खागी मकरः, गुशद : कुम्भः दीथझञची मीनः।।

इस राशिज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह अक्षर भी ले लिया गया है। जैसे–मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा) अश्विनी का और चतुर्थ चरण पर्यन्त भरणी का ग्रहण हुआ और 'अ' से कृत्तिका का प्रथम चरण– इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष– जहां 'ज्ञ' का उच्चारण 'ज्ञ' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ.षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा। क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ.षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोटः–चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने में फलितज्ञ को काफी आसानी रहती है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्मसमय चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र जान लेता है तथा फलितशास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भूस्थित वनस्पति एवम् प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार–भाटांक सूर्य के ज्वार–भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्मपत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन फलितवेत्ता जन्मपत्र की अंग्रेज़ी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है, जबकि चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित–शास्त्रियों ने जन्मकालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्मराशि का नाम दिया है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसका विशेष महत्त्व भी है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्रचरण एवं नवांशराशि–बोधक सारणी

प्रियव्रत शर्मा

ग्रह या लग्न किस राशि, नक्षत्र एवं नक्षत्रचरण (नवांश) में विद्यमान है– यह इस सारणी से ग्रह एवं लग्न–राश्यादि द्वारा जाना जा सकता है। ध्यान रहे–यहां दिए गए राश्यादि वे हैं, जहां राशि एवं नक्षत्रचरण (नवांश) प्रारम्भ होता है। जैसे– स्पष्ट सूर्य 5 रा. 27 अं. 20 क. हो तो सारणी से ज्ञात हो जाता है कि– सूर्य कन्या राशि, चित्रा नक्षत्र–द्वितीय चरण तथा कन्या के नवांश में है। क्योंकि यहां सूर्य कन्या राशि के ही नवांश में है, अतः यह वर्गोत्तम नवांश में है। कोष्ठक में वर्गोत्तम नवांश के साथ स्टार (★) लगाया गया है। कन्या के नवांश का स्वामी बुध है– यह भी सारणी में निर्दिष्ट है।

इस सारणी की मदद से नवांशकुण्डली लगाना बहुत आसान है।

ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण		नवांश–राशि	नवांश–स्वामी
0 00 00	मेष अश्वि.	1	★मेष	मं.
0 03 20	,, ,,	2	वृष	शु.
0 06 40	,, ,,	3	मिथुन	बु.
0 10 00	,, ,,	4	कर्क	चं.
0 13 20	,, भर.	1.	सिंह	सू.
0 16 40	,, ,,	2	कन्या	बु.
0 20 00	,, ,,	3	तुला	शु.
0 23 20	,, ,,	4	वृश्चि.	मं.
0 26 40	,, कृत्ति.	1	धनु	गु.
1 00 00	वृष ,,	2	मकर	श.
1 03 20	,, ,,	3	कुम्भ	श.
1 06 40	,, ,,	4	मीन	गु.
1 10 00	,, रोहि.	1	मेष	मं.
1 13 20	,, ,,	2	★वृष	शु.
1 16 40	,, ,,	3	मिथुन	बु.
1 20 00	,, ,,	4	कर्क	चं.
1 23 20	,, मृग.	1	सिंह	सू.
1 26 40	,, ,,	2	कन्या	बु.
2 00 00	मिथुन ,,	3	तुला	शु.
2 03 20	,, ,,	4	वृश्चि.	मं.
2 06 40	,, आर्द्रा	1	धनु	गु.
2 10 00	,, ,,	2	मकर	श.
2 13 20	,, ,,	3	कुम्भ	श.
2 16 40	,, ,,	4	मीन	गु.
2 20 00	,, पुन.	1	मेष	मं.
2 23 20	,, ,,	2	वृष	शु.
2 26 40	,, ,,	3	★मिथुन	बु.

ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण		नवांश राशि	नवांश स्वामी
3 00 00	कर्क पुन.	4	★कर्क	चं.
3 03 20	,, पुष्य	1	सिंह	सू.
3 06 40	,, ,,	2	कन्या	बु.
3 10 00	,, ,,	3	तुला	शु.
3 13 20	,, ,,	4	वृश्चि.	मं.
3 16 40	,, आश्ले.	1	धनु	गु.
3 20 00	,, ,,	2	मकर	श.
3 23 20	,, ,,	3	कुम्भ	श.
3 26 40	,, ,,	4	मीन	गु.
4 00 00	सिंह मघा	1	मेष	मं.
4 03 20	,, ,,	2	वृष	शु.
4 06 40	,, ,,	3	मिथुन	बु.
4 10 00	,, ,,	4	कर्क	चं.
4 13 20	,, पू.फा.	1	★सिंह	सू.
4 16 40	,, ,,	2	कन्या	बु.
4 20 00	,, ,,	3	तुला	शु.
4 23 20	,, ,,	4	वृश्चि.	मं.
4 26 40	,, उ.फा.	1	धनु	गु.
5 00 00	कन्या ,,	2	मकर	श.
5 03 20	,, ,,	3	कुम्भ	श.
5 06 40	,, ,,	4	मीन	गु.
5 10 00	,, हस्त	1	मेष	मं.
5 13 20	,, ,,	2	वृष	शु.
5 16 40	,, ,,	3	मिथुन	बु.
5 20 00	,, ,,	4	कर्क	चं.
5 23 20	,, चित्रा	1	सिंह	सू.
5 26 40	,, ,,	2	★कन्या	बु.

ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण		नवांश–राशि	नवांश–स्वामी
6 00 00	तुला चित्रा	3	★तुला	शु.
6 03 20	,, ,,	4	वृश्चि.	मं.
6 06 40	,, स्वाती	1	धनु	गु.
6 10 00	,, ,,	2	मकर	श.
6 13 20	,, ,,	3	कुम्भ	श.
6 16 40	,, ,,	4	मीन	गु.
6 20 00	,, विशा.	1	मेष	मं.
6 23 20	,, ,,	2	वृष	शु.
6 26 40	,, ,,	3	मिथुन	बु.
7 00 00	वृश्चि. ,,	4	कर्क	चं.
7 03 20	,, अनु.	1	सिंह	सू.
7 06 40	,, ,,	2	कन्या	बु.
7 10 00	,, ,,	3	तुला	शु.
7 13 20	,, ,,	4	★वृश्चि.	मं.
7 16 40	,, ज्येष्ठा	1	धनु	गु.
7 20 00	,, ,,	2	मकर	श.
7 23 20	,, ,,	3	कुम्भ	श.
7 26 40	,, ,,	4	मीन	गु.
8 00 00	धनु मूल	1	मेष	मं.
8 03 20	,, ,,	2	वृष	शु.
8 06 40	,, ,,	3	मिथुन	बु.
8 10 00	,, ,,	4	कर्क	चं.
8 13 20	,, पू.षा.	1	सिंह	सू.
8 16 40	,, ,,	2	कन्या	बु.
8 20 00	,, ,,	3	तुला	शु.
8 23 20	,, ,,	4	वृश्चि.	मं.
8 26 40	,, उ.षा.	1	★धनु	गु.

ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण		नवांश–राशि	नवांश–स्वामी
9 00 00	मकर उ. षा.	2	★मकर	श.
9 03 20	,, ,,	3	कुम्भ	श.
9 06 40	,, ,,	4	मीन	गु.
9 10 00	,, श्रव.	1	मेष	मं.
9 13 20	,, ,,	2	वृष	शु.
9 16 40	,, ,,	3	मिथुन	बु.
9 20 00	,, ,,	4	कर्क	चं.
9 23 20	,, धनि.	1	सिंह	सू.
9 26 40	,, ,,	2	कन्या	बु.
10 00 00	कुम्भ ,,	3	तुला	शु.
10 03 20	,, ,,	4	वृश्चि.	मं.
10 06 40	,, शत.	1	धनु	गु.
10 10 00	,, ,,	2	मकर	श.
10 13 20	,, ,,	3	★कुम्भ	श.
10 16 40	,, ,,	4	मीन	गु.
10 20 00	,, पू.भा.	1	मेष	मं.
10 23 20	,, ,,	2	वृष	शु.
10 26 40	,, ,,	3	मिथुन	बु.
11 00 00	मीन ,,	4	कर्क	चं.
11 03 20	,, उ.भा.	1	सिंह	सू.
11 06 40	,, ,,	2	कन्या	बु.
11 10 00	,, ,,	3	तुला	शु.
11 13 20	,, ,,	4	वृश्चि.	मं.
11 16 40	,, रेव.	1	धनु	गु.
11 20 00	,, ,,	2	मकर	श.
11 23 20	,, ,,	3	कुम्भ	श.
11 26 40	,, ,,	4	★मीन	गु.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

बारह राशियों का मासिक फलादेश एवं संक्रान्ति-फलादेश (सम्वत् 2078 वि.)

वैशाख मास

मेषसंक्रान्ति (13 अप्रैल से 13 मई तक, सन् 2021 ई.)

(चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—संवत्सरेश एवं मन्त्री मंगल नीचाकांक्षी है। सूर्य-शुक्र का सम्बन्ध देश में आधि-व्याधि का संकेत देता है। कुम्भस्थ गुरु दक्षिणी भारत में साम्प्रदायिक उपद्रव एवं देशद्रोही वातावरण का संकेत देता है। शनि-मंगल की पोजीशन किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त करेगी। पाक-चीन-नेपाल से सम्बन्ध कुछ बिगड़ सकते हैं। अनाज, तेल-तिलहन तेज रहें।

वैशाख(मेष)संक्रान्ति-कुण्डली

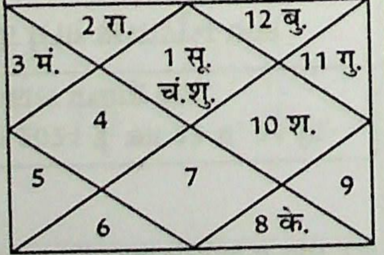

मेषसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 13 अप्रैल, सन् 2021 ई. को 26 घं. 31 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 15, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

वैशाख मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—मन अशान्त रहे, वृथा व्यय, बन्धुकष्ट, कारोबार कुछ ठीक। **अप्रैल** 20, 21, 29, 30, **मई** 7, 8, 9 अशुभ।

वृष—त्वचा-रोग, अर्थहानि, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, धर्म-कर्म में मन लगे, कारोबार में हानि। **अप्रैल** 22, 23, 24, 30, **मई** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

मिथुन—क्रोध बढ़े, अचानक अर्थलाभ, भाई-बन्धु से मेल, यात्रा में सुख। **अप्रैल** 25, 26, **मई** 3, 4, 12, 13 अशुभ।

कर्क—सेहत ठीक, अर्थलाभ, बन्धु-सुख, सम्पदा-लाभ, गुप्त चिन्ता, आय से व्यय अधिक। **अप्रैल** 18, 19, 27, 28, **मई** 5, 6 अशुभ।

सिंह—सेहत ठीक, अर्थलाभ, बन्धुकष्ट, सन्तान-पक्ष से सुख, योजना से लाभ। **अप्रैल** 20, 21, 29, 30, **मई** 7, 8, 9 अशुभ।

कन्या—वायुविकार, धनलाभ होकर हानि हो, मित्र-बन्धु से मदद, राजपक्ष से भय। **अप्रैल** 22, 23, 24, 30, **मई** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

तुला—वायुविकार, अर्थहानि, बन्धुकष्ट, सन्तान-पक्ष से सुख, स्त्री-पक्ष से लाभ। **अप्रैल** 25, 26, **मई** 3, 4, 12, 13 अशुभ।

वृश्चिक—चोटभय, त्वचा-रोग, धनलाभ होकर हानि, निजीजनों से अनबन, शत्रुवृद्धि। **अप्रैल** 18, 19, 27, 28, **मई** 5, 6 अशुभ।

धनु—रक्तपित्त-विकार, अर्थलाभ, अच्छे लोगों से मेल, शत्रुप्रबल, चोटभय, कारोबार बेहतर। **अप्रैल** 20, 21, 29, 30, **मई** 7, 8, 9 अशुभ।

मकर—सेहत ठीक, धनलाभ, भ्रातृसुख, अच्छे लोगों से मेल, योजना सफल, उत्साह बढ़े। **अप्रैल** 22, 23, 24, 30, **मई** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

कुम्भ—सेहत ठीक, अर्थलाभ हो, सन्ततिकष्ट, राजपक्ष से भय, स्त्रीसुख, मासान्त में हानि। **अप्रैल** 25, 26, **मई** 3, 4, 12, 13 अशुभ।

मीन—नयी योजना, सेहत ठीक, कार्यान्तर से लाभ, बन्धुकष्ट, स्त्रीसुख, मासान्त में हानिभय। **अप्रैल** 18, 19, 27, 28, **मई** 5, 6 अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्येष्ठ मास

वृषसंक्रान्ति (14 मई से 14 जून तक, सन् 2021 ई.)
(इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)

वृषसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—सूर्य, शुक्र, बुध एवं राहु का लग्न में एकत्र होना एवं शनि, मंगल का षडष्टकयोग शासकों को कठिन परिस्थितियों में खड़ा करेगा। द्वितीय भावस्थ मंगल-चन्द्र देश की आर्थिक स्थिति को बिगाड़ेंगे। चीन की विस्तारवादी नीति से शान्ति भंग होगी। अमेरिका एवं उ. कोरिया में शस्त्रास्त्रों की होड़ से वैश्विक शान्ति को खतरा होगा। सूर्य, राहु एवं शनि, मंगल की स्थिति से जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं में भारी तेजी रहे।

ज्येष्ठ(वृष)संक्रान्ति-कुण्डली

वृषसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 14 मई, सन् 2021 ई. को 23 घं. 24 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्ती 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,

ज्येष्ठ मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—कफ-वायुविकार, अर्थहानि-भय, गुप्त चिन्ता, सन्तान-स्त्रीपक्ष से सुख, भाग्य साथ दे। **मई** 17, 18, 19, 26, 27, **जून** 4, 5 अशुभ।

वृष—उदरविकार, धनलाभ होकर हानि हो, निजीजन-कष्ट, कारोबार में सुधार। **मई** 20, 21, 28, 29, **जून** 6, 7, 8 अशुभ।

मिथुन—रक्त-पित्तविकार, अर्थलाभ, बन्धुसुख, सम्पत्तिलाभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक, मासान्त में हानिभय। **मई** 22, 23, 30, 31, **जून** 9, 10, 11 अशुभ।

कर्क—सेहत ठीक, अर्थलाभ, शत्रु बढ़ें, कार्यान्तर का विचार, मासान्त में हानिभय। **मई** 24, 25, **जून** 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

सिंह—वायुविकार, धनलाभ, बन्धुकष्ट, सम्पत्ति-विवाद, स्त्रीसुख, स्थानान्तर व कार्यान्तर से लाभ। **मई** 17, 18, 19, 26, 27, **जून** 4, 5 अशुभ।

कन्या—सेहत गड़बड़, धनलाभ, जायदाद-सम्बन्धित विवाद, स्त्रीपक्ष से सुख, मासान्त में लाभ से व्यय अधिक। **मई** 20, 21, 28, 29, **जून** 6, 7, 8 अशुभ।

तुला—उत्साह बढ़े, शत्रु कमजोर, सेहत ठीक, सन्तानपक्ष से सुख, सम्पत्ति-लाभ, कारोबार पूर्ववत्। **मई** 22, 23, 30, 31, **जून** 9, 10, 11 अशुभ।

वृश्चिक—उदरविकार, धनलाभ, अच्छे लोगों से मेल, नीच से अपमान-भय, कारोबार कुछ ठीक। **मई** 24, 25, **जून** 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

धनु—उत्साहवृद्धि, अर्थहानि-भय, निजीजन-सहयोग, नयी योजना से कारोबार बढ़े, शत्रु पराजित। **मई** 17, 18, 19, 26, 27, **जून** 4, 5 अशुभ।

मकर—कफविकार, अर्थलाभ, सम्पत्तिसुख, गुप्त चिन्ता, कारोबार ठीक, बन्धुकष्ट। **मई** 20, 21, 28, 29, **जून** 6, 7, 8 अशुभ।

कुम्भ—सेहत ठीक, धनलाभ, राजपक्ष से भय, स्त्रीसुख, कारोबार गड़बड़, वृथा विवाद से बचें। **मई** 22, 23, 30, 31, **जून** 9, 10, 11 अशुभ।

मीन—रक्तपित्त विकार, धनलाभ होकर हानि, शत्रु कमजोर, सन्ततिचिन्ता, कारोबार ठीक। **मई** 24, 25, **जून** 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आषाढ़ मास

मिथुनसंक्रान्ति (15 जून से 15 जुलाई तक, सन् 2021 ई.)

(क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)

मिथुनसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—शनि, मंगल का समसप्तक देश में भारी अशान्ति का सूचक है। अग्निकाण्ड, साम्प्रदायिक उपद्रव एवं कुछ देशद्रोही तत्त्व सक्रिय रहें, शासनतन्त्र परेशान रहे। कश्मीर एवं उत्तराखण्ड, छत्तीसगढ़ में उग्रवाद से हानि सम्भव है।

आषाढ़(मिथुन)संक्रान्ति-कुण्डली

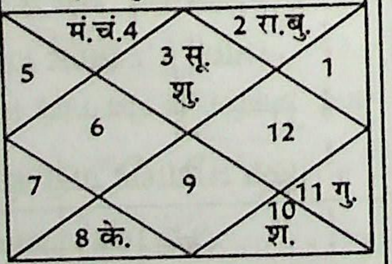

अनाज, घी, गुड़, सोना, चांदी एवं शेयरों में जोरदार उठा-पटक होगी।

मिथुनसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 15 जून, सन् 2021 ई. को 6 घं. 01 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्ती 15, पुण्यकाल मध्याह्न तक,

आषाढ़ मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—सेहत गड़बड़, अर्थलाभ, सम्पत्ति-विवाद, नयी योजना, शत्रु कमजोर, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार गड़बड़। **जून** 22, 23, **जुलाई** 1, 2, 11, 12 अशुभ।

वृष—क्रोध बढ़े, रक्तपित्त-विकार, निजीजन-सहयोग, कार्यान्तर से लाभ। **जून** 16, 24, 25, **जुलाई** 3, 4, 5, 13, 14 अशुभ।

मिथुन—सेहत ठीक, धनलाभ, भाई से मदद, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। **जून** 18, 19, 26, 27, 28, **जुलाई** 6, 7 अशुभ।

कर्क—ब्लड-प्रेशर, धनलाभ, भ्रातृसुख, स्त्रीकष्ट, राजपक्ष शुभ, कारोबार ठीक। **जून** 20, 21, 29, 30, **जुलाई** 8, 9, 10 अशुभ।

सिंह—वायुविकार, घरेलु झंझट, शत्रु बढ़ें, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार सुधरे। **जून** 22, 23, **जुलाई** 1, 2, 11, 12 अशुभ।

कन्या—रक्तपित्त-विकार, धनहानि, पुराने झंझट उलझें, सन्तान व स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार ठीक। **जून** 16, 24, 25, **जुलाई** 3, 4, 5, 13, 14 अशुभ।

तुला—उदरविकार, आर्थिक संकट, बन्धु से मदद, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्री-कष्ट, मासान्त में लाभ। **जून** 18, 19, 26, 27, **जुलाई** 6, 7 अशुभ।

वृश्चिक—सेहत गड़बड़, अर्थलाभ, मित्र-बन्धु-सुख, कार्यान्तर का विचार, गुप्त शत्रुभय। **जून** 20, 21, 29, 30, **जुलाई** 8, 9, 10 अशुभ।

धनु—वायुरोग, अर्थलाभ, शत्रु प्रबल, अच्छे लोगों से मदद, कारोबार में वृद्धि। **जून** 22, 23, **जुलाई** 1, 2, 11, 12 अशुभ।

मकर—सेहत गड़बड़, अच्छे लोगों से मेल, उत्साह बढ़े, नयी योजना, कार्यान्तर से लाभ। **जून** 16, 24, 25, **जुलाई** 3, 4, 5, 13, 14 अशुभ।

कुम्भ—धनलाभ, घरेलु झंझट बढ़ें, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में रद्दोबदल का विचार। **जून** 18, 19, 26, 27, **जुलाई** 6, 7 अशुभ।

मीन—सेहत ठीक, अर्थलाभ, स्त्रीसुख, कारोबार बेहतर, बन्धुकष्ट, मासान्त में लाभ। **जून** 20, 21, 29, 30, **जुलाई** 8, 9, 10 अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रावण मास

कर्कसंक्रान्ति (16 जुलाई से 15 अगस्त तक, सन् 2021 ई.)
(हि, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

कर्कसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—सूर्य-शुक्र एवं नीच मंगल का शत्रु ग्रह शनि के साथ समसप्तक होने से देश में उग्रवादजन्य किंवा प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि सम्भव है। केरल, बंगाल एवं दिल्ली में सम्प्रदाय-विशेष में भारी रोष एवं अशान्ति रहे। सीमाप्रान्तों पर सीमातिक्रमण से अशान्ति रहे। तेल, घी, गुड़, चना तेज रहें।

श्रावण(कर्क)संक्रान्ति-कुण्डली

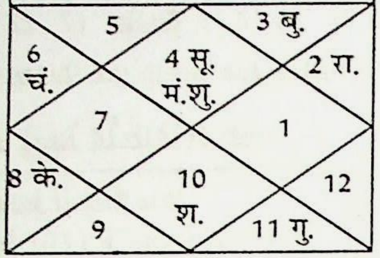

कर्कसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 16 जुलाई, सन् 2021 ई. को 16 घं. 53 मि. (I.S.T.), मुहूर्ता 30, पुण्यकाल सारा दिन,

श्रावण मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—क्रोध बढ़े, सिर-पीड़ा, अर्थलाभ होकर हानि हो, स्त्रीकष्ट, मित्र-बन्धु-सहयोग। **जुलाई** 20, 21, 28, 29, 30, **अगस्त** 7, 8 अशुभ।

वृष—सेहत गड़बड़, नेत्रकष्ट, मित्रों से मदद, गुप्त शत्रुभय, कारोबार कमजोर। **जुलाई** 22, 23, 31, **अगस्त** 1, 9, 10, 11 अशुभ।

मिथुन—उदरविकार, क्रोध बढ़े, घरेलु झंझट, शत्रु प्रबल, कारोबार में रद्दोबदल। **जुलाई** 16, 17, 24, 25 **अगस्त** 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।

कर्क—सेहत कमजोर, अर्थलाभ होकर हानि, बन्धुकष्ट, कारोबार गड़बड़। **जुलाई** 18, 19, 26, 27, **अगस्त** 5, 6, 14, 15 अशुभ।

सिंह—चोटभय, अर्थलाभ होकर हानि हो, घरेलु झंझट, गुप्त चिन्ता, कारोबार में रद्दोबदल। **जुलाई** 20, 21, 28, 29, 30, **अगस्त** 7, 8 अशुभ।

कन्या—वायुविकार, धनलाभ, उत्साह बढ़े, सन्तान-हेतु विशेष खर्च, स्त्रीसुख, कारोबार कुछ ठीक। **जुलाई** 22, 23, 31, **अगस्त** 1, 9, 10, 11 अशुभ।

तुला—सेहत ठीक, अर्थलाभ, बन्धुकष्ट, सम्पत्ति-विवाद, स्त्रीकष्ट, कारोबार कुछ ठीक, आय से खर्च अधिक हो। **जुलाई** 16, 17, 24, 25, **अगस्त** 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।

वृश्चिक—रक्त-पित्तविकार, धनलाभ, निजी-लोगों से अनबन, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कारोबार में लाभ होकर हानिभय। **जुलाई** 18, 19, 26, 27, **अगस्त** 5, 6, 14, 15 अशुभ।

धनु—सेहत ठीक, अर्थलाभ, निजीजन-सहयोग, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। **जुलाई** 20, 21, 28, 29, 30, **अगस्त** 7, 8, अशुभ।

मकर—सेहत ठीक, धनलाभ हो, घरेलु झंझट बढ़ें, राजपक्ष से भय, नीचे से अपमानभय, कारोबार कुछ ठीक। **जुलाई** 22, 23, 31, **अगस्त** 1, 9, 10, 11 अशुभ।

कुम्भ—वृथा विवाद से बचें, धनलाभ, निजी-लोगों से अनबन, नयी योजना से लाभ, स्त्रीकष्ट। **जुलाई** 16, 17, 24, 25, **अगस्त** 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।

मीन—नेत्र व सिर में कष्ट, वृथा व्यय अधिक हो, कर्जे से परेशानी, गुप्त शत्रु से सावधान। **जुलाई** 18, 19, 26, 27, **अगस्त** 5, 6, 14, 15 अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भाद्रपद मास

सिंहसंक्रान्ति (16 अग. से 15 सितं. तक, सन् 2021 ई.)
(मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

सिंहसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—लग्नस्थ सूर्य-मंगल-बुध पर बृहस्पति की दृष्टि है, अत: देश में प्रगतिप्रद योजनाएं बनेंगी।

भाद्रपद(सिंह)संक्रान्ति-कुण्डली

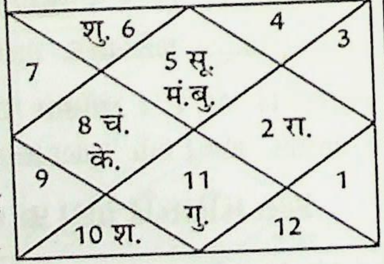

उग्रवाद एवं सीमाप्रान्तों पर शान्त्यर्थ सैन्यबल का प्रयोग करना पड़ेगा। राहु एवं नीच चन्द्र का समसप्तक बना हुआ है। प्रधान नेता को महंगाई एवं आर्थिक संकट कण्ट्रोल करने के लिए कठोर पग उठाने होंगे। रोग-विशेष एवं उग्रवाद से जनता परेशान भी रहे।

सिंहसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 16 अग., सन् 2021 ई. को 25 घं. 17 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 30, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

भाद्रपद मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—मन अशान्त, क्रोध बढ़े, धनलाभ हो, उत्साह बढ़े, नयी योजना से कारोबार में लाभ, गुप्त चिन्ता, नेत्रकष्ट। **अगस्त** 16, 17, 25, 26, **सितम्बर** 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।

वृष—उदरविकार, अर्थलाभ, निजीजन-सहयोग, सम्पत्ति-विवाद, शत्रु कमजोर, चोट से बचें। **अगस्त** 18, 19, 27, 28, **सितम्बर** 6, 7, 14, 15 अशुभ।

मिथुन—क्रोध बढ़े, वृथा व्यय, अर्थलाभ होकर हानि हो, निजी-लोगों से अनबन, स्त्रीपक्ष से परेशानी, कार्यान्तर व स्थानान्तर से लाभ। **अगस्त** 20, 21, 30, 31, **सितम्बर** 8, 9 अशुभ।

कर्क—रक्तपित्त-विकार, अर्थलाभ होकर हानि, घरेलु झंझट बढ़ें, वृथा विवाद से दूर रहें। **अगस्त** 22, 23, 24, **सितम्बर** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

सिंह—उदरविकार, अर्थहानि, जमीन-जायदादसम्बन्धी झगड़े, गुप्त शत्रु से भय, कारोबार ठीक। **अगस्त** 16, 17, 25, 26, **सितम्बर** 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।

कन्या—सेहत खराब, अर्थलाभ होकर हानि हो, असफल योजना, शत्रु प्रबल, कारोबार कमजोर, मासान्त में विशेष खर्च। **अगस्त** 18, 19, 27, 28, **सितम्बर** 6, 7, 14, 15 अशुभ।

तुला—रोगभय, कारोबार में रुकावट, सन्तान-पक्ष से चिन्ता, कार्यान्तर का विचार, आर्थिक लाभ हो। **अगस्त** 20, 21, 30, 31, **सितम्बर** 8, 9 अशुभ।

वृश्चिक—सेहत ठीक, आमदन से खर्च ज्यादा हो, कारोबार में रुकावट, शत्रु बढ़ें, निजीजन-सहयोग। **अगस्त** 22, 23, 24, **सितम्बर** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

धनु—मानहानिभय, वृथा विवाद, आर्थिक संकट, सन्तान व स्त्रीपक्ष से लाभ, कार्यान्तर का विचार। **अगस्त** 16, 17, 25, 26, **सितम्बर** 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।

मकर—गुप्त शत्रुभय, मानसिक चिन्ता, धनलाभ, घरेलु झंझट बढ़ें, सम्पत्ति-लाभ, कारोबार गड़बड़। **अगस्त** 18, 19, 27, 28, **सितम्बर** 6, 7, 14, 15 अशुभ।

कुम्भ—गुप्त चिन्ता, आय से व्यय अधिक हो, निजीजन-सहयोग, शत्रु प्रबल, स्त्रीकष्ट, कारोबार कमजोर। **अगस्त** 20, 21, 30, 31, **सितम्बर** 8, 9 अशुभ।

मीन—वायुविकार, धनलाभ, घरेलु झंझट, सन्ततिकष्ट, कारोबार में रद्दोबदल, स्त्रीपक्ष से परेशानी। **अगस्त** 22, 23, 24, **सितम्बर** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आश्विन मास

कन्यासंक्रान्ति (16 सितं. से 16 अक्तू. तक, सन् 2021 ई.)

(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

कन्यासंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—लग्न में बुधादित्य योग पर गुरु की दृष्टि प्रधान नेता को यश प्रदान करेगी। संवत्सर का स्वामी मंगल व सूर्य एकत्र होकर अग्निकाण्ड से कहीं हानिकारक हैं। धनेश शुक्र पर शनि की दृष्टि देश की आर्थिक स्थिति को सुव्यवस्थित करेगी। भारत की प्रभावराशि में शनि, गुरु देश को यश-गौरव प्रदान करेंगे।

आश्विन(कन्या)संक्रान्ति-कुण्डली

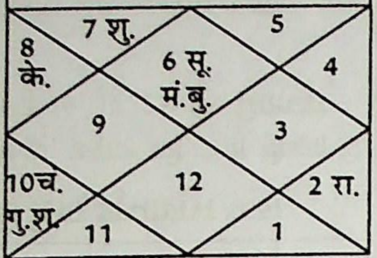

कन्यासंक्रान्ति-प्रवेशकाल 16 सितम्बर, सन् 2021 ई. को 25 घं. 13 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 45, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

आश्विन मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—सेहत ठीक, धनहानि, स्थिर सम्पत्तिलाभ, गुप्त चिन्ता, कारोबार में कुछ रद्दोबदल, नेत्रकष्ट। **सितम्बर** 21, 22, **अक्तूबर** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

वृष—सेहत ठीक, धनलाभ, शत्रु कमजोर, सन्तानसुख, स्त्रीकष्ट, मासान्त में विशेष खर्च। **सितम्बर** 23, 24, 25, **अक्तूबर** 3, 4, 12, 13 अशुभ।

मिथुन—अर्थहानि, नेत्रकष्ट, घरेलु झंझट बढ़ें, नीच से अपमानभय, कार्यान्तर व स्थानान्तर से लाभ। **सितम्बर** 17, 18, 26, 27, **अक्तूबर** 5, 6, 14, 15 अशुभ।

कर्क—क्रोध बढ़े, अर्थहानि, निजीजनों से अनबन, स्त्रीसुख, कारोबार कुछ ठीक, मासान्त में खर्च विशेष। **सितम्बर** 19, 20, 28, 29, 30, **अक्तूबर** 8, 16 अशुभ।

सिंह—क्रोध बढ़े, धनलाभ, भ्रातृसुख, सन्तान हेतु विशेष खर्च, गुप्त चिन्ता, राजपक्ष से भय। **सितम्बर** 21, 22, **अक्तूबर** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

कन्या—सेहत ठीक, अर्थलाभ, मित्रों से अनबन, सन्तानकष्ट, शत्रु प्रबल, स्त्रीसुख, कारोबार गड़बड़। **सितम्बर** 23, 24, 25, **अक्तूबर** 3, 4, 12, 13 अशुभ।

तुला—रुके काम बने, स्थिर सम्पत्तिविवाद, स्त्रीकष्ट, इज्जत-मान प्राप्त हो, कारोबार कुछ ठीक। **सितम्बर** 17, 18, 26, 27, **अक्तूबर** 5, 6, 14, 15 अशुभ।

वृश्चिक—सेहत कमजोर, अर्थलाभ होकर हाथ से निकले, निजीजनों से अनबन, सुखलाभ, सन्तानपक्ष ठीक। **सितम्बर** 19, 20, 28, 29, 30, **अक्तूबर** 8, 16 अशुभ।

धनु—शरीर-पीड़ा, अर्थलाभ, निजीजन-सहयोग, पापकर्म में मन लगे, रोगभय, कारोबार कुछ ठीक। **सितम्बर** 21, 22, **अक्तूबर** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

मकर—हानि व कष्टभय, बुरी खबर, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, बन्धु-सहयोग, कारोबार ठीक, मासान्त में विशेष खर्च। **सितम्बर** 23, 24, 25, **अक्तूबर** 3, 4, 12, 13 अशुभ।

कुम्भ—अर्थलाभ, भाई-बन्धु से मदद, शत्रु प्रबल, स्त्रीकष्ट, व्यवसाय में बाधा, यात्रा हो। **सितम्बर** 17, 18, 26, 27, **अक्तूबर** 5, 6, 14, 15 अशुभ।

मीन—वृथा व्यय, सेहत ठीक, असफल योजना, कारोबार गड़बड़, कार्यान्तर का विचार, राजपक्ष से भय। **सितम्बर** 19, 20, 28, 29, 30, **अक्तूबर** 8, 16 अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कार्त्तिक मास

तुलासंक्रान्ति (17 अक्तूबर से 15 नवं. तक, सन् 2021 ई.)
(रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

तुलासंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—नीचस्थ सूर्य पर शनि की दृष्टि होने से प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञों को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। केतु-शुक्र एवं मंगल से आक्रान्त सूर्य भारत की आर्थिक स्थिति चिन्तनीय होने का संकेत देता है। पाक, U.S.A. एवं कुछ यवन देशों की नीति चिन्तनीय रहेगी। रुई, सोना, चांदी, तांबा एवं खाद्य पदार्थ तेज होंगे।

कार्त्तिक(तुला)संक्रान्ति-कुण्डली

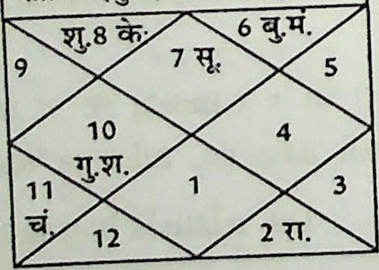

तुलासंक्रान्ति-प्रवेशकाल 17 अक्तूबर, सन् 2021 ई. को 13 घं. 12 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्ती 30, पुण्यकाल सारा दिन,

कार्त्तिक मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—सिरपीड़ा, अर्थलाभ होकर हानि, उत्साह बढ़े, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्री-कष्ट, शत्रु प्रबल। **अक्तूबर** 18, 19, 20, 28, 29, 30, **नवम्बर** 6, 7, 15 अशुभ।

वृष—सेहत गड़बड़, नेत्रकष्ट, मित्रों से मदद, गुप्त शत्रुभय, कारोबार गड़बड़, मासान्त में विशेष हानि। **अक्तूबर** 21, 22, 31, **नवम्बर** 1, 8, 9 अशुभ।

मिथुन—उदरविकार, क्रोध बढ़े, घरेलु झंझट, शत्रु प्रबल, कारोबार में रद्दोबदल का विचार। **अक्तूबर** 23, 24, 25, **नवम्बर** 2, 3, 10, 11 अशुभ।

कर्क—वायुविकार, धनलाभ, स्थिर सम्पत्तिविवाद, सन्तानपक्ष से चिन्ता, शत्रु प्रबल, स्त्रीकष्ट। **अक्तूबर** 26, 27, **नवम्बर** 4, 5, 12, 13 अशुभ।

सिंह—सेहत ठीक, धनलाभ, नयी योजना से लाभ, मित्रकष्ट, राजपक्ष से भय, मासान्त में विशेष कष्ट। **अक्तूबर** 18, 19, 20, 28, 29, 30, **नवम्बर** 6, 7, 15 अशुभ।

कन्या—सेहत ठीक, धनलाभ होकर हाथ से निकले, कर्जा चढ़े, जमीन-जायदाद-सम्बन्धित झगड़े, स्त्रीसुख। **अक्तूबर** 21, 22, 31, **नवम्बर** 1, 8, 9 अशुभ।

तुला—मन अशान्त, गुप्त शत्रु से भय, धनहानि, शत्रु कमजोर, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार कुछ ठीक। **अक्तूबर** 23, 24, 25, **नवम्बर** 2, 3, 10, 11 अशुभ।

वृश्चिक—विशेष कष्ट, मानसिक चिन्ता, धनलाभ, नयी योजना व सन्तान-पक्ष से खुशी। **अक्तूबर** 26, 27, **नवम्बर** 4, 5, 12, 13 अशुभ।

धनु—क्रोध बढ़े, कर्जा चढ़े, नयी योजना से हानि, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार बेहतर, नेत्र व सिर पीड़ा। **अक्तूबर** 18, 19, 20, 28, 29, 30, **नवम्बर** 6, 7, 15 अशुभ।

मकर—कफ-वायुविकार, बन्धु-सहयोग, वृथा व्यय, पुराने झंझट बढ़ें, शत्रु हतप्रभ, मासान्त में हानिभय। **अक्तूबर** 21, 22, 31, **नवम्बर** 1, 8, 9 अशुभ।

कुम्भ—सेहत गड़बड़, धनलाभ, निजीजन-कष्ट, सन्तान हेतु विशेष खर्च, कारोबार में रद्दोबदल। **अक्तूबर** 23, 24, 25, **नवम्बर** 2, 3, 10, 11 अशुभ।

मीन—गुप्त शत्रु से सावधान, बन्धनभय, वृथा व्यय, मानसिक व शारीरिक परेशानी, कर्जे से मन परेशान। **अक्तूबर** 26, 27, **नवम्बर** 4, 5, 12, 13 अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्गशीर्ष मास

वृश्चिकसंक्रान्ति (16 नवं. से 14 दिसं. तक, सन् 2021 ई.)
(तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

वृश्चिकसंक्रान्ति-कालीन गोचर

मार्गशीर्ष(वृश्चिक)संक्रान्ति-कुण्डली

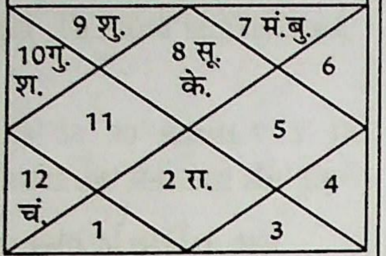

ग्रहस्थिति-फल—सूर्य-केतु का राहु के साथ समसप्तक एवं शनि-मंगल का परस्पर दृष्टि-सम्बन्ध राजनीति में अघटित घटनाओं को जन्म देगा। विपक्ष देश की प्रगतिप्रद योजनाओं में बाधक रहेगा। देशसुरक्षा हेतु सैन्यसंगठन जरूरी रहेगा। मीनस्थ चन्द्र पर शनि की दृष्टि कहीं दुर्भिक्ष किंवा कहीं प्राकृतिक आपदा का संकेत देती है।

वृश्चिकसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 16 नवम्बर, सन् 2021 ई. को 13 घं. 02 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 30, पुण्यकाल सारा दिन,

मार्गशीर्ष मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—मन अशान्त, क्रोध बढ़े, धनलाभ, उत्साहवृद्धि, नयी योजना, गुप्त चिन्ता, नेत्रकष्ट, कारोबार कमजोर। **नवम्बर** 25, 26, **दिसम्बर** 3, 4, 12, 13 अशुभ।

वृष—उदरविकार, अर्थलाभ, निजीजन-सहयोग, स्थिर सम्पत्तिविवाद, शत्रु हतप्रभ-कमजोर। **नवम्बर** 17, 18, 27, 28, **दिसम्बर** 5, 6, 14 अशुभ।

मिथुन—क्रोध बढ़े, वृथा व्यय, शत्रु प्रबल, सन्तानपक्ष से चिन्ता, रोगभय, कारोबार बेहतर। **नवम्बर** 19, 20, 21, 29, 30, **दिसम्बर** 7, 8 अशुभ।

कर्क—सेहत ठीक, वृथा व्यय, घरेलु झंझट बढ़े, शत्रु बढ़े, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। **नवम्बर** 22, 23, **दिसम्बर** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

सिंह—मन चिन्तित, आर्थिक स्थिति बेहतर, सम्पदालाभ, मासान्त में राजभय, खर्च विशेष। **नवम्बर** 25, 26, **दिसम्बर** 3, 4, 12, 13 अशुभ।

कन्या—सेहत ठीक, आर्थिक तंगी, कर्जा सिर चढ़े, स्त्रीपक्ष शुभ, कार्यान्तर से लाभ, निजीलोगों से मनमुटाव। **नवम्बर** 17, 18, 27, 28, **दिसम्बर** 5, 6, 14 अशुभ।

तुला—शरीरकष्ट, अर्थचिन्ता, स्त्रीकष्ट, कारोबार में लाभ, चन्द्र-शनि पूज्य हैं। **नवम्बर** 19, 20, 21, 29, 30, **दिसम्बर** 7, 8 अशुभ।

वृश्चिक—उदरविकार, शुभ समाचार, वंशवृद्धि, शत्रु बढ़े, गुप्त शत्रु से भय, मासान्त में विशेष खर्च। **नवम्बर** 22, 23, **दिसम्बर** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

धनु—मन चिन्तित, कारोबार में रुकावट, अच्छे लोगों से मेल, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कलह-क्लेश से बचें। **नवम्बर** 25, 26, **दिसम्बर** 3, 4, 12, 13 अशुभ।

मकर—सेहत गड़बड़, बन्धुसुख, मित्रों से अनबन, सन्ततिकष्ट, शत्रु कमजोर, स्त्रीसुख। **नवम्बर** 17, 18, 27, 28, **दिसम्बर** 5, 6, 14 अशुभ।

कुम्भ—नेत्र व सिरपीड़ा, स्थिर सम्पत्तिविवाद, नयी योजना, यात्रा में कष्ट, कार्यान्तर से लाभ। **नवम्बर** 19, 20, 21, 29, 30, **दिसम्बर** 7, 8 अशुभ।

मीन—बिगड़े काम बनें, सेहत ठीक, आर्थिक चिन्ता, शत्रु कमजोर, स्त्रीसुख, कारोबार कुछ ठीक। **नवम्बर** 22, 23, **दिसम्बर** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पौष मास

धनुसंक्रान्ति (15 दिसं. 2021 ई. से 13 जन., सन् 2022 ई. तक)

(ये,यो, भा, भी, भू, धा, फ, ढ, भे)

धनुसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—सूर्य-बुध लग्न में शुभ होने पर भी ये दोनों ग्रह शनि-शुक्र एवं मंगल-केतु से खलाक्रान्त हैं। दुःखद घटना से परेशानी रहे। शनि-मंगल की स्थिति उग्रवादजन्य घटना से जनधनहानि की भी सम्भावना बनाती है। व्यापारी वर्ग में असन्तोष से शासनतन्त्र के प्रति जनसाधारण असन्तुष्ट रहे। औद्योगिक क्षेत्रों के विस्तार की योजनाएं आर्थिक संकट से जूझें। प्राकृतिक प्रकोप से पर्वतीय भूभाग में हानि के योग हैं। खाद्य पदार्थ महंगे हों।

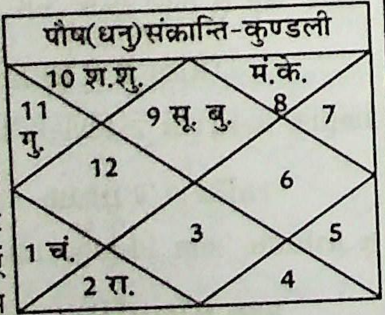

धनुसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 15 दिसम्बर, सन् 2021 ई. को 27 घं. 44 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 15, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

पौष मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—स्थानान्तरण व कार्यान्तर का विचार, राजपक्ष से भय, यात्रा में चोटभय, शत्रु प्रबल, स्त्रीसुख। **दिसम्बर** 22, 23, 31, **जनवरी (सन् 2022 ई.)** 8, 9 अशुभ।

वृष—सेहत ठीक, धनहानि व नेत्रकष्ट, सन्तानपक्ष से चिन्ता, शत्रु कमजोर, कारोबार में हानिभय। **दिसम्बर** 15, 16, 24, 25, 26, **जन. (सन् 2022 ई.)** 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।

मिथुन—भय, पीड़ा, शत्रु-वृद्धि, शोक-समाचार, कारोबार ठीक, मासान्त में जायदाद-सम्बन्धित विवाद, निजीलोगों से अनबन। **दिसम्बर** 17, 18, 27, 28, **जनवरी (सन् 2022 ई.)** 4, 5, 13 अशुभ।

कर्क—वृथा व्यय, निजीलोगों से अनबन, समस्याएं बढ़ें, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार कुछ ढीला। **दिसं.** 19, 20, 21, 29, 30, **जनवरी (सन् 2022 ई.)** 6, 7 अशुभ।

सिंह—चोटभय, कर्जा चढ़े, बन्धुसुख, स्त्रीकष्ट, कारोबार में हानि, कष्टप्रद यात्रा। **दिसम्बर** 22, 23, 31, **जनवरी (सन् 2022 ई.)** 8, 9 अशुभ।

कन्या—शारीरिक कष्ट, धनलाभ, सन्तान हेतु खर्च, कारोबार में हानि, मासान्त अशुभ, स्त्रीसुख। **दिसम्बर** 15, 16, 24, 25, 26, **जनवरी (सन् 2022 ई.)** 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।

तुला—शरीरकष्ट, शत्रु बढ़े, मुकद्दमे या लड़ाई से बचें, कारोबार में कुछ सुधार। **दिसम्बर** 17, 18, 27, 28, **जनवरी (सन् 2022 ई.)** 4, 5, 13 अशुभ।

वृश्चिक—क्रोध बढ़े, सन्तानपक्ष शुभ, हाथ तंग रहे, शत्रु उभरें, कारोबार में गिरावट, आमदन से खर्च अधिक। **दिसम्बर** 19, 20, 21, 29, 30, **जनवरी (सन् 2022 ई.)** 6, 7 अशुभ।

धनु—क्रोध बढ़े, अर्थहानि, गुप्त चिन्ता, निजीलोगों से अनबन, राजपक्ष से भय। **दिसम्बर** 22, 23, 31, **जनवरी (सन् 2022 ई.)** 8, 9 अशुभ।

मकर—सेहत ठीक, धनलाभ होकर हानि हो, निजीलोगों से परेशानी, घरेलु झंझट, शत्रु हतप्रभ। **दिसम्बर** 15, 16, 24, 25, 26, **जनवरी (सन् 2022 ई.)** 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।

कुम्भ—सुख-धनलाभ, शत्रु से भय, सन्ततिकष्ट, कारोबार कुछ ठीक, मासान्त में कार्यान्तर से लाभ। **दिसम्बर** 17, 18, 27, 28, **जनवरी (सन् 2022 ई.)** 4, 5, 13 अशुभ।

मीन—सुखलाभ, शत्रु कमजोर, अर्थलाभ होकर हानि हो, जमीन-जायदाद-सम्बन्धित विवाद। **दिसम्बर** 19, 20, 21, 29, 30, **जनवरी (सन् 2022 ई.)** 6, 7 अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

माघ मास

मकरसंक्रान्ति (14 जनवरी से 11 फरवरी तक, सन् 2022 ई.)

(भो, जा, जी, जू, जे, जो, खा, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

मकरसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—लग्न में शनि-सूर्य-बुध का मेल भयंकर प्राकृतिक आपदा का सूचक है। कुछ उ. भारतीय प्रान्तों, सीमा-प्रान्तों एवं किसी मुस्लिम राष्ट्र में भारी परेशानी एवं हत्याकाण्ड सम्भव है। महंगाई पर कण्ट्रोल करना कठिन होगा। कुछ प्रान्त उग्रवादजन्य जनधनहानिग्रस्त रहें। चावल, घी, चना, गुड़ तेज रहेंगे।

माघ(मकर)संक्रान्ति-कुण्डली

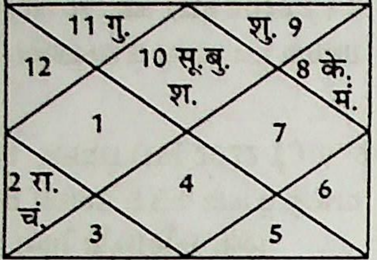

मकरसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 14 जनवरी, सन् 2022 ई. को 14 घं. 29 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 45, पुण्यकाल पूरा दिन,

माघ मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—विरोधी-पक्ष कमजोर, सुखलाभ, कारोबार ठीक, मासमध्य में पारिवारिक कष्ट। **जनवरी** 18, 19, 27, 28, **फरवरी** 5, 6 अशुभ।

वृष—वायुरोग, नेत्रकष्ट, सम्पदाविवाद, सन्ततिकष्ट, गुप्त चिन्ता, कारोबार कमजोर। **जनवरी** 20, 21, 22, 29, 30, **फरवरी** 7, 8 अशुभ।

मिथुन—सेहत कमजोर, गुप्त शत्रु से भय, अच्छे लोगों से मेल, सुखद यात्रा, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। **जनवरी** 14, 23, 24, 31, **फरवरी** 9, 10, 11 अशुभ।

कर्क—क्रोध बढ़े, धनहानि, निजीजन-सहयोग, आय से व्यय अधिक, मासान्त उलझनपूर्ण। **जनवरी** 16, 17, 25, 26, **फरवरी** 2, 3 अशुभ।

सिंह—शत्रु बढ़ें, शरीरकष्ट, धनलाभ होकर हानि, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक, वृथा विवाद से बचें। **जनवरी** 18, 19, 27, 28, **फरवरी** 5, 6 अशुभ।

कन्या—अरिष्ट-भय, स्त्रीसुख, कारोबार में सुधार, मासान्त में घरेलु झंझट। **जनवरी** 20, 21, 22, 29, 30, **फरवरी** 7, 8 अशुभ।

तुला—शत्रु कमजोर, स्त्रीपक्ष से परेशानी, चोटभय, कारोबार कमजोर, मित्र-बन्धु से मदद मिले। **जनवरी** 14, 23, 24, 31, **फरवरी** 9, 10, 11 अशुभ।

वृश्चिक—वायुरोग, कर्जा बढ़े, यात्रा हो, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख, हिस्सेदारी में हानि। **जनवरी** 16, 17, 25, 26, **फरवरी** 2, 3 अशुभ।

धनु—क्रोध बढ़े, धनलाभ, निजीलोगों से मनमुटाव, घरेलु झंझट, नयी योजना से हानि। **जनवरी** 18, 19, 27, 28, **फरवरी** 5, 6 अशुभ।

मकर—बिगड़े काम बनें, अर्थलाभ, उत्साह बढ़े, स्थिर सम्पत्तिलाभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार में सुधार। **जनवरी** 20, 21, 22, 29, 30, **फरवरी** 7, 8 अशुभ।

कुम्भ—गुप्त चिन्ता, कर्जा सिर चढ़े, निजीजन-कष्ट, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, शत्रु बढ़ें। **जनवरी** 14, 23, 24, 31, **फरवरी** 9, 10, 11 अशुभ।

मीन—उदरविकार, धनहानि, निजीजन-कष्ट, शत्रु बढ़ें, कारोबार कुछ ठीक। **जनवरी** 16, 17, 25, 26, **फरवरी** 2, 3 अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फाल्गुन मास

कुम्भसंक्रान्ति (12 फरवरी से 13 मार्च तक, सन् 2022 ई.)

(गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

कुम्भसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—केन्द्र में राहु-केतु 'छत्रयोग' बना रहे हैं। लेकिन मीन राशि पर शनि-मंगल की दृष्टि होने से देश-हितार्थ किये गये कार्यक्षेत्र पर विपक्ष का वैमत्य उजागर होगा। आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। लेकिन वैज्ञानिक क्षेत्र किंवा अन्तरिक्ष अनुसन्धान में भारत उत्तरोत्तर प्रगतिपथ पर रहेगा। अनाज, चीनी, चांदी, तिलहन एवं शेयर बाजारों में तेजी रहे।

फाल्गुन(कुम्भ)संक्रान्ति-कुण्डली

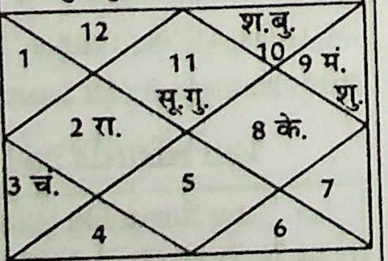

कुम्भसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 12 फरवरी, सन् 2022 ई. को 27 घं. 27 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 15, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

फाल्गुन मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—हानिभय, गुप्त शत्रु बढ़ें, नेत्र व सिरकष्ट, सन्तानसुख, कारोबार में रुकावट। **फरवरी** 14, 15, 24, 25, **मार्च** 4, 5 अशुभ।

वृष—अचानक कष्ट, अर्थलाभ, अच्छे लोगों से मेल, सन्तान व स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक, आय से व्यय अधिक। **फरवरी** 17, 18, 26, 27, **मार्च** 6, 7, 8 अशुभ।

मिथुन—धनहानि, रोगभय, स्त्रीकष्ट, कारोबार में बाधा, मन परेशान रहे। **फरवरी** 19, 20, 28, **मार्च** 9, 10 अशुभ।

कर्क—कष्टभय, धनलाभ, वृथा विवाद से बचें, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। **फरवरी** 12, 13, 21, 22, **मार्च** 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

सिंह—राजपक्ष से भय, गुप्त चिन्ता, शनि-मंगल का दान करें, मित्र-बन्धु से सहयोग। **फरवरी** 14, 15, 24, 25, **मार्च** 4, 5 अशुभ।

कन्या—सेहत ठीक, प्रभावक्षेत्र बढ़े, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में सुधार, मासान्त शुभ। **फरवरी** 17, 18, 26, 27, **मार्च** 6, 7, 8 अशुभ।

तुला—सेहत ठीक, नयी योजना से हानि, कर्जा सिर चढ़े, आय से व्यय अधिक, बन्धु से मदद मिले। **फरवरी** 19, 20, 28, **मार्च** 9, 10 अशुभ।

वृश्चिक—घरेलु झंझट बढ़ें, क्रोध से हानिभय, निजीलोगों से अनबन, कारोबार सुधरे। **फरवरी** 12, 13, 21, 22, **मार्च** 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

धनु—धनलाभ, निजीजनों से मेल, मासान्त में आय से व्यय अधिक, कारोबार में वृद्धि। **फरवरी** 14, 15, 24, 25, **मार्च** 4, 5 अशुभ।

मकर—शरीरपीड़ा, रोगभय, वृथा कलह से बचें, अपमानभय, कारोबार में सुधार हो। **फरवरी** 17, 18, 26, 27, **मार्च** 6, 7, 8 अशुभ।

कुम्भ—शरीरकष्ट, धनलाभ, धर्म-कर्म में मन लगे, नये मित्र बनें, स्त्रीपक्ष से सुख। **फरवरी** 19, 20, 28, **मार्च** 9, 10 अशुभ।

मीन—राजपक्ष से भय, अचानक धनहानियोग, शत्रु प्रबल, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कार्यान्तर का विचार बने। **फरवरी** 12, 13, 21, 22, **मार्च** 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र मास

मीनसंक्रान्ति (14 मार्च से 13 अप्रैल तक, सन् 2022 ई.)

(दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, चि)

मीनसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—लग्नेश गुरु, व्यय स्थान (शनिक्षेत्र) में है। सूर्य पर शनि की दृष्टि एवं मकर राशि में शनि-मंगल-शुक्र का संगम देश में भयंकर दुर्घटना किंवा भूकम्प, उग्रवादजन्य जन-धनहानि का सूचक है। इस समय सीमा-प्रान्तों पर भयंकर स्थिति का सामना करने के लिए सैन्यबल का प्रयोग करना होगा। वृश्चिक एवं मकर राशि वाले नेताओं को विशेष सुरक्षा प्रदान करनी चाहिए।

चैत्र(मीन)संक्रान्ति-कुण्डली

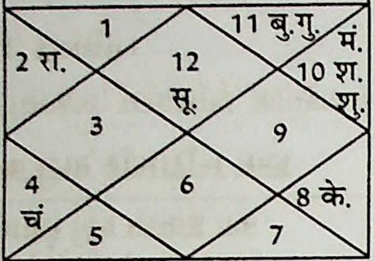

मीनसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 14 मार्च, सन् 2022 ई. को 24 घं. 16 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 15, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

चैत्र मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—विरोधी कमजोर, अर्थलाभ हो, उत्साह बढ़े, सम्पत्तिविवाद, अच्छे लोगों से मेल हो। **मार्च** 14, 15, 23, 24, 31, **अप्रैल** 1, 10, 11 अशुभ।

वृष—सेहत ठीक, आय से व्यय अधिक, रोगभय, स्त्रीसुख, कारोबार सुधरे, मित्र-बन्धु से मदद मिले। **मार्च** 16, 17, 25, 26, **अप्रैल** 3, 4, 13 अशुभ।

मिथुन—शरीरपीड़ा, धनलाभ, गुप्त चिन्ता, मासान्त में शुभ कार्य में खर्च, राजपक्ष से परेशानी सम्भव। **मार्च** 18, 19, 27, 28, **अप्रैल** 5, 6 अशुभ।

कर्क—स्त्रीसुख, दु:खद समाचार, शुभ कार्य में मन लगे, कुटुम्ब में क्लेश, वृथा व्यय। **मार्च** 21, 22, 29, 30, **अप्रैल** 7, 8, 9 अशुभ।

सिंह—नयी योजना से हानि, हिम्मत बनी रहे, व्यवसाय में अच्छा लाभ, शुभ में खर्च, वृथा विवाद से बचें। **मार्च** 14, 15, 23, 24, 31, **अप्रैल** 1, 10, 11 अशुभ।

कन्या—अग्नि व जलहानि-भय, कारोबार में रुकावट, आय से व्यय अधिक, निजीलोगों से अनबन। **मार्च** 16, 17, 25, 26, **अप्रैल** 3, 4, 13 अशुभ।

तुला—उत्साह बढ़े, लाभ होकर हाथ से निकले, स्त्रीसुख, क्रोध से हानि, कारोबार में बाधा, कार्यान्तर का विचार। **मार्च** 18, 19, 27, 28, **अप्रैल** 5, 6 अशुभ।

वृश्चिक—स्त्रीसुख, अर्थहानि, अच्छे लोगों से मेल, रोगभय, क्रोध बढ़े, मासान्त में अच्छी आय हो। **मार्च** 21, 22, 29, 30, **अप्रैल** 7, 8, 9 अशुभ।

धनु—उदरविकार, अर्थलाभ, मित्रों से लाभ, सन्तानसुख, नीच से अपमान-भय, वृथा विवाद से बचें। **मार्च** 14, 15, 23,24, 31, **अप्रै.**1, 10, 11 अशुभ।

मकर—सेहत ठीक, सम्पत्तिसुख, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक, मासान्त में आय से व्यय अधिक हो। **मार्च** 16, 17, 25, 26, **अप्रैल** 3, 4, 13 अशुभ।

कुम्भ—अर्थलभ, निजीजन-सुख, सम्पत्तिलाभ, सन्तानपक्ष से कष्ट, कारोबार में रुकावट। **मार्च** 18, 19, 27, 28, **अप्रैल** 5, 6 अशुभ।

मीन—बन्धनभय, अर्थलाभ, बन्धुकष्ट, भाई से मदद, सन्तानसुख, कार्यान्तर का विचार। **मार्च** 21, 22, 29, 30, **अप्रैल** 7, 8, 9 अशुभ।

———

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ वर्षराजादि फलादेश (संवत् २०७८ वि.)

(सन् २०२१-२२ ई. की ग्रहपरिषद् का विवरण)

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९१२२, सृष्टि संवत् १९५५८८५१२२, श्रीविक्रम संवत् २०७८, शक संवत् १९४३, श्रीकृष्ण जन्मसंवत् ५२५७, कलि संवत् ५१२२, सप्तर्षि संवत् ५०९७, श्री जैन महावीर-निर्वाण संवत् २५४६-४७, श्रीबुद्ध संवत् २६४३-४४, हिजरी सन् १४४२-४३, फसली सन् १४२८-२९, ईस्वी सन् २०२१-२२।

वर्षारम्भ में गुरुमान से रुद्रविंशति का 'राक्षस' नामक संवत्सर है। यह राक्षस नामक संवत्सर वि.सं. २०७८ में १३ अप्रैल, सन् २०२१ ई. से प्रारम्भ होकर १ अप्रैल, सन् २०२२ ई. (अर्थात् संवत् २०७८ वि. के अन्त) तक रहेगा। अतः इस संवत् में '**राक्षस नामक**' संवत्सर ही संकल्प में बोला जायेगा। **संहिता-ग्रन्थ के अनुसार 'राक्षस' नामक संवत्सर का फल इस प्रकार लिखा है—**

" नश्यन्ति सर्व-सस्यानि रोगार्तिश्च महर्घता।
प्रजानाशो भयं घोरं राक्षसे गौरि पीड़नम्॥"

अर्थात्—इस (राक्षस नामक) संवत्सर में खड़ी फसलों को कहीं अतिवर्षण, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक आपदा से भारी हानि पहुंचेगी, जिससे कृषक वर्ग एवं खाद्यान्नादि की महर्घता से जनजीवन त्रस्त रहे। देश में प्राकृति-विपर्यय के लक्षणों से अनेकविध रोगों से जनता परेशान रहे। अनैतिक कृत्य अधिक हों एवं भूकम्प किंवा सीमाप्रान्तों पर शत्रुदेशकृत् गतिविधि से जनधनहानि हो।

'वर्षप्रबोध' ग्रन्थानुसार 'राक्षस' नामक संवत्सर का फल इस प्रकार है—

" स्व-स्व-कार्ये रताः सर्वे मध्य-सस्यार्घ-वृष्टयः।
राक्षसाब्देऽखिला लोकाः राक्षसा इव निष्कृपाः॥"

अर्थात्—इस राक्षस संवत्सर में वर्षा कहीं अधिक, कहीं कम, महंगाई से जन-मानस शासनतन्त्र से असन्तुष्ट रहे। जनता अपने-अपने कारोबार में लगी रहे, लेकिन राक्षसी किंवा भ्रष्ट चारित्रिक लोग जनजीवन के लिए परेशानी का कारण बनेंगे। दुराचार के समाचार अधिक मिलें।

'मेघ महोदय' के अनुसार 'राक्षस संवत्सर' का फल इस प्रकार है—

" राक्षसे शुक्रः स्वामी, धान्यसंग्रहः कार्यः, चैत्रे करकाः पतन्ति, वैशाखे ज्येष्ठे तैलं महर्घम्, ज्येष्ठे आषाढ़े गुड़-खण्डादिकं महर्घम्, श्रावणेऽल्प मेघः, अन्नं महर्घम्, भाद्रपदे महामेघः, कार्तिके रोगार्तिः, मार्गशीर्षादि चत्वारो मासा महर्घा, मार्गे सुखं सुभिक्षम्॥"

संक्षेप में—इस वर्ष आपत्काल के लिए अन्नसंग्रह करना चाहिए, आकालिक ओला(करक)पात हो। वैशाख-ज्येष्ठ में तैल, घी आदि दैनिक उपयोगी द्रव्य महंगे हों। श्रावण एवं भाद्रपद में कहीं दुर्भिक्ष, बाढ़ आदि से हानि हो। कार्तिक में महामारी से जनजीवन त्रस्त हो।

सं. २०७८ वि. का राजा (ग्रहपरिषद् के प्रधान) मंगल हैं। इस संवत् का मन्त्री मंगल, सस्येश शुक्र, धान्येश बुध, मेघेश मंगल, रसेश सूर्य, नीरसेश शुक्र, फलेश चन्द्र, धनेश गुरु एवं दुर्गेश चन्द्र हैं।

संवत् २०७८ वि. के उल्लिखित पदाधिकारियों का फल इस प्रकार है—

(१) संवत्सर के राजा 'मंगल' का फल—

बृहत्संहिता के अनुसार राजा 'मंगल' का फल—

"वातोद्धतश्चरति वह्निरति-प्रचण्डो ग्रामान् वनानि नगराणि च सन्दिधक्षुः।
हाहेति दस्युगणपात-हता रटन्ति निःस्वीकृता विपशवो भुवि मर्त्यसंघाः॥"

अर्थात्—इस वर्ष भयंकर अग्निकाण्डों से नगर, पत्तन व जंगलों को हानि पहुंचे। जन-धनहानि अधिक हो। तेज हवाओं (तूफानों) एवं प्राकृत प्रलयंकारी घटनाओं से हानि हो। चोर-उचक्कों का आतंक एवं धन-धान्यहानि हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

किञ्च—खूब घटाएं छाने पर भी कहीं बाढ़, कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति रहे। प्राकृतिक प्रकोप से खड़ी फसलों को हानि हो। राजनीतिज्ञ आशानुकूल जनहित न करें, सर्पादि जन्तुओं एवं रोगादि से जनता त्रस्त रहे।

'संवतत्सर-संहिता' के अनुसार संवत्सरेश 'मंगल' का फल—

"अग्नि-तस्कर-रोगाद्यो नृप-विग्रह-दायकः।
गत-सस्यो बहुव्यालो भौमाब्दो बालहा भृशम्॥"

अर्थात्—अनेकत्र आंधी-तूफान से हानि हो। वायुवेग व भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि हो। चोर-उचक्कों का आतंक रहे। बादल-बाहुल्य होने पर भी वर्षा की कमी अनुभव हो। प्राकृतिक प्रतिकूलता किंवा प्रतिकूल परिस्थितियों में उत्पादन में कमी, पशुधन की हानि हो। शासकों की कर्तव्यपालन में उदासीनता, उग्रवादजन्य रक्तपात किंवा शत्रुदेशकृत गतिविधि से युद्ध जैसी स्थिति बने। सामाजिक **अनाचार**(बालक-बालिकाओं के प्रति क्रूरता आदि) बढ़े। सर्पादि-जीव-बहुलता से अनेकत्र कष्टप्रद घटनाएं हों।

वर्ष-प्रबोधानुसार संवत्सरेश 'मंगल' का फल—

"भौमे नृपे वह्निभयं जनक्षयं चौराकुलं पार्थिव-विग्रहं च।
दुःखं प्रजा-व्याधि-वियोग-पीड़ा स्वल्पं पयो मुञ्चति वारिवाहः॥"

अर्थात्—मंगल के संवत्सरेश होने पर अग्निकाण्डों से भयंकर हानि, जन-धनहानि, चोरों से परेशानी, अनैतिक घटनाएं अधिक हों, किसी देश के सीमाप्रान्त क्षुब्ध रहें, प्रजा में व्याधि-वियोगपीड़ा से परेशानी एवं वर्षा की कमी या कहीं अभाव से दुर्भिक्ष की स्थिति बने।

(२) मन्त्री 'मंगल' का फल—

"अवनिजे ननु मन्त्रिपदं गते भवति दस्यु-गदादिज-वेदना।
जनपदेषु क्वचित् सुखिनो जना न गोषु पयो द्विजकर्म च॥"

अर्थात्—मंगल के मन्त्री होने से चोरों एवं नानाविध रोगों से जनता को कष्ट हो, कुछ प्रान्तों में शान्ति रहे। पुनरपि, सामान्यतया वातावरण अशान्त रहे।

(३) सस्येश 'शुक्र' का फल—

"यदा शुक्रो सस्यपतिर्धरायां मेघो जलं वर्षति शोभनं वै।
गोधूम-शालीक्षु-घन-प्रियंगु-सस्यर्द्धि एवं सुमनो विवृद्धिः॥"

अर्थात्—शुक्र के सस्येश होने से पर्याप्त वर्षा के कारण गेहूं, चावल, ईख, नागरमोथा आदि जड़ी-बूटियों,कगनी आदि की पैदावार अच्छी रहती है। फूलों की बढ़ोत्तरी भी उत्तम हो।

(४) धान्येश 'बुध' का फल—

"बहुसस्ययुता पृथ्वी रसानां च महर्घता।
नीतियुक्ता सदा भूपा बुधे धान्याधिपे सति॥"

अर्थात्—सभी रसपदार्थों (घी, गुड़, तैलादि) के बाजार तेज रहेंगे। जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं में महंगाई से जनता परेशान रहे। विपरीत परिस्थिति में भी शासन-तन्त्र की नीतियां (योजनाएं) जनहितार्थ रहें।

(५) मेघेश 'मंगल' का फल—

"अवनिजे जलदाधिपतौ भुवि श्रुति-विचारविहीन पराभवाः।
क्वचिदवर्षण-वर्षणजं भयं क्वचिदथो बहुताप-भयापदः॥"

अर्थात्—इस वर्ष कहीं वर्षा (बाढ़) व कहीं सूखे (दुर्भिक्ष) के कारण अशान्ति रहे। देश में दुराचार किंवा प्राकृतिक प्रकोप एवं न्यायसंगत व्यवहार की कमी के कारण अव्यवस्था रहे। कहीं भयंकर मुसीबत व भय का सामना भी करना पड़े।

(६) रसेश 'सूर्य' का फल—

"रसपतौ तरुणौ धरणी तदा विरस-भोग-रताल्प-पयोधरा।
वसन-तैल-घृत-प्रियता भवेत् सुखरसेन भुनक्ति महीपतिः॥"

अर्थात्—रसेश सूर्य हो तो भौतिक सुखों की कमी रहे, वर्षा कम हो। लोगों में प्रदर्शन एवं फैशन पर अधिक व्यय करने की प्रवृत्ति बने। शासक सुखपूर्वक आनन्दमय जीवन व्यतीत करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(७) नीरसेश 'शुक्र' का फल—

"कर्पूरागरु-गन्धानां हेम-मौक्तिक-वाससाम्।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो भृगुर्यदा॥"

अर्थात्—शुक्र नीरसेश हो तो सोना, चांदी, कपूर आदि सुगन्धित चीजें, मोती एवं वस्त्रादि के भाव तेज रहें।

(८) फलेश 'चन्द्र' का फल—

"यदि विधुः फलपो द्रुमराशयः फलयुता व्रतती-कुसुमैर्युताः।
द्विजमुखा वरयोग-समन्विता नृपतयो नवपालन-तत्पराः॥"

अर्थात्—चन्द्रमा फलेश हो तो पेड़-पौधों पर फल-फूल अच्छे हों। लोगों में खुशी व शान्ति बनी रहे। शासनव्यवस्था सुचारु रूप से चलती रहे।

(९) धनेश 'गुरु' का फल—

"त्रिदशनाथ-नुतो द्रविणाधिपो वणिज-वृत्तिकृतां कुरुते सुखम्।
सुफल पुष्पयुता द्रुमराशयो विविध-द्रव्ययुताश्च जनास्तदा॥"

अर्थात्—द्रविणेश गुरु हो तो व्यापारी वर्ग के लिए बहुत अनुकूल वातावरण रहता है। पेड़-पौधे फल-फूलों से लदे रहते हैं। जनता के आर्थिकस्तर में वृद्धि होती है।

(१०) दुर्गेश 'चन्द्र' का फल—

"अथ च दुर्गपतिर्मृग-लांछनो नरवराः सुखिनः शुभ-शासनात्।
बहुधनेक्षुज-गोरस-भोगिनो नृपतयो नरगीत-पराक्रमाः॥"

अर्थात्—चन्द्र दुर्गेश हो तो प्रतिष्ठित लोगों का मान-सम्मान बना रहता है। प्रशासन व कानूनव्यवस्था की स्थिति अच्छी रहती है। समाज का जीवनस्तर अच्छा होता है। दूध किंवा खाद्य पदार्थों की उपलब्धता अच्छी रहे एवं जनता शासकवर्ग की प्रशंसा करे।

नोट—यद्यपि संवत् के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र अनुभव किया गया है, किन्तु विशेषतः राजा का फल कश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में, मन्त्री का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवं मालवा में, सस्येश का पौण्ड्र, विदर्भ में, धान्येश का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में, मेघेश का मगध एवं बंगाल में, रसेश का कोंकण एवं गोवा में, नीरसेश का मालवा व बिहार में, धनेश का राजस्थान एवं बाड़मेर में, फलेश, दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षादि के विश्वामान

वर्षाविश्वा १५, धान्य १३, तृण १३, शीत ७, तेज १७, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ७, तृषा ७, निद्रा ७, आलस्य १५, उद्यम १३, शान्ति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रता ३, पाप ३, पुण्य ९, व्याधि ९, व्याधिनाश ७, आचार ७, अनाचार १३, मृत्यु ११, जन्म ३, देशोपद्रव ९, देशस्वास्थ्य १५, चौर ५, चौरनाश १५, अग्नि १३, अग्निशान्ति १७, उद्भिज्ज १५, जरायुज ३, अण्डज ५, स्वेदज ७, टिड्डी ५, तोता ७, मूषक १७, सोना ५, तांबा ७, स्वचक्र ९, परचक्र १५, वृष्टि ३, वृष्टिनाश ११ एवं संवत्-विश्वा १८ हैं।

चतुर्मेघविचार—ध्यान रहे—नवमेघों की अपेक्षा **'मेघ-चतुष्टय'** का विशेष महत्त्व है। **इस वर्ष आवर्तकादि चतुर्मेघों में 'संवर्त' नामक मेघ है।**

'संवर्त' नामक मेघ का फल—

"संवर्ते वायु-पीड़नम्"—कुछ प्रान्तों में वायुवेग, तूफान आदि से हानि होगी। उड़ीसा, महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं छत्तीसगढ़ में विशेष संकट सम्भव है—**"मध्यवृष्टिश्च वायवः।"**

एक सूत्र के अनुसार इस वर्ष 'द्रोण' नामक मेघ है।

'द्रोण' नामक मेघ का फल—

"महीशाः स्व-सम्पत्ति-वृद्ध्या समेताः समस्ता धरा भूरि-धान्येन युक्ता।
यदा जायते 'द्रोण' नामा पयोदस्तदा देवराजो भवेत् सत्पयोदः॥"

अर्थात्—'द्रोण' नामक मेघ होने पर शासक समृद्ध एवं सम्पत्ति-सम्पन्न रहें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

देश किंवा विश्व में धन-धान्यसमृद्धि रहे। वर्षा सर्वत्र पर्याप्त हो। **किञ्च—"द्रोणो वर्षति सर्वदा"**—अनुसार अनेकत्र वर्षा, बाढ़ से कहीं हानि के भी योग हैं।

नवमेघविचार—इस वर्ष नवमेघों में 'आवर्त' नामक मेघ है।

फल—"आवर्ते वृष्टिहानिः स्यात्"—अर्थात् कुछ प्रान्त अकालग्रस्त होंगे। वर्षा के अभाव से पेयजलसमस्या भयंकर स्थिति पैदा करेगी।

आवह आदि सप्तवायु-विचार—इस वर्ष 'वायु-सप्तक' में 'उद्वह' नामक वायु है।

फल—दिल्ली, हि.प्र., उड़ीसा, म.प्र., महाराष्ट्र, उ.प्र. एवं गुजरात, छत्तीसगढ़, बिहार आदि प्रान्तों में कहीं भूकम्प, विस्फोट, तूफान आदि से जन-धनहानि सम्भव है। **उद्वह** नामक वायु होने से वर्षा ऋतु में मेघसंचार होने पर भी फसलों को हानि पहुंचेगी।

अनन्तादि अष्टनागविचार—इस वर्ष अष्टनागों में 'पद्म' नामक नाग है।

फल—पद्म नामक नाग वर्षा के अभाव से सरीसृपों से भय का संकेत देता है। जंगलों में अग्निकाण्ड एवं अनेक प्रकार के प्राकृतिक प्रकोपों से सर्प आदि महाविषधारी एवं अन्य प्राणियों से भी जनता के लिए भय रहे। देश में शत्रु किंवा उग्रवादजन्य दुःखद घटनाओं से किंवा साम्प्रदायिक धार्मिक विषमता से जनजीवन को अनेकत्र कटु अनुभव होगा। सीमाप्रान्त असुरक्षित रहें।

सुबुध्नादि द्वादशनागविचार—सुबुध्नादि द्वादश नागों में इस वर्ष 'सुबुध्न' नामक नाग है।

फल—"सुबुध्न-नाम-सहितो भुजंगो जायते यदा।
नृणां सुबुद्धिकर्त्ता स्यान्मध्यवृष्टि प्रदायकः।"

अर्थात्—राजनीतिज्ञ नेकनीयति से काम करें। वर्षा मध्यम हो, लेकिन कहीं वर्षाल्पता से परेशानी एवं कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि के संकेत भी मिलते हैं।

संवत् २०७८ वि. में संवत् (समय) का वाहन—सं. २०७८ वि. का राजा मंगल होने से संवत् (समय) का वाहन **'नाव'** या **'बैल'** होगा।

फल—

"विफला सकला धात्री नौकारूढे तु वत्सरे।
जनोद्वासः पशूनां च पीड़ा भवति भूयसी॥"

अर्थात्—नौका वाहन होने पर वर्षा अधिक या कम होने से सर्वत्र उत्पादन में कमी, जनता का स्थानान्तरण किंवा इधर-उधर पलायन हो, अनेकत्र आतंकवादियों से भय व्याप्त रहे। पशुओं में रोगादि से किंवा पर्याप्त खाद्य न मिलने से कष्ट रहे।

संवत् २०७८ वि. में रोहिणी का वास

(वर्षा एवं जलवायु में विशेष)

सं २०७८ वि. में **'मेष-संक्रान्ति'** १३/१४ अप्रैल की मध्यरात्रि में सन् २०२१ ई. मंगलवार, भरणी नक्षत्र, प्रीति योग एवं मेषस्थ चन्द्र के समय २ घं ३१ मि. पर लग रही है, **अतः रोहिणी का वास 'तट' पर होने से फल इस प्रकार है—**

फल—"तटे वृष्टिः सुशोभना"—अर्थात् इस वर्ष वर्षा उत्तम रहे, **मरुस्थल** में भी वर्षा होने से खाद्यान्न प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होंगे। लेकिन भारत के कुछ प्रान्तों में लोग पर्यावरण-विक्षोभ के कारण रोगग्रस्त किंवा पेयजल-समस्या के कारण चिन्ताग्रस्त भी रहेंगे।

समय किंवा संवत्सर का वास—इस वर्ष रोहिणी का वास तट पर होने से संवत्सर का वास 'रजक' (धोबी) के घर होगा।

फल—देश में स्वच्छता, सौन्दर्य एवं अनेक प्रगतिप्रद योजनाओं के प्रति शासन विशेष ध्यान देगा। भ्रष्टाचार-उन्मूलन के लिए शासक विशेष सचेष्ट रहेंगे।

संवत् २०७८ वि. के चार स्तम्भ

(१) जलस्तम्भ—(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) १३.२ प्रतिशत है।

(२) तृणस्तम्भ—(वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को **भरणी** नक्षत्र) का अभाव है।

(३) वायुस्तम्भ—(ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को **मृगशिरा** नक्षत्र) ८४.४१ प्रतिशत है।

(४) अन्नस्तम्भ—(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को **पुनर्वसु** नक्षत्र) ७२.५८ प्रतिशत है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ये उल्लिखित चार स्तम्भ देश के कुशल-क्षेम-ज्ञानार्थ विशेष महत्त्व रखते हैं; क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सत्ता जल, वायु, अन्न एवं तृण (जड़ी-बूटियों) आदि पर ही निर्भर है। संवत् के शुभारम्भ पर देश की प्राकृतिक व्यवस्था के नियामक इन चार स्तम्भों का आकलन आवश्यक समझा गया है। इन स्तम्भों को "वर्ष के मर्मस्थान" भी माना जाता है।

(१) जलस्तम्भ—इस वर्ष जलस्तम्भ १३.२ प्रतिशत होने से यह स्तम्भ कमजोर है।

फल—महानगरों में पेयजल का संकट व अनेक क्षेत्र वर्षा की कमी के कारण अकालग्रस्त भी रह सकते हैं। परिणामस्वरूप जन-पशुधन के लिए खाद्य पदार्थों की कमी एवं महंगाई को लेकर शासनतन्त्र के विरुद्ध जनाक्रोश रहे। बहुजल-प्रधान चावलादि को हानि पहुंचे। भूजलस्तर नीचे जायेगा।

(२) तृणस्तम्भ—इस वर्ष **तृणस्तम्भ** का अभाव होने से मॉनसून के दौरान कहीं बेहद वर्षा-बाढ़ से तृण (फसलों) को हानि पहुंचेगी अथवा कहीं सूखे से दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। इस वर्ष मध्य भारत में बाढ़ किंवा सूखे का खतरा बढ़ेगा। ग्रहस्थिति के अनुसार मौसम-प्रणाली में उल्लेखनीय परिवर्तन आने से 'तृणस्तम्भ' भारत के अनेक क्षेत्रों में चिन्तनीय स्थिति बना सकता है।

इस स्तम्भ के नगण्य एवं जलस्तम्भ के कमजोर होने से इस वर्ष बहुजल-प्रधान अन्न जीरी, ग्वार, बाजरा आदि की उपज खराब रहने से महंगाई बढ़ेगी। भारत सरकार को जनजीवन को सामान्य किंवा सुरक्षित रखने के लिए भारी प्रयास करने पड़ेंगे। क्योंकि प्रकृति की विरुद्धता भारी पड़ेगी।

(३) वायुस्तम्भ—इस वर्ष **ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र** ८४.४१ प्रतिशत होने से '**वायुस्तम्भ**' दृढ़ है। अत: भारत व तमाम दक्षिण एशिया तूफान, बाढ़, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप, औद्योगिक गैस-उत्सर्जन आदि से प्रभावित हो एवं हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, उड़ीसा, तमिलनाडु, महाराष्ट्र आदि में कहीं प्राकृतिक आपदा से हानि हो। क्योंकि पृथ्वी के भीतर सीस्मोग्राफिक (वेवस) वायु से आकाश या शून्य में विद्यमान वायु के साथ जब संघर्ष होता है तो भूगर्भान्तर्गत प्लेटें हिलने से भूकम्प आदि दुर्घटनाएं घटित होती हैं। अत: यह वर्ष वायुस्तम्भ-मात्रा से अधिक दृढ़ होने से अनेकत्र चिन्तनीय स्थिति बना सकता है।

(४) अन्नस्तम्भ—इस संवत् में **अन्नस्तम्भ** ७२.५८ प्रतिशत होने से सुदृढ़ है। घरेलू उत्पाद एवं खड़ी फसलों से लाभार्थ सरकार का प्रयास कृषकों के लिए हितकर रहेगा। व्यापारिक वर्ग एवं कृषक-समाज को सन्तुष्ट करने का सरकार का प्रयास भरपूर रहेगा।

निष्कर्ष—इस वर्ष में दो स्तम्भ प्रबल होने से देश में समृद्धि एवं सुरक्षा सुव्यवस्थित रहेगी। लेकिन वायुस्तम्भ अधिक दृढ़ होने से अनेकत्र वायुवेग से हानि, भूकम्प एवं अग्निकाण्ड आदि से हानि के भी योग हैं। जड़ी-बूटी, औषध-निर्माण एवं अन्न आदि की दृष्टि से देश प्रगतिपथ पर रहेगा।

आर्षमान-विचार (सं. २०७८ वि. की रक्षा के लिए चार दुर्ग)

(१) प्रथम आर्ष—(अक्षय तृतीया को **रोहिणी** नक्षत्र) ०.२२ प्रतिशत है।

(२) द्वितीय आर्ष—(गत संवत् २०७७ वि. में पौष अमा को **मूल** नक्षत्र) का अभाव है।

(३) तृतीय आर्ष—(श्रावण पूर्णिमा को **श्रवण** नक्षत्र) ५.५४ प्रतिशत है।

(४) चतुर्थ आर्ष—(कार्तिक पूर्णिमा को **कृत्तिका** नक्षत्र) ४९.०४ प्रतिशत है।

नोट—उल्लिखित चारों आर्षमान इस संवत्सर में जनजीवन एवं देश की सुरक्षा, कानून-व्यवस्था, आर्थिक समृद्धि, सामाजिक शान्ति, सर्वविध-समृद्धि किंवा नैतिक मूल्यों को सुनिश्चित करते हैं। ये संवत्सर के मर्मस्थल माने जाते हैं।

(१) प्रथम आर्ष—अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र अत्यल्प है, अत: इस वर्ष देश की सुरक्षा, कानून-व्यवस्था, देश में सीमा-प्रान्तों की सुरक्षा, राजनीतिक पार्टियों की अनेकरूपता एवं अव्यवस्था, सामाजिक अशान्ति रहे और सुख-समृद्धि एवं नैतिक-मूल्यों का ह्रास देश के लिए चिन्ताजनक रहेगा।

(२) द्वितीय आर्ष—इस वर्ष द्वितीय आर्ष का अभाव होने से चीन, श्रीलंका, पाक एवं बंगलादेश के सीमाप्रान्तों पर अशान्ति से सैन्यबल को सुसन्नद्ध रखना होगा। देश की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को सुव्यवस्थित रखने के लिए शासनतन्त्र को कठोर पग उठाने होंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(३) तृतीय आर्ष—इस वर्ष श्रावण-पूर्णिमा के दिन श्रवण नक्षत्र ५.५४ प्रतिशत है।

तृतीय आर्ष अत्यधिक क्षीण होने से संवत् २०७८ वि. में सैन्यशक्ति-संवर्धन के लिए नयी योजनाएं कार्यान्वित करने के लिए आर्थिक संकट रहेंगे। भारत को सीमाओं पर बंगलादेश, नेपाल एवं विशेषत: पाकिस्तान और चीन की कुनीति से सावधान रहना आवश्यक है। कश्मीर, लाहौलस्पीति, तिब्बत, त्रिपुरा आदि में भी स्थिति चिन्तनीय बने। भारत के महानगरों में आतंकवादी जनधनहानि का कारण बनेंगे।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार संवत् २०७८ वि. के उत्तरार्ध में कहीं प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, समुद्री तूफान एवं विस्फोट आदि से भयंकर जनधनहानि के योग कश्मीर, बिहार, महाराष्ट्र, उड़ीसा एवं देश के महानगरों में दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

राजनीतिज्ञों के कार्य देशहितार्थ न होकर नये-नये घोटाले उजागर होंगे। केन्द्रीय शासनतन्त्र सत्ता को बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील रहेगा। आर्थिक संकट देश के सामने उपस्थित होगा। कश्मीर, बंगलादेश, चीन के सीमाप्रान्त चिन्तनीय स्थिति बना सकते हैं। यह स्तम्भ देश के लिए चिन्तनीय स्थिति वाला ही है।

(४) चतुर्थ आर्ष—इस वर्ष कार्त्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र ४९.०४ प्रतिशत है।

चतुर्थ आर्ष ४९.०४ प्रतिशत होने से भारत के लिए समृद्धिप्रद रहे। यह शासनतन्त्र की चेतना को जागृत करने वाला है। चतुर्थ आर्ष भारत की गरिमा एवं गणतन्त्र के सशक्त होने का संकेत देता है। नयी योजनाएं, नये औद्योगिक क्षेत्र एवं शासकगण देश को नयी उपलब्धियों से सुसज्जित करने के लिए सचेष्ट रहेंगे।

वर्ष के चार स्तम्भों एवं आर्षमान-विचार से यद्यपि देश की स्थिति तो भूतकालिक राजनैतिक कारणों से चिन्तनीय ही रहेगी। लेकिन नयी शासनप्रणाली इसे सुधारने के लिए सशक्त सिद्ध होगी।

दोहा—"अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्त्तिक पुण्यो कृत्तिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै, कहै भड्डली साख विनाशै॥"

सूर्य का आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश

सूर्य आर्द्रा-प्रवेशकालिक कुण्डली
२२ जून, सन् २०२१ ई.,
५ घं. ३७ मि. (I.S.T.)

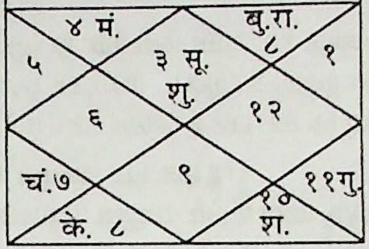

सं. २०७८ वि. में ज्येष्ठ शु. द्वादशी मंगलवार, तदनुसार **२२ जून, सन् २०२१ ई. को विशखा नक्षत्र एवं तुलास्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव ५ घं. ३७ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे।**

फल—सूर्य इस वर्ष प्रात: ५ घं. ३७ मि. पर आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा—**"सूर्योदये रोगकरी स्मृतार्द्रा"**—प्रमाणानुसार नानाविध भयंकर रोगों से जनता परेशान रहे। अत: इस वर्ष वर्षा के दिनों में अनेकत्र वर्षा का अभाव रहने से अकाल की स्थिति बनेगी— **"दिवार्द्रा याति चेद् भानुर्जल-भक्षणकारकः।" किञ्च**—सूर्य का आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश अंगारक (मंगलवार) को होना भी अशुभ किंवा भयंकर गर्मी से त्रस्त करने वाला है। जलवायु-परिवर्तन गर्मियों में राजस्थान, गुजरात, पंजाब एवं वैस्ट उ.प्र. में ईति (टिड्डीदल) किंवा अन्य प्राकृतिक प्रकोप से विशेष हानिव्रद रहेगा—**"रवौ भौमे तथा मन्दे रौद्रभं याति भास्करः। तदा न शुभदः प्रोक्तः शुभदः शेष-वासरे॥"** इस वर्ष पर्यावरण को भी भारी हानि का अन्देशा है। आर्द्राप्रवेश कुण्डली में नीच राशिस्थ मंगल पर मकरस्थ शनि की दृष्टि है, अत: शनि-मंगल का समसप्तक अनेकत्र बाढ़-वर्षा से भयंकर जन-धनहानि का संकेत देता है। शनि की चन्द्र पर दृष्टि भी समुद्रतटवर्ती क्षेत्रों में सुनामी आदि भयंकर आपदा से जन-धनहानि भी करे—ऐसा संकेत मिलता है। महाराष्ट्र, उड़ीसा, बंगाल एवं कुछ अन्य प्रान्तों में भी ऋतु-विपर्यय सम्भव है। कहीं अतिवर्षण किंवा अवर्षण से भारी हानि रहे।

आर्द्राप्रवेशकालीन ग्रहस्थिति के अनुसार शनि-सूर्य का षडष्टक देश के प्रमुख नेतृत्व के समक्ष राजनैतिक विषम-परिस्थिति को लेकर इस वर्ष उपस्थित होगा, जोकि राजनैतिक परिप्रेक्ष्य की दृष्टि से अच्छा सिद्ध नहीं होगा। पर्यावरण-विक्षोभ से समस्याएं उलझेंगी। जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं की उपलब्धता के लिए शासनतन्त्र हतप्रभ मालूम देगा। महंगाई से जनता परेशान रहेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २०७८ वि. में वर्षेश(जगत्)लग्नकुण्डली

वर्षेश(जगत्)लग्न-कुण्डली
१३/१४ अप्रैल, सन् २०२१ ई.,
२ घं. ३१ मि. (I.S.T.)

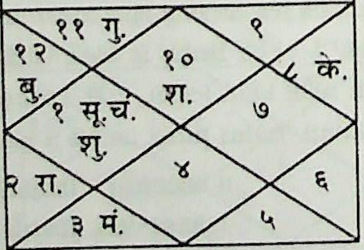

जब सूर्य निरयण मेष राशि में प्रविष्ट होता है तो तात्कालिक लग्न ही 'जगत् लग्न' कहलाता है। संवत् २०७८ वि. में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, तात्कालिक द्वितीया, तदनुसार **१३/१४ अप्रैल, सन् २०२१ ई. को २ घं. ३१ मि. (भा.स्टैं. टा.) पर सूर्यदेव मेष राशि में प्रविष्ट होंगे।**

फल—इस वर्ष मकर लग्न में **जगत् लग्न** का उदय हुआ है। लग्नेश शनि स्वस्थ है, लेकिन मंगल गुरु-दृष्ट है, अत: शनि-मंगल का षडष्टकयोग यहां राजनीतिज्ञों का परस्पर वैमत्य भी शासनतन्त्र के देशहित में किये गये निर्णयों को निरस्त नहीं कर सकेगा।

भारत की प्रभावराशि मकर में शनि स्वस्थ होने से भारत की गरिमा प्रभावशाली रहेगी। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार अफ्रीकन देश, पाकिस्तान, टर्की, अफगानिस्तान, P.O.K., बलूचिस्तान, चीन के कुछ क्षेत्रों में भयंकर महामारी किंवा राजनैतिक उपद्रव किंवा गृहयुद्ध जैसे हालात शासनतन्त्र के लिए विघातक सिद्ध होंगे।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत को भी सूर्य-शुक्र, शनि-मंगल एवं राहुजन्य नेष्टफल-स्वरूप पाक, चीन, उ. कोरिया आदि की तरफ से सचेष्ट-सजग रहना होगा। सीमाप्रान्तों पर सैन्य गतिविधि चिन्ताजनक रहेगी। कहीं घोषित किंवा अघोषित युद्धात्मक स्थिति से जनता परेशान रहेगी। इस वर्ष अमेरिका, उ.कोरिया, सीरिया, इराक, ईरान, पाक के कुछ क्षेत्रों में भारी प्राकृतिक प्रकोप किंवा महामारी से जन-धनहानि के योग हैं। वर्षलग्न कुण्डली के आधार पर वैशाख, आषाढ़ से आश्विन के मध्य एवं फाल्गुन में कहीं महामारी, भूकम्प, भयंकर बाढ़, सुनामी या कहीं सूखाग्रस्त रहने से जन-धनहानि के योग भी बनते हैं।

अपने जन्मलग्न से द्वादश भावों में जगत्लग्न का फल इस प्रकार जानिये—

(१) प्रथम भाव से शरीर सुख, (२) धनागम, (३) कुटुम्बवृद्धि (पारिवारिक सुख), (४) मित्र व बन्धुसुख, (५) सन्ततिसुख, (६) शत्रु की पराजय, (७) स्त्री-सुख, (८) रोगभय, मृत्युभय, (९) धर्म-कर्म में प्रवृत्ति किंवा धनलाभ, (१०) धन व सम्मानप्राप्ति, (११) लाभ किंवा अन्य सुख-साधनप्राप्ति तथा (१२) बारहवें भाव से कष्ट व आर्थिक संकट का ज्ञान प्राप्त करें—

"जन्मोदये देहसुखं धनेऽर्थलाभस्तृतीये च कुटुम्बवृद्धिः।
तुर्ये सुहृत्सौख्यमथात्मजाप्तिं पुत्रे रिपौ शत्रु-पराजयःस्यात्॥
स्त्री-सौख्याप्तिर्भवति मदने मृत्युरुग्भीश्च रन्ध्रे।
धर्मार्थाप्तिस्तपसि दशमे वित्तसौख्यं पदाप्तिः॥
लाभे लाभः सुख-धनचयो दुःख-दारिद्र्यमन्त्ये।
पुंसोर्मेषे प्रविशति रवौ जन्मलग्नाद् विलग्ने॥"

यदि 'जगत् लग्न' अपने 'जन्मलग्न' से ६, ८ या १२वें भावों में यत्किञ्चित् भी पापी ग्रह के प्रभाव में हो तो वह वर्ष कष्टप्रद किंवा अशुभ रहेगा, ऐसा जानें।

जगत्लग्न से व्यक्तिगत फलविचार

जन्मकुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्मराशि से जगत्लग्न जिस राशि पर आये, वह भाग शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश(जगत्)लग्न आठवें या बारहवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा।

इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए।

संवत् २०७८ वि. का शुभारम्भ

चैत्र कृष्ण अमावस (सोमवती अमावस), चन्द्रवार, तदनुसार **१२ अप्रैल, सन् २०२१ ई. को रेवती नक्षत्र, वैधृति योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय ८ घं. १ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर वृष लग्न में शुभ संवत् २०७८ वि. का शुभारम्भ होगा।**

नवसंवत्-प्रवेशफल—संवत् २०७८ वि. का शुभारम्भ वृष लग्न में हो रहा है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २०७८ वि. की प्रवेश-कालीन कुण्डली

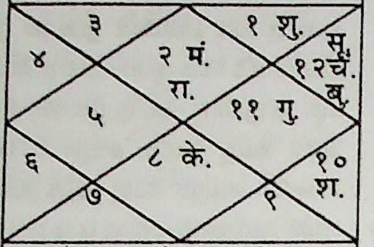

१२ अप्रैल, २०२१ ई., ८ घं.१ मि. (I.S.T.)

स्वतन्त्र भारत का जन्म लग्न भी वृष ही है। ध्यान दें—**यहां वर्षप्रवेश-कुण्डली में राहु-मंगल वृषस्थ हैं—यह ग्रहस्थिति म.प्र., उ.प्र., महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, बंगाल आदि प्रान्तों में भयंकर भूकम्प, जून से सितं. तक कहीं प्रलयंकारी बाढ़ व सुनामी, कहीं भयंकर दुर्भिक्ष आदि से जन-धनहानि का संकेत देती है।** लेकिन भारत की प्रभावराशि मकर का स्वामी शनि स्वस्थ होने से भारत की गरिमा व राजनैतिक स्थिरता के लिए शुभ संकेत है।

संवत् २०७८ वि. का उदय **वृष लग्न** में हुआ है। लग्न में राहु-मंगल की स्थिति भारत के प्रतिष्ठित वृश्चिक एवं मेष राशि संज्ञा वाले राजनीतिज्ञों के लिए विशेष परेशानी वाली रहेगी। सुरक्षाव्यवस्था को सुदृढ़ रखना पड़ेगा।

वृष लग्न में नये संवत् का उदय होने से दक्षिणी एवं पश्चिमी भूभाग पर दुर्भिक्ष, पूर्वी सीमाप्रान्तों पर युद्धात्मक स्थिति से अशान्ति रहे। उत्तर में खड़ी फसलों को हानि हो—

"वृषे तु पश्चिमे कालः पूर्वस्यां राज-विग्रहः।
उदग्धान्यार्ध-निष्पत्तिर्दक्षिणस्यां विकालतः॥"

वर्ष लग्न में सभी ग्रह उत्तरार्ध में स्थित होने से वर्ष का उत्तरार्ध समस्या-समाधान एवं राष्ट्रहित में लिये गये निर्णयों के लिए श्रेयस्कर रहेगा, लेकिन प्रधान नेतृत्व को कठिन परिस्थिति का सामना तो करना ही पड़ेगा। जुलाई से नवम्बर २०२१ ई. तक अनेकत्र भूकम्प, दुर्भिक्ष एवं कश्मीर, बंगाल, उत्तराखण्ड आदि में उग्रवादजन्य कृत्यों से भयंकर जन-धनहानि के योग बनते हैं।

लग्न में राहु-मंगल होने से उत्तर एवं दक्षिण की ओर से शत्रुदेश की गतिविधि अघोषित युद्ध की स्थिति बना सकती है। सैन्यबल को सुसन्नद्ध रहना होगा। वर्षप्रवेशकुण्डली में शनि की सूर्य-चन्द्र-बुध पर दृष्टि किसी यावनदेश में आन्तरिक क्रान्ति किंवा विभाजन का संकेत देती है। भारत की प्रभाव राशि मकर की स्थिति राजनैतिक दृष्टि से प्रधान नेताओं के लिए विशेष भयावह है, सुरक्षा की दृष्टि से सावधान रहें।

संवत् २०७८ वि. में ग्रीष्मसस्य-जातकविचार

ग्रीष्मसस्य जातक कुण्डली
(१६ नवं., २०२१ ई.) १३ घं.१ मि. (I.S.T.)

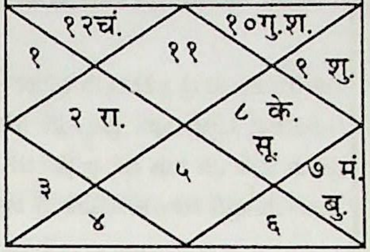

सं. २०७८ वि. में कार्तिक शुक्ल द्वादशी (तात्कालिकी त्रयोदशी), मंगलवार, रेवती नक्षत्र, सिद्धि योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय **१६ नवम्बर, सन् २०२१ ई. को १३ घं. १ मि. (I.S.T.) पर सूर्यदेव वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होंगे।**

फल—ग्रीष्म संवत्सर कुण्डली में वृश्चिकस्थ सूर्य केतु एवं राहु के प्रभावक्षेत्र में है। सूर्य मंगलक्षेत्र में एवं मंगल-शनि का परस्पर दृष्टि-सम्बन्ध होने से इस वर्ष गेहूं, जौ, चना आदि की उपज अच्छी होने पर भी पर्यावरण एवं वर्षा अनुकूल समय पर न होने से कृषक वर्ग परेशान रहे। ग्रीष्मान्नों के स्टॉक से स्टॉकिस्ट नाजायज लाभ लेंगे। लेकिन **"सूर्याद् द्वितीये शुक्रे व्ययस्थे बुध-भौमयोः। मकरस्थे च गुरौ याते ग्रीष्मसस्यं न जायते॥"**—अर्थात् गुरु-शुक्र-बुध की स्थिति इस वर्ष ग्रीष्मस्य-निष्पत्ति अच्छी होने पर भी किसानों को विशेष लाभ न देगी।

किञ्च—

"मध्ये पापग्रहयोः सूर्यः सस्यं विनाशयत्यलिगः।
पापः सप्तम-राशौ जातं जातं विनाशयति॥"

इस प्रमाणानुसार भी सूर्य और राहु के समसप्तक एवं मंगल के सूर्य से द्वादशस्थ एवं शुक्र के द्वितीयस्थ होने पर अच्छी फसल होने पर भी प्राकृतिक प्रकोप से नष्ट हो जाती है, जिससे सरकार को कृषकों को तोषणनीति से शान्त करना पड़ता है।

ग्रहगतिवश अगेती बुवाई फसल नष्ट हो एवं बाद में देर से बोई हुई फसल से लाभ हो, यह ग्रहस्थिति भी बनती है—

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

"अर्थस्थाने क्रूरः सौम्यैरनिरीक्षितः प्रथमं जातम्।
सस्यं निहन्ति पश्चादुप्तं निष्पादयेत् व्यक्तम्॥"

संवत् २०७८ वि. में शरत् सस्य-जातकविचार

ध्यान रहे—गर्मी में बोई जाने वाली तथा सर्दी में तैयार होने पर काटी जाने वाली फसलें चावल, मूंग, ज्वार, बाजरा, कपास, अरहर, तिल, तोड़िया, सूरजमुखी, ग्वार, गन्ना, मक्का आदि **"खरीफ फसलों"** को **'शरत्सस्य'** कहा जाता है। शरत्सस्य का विचार वृषस्थ सूर्य से ही किया जाता है।

शरत्सस्यजातक कुण्डली
१४ मई, २०२१ ई., २३ घं.२३ मि. (I.S.T.)

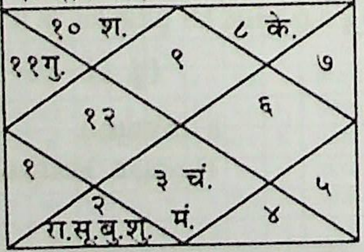

सं. २०७८ वि. में वैशाख-शुक्ल द्वितीया (तात्कालिक तृतीया), शुक्रवार, तदनुसार १४ **मई, सन् २०२१ ई. को मृगशिरा नक्षत्र, सुकर्मा योग एवं मिथुनस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव २३ घं. २३ मि. (I.S.T.)** पर वृष राशि में प्रविष्ट होंगे।

नोट—सस्यजातक कुण्डलियों में**तात्कालिक**औदयिक लग्न से फलादेश-विचार उचित नहीं, **सस्यजातक-विचारार्थ सूर्य को ही लग्न मानकर विभिन्न भावों के आधार पर फलविचार युक्तियुक्त माना है।** अतः सूर्य को लग्न मानकर ही यहां फलप्रतिपादन किया गया है।

फल—शरत् सस्य-कुण्डली में वृषस्थ सूर्य का बुध-शुक्र एवं राहु के साथ मेल होने से गर्मी में कटने वाली फसलें (शरत्सस्य) सहज उपलब्ध होती हैं। जनता की वृत्ति विविध प्रकार से अन्न के उपभोग व दानादि में रहती है—**"त्रिषु मेषारिषु सूर्य-सौम्ययुतो-वीक्षितोऽपि वा विचरन्‌ग्रैष्मिकं धान्यं कुरुते समर्घमुभयोप-योग्यं च॥"**

एक प्रमाण के अनुसार सूर्य का राहु एवं शुक्र—इन शत्रु ग्रहों के साथ एक राशि में योग शुभ नहीं,—**"क्रूरान्तस्थः सूर्यो वृषस्थोऽपि नाशयति सस्यम्।"** अतः उल्लिखित ग्रहस्थिति एवं चन्द्र-मंगल का शनि के साथ षडष्टकयोग गन्ना, मक्का, चावल, ज्वार, अरहर, मूंग, बाजरा, तिल एवं कपास की फसल के लिए हानिकारक रहेगा। अनेकत्र अवर्षणादि से पैदावार नष्ट हो सकती है।

सूर्य से द्वितीयेश बुध अपनी राशि से द्वादशस्थ होने से कृषिकर्म वालों को शरत्सस्य से विशेष लाभ की स्थिति नहीं बनेगी। द्वितीय (सूर्य से दूसरे) भाव में मंगल-चन्द्र खड़ी फसलों को हानि पहुंचायेंगे, लेकिन चन्द्र-मंगल पर गुरु की विशेष दृष्टि सरकार की ओर से कृषकों एवं जनताहित में नये कार्यक्रम बनायेगी।

सं. २०७८ वि. में विशेष अमावस्याएं—

(१) संवत् २०७८ वि. में सोमवती अमावस्याओं का अभाव है।

(२) संवत् २०७८ वि. में भौमवती अमावस्याएं तीन हैं—

(i) चैत्र कृष्णपक्ष (११ मई, सन् २०२१ ई.)।

(ii) भाद्रपद कृष्णपक्ष (७ सितं., सन् २०२१ ई.)।

(iii) माघ कृष्णपक्ष (१ फरवरी, सन् २०२२ ई.)।

(३) संवत् २०७८ वि. में शनिवारी अमावस २ ही हैं—

(i) आषाढ़ कृष्ण पक्ष (१० जुला., २०२१ ई.)।

(ii) मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष (४ दिसं., सन् २०२१ ई.)।

ध्यान दें—भौमवती अमा को प्रातः तीर्थोदिक से स्नानादि के उपरान्त गुड़ एवं फलादि का दान करें। भगवान् शंकर का पंचोपचार पूजन करके गायों को गुड़दान करें।

'शनैश्चरी अमा' पूर्वजन्म-पापनाशार्थ एवं ग्रहरोग-शान्त्यर्थ उपयोगी मानी गयी है।

इस दिन तिल, तेल, माह एवं शनिमन्त्र का जाप किंवा तुलादान करना श्रेयस्कर लिखा है।

शनैश्चरी अमा को तुलादान, तेलदान, काले तिल, काला कपड़ा एवं काली दाल दान करें।

ध्यान दें—उल्लिखित अमावस्याओं में दान एवं तीर्थस्नान/पूजन आदि का विशेष महत्त्व है। साथ ही अधिकाधिक पंचांगों का योग्य ब्राह्मणों को तीर्थ पर या अन्यत्र भी दान करना पुण्यप्रद लिखा है। सभी अमावस्याओं पर पूर्वजों को पिण्डदान करने का विधान है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २०७८ वि. में शनि की नज़र का फल

संवत् २०७८ वि. के प्रारम्भ से अन्त तक शनि मकर राशि में ही रहेगा। अत: शनि की दृष्टि उत्तर की तरफ ही रहेगी। स्पष्ट है कि—संवत् २०७८ वि. में पश्चिमी एवं उत्तरी गोलार्ध के देशों में प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, जलाप्लाव, हिंसा, शासकों में अस्थिरता एवं राजनैतिक हत्याकाण्ड होंगे। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार २ जून, सन् २०२१ से २० जुलाई, २०२१ तक शनि-मंगल के समसप्तक में और आगे १६ अगस्त तक शनि-सूर्य के समसप्तक के समय विश्व में व्यापक हिंसा, युद्धात्मक व भारी संकटापन्न स्थिति बन सकती है, जोकि आगे भी अशुभ स्थिति को ही दर्शाती है। धनु-मकर-वृश्चिक नामराशि वाले शासकों (राजनयिकों) को भारी संकटापन्न स्थिति का सामना करना पड़ेगा। राजनैतिक हत्याकाण्ड सम्भव है। अत: वृश्चिक-धनु-मकर राशि वाले विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी आवश्यक है। कहीं प्राकृतिक भूकम्पादि प्रकोप से हानि का योग भी है। मकर नाम राशि वाले देशों एवं राजनीतिज्ञों के लिए शनि-मंगल का सम्बन्ध अशुभ है। २१ अक्तूबर से ५ दिसं., सन् २०२१ ई. के लगभग तक भारत को शत्रु की गतिविधि से सावधान रहना होगा, सैन्यबल को तैयार रखना होगा। मीन, कर्क, वृष, कन्या, वृश्चिक नाम राशि वाले राजनीतिज्ञों की सुरक्षा आवश्यक है—

"शनैश्चरः क्रमात्पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीडयेत्।
दुर्भिक्ष-देशभंगाद्यैर्विग्रहो राजविड्वरैः॥"

गुर्रा-फल (सन् २०२१-२२ ई.)

इस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है। उस दिन जो वार होता है, वही इस्लामी मतानुसार (उसी वार से सम्बन्धित ग्रह ही) साल का राजा होता है, जो "गुर्रा" नाम से जाना जाता है।

वि. सं. २०७७ में भाद्रपद शुक्ल तृतीया, शुक्रवार, तदनुसार २१ अगस्त, सन् २०२० ई. को १ मुहर्रम, हिजरी सन् १४४२ का आगाज हुआ था। इसलिए इस हिजरी सन् का बादशाह शुक्र ही है।

शुक्रवारी गुर्रा का फल—महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी। गुड़, खाण्ड, घी आदि में विशेष तेजी रहे। साम्प्रदायिक सौहार्द बिगड़ेगा। उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों से जनता स्थानान्तरण के लिए विवश हो। रोग किंवा प्राकृतिक आपदाओं से जनजीवन त्रस्त रहे।

वि.सं. २०७८ में श्रावण शुक्ल द्वितीया, मंगलवार, तदनुसार १० अगस्त, सन् २०२१ को 'यकम(१) मुहर्रम', हिजरी सन् १४४३ का आगाज होगा। अत: इस हिजरी सन् १४४३ का बादशाह मंगल ही होगा।

मंगलवारी गुर्रा का फल—विश्व के अनेक क्षेत्रों में भयंकर अग्निकाण्ड, महामारी, आन्तरिक सीमासंघर्ष एवं दुर्भिक्ष से जनता में भयंकर अशान्ति रहे। समय पर वर्षा न हो, कृषिकर्म चिन्तनीय बनें, जन-जीवन अशान्त रहने से सत्ता-परिवर्तन एवं महामारी से जन-धनहानि भी हो। महंगाई चरम सीमा पर रहे।

लाभ-व्यय चक्र (विंशोत्तरी-मतानुसार)

(संवत्सर २०७८ वि. का राजा मंगल है)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	२	११	२	११	१४	२	११	२	१४	८	८	१४
व्यय	१४	५	५	१४	११	५	५	१४	२	५	५	२

लाभ-व्यय देखने की विधि—अपनी राशि के लाभ-व्यय-अंकों को जोड़कर, उसमें से १ घटाकर शेष को ८ से भाग देने पर यदि १ बचे तो आमदन, २ बचे तो सुख-लाभ, ३ बचने पर क्लेश, ४ शेष रहने पर बीमारी से परेशानी, ५ शेष आने पर अपयश, ६ शेष बचने पर इज्जत, ७ शेष आने पर सफलता और ० (शून्य) शेष रहने पर हानि होगी—ऐसा जानें।

"इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि तिथौ शुभम्।
यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्॥"

— — —

विशेष—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से दस दिन तक नीम के कोमल पत्ते, नीम की मंजरी या निमौली का चूर्ण, सेंधा नमक, इमली, कालीमिर्च, हींग, अजवायन, जीरा, तुलसीदल—ये सब कूट-पीसकर इच्छानुसार खाण्ड या शक्कर में मिलाकर शर्बत बनाकर प्रात: सेवन करने से रक्तविकार, वात-पित्त एवं कफजन्य कष्टों एवं कुष्ठरोग से मुक्ति मिलती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, चैत्र शुक्ल पक्ष १

(१३ से २७ अप्रैल, सन् २०२१ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु।

बुध अस्त है। १८ अप्रै. से शु. पश्चिम में दिखाई देना शुरु हो जायेगा। प्रातः गु. पूर्व कपाल में और इससे ऊपर श. होगा। सायं मं. पश्चिम कपाल में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	वैशाख	अप्रैल	चैत्र	शाबान		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३१	५०	१	मं.	१०	३८	अश्वि.	२०	४४	वि.	२३	४	ब.	१०	३८	१	१३	२३	३०	मेष			६	१	१८	४५	११	२९	८	२६	चन्द्रदर्शन, मु. १५, सं. सूर्य अश्वि. मेष में ५१/१५, मु. १५, पुण्यकाल (A)
३१	५४	२	बु.	१६	५९	भर.	२८	२५	प्री.	२५	३४	कौ.	१६	५९	२	१४	२४	र.१	वृष	४५	२३	६	०	१८	४६	०	०	७	१५	रमजान मु. प्रारम्भ, **राक्षस संवत्सर**
३१	५८	३	गु.	२३	४०	कृत्ति.	३६	२२	आ.	२८	१९	ग.	२३	४०	३	१५	२५	२	वृष			५	५९	१८	४६	०	१	६	३	भ. ५६/५८ बाद, श्रीमत्स्य जयन्ती, गौरी तृतीया (गणगौर), आन्दोलन तृतीया,
३२	३	४	शु.	३०	२०	रोहि.	४४	१४	सौ.	३१	१	वि.	३०	२०	४	१६	२६	३	वृष			५	५८	१८	४७	०	२	४	४८	भ. ३०/२० तक, बुध अश्वि. मेष में ३७/२४,
३२	७	५	श.	३६	२९	मृग.	५१	३१	शो.	३३	२१	ब.	३	२४	५	१७	२७	४	मिथुन	१८	१	५	५७	१८	४८	०	३	३	३१	श्री(लक्ष्मी)पंचमी, नाग पंचमी, हयव्रत, **शुक्र उदित १८ अप्रैल**
३२	१२	६	र.	४१	३८	आर्द्रा	५७	४३	अ.	३४	५६	कौ.	९	३	६	१८	२८	५	मिथुन			५	५६	१८	४८	०	४	२	११	शुक्र पश्चिम में उदित १८ घं. ४८ मि., स्कन्द षष्ठी,
३२	१६	७	चं.	४५	१७	पुन.	६०	०	सु.	३५	२६	ग.	१३	२७	७	१९	२९	६	कर्क	४६	२५	५	५५	१८	४९	०	५	०	५०	भ. ४५/१७ बाद, सूर्य सायन वृष में ५०/२०, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ,
३२	२०	८	मं.	४७	५	पुन.	२	२४	धृ.	३४	३२	वि.	१६	१३	८	२०	३०	७	कर्क			५	५३	१८	५०	०	५	५९	२६	भ. १६/१३ तक, शुक्र भर. में ४८/०, अगस्त्य अस्त, दुर्गाष्टमी, (B)
३२	२४	९	बु.	४६	४७	पुष्य	५	१४	शू.	३२	२	बा.	१६	५६	९	२१	वै.१	८	कर्क			५	५२	१८	५०	०	६	५८	०	शक वैशाख प्रारम्भ, शुक्र बाल्य समाप्त १८ घं ४८ मि., श्रीरामनवमी, (C)
३२	२९	१०	गु.	४४	२०	आश्ले.	५	५८	गं.	२७	५१	तै.	१५	३३	१०	२२	२	९	सिंह	५	५८	५	५१	१८	५१	०	७	५६	३२	बुध भर. में ५६/२२, नवरात्र पारणा,
३२	३३	११	शु.	३९	५३	मघा	४	३७	वृ.	२२	१	व.	१२	१०	११	२३	३	१०	सिंह			५	५०	१८	५१	०	८	५५	२	भ. १२/१० से ३९/५३ तक, कामदा एकादशी व्रत (स.), दोलोत्सव,
३२	३७	१२	श.	३३	४०	पू.फा. उ.फा.	१ ५६	१८ २४	ध्रु.	१४	४०	ब.	६	४६	१२	२४	४	११	कन्या	१५	१४	५	४९	१८	५२	०	९	५३	२९	मंगल आर्द्रा में ४९/३१, श्रीविष्णु दमनोत्सव, शनि प्रदोष व्रत, **कुम्भ महापर्व हरिद्वार १३ अप्रैल**
३२	४१	१३	र.	२६	२	हस्त	५०	१५	व्या. ह.	६ ५६	२ २४	तै.	२६	२	१३	२५	५	१२	कन्या			५	४८	१८	५३	०	१०	५१	५५	गुरु धनि. ४ में ७/०, अनंग त्रयोदशी, दमनक चतुर्दशी, श्रीमहावीर (D)
३२	४५	१४	चं.	१७	२२	चित्रा	४३	१५	व.	४६	१०	व.	१७	२२	१४	२६	६	१३	तुला	१६	४९	५	४७	१८	५३	०	११	५०	१९	भ. १७/२२ से ४२/४५ तक, श्री शिव दमनोत्सव, श्री सत्यनारायण व्रत,
३२	४९	१५	मं.	८	७	स्वाती	३५	५४	सि.	३५	३८	ब.	८	७	१५	२७	७	१४	तुला			५	४६	१८	५४	०	१२	४८	४०	सूर्य भर. में ३१/३१, प्लूटो वक्री ४९/२०, चैत्री पूर्णिमा, वैशाख स्नान (E)

(A) अगले दिन मध्याह्न तक, मंगल मिथुन में ४८/२, चान्द्र संवत्सर २०७८ वि. प्रारम्भ, वासन्त (चैत्र) नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफल श्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, कुम्भ महापर्व हरिद्वार (प्रमुख स्नान) (देखें पृ.19), निम्बपत्र प्राशन, गुड़ी पड़वा, चन्द्रव्रत, वैशाखी (पंजाब, हरि., हि.प्र.), (B) अशोकाष्टमी (पुनर्वसु योग ६ घं. ५२ मि. तक), (C) नवरात्र समाप्त, (D) जयन्ती (जैन), (E) प्रारम्भ, श्रीहनुमान् जयन्ती (द.भा.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २० अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	२	०	१०	०	९	१	७
५	२	३	७	२	१२	१८	१८	१८
५९	३७	४४	२	३०	११	२८	५६	५६
२७	०	४	३६	५६	३०	१५	२६	२६
५८	७६३	३६	१२७	९	७४	३	३	३
३४	३	२०	२८	४९	९	६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२ अश्वि.	४ पुन.	४ मृग.	३ अश्वि.	३ धनि.	४ अश्वि.	३ श्रव.	३ रोहि.	१ ज्ये.

कुण्डली सूर्योदय (२० अप्रै.)

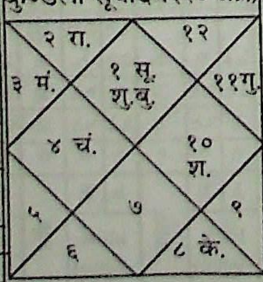

लोकभविष्य—संवत का राजा एवं मन्त्री दोनों पद मंगल ग्रह को प्राप्त होने से इस पक्ष किंवा संवत् में अनेकत्र अग्निकाण्ड से एवं सीमा प्रान्तों पर अतिक्रमण आदि से घोर अशान्ति का वातावरण रहेगा। इस चैत्र मास में पांच मंगलवार होने से किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो;—"मंगले म्रियते राजा।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख—इस पक्ष में गुरु कुम्भ राशि में आकर वर्षा की कमी से तिलहन, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सोना, चांदी, अनाजों एवं शेयर बाजारों में तेजी करेगा। पक्षारम्भ में ही बाजार तेज रहेंगे। शनि-मंगल का षडष्टक भी सोना-चांदी के व्यापार में तेजी का इशारा करता है।

कुण्डली सूर्योदय (२७ अप्रै.)

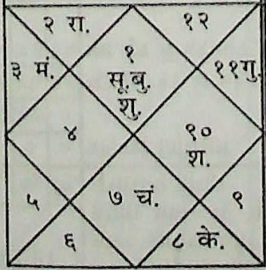

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २७ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	२	०	१०	०	९	१	७
१२	१०	७	२१	३	२२	१८	१८	१८
४८	४३	५८	५३	३७	५८	४८	३४	३४
४०	२०	४०	१८	७	२	९	१२	१२
५८	११२	३६	१२४	८	७३	२	३	३
२०	४७	२५	१४	५८	५९	३०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४ अश्वि.	२ स्वा.	१ आर्द्रा	३ भर.	४ धनि.	३ भर.	३ श्रव.	३ रोहि.	१ ज्ये.

आकाशलक्षण—१३, १६, २०, २२ से २४ एवं २७ अप्रैल को पू. आसाम, पू. बिहार, बंगाल एवं बर्मा के कुछ क्षेत्रों में बादलचाल किंवा खण्डवृष्टि के योग हैं। उ. भारत में गर्मी का प्रभाव बढ़ने लगेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, वैशाख कृष्ण पक्ष २															तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(२८ अप्रैल से ११ मई, सन् २०२१ ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. वैशाख	अं. अप्रैल	श. वैशाख	मु. रमजान				सूर्योदय		सूर्यास्त						१ मई के बाद बु. सायं पश्चिम में शु. के साथ नजर आयेगा और मं. इस समय पश्चिम कपाल में होगा। प्रातः गु. पूर्व कपाल में और श. याम्योत्तर वृत्तासन्न होगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	मं.	५८	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३२	५३	२	बु.	४९	३२	विशा.	२८	३७	व्य.	२५	११	तै.	२४	६	१६	२८	८	१५	वृश्चिक	१५	२४	५	४५	१८	५५	०	१३	४७	०	
३२	५७	३	गु.	४१	३	अनु.	२१	५१	व.	१५	७	व.	१५	२१	१७	२९	९	१६	वृश्चिक			५	४४	१८	५५	०	१४	४५	१८	भ. १५/२१ से ४१/३ तक, बुध कृत्ति. में १९/१५,
३३	१	४	शु.	३३	३६	ज्येष्ठा	१५	५९	प. शि.	५ ५७	४७ २२	ब.	७	१९	१८	३०	१०	१७	धनु	१५	५९	५	४४	१८	५६	०	१५	४३	३५	बुध वृष में ५९/५२, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३३	५	५	श.	२७	२७	मूल	११	२१	सि.	५०	१०	कौ.	०	३१	१९	म.१	११	१८	धनु			५	४३	१८	५७	०	१६	४१	४९	शुक्र कृत्ति. में ३६/५२, बुध पश्चिम में उदित १८ घं. ५७ मि., (A)
३३	९	६	र.	२२	५१	पू.षा.	८	१२	सा.	४४	१७	व.	२२	५१	२०	२	१२	१९	मकर	२२	४०	५	४२	१८	५७	०	१७	४०	३	भ. २२/५१ से ५१/१९ तक,
३३	१३	७	चं.	१९	५६	उ.षा.	६	४२	शु.	३९	४७	ब.	१९	५६	२१	३	१३	२०	मकर			५	४१	१८	५८	०	१८	३८	१४	यूरेनस भर. में ११/१८,
३३	१७	८	मं.	१८	४६	श्रव.	६	५४	शु.	३६	४०	कौ.	१८	४६	२२	४	१४	२१	कुम्भ	३७	३८	५	४०	१८	५९	०	१९	३६	२४	पंचक प्रारम्भ ३७/३८, शुक्र वृष में १९/२४,
३३	२१	९	बु.	१९	१६	धनि.	८	४७	ब्र.	३४	५२	ग.	१९	१६	२३	५	१५	२२	कुम्भ			५	३९	१८	५९	०	२०	३४	३३	भ. ५०/१८ बाद,
३३	२४	१०	गु.	२१	२१	शत.	१२	१३	ऐं.	३४	१४	वि.	२१	२१	२४	६	१६	२३	कुम्भ			५	३८	१९	०	०	२१	३२	४१	भ. २१/२१ तक, बुध रोहि. में ३०/७,
३३	२८	११	शु.	२४	४६	पू.भा.	१७	०	वै.	३४	३८	बा.	२४	४६	२५	७	१७	२४	मीन	०	४०	५	३८	१९	१	०	२२	३०	४७	वरूथिनी एकादशी व्रत (स.), श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती,
३३	३२	१२	श.	२९	२०	उ.भा.	२२	५४	वि.	३५	५२	तै.	२९	२०	२६	८	१८	२५	मीन			५	३७	१९	१	०	२३	२८	५१	शनि प्रदोष व्रत,
३३	३५	१३	र.	३४	४६	रेव.	२९	४१	प्री.	३७	४५	ग.	२	३	२७	९	१९	२६	मेष	२९	४१	५	३६	१९	२	०	२४	२६	५५	भ. ३४/४६ बाद, पंचक समाप्त २९/४१,
३३	३९	१४	चं.	४०	५०	अश्वि.	३७	४	आ.	४०	७	वि.	७	५१	२८	१०	२०	२७	मेष			५	३५	१९	३	०	२५	२४	५६	भ. ७/५१ तक,
३३	४२	३०	मं.	४७	१७	भर.	४४	५०	सौ.	४२	४६	च.	१४	३	२९	११	२१	२८	मेष			५	३४	१९	३	०	२६	२२	५७	सूर्य कृत्ति. में १७/२७, भौमवती अमा,

(A) मई प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.), ४ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	२	१	१०	०	९	१	७
१९	२१	१३	५	४	२९	१९	१८	१८
३६	४३	१३	३८	३७	३५	३	११	११
२५	४९	५४	१६	१३	३६	३८	५७	५७
५८	[illegible]	३६	१०७	८	७३	१	३	३
९	५०	३१	३	३	५२	५०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. २	श्रवण ४	आर्द्रा २	कृत्ति. ३	धनि. ४	कृत्ति. १	श्रव. ३	रोहि. ३	ज्ये. १

कुण्डली सूर्योदय (४ मई)

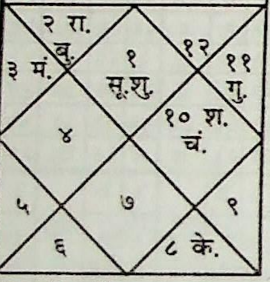

लोकभविष्य—उच्चस्थ सूर्य एवं मंगल पर गुरु की दृष्टि होने से देश के प्रमुख राजनीतिज्ञ देशहित में नये आयाम उपस्थित करेंगे। क्योंकि शनि-मंगल का षडष्टक होने से विपक्षी दलों का आक्रोश भी स्पष्ट दिखाई देगा। अन्ततः संवत्सरेश मंगल पर गुरु की दृष्टि स्थिति नियन्त्रण में करेगी।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—२९/३० अप्रैल के लगभग बुध की स्थिति वायदा बाजारों में तेजी करेगी। ४ मई के लगभग सभी अनाज, तेल, तिलहन, कपास, सोना-चांदी में अच्छी तेजी बनेगी। पक्षारम्भ में शेयर बाजार भी तेज रहेंगे।

नोट करें—६ से १० मई के मध्य बाजारों में जोरदार तेजी या मन्दी के झटके आयेंगे।

आकाशलक्षण—अप्रैल २८, २९, मई १, २, ६, ११ को शनि-मंगल की पोजीशन कहीं भयंकर सूखा, कहीं वायुवेग, अग्निकाण्ड, बाढ़ व तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से फसलों को हानि करेगी। उत्तरी भारत के कुछ प्रान्तों में वायुवेग के साथ वर्षा भी हो।

कुण्डली सूर्योदय (११ मई)

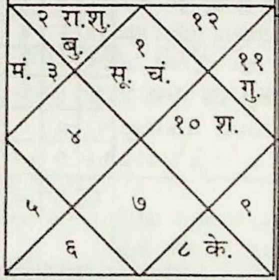

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ११ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	२	१	१०	१	९	१	७
२६	१७	१६	१६	५	८	१९	१७	१७
२२	४८	२९	५४	३०	१२	१४	४१	४१
५७	३५	५१	१७	३८	२१	२९	४१	४१
५७	७०७	३६	८१	७	७३	१	३	३
५९	५५	३७	४३	४	४५	९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. ४	भर. ३	आर्द्रा ३	रोहि. ३	धनि. ४	कृत्ति. ४	श्रव. ३	रोहि. ३	ज्ये. १

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, वैशाख शुक्ल पक्ष ३

(१२ से २६ मई, सन् २०२१ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

प्रातः गु. याम्योत्तर वृत्त के पास और श. इससे पश्चिम की ओर होगा। सायं बु.शु. पश्चिम क्षितिज में और मं. इनसे कुछ ऊपर की ओर उठा होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. वैशाख	तारीखें अं. मई	तारीखें श. वैशाख	तारीखें मु. रमज़ान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३३	४६	१	बु.	५३	५०	कृत्ति.	५२	४४	शो.	४५	३१	किं.	२०	३३	३०	१२	२२	२९	वृष	१	४८	५	३४	१९	४	०	२७	२०	५५	शुक्र रोहि. में २७/२४,
३३	४९	२	गु.	६०	०	रोहि.	६०	०	अ.	४८	११	बा.	२७	२	३१	१३	२३	३०	वृष			५	३३	१९	५	०	२८	१८	५३	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, श्रीशिवाजी जयन्ती,
३३	५२	२	शु.	०	१४	रोहि.	०	२८	सु.	५०	३१	कौ.	०	१४	ज्ये.१	१४	२४	श.१	मिथुन	३४	१३	५	३२	१९	५	०	२९	१६	४८	सं. सूर्य वृष में ४४/४०, मु. ३०, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (A)
३३	५५	३	श.	६	१०	मृग.	७	४६	धृ.	५२	१८	ग.	६	१०	२	१५	२५	२	मिथुन			५	३२	१९	६	१	०	१४	४२	भ. ३८/४३ बाद,
३३	५९	४	र.	११	१५	आर्द्रा	१४	१५	शू.	५३	१७	वि.	११	१५	३	१६	२६	३	मिथुन			५	३१	१९	७	१	१	१२	३४	भ. ११/१५ तक, मंगल पुन. में ४४/०, बुध मृग. में १६/४२,
३४	२	५	चं.	१५	१०	पुन.	१९	३७	गं.	५३	१३	बा.	१५	१०	४	१७	२७	४	कर्क	३	२३	५	३१	१९	७	१	२	१०	२५	आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
३४	५	६	मं.	१७	३७	पुष्य	२३	३१	वृ.	५१	५३	तै.	१७	३७	५	१८	२८	५	कर्क			५	३०	१९	८	१	३	८	१३	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती (उ.भा.), श्रीगंगा जन्म (देखें पृ.13),
३४	८	७	बु.	१८	२२	आश्ले.	२५	४६	ध्रु.	४९	८	व.	१८	२२	६	१९	२९	६	सिंह	२५	४६	५	२९	१९	९	१	४	६	०	भ. १८/२२ से ४७/५१ तक,
३४	११	८	गु.	१७	१५	मघा	२६	१०	व्या.	४४	५३	ब.	१७	१५	७	२०	३०	७	सिंह			५	२९	१९	९	१	५	३	४६	सूर्य सायन मिथुन में ४९/६, श्रीजानकी जयन्ती, (B)
३४	१३	९	शु.	१४	१६	पू.फा.	२४	४४	ह.	३९	९	कौ.	१४	१६	८	२१	३१	८	कन्या	३९	५	५	२८	१९	१०	१	६	१	३०	
३४	१६	१०	श.	९	३०	उ.फा.	२१	३३	व.	३२	२	ग.	९	३०	९	२२	ज्ये.१	९	कन्या			५	२८	१९	१०	१	६	५९	१२	भ. ३६/१६ बाद, गुरु शत. १ में ३/२२, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ, (C)
३४	१९	११	र.	३	७	हस्त	१६	५१	सि.	२३	४१	वि.	३	७	१०	२३	२	१०	तुला	४३	५९	५	२७	१९	११	१	७	५६	५३	भ. ३/७ तक, शुक्र मृग. में १९/४०, शनि वक्री २३/२२, (D)
अवम		१२	र.	५५	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय,
३४	२१	१३	चं.	४६	५०	चित्रा	१०	५५	व्य.	१४	२२	कौ.	२१	९	११	२४	३	११	तुला			५	२७	१९	१२	१	८	५४	३२	सोमप्रदोष व्रत,
३४	२४	१४	मं.	३७	३८	स्वाती विशा.	४ ५६	६ ५०	व. प.	४ ५३	२० ५७	ग.	१०	४४	१२	२५	४	१२	वृश्चिक	४३	३८	५ ५	२७	१९	१२	१	९	५२	१०	भ. ३७/३८ बाद, सूर्य रोहि. में ८/१८, श्रीनृसिंह जयन्ती, (E)
३४	२६	१५	बु.	२८	१३	अनु.	४९	३२	शि.	४३	३०	वि.	२	५८	१३	२६	५	१३	वृश्चिक			५	२६	१९	१३	१	१०	४९	४६	भ. २/५८ तक, बुध मिथुन में ८/४५, श्रीकूर्म जयन्ती, (F)

(A) शुव्वाल मु. प्रारम्भ, श्रीपरशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया (रोहिणी योग ५ घ. ४४ मि. तक), (B) (देखें पृ. 13), (C) मोहिनी एकादशी व्रत (स्मा.), (देखें पृ. 13), (D) मोहिनी एकादशी व्रत (वै.), त्रिस्पृशा महाद्वादशी, (E) श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें प.13), (F) वैशाखी पूर्णिमा, श्री बुद्ध पूर्णिमा, श्रीबुद्ध जयन्ती, वैशाख स्नान समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २० मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	२	१	१०	१	९	१	७
५	७	२१	२६	६	१९	१९	१७	१७
३	३०	५९	४२	२८	१५	२१	२१	२१
४६	५४	५२	४१	३४	२६	२५	४	४
५७	८०९	३६	४३	५	७३	०	३	३
४४	१	४३	५९	३९	३४	१६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	३	१	२	४	३	३	३	१
कृत्ति.	मघा	पुन.	मृग.	धनि.	रोहि.	श्रव.	रोहि.	ज्ये.

कुण्डली सूर्योदय (२० मई)

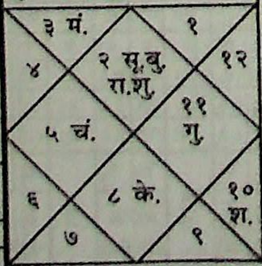

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच बुधवार हैं। अतः प्रजा में सुख-समृद्धि रहे एवं सरकार प्रगतिप्रद योजनाओं को क्रियान्वित करे—

"बुधस्य पंचवाराश्चेज्जायन्ते चेन्निरन्तरम्।
प्रजानां सुखमत्यन्तं सुभिक्षं च प्रजायते॥"

इस पक्ष में जलवायु विचार से समय सुखद रहेगा। लेकिन भारत की प्रभाव राशि मकर में शनि की स्थिति प्रधान नेतृत्व के लिए उलझनपूर्ण रहेगी।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—१४ मई को सूर्य, बुध, शुक्र, राहु—ये ग्रह वृष राशि में आकर किसी राजनैतिक उलझन से बाजारों में जोरदार उठापटक करेंगे, सावधान रहें। सोना-चांदी के व्यापारी १४, १५, २० मई को तेजी से लाभ ले सकेंगे। २१, २२ मई को बाजार नीचे रहें। हां, पक्षान्त में तेजी से लाभ रहे।

आकाशलक्षण—१२ से १६ मई, २१, २३, २५ एवं २६ मई को महाराष्ट्र, भूटान, उड़ीसा, शिलांग, काठमाण्डु, जम्मू-कश्मीर, उ.प्र. एवं हि.प्र. में वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (२६ मई)

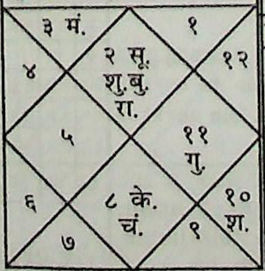

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २६ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	२	१	१०	१	९	१	७
१०	४	२५	२९	६	२६	१९	१७	१७
४९	१०	४०	५७	५९	३६	२१	२	२
४६	१३	१८	४२	५९	३२	३८	०	०
५७	११०	३६	१६	४	७३	०	३	३
३५	३२	४७	७	३९	२७	१८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	१	२	२	१	१	३	३	१
रोहि.	अनु.	पुन.	मृग.	शत.	मृग.	श्रव.	रोहि.	ज्ये.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४

(२७ मई से १० जून, सन् २०२१ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

२ जून को बु. पश्चिम क्षितिज में विलीन हो जायेगा। प्रातः गु. याम्योत्तर वृत्तासन्न और श. इससे पश्चिम की ओर होगा। सायं शु. पश्चिम क्षितिज में और मं. इससे ऊपर होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. (ज्येष्ठ)	तारीखें अं. (मई)	तारीखें श. (ज्येष्ठ)	तारीखें मु. (शव्वाल)	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	२९	१	गु.	१९	२	ज्येष्ठा	४२	३७	सि.	३३	२०	कौ.	१९	२	१४	२७	६	१४	धनु	४२	३७	५	२६	१९	१३	१	११	४७	२१	
३४	३१	२	शु.	१०	२७	मूल	३६	३१	सा.	२३	४७	ग.	१०	२७	१५	२८	७	१५	धनु			५	२६	१९	१४	१	१२	४४	५५	भ. ३६/३७ बाद, शुक्र मिथुन में ४६/२५,
३४	३३	३	श.	२	५०	पू.षा.	३१	३५	शु.	१५	८	वि.	२	५०	१६	२९	८	१६	मकर	४५	३४	५	२५	१९	१५	१	१३	४२	२८	भ. २/५० तक, बुध वक्री ५६/३४, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
अवम		४	श.	५६	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
३४	३५	५	र.	५१	४९	उ.षा.	२८	१०	शु.	७	४०	कौ.	२४	१७	१७	३०	९	१७	मकर			५	२५	१९	१५	१	१४	४०	०	
३४	३८	६	चं.	४९	१३	श्रव.	२६	३१	ब्र. ऐं.	१ ५७	३४ ०	ग.	२०	३६	१८	३१	१०	१८	कुम्भ	५६	२४	५	२५	१९	१६	१	१५	३७	३१	भ. ४९/१३ बाद, पंचक प्रारम्भ ५६/२४,
३४	३९	७	मं.	४८	२४	धनि.	२६	४६	वै.	५४	०	वि.	१८	४९	१९	जू.१	११	१९	कुम्भ			५	२४	१९	१६	१	१६	३५	१	भ. १८/४९ तक, राहु रोहि. २, केतु अनु ४ में ५५/१०, जून प्रारम्भ,
३४	४१	८	बु.	४९	३२	शत.	२८	५७	वि.	५२	३२	बा.	१८	५७	२०	२	१२	२०	कुम्भ			५	२४	१९	१७	१	१७	३२	३०	मंगल कर्क में ३/३७, वक्री बुध वृष में ५२/३, बुध पश्चिम (A)
३४	४३	९	गु.	५२	२६	पू.भा.	३२	५६	प्री.	५२	२६	तै.	२०	५७	२१	३	१३	२१	मीन	१६	४८	५	२४	१९	१७	१	१८	२९	५९	शुक्र आर्द्रा में १३/३७,
३४	४५	१०	शु.	५६	४९	उ.भा.	३८	२७	आ.	५३	२९	व.	२४	३७	२२	४	१४	२२	मीन			५	२४	१९	१८	१	१९	२७	२७	भ. २४/३७ से ५६/४९ तक,
३४	४६	११	श.	६०	०	रेव.	४५	१०	सौ.	५५	२५	ब.	२९	३४	२३	५	१५	२३	मेष	४५	१०	५	२४	१९	१८	१	२०	२४	५४	पंचक समाप्त ४५/१०,
३४	४८	११	र.	२	१९	अश्वि.	५२	३८	शो.	५७	५५	बा.	२	१९	२४	६	१६	२४	मेष			५	२४	१९	१९	१	२१	२२	२१	अपरा एकादशी व्रत (स.) (देखें पृ.14), भद्रकाली (B)
३४	४९	१२	चं.	८	३२	भर.	६०	०	अ.	६०	०	तै.	८	३२	२५	७	१७	२५	मेष			५	२३	१९	१९	१	२२	१९	४७	मंगल पुष्य में २९/६, सोमप्रदोष व्रत,
३४	५१	१३	मं.	१५	२	भर.	०	२९	अ.	०	४१	व.	१५	२	२६	८	१८	२६	वृष	१७	२९	५	२३	१९	२०	१	२३	१७	१२	भ. १५/२ से ४८/१५ तक, सूर्य मृग. में ३/१३,
३४	५२	१४	बु.	२१	२७	कृत्ति.	८	२०	सु.	३	२७	श.	२१	२७	२७	९	१९	२७	वृष			५	२३	१९	२०	१	२४	१४	३७	
३४	५३	३०	गु.	२७	२७	रोहि.	१५	५२	धृ.	५	५९	ना.	२७	२७	२८	१०	२०	२८	मिथुन	४९	२५	५	२३	१९	२०	१	२५	१२	०	वट सावित्री व्रत (अमा पक्ष), भावुका अमा, शनैश्चर जयन्ती,

(A) में अस्त १९ घं. १७ मि., (B) एकादशी (पं.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	२	२	१०	२	९	१	७
१७	१३	२९	०	७	५	१९	१६	१६
३२	५३	५७	१३	२८	१०	१७	३९	३९
३०	३३	५५	१०	५३	१७	३०	४४	४४
५७	७६०	३६	१५	३	७३	०	३	३
२९	२४	५१	१६	२५	११	५९	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	३	३	३	१	४	३	२	४
रोहि.	शत.	पुन.	मृग.	शत.	मृग.	श्रव.	रोहि.	अनु.

कुण्डली सूर्योदय (२ जून)

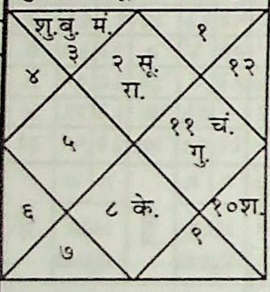

लोकभविष्य—सूर्य-राहु एवं बुध वृष राशि में हैं। इस चान्द्रमास में पांच गुरुवार एवं शनि-मंगल का समसप्तक शुरु हो रहा है। यह स्थिति प्रधान नेताओं के लिए भारी कठिनाइयों को लेकर आ रही है। कहीं पश्चिमी देशों में भयंकर प्राकृतिक आपदा से हानि, कहीं युद्धाग्नि से वातावरण अशान्त हो,—

"युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्ष-कारकौ।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—मई २८, जून १ के लगभग शनि-मंगल का समसप्तक योग घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सूत, सण, रुई, गुवार आदि में भयंकर तेजी का झटका बनायेगा।

२, ७, ८ जून को भी वायदा एवं हाजर के व्यापारी तेजी से लाभ उठायेंगे। इन दिनों सोना, तांबा में भी तेजी रहे।

कुण्डली सूर्योदय (१० जून)

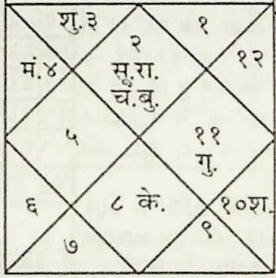

आकाशलक्षण—मई २८, १ से ३ जून एवं ७, ८ जून को उत्तराखण्ड, बिहार, हि.प्र., पंजाब, हरियाणा एवं उ.प्र. में कहीं वायुवेग के साथ बादलचाल, खण्डवृष्टि के योग हैं। शनि-मंगल का योग कहीं भयंकर दुर्भिक्ष की स्थिति भी बनायेगा।

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १० जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	३	१	१०	२	९	१	७
२५	२०	४	२६	७	१४	१९	१६	१६
१२	१४	५३	४७	५१	५६	७	१४	१४
०	४९	३	२७	७	२३	४	१७	१७
५७	७१५	३६	३३	१	७३	१	३	३
२३	९	५७	३४	५६	११	४४	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	४	१	२	१	३	३	२	४
मृग.	रोहि.	पुष्य	मृग.	शत.	आर्द्रा	श्रव.	रोहि.	अनु.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५

(११ से २४ जून, सन् २०२१ ई.)

उत्तर-दक्षिणायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।

२० जून के बाद बु. प्रातः पूर्व में दृश्य होगा। प्रातःकाल गु. पश्चिम कपाल में और श. पश्चिम क्षितिज की ओर होगा। सायं मं. शु. पश्चिम में दिखाई देंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. ज्येष्ठ	तारीखें अं. जून	तारीखें श. ज्येष्ठ	तारीखें मु. शव्वाल	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५४	१	शु.	३२	४८	मृग.	२२	४७	शू.	८	३	किं.	०	७	२९	११	२१	२९	मिथुन			५	२३	११	२१	१	२६	९	२३	
३४	५५	२	श.	३७	१६	आर्द्रा	२८	५४	गं.	९	३१	बा.	५	२	३०	१२	२२	३०	मिथुन			५	२३	११	२१	१	२७	६	४५	चन्द्रदर्शन, मु. ४५,
३४	५६	३	र.	४०	४२	पुन.	३४	२	वृ.	१०	१५	तै.	८	५९	३१	१३	२३	जि.१	कर्क	१७	५१	५	२३	११	२२	१	२८	४	७	रम्भा तृतीया, श्रीमहाराणा प्रताप जयन्ती (राज.), जिल्काद मु. प्रारम्भ,
३४	५७	४	चं.	४२	५७	पुष्य	३८	१	ध्रु.	१०	६	व.	११	५१	३२	१४	२४	२	कर्क			५	२३	११	२२	१	२९	१	२७	भ. ११/५१ से ४२/५७ तक, शुक्र पुन. में ९/२१, बलिदान (A)
३४	५७	५	मं.	४३	५३	आश्ले.	४०	४५	व्या.	८	५९	ब.	१३	२५	आ.१	१५	२५	३	सिंह	४०	४५	५	२३	११	२२	१	२९	५८	४७	स. सूर्य मिथुन में १/३६, मु. १५, पुण्यकाल मध्याह्न तक,
३४	५८	६	बु.	४३	२५	मघा	४२	७	ह.	६	४९	कौ.	१३	३९	२	१६	२६	४	सिंह			५	२४	११	२३	२	०	५६	५	वक्री बुध रोहि. में ४२/४२, विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य षष्ठी,
३४	५८	७	गु.	४१	३१	पू.फा.	४२	३	व. सि.	३ ५९	३१ ३	ग.	१२	२८	३	१७	२७	५	कन्या	५६	४८	५	२४	११	२३	२	१	५३	२३	भ. ४१/३१ बाद,
३४	५९	८	शु.	३८	९	उ.फा.	४०	३३	व्य.	५३	२५	वि.	९	४९	४	१८	२८	६	कन्या			५	२४	११	२३	२	२	५०	४०	भ. ९/४९ तक,
३४	५९	९	श.	३३	२४	हस्त	३७	४०	व.	४६	४०	बा.	५	४६	५	१९	२९	७	कन्या			५	२४	११	२४	२	३	४७	५६	
३४	५९	१०	र.	२७	२३	चित्रा	३३	३२	प.	३८	५५	ग.	०	२३	६	२०	३०	८	तुला	५	४५	५	२४	११	२४	२	४	४५	१२	भ. ५३/५२ बाद, गुरु वक्री ३८/०, बुध पूर्व में उदित (B)
३४	५९	११	चं.	२०	१८	स्वाती	२८	२२	शि.	३०	१९	वि.	२०	१८	७	२१	३१	९	तुला			५	२४	११	२४	२	५	४२	२६	भ. २०/१८ तक, सूर्य सायन कर्क में ९/४, दक्षिणायन (C)
३४	५९	१२	मं.	१२	२४	विशा.	२२	२४	सि.	२१	५	बा.	१२	२४	८	२२	आ.१	१०	वृश्चिक	८	५६	५	२५	११	२४	२	६	३९	४१	सूर्य आर्द्रा में ०/३१, बुध मार्गी ५५/१२, शुक्र कर्क में २२/१९, (D)
३४	५९	१३	बु.	३	५८	अनु.	१५	५७	सा.	११	२६	तै.	३	५८	९	२३	२	११	वृश्चिक			५	२५	११	२४	२	७	३६	५४	भ. ५५/१९ बाद,
अवम		१४	बु.	५५	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३४	५९	१५	गु.	४६	५१	ज्ये.	९	२३	शु. शु.	१ ५२	४० ५	वि.	२१	५	१०	२४	३	१२	धनु	९	२३	५	२५	११	२४	२	८	३४	७	भ. २१/५ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष),

(A) दिन श्रीगुरु अर्जुनदेवजी, (B) ५ घं. २४ मि., श्रीगंगा दशहरा, (C) एवं वर्षा ऋतु प्रारम्भ, निर्जला एकादशी व्रत (स.), (D) शक आषाढ़ प्रारम्भ, चम्पा द्वादशी, भौम प्रदोष व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १८ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	३	१	१०	२	९	१	७
२	०	९	२२	८	२४	१८	१५	१५
५०	४७	४८	५०	१	४१	५०	४१	४१
४१	१	५९	३७	१६	१५	५०	५१	५१
५७	८२६	३७	१८	०	७३	२	३	३
१६	५४	२	३३	२५	०	२५	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३ मृग.	२ उ.फा.	२ पुष्य	४ रोहि.	१ शत.	२ पुन.	३ श्रव.	२ रोहि.	४ अनु.

कुण्डली सूर्योदय (१८ जून)

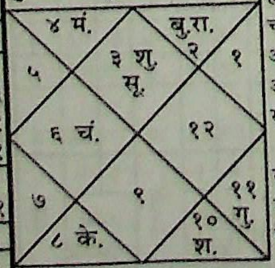

लोकभविष्य—इस पक्ष में भारत की प्रभाव राशि में मकरस्थ शनि है। शनि एवं कर्कस्थ मंगल का समसप्तक सीमाप्रान्तों पर विशेषतः चीन, नेपाल, पाक एवं जम्मू-कश्मीर की सीमाओं पर घोर अशान्तिकारक रहेगा। मिथुनस्थ सूर्य-शुक्र को राहु एवं नीच मंगल आक्रान्त कर रहे हैं। यह देश के नेतृत्व को चिन्ताग्रस्त रखेगा। परन्तु सूर्य, शुक्र पर गुरु की दृष्टि शुभ है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—१५ से १९ जून के मध्य कपास, रुई, सरसों, सूत, घी, तिलहन, गेहूं, चावल आदि अनाज, सोना-चांदी में अच्छी तेजी रहे। २२, २३ जून को बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे। पक्षान्त में मन्दी रहे।

कुण्डली सूर्योदय (२४ जून)

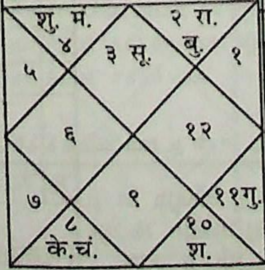

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २४ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	७	३	१	१०	३	९	१	७
८	२७	१३	२२	८	१	१८	१५	१५
३४	४२	३१	१	०	५८	३५	२९	२९
७	३८	२१	८	५०	५३	१०	४६	४६
५७	८१४	३७	७	०	७२	२	३	३
१२	२०	६	२४	४५	५१	५३	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१ आर्द्रा	४ ज्ये.	४ पुष्य	४ रोहि.	१ शत.	४ पुन.	३ श्रव.	२ रोहि.	४ अनु.

आकाशलक्षण—२०, २१, २२ एवं २४ जून को उ.खण्ड, हि.प्र., जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश एवं उत्तरी भारत के कुछ भागों में वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं। १४ से १८ जून के मध्य शनि-मंगल की स्थिति कहीं भयंकर बाढ़, तूफान से हानिकारक भी है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६

(२५ जून से १० जुलाई, सन् २०२१ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु ।

प्रातः बु. पूर्व क्षितिज में, गु. पश्चिम कपाल में और श. पश्चिम क्षितिज की ओर दिखाई देगा। सायं मं. शु. पश्चिम में होंगे।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	आषाढ़	जून	आषाढ़	जिल्काद		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५८	१	शु.	३८	५४	मूल पू.षा.	३ ५७	६ २९	ब्र.	४२	५८	बा.	१२	५२	११	२५	४	१३	धनु			५	२५	१९	२५	२	९	३१	१९	शुक्र पुष्य में ७/०, नेप्च्यून वक्री ४८/४६,
३४	५८	२	श.	३१	५४	उ.षा.	५२	५५	ऐं.	३४	४०	तै.	५	२४	१२	२६	५	१४	मकर	११	१२	५	२६	१९	२५	२	१०	२८	३२	भ. ५९/० बाद,
३४	५७	३	र.	२६	१०	श्रवण	४९	४८	वै.	२७	२६	वि.	२६	१०	१३	२७	६	१५	मकर			५	२६	१९	२५	२	११	२५	४३	भ. २६/१० तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३४	५६	४	चं.	२२	४	धनि.	४८	२४	वि.	२१	३३	बा.	२२	४	१४	२८	७	१६	कुम्भ	१८	५२	५	२६	१९	२५	२	१२	२२	५५	पंचक प्रारम्भ १८/५२, बुध मृग. में ४६/५८,
३४	५६	५	मं.	१९	५१	शत.	४८	५६	प्री.	१७	११	तै.	१९	५१	१५	२९	८	१७	कुम्भ			५	२७	१९	२५	२	१३	२०	७	मंगल आश्ले. में ५/०,
३४	५५	६	बु.	१९	३८	पू.भा.	५१	२९	आ.	१४	२५	व.	१९	३८	१६	३०	९	१८	मीन	३५	४१	५	२७	१९	२५	२	१४	१७	१९	भ. १९/३८ से ५०/३३ तक,
३४	५४	७	गु.	२१	२६	उ.भा.	५५	५३	सौ.	१३	१५	ब.	२१	२६	१७	जु.१	१०	१९	मीन			५	२७	१९	२५	२	१५	१४	३०	जुलाई प्रारम्भ,
३४	५३	८	शु.	२५	२	रेव.	६०	०	शो.	१३	३१	कौ.	२५	२	१८	२	११	२०	मीन			५	२८	१९	२५	२	१६	११	४२	
३४	५२	९	श.	३०	६	रेव.	१	५३	अ.	१४	५८	ग.	३०	६	१९	३	१२	२१	मेष	१	५३	५	२८	१९	२५	२	१७	८	५५	पंचक समाप्त १/५३,
३४	५०	१०	र.	३६	७	अश्वि.	१	१	सु.	१७	१५	व.	३	६	२०	४	१३	२२	मेष			५	२९	१९	२५	२	१८	६	७	भ. ३/६ से ३६/७ तक,
३४	४९	११	चं.	४२	३३	भर.	१६	४६	धृ.	१९	५८	ब.	९	२०	२१	५	१४	२३	वृष	३३	४६	५	२९	१९	२५	२	१९	३	२०	सूर्य पुन. में ५९/२८, योगिनी एकादशी व्रत (स.),
३४	४८	१२	मं.	४८	५२	कृत्ति.	२४	३६	शू.	२२	४३	कौ.	१५	४३	२२	६	१५	२४	वृष			५	३०	१९	२५	२	२०	०	३३	शुक्र आश्ले. में ७/०,
३४	४६	१३	बु.	५४	३६	रोहि.	३२	१	गं.	२५	९	ग.	२१	४४	२३	७	१६	२५	वृष			५	३०	१९	२४	२	२०	५७	४६	भ. ५४/३६ बाद, बुध मिथुन में १३/५७, प्रदोष व्रत,
३४	४४	१४	गु.	५९	२५	मृग.	३८	३९	वृ.	२६	५९	वि.	२७	०	२४	८	१७	२६	मिथुन	५	२६	५	३०	१९	२४	२	२१	५४	५९	भ. २७/० तक,
३४	४३	३०	शु.	६०	०	आर्द्रा	४४	१६	ध्रु.	२८	३	च.	३१	१६	२५	९	१८	२७	मिथुन			५	३१	१९	२४	२	२२	५२	१३	
३४	४१	३०	श.	३	८	पुन.	४८	४५	व्या.	२८	१२	ना.	३	८	२६	१०	१९	२८	कर्क	३२	४४	५	३१	१९	२४	२	२३	४९	२७	शनैश्चरी अमा,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	३	१	१०	३	९	१	७
१६	१७	१८	२५	७	११	१८	१५	१५
११	३१	२८	१३	४९	४१	१०	४	४
४२	३७	३०	३५	३१	१	७	१९	१९
५७	७२६	३७	४५	२	७२	३	३	३
१३	४७	१२	११	१६	४०	२६	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा ३	रेव. १	आश्ले. १	मृग. १	शत. १	पुष्य ३	श्रव. ३	रोहि. २	अनु. ४

कुण्डली सूर्योदय (२ जुला.)

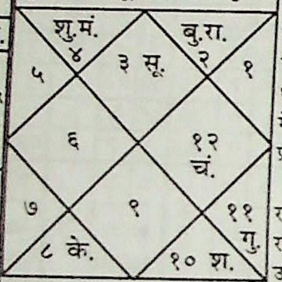

लोकभविष्य—इस पक्ष में सूर्य का राहु-बुध एवं मंगल-शुक्र के साथ कर्तरी योग बन रहा है, साथ ही शनि-मंगल का समसप्तक भी चल रहा है। अतः कुछ कृषिक्षेत्र दुर्भिक्षग्रस्त रहें, कुछ क्षेत्र अतिवर्षण से क्षतिग्रस्त होंगे। देश में अनेकत्र भयंकर अग्निकाण्डों से जन-धनहानि भी होगी। विदेशों से सीमाप्रान्त विवादास्पद रहेंगे। इस पक्ष में पांच शनिवार एवं शुक्रवार होने से कहीं भयंकर भूकम्पादि प्राकृतिक प्रकोप से हानिभय भी है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में बाजार कुछ तेज रहें। ऊन, रुई, सूत, चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चांदी तेज रहें। २८ जून के करीब से चांदी, रुई में जून के अन्त तक जोरदार उठापटक रहे। जुलाई के प्रारम्भ में शेयर बाजार एवं सोना, चांदी में तेजी-मन्दी रहेगी। ७ से ९ जुलाई तक सभी बाजार तेज रहें।

कुण्डली सूर्योदय (१० जुला.)

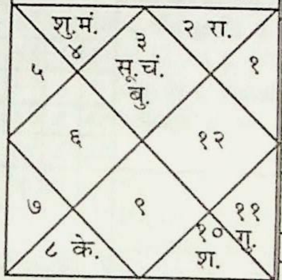

आकाशलक्षण—जून २५, २६, २९ एवं जुलाई ५, ६, ७ एवं ८, ९ को शनि-गुरु-मंगल एवं सूर्य की स्थिति के अनुसार अनेकत्र भारी बाढ़ व कहीं तूफान से हानि हो। चण्डीगढ़, दिल्ली, केरल, हि.प्र., उ.प्र. एवं उत्तरी भारत में वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं।

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १० जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	३	२	१०	३	९	१	७
२३	२३	२३	३	७	२१	१७	१४	१४
४९	१३	२६	१९	२६	२१	४०	३८	३८
२६	१४	३६	२	८	३७	५७	५३	५३
५७	७४७	३७	७९	३	७२	३	३	३
१४	१	२०	५६	४५	२८	५४	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. २	पुन. १	आश्ले. ३	मृग. ३	शत. १	आश्ले. २	श्रव. ३	रोहि. २	अनु. ४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७

(११ से २४ जुलाई, सन् २०२१ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

१८ जुलाई को बु. पूर्व क्षितिज में अदृश्य हो जायेगा। प्रातः गु. पश्चिम में और श. इससे नीचे क्षितिज में होगा। सायं मं. शु. पश्चिम क्षितिज के पास परस्पर आसन्न दिखाई देंगे।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	आषाढ़	जुलाई	आषाढ़	ज़िल्काद		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	३९	१	र.	५	३८	पुष्य	५२	३	ह.	२७	२५	ब.	५	३८	२७	११	२०	२९	कर्क			५	३२	१९	२४	२	२४	४६	४०	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, यूरेनस भर. ३ में १६/३६, आषाढ़ (A)
३४	३७	२	चं.	६	५७	आश्ले.	५४	१३	व.	२५	४३	कौ.	६	५७	२८	१२	२१	ज़ि.१	सिंह	५४	१३	५	३२	१९	२३	२	२५	४३	५४	बुध आर्द्रा में २५/१०, जिल्हिज्ज मु. प्रारम्भ,
३४	३५	३	मं.	७	७	मघा	५५	१८	सि.	२३	६	ग.	७	७	२९	१३	२२	२	सिंह			५	३३	१९	२३	२	२६	४१	८	भ. ३६/४० बाद,
३४	३३	४	बु.	६	१२	पू.फा.	५५	२१	व्य.	१९	३८	वि.	६	१२	३०	१४	२३	३	सिंह			५	३४	१९	२३	२	२७	३८	२२	भ. ६/१२ तक,
३४	३१	५	गु.	४	१६	उ.फा.	५४	२६	व.	१५	२१	बा.	४	१६	३१	१५	२४	४	कन्या	१०	१२	५	३४	१९	२२	२	२८	३५	३६	कुमार षष्ठी,
३४	२८	६	शु.	१	२०	हस्त	५२	३५	प.	१०	१८	तै.	१	२०	श्रा.१	१६	२५	५	कन्या			५	३५	१९	२२	२	२९	३२	५१	भ. ५७/२९ बाद, स. सूर्य कर्क में २८/१५, मु. ३०, (B)
अवम		७	शु.	५७	२९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
३४	२६	८	श.	५२	४५	चित्रा	४९	५२	शि.	४	३०	वि.	२५	६	२	१७	२६	६	तुला	२१	१९	५	३५	१९	२२	३	०	३०	५	भ. २५/६ तक, शुक्र मघा सिंह में ९/३७,
									सि.	५७	५९																			
३४	२४	९	र.	४७	१३	स्वाती	४६	२०	सा.	५०	४९	बा.	१९	५९	३	१८	२७	७	तुला			५	३६	१९	२१	३	१	२७	२०	बुध पूर्व में अस्त ५ घं. ३६ मि., आषाढ़ नवरात्र समाप्त,
३४	२१	१०	चं.	४०	५९	विशा.	४२	६	शु.	४३	४	तै.	१४	६	४	१९	२८	८	वृश्चिक	२८	११	५	३६	१९	२१	३	२	२४	३४	सूर्य पुष्य में ५७/४९, नवरात्र-पारणा,
३४	१८	११	मं.	३४	११	अनु.	३७	१८	शु.	३४	५२	व.	७	३४	५	२०	२९	९	वृश्चिक			५	३७	१९	२०	३	३	२१	४९	भ. ७/३४ से ३४/११ तक, मंगल मघा सिंह में ३०/४५, (C)
३४	१६	१२	बु.	२७	२	ज्ये.	३२	१०	ब्र.	२६	२२	ब.	०	३६	६	२१	३०	१०	धनु	३२	१०	५	३७	१९	२०	३	४	१९	४	प्रदोष व्रत,
३४	१३	१३	गु.	१९	४७	मूल	२६	५६	ऐं.	१७	४७	तै.	१९	४७	७	२२	३१	११	धनु			५	३८	१९	१९	३	५	१६	२०	सूर्य सायन सिंह में ३५/४५,
३४	१०	१४	शु.	१२	४२	पू.षा.	२१	५६	वै.	९	२०	व.	१२	४२	८	२३	श्रा.१	१२	मकर	३५	४५	५	३९	१९	१९	३	६	१३	३५	भ. १२/४२ से ३१/२७ तक, शक श्रावण प्रारम्भ, श्री शिव (D)
३४	७	१५	श.	६	८	उ.षा.	१७	३१	वि.	१	१८	ब.	६	८	९	२४	२	१३	मकर			५	३९	१९	१८	३	७	१०	५२	वक्री शनि श्रव. २ में ३८/३७, आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा (E)
									प्री.	५३	५७																			

(A) गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, श्री जगदीश रथोत्सव/रथयात्रा (पुरी) (पुष्य योग), (B) पुण्यकाल सारा दिन, विवस्वत् सप्तमी, (C) बुध पुन. में १५/३७, वक्री गुरु धनि. ४ में १२/९, हरिशयनी एकादशी व्रत (स.), श्रीविष्णु-शयनोत्सव, (D) शयनोत्सव, श्रीसत्यनारायण व्रत, कोकिला व्रत, (E) (व्यास-पूजा), चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १७ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	५	३	२	१०	३	९	१	७
०	२५	२७	१४	६	२९	१७	१४	१४
३०	०	४८	०	५६	४८	१२	१६	१६
५	५	१६	५५	२०	१०	४६	३७	३७
५७	८३१	३७	१०६	४	७२	४	३	३
१५	३३	२६	२२	५६	१४	११	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	१	४	३	१	४	३	२	४
पुन.	चित्रा	आश्ले.	आर्द्रा	शत.	आश्ले.	श्रव.	रोहि.	अनु.

कुण्डली सूर्योदय (१७ जुला.)

लोकभविष्य—आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को शनिवार होने से कुछ प्रान्तों में जलाभाव से दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी, कहीं पेयजल की समस्या बनेगी—

"अथवा दैव-योगेन शनिवारो भवेद्यदि।
जलशोषः प्रजानाशः छत्रभंगस्तदा भवेत्॥"

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार कुछ क्षेत्रों में आंधी, तूफान से हानि का भय भी है। इस पक्ष में मंगल-सूर्य का शनि के साथ समसप्तक कहीं युद्धाग्नि को जन्म दे सकता है। अग्निकाण्ड आदि से भी भीषण हानि हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—१० से १३ जुलाई तक तिलहन, अनाजों में एवं रुई में मन्दी रहे। १६ से २४ जुलाई के मध्य गेहूं आदि अनाज, सोना, तांबा, लोहा, घी एवं सारे तिलहन, दालें, खाण्ड, गुड़ आदि में जोरदार तेजी के झटके आयेंगे।

आकाशलक्षण—जुलाई १२, १६, १७, १९ एवं २४ जुलाई के मध्य शनि-मंगल एवं सूर्य की स्थिति कहीं भारी बाढ़, कहीं सूखा किंवा पेयजल की समस्या आदि से जनजीवन को संकट में डाल सकती है। उत्तरी एवं द.भारत विशेषरूप से प्रभावित रहेंगे।

कुण्डली सूर्योदय (२४ जुला.)

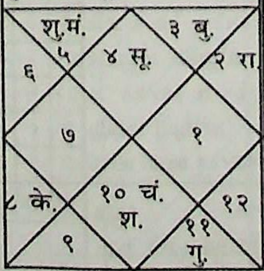

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २४ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	४	२	१०	४	९	१	७
७	५	२	२७	६	८	१६	१३	१३
१०	४३	१०	२४	१८	१२	४२	५४	५४
५१	३२	३८	२६	४४	५८	५०	२१	२१
५७	८५३	३७	१२३	५	७१	४	३	३
१७	२४	३३	२९	५७	५८	२२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	३	१	३	४	३	३	२	४
पुष्य	उ.षा.	मघा	पुन.	धनि.	मघा	श्रव.	रोहि.	अनु.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, श्रावण कृष्ण पक्ष ८

(२५ जुलाई से ८ अगस्त, सन् २०२१ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

बु. अदृश्य है। प्रातः गु. पश्चिम में और श. इससे नीचे डूबने को होगा। सायं मं.शु. पश्चिम क्षितिज में होंगे।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्तिकाल		नक्षत्र	समाप्तिकाल		योग	समाप्तिकाल		करण	समाप्तिकाल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	श्रावण	जुलाई	श्रावण	जिल्हिज्ज		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४	१	र.	०	२८	श्रव.	१४	३	आ.	४७	३५	कौ.	०	२८	१०	२५	३	१४	कुम्भ	४२	४७	५	४०	१९	१८	३	८	८	८	पंचक प्रारम्भ ४२/४७, बुध कर्क में १५/०, अशून्य शयन व्रत,
अवम		२	र.	५६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
३४	१	३	चं.	५३	५	धनि.	११	५३	सौ.	४२	२५	व.	२४	३१	११	२६	४	१५	कुम्भ			५	४०	१९	१७	३	९	५	२६	भ. २४/३१ से ५३/५ तक, बुध पुष्य में ५०/५२,
३३	५८	४	मं.	५१	५८	शत.	११	२०	शो.	३८	४१	ब.	२२	३१	१२	२७	५	१६	मीन	५७	९	५	४१	१९	१६	३	१०	२	४४	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३३	५५	५	बु.	५२	४७	पू.भा.	१२	३७	अ.	३६	२८	कौ.	२२	२२	१३	२८	६	१७	मीन			५	४२	१९	१६	३	११	०	३	शुक्र पू.फा. में १५/४५,
३३	५२	६	गु.	५५	३०	उ.भा.	१५	४९	सु.	३५	४६	ग.	२४	८	१४	२९	७	१८	मीन			५	४२	१९	१५	३	११	५७	२३	भ. ५५/३० बाद,
३३	४९	७	शु.	५९	५४	रेव.	२०	४७	धृ.	३६	२७	वि.	२७	३९	१५	३०	८	१९	मेष	२०	४७	५	४३	१९	१४	३	१२	५४	४४	भ. २७/३९ तक, पंचक समाप्त २०/४७,
३३	४५	८	श.	६०	०	अश्वि.	२७	१४	शू.	३८	१२	बा.	३२	४२	१६	३१	९	२०	मेष			५	४४	१९	१४	३	१३	५२	६	
३३	४२	८	र.	५	३०	भर.	३४	३९	गं.	४०	४०	कौ.	५	३०	१७	अ.१	१०	२१	वृष	५१	३६	५	४४	१९	१३	३	१४	४९	२९	अगस्त प्रारम्भ,
३३	३८	९	चं.	११	४८	कृत्ति.	४२	२५	वृ.	४३	२१	ग.	११	४८	१८	२	११	२२	वृष			५	४५	१९	१२	३	१५	४६	५३	भ. ४४/५७ बाद, सूर्य आश्ले. में ५४/५२, बुध आश्ले. में ११/३७,
३३	३५	१०	मं.	१८	६	रोहि.	४९	५५	ध्रु.	४५	४९	वि.	१८	६	१९	३	१२	२३	वृष			५	४५	१९	११	३	१६	४४	१९	भ. १८/६ तक, राहु रोहि. १, केतु अनु. ३ में ४७/४०,
३३	३१	११	बु.	२३	४९	मृग.	५६	३६	व्या.	४७	३९	बा.	२३	४९	२०	४	१३	२४	मिथुन	२३	२३	५	४६	१९	११	३	१७	४१	४६	कामिका एकादशी व्रत (स.),
३३	२८	१२	गु.	२८	२७	आर्द्रा	६०	०	ह.	४८	३४	तै.	२८	२७	२१	५	१४	२५	मिथुन			५	४७	१९	१०	३	१८	३९	१३	प्रदोष व्रत,
३३	२४	१३	शु.	३१	४३	आर्द्रा	२	५	व.	४८	२३	ग.	०	५	२२	६	१५	२६	कर्क	५०	१६	५	४७	१९	९	३	१९	३६	४२	भ. ३१/४३ बाद, श्रावण-शिवरात्रि,
३३	२१	१४	श.	३३	२९	पुन.	६	८	सि.	४७	१	वि.	२	३७	२३	७	१६	२७	कर्क			५	४८	१९	८	३	२०	३४	१२	भ. २/३७ तक,
३३	१७	३०	र.	३३	४८	पुष्य	८	४५	व्य.	४४	३२	च.	३	३८	२४	८	१७	२८	कर्क			५	४८	१९	७	३	२१	३१	४३	बुध मघा सिंह में ४९/२५, शुक्र उ.फा. में २६/०, हरियाली अमा,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	४	३	१०	४	९	१	७
१४	१९	७	१४	५	१७	१६	१३	१३
४९	४३	११	९	२७	४७	७	२८	२८
२९	०	३१	३४	३९	३२	२६	५५	५५
५७	७०९	३७	१२५	६	७१	४	३	३
२४	१७	४२	५	५४	३९	२८	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	२	३	४	४	२	२	२	४
पुष्य	भर.	मघा	पुष्य	धनि.	पू.फा.	श्रव.	रोहि.	अनु.

कुण्डली सूर्योदय (१ अग.)

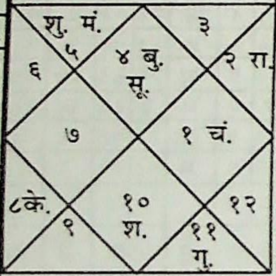

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच रविवार हैं। सूर्य-बुध का शनि के साथ समसप्तकयोग भी चल रहा है। अतः कुछ प्रान्तों में खड़ी फसल नष्ट हो, दुर्भिक्ष की स्थिति बने। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु से हानि हो एवं कहीं प्राकृतिक प्रकोप से जन-धनहानि भी सम्भव है—

"यत्रमासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्।
दुर्भिक्षं छत्रभंगः स्यात्तदात्र महद्भयम्॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—२५ जुलाई के लगभग सूर्य, बुध का शनि के साथ दृष्टि सम्बन्ध होगा। रुई, चांदी, सोना, दालें, गुड़, तिलहन, घी एवं अनाज तेज रहेंगे। २७ जुलाई के लगभग बाजार जोरदार मन्दे होंगे। ८ अगस्त के लगभग सोना, चांदी, तिलहन तेज रहें। शेयर बाजार मन्दे रहेंगे।

कुण्डली सूर्योदय (८ अग.)

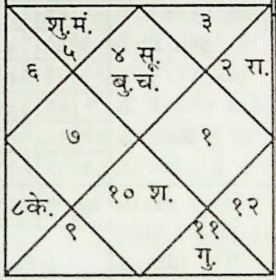

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ८ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	४	३	१०	४	९	१	७
२१	१४	११	२८	४	२६	१५	१३	१३
३१	३७	३५	२२	३७	८	३६	६	६
४३	८	५१	२७	२४	११	१३	४०	४०
५७	७८०	३७	११६	७	७१	४	३	३
३२	२५	५१	४०	३०	२१	२५	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	४	४	४	४	४	२	२	३
आश्ले.	पुष्य	मघा	आश्ले.	धनि.	पू.फा.	श्रव.	रोहि.	अनु.

आकाशलक्षण—जुलाई २५, २८, २९ को अनेक प्रान्तों में भारी बाढ़, वर्षा, तूफान, कहीं दुर्भिक्ष से हानि हो। उड़ीसा, चण्डीगढ़, दिल्ली, उ.प्र., उ.खण्ड, हि.प्र. आदि में वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, श्रावण शुक्ल पक्ष ९

(९ से २२ अगस्त, सन् २०२१ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा-शरद् ऋतु।

१५ अग. को मं. पश्चिम में अस्त और इसी दिन बु. पश्चिम में उदित होगा। प्रातः गु. पश्चिम में और श. पश्चिम क्षितिजासन्न होगा। सायं शु. पश्चिम कपाल में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. श्रावण	अं. अगस्त	श. श्रावण	मु. ज़िल्हिज्ज	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३३	१३	१	चं.	३२	४८	आश्ले.	१०	१	व.	४१	१	किं.	३	१८	२५	९	१८	२९	सिंह	१०	१	५	४९	१९	६	३	२२	२९	१५	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,
३३	९	२	मं.	३०	४१	मघा	१०	६	प.	३६	३७	बा.	१	४४	२६	१०	१९	मु.१	सिंह			५	५०	१९	५	३	२३	२६	४९	मंगल पू.फा. में ४४/१०, मुहर्रम (हिजरी सन् १४४३) मु. प्रारम्भ,
३३	५	३	बु.	२७	३९	पू.फा.	९	१३	शि.	३१	३१	ग.	२७	३९	२७	११	२०	२	कन्या	२३	५१	५	५०	१९	४	३	२४	२४	२३	भ. ५५/५१ बाद, शुक्र कन्या में १४/१५, मधुस्रवा तृतीया(A)
३३	१	४	गु.	२३	५५	उ.फा.	७	३३	सि.	२५	५०	वि.	२३	५५	२८	१२	२१	३	कन्या			५	५१	१९	३	३	२५	२१	५८	भ. २३/५५ तक,
३२	५८	५	शु.	१९	३८	हस्त	५	१९	सा.	१९	४४	बा.	१९	३८	२९	१३	२२	४	तुला	३४	२	५	५१	१९	३	३	२६	१९	३४	नागपंचमी, श्रीकल्कि जयन्ती, ऋक् उपाकर्म (देखें पृ. 14),
३२	५४	६	श.	१४	५७	चित्रा स्वाती	२ ५९	४० ३९	शु.	१३	१७	तै.	१४	५७	३०	१४	२३	५	तुला			५	५२	१९	२	३	२७	१७	११	
३२	५०	७	र.	९	५७	विशा.	५६	२१	शु. ब्र.	६ ५९	३५ ४१	व.	९	५७	३१	१५	२४	६	वृश्चिक	४२	१२	५	५३	१९	१	३	२८	१४	४९	भ. ९/५७ से ३७/२१ तक, मंगल अस्त १९ घं. १ मि.,(B)
३२	४६	८	चं.	४	४१	अनु.	५२	५१	ऐं.	५२	३५	ब.	४	४१	भा.१	१६	२५	७	वृश्चिक			५	५३	१९	०	३	२९	१२	२८	सं. सूर्य मघा सिंह में ४८/३०, मु. ३०, पुण्यकाल अगले (C)
अवम		९	चं.	५९	१४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी तिथिक्षय,
३२	४२	१०	मं.	५३	३७	ज्ये.	४९	१२	वै.	४५	२१	तै.	२६	२५	२	१७	२६	८	धनु	४९	१२	५	५४	१८	५९	४	०	१०	८	
३२	३७	११	बु.	४७	५९	मूल	४५	३१	वि.	३८	५	व.	२०	४८	३	१८	२७	९	धनु			५	५४	१८	५७	४	१	७	४९	भ. २०/४८ से ४७/५९ तक, वक्री गुरु धनि. ३ में १/१०, (D)
३२	३३	१२	गु.	४२	२८	पू.षा.	४१	५६	प्री.	३०	५४	ब.	१५	१३	४	१९	२८	१०	मकर	५६	५	५	५५	१८	५६	४	२	५	३१	शुक्र हस्त में ४१/१२,
३२	२९	१३	शु.	३७	१६	उ.षा.	३८	४१	आ.	२३	५६	कौ.	१	५२	५	२०	२९	११	मकर			५	५६	१८	५५	४	३	३	१४	यूरेनस वक्री ३/१०, प्रदोष व्रत,
३२	२५	१४	श.	३२	४०	श्रव.	३६	२	सौ.	१७	२३	ग.	४	५८	६	२१	३०	१२	मकर			५	५६	१८	५४	४	४	०	५९	भ. ३२/४० बाद, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृ. 14),
३२	२१	१५	र.	२८	५७	धनि.	३४	१५	शो.	११	२९	वि.	०	५०	७	२२	३१	१३	कुम्भ	५	०	५	५७	१८	५३	४	४	५८	४४	भ. ०/५० तक, पंचक प्रारम्भ ५/०, सूर्य सायन कन्या में (E)

(A) (संधारा तीज), (B) बुध पश्चिम में उदित १९ घं. १ मि., गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, श्रीदुर्गाष्टमी (देखें पृ. 14), भारत स्वतन्त्रता दिवस, (C) दिन मध्याह्न तक, बुध पू.फा. में २/२१, (D) पवित्रा एकादशी व्रत (स.), (E) ५२/४९, शरद् ऋतु प्रारम्भ, श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबन्धन (राखी) (६घं.१७ मि. बाद), श्री अमरनाथ यात्रा (ज.क.), शुक्ल-कृष्ण-यजु उपाकर्म,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १६ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	७	४	४	१०	५	९	१	७
२९	३	१६	१३	३	५	१५	१२	१२
१२	५८	३९	१४	३५	३७	१	४१	४१
२८	२	१४	१५	५९	३३	२३	१४	१४
५७	८४९	३८	१०४	७	७०	४	३	३
४०	२८	१	४७	५१	५६	१४	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	२	२	४	४	३	२	२	३
आश्ले.	अनु.	पू.फा.	मघा	धनि.	उ.फा.	श्रव.	रोहि.	अनु.

कुण्डली सूर्योदय (१६ अग.)

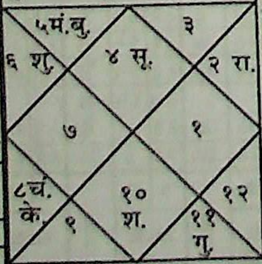

लोकभविष्य—इस पक्ष में सूर्य-मंगल-बुध सिंहस्थ हैं। इन पर गुरु ग्रह की दृष्टि भी है। इस प्रकार सूर्य-बुध क्रूर ग्रहों पर गुरु की दृष्टि जनता में नानाविध रोगों से परेशानी करे एवं अनावृष्टि से कुछ प्रान्त दुर्भिक्ष ग्रस्त रहें, कुछ प्रान्तों में भयंकर वर्षा से प्रलयंकारी दृश्य भी उपस्थित होंगे—

"क्रूराणां सह सौम्यैश्च यदि स्यात् समसप्तकम्।
अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीड़ा महत्यपि॥"

शनि-मंगल का षडष्टक सीमाप्रान्तों को अशान्त रखे एवं सामुदायिक उपद्रवों का भय भी रहेगा।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—११ अगस्त के लगभग हाजर एवं वायदा बाजारों में जोरदार उठापटक चलेगी। १४ अगस्त को जोरदार मन्दी में बाजार रहेंगे। १६ अगस्त को सू.मं.बु. की स्थिति तिलहन, घी, दालवाना, रुई, कपास में अच्छी तेजी करेगी। १६/१७ अग. को बाजार मन्दे, पक्षान्त में अच्छी तेजी रहे।

आकाशलक्षण—१०, ११, १६, १७, १८ एवं १९ अगस्त को भारत के अनेक प्रान्तों में कहीं बाढ़, कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। महाराष्ट्र, उ.प्र., चण्डीगढ़, दिल्ली एवं उ.खण्ड, बिहार में वायु-वर्षा का जोर रहे।

कुण्डली सूर्योदय (२२ अग.)

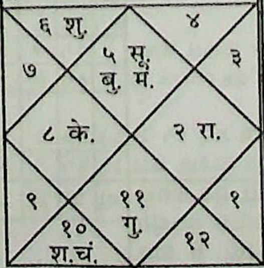

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २२ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	९	४	४	१०	५	९	१	७
४	२८	२०	२३	२	१२	१४	१२	१२
५८	३५	२७	२१	४८	४२	३६	२२	२२
४४	५१	३८	२१	५८	१२	३०	९	९
५७	८१७	३८	९६	७	७०	४	३	३
४७	४६	९	१४	५१	३४	०	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	२	३	४	३	२	२	२	३
मघा	धनि.	पू.फा.	पू.फा.	धनि.	हस्त	श्रव.	रोहि.	अनु.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १०																तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(२३ अगस्त से ७ सितम्बर, सन् २०२१ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरद् ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. भाद्रपद	अं. अगस्त	श. भाद्रपद	मु. मुहर्रम				सूर्योदय		सूर्यास्त						मं. अस्त है। प्रातः गु. पश्चिम क्षितिजासन्न होगा। सायं बु. पश्चिम क्षितिज के पास, इससे ऊपर शु. पश्चिम कपाल में होगा। श. सायंकाल पूर्व में उदय होकर पूरी रात दिखाई देगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	१७	१	चं.	२६	२३	शत.	३३	४०	अ.	६	२८	कौ.	२६	२३	८	२३	भा.१	१४	कुम्भ			५	५७	१८	५२	४	५	५६	३१	शक भाद्रपद प्रारम्भ,
३२	१२	२	मं.	२५	१७	पू.भा.	३४	३२	सु. धृ.	२ ५९	३३ ५२	ग.	२५	१७	९	२४	२	१५	मीन	१९	१०	५	५८	१८	५१	४	६	५४	१९	भ. ५५/३४ बाद, बुध उ.फा. में ३/४२,
३२	८	३	बु.	२५	५०	उ.भा.	३७	२	शू.	५८	३२	वि.	२५	५०	१०	२५	३	१६	मीन			५	५९	१८	५०	४	७	५२	९	भ. २५/५० तक, कज्जली तृतीया, श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी(A)
३२	४	४	गु.	२८	७	रेव.	४१	१४	गं.	५८	३२	बा.	२८	७	११	२६	४	१७	मेष	४१	१४	५	५९	१८	४९	४	८	५०	१	पंचक समाप्त ४१/१४, बुध कन्या में १३/२२,
३१	५९	५	शु.	३२	३	अश्वि.	४६	५७	वृ.	५९	४२	तै.	३२	३	१२	२७	५	१८	मेष			६	०	१८	४८	४	९	४७	५४	
३१	५५	६	श.	३७	२०	भर.	५३	५५	ध्रु.	६०	०	ग.	४	४१	१३	२८	६	१९	मेष			६	०	१८	४६	४	१०	४५	४९	भ. ३७/२० बाद,
३१	५१	७	र.	४३	३१	कृत्ति.	६०	०	ध्रु.	१	४७	वि.	१०	२७	१४	२९	७	२०	वृष	१०	४७	६	१	१८	४५	४	११	४३	४६	भ. १०/२७ तक,
३१	४६	८	चं.	४९	५५	कृत्ति.	१	३३	व्या.	४	१९	बा.	१६	४३	१५	३०	८	२१	वृष			६	१	१८	४४	४	१२	४१	४४	सूर्य पू.फा. में ३८/१६, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स.), (जयन्ती (B)
३१	४२	९	मं.	५५	५३	रोहि.	९	१३	ह.	६	५३	तै.	२२	५४	१६	३१	९	२२	मिथुन	४२	५५	६	२	१८	४३	४	१३	३९	४५	मंगल उ.फा. में ४२/४५, शुक्र चित्रा में ३/६, गोकुलाष्टमी (C)
३१	३८	१०	बु.	६०	०	मृग.	१६	१९	व.	८	५९	व.	२८	१२	१७	सि.१	१०	२३	मिथुन			६	३	१८	४२	४	१४	३७	४७	भ. २८/१२ बाद, सितम्बर प्रारम्भ,
३१	३३	१०	गु.	०	४८	आर्द्रा	२२	१३	सि.	१०	१२	वि.	०	४८	१८	२	११	२४	मिथुन			६	३	१८	४०	४	१५	३५	५२	भ. ०/४८ तक, बुध हस्त में ११/१५,
३१	२९	११	शु.	४	११	पुन.	२६	३४	व्य.	१०	१३	बा.	४	११	१९	३	१२	२५	कर्क	१०	३८	६	४	१८	३९	४	१६	३३	५८	अजा एकादशी व्रत (स.),
३१	२४	१२	श.	५	५०	पुष्य	२९	११	व.	८	५१	तै.	५	५०	२०	४	१३	२६	कर्क			६	४	१८	३८	४	१७	३२	६	अगस्त्य उदित, शनि प्रदोष व्रत,
३१	२०	१३	र.	५	४१	आश्ले.	३०	४	प.	६	५	व.	५	४१	२१	५	१४	२७	सिंह	३०	४	६	५	१८	३७	४	१८	३०	१६	भ. ५/४१ से ३४/४८ तक, मंगल कन्या में ५४/४३, शुक्र (D)
३१	१५	१४	चं.	३	५३	मघा	२९	२४	शि. सि.	२ ५६	१ ४६	श.	३	५३	२२	६	१५	२८	सिंह			६	५	१८	३६	४	१९	२८	२८	कुशोत्पाटिनी अमा (देखें पृ. 15), पिठोरी अमा,
३१	११	३०	मं.	०	४०	पू.फा.	२७	२७	सा.	५०	३५	ना.	०	४०	२३	७	१६	२९	कन्या	४१	४७	६	६	१८	३४	४	२०	२६	४१	भौमवती अमा,

(A) व्रत (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), बहुला चतुर्थी, (B) योग) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), दूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृ. 14), (C) (नन्दोत्सव), श्रीगुग्गा नवमी, (D) तुला में ४६/५२, पर्युषण पर्व (जैन),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३० अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ १२ ४१ ४४	१ ९ २६ २६	४ २५ ३३ २८	५ ५ ३२ १६	१० १ ४६ ४५	५ २२ ४ ४९	९ १४ ५ ५०	१ ११ ५६ ४३	७ ११ ५६ ४३
५८ १	७०३ ३६	३८ २१	८५ ३	७ ३३	७० १	३ ३६	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४ मघा	४ कृत्ति.	४ पू.फा.	३ उ.फा.	३ धनि.	४ हस्त	२ श्रव.	१ रोहि.	३ अनु.

कुण्डली सूर्योदय (३० अग.)

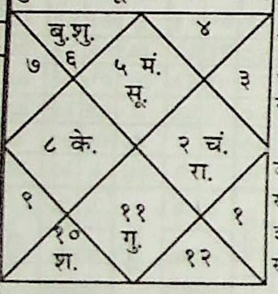

लोकभविष्य—गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार इस पक्ष में पाक, नेपाल एवं अफगानिस्तान, बंगलादेश आदि में प्राकृतिक प्रकोप से कहीं जन-धनहानि के योग हैं। भारत में ५ सितं. के लगभग तक कहीं अग्निकाण्ड किंवा सीमाप्रान्तों पर शत्रुदेशकृत् उपद्रवों से जन- धनहानि से सचेष्ट रहना होगा।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—अगस्त २४ एवं २६ की ग्रहस्थिति उड़द, मसूर, मूंग एवं अरहर आदि में तेजीकारक है। गुड़, शक्कर, खाण्ड एवं हल्दी में भी तेजी रहे। रुई और चांदी में मन्दी सम्भव है। ३० अगस्त को बाजार तेज रहें। ५ सितं. के लगभग ऊन, सूत, रुई, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा।

कुण्डली सूर्योदय (७ सितं.)

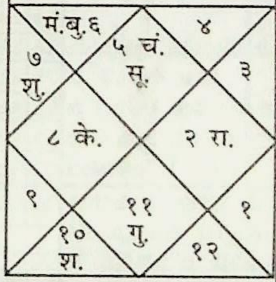

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ७ सितम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ २० २६ ४१	४ १९ ५९ १४	५ ० ४१ १	५ १६ १० ७	१० ० ४८ १७	६ १ २३ २	९ १३ ३८ ५३	१ ११ ३१ १७	७ ११ ३१ १७
५८ १५	८३४ २४	३८ ३४	७२ २०	६ ५४	६९ २७	३ ३	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३ पू.फा.	२ पू.फा.	२ उ.फा.	२ हस्त	३ धनि.	३ चित्रा	२ श्रव.	१ रोहि.	३ अनु.

आकाशलक्षण—२३ से ३१ अगस्त एवं सितं. २, ३, ५, ६ को नेपाल, दार्जीलिंग, उ.प्र., हि.प्र., उ.खण्ड एवं कश्मीर आदि में अच्छी व कहीं बादलचाल किंवा खण्डवृष्टि के योग हैं। इन दिनों प्राकृतिक भयावह आपदाएं भी परेशानी का कारण बनेंगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११

(८ से २० सितम्बर, सन् २०२१ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरद् ऋतु।

मं. अस्त रहेगा। सायंकाल बु. पश्चिम क्षितिज में और शु. पश्चिम कपाल में होगा। इस समय गु. श. पूर्व में होंगे।

त्रयोदश दिनपक्ष

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. भाद्रपद	तारीखें अं. सितम्बर	तारीखें श. भाद्रपद	तारीखें मु. मुहर्रम	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	मं.	५६	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३१	६	२	बु.	५१	८	उ.फा.	२४	३१	शु.	४३	४३	बा.	२३	४३	२४	८	१७	३०	कन्या			६	७	१८	३३	४	२१	२४	५६	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, मेला डेराबाबा गोसाई आणां-कुराली (पं.),
३१	२	३	गु.	४५	२८	हस्त	२०	५८	शु.	३६	२५	तै.	१८	१८	२५	९	१८	स.१	तुला	४९	२	६	७	१८	३२	४	२२	२३	१३	सफर मु प्रारम्भ, साम उपकर्म, गौरी तृतीया, हरितालिका तृतीया (A)
३०	५७	४	शु.	३९	३५	चित्रा	१७	४	ब्र.	२८	५३	व.	१२	३०	२६	१०	१९	२	तुला			६	८	१८	३१	४	२३	२१	३२	भ. १२/३० से ३९/३५ तक, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (B)
३०	५३	५	श.	३३	४२	स्वाती	१३	५	ऐं.	२१	२०	ब.	६	३८	२७	११	२०	३	वृश्चिक	५५	१०	६	८	१८	२९	४	२४	१९	५२	शुक्र स्वा. में ३२/५२, ऋषि पंचमी, संवत्सरी महापर्व (जैन),
३०	४८	६	र.	२८	०	विशा.	९	१२	वै.	१३	५४	कौ.	०	५१	२८	१२	२१	४	वृश्चिक			६	९	१८	२८	४	२५	१८	१३	
३०	४३	७	चं.	२२	३४	अनु.	५	३४	वि. प्री.	६ ५९	३९ ४२	व.	२२	३४	२९	१३	२२	५	वृश्चिक			६	९	१८	२७	४	२६	१६	३७	भ. २२/३४ से ५०/४ तक, सूर्य उ.फा. में २२/२५, बुध चित्रा (C)
३०	३९	८	मं.	१७	२८	ज्ये. मूल	२ ५९	१७ २२	आ.	५३	२	ब.	१७	२८	३०	१४	२३	६	धनु	२	१७	६	१०	१८	२५	४	२७	१५	२	वक्री गुरु धनि. २ मकर में २०/४६, श्रीराधाष्टमी,
३०	३४	९	बु.	१२	४७	पू.षा.	५६	५२	सौ.	४६	४३	कौ.	१२	४७	३१	१५	२४	७	धनु			६	१०	१८	२४	४	२८	१३	२८	श्रीचन्दनवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
३०	३०	१०	गु.	८	३३	उ.षा.	५४	५३	शो.	४०	४८	ग.	८	३३	आ.१	१६	२५	८	मकर	११	१८	६	११	१८	२३	४	२९	११	५६	भ. ३६/४३ बाद, सं. सूर्य कन्या में ४७/३६, मु. ४५, (D)
३०	२५	११	शु.	४	५०	श्रव.	५३	२९	अ.	३५	२१	वि.	४	५०	२	१७	२६	९	मकर			६	१२	१८	२२	५	०	१०	२६	भ. ४/५० तक, पद्मा एकादशी व्रत (स.), श्रीवामन जयन्ती, (E)
३०	२०	१२	श.	१	४७	धनि.	५२	५१	सु.	३०	२७	बा.	१	४७	३	१८	२७	१०	कुम्भ	२३	२	६	१२	१८	२०	५	१	८	५७	पंचक प्रारम्भ २३/२, शनि प्रदोष व्रत,
अवम		१३	श.	५९	२९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
३०	१६	१४	र.	५८	९	शत.	५३	७	धृ.	२६	१५	ग.	२८	४९	४	१९	२८	११	कुम्भ			६	१३	१८	१९	५	२	७	३०	भ. ५८/९ बाद, श्रीअनन्त चतुर्दशी व्रत,
३०	११	१५	चं.	५७	५७	पू.भा.	५४	३०	शू.	२२	५२	वि.	२८	२	५	२०	२९	१२	मीन	३९	२	६	१३	१८	१८	५	३	६	५	भ. २८/२ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी श्राद्ध/पूर्णिमा (F)

(A) श्रीवराह जयन्ती, (B) (चन्द्रास्त २० घं. ५२ मि.), श्री सिद्धिविनायक व्रत, हरितालिका चतुर्थी, (C) में २४/२७, वक्री शनि श्रव. १ में ३७/१०, मुक्ताभरण (सन्तान) सप्तमी व्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ, (D) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, (E) श्रवण द्वादशी, विष्णु शृंखल योग (देखें पृ. 15), (F) का महालय श्राद्ध, महालय (पितृपक्ष) प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १४ सितम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	५	५	१०	६	९	१	७
२७	२९	५	२३	०	९	१३	११	११
१५	४	११	५३	२	४१	१९	९	९
२	४४	३२	३७	१७	१८	६	२	२
५८	८४०	३८	५६	६	६८	२	३	३
२६	५५	४६	५२	४	४८	३१	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	४	३	१	३	१	१	१	३
उ.फा.	ज्ये.	उ.फा.	चित्रा	धनि.	स्वा.	श्रव.	रोहि.	अनु.

कुण्डली सूर्योदय (१४ सितं.)

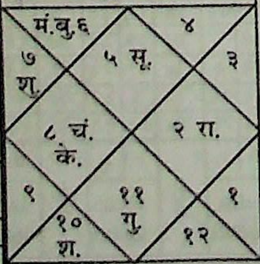

लोकभविष्य—गुरु-शनि दोनों वक्री हैं तथा दोनों मकर राशि में हैं। अतः यह योग प्राकृतिक आपदा भूकम्प, अग्निकाण्ड, तूफान आदि से जन-धनहानि कारक है। खड़ी फसलों का नाश भी सम्भव है—

"यदा जीवयुतो मन्दो जीवाद् वा सप्तमे स्थितः।
तदा प्रजा विनश्यन्ति भूयश्चान्न-परिक्षयः॥"

मकर नाम राशि प्रधान राजनीतिज्ञों के लिए यह योग लगभग १९ नवं. तक विशेष सावधानी का है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख— इन दिनों वक्री शनि श्रवण में एवं १३ सितं. को सूर्य उ.फा. में आकर तेल, तिलहन, रुई, सूत, सोना, चांदी, घी, दालबाना, नारियल में अच्छी तेजी करेगा। यह तेजी १६ सितं. तक रहेगी।

आकाशलक्षण—९ से १७ सितं. के मध्य एवं २० सितं. के लगभग हि.प्र., कश्मीर, उ.खण्ड, दार्जीलिंग एवं चीरापुंजी में कहीं बादलचाल, कहीं खण्डवृष्टि, कहीं वायुवेग के योग हैं। हि.प्र., उ.खण्ड एवं कश्मीर के कुछ भागों में हिमपात के समाचार भी मिलेंगे।

कुण्डली सूर्योदय (२० सितं.)

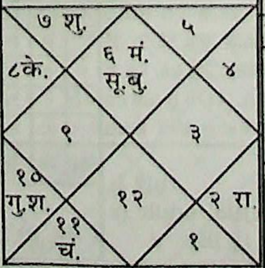

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २० सितम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	१०	५	५	९	६	९	१	७
३	२१	९	२८	२९	१६	१३	१०	१०
६	६	४	४८	२७	१८	५	४९	४९
५	५८	२८	१२	५९	३३	१९	५८	५८
५८	७८०	३८	३६	५	६८	१	३	३
३७	३५	५५	२९	११	९	५९	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	१	४	२	२	३	१	१	३
उ.फा.	पू.भा.	उ.फा.	चित्रा	धनि.	स्वा.	श्रव.	रोहि.	अनु.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, आश्विन कृष्ण पक्ष १२

(२१ सितम्बर से ६ अक्टूबर, सन् २०२१ ई.) दक्षिणायन, उत्तर-दक्षिण गोल, शरद् ऋतु।

मं. अस्त है। बु. भी ३ अक्तू. को पश्चिम में अस्त हो जायेगा। सायं शु. पश्चिम कपाल में और गु. श. पूर्व में होंगे।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
															आश्विन	सितम्बर	भाद्रपद	सफर												
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३०	७	१	मं.	५९	५	उ.भा.	५७	१०	गं.	२०	२७	बा.	२८	३१	६	२१	३०	१३	मीन			६	१४	१८	१६	५	४	४	४२	मंगल हस्त में २३/४५, प्रतिपदा का श्राद्ध,
३०	२	२	बु.	६०	०	रेव.	६०	०	वृ.	१९	६	तै.	३०	२१	७	२२	३१	१४	मीन			६	१४	१८	१५	५	५	३	२०	बुध तुला में ५/१३, सूर्य सायन तुला में ४६/३३, दक्षिणगोल (A)
२९	५७	२	गु.	१	३८	रेव.	१	१२	ध्रु.	१८	५१	ग.	१	३८	८	२३	आ.१	१५	मेष	१	१२	६	१५	१८	१४	५	६	२	०	भ. ३३/३७ बाद, पंचक समाप्त १/१२, शुक्र विशा. में १३/२७, (B)
२९	५३	३	शु.	५	३५	अश्वि.	६	३४	व्या.	१९	४०	वि.	५	३५	९	२४	२	१६	मेष			६	१६	१८	१३	५	७	०	४३	भ. ५/३५ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चतुर्थी का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध,
२९	४८	४	श.	१०	५०	भर.	१३	११	ह.	२१	२३	बा.	१०	५०	१०	२५	३	१७	वृष	३०	१	६	१६	१८	११	५	७	५९	२८	पंचमी का श्राद्ध,
२९	४३	५	र.	१६	५९	कृत्ति.	२०	३९	व.	२३	४५	तै.	१६	५९	११	२६	४	१८	वृष			६	१७	१८	१०	५	८	५८	१५	चन्द्र षष्ठी व्रत, (इस दिन कोई तिथिश्राद्ध नहीं है (देखें पृ. 15)
२९	३९	६	चं.	२३	३४	रोहि.	२८	२९	सि.	२६	२२	व.	२३	३४	१२	२७	५	१९	वृष			६	१७	१८	९	५	९	५७	४	भ. २३/३४ से ५६/४८ तक, सूर्य हस्त में १/३, बुध वक्री १०/५५, (C)
२९	३४	७	मं.	२९	५७	मृग.	३६	४	व्य.	२८	४९	ब.	२९	५७	१३	२८	६	२०	मिथुन	२	२१	६	१८	१८	८	५	१०	५५	५५	श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त (देखें पृ. 15), सप्तमी का श्राद्ध,
२९	३०	८	बु.	३५	२८	आर्द्रा	४२	४६	व.	३०	३७	बा.	२	४३	१४	२९	७	२१	मिथुन			६	१८	१८	६	५	११	५४	४९	वक्री यूरेनस भर. २ में १६/३३, अष्टमी का श्राद्ध,
२९	२५	९	गु.	३९	३३	पुन.	४८	३	प.	३१	२१	तै.	७	३१	१५	३०	८	२२	कर्क	३१	५४	६	१९	१८	५	५	१२	५३	४५	नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
२९	२०	१०	शु.	४१	५०	पुष्य	५१	३३	शि.	३०	४४	व.	१०	४०	१६	अ.१	९	२३	कर्क			६	२०	१८	४	५	१३	५२	४३	भ. १०/४० से ४१/५० तक, वक्री बुध कन्या में ५१/६, (D)
२९	१६	११	श.	४२	६	आश्ले	५३	५	सि.	२८	३४	ब.	११	५८	१७	२	१०	२४	सिंह	५३	५	६	२०	१८	३	५	१४	५१	४४	शुक्र वृश्चिक में ८/३६, इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), एकादशी का श्राद्ध,
२९	११	१२	र.	४०	२२	मघा	५२	४२	सा.	२४	४८	कौ.	११	१४	१८	३	११	२५	सिंह			६	२१	१८	१	५	१५	५०	४६	बुध पश्चिम में अस्त १८ घं. १ मि., द्वादशी का श्राद्ध, (E)
२९	७	१३	चं.	३६	५०	पू.फा.	५०	३३	शु.	१९	३३	ग.	८	३६	१९	४	१२	२६	सिंह			६	२२	१८	०	५	१६	४९	५१	भ. ३६/५० बाद, सोम प्रदोष व्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध,
२९	२	१४	मं.	३१	४५	उ.फा.	४६	५९	शु.	१२	५९	वि.	४	१७	२०	५	१३	२७	कन्या	४	४५	६	२२	१७	५९	५	१७	४८	५९	भ. ४/१७ तक, शुक्र अनु. में ९/१२, राहु कृत्ति. ४, केतु (F)
२८	५७	३०	बु.	२५	३०	हस्त	४२	२१	ब्र. ऐं.	५ ५७	२२ ०	ना.	२५	३०	२१	६	१४	२८	कन्या			६	२३	१७	५८	५	१८	४८	८	प्लूटो मार्गी ४३/५२, गजच्छाया योग (सूर्योदय से १६ घं. ३५ मि. (G)

(A) प्रारम्भ, विषुव दिन, द्वितीया का श्राद्ध, (B) शक आश्विन प्रारम्भ, तृतीया का श्राद्ध, (C) षष्ठी का श्राद्ध (देखें पृ. 15), (D) दशमी का श्राद्ध, अक्तूबर प्रारम्भ, (E) संन्यासियो का श्राद्ध, मघा श्राद्ध, (F) अनु. २ में ४०/४५, चतुर्दशी (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध, (G) तक), सर्वपितृ अमा, चतुर्दशी/अमा/अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, महालय (पितृपक्ष) समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २९ सितम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	५	६	९	६	९	१	७
११	११	१४	१	२८	२६	१२	१०	१०
५४	१	५५	८	४७	२७	५०	२१	२१
४९	२९	५१	०	११	३१	४२	२१	२१
५८	७२३	३९	१६	३	६७	१	३	३
५६	२	१२	१७	४०	०	१०	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	२	२	३	२	२	१	१	३
हस्त	आर्द्रा	हस्त	चित्रा	धनि.	विशा.	श्रव.	रोहि.	अनु.

कुण्डली सूर्योदय (२९ सितं.)

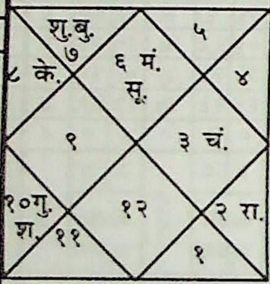

लोकभविष्य—तुला राशि में बुध-शुक्र का मेल एवं मकरस्थ गुरु-शनि होने से जनता में राजनीतिज्ञों के प्रति आक्रोश रहे। राजनीतिज्ञ परस्पर देशहित न देखते हुए स्वार्थपरक रहें। इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार एवं पांच बुधवार होने से कुछ प्रान्त प्राकृतिक आपदा से क्षतिग्रस्त रहें, किसी विशिष्ट व्यक्ति का पदरिक्त हो –

"यत्र मासे महीसूनोजांयन्ते पंचवाससः।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—२१ सितं. के लगभग से बुध-शुक्र की स्थिति रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, दालें, घी, नमक में तेजीकारक है। २७ सितं. के लगभग रुई, अनाजों में मन्दा रहे। २५ सितं. के लगभग सूर्य, बुध, मंगल की स्थिति घी, तिलहन, गुड़ादि में तेजी के बाद झटके की मन्दी करे। २७ सितं. को वायदा बाजार तेज। पक्षान्त में तेजी रहे।

कुण्डली सूर्योदय (६ अक्तू.)

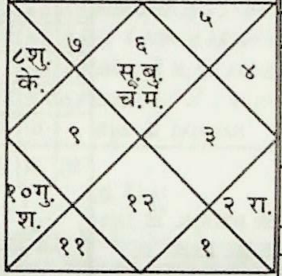

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ६ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	५	५	९	७	९	१	७
१८	१२	१९	२६	२८	४	१२	९	९
४८	३५	३०	३७	२५	१३	४४	५९	५९
८	३३	५८	५२	२४	३३	३९	६	६
५९	७४१	३९	६४	२	६५	०	३	३
११	३७	२६	४०	२०	५७	२८	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	१	३	१	२	१	१	४	२
हस्त	हस्त	हस्त	चित्रा	धनि.	अनु.	श्रव.	कृत्ति.	अनु.

आकाशलक्षण—सितम्बर २१, २३, २५, २६, २७, २९ एवं अक्तूबर २ से ६ तक लंका, भारत के पश्चिमी भूभाग पर कहीं बादलचाल, तूफान किंवा वायुवेग के साथ वर्षा हो। उ.भारत के तापमान में गिरावट आने लगेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, आश्विन शुक्ल पक्ष १३

(७ से २० अक्तूबर, सन् २०२१ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद् ऋतु।

मं. अस्त ही है। बु. १६ अक्तू. से प्रातः पूर्व में दृश्य हो जायेगा। सायं शु. पश्चिम कपाल में और श. गु. पूर्व कपाल में होंगे।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	आश्विन	अक्तूबर	आश्विन	सफर		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२८	५३	१	गु.	१८	२८	चित्रा	३७	२	वै.	४८	८	ब.	१८	२८	२२	७	१५	२९	तुला	९	४३	६	२३	१७	५६	५	१९	४७	१९	चन्द्रदर्शन, मु ३०, नाना-नानी का श्राद्ध, शारद (आश्विन) नवरात्र (A)
२८	४८	२	शु.	११	१	स्वा.	३१	२६	वि.	३९	६	कौ.	११	१	२३	८	१६	र.१	तुला			६	२४	१७	५५	५	२०	४६	३२	वक्री बुध हस्त में ५२/४९, रवि-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ,
२८	४४	३	श.	३	३०	विशा.	२५	५५	प्री.	३०	९	ग.	३	३०	२४	९	१७	२	वृश्चिक	१२	१५	६	२५	१७	५४	५	२१	४५	४७	भ. २९/५२ से ५६/१७ तक,
अवम		४	श.	५६	१७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
२८	३९	५	र.	४९	३२	अनु.	२०	४५	आ.	२१	३२	ब.	२२	५४	२५	१०	१८	३	वृश्चिक			६	२५	१७	५३	५	२२	४५	४	सूर्य चित्रा में ३३/१, उपांगललिता व्रत,
२८	३४	६	चं.	४३	३१	ज्येष्ठा	१६	१३	सौ.	१३	२५	कौ.	१६	३१	२६	११	१९	४	धनु	१६	१३	६	२६	१७	५२	५	२३	४४	२३	मंगल चित्रा में ४५/२८, शनि मार्गी ३/२५, सरस्वती आवाहन,
२८	३०	७	मं.	३८	२२	मूल	१२	२८	शो. अ.	५ ५९	५७ १५	ग.	१०	५६	२७	१२	२०	५	धनु			६	२७	१७	५१	५	२४	४३	४४	भ. ३८/२२ बाद, सरस्वती पूजन,
२८	२५	८	बु.	३४	११	पू.षा.	९	३८	सु.	५३	१८	वि.	६	१८	२८	१३	२१	६	मकर	२४	५	६	२७	१७	४९	५	२५	४३	७	भ. ६/१८ तक, सरस्वती के लिए बलिदान, श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी,
२८	२१	९	गु.	३१	१	उ.षा.	७	४७	धृ.	४८	१०	बा.	२	३६	२९	१४	२२	७	मकर			६	२८	१७	४८	५	२६	४२	३१	सरस्वती विसर्जन, महानवमी (पूजा/उपवास/बलिदान के लिए), (B)
२८	१६	१०	शु.	२८	५४	श्रव.	६	५७	शू.	४३	५३	ग.	२८	५४	३०	१५	२३	८	कुम्भ	३६	५६	६	२९	१७	४७	५	२७	४१	५७	भ. ५८/२२ बाद, पंचक प्रारम्भ ३६/५६, नवरात्र पारणा, (C)
२८	१२	११	श.	२७	५०	धनि.	७	१०	गं.	४०	२६	वि.	२७	५०	३१	१६	२४	९	कुम्भ			६	२९	१७	४६	५	२८	४१	२५	भ. २७/५० तक, बुध पूर्व में उदित ६ घं २९ मि., भरत मिलाप, (D)
२८	७	१२	र.	२७	५२	शत.	८	२५	वृ.	३७	५०	बा.	२७	५२	का.१	१७	२५	१०	मीन	५५	६	६	३०	१७	४५	५	२९	४०	५४	सं. सूर्य तुला में १६/४५, मु. ३०, पुण्यकाल सारा दिन, शुक्र (E)
२८	३	१३	चं.	२९	१	पू.भा.	१०	४५	ध्रु.	३६	६	तै.	२९	१	२	१८	२६	११	मीन			६	३१	१७	४४	६	०	४०	२६	बुध मार्गी ३५/३४, गुरु मार्गी ११/१५, सोम प्रदोष व्रत (देखें पृ.16),
२७	५८	१४	मं.	३१	११	उ.भा.	१४	११	व्या.	३५	१५	ग.	०	१०	३	१९	२७	१२	मीन			६	३१	१७	४३	६	१	३९	५९	भ. ३१/१९ बाद,
२७	५४	१५	बु.	३४	४५	रेव.	१८	४३	ह.	३५	१५	वि.	३	०	४	२०	२८	१३	मेष	१८	४३	६	३२	१७	४२	६	२	३९	३४	भ. ३/० तक, पंचक समाप्त १८/४३, कोजागर व्रत (लक्ष्मी- (F)

(A) प्रारम्भ, महाराजा अग्रसेन जयन्ती, **(B)** नवरात्र समाप्त, **(C)** विजयादशमी (दशहरा), आयुध पूजा, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, श्रीमाध्वाचार्य जयन्ती, **(D)** पापांकुशा एकादशी व्रत (स.), **(E)** ज्ये. में २७/१५, **(F)** इन्द्रपूजा), श्रीसत्यनारायण व्रत, शरत् पूर्णिमा, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, कार्त्तिक स्नान प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १३ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	५	५	९	७	९	१	७
२५	२३	२४	१८	२८	११	१२	९	९
४३	५२	७	४८	१३	५१	४३	३६	३६
७	५५	४२	१५	८	२१	२९	५१	५१
५९	८२७	३९	५२	०	६४	०	३	३
२४	४८	३९	५३	५७	३६	१५	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा १	पू.षा. ४	चित्रा १	हस्त ३	धनि. १	अनु. ३	श्रव. १	कृत्ति. ४	अनु. १

कुण्डली सूर्योदय (१३ अक्तू.)

लोकभविष्य—आश्वि. शु. तृतीया को शनिवार है, अतः कहीं भयंकर अग्निकाण्ड से जन-धनहानि हो, जनता महंगाई से परेशान रहे—

"आश्विने हि तृतीयायां यदि भौमः शनैश्चरः।
तदाग्निः प्रबलो भूम्यामन्नादीनां च महर्घता॥"

एकादशी शनिवारी होने से कहीं सत्ताहस्तान्तरण हो, सीमाप्रान्त असुरक्षित रहें—"एकादश्यां शनौ तस्मिन् छत्रभंगो भवेद् भुवि॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—८ अक्तूबर को बुध दालों एवं अनाजों में मन्दी करे, लेकिन रुई, कपास, सोना, चांदी में तेजी का रुख रहे। १० अक्तूबर के लगभग वायदा एवं हाजर बाजारों में जोरदार तेजी रहे। १७ अक्तू. को तुलास्थ सूर्य अच्छी तेजी करेगा, तुरन्त नफा बुक करें, वरना तेल, तिलहन में मन्दी रहेगी। १९ अक्तू. के लगभग बाजार मन्दे रहें।

कुण्डली सूर्योदय (२० अक्तू.)

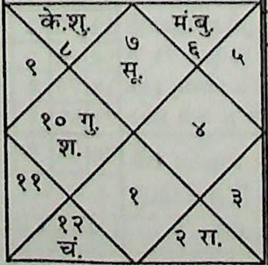

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २० अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	११	५	५	९	७	९	१	७
२	२५	२८	१६	२८	१९	१२	९	९
३९	३७	४५	८	१०	१८	४७	१४	१४
३४	३०	५९	२१	४२	३५	१७	३५	३५
५९	७३५	३९	२०	०	६३	०	३	३
३७	४२	५४	१	२७	५२	५७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा ३	रेव. ३	चित्रा १	हस्त १	धनि. १	ज्ये. १	श्रव. १	कृत्ति. ४	अनु. १

आकाशलक्षण—९ से ११, १५ से २० अक्तूबर के मध्य आसाम, बंगाल, हि.प्र., उ.प्र., उ.खण्ड एवं भारत के पश्चिमी भूभाग पर कहीं तूफान, किंवा वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं। कश्मीर एवं हि.प्र. एवं उत्तराखण्ड में अनेकत्र हिमपात भी सम्भव है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, कार्त्तिक कृष्ण पक्ष १४

(२१ अक्तूबर से ४ नवम्बर, सन् २०२१ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद्-हेमन्त ऋतु।

मं. अस्त चल रहा है। प्रातः बु. पूर्व क्षितिज में होगा। सायं शु. पश्चिम कपाल में और गु. श. याम्योत्तर वृत्त के पास होंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. कार्त्तिक	तारीखें अं. अक्तूबर	तारीखें श. आश्विन	तारीखें मु. र.उ.अ.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२७	५०	१	गु.	३९	१८	अश्वि.	२४	१९	व.	३६	६	बा.	७	१	५	२१	२९	१४	मेष			६	३३	१७	४१	६	३	३९	१०	मंगल तुला में ४८/४०,
२७	४५	२	शु.	४४	५०	भर.	३०	५४	सि.	३७	४१	तै	१२	४	६	२२	३०	१५	वृष	४७	४१	६	३४	१७	४०	६	४	३८	४९	वक्री नेप्च्यून पू.भा. २ में ४९/९,
२७	४१	३	श.	५१	८	कृत्ति.	३८	१५	व्य.	३९	५२	व.	१८	०	७	२३	का.१	१६	वृष			६	३४	१७	३९	६	५	३८	३०	भ. १८/० से ५१/८ तक, सूर्य स्वा. में ५९/४, सूर्य सायन (A)
२७	३७	४	र.	५७	५१	रोहि.	४६	५	व.	४२	२५	ब.	२४	२९	८	२४	२	१७	वृष			६	३५	१७	३८	६	६	३८	१३	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (करवा चौथ) (B)
२७	३२	५	चं.	६०	०	मृग.	५३	५६	प.	४४	५९	कौ.	३१	१०	९	२५	३	१८	मिथुन	२०	२	६	३६	१७	३७	६	७	३७	५९	
२७	२८	५	मं.	४	२८	आर्द्रा	६०	०	शि.	४७	१४	तै.	४	२८	१०	२६	४	१९	मिथुन			६	३६	१७	३६	६	८	३७	४६	
२७	२४	६	बु.	१०	३२	आर्द्रा	१	१७	सि.	४८	४६	व.	१०	३२	११	२७	५	२०	कर्क	५१	११	६	३७	१७	३५	६	९	३७	३६	भ. १०/३२ से ४३/२ तक,
२७	२०	७	गु.	१५	२८	पुन.	७	३६	सा.	४९	१३	ब.	१५	२८	१२	२८	६	२१	कर्क			६	३८	१७	३४	६	१०	३७	२८	बुध चित्रा में २५/३०, अहोई अष्टमी (महाकाली पूजन),(C)
२७	१५	८	शु.	१८	४६	पुष्य	१२	२८	शु.	४८	१७	कौ.	१८	४६	१३	२९	७	२२	कर्क			६	३९	१७	३३	६	११	३७	२२	
२७	११	९	श.	२०	९	आश्ले	१५	२९	शु.	४५	४८	ग.	२०	९	१४	३०	८	२३	सिंह	१५	२९	६	४०	१७	३२	६	१२	३७	१८	भ. ४९/४६ बाद, शुक्र मूल धनु में २३/४५,
२७	७	१०	र.	१९	२७	मघा	१६	२९	ब्र.	४१	४०	वि.	१९	२७	१५	३१	९	२४	सिंह			६	४०	१७	३१	६	१३	३७	१७	भ. १९/२७ तक, मंगल स्वा. में ४६/३१,
२७	३	११	चं.	१६	४२	पू.फा.	१५	२८	ऐं.	३५	५६	बा.	१६	४२	१६	न.१	१०	२५	कन्या	२९	५४	६	४१	१७	३०	६	१४	३७	१८	रमा एकादशी व्रत (स.), गोवत्स द्वादशी, नवम्बर प्रारम्भ,
२६	५९	१२	मं.	१२	३	उ.फा.	१२	३५	वै.	२८	४६	तै.	१२	३	१७	२	११	२६	कन्या			६	४२	१७	२९	६	१५	३७	२०	बुध तुला में ७/५५, यम-प्रीत्यर्थ दीपदान,
२६	५५	१३	बु.	५	४८	हस्त	८	७	वि.	२०	२३	व.	५	४८	१८	३	१२	२७	तुला	३५	२३	६	४३	१७	२९	६	१६	३७	२५	भ. ५/४८ से ३२/२ तक, धन त्रयोदशी, श्रीहनुमान् जयन्ती (D)
अवम		१४	बु.	५८	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
२६	५१	३०	गु.	५०	२	चित्रा स्वाती	२ ५५	२६ ५८	प्री.	११	४	च.	२४	११	१९	४	१३	२८	तुला			६	४४	१७	२८	६	१७	३७	३२	दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजा, श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन),

(A) वृश्चिक में ९/२७, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, शक कार्त्तिक प्रारम्भ, (B) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), (C) (पंजाब-हरि.), (D) (उ.भा.), नरक चतुर्दशी,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २९ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	६	५	९	७	९	१	७
११	१३	४	२४	२८	२८	१२	८	८
३७	२९	४६	०	२२	३३	५९	४५	४५
२३	२	१८	५६	०	२९	२३	५८	५८
५९	७५५	४०	८१	२	५९	१	३	३
५६	८	१४	१९	१५	५९	५०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	४	४	१	२	४	१	४	२
स्वा.	पुष्य	चित्रा	चित्रा	धनि.	ज्ये.	श्रव.	कृत्ति.	अनु.

कुण्डली सूर्योदय (२९ अक्तू.)

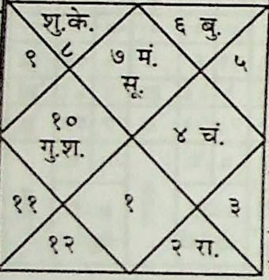

लोकभविष्य—लगभग २१ अक्तूबर से शनि की मंगल-सूर्य पर दृष्टि होने से अनेकत्र भूकम्प, अग्निकाण्ड किंवा यानदुर्घटना आदि से जन-धनहानिभय रहेगा। कहीं दुर्भिक्ष से जनजीवन त्रस्त रहे। राहु-शुक्र का समसप्तक भी अनेकत्र खड़ी फसलों को हानि पहुंचायेगा।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—२१ अक्तूबर को मंगल-सूर्य एवं शनि की स्थिति खड़ी फसलों को हानि पहुंचाने वाली है। शेयर बाजार भी गड़बड़ायेंगे। रुई, तेल, तिलहन, दालें, घी तेज रहेंगे। २३ अक्तूबर के लगभग बाजार जोरदार तेज रहें। २४ अक्तूबर को मन्दी सम्भव है। २८ से ३० अक्तूबर को बाजार तेज रहें। २ नवं. के लगभग सोना, चांदी, तेल, तिलहन एवं अनाजों में तेजी सम्भव है।

कुण्डली सूर्योदय (४ नवं.)

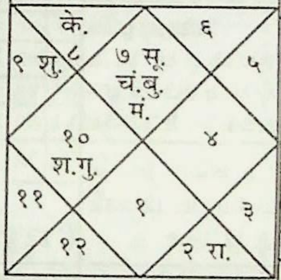

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ४ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	६	६	९	८	९	१	७
१७	५	८	२	२८	४	१३	८	८
३७	१८	४८	४७	३८	२७	११	२६	२६
३२	१९	१२	२५	२६	३०	५२	५४	५४
६०	८१६	४०	९३	३	५७	२	३	३
९	७	२६	५५	२५	३१	२६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	४	१	३	२	२	१	४	२
स्वा.	चित्रा	स्वा.	चित्रा	धनि.	मूल	श्रव.	कृत्ति.	अनु.

आकाशलक्षण—अक्तूबर २१, २२, ३०, ३१ एवं नवम्बर २, ३ को हि.प्र., कश्मीर आदि में जोरदार हिमपात हो। उ.भारत में कहीं बादलचाल, खण्डवृष्टि हो, दिल्ली आदि महानगरों में धुन्द किंवा पर्यावरण-विक्षोभ से यातायात बाधित हो। उ.भारत शीतलहर की चपेट में रहे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, कार्तिक शुक्ल पक्ष १५

(५ से १९ नवम्बर, सन् २०२१ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

मं. अस्त है। बु. भी ६ नवं. को पूर्व में अदृश्य हो जायेगा। सायं शु. पश्चिम कपाल में और गु. श. याम्योत्तर वृत्त के पास होंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. कार्तिक	तारीखें अं. नवम्बर	तारीखें श. कार्तिक	तारीखें मु. र.उ.अ.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२६	४७	१	शु.	४१	१५	विशा.	४९	५	आ. सौ.	१ ५०	१० ५७	किं.	१८	३७	२०	५	१४	२९	वृश्चिक	३५	४६	६	४४	१७	२७	६	१८	३७	४०	गोवर्धन पूजा, बली पूजा, अन्नकूट, गोक्रीड़ा,
२६	४३	२	श.	३२	२७	अनु.	४२	१२	शो.	४०	४५	बा.	६	५१	२१	६	१५	३०	वृश्चिक			६	४५	१७	२६	६	१९	३७	५०	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, सूर्य विशा. में १८/५७, बुध स्वा. में(A)
२६	३९	३	र.	२४	०	ज्येष्ठा	३५	४५	अ.	३०	५३	ग.	२४	०	२२	७	१६	र.१	धनु	३५	४५	६	४६	१७	२६	६	२०	३८	३	भ. ५०/९ बाद, शनि श्रव. २ में ९/४२, रवि-उल्सानी मु. प्रारम्भ,
२६	३५	४	चं.	१६	१४	मूल	३०	४	सु.	२१	३८	वि.	१६	१४	२३	८	१७	२	धनु			६	४७	१७	२५	६	२१	३८	१६	भ. १६/१४ तक,
२६	३२	५	मं.	९	३०	पू.षा.	२५	२८	धृ.	१३	१४	बा.	९	३०	२४	९	१८	३	मकर	३९	३१	६	४८	१७	२४	६	२२	३८	३२	ज्ञान पंचमी (जैन),
२६	२८	६	बु.	४	२	उ.षा.	२२	११	शू. गं.	५ ५९	५२ ४२	तै.	४	२	२५	१०	१९	४	मकर			६	४९	१७	२४	६	२३	३८	४९	सूर्य षष्ठी (छठ बिहार),
२६	२४	७	गु.	०	२	श्रव.	२०	२२	वृ.	५४	४४	व.	०	२	२६	११	२०	५	कुम्भ	५०	४	६	४९	१७	२३	६	२४	३९	७	भ. ०/२ से २८/४७ तक, पंचक प्रारम्भ ५०/४, गोपाष्टमी,
अवम		८	गु.	५७	३४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथिक्षय,
२६	२१	९	शु.	५६	४२	धनि.	२०	६	ध्रु.	५१	१	बा.	२७	८	२७	१२	२१	६	कुम्भ			६	५०	१७	२२	६	२५	३९	२७	अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी,
२६	१७	१०	श.	५७	२२	शत.	२१	२३	व्या.	४८	३०	तै.	२७	२	२८	१३	२२	७	कुम्भ			६	५१	१७	२२	६	२६	३९	४८	शुक्र पू.षा. में ३४/५५,
२६	१३	११	र.	५९	२९	पू.भा.	२४	६	ह.	४७	६	व.	२८	२२	२९	१४	२३	८	मीन	८	१७	६	५२	१७	२१	६	२७	४०	११	भ. २८/२२ से ५९/२९ तक, बुध विशा. में ४०/४९, (B)
२६	१०	१२	चं.	६०	०	उ.भा.	२८	९	व.	४६	४२	ब.	३१	९	३०	१५	२४	९	मीन			६	५३	१७	२१	६	२८	४०	३४	देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (वै.), तुलसी विवाह, चातुर्मास्य (C)
२६	७	१२	मं.	२	५०	रेव.	३३	२१	सि.	४७	१०	बा.	२	५०	मा.१	१६	२५	१०	मेष	३३	२१	६	५४	१७	२०	६	२९	४१	०	पंचक समाप्त ३३/२१, सं सूर्य वृश्चिक में १५/१९, मु. ३०, (D)
२६	३	१३	बु.	७	१९	अश्वि.	३१	२९	व्य.	४८	२१	तै.	७	१९	२	१७	२६	११	मेष			६	५४	१७	२०	७	०	४१	२६	वैकुण्ठ चतुर्दशी,
२६	०	१४	गु.	१२	४२	भर.	४६	२४	व.	५०	६	व.	१२	४२	३	१८	२७	१२	मेष			६	५५	१७	१९	७	१	४१	५४	भ. १२/४२ से ४५/४७ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरोत्सव,(E)
२५	५७	१५	शु.	१८	४७	कृत्ति.	५३	५०	प.	५२	१५	ब.	१८	४७	४	१९	२८	१३	वृष	३	११	६	५६	१७	१९	७	२	४२	२४	सूर्य अनु. में ३३/४०, पद्मक योग, मेला पुष्करराज (राज.), (F)

(A) २४/२२, बुध पूर्व में अस्त ६ घं. ४५ मि., यम द्वितीया, भाई दूज, श्रीविश्वकर्मा पूजा, (B) देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स्मा.), हरिप्रबोधोत्सव, भीष्म पंचक प्रारम्भ, (C) व्रत-नियमादि समाप्त, (D) पुण्यकाल सारा दिन, भौम प्रदोष व्रत, (E) भीष्म पंचक समाप्त, (F) कार्त्तिक पूर्णिमा, कार्त्तिकस्नान समाप्त, श्रीगुरु नानक जयन्ती,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ११ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	६	६	९	८	९	१	७
२४	१७	१३	१३	२९	१०	१३	८	८
३९	३७	३२	५७	६	५९	३०	४	४
८	४	४	५३	२१	३१	४९	३८	३८
६०	८७१	४०	९६	४	५३	३	३	३
२०	२८	४२	५७	४४	४६	४	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२ विशा.	३ श्रव.	३ स्वा.	३ स्वा.	२ धनि.	४ मूल	२ श्रव.	४ कृत्ति.	२ अनु.

कुण्डली सूर्योदय (११ नवं.)

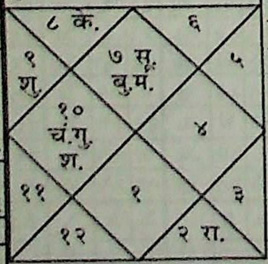

लोकभविष्य—लगभग १५ नवम्बर तक सूर्य-बुध एवं मंगल पर शनि की दृष्टि होने से इस पक्ष में खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी एवं यानदुर्घटनाएं भी होंगी। भारत के नेता देशहित में नयी प्रगतिप्रद योजनाएं बनायेंगे। लेकिन विपक्षी दल साम्प्रदायिक दृष्टि से योजनाओं की पूर्णता में बाधक रहें। पक्षान्त में सूर्य-राहु का समसप्तक है, अतः किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद भी रिक्त होने का योग है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—७ से १३ नवं. के मध्य बुध-शुक्र और शनि की स्थिति से सभी अनाज, घी, तेल, तिलहन तेज हों। सोना, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। १६ नवं. को वृश्चिकस्थ सूर्य एवं राहु-शनि-मंगल की पोजीशन से अनाज, तेल-तिलहन एवं सोना, चांदी में तेजी के बाद मन्दी हो।

कुण्डली सूर्योदय (१९ नवं.)

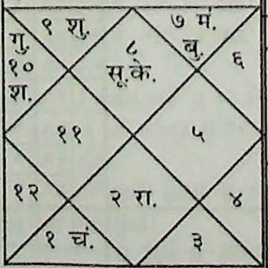

आकाशलक्षण—नवं. ६, ७, ९, १३, १४, १६ एवं १९ नवं. को हि.प्र., पंजाब, उ.प्र., उ.खण्ड, कश्मीर आदि में जोरदार शीतलहर चलेगी एवं अनेकत्र हिमपात व धुन्ध से यातायात बाधित होगा।

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १९ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	०	६	६	९	८	९	१	७
२	२८	१८	२६	२९	१७	१३	७	७
४२	३९	५८	५०	४९	५०	५७	३९	३९
२५	२६	३८	५८	१२	२६	५५	१२	१२
६०	७१०	४०	९५	६	४७	३	३	३
३१	५२	५९	५६	८	५५	४६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४ विशा.	२ कृत्ति.	४ स्वा.	३ विशा.	२ धनि.	२ पू.षा.	२ श्रव.	४ कृत्ति.	२ अनु.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १६

(२० नवम्बर से ४ दिसम्बर, सन् २०२१ ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	तारीखें अं. नवम्बर	तारीखें श. कार्तिक	तारीखें मु. र.उ.मा.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	बु. अस्त है। मं. ३० नवं. से प्रातः पूर्व में दृश्य हो जायेगा। सायंकाल शु. पश्चिम में, श. पश्चिम कपाल में और गु. याम्योत्तर वृत्त से कुछ पश्चिम में दिखाई देगा।
२५	५४	१	श.	२५	१९	रोहि.	६०	०	शि.	५४	४०	कौ.	२५	१९	५	२०	२९	१४	वृष			६	५७	१७	१९	७	३	४२	५५	मंगल विशा. में २६/१०, बुध वृश्चिक में ५४/४२, (A)
२५	५१	२	र.	३२	३	रोहि.	१	३३	सि.	५७	७	ग.	३२	३	६	२१	३०	१५	मिथुन	३५	३०	६	५८	१७	१८	७	४	४३	२७	
२५	४८	३	चं.	३८	४०	मृग.	९	२०	सा.	५९	२३	व.	५	२१	७	२२	मा.१	१६	मिथुन			६	५९	१७	१८	७	५	४४	१	भ. ५/२१ से ३८/४० तक, सूर्य सायन धनु में २/४३, (B)
२५	४५	४	मं.	४४	४९	आर्द्रा	१६	५०	शु.	६०	०	ब.	११	१४	८	२३	२	१७	मिथुन			७	०	१७	१८	७	६	४४	३७	बुध अनु. में ०/२०, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
२५	४२	५	बु.	५०	८	पुन.	२३	४०	शु.	१	१३	कौ.	१७	२८	९	२४	३	१८	कर्क	७	२	७	०	१७	१७	७	७	४५	१५	
२५	३९	६	गु.	५४	१२	पुष्य	२९	२९	शु.	२	१८	ग.	२२	१०	१०	२५	४	१९	कर्क			७	१	१७	१७	७	८	४५	५४	भ. ५४/१२ बाद,
२५	३७	७	शु.	५६	४२	आश्ले	३३	५५	ब्र.	२	२६	वि.	२५	२८	११	२६	५	२०	सिंह	३३	५५	७	२	१७	१७	७	९	४६	३५	भ. २५/२८ तक,
२५	३४	८	श.	५७	२३	मघा	३६	३९	ऐं. वै.	१ ५८	२१ ५४	बा.	२७	२	१२	२७	६	२१	सिंह			७	३	१७	१७	७	१०	४७	१७	श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी),
२५	३२	९	र.	५६	६	पू.फा.	३७	३३	वि.	५४	५३	तै.	२६	४४	१३	२८	७	२२	कन्या	५२	२९	७	४	१७	१६	७	११	४८	१	
२५	२९	१०	चं.	५२	५३	उ.फा.	३६	३२	प्री.	४९	२१	व.	२४	२८	१४	२९	८	२३	कन्या			७	५	१७	१६	७	१२	४८	४६	भ. २४/२८ से ५२/५३ तक,
२५	२७	११	मं.	४७	५१	हस्त	३३	४०	आ.	४२	२१	ब.	२०	२२	१५	३०	९	२४	कन्या			७	५	१७	१६	७	१३	४९	३३	मंगल उदित ७ घं. ५ मि., उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
२५	२५	१२	बु.	४१	१३	चित्रा	२९	११	सौ.	३४	३	कौ.	१४	३२	१६	दि.१	१०	२५	तुला	१	३६	७	६	१७	१६	७	१४	५०	२२	बुध ज्ये. में २७/१८, शुक्र उ.षा. में ३१/१०, नेप्च्यून (C)
२५	२३	१३	गु.	३३	१९	स्वाती	२३	२०	शो.	२४	३९	ग.	७	१६	१७	२	११	२६	तुला			७	७	१७	१६	७	१५	५१	११	भ. ३३/१९ से ५८/५३ तक, सूर्य ज्ये. में ५६/३१, प्रदोष व्रत,
२५	२१	१४	शु.	२४	३०	विशा.	१६	३०	अ.	१४	२८	श.	२४	३०	१८	३	१२	२७	वृश्चिक	३	१६	७	८	१७	१६	७	१६	५२	२	
२५	१९	३०	श.	१५	१०	अनु.	९	६	सु धृ.	३ ५२	४७ ५९	ना.	१५	१०	१९	४	१३	२८	वृश्चिक			७	९	१७	१६	७	१७	५२	५५	मंगल वृश्चिक में ५७/०, शनैश्चरी अमा,

(A) गुरु धनि. ३ कुम्भ में ४''/०, (B) शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ, (C) मार्गी २९/३४, दिसम्बर प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २७ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	६	७	१०	८	९	१	७
१०	४	२४	९	०	२३	१४	७	७
४७	४०	२७	३३	४२	४७	३०	१३	१३
१८	५७	३९	१५	५२	१६	२५	४६	४६
६०	[illegible]	४१	९४	७	३१	४	३	३
४४	५७	१८	३५	२६	५३	२६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. ३	मघा २	विशा. २	अनु. २	धनि. ३	पू.षा. ४	श्रव. २	कृत्ति. ४	अनु. २

कुण्डली सूर्योदय (२७ नवं.)

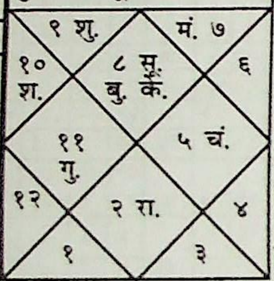

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच शनिवार एवं पांच रविवार हैं। कहीं दुर्भिक्ष, कहीं शासन-सत्ता में परिवर्तन, किसी विशिष्ट व्यक्ति का निधन सम्भव है। किञ्च—मकर राशि का शनि कहीं रक्तपात किंवा कहीं साम्प्रदायिक उपद्रव व भूकम्प आदि से हानि करे—

"रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥"

इस पक्ष में वृश्चिकस्थ मंगल जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में महंगाई का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—२० नवम्बर के लगभग तिलहन, दालवाना, घी, सोना, चांदी में तेजी का योग है। दालें, रुई, चीनी आदि भी तेज रहें। २२ नवं. से २९ नवं. तक यदि बाजार मन्दे हों, तो माल पकड़ें। ४ नवं. को जोरदार तेजी से लाभ लें।

आकाशलक्षण—नवं. २०, २१, २९, ३० एवं दिसम्बर १ से ४ तक उ.भारत में भयंकर शीत का प्रकोप रहेगा। वायु, वर्षा एवं धुन्द के कारण यातायात बाधित होगा। हिम-शिखरों पर जोरदार हिमपात भी जनता के लिए परेशानी का कारण बनेगा।

कुण्डली सूर्योदय (४ दिसं.)

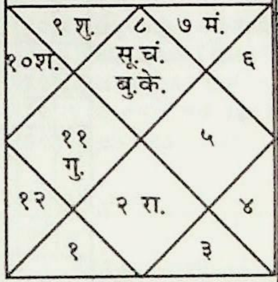

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ४ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	६	७	१०	८	९	१	७
१७	१३	२९	२०	१	२७	१५	६	६
५२	१८	१७	३३	३८	५९	२	५१	५१
५७	३९	३७	१८	५	३५	५९	३०	३०
६०	११४	४१	२४	८	३०	४	३	३
५३	३१	३५	४	२९	२६	५७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये. १	अनु. ३	विशा. ३	ज्ये. २	धनि. ३	उ.षा. १	श्रव. २	कृत्ति. ४	अनु. २

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १७

(५ से १९ दिसम्बर, सन् २०२१ ई.)
दक्षिणायण, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

बु. अस्त रहेगा। प्रातः मं. पूर्व क्षितिज में होगा। सायं शु. पश्चिम में, इससे ऊपर श. और इससे ऊपर गु. होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	मार्गशीर्ष	दिसम्बर	मार्गशीर्ष	र.उ.स.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	१७	१	र.	५	४५	ज्ये. मूल	१ ५४	३३ २१	शू.	४२	२१	ब.	५	४५	२०	५	१४	२९	धनु	१	३३	७	१०	१७	१६	७	१८	५३	४८	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,
अवम		२	र.	५६	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
२५	१५	३	चं.	४८	२४	पू.षा.	४७	५१	गं.	३२	१४	तै.	२२	३३	२१	६	१५	ज.१	धनु			७	१०	१७	१६	७	१९	५४	४३	जमद-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ,
२५	१३	४	मं.	४१	१४	उ.षा.	४२	३०	वृ.	२२	५९	व.	१४	४८	२२	७	१६	२	मकर	१	२२	७	११	१७	१६	७	२०	५५	३८	भ. १४/४८ से ४१/१४ तक, राहु कृति. ३, केतु अनु. १ में ३२/४३,
२५	१२	५	बु.	३५	३५	श्रव.	३८	३९	ध्रु.	१४	५१	ब.	८	२४	२३	८	१७	३	मकर			७	१२	१७	१७	७	२१	५६	३५	बलिदान दिन श्रीगुरु तेगबहादुरजी, शुक्र मकर में १६/४०,
२५	१०	६	गु.	३१	४३	धनि.	३६	३४	व्या.	८	५	कौ.	३	३९	२४	९	१८	४	कुम्भ	७	२२	७	१३	१७	१७	७	२२	५७	३२	पंचक प्रारम्भ ७/२२, मंगल अनु. में ४४/३९, बुध मूल (A)
२५	९	७	शु.	२९	५०	शत.	३६	२५	ह. व.	२ ५९	४९ ९	ग.	०	४६	२५	१०	१९	५	कुम्भ			७	१३	१७	१७	७	२३	५८	३०	भ. २९/५० से ५९/५४ तक, मित्र सप्तमी,
२५	८	८	श.	२९	५७	पू.भा.	३८	१३	सि.	५७	०	ब.	२९	५७	२६	११	२०	६	मीन	२२	३६	७	१४	१७	१७	७	२४	५९	२८	
२५	७	९	र.	३१	५९	उ.भा.	४१	५१	व्य.	५६	१४	बा.	०	५८	२७	१२	२१	७	मीन			७	१५	१७	१७	७	२६	०	२८	
२५	६	१०	चं.	३५	४३	रेव.	४७	३	व.	५६	४०	तै.	३	५१	२८	१३	२२	८	मेष	४७	३	७	१५	१७	१८	७	२७	१	२७	पंचक समाप्त ४७/३,
२५	५	११	मं.	४०	४९	अश्वि.	५३	२९	प.	५८	०	व.	८	१५	२९	१४	२३	९	मेष			७	१६	१७	१८	७	२८	२	२७	भ. ८/१५ से ४०/४९ तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), (B)
२५	४	१२	बु.	४६	५२	भर.	६०	०	शि.	५९	५९	ब.	१३	५०	पौ.१	१५	२४	१०	मेष			७	१७	१७	१८	७	२९	३	२८	सं. सूर्य मूल धनु में ५१/७, मु. १५, पुण्यकाल अगले दिन (C)
२५	३	१३	गु.	५३	२९	भर.	०	४३	सि.	६०	०	कौ.	२०	१०	२	१६	२५	११	वृष	१७	३८	७	१७	१७	१९	८	०	४	२९	प्रदोष व्रत,
२५	३	१४	शु.	६०	०	कृत्ति.	८	२५	सि.	२	१७	ग.	२६	५२	३	१७	२६	१२	वृष			७	१८	१७	१९	८	१	५	३०	
२५	२	१४	श.	०	१६	रोहि.	१६	१४	सा.	४	४३	व.	०	१६	४	१८	२७	१३	मिथुन	५०	६	७	१८	१७	१९	८	२	६	३२	भ. ०/१६ से ३३/३५ तक, बुध पू.षा. में २६/०, श्रीदत्त (D)
२५	२	१५	र.	६	५५	मृग.	२३	५२	शु.	७	२	ब.	६	५५	५	१९	२८	१४	मिथुन			७	१९	१७	२०	८	३	७	३५	शुक्र वक्री २२/०,

(A) धनु में ५७/१२, स्कन्द-गुह षष्ठी, चम्पा षष्ठी, (B) श्रीगीता जयन्ती, (C) मध्याह्न तक, गुरु धनि. ४ में २/१३, (D) जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ११ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	७	८	१०	९	९	१	७
२४	२४	४	१	२	०	१५	६	६
५९	१२	९	३१	४०	५७	३९	२९	२९
३०	२	२९	४९	२३	१	४	१४	१४
६०	७६९	४१	९४	९	१७	५	३	३
५९	२१	५९	११	२६	५७	२५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	२	१	१	३	२	२	३	१
ज्ये.	पू.भा.	अनु.	मूल.	धनि.	उ.षा.	श्रव.	कृत्ति.	अनु.

कुण्डली सूर्योदय (११ दिसं.)

लोकभविष्य—इस पक्ष में तिथिक्षय होने से कहीं सत्ता-संकट उपस्थित होगा, कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति भी बनेगी—

"मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षयः।
छत्रभंगं प्रजापीडां दुर्भिक्षं च समादिशेत्॥"

मार्गशीर्ष में धनु संक्रान्ति भी कुछ प्रान्तों में दुर्भिक्ष का संकेत देती है—"मार्गशीर्षे धनुषि हि यदा गच्छति भास्करस्तदा दुर्भिक्षकं ज्ञेयम्।" मकर राशि में शुक्र-शनि का योग देश में अघटित दुःखद घटना का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—८ दिसं. के लगभग शुक्र-शनि का योग गुड़, शक्कर, घी, सभी अनाज, तिलहन, रुई, चांदी में तेजी करेगा, तुरन्त लाभ लें। ९ दिसं. से सोना, तांबा एवं रुई, कपास, ऊन में तेजी रहे। १५ दिसं. के लगभग तेजी रहे। १६ दिसं. को वायदा बाजार में झटके से तेजी रहेगी। आगे जोरदार मन्दी सम्भव है।

आकाशलक्षण—दिसम्बर ५, ७, ८, ९, १०, १५ एवं १८ दिसं. को हि.प्र., उ.खण्ड, कश्मीर आदि में कहीं बादलचाल एवं जोरदार हिमपात होगा। उ.भारत में भयंकर शीतलहर एवं धुन्द से हानि के योग भी हैं।

कुण्डली सूर्योदय (१९ दिसं.)

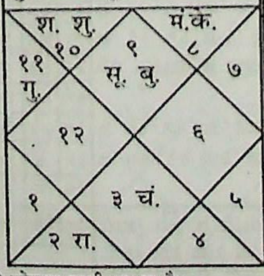

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १९ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	७	८	१०	९	९	१	७
३	१	९	१४	३	२	१६	६	६
७	३	४५	६	५९	११	२४	३	३
३७	३८	१७	२४	२३	३६	६	४८	४८
६१	७११	४२	९४	१०	०	५	३	३
४	३०	८	२१	२५	१०	५३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	३	२	१	४	२	२	३	१
मूल.	मृग.	अनु.	पू.षा.	धनि.	उ.षा.	श्रव.	कृत्ति.	अनु.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, पौष कृष्ण पक्ष १८

(२० दिसम्बर, २०२१ से २ जनवरी, २०२२ ई.)
दक्षिण-उत्तरायण, दक्षिणगोल, हेमन्त-शिशिर ऋतु।

२४ दिसं. से बु. भी सायं पश्चिम में शु. से कुछ नीचे दिखाई देना शुरु हो जायेगा। इस समय शु. के ऊपर की ओर श. और इससे ऊपर गु. दृश्य होगा। मं. प्रातः पूर्व में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	पौष	दिसम्बर	मार्गशीर्ष	ज.उ.अ.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२	१	चं.	१३	१२	आर्द्रा	३१	५	शु.	९	४	कौ.	१३	१२	६	२०	२९	१५	मिथुन			७	२०	१७	२०	८	४	८	३८	
२५	२	२	मं.	१८	५४	पुन.	३७	४१	ब्र.	१०	४१	ग.	१८	५४	७	२१	३०	१६	कर्क	२१	६	७	२०	१७	२१	८	५	९	४२	भ. ५१/२२ बाद, शनि श्रव. ३ में ३६/१८, सूर्य सायन (A)
२५	२	३	बु.	२३	४९	पुष्य	४३	३०	ऐं.	११	४३	वि.	२३	४९	८	२२	पौ.१	१७	कर्क			७	२१	१७	२१	८	६	१०	४७	भ. २३/४९ तक, शक पौष प्रारम्भ, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (B)
२५	२	४	गु.	२७	४६	आश्ले.	४८	२०	वै.	१२	४	बा.	२७	४६	९	२३	२	१८	सिंह	४८	२०	७	२१	१७	२२	८	७	११	५२	
२५	२	५	शु.	३०	३२	मघा	५१	५९	वि.	११	३४	तै.	३०	३२	१०	२४	३	१९	सिंह			७	२१	१७	२२	८	८	१२	५८	बुध पश्चिम में उदित १७ घं. २२ मि.,
२५	३	६	श.	३१	५९	पू.फा.	५४	१८	प्री.	१०	६	ग.	१	१५	११	२५	४	२०	सिंह			७	२२	१७	२३	८	९	१४	५	भ. ३१/५९ बाद, क्रिस्मस डे,
२५	३	७	र.	३१	५५	उ.फा.	५५	७	आ.	७	३१	वि.	१	५४	१२	२६	५	२१	कन्या	९	३८	७	२२	१७	२४	८	१०	१५	१२	भ. १/५४ तक, बुध उ.षा. में ५८/२४, जोड़मेला (C)
२५	४	८	चं.	३०	१४	हस्त	५४	२१	सौ. शो.	३ ५८	४३ ३९	बा.	१	४	१३	२७	६	२२	कन्या			७	२३	१७	२४	८	११	१६	२०	
२५	४	९	मं.	२६	५६	चित्रा	५१	५९	अ.	५२	१८	ग.	२६	५६	१४	२८	७	२३	तुला	२३	२१	७	२३	१७	२५	८	१२	१७	२८	भ. ५४/२८ बाद, सूर्य पू.षा. में ५६/३७, मंगल ज्ये. में ४३/१३,
२५	५	१०	बु.	२२	२	स्वाती	४८	७	सु.	४४	४३	वि.	२२	२	१५	२९	८	२४	तुला			७	२३	१७	२५	८	१३	१८	३७	भ. २२/२ तक, बुध मकर में १०/२२,
२५	६	११	गु.	१५	४२	विशा.	४२	५५	धृ.	३६	२	बा.	१५	४२	१६	३०	९	२५	वृश्चिक	२९	१८	७	२४	१७	२६	८	१४	१९	४७	वक्री शुक्र धनु में १/३०, सफला एकादशी व्रत (स.),
२५	७	१२	शु.	८	९	अनु.	३६	४०	शू.	२६	२८	तै.	८	९	१७	३१	१०	२६	वृश्चिक			७	२४	१७	२७	८	१५	२०	५६	भ. ५९/४३ बाद, प्रदोष व्रत,
अवम		१३	शु.	५९	४३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
२५	८	१४	श.	५०	४४	ज्येष्ठा	२९	४०	गं.	१६	१५	वि.	२५	१२	१८	ज.१	११	२७	धनु	२९	४०	७	२४	१७	२७	८	१६	२२	६	भ. २५/१२ तक, जनवरी (इंग्लिश नववर्ष २०२२ ई.) प्रारम्भ,
२५	९	३०	र.	४१	३६	मूल	२२	२६	वृ. ध्रु.	५ ५५	४२ ९	च.	१६	१०	१९	२	१२	२८	धनु			७	२४	१७	२८	८	१७	२३	१७	गुरु शत. १ में २०/५५,

(A) मकर में ३५/२२, उत्तरायण एवं शिशिर ऋतु प्रारम्भ, (B) (देखें पृ. 16), (C) श्रीफतेहगढ़ साहिब (पं.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २७ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	७	८	१०	९	९	१	७
११	१०	१५	२६	५	१	१७	५	५
१६	२	२३	३५	२५	८	१२	३८	३८
२२	४५	३५	१९	४७	५०	३९	२१	२१
६१ ८	८१० २२	४२ २८	९१ ३३	११ १७	१९ ४९	६ १७	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	१	४	४	४	१	३	३	१
मूल	हस्त	अनु.	पू.षा.	धनि.	उ.षा.	श्रव.	कृत्ति.	अनु.

कुण्डली सूर्योदय (२७ दिसं.)

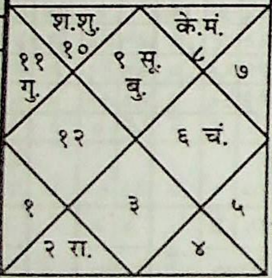

लोकभविष्य—मंगल-केतु एवं शनि-शुक्र द्वारा सूर्य-बुध कर्तरी योग से प्रभावित हैं। शासनतन्त्र को प्राकृतिक आपदा से राहत दिलाने के लिए भारी प्रयास करने होंगे। इस चान्द्रमास (पौष) में किसी विशिष्ट व्यक्ति से विछोह सहना होगा।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में सोना, चांदी एवं अनाजों में मन्दी रहे, लेकिन २२ दिसं. के लगभग तेल, तिलहन, घी, अनाज एवं सोना, चांदी में तेजी बनेगी। २८ से ३१ दिसं. के मध्य वायदा एवं हाजर बाजारों में जोरदार तेजी सम्भव है। यह तेजी पक्षान्त तक रहे।

आकाशलक्षण—दिसं. २२, २३, २६, २८, ३०, ३१ को एवं २ जनवरी, सन् २०२२ ई. के लगभग कुछ प्रान्तों में वायुवेग के साथ वर्षा हो, उ.भारत में भयंकर शीतलहर व धुन्द से जनहानि हो। उ.खण्ड, हि.प्र. एवं कश्मीर आदि में हिमखण्ड-स्खलन से हानि के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (२ जन.)

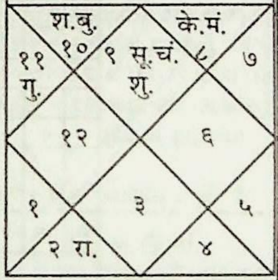

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	७	९	१०	८	९	१	७
१७	६	१९	५	६	२८	१७	५	५
२३	२७	३९	२५	३४	३८	५१	१९	१९
१९	७	०	४४	५६	३	३	१६	१६
६१ १०	१०१ ३१	४२ ४३	८१ ५४	११ ५२	३१ ३८	६ ३३	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	१	१	३	४	१	३	३	१
पू.षा.	मूल	ज्ये.	उ.षा.	धनि.	उ.षा.	श्रव.	कृत्ति.	अनु.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, पौष शुक्ल पक्ष १९

(३ से १७ जनवरी, सन् २०२२ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

शु. ६ जनवरी को पश्चिम में अस्त होकर १२ जनवरी को प्रातः पूर्व में उदित हो जायेगा। इस समय मं. भी पूर्व में होगा। १५ जन. को बु. पश्चिम में लुप्त हो जायेगा। सायं श. पश्चिम क्षितिज में और गु. इससे ऊपर उठा होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. पौष	अं. जनवरी	श. पौष	मु. ज.उ.ऊ.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	११	१	चं.	३२	४८	पू.षा.	१५	११	व्या.	४४	५८	किं.	७	१२	२०	३	१३	२९	मकर	२८	३५	७	२५	१७	२९	८	१८	२४	२७	शुक्रवार्धक्य प्रारम्भ १७ घं. ३१ मि.,
२५	१२	२	मं.	२४	४५	उ.षा.	८	४१	ह.	३५	२८	कौ.	२४	४५	२१	४	१४	३०	मकर			७	२५	१७	३०	८	१९	२५	३८	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,
२५	१४	३	बु.	१७	५५	श्रव.	३	२२	व.	२७	२	ग.	१७	५५	२२	५	१५	ज.१	कुम्भ	३१	१०	७	२५	१७	३०	८	२०	२६	४१	भ. ४५/१६ बाद, पंचक प्रारम्भ ३१/१०, बुध श्रव. में(A)
						धनि.	५१	२५																						
२५	१५	४	गु.	१२	४०	शत.	५७	१७	सि.	११	५६	वि.	१२	४०	२३	६	१६	२	कुम्भ			७	२५	१७	३१	८	२१	२७	५१	भ. १२/४० तक, शुक्र पश्चिम में अस्त १७ घं. ३१ मि.,
२५	१७	५	शु.	९	२३	पू.भा.	५७	१५	व्य.	१४	२४	बा.	९	२३	२४	७	१७	३	मीन	४२	४	७	२५	१७	३२	८	२२	२९	९	**शुक्र अस्त ६ जनवरी**
२५	१९	६	श.	८	१४	उ.भा.	५९	२१	व.	१०	३४	तै.	८	१४	२५	८	१८	४	मीन			७	२५	१७	३३	८	२३	३०	१९	
२५	२१	७	र.	९	१९	रेव.	६०	०	प.	८	२७	व.	९	१९	२६	९	१९	५	मीन			७	२५	१७	३४	८	२४	३१	२८	भ. ९/१९ से ४०/५४ तक, नेप्च्यून पू.भा. ३ में ४/३९, (B)
२५	२३	८	चं.	१२	२८	रेव.	३	२९	शि.	७	५५	ब.	१२	२८	२७	१०	२०	६	मेष	३	२९	७	२५	१७	३४	८	२५	३२	३७	पंचक समाप्त ३/२९, **शुक्र उदित १२ जनवरी**
२५	२५	९	मं.	१७	२१	अश्वि.	९	२०	सि.	८	४२	कौ.	१७	२१	२८	११	२१	७	मेष			७	२५	१७	३५	८	२६	३३	४५	सूर्य उ.षा. में १३/१५,
२५	२८	१०	बु.	२३	३०	भर.	१६	२५	सा.	१०	२९	ग.	२३	३०	२९	१२	२२	८	वृष	३३	२१	७	२५	१७	३६	८	२७	३४	५३	भ. ५६/५४ बाद, शुक्र पूर्व में उदित ७ घं. २५ मि.,
२५	३०	११	गु.	३०	१९	कृत्ति.	२४	१३	शु.	१२	५०	वि.	३०	१९	३०	१३	२३	९	वृष			७	२५	१७	३७	८	२८	३६	०	भ. ३०/१९ तक, वक्री यूरेनस भर. १ में ५३/४६, पुत्रदा (C)
२५	३२	१२	शु.	३७	१५	रोहि.	३२	१०	शु.	१५	२४	ब.	३	४७	मा.१	१४	२४	१०	वृष			७	२५	१७	३८	८	२९	३७	६	सं. सूर्य मकर में १७/३९, मु. ४५, पुण्यकाल सारा दिन, (D)
२५	३५	१३	श.	४३	५१	मृग.	३९	५०	ब्र.	१७	४८	कौ.	१०	३३	२	१५	२५	११	मिथुन	६	४	७	२५	१७	३९	९	०	३८	१२	शुक्रबाल्य समाप्त ७ घं. २५ मि., शनि प्रदोष व्रत, (E)
२५	३८	१४	र.	४९	४४	आर्द्रा	४६	५०	ऐं.	११	४६	ग.	१६	४७	३	१६	२६	१२	मिथुन			७	२५	१७	४०	९	१	३९	१८	भ. ४९/४४ बाद, मंगल मूल धनु में २२/४५,
२५	४०	१५	चं.	५४	४४	पुन.	५३	१	वै.	२१	८	वि.	२२	१५	४	१७	२७	१३	कर्क	३६	३४	७	२४	१७	४१	९	२	४०	२२	भ. २२/१५ तक, पौषी पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, माघ (F)

(A) २६/५७, वक्री शुक्र पू.षा. में २८/०, जमद-उल्सानी मु. प्रारम्भ, (B) जन्मदिन श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी, (C) एकादशी व्रत (स.), लोहड़ी (पंजाब, हरि. हि.प्र., ज.क.), (D) बुध वक्री २४/२२, मकर संक्रान्ति, (E) बुध पश्चिम में अस्त १७ घं. ४१ मि., (F) स्नान प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १० जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	७	९	१०	८	९	१	७
२५	२८	२५	१४	८	२३	१८	४	४
३२	१७	२१	२५	१२	५७	४४	५३	५३
३९	५५	४०	१५	१५	५८	२६	४९	४९
६१	७३१	४३	४०	१२	३६	६	३	३
८	३३	०	१०	३२	२९	५०	११	११
		मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
४ पू.षा.	४ रेव.	३ ज्ये.	२ श्रव.	१ शत.	४ पू.षा.	३ श्रव.	३ कृत्ति.	१ अनु.

कुण्डली सूर्योदय (१० जन.)

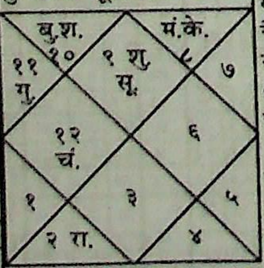

लोकभविष्य—इस पक्ष में मकरस्थ सूर्य-शनि भारत की प्रभाव राशि में होने से राजनैतिक किंवा साम्प्रदायिक समस्याओं से प्रधान नेता के लिए परेशानीकारक रहेंगे। विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा का समुचित प्रबन्ध अनिवार्य है। १४ जनवरी (२०२२ ई.) से आगे (लगभग) का समय विशेष सावधानी का है। सीमा प्रान्तों पर सेना को भी सन्नद्ध रखना होगा।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—५ से ७ जनवरी तक गेहूं, जौ, चना, चावल, दालें तेज रहें। १० जन. तक तेल, तिलहन में जोरदार उठापटक रहेगी। १७ जनवरी (सन् २०२२ ई.) के लगभग सूर्य-शनि एवं मंगल की स्थिति उड़द, चना, मूंग, गुड़, शक्कर, कपास, दालें एवं सोना, चांदी में जोरदार तेजी करेगी।

आकाशलक्षण—जनवरी ५, ७, ८ एवं १९ से पक्षान्त तक पर्वतीय प्रान्तों में हिमपात, उ.भारत के प्रान्तों में भयंकर शीत एवं धुन्द से परेशानी रहे। दिल्ली, चण्डीगढ़, उ.प्र. एवं हि.प्र. में धुन्द व हि.प्र. आदि में बर्फबारी किंवा प्राकृतिक प्रकोप से परेशानी रहे।

कुण्डली सूर्योदय (१७ जन.)

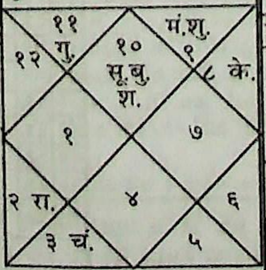

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १७ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	२	८	९	१०	८	९	१	७
२	२१	०	१५	९	२०	१९	४	४
४०	४०	२३	३३	४१	१	३२	३१	३१
२४	४४	२४	४१	२९	४३	४४	३४	३४
६१	७२६	४३	३५	१३	२८	७	३	३
५	१८	१५	८	२	४	०	११	११
		मा.	व.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२ उ.षा.	१ पुन.	१ मूल	२ श्रव.	१ शत.	३ पू.षा.	३ श्रव.	३ कृत्ति.	१ अनु.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, माघ कृष्ण पक्ष २०

(१८ जनवरी से १ फरवरी, सन् २०२२ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु ।

पक्षारम्भ में ही श. पश्चिम में अस्त हो जायेगा। बु. ३१ जनवरी से प्रातः पूर्व में दिखाई देना आरम्भ होगा। प्रातः मं. शु. पूर्व में और सायं गु. पश्चिम में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	माघ	जनवरी	पौष	ज.उ.मा.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	४३	१	मं.	५८	४४	पुष्य	५८	१४	वि.	२१	४८	बा.	२६	४४	५	१८	२८	१४	कर्क			७	२४	१७	४१	९	३	४१	२७	गुरु शत. २ में २०/२५, यूरेनस मार्गी ३३/५५, शनि अस्त (A)
२५	४६	२	बु.	६०	०	आश्ले.	६०	०	प्री.	२१	४२	तै.	३०	१३	६	१९	२९	१५	कर्क			७	२४	१७	४२	९	४	४२	३०	
२५	४९	२	गु.	१	४३	आश्ले.	२	३०	आ.	२०	५०	ग.	१	४३	७	२०	३०	१६	सिंह	२	३०	७	२४	१७	४३	९	५	४३	३४	भ. ३२/४० बाद, शनि श्रव. ४ में ४८/४, सूर्य सायन (B)
२५	५२	३	शु.	३	४१	मघा	५	४८	सौ.	१९	१२	वि.	३	४१	८	२१	मा.१	१७	सिंह			७	२३	१७	४४	९	६	४४	३७	भ. ३/४१ तक, शक माघ प्रारम्भ, श्रीगणेश (संकष्ट) (C)
२५	५५	४	श.	४	३८	पू.फा.	८	६	शो.	१६	४७	बा.	४	३८	९	२२	२	१८	कन्या	२३	३२	७	२३	१७	४५	९	७	४५	३९	वक्री बुध उ.षा. में ४४/३६,
२५	५८	५	र.	४	३३	उ.फा.	९	२५	अ.	१३	३४	तै.	४	३३	१०	२३	३	१९	कन्या			७	२३	१७	४६	९	८	४६	४१	यूरेनस भर. २ में २०/३३,
२६	१	६	चं.	३	२४	हस्त	९	४१	सु.	९	३१	व.	३	२४	११	२४	४	२०	तुला	३९	२४	७	२२	१७	४७	९	९	४७	४२	भ. ३/२४ से ३२/१७ तक, सूर्य श्रव. में ७/२२,
२६	५	७	मं.	१	७	चित्रा	८	५०	धृ. शू.	४ ५८	३५ ४२	ब.	१	७	१२	२५	५	२१	तुला			७	२२	१७	४८	९	१०	४८	४३	जन्मदिन स्वामी विवेकानन्द जी,
अवम		८	मं.	५७	३८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथिक्षय,
२६	८	९	बु.	५३	२	स्वा.	६	५१	गं.	५१	५५	तै.	२५	२०	१३	२६	६	२२	वृश्चिक	४९	३६	७	२१	१७	४९	९	११	४९	४४	भारत गणतन्त्र दिवस,
२६	११	१०	गु.	४७	१९	विशा. अनु.	३ ५९	४४ ३२	वृ.	४४	१६	व.	२०	१०	१४	२७	७	२३	वृश्चिक			७	२१	१७	४९	९	१२	५०	४४	भ. २०/१० से ४७/१९ तक,
२६	१५	११	शु.	४०	३९	ज्येष्ठा	५४	२७	ध्रु.	३५	४९	ब.	१३	५९	१५	२८	८	२४	धनु	५४	२७	७	२०	१७	५०	९	१३	५१	४३	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
२६	१९	१२	श.	३३	१४	मूल	४८	४२	व्या.	२६	४६	कौ.	६	५६	१६	२९	९	२५	धनु			७	२०	१७	५१	९	१४	५२	४२	शुक्र मार्गी १७/२२,
२६	२२	१३	र.	२५	२४	पू.षा.	४२	३७	ह.	१७	१९	व.	२५	२४	१७	३०	१०	२६	मकर	५६	५	७	१९	१७	५२	९	१५	५३	४०	भ. २५/२४ से ५१/२७ तक, प्रदोष व्रत (देखें पृ.16), (D)
२६	२६	१४	चं.	१७	२९	उ.षा.	३६	३६	व. सि.	७ ५८	४६ २३	श.	१७	२९	१८	३१	११	२७	मकर			७	१९	१७	५३	९	१६	५४	३७	बुध पूर्व में उदित ७ घं. २० मि.,
२६	३०	३०	मं.	९	५३	श्रव.	३१	३	व्य.	४९	३५	ना.	९	५३	१९	फ.१	१२	२८	कुम्भ	५८	३६	७	१८	१७	५४	९	१७	५५	३३	पंचक प्रारम्भ ५८/३६, भौमवती अमा, मौनी अमा, महोदय (E)

(A) १७ घं. ४१ मि. (B) कुम्भ में १/५२, (C) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), (D) श्रीमेरु त्रयोदशी (जैन), (E) योग (सूर्योदय से ११ घं. १५ मि. तक), फरवरी प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २५ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	८	९	१०	८	९	१	७
१०	३	६	७	११	१७	२०	४	४
४८	३६	१०	१३	२७	१८	२९	६	६
४५	२	२९	१७	२५	३६	१४	७	७
६१	८२४	४३	७३	१३	९	७	३	३
१	४	३३	५१	३१	३७	८	११	११
		मा.	व.	मा.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
श्रव. १	चित्रा ४	मूल २	उ.षा. ४	शत. २	पू.षा. २	श्रव. ४	कृत्ति. ३	अनु. १

कुण्डली सूर्योदय (२५ जन.)

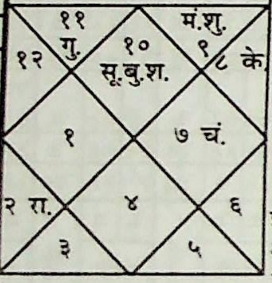

लोकभविष्य—सूर्य-शनि दोनों श्रवण नक्षत्र एवं मकरस्थ ही हैं। भारत की प्रभाव राशि में सूर्य से व्ययस्थ मंगल भारत की अर्थव्यवस्था के लिए चिन्तनीय स्थिति बनायेगा। माघ कृष्ण चतुर्थी शनिवारी होने से कहीं दुर्भिक्ष, अग्निकाण्ड किंवा जन-धनहानि का संकेत देती है—

"चतुर्थी माघ मासस्य शनिवारेण संयुता।
दुर्भिक्षं मृत्यु-चौराग्नि-भयं धान्य विनाशनम् ॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—१८ जनवरी (२०२२ ई.) के लगभग शनि की स्थिति अनाज, तिलहन, शेयर बाजार और सोना, चांदी में अचानक तेजी कर सकती है। २२, २४, २९, ३० जन. को भी बाजार तेज रहें।

कुण्डली सूर्योदय (१ फर.)

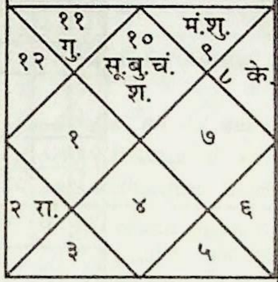

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	८	९	१०	८	९	१	७
१७	१४	११	०	१३	१७	२१	३	३
५५	३८	१६	५३	३	३	१९	४३	४३
३५	२७	८	२३	२	१६	२२	५२	५२
६०	८७६	४३	२१	१३	७	७	३	३
५६	३४	४९	४७	५१	२४	११	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
श्रव. ३	श्रव. २	मूल ४	उ.षा. २	शत. २	पू.षा. २	श्रव. ४	कृत्ति. ३	अनु. १

आकाशलक्षण—जनवरी (२०२२ ई.) को १९, २२, २३, २४-२९ एवं ३० को उ.भारत, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, उ.खण्ड, उ.प्रदेश आदि प्रान्त शीतलहर की चपेट में रहेंगे। हिमशृंग बर्फ से ढके रहें, यातायात बाधित होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, माघ शुक्ल पक्ष २१

(२ से १६ फरवरी, सन् २०२२ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

श. अस्त है। प्रातःकाल पूर्व में बु. और इससे ऊपर मं. शु. चमकते दिखाई देंगे। सायं गु. पश्चिम क्षितिजासन्न होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	माघ	फरवरी	माघ	ज.उ.स.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	३३	१	बु.	३	४	धनि.	२६	२७	व.	४१	४०	ब.	३	४	२०	२	१३	२९	कुम्भ			७	१७	१७	५५	९	१८	५६	२९	चन्द्रदर्शन, मु. १५, गुरु शत. ३ में ९/३, माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ,
अवम		२	बु.	५७	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
२६	३७	३	गु.	५३	२३	शत.	२३	१३	प.	३४	५७	तै.	२६	२४	२१	३	१४	र.१	कुम्भ			७	१७	१७	५६	९	१९	५७	२३	मंगल पू.षा. में ४५/६, रजब मु. प्रारम्भ, गौरी तृतीया (गोंतरी),
२६	४१	४	शु.	५१	१७	पू.भा.	२१	४२	शि.	२९	४१	व.	२२	२२	२२	४	१५	२	मीन	६	५५	७	१६	१७	५७	९	२०	५८	१६	भ. २२/२२ से ५१/१७ तक, बुध मार्गी ६/७, वरद-तिल- (A)
२६	४५	५	श.	५१	१८	उ.भा.	२२	१२	सि.	२६	२	ब.	२१	१७	२३	५	१६	३	मीन			७	१५	१७	५७	९	२१	५९	८	श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी, (श्रीलक्ष्मी-सरस्वती पूजन),
२६	४९	६	र.	५३	२८	रेव.	२४	४६	सा.	२४	४	कौ.	२२	२३	२४	६	१७	४	मेष	२४	४६	७	१५	१७	५८	९	२२	५९	५९	पंचक समाप्त २४/४६, सूर्य धनि में १५/१९,
२६	५३	७	चं.	५७	३५	अश्वि.	२९	२०	शु.	२३	४१	ग.	२५	३१	२५	७	१८	५	मेष			७	१४	१७	५९	९	२४	०	४८	भ. ५७/३५ बाद, रथ सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), (B)
२६	५७	८	मं.	६०	०	भर.	३५	३३	शु.	२४	३८	वि.	३०	२७	२६	८	१९	६	वृष	५२	११	७	१३	१८	०	९	२५	१	३६	भ. ३०/२७ तक, राहु कृत्ति. २, केतु विशा. ४ में २६/१, (C)
२७	१	८	बु.	३	१६	कृत्ति.	४२	५६	ब्र.	२६	३४	ब.	३	१६	२७	९	२०	७	वृष			७	१२	१८	१	९	२६	२	२२	
२७	५	९	गु.	९	५१	रोहि.	५०	४९	ऐं.	२९	१	कौ.	९	५१	२८	१०	२१	८	वृष			७	१२	१८	२	९	२७	३	६	माघ गुप्त नवरात्र समाप्त,
२७	९	१०	शु.	१६	४३	मृग.	५८	३५	वै.	३१	३३	ग.	१६	४३	२९	११	२२	९	मिथुन	२४	४७	७	११	१८	३	९	२८	३	४९	भ. ४९/५८ बाद, नवरात्र-पारणा,
२७	१४	११	श.	२३	१३	आर्द्रा	६०	०	वि.	३३	४३	वि.	२३	१३	फा.१	१२	२३	१०	मिथुन			७	१०	१८	३	९	२९	४	३०	भ. २३/१३ तक, सं. सूर्य कुम्भ में ५०/४२, मु. १५, (D)
२७	१८	१२	र.	२८	५२	आर्द्रा	५	४४	प्री.	३५	१२	बा.	२८	५२	२	१३	२४	११	कर्क	५५	२४	७	९	१८	४	१०	०	५	१०	भीष्म द्वादशी,
२७	२२	१३	चं.	३३	२०	पुन.	११	५०	आ.	३५	४८	कौ.	१	६	३	१४	२५	१२	कर्क			७	८	१८	५	१०	१	५	४८	सोमप्रदोष व्रत,
२७	२६	१४	मं.	३६	२९	पुष्य	१६	४२	सौ.	३५	२४	ग.	४	५४	४	१५	२६	१३	कर्क			७	७	१८	६	१०	२	६	२४	भ. ३६/१९ बाद,
२७	३१	१५	बु.	३८	१९	आश्ले	२०	१७	शो.	३४	०	वि.	७	२७	५	१६	२७	१४	सिंह	२०	१७	७	६	१८	७	१०	३	७	०	भ. ७/२७ तक, गुरु शत. ४ में १८/५७, श्रीसत्यनारायण व्रत, (E)

(A) कुन्द चतुर्थी, (B) आरोगय सप्तमी, मर्यादा महोत्सव (जैन), (C) भीष्माष्टमी, (D) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, जया एकादशी व्रत (स.), (E) माघी पूर्णिमा, माघ स्नान समाप्त, श्रीगुरु रविदास जयन्ती,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ९ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	१	८	९	१०	८	९	१	७
२६	०	१७	१	१४	१९	२२	३	३
२	४०	७	३१	५४	२	१६	१८	१८
२३	२०	२८	३८	५५	४	५५	२६	२६
६०	७१०	४४	३३	१४	२३	७	३	३
४४	४८	४	१४	९	४१	११	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
धनि. १	कृत्ति. २	पू.षा. २	उ.षा. २	शत. ३	पू.षा. २	श्रव. ४	कृत्ति. २	विशा. ४

कुण्डली सूर्योदय (९ फर.)

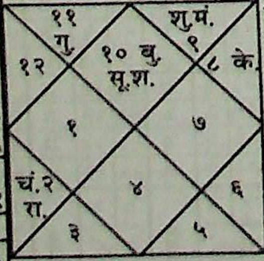

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार एवं पांच बुधवार भी हैं। अतः किसी देश-विशेष में सत्ता-परिवर्तन हो एवं कहीं सिविलवार भी सम्भव है, भारत में प्रजा सुविधासम्पन्न एवं आनन्दपूर्वक रहे। माघ शु. सप्तमी को चन्द्रवार होने से कहीं दुर्भिक्ष, कहीं सीमाओं पर युद्ध जैसी स्थिति भी सम्भव है—

"सप्तम्यां सोमवारः स्यात् माघे पक्षे सिते यदि।
दुर्भिक्षं जायते रौद्रं विग्रहोऽपि च भूभुजाम्॥"

११ फरवरी तक प्रधान नेतृत्व को कठिन परिस्थिति में से निकलना होगा। तत्पश्चात् स्थिति नियन्त्रण में रहे।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—३ फर. के लगभग से ६ फर. तक घी, तेल, तिलहन, सोना, चांदी एवं रुई में तेजी रहे, फिर अचानक मन्दी रहे। १२ फर. के लगभग से १६ फर. तक गेहूं आदि अनाज, हल्दी, सुपारी, केसर, घी, तेल, तिलहन एवं सोना में जोरदार तेजी-मन्दी के अच्छे झटके आयेंगे।

आकाशलक्षण—२ से १६ फर. के मध्य उ.भारत के कुछ भागों में कहीं बादलचाल किंवा वायुवेग से कहीं खण्डवृष्टि हो, कहीं तूफान से हानि की सम्भावना भी है। इन दिनों ऋतु परिवर्तन का आभास भी होने लगेगा।

कुण्डली सूर्योदय (१६ फर.)

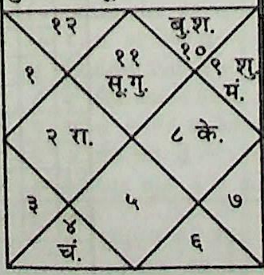

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १६ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	३	८	९	१०	८	९	१	७
३	२४	२२	६	१६	२२	२३	२	२
७	५२	१६	३१	३४	२२	७	५६	५६
१	७	३२	३९	३१	३४	१	१०	१०
६०	७६३	४४	५९	१४	३४	७	३	३
३४	५४	१७	२४	२०	४३	७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
धनि. ३	आश्ले. ३	पू.षा. ३	उ.षा. ३	शत. ३	पू.षा. ३	श्रव. ४	कृत्ति. २	विशा. ४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २२

(१७ फरवरी से २ मार्च, सन् २०२२ ई.) उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर-वसन्त ऋतु।

२३ फर. को गु. पश्चिम में अदृश्य हो जायेगा। श. २२ फर. को पूर्व में उदित होगा। प्रातःकाल में बु. पूर्व क्षितिज पर और मं. शु. इससे ऊपर उठे होंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. फाल्गुन	तारीखें अं. फरवरी	तारीखें श. माघ	तारीखें मु. रज्जब	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२७	३५	१	गु.	३८	५७	मघा	२२	४२	अ.	३१	४१	बा.	८	३८	६	१७	२८	१५	सिंह			७	५	१८	८	१०	४	७	३३	शनि धनि. १ में ४५/३६,
२७	४०	२	शु.	३८	३२	पू.फा.	२४	२	सु.	२८	३२	तै.	८	४४	७	१८	२९	१६	कन्या	३९	१२	७	५	१८	८	१०	५	८	६	बुध श्रव. में ५८/१३, प्लूटो उ.षा. ३ में ५२/३०, सूर्य (A)
२७	४४	३	श.	३७	१२	उ.फा.	२४	२८	धृ.	२४	४०	व.	७	५२	८	१९	३०	१७	कन्या			७	४	१८	९	१०	६	८	३६	भ. ७/५२ से ३७/१२ तक, सूर्य शत. में २७/१२,
२७	४८	४	र.	३५	७	हस्त	२४	८	शू.	२०	११	ब.	६	१०	९	२०	फा.१	१८	तुला	५३	४१	७	३	१८	१०	१०	७	९	६	शक फाल्गुन प्रारम्भ, गुरु-वार्धक्य प्रारम्भ १८ घं. १२ मि., (B)
२७	५३	५	चं.	३२	२०	चित्रा	२३	६	गं.	१५	८	कौ.	३	४३	१०	२१	२	१९	तुला			७	२	१८	११	१०	८	९	३४	मंगल उ.षा. में ५२/३०,
२७	५७	६	मं.	२८	५५	स्वाती	२१	२७	वृ.	९	३५	ग.	०	३७	११	२२	३	२०	तुला			७	१	१८	११	१०	९	१०	१	भ. २८/५५ से ५६/५४ तक, शुक्र उ.षा. में ३८/५७, (C)
२८	२	७	बु.	२४	५२	विशा.	१९	११	ध्रु. व्या.	३ ५६	३३ ५८	ब.	२४	५२	१२	२३	४	२१	वृश्चिक	४	४९	७	०	१८	१२	१०	१०	१०	२६	गुरु अस्त १८ घं. १२ मि. **गुरु अस्त २३ फरवरी**
२८	६	८	गु.	२०	१३	अनु.	१६	१९	ह.	४९	५८	कौ.	२०	१३	१३	२४	५	२२	वृश्चिक			६	५८	१८	१३	१०	११	१०	५०	
२८	११	९	शु.	१५	०	ज्येष्ठा	१२	५३	व.	४२	३२	ग.	१५	०	१४	२५	६	२३	धनु	१२	५३	६	५७	१८	१४	१०	१२	११	१२	भ. ४२/१० बाद,
२८	१५	१०	श.	९	१७	मूल	८	५८	सि.	३४	४५	वि.	९	१७	१५	२६	७	२४	धनु			६	५६	१८	१५	१०	१३	११	३४	भ. ९/१७ तक, मंगल मकर में २२/१५, विजया एकादशी (D)
२८	२०	११	र.	३	१३	पू.षा.	४	४२	व्य.	२६	४६	बा.	३	१३	१६	२७	८	२५	मकर	१८	३४	६	५५	१८	१५	१०	१४	११	५३	शुक्र मकर में ८/२४, विजया एकादशी व्रत (वै.),
अवम		१२	र.	५६	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय,
२८	२५	१३	चं.	५०	५४	उ.षा. श्रव.	० ५६	१६ १	व.	१८	४५	ग.	२३	५६	१७	२८	९	२६	मकर			६	५४	१८	१६	१०	१५	१२	१२	भ. ५०/५४ बाद, सोम-प्रदोष व्रत,
२८	२९	१४	मं.	४५	१८	धनि.	५२	१६	प.	१०	५८	वि.	१८	८	१८	मा.१	१०	२७	कुम्भ	२४	३	६	५३	१८	१७	१०	१६	१२	२८	भ. १८/८ तक, पंचक प्रारम्भ २४/३, बुध धनि. में ३४/०, (E)
२८	३४	३०	बु.	४०	३१	शत.	४९	२२	शि. सि.	३ ५७	३९ ३	च.	१२	५५	१९	२	११	२८	कुम्भ			६	५२	१८	१७	१०	१७	१२	४४	गुरु पू.भा. १ में १०/३१,

(A) सायन मीन में ३७/५१, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, (B) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, (C) शनि उदित ७ घं. १ मि., (D) व्रत (स्मा.), (E) श्रीमहाशिवरात्रि व्रत (शिवयोग), मार्च प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २४ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	८	९	१०	८	९	१	७
११	११	२८	१५	१८	२७	२४	२	२
१०	५८	११	५१	२९	३५	३	३०	३०
५१	३५	४२	३२	४०	२२	३०	४४	४४
६०	८४६	४४	७६	१४	४४	६	३	३
२३	३१	३२	१४	२८	१	५९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. २	अनु. ३	उ.षा. १	श्रव. २	शत. ४	उ.षा. १	धनि. १	कृत्ति. २	विशा. ४

कुण्डली सूर्योदय (२४ फर.)

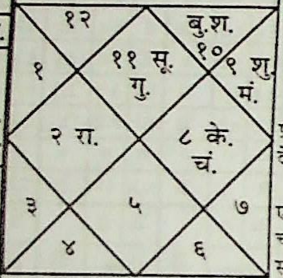

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच गुरुवार हैं। अतः पश्चिमी प्रान्तों में साम्प्रदायिक विवाद, अशान्ति रहे। विशेषतः पश्चिमी देशों में अघोषित युद्ध जैसी स्थिति बने—

"यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पतेः।
विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग-युद्धं च जायते॥"

लगभग २६ फरवरी से शनि-मंगल-शुक्र का एकत्र होना भयंकर प्राकृतिक आपदा, भूकम्प, सुनामी आदि से जन-धनहानि का संकेत देता है। किसी दुर्घटना से शोक व्याप्त हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—१९ एवं २० फरवरी को सूर्य-बुध एवं शनि की स्थिति वायदा एवं हाजर बाजारों में जोरदार तेजी करेगी। चीनी, घी, चावल आदि सभी अनाज तेज रहें। २१ फर. के लगभग सभी धातुएं, रुई, ऊन, घी, तिलहन तेज रहें। २६ फर. से पक्षान्त तक भयंकर तेजी या मन्दी के झटके वायदा-हाजर बाजारों में रहें, सावधान रहें।

आकाशलक्षण—१९, २१, २२, २४ से २८ फर. एवं १, २ मार्च को उ.भारत के कुछ प्रान्तों में हवा का जोर रहे, बादलचाल भी हो। गर्मी का प्रभाव अनुभव होने लगेगा।

कुण्डली सूर्योदय (२ मार्च)

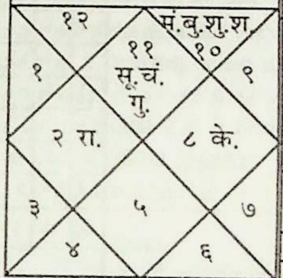

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	९	९	१०	९	९	१	७
१७	७	२	२३	१९	२	२४	२	२
१२	४०	३९	५१	५६	१४	४५	११	११
४५	२२	२०	२४	३७	७	१	४०	४०
६०	८३१	४४	८४	१४	४९	६	३	३
१४	३९	४२	४९	३१	२६	४९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. ४	शत. १	उ.षा. २	धनि. १	शत. ४	उ.षा. २	धनि. १	कृत्ति. २	विशा. ४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३

(३ से १८ मार्च, सन् २०२२ ई.)
उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतु।

गु. अस्त है। प्रातःकाल पूर्व में बु. श. शु. मं. क्षितिजवृत्त से उत्तरोत्तर ऊपर उठे नजर आयेंगे।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	फाल्गुन	मार्च	फाल्गुन	रजब		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२८	३८	१	गु.	३६	५४	पू.भा.	४७	४२	सा.	५१	३२	किं.	८	४३	२०	३	१२	२९	मीन	३२	५९	६	५१	१८	१८	१०	१८	१२	५७	
२८	४३	२	शु.	३४	४८	उ.भा.	४७	३३	शु.	४७	१५	बा.	५	५१	२१	४	१३	३०	मीन			६	५०	१८	१९	१०	१९	१३	९	चन्द्रदर्शन मु. ४५, सूर्य पू.भा. में ४३/२२, अवतार दिन (A)
२८	४८	३	श.	३४	२८	रेव.	४९	११	शु.	४४	२४	तै.	४	३८	२२	५	१४	शा.१	मेष	४९	११	६	४९	१८	२०	१०	२०	१३	१९	पंचक समाप्त ४९/११, शाबान मु. प्रारम्भ,
२८	५२	४	र.	३६	१	अश्वि.	५२	३७	ब्र.	४३	१	व.	५	१८	२३	६	१५	२	मेष			६	४७	१८	२०	१०	२१	१३	२७	भ. ५/१८ से ३६/१ तक, बुध कुम्भ में ११/२२,
२८	५७	५	चं.	३९	२५	भर.	५७	४८	ऐं.	४३	२	ब.	७	४३	२४	७	१६	३	मेष			६	४६	१८	२१	१०	२२	१३	३३	**होलाष्टक १० से १८ मार्च**
२९	२	६	मं.	४४	२५	कृत्ति.	६०	०	वै.	४४	१४	कौ.	११	५५	२५	८	१७	४	वृष	१४	२४	६	४५	१८	२२	१०	२३	१३	३६	
२९	६	७	बु.	५०	३२	कृत्ति.	४	२७	वि.	४६	१७	ग.	१७	२८	२६	९	१८	५	वृष			६	४४	१८	२२	१०	२४	१३	३८	भ. ५०/३२ बाद,
२९	११	८	गु.	५७	९	रोहि.	११	५७	प्री.	४८	४५	वि.	२३	५३	२७	१०	१९	६	मिथुन	४५	५०	६	४३	१८	२३	१०	२५	१३	३७	भ. २३/५३ तक, बुध शत. में ३२/२४, शुक्र श्रव. में ५२/५४, (B)
२९	१६	९	शु.	६०	०	मृग.	११	४३	आ.	५१	९	बा.	३०	२३	२८	११	२०	७	मिथुन			६	४१	१८	२४	१०	२६	१३	३५	मंगल श्रव. में ४७/१३,
२९	२०	९	श.	३	३८	आर्द्रा	२७	७	सौ.	५३	३	कौ.	३	३८	२९	१२	२१	८	मिथुन			६	४०	१८	२४	१०	२७	१३	३०	
२९	२५	१०	र.	९	१७	पुन.	३३	३५	शो.	५४	४	ग.	९	१७	३०	१३	२२	९	कर्क	१७	७	६	३९	१८	२५	१०	२८	१३	२२	भ. ४१/२७ बाद,
२९	३०	११	चं.	१३	३९	पुष्य	३८	४३	अ.	५३	५८	वि.	१३	३९	चै.१	१४	२३	१०	कर्क			६	३८	१८	२६	१०	२९	१३	१३	भ. १३/३९ तक, सं. सूर्य मीन में ४४/६, मु. १५, पुण्यकाल (C)
२९	३४	१२	मं.	१६	२९	आश्ले	४२	२०	सु.	५२	३८	बा.	१६	२९	२	१५	२४	११	सिंह	४२	२०	६	३७	१८	२६	११	०	१३	२	गुरु पू.भा. २ में ५९/१५, गोविन्द द्वादशी, भौम-प्रदोष व्रत,
२९	३९	१३	बु.	१७	४१	मघा	४४	२२	धृ.	५०	४	तै.	१७	४१	३	१६	२५	१२	सिंह			६	३५	१८	२७	११	१	१२	४८	
२९	४४	१४	गु.	१७	१९	पू.फा.	४४	५८	शू.	४६	२२	व.	१७	१९	४	१७	२६	१३	कन्या	५९	५४	६	३४	१८	२८	११	२	१२	३२	भ. १७/१९ से ४६/२४ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, होलिका (D)
२९	४९	१५	शु.	१५	३५	उ.फा.	४४	२१	गं.	४१	४०	ब.	१५	३५	५	१८	२७	१४	कन्या			६	३३	१८	२८	११	३	१२	१५	सूर्य उ.भा. में ५/१०, बुध पू.भा. में ३६/१९, होलाष्टक (E)

(A) श्रीरामकृष्ण परमहंस, (B) होलाष्टक प्रारम्भ, (C) अगले दिन मध्याह्न तक, आमलकी एकादशी व्रत (स.), (D) दहन (२१ घं. १ मि. से २२ घं. १३ मि. के मध्य) (देखें पृ. 16), (E) समाप्त, जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १० मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	९	१०	१०	९	९	१	७
२५	२०	८	५	२१	९	२५	१	१
१३	२२	३७	४४	५२	९	३८	४६	४६
३८	५१	३५	१३	४५	९	४३	१४	१४
५९	७०८	४४	९४	१४	५४	६	३	३
५८	४८	५३	२६	३०	४२	३३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२ पू.भा.	४ रोहि.	४ उ.षा.	४ धनि.	१ पू.भा.	४ उ.षा.	१ धनि.	२ कृत्ति.	४ विशा.

कुण्डली सूर्योदय (१० मार्च)

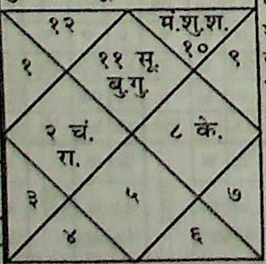

लोकभविष्य—कुम्भ राशि में सूर्य-बुध एवं गुरु का होना पक्ष के पूर्वार्ध में कहीं दुर्भिक्ष से जन जीवनोपयोगी वस्तुओं में महंगाई करे। शनि, मंगल एवं शुक्र की स्थिति मकर राशि में है एवं मंगल-शुक्र दोनों श्रवण नक्षत्र में होने से भारत के प्रधान नेताओं की सुरक्षा के लिए चिन्तनीय है। यह योग संवतान्त तक प्रभावी रहेगा। भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि के योग भी हैं।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में बाजारों में मन्दी और तेजी के रिएक्शन आयेंगे। ४ मार्च से सोना, चांदी, अनाज, तेल, तिलहन एवं रुई में अच्छी तेजी बने। १० से १४ मार्च तक वायदा बाजार तेज रहें। १८ मार्च को अचानक मन्दी का रुख रहे।

कुण्डली सूर्योदय (१८ मार्च)

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १८ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	४	९	१०	१०	९	९	१	७
३	२९	१४	१८	२३	१६	२६	१	१
१२	२५	३७	५२	४८	४०	३०	२०	२०
१६	१७	१४	३१	२७	५९	१	४८	४८
५९	८०२	४५	१०३	१४	५८	६	३	३
४०	२२	४	५६	२४	३७	१३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४ पू.भा.	१ उ.फा.	२ श्रव.	४ शत.	२ पू.भा.	३ श्रव.	१ धनि.	२ कृत्ति.	४ विशा.

आकाशलक्षण—३ से १८ मार्च तक शनि, मंगल, शुक्र का एकत्र होना असामयिक वर्षा से खड़ी फसलों को भारी हानि पहुंचायेगा—"शनैश्चर-धरापुत्रावेकस्थौ वृष्टिकारकौ।" इस पक्ष में म.प्र., बंगाल, आसाम, महाराष्ट्र, प.राजस्थान एवं कश्मीर में कहीं तेज हवाओं के साथ खण्डवृष्टि हो। उ.भारत में गर्मी अनुभव होने लगेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०७८, शाक १९४३, चैत्र कृष्ण पक्ष २४

(१९ मार्च से १ अप्रैल, सन् २०२२ ई.)
उत्तरायण, दक्षिण-उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

२६ मार्च को गु. पूर्व में उदित हो जायेगा। २० मार्च को बु. पूर्व में लुप्त हो जायेगा। प्रातः श. शु. मं. पूर्व में होंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. चैत्र	तारीखें अं. मार्च	तारीखें श. फाल्गुन	तारीखें मु. शाबान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२९	५३	१	श.	१२	४४	हस्त	४२	४४	वृ.	३६	१०	कौ.	१२	४४	६	१९	२८	१५	कन्या			६	३२	१८	२९	११	४	११	५५	शनि धनि. २ में ३३/५८, वसन्तोत्सव, होला महल्ला (A)
२९	५८	२	र.	९	०	चित्रा	४०	२३	ध्रु.	३०	४	ग.	९	०	७	२०	२९	१६	तुला	११	३९	६	३१	१८	३०	११	५	११	३४	भ. ३६/४५ बाद, सूर्य सायन मेष में ३६/२२, उत्तरगोल प्रारम्भ, (B)
३०	३	३	चं.	४	३८	स्वा.	३७	३२	व्या.	२३	३१	वि.	४	३८	८	२१	३०	१७	तुला			६	२९	१८	३०	११	६	११	१०	भ. ४/३८ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
अवम		४	चं.	५९	४७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
३०	७	५	मं.	५४	४४	विशा.	३४	२३	ह.	१६	४१	कौ.	२७	१५	९	२२	चै.१	१८	वृश्चिक	२०	१२	६	२८	१८	३१	११	७	१०	४५	शक चैत्र (शक सं. १९४४) प्रारम्भ,
३०	१२	६	बु.	४९	३४	अनु.	३१	३	व.	९	४०	ग.	२२	९	१०	२३	२	१९	वृश्चिक			६	२७	१८	३२	११	८	१०	१८	भ. ४९/३४ बाद,
३०	१७	७	गु.	४४	२०	ज्येष्ठा	२७	३९	सि. व्य.	२ ५५	३२ २६	वि.	१६	४५	११	२४	३	२०	धनु	२७	३९	६	२६	१८	३२	११	९	९	४९	भ. १६/४५ तक, बुध मीन में ११/१५, शुक्र धनि. में (C)
३०	२१	८	शु.	३९	१०	मूल	२४	१६	व.	४८	२३	बा.	११	४५	१२	२५	४	२१	धनु			६	२४	१८	३३	११	१०	९	१८	बुध उ.भा. में ५८/१५, श्रीशीतलाष्टमी,
३०	२६	९	श.	३४	६	पू.षा.	२०	५९	प.	४१	२६	तै.	६	३८	१३	२६	५	२२	मकर	३५	१०	६	२३	१८	३४	११	११	८	४६	गुरु उदित ६ घं. २३ मि.,
३०	३१	१०	र.	२९	१६	उ.षा.	१७	५४	शि.	३४	४१	व.	१	४२	१४	२७	६	२३	मकर			६	२२	१८	३४	११	१२	८	११	भ. १/४२ से २९/१६ तक,
३०	३५	११	चं.	२४	४६	श्रव.	१५	८	सि.	२८	१४	बा.	२४	४६	१५	२८	७	२४	कुम्भ	४३	५३	६	२१	१८	३५	११	१३	७	३५	पंचक प्रारम्भ ४३/५३, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.),
३०	४०	१२	मं.	२०	४७	धनि.	१२	५१	सा.	२२	१२	तै.	२०	४७	१६	२९	८	२५	कुम्भ			६	१९	१८	३५	११	१४	६	५८	मंगल धनि. में ३२/३१, गुरु पू.भा. ३ में ५८/१६, (D)
३०	४५	१३	बु.	१७	३२	शत.	११	१४	शु.	१६	४६	व.	१७	३२	१७	३०	९	२६	मीन	५५	३५	६	१८	१८	३६	११	१५	६	१८	भ. १७/३२ से ४६/२० तक, वारुणी योग (सूर्योदय से (E)
३०	४९	१४	गु.	१५	१३	पू.भा.	१०	३३	शु.	१२	५	श.	१५	१३	१८	३१	१०	२७	मीन			६	१७	१८	३७	११	१६	५	३७	सूर्य रेव. में ३२/५१, शुक्र कुम्भ में ५/५५,
३०	५४	३०	शु.	१४	५	उ.भा.	१०	५९	ब्र.	८	१९	ना.	१४	५	१९	अ.१	११	२८	मीन			६	१६	१८	३७	११	१७	४	५४	बुध रेव. में ४६/३१, चान्द्र संवत्सर २०७८ वि. पूर्ण, (F)

गुरु उदित २६ मार्च

(A) श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), (B) महाविषुव दिन, बुध पूर्व में अस्त ६ घं. ३१ मि., (C) ३८/२५, मेला श्रीशीतला माता-कुराली (पं.), (D) गुरु-बाल्य समाप्त ६ घं. २३ मि., भौम प्रदोष व्रत, (E) १० घं. ४८ मि. तक), मेला पिहोवा तीर्थ हरि. (देखें पृ. 17), (F) अप्रैल प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २५ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	९	११	१०	९	९	१	७
१०	७	१९	१	२५	२३	२७	०	०
९	४	५३	२६	२८	३९	१२	५८	५८
१९	४४	३	१७	५३	३५	३३	३३	३३
५९	८४३	४५	११२	१४	६१	५	३	३
२८	५२	१२	४७	१५	१५	५२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. ३	मूल ३	श्रव. ३	पू.भा. ४	पू.भा. २	धनि. १	धनि. २	कृति. २	विशा. ४

कुण्डली सूर्योदय (२५ मार्च)

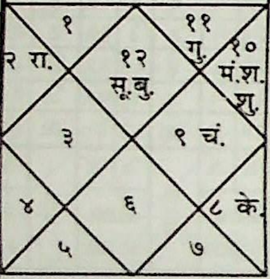

लोकभविष्य—शनि-मंगल का शनिक्षेत्र में एकत्र होना कहीं सीमा-विवाद, सत्तासंघर्ष किंवा प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, अग्निकाण्ड एवं कहीं साम्प्रदायिक संघर्ष का संकेत देता है—"युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्ष-कारकौ।"

भारत की प्रभाव राशि में शनि-मंगल प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए भयावह हैं, भगवान् सुरक्षा रखें।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—२० मार्च को शनि की स्थिति रुई, दालवाना, अनाज, घी, तिलहन, गुड़, खाण्ड में तेजी करे। २१ मार्च को बाजारों में जोरदार उथपटक रहे। २४ मार्च के लगभग सूर्य-बुध सोना, चांदी, अनाज, तिलहन में तेजी करे। ३१ मार्च के लगभग शुक्र-गुरु की स्थिति तिलहन, दालों, जौ, चना आदि में तेजी करेगी।

कुण्डली सूर्योदय (१ अप्रै.)

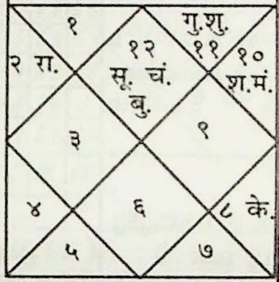

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	९	११	१०	१०	९	१	७
१७	१३	२५	१५	२७	०	२७	०	०
४	५०	१	२	८	५४	५२	३६	३६
५५	३७	४३	७	८	४५	३०	१८	१८
५९	७८१	४५	१२१	१४	६३	५	३	३
१४	४०	१७	१४	४	१७	२८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. १	उ.भा. ४	धनि. १	उ.भा. ४	पू.भा. ३	धनि. ३	धनि. २	कृति. २	विशा. ४

आकाशलक्षण—मार्च २०, २१, २४ से २६ एवं २९, ३१ मार्च को कहीं आकालिक वर्षा से हानि एवं म.प्र., उ.प्र., बंगाल, आसाम आदि में तेज हवाओं एवं खण्डवृष्टि हो। उ.भारत में वायुवेग रहे एवं गर्मी का प्रकोप बढ़ने लगेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. 2077 **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** जनवरी, सन् 2021 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
पौष कृष्ण	1	2	शु.	9	34	पुष्य	20	15	वै.	13	37	कर्क			7	24	17	28	7	18	17	31	7	20	17	41	6	48	17	15	1	भ. 21/22 बाद, इंग्लिश नववर्ष (2021 ई.) प्रारम्भ,
	2	3	श.	9	10	आश्ले.	20	16	वि.	12	2	सिंह	20	16	7	24	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	भ. 9/10 तक, बुध उ.षा. में 27/5, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	3	4/	र.	8	22	मघा	19	56	प्री.	10	9	सिंह			7	25	17	29	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	3	शुक्र मूल धनु में 29/3,
		5		31	14																											पंचमी तिथिक्षय,
	4	6	चं.	29	47	पू.फा.	19	17	आ./	8	0	कन्या	25	4	7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	43	6	48	17	17	4	भ. 29/47 बाद, बुध मकर में 27/56,
									सौ.	29	36																					
	5	7	मं.	28	4	उ.फा.	18	20	शो.	27	0	कन्या			7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	43	6	49	17	18	5	भ. 16/56 तक,
	6	8	बु.	26	7	हस्त	17	9	अ.	24	12	तुला	28	29	7	25	17	31	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	6	गुरु श्रव. 1 में 27/48,
	7	9	गु.	23	58	चित्रा	15	45	सु.	21	14	तुला			7	25	17	32	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	19	7	शनि अस्त 17/32,
	8	10	शु.	21	40	स्वाती	14	12	धृ.	18	10	वृश्चिक	30	57	7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	46	6	49	17	20	8	भ. 10/49 से 21/40 तक,
	9	11	श.	19	17	विशा.	12	32	शू.	15	0	वृश्चिक			7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	सफला एकादशी व्रत (स.),
	10	12	र.	16	53	अनु.	10	49	गं.	11	49	वृश्चिक			7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	22	10	सूर्य उ.षा. में 25/45, बुध श्रव. में 30/21, प्रदोष व्रत,
	11	13	चं.	14	33	ज्येष्ठा	9	9	वृ./	8	39	धनु	9	9	7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	22	11	भ. 14/33 से 25/28 तक, बुध पश्चिम में उदित 17/36,
									ध्रु.	29	37																					
	12	14	मं.	12	23	मूल/	7	37	व्या.	26	47	धनु			7	25	17	36	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	23	12	
						पू.षा.	30	21																								
	13	30	बु.	10	30	उ.षा.	29	28	ह.	24	14	मकर	12	5	7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	50	6	49	17	24	13	लोहड़ी (पंजाब-हरि.-हि.प्र., ज.क.),
पौष शुक्ल	14	1	गु.	9	1	श्रवण	29	4	व.	22	4	मकर			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	25	14	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, सं. सूर्य मकर में 8/15,(A)
	15	2	शु.	8	5	धनि.	29	16	सि.	20	22	कुम्भ	17	5	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	पंचक प्रारम्भ 17/5, मट्टु पोंगल,
	16	3	श.	7	46	शत.	30	9	व्य.	19	11	कुम्भ			7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	16	भ. 19/57 बाद,
	17	4	र.	8	8	पू.भा.	—	—	व.	18	32	मीन	25	15	7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	17	भ. 8/8 तक, गुरु अस्त 17/41,
	18	5	चं.	9	14	पू.भा.	7	43	प.	18	26	मीन			7	24	17	42	7	19	17	45	7	21	17	53	6	49	17	28	18	
	19	6	मं.	10	59	उ.भा.	9	54	शि.	18	47	मीन			7	24	17	43	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	बुध धनि. में 21/52, सूर्य सायन कुम्भ में 26/11,
	20	7	बु.	13	15	रेवती	12	36	सि.	19	29	मेष	12	36	7	24	17	43	7	18	17	46	7	20	17	55	6	49	17	29	20	भ. 13/15 से 26/32 तक, पंचक समाप्त 12/36, जन्मदिन (B)
	21	8	गु.	15	50	अश्वि.	15	36	सा.	20	23	मेष			7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	56	6	48	17	30	21	गुरु श्रव. 2 में 8/46,
	22	9	शु.	18	29	भरणी	18	40	शु.	21	18	वृष	25	24	7	23	17	45	7	18	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	22	मंगल भर. में 13/2, शनि श्रव. 1 में 17/44,
	23	10	श.	20	56	कृत्ति.	21	32	शु.	22	2	वृष			7	23	17	46	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	23	सूर्य श्रव. में 27/59,
	24	11	र.	22	58	रोहि.	24	0	ब्र.	22	28	वृष			7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	58	6	48	17	32	24	भ. 9/57 से 22/58 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
	25	12	चं.	24	25	मृग.	25	55	ऐं.	22	27	मिथुन	13	2	7	22	17	48	7	17	17	50	7	19	17	59	6	47	17	33	25	बुध कुम्भ में 16/55, शुक्र उ.षा. में 11/39,
	26	13	मं.	25	11	आर्द्रा	27	11	वै.	21	57	मिथुन			7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	26	भारत गणतन्त्र दिवस, भौमप्रदोप व्रत,
	27	14	बु.	25	17	पुन.	27	49	वि.	20	55	कर्क	21	43	7	21	17	50	7	16	17	52	7	18	18	1	6	47	17	35	27	भ. 25/17 बाद, शुक्र मकर में 27/29, राहु रोहि. 4, केतु ज्ये. (C)
	28	15	गु.	24	46	पुष्य	27	50	प्री.	19	24	कर्क			7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	1	6	46	17	35	28	भ. 13/2 तक, पौषी पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, माघस्नान प्रारम्भ,
मा.कृ.	29	1	शु.	23	42	आश्ले.	27	21	आ.	17	26	सिह	27	21	7	20	17	52	7	15	17	54	7	17	18	2	6	46	17	36	29	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	30	2	श.	22	13	मघा	26	28	सौ.	15	7	सिंह			7	19	17	52	7	14	17	55	7	17	18	3	6	46	17	37	30	बुध वक्री 21/22,
	31	3	र.	20	25	पू.फा.	25	17	शो.	12	31	कन्या	30	58	7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	4	6	45	17	38	31	भ. 9/19 से 20/25 तक, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत

गुरु अस्त 17 जनयरी

(A) मु. 30, पुण्यकाल सारा दिन, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 17/41, शुक्र पू.षा. में 20/22, यूरेनस मार्गी 14/8, मकर संक्रान्ति, पोंगल (द.भा.), (B) श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी, (C) 2 में 7/57,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. 2077 — **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** — **फरवरी, सन् 2021 ई.**

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
माघ कृष्ण	1	4	चं.	18	25	उ.फा.	23	57	अ./	9	44	कन्या			7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	5	6	45	17	38	1	बुध पश्चिम में अस्त 17/54,
									सु.	30	51																					
	2	5	मं.	16	19	हस्त	22	32	धृ.	27	55	कन्या			7	17	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	44	17	39	2	
	3	6	बु.	14	12	चित्रा	21	7	शू.	25	0	तुला	9	49	7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	40	3	भ. 14/12 से 25/11 तक,
	4	7	गु.	12	8	स्वाती	19	45	गं.	22	7	तुला			7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	40	4	वक्री बुध मकर में 22/40, गुरु श्रव. 3 में 9/53, शुक्र श्रव. में (A)
	5	8	शु.	10	7	विशा.	18	28	वृ.	19	19	वृश्चिक	12	46	7	15	17	58	7	11	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	5	सूर्य धनि. में 31/12,
	6	9/	श.	8	13	अनु.	17	17	ध्रु.	16	36	वृश्चिक			7	15	17	59	7	10	18	0	7	13	18	8	6	42	17	42	6	भ. 19/19 से 30/26 तक, शुक्र-वार्धक्य प्रारमभ 7/12,
		10		30	26																											दशमी तिथिक्षय,
	7	11	र.	28	48	ज्येष्ठा	16	14	व्या.	14	0	धनु	16	14	7	14	17	59	7	9	18	1	7	13	18	9	6	42	17	43	7	षट्तिला एकादशी व्रत (स्मा.),
	8	12	चं.	27	20	मूल	15	20	ह.	11	30	धनु			7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	षट्तिला एकादशी व्रत (वै.),
	9	13	मं.	26	5	पू.षा.	14	38	व./	9	10	मकर	20	30	7	12	18	1	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	9	भ. 26/5 बाद, भौमप्रदोष व्रत, मेरु त्रयोदशी (जैन), शुक्र पूर्व (B)
									सि.	31	1																					
	10	14	बु.	25	9	उ.षा.	14	12	व्य.	29	7	मकर			7	11	18	2	7	7	18	3	7	11	18	11	6	40	17	45	10	भ. 13/37 तक, वक्री बुध श्रव. में 22/46, शनि उदित 7/11,
	11	30	गु.	24	35	श्रवण	14	5	व.	27	32	कुम्भ	26	10	7	11	18	3	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	पंचक प्रारम्भ 26/10, मौनी अमा,
माघ शुक्ल	12	1	शु.	24	30	धनि.	14	23	प.	26	19	कुम्भ			7	10	18	4	7	6	18	5	7	9	18	13	6	38	17	46	12	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, सं. सूर्य कुम्भ में 21/12, मु. 15, (C)
	13	2	श.	24	56	शत.	15	11	शि.	25	31	कुम्भ			7	9	18	5	7	5	18	6	7	8	18	13	6	38	17	47	13	चन्द्रदर्शन, मु. 30,
	14	3	र.	25	59	पू.भा.	16	32	सि.	25	11	मीन	10	9	7	8	18	5	7	4	18	7	7	8	18	14	6	37	17	47	14	गौरी तृतीया (गोंतरी),
	15	4	चं.	27	37	उ.भा.	18	28	सा.	25	18	मीन			7	7	18	6	7	3	18	7	7	7	18	15	6	36	17	48	15	भ. 14/48 से 27/37 तक, शुक्र धनि. में 18/31, तिल-वरद-कुन्द (D)
	16	5	मं.	29	46	रेवती	20	56	शु.	25	48	मेष	20	56	7	6	18	7	7	2	18	8	7	6	18	16	6	36	17	48	16	पंचक समाप्त 20/56, मंगल कृत्ति. में 7/7, श्रीपंचमी, लक्ष्मी पंचमी, (E)
	17	6	बु.	—	—	अश्वि.	23	48	शु.	26	37	मेष			7	5	18	8	7	2	18	9	7	5	18	16	6	35	17	49	17	
	18	6	गु.	8	18	भरणी	26	54	ब्र.	27	35	मेष			7	4	18	9	7	1	18	9	7	4	18	17	6	34	17	50	18	गुरु श्रव. 4 में 13/16, सूर्य सायन मीन में 16/15, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, (F)
	19	7	शु.	10	58	कृत्ति.	29	57	ऐं.	28	31	वृष	9	40	7	3	18	9	7	0	18	10	7	4	18	18	6	33	17	50	19	भ. 10/58 से 24/15 तक, सूर्य शत. में 11/37, शनि श्रव. 2 में (G)
	20	8	श.	13	32	रोहि.	—	—	वै.	29	14	वृष			7	2	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	32	17	51	20	बुध मार्गी 30/21, शुक्र कुम्भ में 26/22, भीष्माष्टमी
	21	9	र.	15	42	रोहि.	8	43	वि.	29	34	मिथुन	21	55	7	1	18	11	6	58	18	12	7	2	18	19	6	32	17	52	21	मंगल वृष में 28/36, माघ गुप्त नवरात्र समाप्त,
	22	10	चं.	17	16	मृग.	10	57	प्री.	29	22	मिथुन			7	0	18	12	6	57	18	12	7	1	18	20	6	31	17	52	22	भ. 29/40 बाद, नवरात्र-पारणा,
	23	11	मं.	18	5	आर्द्रा	12	30	आ.	28	34	मिथुन			6	59	18	12	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	23	भ. 18/5 तक, जया एकादशी व्रत (स.),
	24	12	बु.	18	6	पुन.	13	17	सौ.	27	8	कर्क	7	10	6	58	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	24	भीष्म द्वादशी, प्रदोष व्रत,
	25	13	गु.	17	19	पुष्य	13	17	शो.	25	7	कर्क			6	57	18	14	6	54	18	14	6	58	18	21	6	28	17	54	25	यूरेनस भर. 1 में 21/14,
	26	14	शु.	15	50	आश्ले.	12	35	अ.	22	34	सिंह	12	35	6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	54	26	भ. 15/50 से 26/49 तक, शुक्र शत. में 10/20, श्रीसत्यनारायण व्रत,
	27	15	श.	13	47	मघा	11	18	सु.	19	37	सिंह			6	55	18	15	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	27	माघी पूर्णिमा, श्रीगुरु रविदास जयन्ती, माघस्नान समाप्त,
फा.कृ.	28	1	र.	11	19	पू.फा.	9	35	धृ.	16	21	कन्या	15	6	6	54	18	16	6	51	18	16	6	55	18	23	6	26	17	55	28	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,

शुक्र अस्त 9 फरवरी

गुरु उदित 15 फरवरी

(A) 27/1, जन्मदिन स्वामी विवेकानन्दजी, (B) में अस्त 7/12, (C) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, (D) चतुर्थी, बुध पूर्व में उदित 7/7, गुरु उदित 7/7, (E) वसन्त पंचमी, श्री लक्ष्मी-सरस्वती पूजन, (F) आरोग्य सप्तमी, रथ सप्तमी, गुरु-बाल्य समाप्त 7/7, (G) 29/50, मर्यादा महोत्सव (जैन),

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. 2077 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) मार्च, सन् 2021 ई.

मास पक्ष	गते	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
फाल्गुन कृष्ण	1	2/	चं.	8	36	उ.फा./	7	36	शू.	12	54	कन्या			6	53	18	17	6	50	18	17	6	54	18	24	6	25	17	56	1	भ. 19/11 से 29/46 तक,
		3		29	46	हस्त	29	31																								तृतीया तिथिक्षय,
	2	4	मं.	26	59	चित्रा	27	29	गं./	9	24	तुला	16	29	6	52	18	18	6	49	18	18	6	53	18	24	6	24	17	57	2	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
									वृ.	29	58																					
	3	5	बु.	24	22	स्वाती	25	35	ध्रु.	26	39	तुला			6	51	18	18	6	48	18	18	6	52	18	25	6	23	17	57	3	
	4	6	गु.	21	59	विशा.	23	57	व्या.	23	33	वृश्चिक	18	20	6	49	18	19	6	47	18	19	6	51	18	26	6	22	17	58	4	भ. 21/59 बाद, सूर्य पू.भा. में 17/59, गुरु धनि. 1 में 25/58,
	5	7	शु.	19	54	अनु.	22	37	ह.	20	43	वृश्चिक			6	48	18	20	6	46	18	20	6	50	18	26	6	21	17	58	5	भ. 8/57 तक, बुध धनि. में 7/14,
	6	8	श.	18	10	ज्येष्ठा	21	38	व.	18	8	धनु	21	38	6	47	18	21	6	45	18	20	6	49	18	27	6	20	17	59	6	
	7	9	र.	16	47	मूल	20	59	सि.	15	51	धनु			6	46	18	21	6	44	18	21	6	48	18	27	6	19	17	59	7	भ. 28/15 बाद,
	8	10	चं.	15	44	पू.षा.	20	40	व्य.	13	49	मकर	26	38	6	45	18	22	6	42	18	21	6	47	18	28	6	18	18	0	8	भ. 15/44 तक, शुक्र पू.भा. में 26/34,
	9	11	मं.	15	2	उ.षा.	20	41	व.	12	4	मकर			6	44	18	23	6	41	18	22	6	46	18	28	6	17	18	0	9	विजया एकादशी व्रत, (स.),
	10	12	बु.	14	40	श्रव.	21	2	प.	10	36	मकर			6	42	18	23	6	40	18	23	6	45	18	29	6	16	18	1	10	प्रदोष व्रत,
	11	13	गु.	14	40	धनि.	21	45	शि.	9	23	कुम्भ	9	21	6	41	18	24	6	39	18	23	6	44	18	29	6	15	18	1	11	भ. 14/40 से 26/52 तक, पंचक प्रारम्भ 9/21, मंगल रोहि. में (A)
	12	14	शु.	15	3	शत.	22	50	सि.	8	29	कुम्भ			6	40	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	2	12	
	13	30	श.	15	51	पू.भा.	24	21	सा.	7	53	मीन	17	56	6	39	18	25	6	37	18	24	6	42	18	30	6	13	18	2	13	शनैश्चरी अमा,
फाल्गुन शुक्ल	14	1	र.	17	6	उ.भा.	26	19	शु.	7	39	मीन			6	38	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	3	14	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, सं. सूर्य मीन में (B)
	15	2	चं.	18	50	रेवती	28	43	शु.	7	45	मेष	28	43	6	36	18	27	6	35	18	26	6	40	18	32	6	11	18	3	15	पंचक समाप्त 28/43, नेप्च्यून पू.भा. 3 में 25/1, अवतारदिन (C)
	16	3	मं.	20	59	अश्वि.	—	—	ब्र.	8	13	मेष			6	35	18	27	6	33	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	बुध शत. में 18/31, शुक्र मीन में 27/0,
	17	4	बु.	23	29	अश्वि.	7	30	ऐं.	8	58	मेष			6	34	18	28	6	32	18	27	6	38	18	33	6	9	18	4	17	भ. 10/14 से 23/29 तक, सूर्य उ.भा. में 26/21,
	18	5	गु.	26	10	भरणी	10	34	वै.	9	56	वृष	17	21	6	33	18	29	6	31	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	
	19	6	शु.	28	48	कृत्ति.	13	44	वि.	10	58	वृष			6	31	18	29	6	30	18	28	6	36	18	34	6	7	18	5	19	शुक्र उ.भा. में 19/14,
	20	7	श.	—	—	रोहि.	16	45	प्री.	11	56	मिथुन	30	8	6	30	18	30	6	29	18	29	6	34	18	34	6	6	18	5	20	गुरु धनि. 2 में 8/43, सूर्य सायन मेष में 15/09, उत्तर गोल प्रारम्भ, (D)
	21	7	र.	7	10	मृग.	19	24	आ.	12	38	मिथुन			6	29	18	31	6	28	18	29	6	33	18	35	6	5	18	6	21	भ. 7/10 से 20/5 तक, होलाष्टक प्रारम्भ,
	22	8	चं.	9	0	आर्द्रा	21	27	सौ.	12	55	मिथुन			6	28	18	31	6	27	18	30	6	32	18	35	6	4	18	6	22	शक सम्वत् 1943 प्रारम्भ,
	23	9	मं.	10	7	पुन.	22	45	शो.	12	37	कर्क	16	30	6	27	18	32	6	25	18	30	6	31	18	36	6	3	18	7	23	
	24	10	बु.	10	24	पुष्य	23	12	अ.	11	40	कर्क			6	25	18	32	6	24	18	31	6	30	18	36	6	1	18	7	24	भ. 22/5 बाद,
	25	11	गु.	9	47	आश्ले.	22	48	सु.	10	2	सिंह	22	48	6	24	18	33	6	23	18	31	6	29	18	37	6	0	18	8	25	भ. 9/47 तक, बुध पू.भा. में 21/58, शनि श्रव. 3 में 9/47, (E)
	26	12/	शु.	8	21	मघा	21	39	धृ./	7	45	सिंह			6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	5	59	18	8	26	प्रदोष व्रत,
		13		30	12				शू.	28	52																					त्रयोदशी तिथिक्षय,
	27	14	श.	27	27	पू.फा.	19	51	गं.	25	31	कन्या	25	19	6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	38	5	58	18	8	27	भ. 27/27 बाद,
	28	15	र.	24	18	उ.फा.	17	35	वृ.	21	48	कन्या			6	20	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	57	18	9	28	भ. 13/53 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, होलिकादहन (प्रदोष में), (F)
चै. कृ.	29	1	चं.	20	54	हस्त	15	2	ध्रु.	17	53	तुला	25	42	6	19	18	36	6	18	18	34	6	25	18	39	5	56	18	9	29	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, वसन्तोत्सव, होला महल्ला श्री आनन्दपुर साहब (पं.),
	30	2	मं.	17	27	चित्रा	12	21	व्या.	13	54	तुला			6	18	18	36	6	17	18	34	6	23	18	39	5	55	18	10	30	भ. 27/47 बाद, शुक्र रेव. में 12/32, राहु रोहि. 3, केतु ज्ये. 1 में 29/47,
	31	3	बु.	14	6	स्वाती	9	45	ह./	9	58	वृश्चिक	25	56	6	17	18	37	6	16	18	35	6	22	18	40	5	54	18	10	31	भ. 14/6 तक, सूर्य रेव. में 13/14, बुध मीन में 24/41, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
									व	30	13																					

होलाष्टक
21 से 28 मार्च

(A) 11/48, बुध कुम्भ में 12/30, श्री महाशिवरात्रि व्रत, (B) 18/3, मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (C) श्रीरामकृष्ण परमहंस, (D) महाविषुव दिन, (E) आमलकी एकादशी व्रत (स.), गोविन्द द्वादशी, (F) होलाष्टक समाप्त, जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
चैत्र कृष्ण	1	4	गु.	11	0	विशा.	7	21	सि.	26	45	वृश्चिक			6	15	18	37	6	15	18	35	6	21	18	40	5	53	18	11	1	मेला श्री शीतला माता (कुराली) पंजाब,
						अनु.	29	19																								
	2	5/	शु.	8	15	ज्येष्ठा	27	43	व्य.	23	39	धनु	27	43	6	14	18	38	6	14	18	36	6	20	18	41	5	52	18	11	2	भ. 29/59 बाद, मंगल मृग. में 23/9, बुध उ.भा. में 22/58,
		6		29	59																											षष्ठी तिथिक्षय,
	3	7	श.	28	13	मूल	26	38	व.	20	57	धनु			6	13	18	39	6	13	18	36	6	19	18	41	5	51	18	11	3	भ. 17/6 तक,
	4	8	र.	27	0	पू.षा.	26	5	प.	18	42	धनु			6	12	18	39	6	12	18	37	6	18	18	42	5	50	18	12	4	श्रीशीतलाष्टमी,
	5	9	चं.	26	19	उ.षा.	26	4	शि.	16	52	मकर	8	2	6	11	18	40	6	10	18	37	6	17	18	42	5	49	18	12	5	गुरु धनि. 3 कुम्भ में 24/25,
	6	10	मं.	26	9	श्रव.	26	34	सि.	15	28	मकर			6	9	18	41	6	9	18	38	6	16	18	43	5	48	18	13	6	भ. 14/14 से 26/9 तक, बुध पूर्व में अस्त 6/9,
	7	11	बु.	26	29	धनि.	27	32	सा.	14	28	कुम्भ	15	0	6	8	18	41	6	8	18	39	6	15	18	43	5	47	18	13	7	पंचक प्रारम्भ 15/0, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.),
	8	12	गु.	27	16	शत.	28	57	शु.	13	50	कुम्भ			6	7	18	42	6	7	18	39	6	14	18	44	5	46	18	14	8	
	9	13	शु.	28	28	पू.भा.	—	—	शु.	13	32	मीन	24	16	6	6	18	42	6	6	18	40	6	13	18	44	5	45	18	14	9	भ. 28/28 बाद, बुध रेव. में 29/7, प्रदोष व्रत,
	10	14	श.	30	3	पू.भा.	6	46	ब्र.	13	33	मीन			6	5	18	43	6	5	18	40	6	12	18	45	5	44	18	15	10	भ. 17/16 तक, शुक्र अश्वि. मेष में 6/28, मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.),
	11	30	र.	—	—	उ.भा.	8	57	ऐं.	13	52	मीन			6	3	18	44	6	4	18	41	6	11	18	45	5	43	18	15	11	
	12	30	चं.	8	0	रेव.	11	29	वै.	14	26	मेष	11	29	6	2	18	44	6	3	18	41	6	10	18	46	5	42	18	15	12	पंचक समाप्त 11/29, सोमवती अमा. चान्द्र संवत्सर 2077 वि. पूर्ण,
चैत्र शुक्ल	13	1	मं.	10	17	अश्वि.	14	19	वि.	15	15	मेष			6	1	18	45	6	2	18	42	6	9	18	46	5	41	18	16	13	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15, सं. सूर्य अश्वि. मेष में 26/31, (A)
	14	2	बु.	12	48	भरणी	17	22	प्री.	16	14	वृष	24	9	6	0	18	46	6	1	18	42	6	8	18	47	5	40	18	16	14	
	15	3	गु.	15	27	कृत्ति.	20	32	आ.	17	18	वृष			5	59	18	46	6	0	18	43	6	7	18	47	5	39	18	17	15	भ. 28/46 बाद, श्री मत्स्य जयन्ती, गौरी तृतीया (गणगौर), आन्दोलन तृतीया,
	16	4	शु.	18	6	रोहि.	23	39	सौ.	18	22	वृष			5	58	18	47	5	58	18	44	6	6	18	48	5	38	18	17	16	भ. 18/6 तक, बुध अश्वि. मेष में 20/56, **शुक्र उदित 18 अप्रै.**
	17	5	श.	20	32	मृग.	26	33	शो.	19	17	मिथुन	13	9	5	57	18	48	5	57	18	44	6	5	18	48	5	37	18	18	17	श्री(लक्ष्मी)पंचमी, नागपंचमी, हयव्रत,
	18	6	र.	22	35	आर्द्रा	29	1	अ.	19	54	मिथुन			5	56	18	48	5	56	18	45	6	4	18	49	5	36	18	18	18	शुक्र पश्चिम में उदित 18/48, स्कन्द षष्ठी, कुम्भ महापर्व-हरिद्वार 13 अप्रै.
	19	7	चं.	24	2	पुन.	—	—	सु.	20	5	कर्क	24	28	5	55	18	49	5	55	18	45	6	3	18	49	5	36	18	19	19	भ. 24/2 बाद, सूर्य सायन वृष में 26/3, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ,
	20	8	मं.	24	43	पुन.	6	52	धृ.	19	42	कर्क			5	53	18	50	5	54	18	46	6	2	18	50	5	35	18	19	20	भ. 12/22 तक, शुक्र भर. में 25/5, अगस्त्य अस्त, दुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी (B)
	21	9	बु.	24	35	पुष्य	7	58	शू.	18	41	कर्क			5	52	18	50	5	53	18	46	6	1	18	50	5	34	18	20	21	शुक्र बाल्य समाप्त 18/48, श्री रामनवमी, नवरात्र समाप्त,
	22	10	गु.	23	36	आश्ले.	8	15	गं.	17	0	सिंह	8	15	5	51	18	51	5	52	18	47	6	0	18	51	5	33	18	20	22	बुध भर. में 28/24, नवरात्र पारणा,
	23	11	शु.	21	48	मघा	7	41	वृ.	14	39	सिंह			5	50	18	51	5	51	18	48	5	59	18	51	5	32	18	21	23	भ. 10/42 से 21/48 तक, कामदा एकादशी व्रत (स.), दोलोत्सव,
	24	12	श.	19	17	पू.फा./	6	22	ध्रु.	11	41	कन्या	11	55	5	49	18	52	5	51	18	48	5	58	18	52	5	31	18	21	24	मंगल आर्द्रा में 25/38, श्रीविष्णु-दमनोत्सव, शनि प्रदोष व्रत,
						उ.फा.	28	23																								
	25	13	र.	16	13	हस्त	25	54	व्या./	8	13	कन्या			5	48	18	53	5	50	18	49	5	57	18	52	5	30	18	22	25	गुरु धनि. 4 में 8/36, अनंग त्रयोदशी, दमनक चतुर्दशी, श्री महावीर जयन्ती (जैन),
									ह.	28	22																					
	26	14	चं.	12	44	चित्रा	23	6	व.	24	15	तुला	12	31	5	47	18	53	5	49	18	49	5	56	18	53	5	30	18	22	26	भ. 12/44 से 22/53 तक, श्रीशिव-दमनोत्सव, श्री सत्यनारायण व्रत,
	27	15	मं.	9	1	स्वाती	20	8	सि.	20	2	तुला			5	46	18	54	5	48	18	50	5	56	18	53	5	29	18	23	27	सूर्य भर. में 18/23, प्लूटो वक्री 25/30, चैत्री पूर्णिमा, वैशाख स्नान प्रारम्भ, (C)
वै. कृष्णा		1		29	15																											वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	28	2	बु.	25	34	विशा.	17	12	व्य.	15	50	वृश्चिक	11	55	5	45	18	55	5	47	18	51	5	55	18	54	5	28	18	23	28	
	29	3	गु.	22	10	अनु.	14	29	व.	11	47	वृश्चिक			5	44	18	55	5	46	18	51	5	54	18	54	5	27	18	24	29	भ. 11/52 से 22/10 तक, बुध कृत्ति. में 13/26,
	30	4	शु.	19	10	ज्ये.	12	7	प./	8	2	धनु	12	7	5	44	18	56	5	45	18	52	5	53	18	55	5	26	18	24	30	बुध वृष में 29/41, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
									शि.	28	40																					

(A) मु. 15, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, मंगल मिथुन में 25/14, चान्द्र संवत्सर 2078 वि. प्रारम्भ, वासन्त (चैत्र) नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफल श्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, कुम्भ महापर्व हरद्वार (प्रमुख स्नान) (देखें पृ. 19), निम्बपत्र-प्राशन गुड़ी पड़वा, चन्द्रव्रत, वैशाखी (पंजाब, हरि, हि.प्र.), (B) (पुनर्वसु योग 6/52 तक), (C) श्री हनुमान जयन्ती (द.भा.),

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. 2078 **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** **मई, सन् 2021 ई.**

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
वैशाख कृष्ण	1	5	श.	16	41	मूल	10	15	सि.	25	47	धनु			5	43	18	57	5	44	18	52	5	52	18	55	5	26	18	24	1	शुक्र कृत्ति. में 20/28, बुध पश्चिम में उदित 18/57.
	2	6	र.	14	50	पू.षा.	8	59	सा.	23	25	मकर	14	45	5	42	18	57	5	43	18	53	5	52	18	56	5	25	18	25	2	भ. 14/50 से 26/14 तक,
	3	7	चं.	13	39	उ.षा.	8	22	शु.	21	36	मकर			5	41	18	58	5	43	18	54	5	51	18	57	5	24	18	25	3	यूरेनस भर. 2 में 10/12.
	4	8	मं.	13	10	श्रव.	8	26	शु.	20	20	कुम्भ	20	43	5	40	18	59	5	42	18	54	5	50	18	57	5	24	18	26	4	पंचक प्रारम्भ 20/43, **शुक्र वृष में 13/26,**
	5	9	बु.	13	22	धनि.	9	10	ब्र.	19	36	कुम्भ			5	39	18	59	5	41	18	55	5	49	18	58	5	23	18	27	5	भ. 25/46 बाद,
	6	10	गु.	14	11	शत.	10	32	ऐं.	19	20	कुम्भ			5	38	19	0	5	40	18	55	5	49	18	58	5	22	18	27	6	भ. 14/11 तक, बुध रोहि. में 17/41,
	7	11	शु.	15	32	पू.भा.	12	26	वै.	19	29	मीन	5	54	5	38	19	1	5	40	18	56	5	48	18	59	5	22	18	28	7	वरूथिनी एकादशी व्रत (स.), श्री वल्लभाचार्य जयन्ती,
	8	12	श.	17	21	उ.भा.	14	46	वि.	19	58	मीन			5	37	19	1	5	39	18	57	5	47	18	59	5	21	18	28	8	शनि प्रदोष व्रत,
	9	13	र.	19	31	रेवती	17	28	प्री.	20	42	मेष	17	28	5	36	19	2	5	38	18	57	5	47	19	0	5	20	18	29	9	भ. 19/31 बाद, पंचक समाप्त 17/28.
	10	14	चं.	21	55	अश्वि.	20	25	आ.	21	38	मेष			5	35	19	3	5	37	18	58	5	46	19	0	5	20	18	29	10	भ. 8/43 तक,
	11	30	मं.	24	29	भरणी	23	31	सौ.	22	41	मेष			5	34	19	3	5	37	18	58	5	45	19	1	5	19	18	30	11	सूर्य कृत्ति. में 12/33, भौमवती अमा,
वैशाख शुक्ल	12	1	बु.	27	6	कृत्ति.	26	39	शो.	23	46	वृष	6	18	5	34	19	4	5	36	18	59	5	45	19	2	5	19	18	30	12	**वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र रोहि. में 16/32,**
	13	2	गु.	—	—	रोहि.	—	—	अ.	24	49	वृष			5	33	19	5	5	36	19	0	5	44	19	2	5	18	18	31	13	चन्द्रदर्शन मु. 45, श्री शिवाजी जयन्ती,
	14	2	शु.	5	39	रोहि.	5	44	सु.	25	45	मिथुन	19	13	5	32	19	5	5	35	19	0	5	44	19	3	5	17	18	31	14	**सं. सूर्य वृष में 23/24, मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (A)**
	15	3	श.	8	0	मृग.	8	38	धृ.	26	27	मिथुन			5	32	19	6	5	34	19	1	5	43	19	3	5	17	18	32	15	भ. 21/1 बाद,
	16	4	र.	10	1	आर्द्रा	11	13	शू.	26	50	मिथुन			5	31	19	7	5	34	19	1	5	42	19	4	5	16	18	32	16	भ. 10/1 तक, मंगल पुन. में 23/7, बुध मृग. में 12/12,
	17	5	चं.	11	35	पुन.	13	21	गं.	26	48	कर्क	6	52	5	31	19	7	5	33	19	2	5	42	19	4	5	16	18	33	17	आद्य जगद्गुरु श्री शंकाराचार्य जयन्ती,
	18	6	मं.	12	33	पुष्य	14	55	वृ.	26	15	कर्क			5	30	19	8	5	33	19	3	5	41	19	5	5	16	18	33	18	श्री रामानुजाचार्य जयन्ती (उ.भा.), श्री गंगाजन्म (देखें पृ. 13),
	19	7	बु.	12	50	आश्ले.	15	48	ध्रु.	25	9	सिंह	15	48	5	29	19	9	5	32	19	3	5	41	19	5	5	15	18	34	19	भ. 12/50 से 24/37 तक,
	20	8	गु.	12	23	मघा	15	57	व्या.	23	26	सिंह			5	29	19	9	5	32	19	4	5	41	19	6	5	15	18	34	20	सूर्य सायन मिथुन में 25/7, श्री जानकी जयन्ती (देखें पृ. 13).
	21	9	शु.	11	11	पू.फा.	15	22	ह.	21	8	कन्या	21	6	5	28	19	10	5	31	19	4	5	40	19	7	5	14	18	35	21	
	22	10	श.	9	16	उ.फा.	14	5	व.	18	17	कन्या			5	28	19	10	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	35	22	भ. 19/59 बाद, गुरु शत. 1 में 6/49, मोहिनी एकादशी व्रत (स्मा.), **(B)**
	23	11/	र.	6	43	हस्त	12	12	सि.	14	56	तुला	23	3	5	27	19	11	5	30	19	5	5	39	19	8	5	14	18	36	23	भ. 6/43 तक, शुक्र मृग. में 13/19, शनि वक्री 14/48, मोहिनी **(C)**
		12		27	39																											**द्वादशी तिथिक्षय,**
	24	13	चं.	24	11	चित्रा	9	49	व्य.	11	12	तुला			5	27	19	12	5	30	19	6	5	39	19	8	5	13	18	36	24	**सोम प्रदोष व्रत,**
	25	14	मं.	20	30	स्वाती/	7	5	व./	7	11	वृश्चिक	22	55	5	27	19	12	5	30	19	7	5	39	19	9	5	13	18	37	25	भ. 20/30 बाद, सूर्य रोहि. में 8/46, श्रीनृसिंह जयन्ती, **(D)**
						विशा.	28	11	प.	27	1																					
	26	15	बृ.	16	44	अनु.	25	15	शि.	22	50	वृश्चिक			5	26	19	13	5	29	19	7	5	38	19	9	5	13	18	37	26	भ. 6/37 तक, बुध मिथुन में 8/56, श्री कूर्म जयन्ती, वैशाखी पूर्णिमा, **(E)**
ज्येष्ठ कृष्ण	27	1	गु.	13	3	ज्येष्ठा	22	29	सि.	18	46	धनु	22	29	5	26	19	13	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	27	**ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,**
	28	2	शु.	9	36	मूल	20	2	सा.	14	56	धनु			5	26	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	28	भ. 20/5 बाद, **शुक्र मिथुन में 24/0,**
	29	3/	श.	6	34	पू.षा.	18	3	शु.	11	29	मकर	23	39	5	25	19	15	5	28	19	9	5	38	19	11	5	12	18	39	29	भ. 6/34 तक, बुध वक्री 28/3, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
		4		28	3																											चतुर्थी तिथिक्षय,
	30	5	र.	26	12	उ.षा.	16	41	शु.	8	29	मकर			5	25	19	15	5	28	19	9	5	37	19	11	5	12	18	39	30	
	31	6	चं.	25	6	श्रव.	16	1	ब्र./	6	3	कुम्भ	27	58	5	25	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	12	18	40	31	भ. 25/6 बाद, पंचक प्रारम्भ 27/58,
									ऐं.	28	13																					

(A) श्री परशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया (रोहिणी योग 5/44 तक), (B) (देखें पृ 13), (C) एकादशी व्रत (वै.), त्रिस्पृशा महाद्वादशी, (D) श्री सत्यनारायण व्रत (देखें पृ. 13), (E) श्री बुद्ध पूर्णिमा, श्री बुद्ध जयन्ती, वैशाख स्नान समाप्त,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. 2078 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — जून, सन् 2021 ई.

मास पक्ष	जून	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ सूर्योदय		चण्डीगढ़ सूर्यास्त		दिल्ली सूर्योदय		दिल्ली सूर्यास्त		जयपुर सूर्योदय		जयपुर सूर्यास्त		वाराणसी सूर्योदय		वाराणसी सूर्यास्त		तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
ज्येष्ठ कृष्ण	1	7	मं.	24	46	धनि.	16	7	वै.	27	1	कुम्भ			5	24	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	11	18	40	1	भ. 12/56 तक, राहु रोहि. 2, केतु अनु. 4 में 27/28,
	2	8	बु.	25	13	शत.	16	59	वि.	26	25	कुम्भ			5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	40	2	मंगल कर्क में 6/51, वक्री बुध वृष में 26/13, बुध पश्चिम में अस्त 19/17,
	3	9	गु.	26	22	पू.भा.	18	34	प्री.	26	22	मीन	12	7	5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	3	शुक्र आर्द्रा में 10/52,
	4	10	शु.	28	8	उ.भा.	20	47	आ.	26	48	मीन			5	24	19	18	5	27	19	12	5	37	19	14	5	11	18	41	4	भ. 15/15 से 28/8 तक,
	5	11	श.	—	—	रेवती	23	27	सौ.	27	34	मेष	23	27	5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	5	पंचक समाप्त 23/27,
	6	11	र.	6	20	अश्वि.	26	27	शो.	28	34	मेष			5	24	19	19	5	27	19	13	5	36	19	14	5	11	18	42	6	अपरा एकादशी व्रत (स.) (देखें पृ. **14**), भद्रकाली एकादशी (पं.),
	7	12	चं.	8	48	भरणी	—	—	अ.	—	—	मेष			5	23	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	7	मंगल पुष्य में 17/1, सोम प्रदोष व्रत,
	8	13	मं.	11	24	भरणी	5	35	अ.	5	40	वृष	12	23	5	23	19	20	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	8	भ. 11/24 से 24/41 तक, सूर्य मृग. में 6/40,
	9	14	बु.	13	58	कृत्ति.	8	44	सु.	6	46	वृष			5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	43	9	
	10	30	गु.	16	22	रोहि.	11	44	धृ.	7	47	मिथुन	25	9	5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	10	वट सावित्री व्रत (अमा पक्ष), भावुका अमा, शनैश्चर जयन्ती,
ज्येष्ठ शुक्ल	11	1	शु.	18	31	मृग.	14	30	शू.	8	37	मिथुन			5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	16	5	11	18	44	11	**ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,**
	12	2	श.	20	18	आर्द्रा	16	57	गं.	9	12	मिथुन			5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	44	12	**चन्द्रदर्शन, मु. 45,**
	13	3	र.	21	40	पुन.	19	0	वृ.	9	29	कर्क	12	32	5	23	19	22	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	13	रम्भा तृतीया, महाराणा प्रताप जयन्ती (राज.),
	14	4	चं.	22	34	पुष्य	20	36	ध्रु.	9	26	कर्क			5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	17	5	11	18	45	14	भ. 10/7 से 22/34 तक, शुक्र पुन. में 9/7, बलिदान दिन (A)
	15	5	मं.	22	57	आश्ले.	21	42	व्या.	8	59	सिंह	21	42	5	23	19	22	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	45	15	सं. सूर्य मिथुन में 6/1, मु. 15, पुण्यकाल मध्याह्न तक,
	16	6	बु.	22	46	मघा	22	14	ह.	8	7	सिंह			5	24	19	23	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	46	16	वक्री बुध रोहि. में 22/29, विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य षष्ठी,
	17	7	गु.	22	0	पू.फा.	22	13	व./	6	48	कन्या	28	7	5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	11	18	46	17	भ. 22/00 बाद,
									सि.	29	1																					
	18	8	शु.	20	39	उ.फा.	21	37	व्य.	26	46	कन्या			5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	18	भ. 9/20 तक,
	19	9	श.	18	46	हस्त	20	28	व.	24	4	कन्या			5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	19	
	20	10	र.	16	22	चित्रा	18	49	प.	20	58	तुला	7	42	5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	20	भ. 26/57 बाद, गुरु वक्री 20/36, बुध पूर्व में उदित 5/24, श्री गंगादशहरा,
	21	11	चं.	13	32	स्वाती	16	45	शि.	17	32	तुला			5	24	19	24	5	28	19	18	5	38	19	19	5	12	18	47	21	भ. 13/32 तक, सूर्य सायन कर्क में 9/2, दक्षिणायन एवं वर्षा (B)
	22	12	मं.	10	22	विशा.	14	22	सि.	13	51	वृश्चिक	8	59	5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	12	18	47	22	**सूर्य आर्द्रा में 5/38, बुध मार्गी 27/30, शुक्र कर्क में 14/21, (C)**
	23	13/	बु.	7	0	अनु.	11	48	सा.	9	59	वृश्चिक			5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	23	भ. 27/33 बाद,
		14		27	33																											**चतुर्दशी तिथिक्षय,**
	24	15	गु.	24	9	ज्येष्ठा	9	10	शु./	6	5	धनु	9	10	5	25	19	24	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	24	भ. 13/51 तक, श्री सत्यनारायण व्रत, वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष),
									शु.	26	15																					
आषाढ़ कृष्ण	25	1	शु.	20	59	मूल/	6	40	ब्र.	22	37	धनु			5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	25	**आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शुक्र पुष्य में 8/13, नेप्च्यून वक्री 24/56,**
						पू.षा.	28	25																								
	26	2	श.	18	11	उ.षा.	26	36	ऐं.	19	18	मकर	9	55	5	26	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	13	18	48	26	भ. 29/2 बाद,
	27	3	र.	15	54	श्रव.	25	21	वै.	16	25	मकर			5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	27	भ. 15/54 तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
	28	4	चं.	14	16	धनि.	24	48	वि.	14	4	कुम्भ	12	59	5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	28	पंचक प्रारम्भ 12/59, बुध मृग. में 24/13,
	29	5	मं.	13	23	शत.	25	1	प्री.	12	19	कुम्भ			5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	14	18	48	29	मंगल आश्ले. में 7/27,
	30	6	बु.	13	18	पू.भा.	26	3	आ.	11	13	मीन	19	43	5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	30	भ. 13/18 से 25/40 तक,

(A) श्री गुरु अर्जुनदेव जी, (B) ऋतु प्रारम्भ, निर्जला एकादशी व्रत (स.), (C) चम्पा द्वादशी, भौम प्रदोष व्रत.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. 2078 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — जुलाई, सन् 2021 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
आषाढ़ कृष्ण	1	7	गु.	14	2	उ.भा.	27	49	सौ.	10	45	मीन			5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	1	
	2	8	शु.	15	29	रेवती	—	—	शो.	10	52	मीन			5	28	19	25	5	31	19	19	5	41	19	20	5	15	18	48	2	
	3	9	श.	17	31	रेवती	6	13	अ.	11	27	मेष	6	13	5	28	19	25	5	32	19	19	5	41	19	20	5	16	18	48	3	पंचक समाप्त 6/13,
	4	10	र.	19	56	अश्वि.	9	5	सु.	12	23	मेष			5	29	19	25	5	32	19	19	5	42	19	20	5	16	18	48	4	भ. 6/43 से 19/56 तक,
	5	11	चं.	22	31	भरणी	12	12	धृ.	13	28	वृष	18	59	5	29	19	25	5	33	19	19	5	42	19	20	5	17	18	48	5	सूर्य पुन. में 29/16, योगिनी एकादशी व्रत (स.),
	6	12	मं.	25	2	कृत्ति.	15	20	शू.	14	35	वृष			5	30	19	25	5	33	19	18	5	42	19	20	5	17	18	48	6	शुक्र आश्ले. में 8/18,
	7	13	बु.	27	20	रोहि.	18	18	गं.	15	34	वृष			5	30	19	24	5	33	19	18	5	43	19	20	5	17	18	48	7	भ. 27/20 बाद, बुध मिथुन में 11/5, प्रदोष व्रत,
	8	14	गु.	29	17	मृग.	20	58	वृ.	16	18	मिथुन	7	41	5	30	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	8	भ. 16/18 तक,
	9	30	शु.	—	—	आर्द्रा	23	14	ध्रु.	16	44	मिथुन			5	31	19	24	5	34	19	18	5	44	19	20	5	18	18	48	9	
	10	30	श.	6	46	पुन.	25	2	व्या.	16	48	कर्क	18	37	5	31	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	10	शनैश्चरी अमा,
आषाढ़ शुक्ल	11	1	र.	7	47	पुष्य	26	21	ह.	16	30	कर्क			5	32	19	24	5	35	19	18	5	45	19	20	5	19	18	48	11	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, यूरेनस भर. 3 में 12/10, (A)
	12	2	चं.	8	20	आश्ले.	27	14	व.	15	50	सिंह	27	14	5	32	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	19	18	47	12	बुध आर्द्रा में 15/36,
	13	3	मं.	8	24	मघा	27	40	सि.	14	48	सिंह			5	33	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	20	18	47	13	भ. 20/13 बाद,
	14	4	बु.	8	2	पू.फा.	27	42	व्य.	13	25	सिंह			5	34	19	23	5	37	19	17	5	46	19	19	5	20	18	47	14	भ. 8/2 तक,
	15	5	गु.	7	16	उ.फा.	27	21	व.	11	43	कन्या	9	39	5	34	19	22	5	37	19	17	5	46	19	19	5	21	18	47	15	कुमार षष्ठी,
	16	6/	शु.	6	6	हस्त	26	37	प.	9	42	कन्या			5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	21	18	46	16	भ. 28/34 बाद, सं. सूर्य कर्क में 16/53, मु. 30, पुण्यकाल (B)
		7		28	34																											सप्तमी तिथिक्षय,
	17	8	श.	26	41	चित्रा	25	32	शि./	7	23	तुला	14	7	5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	22	18	46	17	भ. 15/37 तक, शुक्र मघा सिंह में 9/26,
									सि.	28	47																					
	18	9	र.	24	29	स्वाती	24	8	सा.	25	55	तुला			5	36	19	21	5	39	19	16	5	48	19	18	5	22	18	46	18	बुध पूर्व में अस्त 5/36, आषाढ़ नवरात्र समाप्त,
	19	10	चं.	22	0	विशा.	22	27	शु.	22	50	वृश्चिक	16	53	5	36	19	21	5	39	19	15	5	48	19	17	5	23	18	45	19	सूर्य पुष्य में 28/44, नवरात्र-पारणा,
	20	11	मं.	19	18	अनु.	20	32	शु.	19	34	वृश्चिक			5	37	19	20	5	40	19	15	5	49	19	17	5	23	18	45	20	भ. 8/39 से 19/18 तक, मंगल मघा सिंह में 17/55, बुध पुन. (C)
	21	12	बु.	16	27	ज्येष्ठा	18	29	ब्र.	16	11	धनु	18	29	5	37	19	20	5	40	19	14	5	49	19	16	5	24	18	45	21	प्रदोष व्रत,
	22	13	गु.	13	33	मूल	16	25	ऐं.	12	45	धनु			5	38	19	19	5	41	19	14	5	50	19	16	5	24	18	44	22	सूर्य सायन सिंह में 19/56,
	23	14	शु.	10	44	पू.षा.	14	25	वै.	9	23	मकर	19	57	5	39	19	19	5	41	19	13	5	50	19	16	5	25	18	44	23	भ. 10/44 से 21/26 तक, श्रीशिव-शयनोत्सव, श्री सत्यनारायण (D)
	24	15	श.	8	7	उ.षा.	12	40	वि./	6	10	मकर			5	39	19	18	5	42	19	13	5	51	19	15	5	25	18	43	24	वक्री शनि श्रव. 2 में 21/6, आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा (E)
									प्री.	27	14																					
श्रावण कृष्ण	25	1/	र.	5	51	श्रव.	11	17	आ.	24	42	कुम्भ	22	47	5	40	19	18	5	43	19	12	5	51	19	15	5	25	18	43	25	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रारम्भ 22/47, बुध कर्क में (F)
		2		28	4																											द्वितीया तिथिक्षय,
	26	3	चं.	26	54	धनि.	10	26	सौ.	22	39	कुम्भ			5	40	19	17	5	43	19	12	5	52	19	14	5	26	18	43	26	भ. 15/29 से 26/54 तक, बुध पुष्य में 26/1,
	27	4	मं.	26	28	शत.	10	13	शो.	21	10	मीन	28	33	5	41	19	16	5	44	19	11	5	52	19	14	5	26	18	42	27	श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
	28	5	बु.	26	49	पू.भा.	10	45	अ.	20	17	मीन			5	42	19	16	5	44	19	11	5	53	19	13	5	27	18	41	28	शुक्र पू.फा. में 12/0,
	29	6	गु.	27	54	उ.भा.	12	2	सु.	20	1	मीन			5	42	19	15	5	45	19	10	5	53	19	12	5	27	18	41	29	भ. 27/54 बाद,
	30	7	शु.	29	41	रेव.	14	2	धृ.	20	18	मेष	14	2	5	43	19	14	5	45	19	9	5	54	19	12	5	28	18	40	30	भ. 16/47 तक, पंचक समाप्त 14/2,
	31	8	श.	—	—	अश्वि.	16	37	शू.	21	1	मेष			5	44	19	14	5	46	19	9	5	54	19	11	5	28	18	40	31	

(A) आषाढ़ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, श्री जगदीशरथोत्सव (रथयात्रा) पुरी (पुष्य योग), (B) सारा दिन, विवस्वत् सप्तमी, (C) में 11/52, वक्री गुरु धनि. 4 में 10/29, हरिशयनी एकादशी व्रत (स.), श्री विष्णु-शयनोत्सव, (D) व्रत, कोकिला व्रत, (E) (व्यास पूजा), चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ, (F) 11/40, अशून्य शयन व्रत,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. 2078 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — अगस्त, सन् 2021 ई.

मास पक्ष	अंग्रेजी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
श्रावण कृष्ण	1	8	र.	7	56	भरणी	19	36	गं.	22	0	वृष	26	22	5	44	19	13	5	46	19	8	5	55	19	11	5	29	18	39	1	
	2	9	चं.	10	28	कृत्ति.	22	43	वृ.	23	5	वृष			5	45	19	12	5	47	19	7	5	55	19	10	5	29	18	39	2	भ. 23/44 बाद, सूर्य आश्ले. में 27/42, बुध आश्ले. में 10/24,
	3	10	मं.	13	0	रोहि.	25	43	ध्रु.	24	5	वृष			5	45	19	11	5	48	19	6	5	56	19	9	5	30	18	38	3	भ. 13/00 तक, राहु रोहि. 1, केतु अनु. 3 में 24/49,
	4	11	बु.	15	18	मृग.	28	24	व्या.	24	50	मिथुन	15	7	5	46	19	11	5	48	19	6	5	57	19	9	5	30	18	37	4	कामिका एकादशी व्रत (स.),
	5	12	गु.	17	9	आर्द्रा	—	—	ह.	25	12	मिथुन			5	47	19	10	5	49	19	5	5	57	19	8	5	31	18	37	5	प्रदोष व्रत,
	6	13	शु.	18	28	आर्द्रा	6	37	व.	25	8	कर्क	25	54	5	47	19	9	5	49	19	4	5	58	19	7	5	31	18	36	6	भ. 18/28 बाद, श्रावण-शिवरात्रि,
	7	14	श.	19	12	पुन.	8	15	सि.	24	36	कर्क			5	48	19	8	5	50	19	3	5	58	19	6	5	32	18	35	7	भ. 6/51 तक,
	8	30	र.	19	20	पुष्य	9	19	व्य.	23	37	कर्क			5	48	19	7	5	50	19	3	5	59	19	6	5	32	18	35	8	बुध मघा सिंह में 25/34, शुक्र उ.फा. में 16/12, हरियाली अमा,
श्रावण शुक्ल	9	1	च.	18	56	आश्ले.	9	50	व.	22	13	सिंह	9	50	5	49	19	6	5	51	19	2	5	59	19	5	5	33	18	34	9	श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30,
	10	2	मं.	18	6	मघा	9	52	प.	20	29	सिंह			5	50	19	5	5	51	19	1	6	0	19	4	5	33	18	33	10	मंगल पू.फा. में 23/30, हिजरी सन् 1443 प्रारम्भ,
	11	3	बु.	16	54	पू.फा.	9	31	शि.	18	27	कन्या	15	23	5	50	19	4	5	52	19	0	6	0	19	3	5	33	18	32	11	भ. 28/10 बाद, शुक्र कन्या में 11/32, मधुस्रवा तृतीया (संधारा तीज),
	12	4	गु.	15	25	उ.फा.	8	52	सि.	16	11	कन्या			5	51	19	3	5	53	18	59	6	1	19	2	5	34	18	32	12	भ. 15/25 तक,
	13	5	शु.	13	43	हस्त	7	59	सा.	13	45	तुला	19	28	5	51	19	3	5	53	18	58	6	1	19	2	5	34	18	31	13	नाग पंचमी, श्रीकल्कि जयन्ती, ऋक् उपाकर्म (देखें पृ.14),
	14	6	श.	11	51	चित्रा	6	56	शु.	11	11	तुला			5	52	19	2	5	54	18	57	6	2	19	1	5	35	18	30	14	
						स्वाती	29	44																								
	15	7	र.	9	51	विशा.	28	25	शु./	8	31	वृश्चिक	22	45	5	53	19	1	5	54	18	56	6	2	19	0	5	35	18	29	15	भ. 9/51 से 20/49 तक, मंगल अस्त 19/1, बुध पश्चिम में उदित 19/1 (A)
									ब्र.	29	45																					
	16	8/	चं.	7	46	अनु.	27	2	ऐं.	26	55	वृश्चिक			5	53	19	0	5	55	18	56	6	2	18	59	5	36	18	28	16	सं. सूर्य मघा सिंह में 25/17, मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन (B)
		9		29	35																											नवमी तिथिक्षय,
	17	10	मं.	27	21	ज्येष्ठा	25	35	वै.	24	2	धनु	25	35	5	54	18	59	5	55	18	55	6	3	18	58	5	36	18	27	17	
	18	11	बु.	25	6	मूल	24	7	वि.	21	9	धनु			5	54	18	57	5	56	18	54	6	3	18	57	5	36	18	27	18	भ. 14/13 से 25/6 तक, वक्री गुरु धनि. 3 में 6/22, पवित्रा (C)
	19	12	गु.	22	54	पू.षा.	22	42	प्री.	18	17	मकर	28	21	5	55	18	56	5	56	18	53	6	4	18	56	5	37	18	26	19	शुक्र हस्त में 22/24,
	20	13	शु.	20	50	उ.षा.	21	24	आ.	15	30	मकर			5	56	18	55	5	57	18	52	6	4	18	55	5	37	18	25	20	यूरेनस वक्री 7/12, प्रदोष व्रत,
	21	14	श.	19	0	श्रव.	20	21	सौ.	12	54	मकर			5	56	18	54	5	57	18	51	6	5	18	54	5	38	18	24	21	भ. 19/00 बाद, श्री सत्यनारायण व्रत, (देखें पृ. 14).
	22	15	र.	17	32	धनि.	19	39	शो.	10	33	कुम्भ	7	57	5	57	18	53	5	58	18	50	6	5	18	53	5	38	18	23	22	भ. 6/17 तक, पंचक प्रारम्भ 7/57, सूर्य सायन कन्या में 27/5, (D)
भाद्रपद कृष्ण	23	1	च.	16	31	शत.	19	25	अ.	8	33	कुम्भ			5	57	18	52	5	58	18	49	6	6	18	52	5	39	18	22	23	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	24	2	मं.	16	5	पू.भा.	19	47	सु./	6	59	मीन	13	38	5	58	18	51	5	59	18	47	6	6	18	51	5	39	18	21	24	भ. 28/12 बाद, बुध उ.फा. में 7/27,
									धृ.	29	55																					
	25	3	बु.	16	19	उ.भा.	20	47	शू.	29	24	मीन			5	59	18	50	5	59	18	46	6	7	18	50	5	39	18	20	25	भ. 16/19 तक, कज्जली तृतीया, श्री गणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत, (E)
	26	4	गु.	17	14	रेवती	22	28	गं.	29	24	मेष	22	28	5	59	18	49	6	0	18	45	6	7	18	49	5	40	18	19	26	पंचक समाप्त 22/28, बुध कन्या में 11/20,
	27	5	शु.	18	49	अश्वि.	24	47	वृ.	29	53	मेष			6	0	18	48	6	0	18	44	6	8	18	48	5	40	18	18	27	
	28	6	श.	20	57	भरणी	27	34	ध्रु.	—	—	मेष			6	0	18	46	6	1	18	43	6	8	18	47	5	41	18	17	28	भ. 20/57 बाद,
	29	7	र.	23	25	कृत्ति.	—	—	ध्रु.	6	43	वृष	10	19	6	1	18	45	6	1	18	42	6	8	18	46	5	41	18	16	29	भ. 10/12 तक,
	30	8	चं.	26	0	कृत्ति.	6	38	व्या.	7	45	वृष			6	1	18	44	6	2	18	41	6	9	18	45	5	41	18	15	30	सूर्य पू.फा. में 21/20, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स.), (जयन्ती (F)
	31	9	मं.	28	23	रोहि.	9	43	ह.	8	47	मिथुन	23	11	6	2	18	43	6	2	18	40	6	9	18	44	5	42	18	14	31	मंगल उ.फा. में 23/8, शुक्र चित्रा में 7/16, गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव), (G)

(A) गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, श्री दुर्गाष्टमी (देखें पृ.14), भारत स्वतन्त्रता दिवस, (B) मध्याह्न तक, बुध पू.फा. में 6/49, (C) एकादशी व्रत (स.), (D) शरद् ऋतु प्रारम्भ, श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबन्धन (राखी) (6/17 बाद), श्री अमरनाथ यात्रा (क.), शुक्ल-कृष्ण-यजु उपाकर्म, (E) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), बहुला चतुर्थी, (F) योग) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), दूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृ. 14), (G) श्री गुग्गा नवमी.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. 2078 — **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** — **सितम्बर, सन् 2021 ई.**

मास पक्ष	सितम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.		
भाद्रपद कृष्ण	1	10	बु.	—	—	मृग.	12	34	व.	9	38	मिथुन			6	3	18	42	6	3	18	39	6	10	18	43	5	42	18	13	1	भ. 17/22 बाद,
	2	10	गु.	6	22	आर्द्रा	14	57	सि.	10	8	मिथुन			6	3	18	40	6	3	18	38	6	10	18	42	5	43	18	12	2	भ. 6/22 तक, बुध हस्त में 10/33,
	3	11	शु.	7	44	पुन	16	41	व्य.	10	9	कर्क	10	19	6	4	18	39	6	4	18	36	6	11	18	41	5	43	18	11	3	अजा एकादशी व्रत (स.),
	4	12	श.	8	24	पुष्य	17	45	व.	9	37	कर्क			6	4	18	38	6	4	18	35	6	11	18	40	5	43	18	10	4	अगस्त्य उदित, शनि प्रदोष व्रत,
	5	13	र.	8	21	आश्ले.	18	6	प.	8	31	सिंह	18	6	6	5	18	37	6	5	18	34	6	12	18	39	5	44	18	9	5	भ. 8/21 से 20/00 तक, मंगल कन्या में 27/58, शुक्र तुला में (A)
	6	14	चं.	7	39	मघा	17	51	शि./	6	53	सिंह			6	5	18	36	6	5	18	33	6	12	18	38	5	44	18	8	6	कुशोत्पाटिनी अमा (देखें पृ. 15), पिठोरी अमा,
									सि.	28	48																					
	7	30/	मं.	6	21	पू.फा.	17	5	सा.	26	20	कन्या	22	49	6	6	18	34	6	6	18	32	6	12	18	36	5	44	18	7	7	भौमवती अमा,
भाद्रपद शुक्ल		1		28	37																											भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	8	2	बु.	26	34	उ.फा.	15	55	शु.	23	36	कन्या			6	7	18	33	6	6	18	31	6	13	18	35	5	45	18	6	8	चन्द्रदर्शन, मु. 30, मेला डेराबाबा गुसाईं आणां-कुराली (पं.),
	9	3	गु.	24	18	हस्त	14	30	शु.	20	41	तुला	25	44	6	7	18	32	6	7	18	29	6	13	18	34	5	45	18	5	9	साम उपाकर्म, गौरी तृतीया, हरितालिका तृतीया, श्रीवराह जयन्ती,
	10	4	शु.	21	58	चित्रा	12	57	ब्र.	17	41	तुला			6	8	18	31	6	7	18	28	6	14	18	33	5	46	18	4	10	भ. 11/8 से 21/58 तक, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (B)
	11	5	श.	19	37	स्वाती	11	22	ऐं.	14	40	वृश्चिक	28	12	6	8	18	29	6	8	18	27	6	14	18	32	5	46	18	3	11	शुक्र स्वा. में 19/17, ऋषि पंचमी, संवत्सरी महापर्व (जैन),
	12	6	र.	17	21	विशा.	9	50	वै.	11	42	वृश्चिक			6	9	18	28	6	8	18	26	6	15	18	31	5	46	18	2	12	
	13	7	चं.	15	11	अनु.	8	23	वि./	8	49	वृश्चिक			6	9	18	27	6	9	18	25	6	15	18	30	5	47	18	0	13	भ. 15/11 से 26/11 तक, सूर्य उ.फा. में 15/7, बुध चित्रा में 15/56, (C)
									प्री.	30	2																					
	14	8	मं.	13	9	ज्येष्ठा	7	4	आ.	27	23	धनु	7	4	6	10	18	25	6	9	18	23	6	15	18	29	5	47	17	59	14	वक्री गुरु धनि. 2 मकर में 14/29, श्रीराधाष्टमी,
						मूल	29	55																								
	15	9	बु.	11	17	पू.षा.	28	55	सौ.	24	52	धनु			6	10	18	24	6	10	18	22	6	16	18	27	5	47	17	58	15	श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
	16	10	गु.	9	36	उ.षा.	28	8	शो.	22	30	मकर	10	42	6	11	18	23	6	10	18	21	6	16	18	26	5	48	17	57	16	भ. 20/52 बाद, सं. सूर्य कन्या में 25/13, मु. 45, पुण्यकाल (D)
	17	11	शु.	8	8	श्रवण	27	35	अ.	20	20	मकर			6	12	18	22	6	11	18	20	6	17	18	25	5	48	17	56	17	भ. 8/8 तक, पद्मा एकादशी व्रत (स.), श्रीवामन जयन्ती, (E)
	18	12/	श.	6	54	धनि.	27	21	सु.	18	23	कुम्भ	15	25	6	12	18	20	6	11	18	19	6	17	18	24	5	49	17	55	18	पंचक प्रारम्भ 15/25, शनि प्रदोष व्रत, त्रयोदश दिनपक्ष
		13		30	0																											त्रयोदशी तिथिक्षय,
	19	14	र.	29	28	शत.	27	28	धृ.	16	43	कुम्भ			6	13	18	19	6	12	18	17	6	17	18	23	5	49	17	54	19	भ. 29/28 बाद, श्री अनन्त चतुर्दशी व्रत,
	20	15	चं.	29	24	पू.भा.	28	1	शू.	15	22	मीन	21	50	6	13	18	18	6	12	18	16	6	18	18	22	5	49	17	53	20	भ. 17/26 तक, श्री सत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी श्राद्ध/पूर्णिमा (F)
आश्विन कृष्ण	21	1	मं.	29	52	उ.भा.	29	6	गं.	14	25	मीन			6	14	18	16	6	13	18	15	6	18	18	21	5	50	17	52	21	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, मंगल हस्त में 15/44, प्रतिपदा का श्राद्ध,
	22	2	बु.	—	—	रेवती	—	—	वृ.	13	53	मीन			6	14	18	15	6	13	18	14	6	19	18	19	5	50	17	51	22	बुध तुला में 8/19, सूर्य सायन तुला में 24/51, दक्षिण गोल प्रारम्भ, (G)
	23	2	गु.	6	54	रेवती	6	43	ध्रु.	13	47	मेष	6	43	6	15	18	14	6	14	18	13	6	19	18	18	5	50	17	50	23	भ. 19/42 बाद, पंचक समाप्त 6/43, शुक्र विशा. में 11/38, (H)
	24	3	शु.	8	30	अश्वि.	8	53	व्या.	14	7	मेष			6	16	18	13	6	14	18	11	6	20	18	17	5	51	17	48	24	भ. 8/30 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चतुर्थी का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध,
	25	4	श.	10	36	भरणी	11	33	ह.	14	49	वृष	18	16	6	16	18	11	6	15	18	10	6	20	18	16	5	51	17	47	25	पंचमी का श्राद्ध,
	26	5	र.	13	5	कृत्ति.	14	32	व.	15	47	वृष			6	17	18	10	6	15	18	9	6	21	18	15	5	52	17	46	26	चन्द्रषष्ठी व्रत, (इस दिन कोई तिथि-श्राद्ध नहीं है (देखें पृ.15),
	27	6	चं.	15	43	रोहि.	17	41	सि.	16	50	वृष			6	17	18	9	6	16	18	8	6	21	18	14	5	52	17	45	27	भ. 15/43 से 29/00 तक, सूर्य हस्त में 6/42, बुध वक्री 10/39, (I)
	28	7	मं.	18	17	मृग.	20	44	व्य.	17	49	मिथुन	7	14	6	18	18	8	6	16	18	7	6	21	18	13	5	52	17	44	28	श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त (देखें पृ. 15), सप्तमी का श्राद्ध,
	29	8	बु.	20	30	आर्द्रा	23	25	व.	18	33	मिथुन			6	18	18	6	6	17	18	6	6	22	18	12	5	53	17	43	29	वक्री यूरेनस भर. 2 में 12/55, अष्टमी का श्राद्ध,
	30	9	गु.	22	8	पुन	25	33	प.	18	52	कर्क	19	4	6	19	18	5	6	17	18	4	6	22	18	10	5	53	17	42	30	नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,

(A) 24/50, पर्युषण पर्व (जैन), (B) (चन्द्रास्त 20/52), श्री सिद्धि विनायक व्रत, हरितालिका चतुर्थी, (C) वक्री शनि श्रव. 1 में 21/1, मुक्ताभरण (सन्तान) सप्तमी व्रत, श्री महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ, ←——→ (D) अगले दिन मध्याह्न तक, (E) श्रवण द्वादशी (विष्णु शृंखल योग) (देखें पृ. 15), (F) का महालय श्राद्ध, महालय (पितृपक्ष) प्रारम्भ, (G) विषुव दिन, द्वितीया का श्राद्ध, (H) तृतीया का श्राद्ध, (I) षष्ठी का श्राद्ध, (देखें पृ. 15),

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. 2078 **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** **अक्तूबर, सन् 2021 ई.**

मास पक्ष	अक्तूबर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
आश्विन कृष्ण	1	10	शु.	23	4	पुष्य	26	57	शि.	18	37	कर्क			6	20	18	4	6	18	18	3	6	23	18	9	5	54	17	41	1	भ. 10/36 से 23/4 तक, वक्री बुध कन्या में 26/46, दशमी का श्राद्ध,
	2	11	श.	23	11	आश्ले.	27	34	सि.	17	46	सिंह	27	34	6	20	18	3	6	18	18	2	6	23	18	8	5	54	17	40	2	शुक्र वृश्चिक में 9/46, इन्दिरा एकादशी व्रत (म.), एकादशी का श्राद्ध,
	3	12	र.	22	30	मघा	27	26	सा.	16	16	सिंह			6	21	18	1	6	19	18	1	6	24	18	7	5	54	17	39	3	बुध पश्चिम में अस्त 18/1, द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध, (A)
	4	13	चं.	21	5	पू.फा.	26	35	शु.	14	11	सिंह			6	22	18	0	6	19	18	0	6	24	18	6	5	55	17	38	4	भ. 21/5 बाद, सोम प्रदोष व्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध,
	5	14	मं.	19	4	उ.फा.	25	10	शु.	11	34	कन्या	8	16	6	22	17	59	6	20	17	59	6	25	18	5	5	55	17	37	5	भ. 8/5 तक, शुक्र अनु. में 10/3, राहु कृत्ति. 4, केतु अनु 2 में (B)
	6	30	बु.	16	35	हस्त	23	19	ब्र./	8	32	कन्या			6	23	17	58	6	20	17	57	6	25	18	4	5	56	17	36	6	प्लूटो मार्गी 23/56, गजच्छाया पर्व (सूर्योदय से 16/35 तक), (C)
									ऐं.	29	11																					
आश्विन शुक्ल	7	1	गु.	13	47	चित्रा	21	12	वै.	25	39	तुला	10	17	6	23	17	56	6	21	17	56	6	26	18	3	5	56	17	35	7	आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, नाना, नानी का (D)
	8	2	शु.	10	49	स्वाती	18	59	वि.	22	3	तुला			6	24	17	55	6	22	17	55	6	26	18	2	5	57	17	34	8	वक्री बुध हस्त में 27/32,
	9	3/	श.	7	49	विशा.	16	47	प्री.	18	29	वृश्चिक	11	19	6	25	17	54	6	22	17	54	6	27	18	1	5	57	17	33	9	भ. 18/22 से 28/55 तक,
		4		28	55																											चतुर्थी तिथिक्षय,
	10	5	र.	26	14	अनु.	14	44	आ.	15	2	वृश्चिक			6	25	17	53	6	23	17	53	6	27	18	0	5	58	17	32	10	सूर्य चित्रा में 19/38, उपांगललिता व्रत,
	11	6	चं.	23	51	ज्येष्ठा	12	55	सौ.	11	48	धनु	12	55	6	26	17	52	6	23	17	52	6	28	17	59	5	58	17	31	11	मंगल चित्रा में 24/37, शनि मार्गी 7/48, सरस्वती आवाहन,
	12	7	मं.	21	48	मूल	11	26	शो./	8	50	धनु			6	27	17	51	6	24	17	51	6	28	17	58	5	58	17	30	12	भ. 21/48 बाद, सरस्वती पूजन,
									अ.	30	9																					
	13	8	बु.	20	8	पू.षा.	10	19	सु.	27	47	मकर	16	5	6	27	17	49	6	24	17	50	6	29	17	56	5	59	17	29	13	भ. 8/58 तक, सरस्वती के लिए बलिदान, दुर्गाष्टमी, महाष्टमी,
	14	9	गु.	18	52	उ.षा.	9	35	धृ.	25	44	मकर			6	28	17	48	6	25	17	49	6	29	17	55	5	59	17	28	14	सरस्वती विसर्जन, महानवमी (पूजा/उपवास/बलिदान के लिए), (E)
	15	10	शु.	18	2	श्रवण	9	16	शू.	24	2	कुम्भ	21	15	6	29	17	47	6	26	17	48	6	30	17	54	6	0	17	27	15	भ. 29/50 बाद, पंचक प्रारम्भ 21/15, नवरात्र पारणा, (F)
	16	11	श.	17	38	धनि.	9	21	गं.	22	40	कुम्भ			6	29	17	46	6	26	17	47	6	30	17	54	6	0	17	26	16	भ. 17/38 तक, बुध पूर्व में उदित 6/29, भरत मिलाप, पापांकुशा (G)
	17	12	र.	17	39	शत.	9	52	वृ.	21	38	मीन	28	32	6	30	17	45	6	27	17	45	6	31	17	53	6	1	17	25	17	सं. सूर्य तुला में 13/12, मु. 30, पुण्यकाल सारा दिन, शुक्र ज्ये. में 17/24,
	18	13	चं.	18	7	पू.भा.	10	49	ध्रु.	20	57	मीन			6	31	17	44	6	27	17	44	6	32	17	52	6	1	17	24	18	बुध मार्गी 20/45, गुरु मार्गी 11/1, सोम प्रदोष व्रत (देखें पृ. 16),
	19	14	मं.	19	3	उ.भा.	12	12	व्या.	20	37	मीन			6	31	17	43	6	28	17	43	6	32	17	51	6	2	17	23	19	भ. 19/3 बाद,
	20	15	बु.	20	26	रेवती	14	1	ह.	20	38	मेष	14	1	6	32	17	42	6	29	17	42	6	33	17	50	6	2	17	22	20	भ. 7/44 तक, पंचक समाप्त 14/1, कोजागर व्रत (लक्ष्मी-इन्द्र पूजा), (H)
कार्तिक कृष्ण	21	1	गु.	22	16	अश्वि.	16	16	व.	20	59	मेष			6	33	17	41	6	29	17	41	6	33	17	49	6	3	17	22	21	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, मंगल तुला में 26/1,
	22	2	शु.	24	30	भरणी	18	55	सि.	21	38	वृष	25	38	6	34	17	40	6	30	17	41	6	34	17	48	6	4	17	21	22	वक्री नेप्च्यून पू.भा. 2 में 26/14,
	23	3	श.	27	1	कृत्ति.	21	52	व्य.	22	31	वृष			6	34	17	39	6	31	17	40	6	34	17	47	6	4	17	20	23	भ. 13/46 से 27/1 तक, सूर्य स्वा. में 30/12, सूर्य सायन वृश्चिक (I)
	24	4	र.	29	43	रोहि.	25	1	व.	23	33	वृष			6	35	17	38	6	31	17	39	6	35	17	46	6	5	17	19	24	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (करवा चौथ) (चन्द्रोदय (J)
	25	5	चं.	—	—	मृग.	28	10	प.	24	36	मिथुन	14	36	6	36	17	37	6	32	17	38	6	36	17	45	6	5	17	18	25	
	26	5	मं.	8	24	आर्द्रा	—	—	शि.	25	30	मिथुन			6	36	17	36	6	33	17	37	6	36	17	44	6	6	17	17	26	
	27	6	बु.	10	50	आर्द्रा	7	8	सि.	26	8	कर्क	27	5	6	37	17	35	6	33	17	36	6	37	17	44	6	6	17	17	27	भ. 10/50 से 23/50 तक,
	28	7	गु.	12	49	पुन.	9	41	सा.	26	19	कर्क			6	38	17	34	6	34	17	35	6	38	17	43	6	7	17	16	28	बुध चित्रा में 16/50, अहोई अष्टमी (महाकाली पूजन) (पंजाब, हरि.),
	29	8	शु.	14	9	पुष्य	11	38	शु.	25	58	कर्क			6	39	17	33	6	35	17	34	6	38	17	42	6	8	17	15	29	
	30	9	श.	14	43	आश्ले.	12	51	शु.	24	59	सिंह	12	51	6	40	17	32	6	35	17	33	6	39	17	41	6	8	17	14	30	भ. 26/35 बाद, शुक्र मूल धनु में 16/10,
	31	10	र.	14	27	मघा	13	16	ब्र.	23	20	सिंह			6	40	17	31	6	36	17	33	6	40	17	41	6	9	17	14	31	भ. 14/27 तक, मंगल स्वा. में 25/17,

(A) मघा श्राद्ध, (B) 22/40, चतुर्दशी (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध, (C) सर्वपितृ अमा, चतुर्दशी/अमा/अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, महालय (पितृपक्ष) समाप्त, (D) श्राद्ध, शारद (आश्विन) नवरात्र प्रारम्भ, महाराजा अग्रसेन जयन्ती, (E) नवरात्र समाप्त, (F) विजयादशमी (दशहरा), आयुध-पूजा, अपराजिता पूजन,सीमोल्लंघन, श्री माध्वाचार्य जयन्ती, (G) एकादशी व्रत(स.), (H) श्री सत्यनारायण व्रत,शरत्पूर्णिमा, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, कार्तिक स्नान प्रारम्भ, (I) में 10/21, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, (J) देखें पृ. 11),

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. 2078 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) नवम्बर, सन् 2021 ई.

मास पक्ष	नवम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
का. कृष्णा	1	11	च.	13	22	पू.फा.	12	52	ऐं.	21	4	कन्या	18	39	6	41	17	30	6	37	17	32	6	40	17	40	6	9	17	13	1	रमा एकादशी व्रत (स.), गोवत्स द्वादशी,
	2	12	मं.	11	31	उ.फा.	11	44	वै.	18	12	कन्या			6	42	17	29	6	38	17	31	6	41	17	39	6	10	17	12	2	बुध तुला में 9/52, यम-प्रीत्यर्थ दीपदान, भौमप्रदोष व्रत,
	3	13/ 14	बु.	9 / 30	2 / 3	हस्त	9	58	वि.	14	52	तुला	20	53	6	43	17	29	6	38	17	30	6	42	17	38	6	11	17	12	3	भ. 9/2 से 19/32 तक, धन त्रयोदशी, श्री हनुमान् जयन्ती (उ.भा.), (A) चतुर्दशी तिथिक्षय,
	4	30	गु.	26	44	चित्रा/ स्वाती	7 / 29	42 / 7	प्री.	11	9	तुला			6	44	17	28	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	11	4	दीपावली, श्री महालक्ष्मी पूजा, श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन),
कार्तिक शुक्ल	5	1	शु.	23	15	विशा.	26	22	आ./ सौ.	7 / 27	12 / 7	वृश्चिक	21	4	6	44	17	27	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	11	5	कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गोवर्धन पूजा, बलिपूजा, अन्नकूट, गोक्रीड़ा,
	6	2	श.	19	44	अनु.	23	38	शो.	23	3	वृश्चिक			6	45	17	26	6	41	17	28	6	44	17	36	6	13	17	10	6	चन्द्रदर्शन, मु. 30, सूर्य विशा. में 14/20, बुध स्वा. में 16/30, (B)
	7	3	र.	16	22	ज्येष्ठा	21	4	अ.	19	7	धनु	21	4	6	46	17	26	6	41	17	28	6	44	17	36	6	13	17	9	7	भ. 26/50 बाद, शनि श्रव. 2 में 10/39.
	8	4	चं.	13	17	मूल	18	49	सु.	15	26	धनु			6	47	17	25	6	42	17	27	6	45	17	35	6	14	17	9	8	भ. 13/17 तक,
	9	5	मं.	10	36	पू.षा.	16	59	धृ.	12	5	मकर	22	36	6	48	17	24	6	43	17	26	6	46	17	35	6	15	17	8	9	ज्ञान पंचमी (जैन),
	10	6	बु.	8	25	उ.षा.	15	41	शू./ गं.	9 / 30	9 / 42	मकर			6	49	17	24	6	44	17	26	6	47	17	34	6	15	17	8	10	सूर्य षष्ठी (छठ) (बिहार),
	11	7/ 8	गु.	6 / 29	50 / 51	श्रव.	14	58	वृ.	28	43	कुम्भ	26	51	6	49	17	23	6	45	17	25	6	47	17	34	6	16	17	7	11	भ. 6/50 से 18/20 तक, पंचक प्रारम्भ 26/51, गोपाष्टमी, अष्टमी तिथिक्षय,
	12	9	शु.	29	31	धनि.	14	53	ध्रु.	27	15	कुम्भ			6	50	17	22	6	45	17	25	6	48	17	33	6	17	17	7	12	अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी,
	13	10	श.	29	48	शत.	15	24	व्या.	26	15	कुम्भ			6	51	17	22	6	46	17	24	6	49	17	33	6	17	17	7	13	शुक्र पू.षा. में 20/49,
	14	11	र.	30	39	पू.भा.	16	31	ह.	25	43	मीन	10	11	6	52	17	21	6	47	17	24	6	50	17	32	6	18	17	6	14	भ. 18/13 से 30/39 तक, बुध विशा. में 23/12, देव प्रबोधिनी (C)
	15	12	चं.	—	—	उ.भा.	18	8	व.	25	34	मीन			6	53	17	21	6	48	17	23	6	50	17	32	6	19	17	6	15	देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (वै.), तुलसी विवह, चातुर्मास्य (D)
	16	12	मं.	8	2	रेवती	20	14	सि.	25	46	मेष	20	14	6	54	17	20	6	48	17	23	6	51	17	31	6	19	17	5	16	पंचक समाप्त 20/14, सं. सूर्य वृश्चिक में 13/2, मु. 30, (E)
	17	13	बु.	9	50	अश्वि.	22	42	व्य.	26	15	मेष			6	54	17	20	6	49	17	22	6	52	17	31	6	20	17	5	17	वैकुण्ठ चतुर्दशी,
	18	14	गु.	12	0	भरणी	25	29	व.	26	58	मेष			6	55	17	19	6	50	17	22	6	53	17	31	6	21	17	5	18	भ. 12/00 से 25/14 तक, श्री सत्यनारायण व्रत, त्रिपुरोत्सव, (F)
	19	15	शु.	14	27	कृत्ति.	28	28	प.	27	50	वृष	8	13	6	56	17	19	6	51	17	22	6	53	17	30	6	22	17	5	19	सूर्य अनु. में 20/24, पद्मक योग, मेला पुष्कर राज (राज.), (G)
मार्गशीर्ष कृष्णा	20	1	श.	17	5	रोहि.	—	—	शि.	28	49	वृष			6	57	17	19	6	52	17	21	6	54	17	30	6	22	17	4	20	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, मंगल विशा. में 17/25, बुध वृश्चिक (H)
	21	2	र.	19	47	रोहि.	7	35	सि.	29	49	मिथुन	21	9	6	58	17	18	6	52	17	21	6	55	17	30	6	23	17	4	21	
	22	3	चं.	22	27	मृग.	10	43	सा.	30	44	मिथुन			6	59	17	18	6	53	17	21	6	56	17	30	6	24	17	4	22	भ. 9/7 से 22/27 तक, सूर्य सायन धनु में 8/4,
	23	4	मं.	24	56	आर्द्रा	13	44	शु.	—	—	मिथुन			7	0	17	18	6	54	17	20	6	56	17	29	6	25	17	4	23	बुध अनु. में 7/8, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
	24	5	बु.	27	4	पुन.	16	29	शु.	7	29	कर्क	9	49	7	0	17	17	6	55	17	20	6	57	17	29	6	25	17	3	24	
	25	6	गु.	28	42	पुष्य	18	49	शु.	7	57	कर्क			7	1	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	26	17	3	25	भ. 28/42 बाद,
	26	7	शु.	29	43	आश्ले.	20	36	ब्र.	8	1	सिंह	20	36	7	2	17	'17	6	56	17	20	6	59	17	29	6	27	17	3	26	भ. 17/13 तक,
	27	8	श.	30	0	मघा	21	43	ऐं./ वै.	7 / 30	36 / 37	सिंह			7	3	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	27	17	3	27	श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी),
	28	9	र.	29	30	पू.फा.	22	5	वि.	29	1	कन्या	28	3	7	4	17	16	6	58	17	20	7	0	17	29	6	28	17	3	28	
	29	10	चं.	28	14	उ.फा.	21	41	प्री.	26	49	कन्या			7	5	17	16	6	59	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	29	भ. 16/52 से 28/14 तक,
	30	11	मं.	26	14	हस्त	20	34	आ.	24	2	कन्या			7	5	17	16	7	0	17	19	7	2	17	29	6	30	17	3	30	मंगल उदित 7/5, उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),

(A) नरक चतुर्दशी, (B) बुध पूर्व में अस्त 6/45, यमद्वितीया, भाईदूज, श्री विश्वकर्मा पूजा, (C) एकादशी व्रत (स्मा.), हरि प्रबोधोत्सव, भीष्मपंचक प्रारम्भ, (D) व्रत-नियमादि समाप्त, (E) पुण्यकाल सारा दिन, भौम प्रदोष व्रत, (F) भीष्मपंचक समाप्त, (G) कार्तिक पूर्णिमा, कार्तिक स्नान समाप्त, श्री गुरुनानक जयन्ती, (H) में 28/50, गुरु धनि. 3 कुम्भ में 23/21,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. 2078 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) दिसम्बर, सन् 2021 ई.

मास पक्ष	दिसम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
मार्ग. कृष्ण	1	12	बु.	23	36	चित्रा	18	47	सौ.	20	43	तुला	7	45	7	6	17	16	7	0	17	19	7	2	17	29	6	30	17	3	1	बुध ज्ये· में 18/1, शुक्र उ.षा. में 19/34, नेप्च्यून मार्गी 18/56,
	2	13	गु.	20	27	स्वाती	16	27	शो.	16	59	तुला			7	7	17	16	7	1	17	19	7	3	17	29	6	31	17	3	2	भ. 20/27 से 30/41 तक, सूर्य ज्ये. में 24/44, प्रदोष व्रत,
	3	14	शु.	16	56	विशा.	13	44	अ.	12	55	वृश्चिक	8	26	7	8	17	16	7	2	17	19	7	4	17	29	6	32	17	3	3	
	4	30	श.	13	13	अनु.	10	47	सु./	8	40	वृश्चिक			7	9	17	16	7	3	17	19	7	5	17	29	6	32	17	3	4	मंगल वृश्चिक में 29/57, शनैश्चरी अमा,
									ध.	28	21																					
मार्गशीर्ष शुक्ल	5	1/	र.	9	28	ज्येष्ठा	7	47	शू.	24	6	धनु	7	47	7	10	17	16	7	3	17	20	7	5	17	29	6	33	17	3	5	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30,
		2		29	51	मूल	28	54																								द्वितीया तिथिक्षय,
	6	3	चं.	26	32	पू.षा.	26	19	गं.	20	4	धनु			7	10	17	16	7	4	17	20	7	6	17	29	6	34	17	4	6	
	7	4	मं.	23	41	उ.षा.	24	11	वृ.	16	23	मकर	7	44	7	11	17	16	7	5	17	20	7	7	17	29	6	35	17	4	7	भ. 13/6 से 23/41 तक, राहु कृत्ति. 3, केतु अनु. 1 में 20/16,
	8	5	बु.	21	26	श्रवण	22	39	ध्रु.	13	8	मकर			7	12	17	17	7	6	17	20	7	7	17	29	6	35	17	4	8	शुक्र मकर में 13/52, बलिदान दिन श्रीगुरु तेगबहादुर जी,
	9	6	गु.	19	54	धनि.	21	50	व्या.	10	26	कुम्भ	10	9	7	13	17	17	7	6	17	20	7	8	17	30	6	36	17	4	9	पंचक प्रारम्भ 10/9, मंगल अनु. में 25/5, बुध मूल धनु में (A)
	10	7	शु.	19	9	शत.	21	47	ह./	8	21	कुम्भ			7	13	17	17	7	7	17	20	7	9	17	30	6	37	17	4	10	भ. 19/9 से 31/11 तक, मित्र सप्तमी,
									व.	30	53																					
	11	8	श.	19	13	पू.भा.	22	31	सि.	30	2	मीन	16	16	7	14	17	17	7	8	17	21	7	10	17	30	6	37	17	5	11	
	12	9	र.	20	2	उ.भा.	23	59	व्य.	29	44	मीन			7	15	17	17	7	8	17	21	7	10	17	30	6	38	17	5	12	
	13	10	चं.	21	33	रेवती	26	4	व.	29	55	मेष	26	4	7	15	17	18	7	9	17	21	7	11	17	31	6	39	17	5	13	पंचक समाप्त 26/4,
	14	11	मं.	23	36	अश्वि.	28	40	प.	30	28	मेष			7	16	17	18	7	10	17	21	7	11	17	31	6	39	17	6	14	भ. 10/34 से 23/36 तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), (B)
	15	12	बु.	26	2	भरणी	—	—	शि.	31	16	मेष			7	17	17	18	7	10	17	22	7	12	17	31	6	40	17	6	15	सं. सूर्य मूल धनु में 27/44, मु. 15, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न (C)
	16	13	गु.	28	41	भरणी	7	34	सि.	—	—	वृष	14	20	7	17	17	19	7	11	17	22	7	13	17	32	6	40	17	6	16	प्रदोष व्रत,
	17	14	शु.	—	—	कृत्ति.	10	40	सि.	8	13	वृष			7	18	17	19	7	12	17	23	7	13	17	32	6	41	17	7	17	
	18	14	श.	7	24	रोहि.	13	48	सा.	9	12	मिथुन	27	21	7	18	17	19	7	12	17	23	7	14	17	33	6	41	17	7	18	भ. 7/24 से 20/44 तक, बुध पू.षा. में 17/42, श्रीदत्त जयन्ती, (D)
	19	15	र.	10	5	मृग.	16	52	शु.	10	8	मिथुन			7	19	17	20	7	13	17	23	7	14	17	33	6	42	17	8	19	शुक्र वक्री 16/7,
पौष कृष्ण	20	1	चं.	12	37	आर्द्रा	19	45	शु.	10	57	मिथुन			7	20	17	20	7	13	17	24	7	15	17	33	6	43	17	8	20	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	21	2	मं.	14	54	पुन.	22	25	ब्र.	11	36	कर्क	15	46	7	20	17	21	7	14	17	24	7	15	17	34	6	43	17	9	21	भ. 27/53 बाद, शनि श्रव. 3 में 21/51, सूर्य सायन मकर में 21/29, (E)
	22	3	बु.	16	52	पुष्य	24	44	ऐं.	12	2	कर्क			7	21	17	21	7	14	17	25	7	16	17	34	6	44	17	9	22	भ. 16/52 तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृ. 16),
	23	4	गु.	18	27	आश्ले.	26	41	वै.	12	11	सिंह	26	41	7	21	17	22	7	15	17	25	7	16	17	35	6	44	17	10	23	
	24	5	शु.	19	35	मघा	28	9	वि.	11	59	सिंह			7	21	17	22	7	15	17	26	7	17	17	35	6	45	17	10	24	बुध पश्चिम में उदित 17/22,
	25	6	श.	20	9	पू.फा.	29	5	प्री.	11	24	सिंह			7	22	17	23	7	16	17	27	7	17	17	36	6	45	17	11	25	भ. 20/9 बाद, क्रिस्मस डे,
	26	7	र.	20	8	उ.फा.	29	25	आ.	10	23	कन्या	11	13	7	22	17	24	7	16	17	27	7	18	17	37	6	45	17	11	26	भ. 8/8 तक, बुध उ.षा. में 30/44, जोड़मेला श्री फतेहगढ़ साहिब (पं.).
	27	8	चं.	19	29	हस्त	29	7	सौ./	8	52	कन्या			7	23	17	24	7	16	17	28	7	18	17	37	6	46	17	12	27	
									शो.	30	51																					
	28	9	मं.	18	9	चित्रा	28	11	अ.	28	18	तुला	16	43	7	23	17	25	7	17	17	28	7	18	17	38	6	46	17	13	28	भ. 29/10 बाद, सूर्य पू.षा. में 30/2, मंगल ज्ये. में 24/40,
	29	10	बु.	16	12	स्वाती	26	38	सु.	25	17	तुला			7	23	17	25	7	17	17	29	7	19	17	38	6	47	17	13	29	भ. 16/12 तक, बुध मकर में 11/32,
	30	11	गु.	13	41	विशा.	24	34	धृ.	21	49	वृश्चिक	19	7	7	24	17	26	7	17	17	30	7	19	17	39	6	47	17	14	30	वक्री शुक्र धनु में 8/0, सफला एकादशी व्रत (स.),
	31	12/	शु.	10	40	अनु.	22	4	शू.	17	59	वृश्चिक			7	24	17	27	7	18	17	30	7	19	17	40	6	47	17	14	31	भ. 31/17 बाद, प्रदोष व्रत,
		13		31	17																											त्रयोदशी तिथिक्षय,

(A) 30/6, स्कन्द-गुह षष्ठी, चम्पा षष्ठी, (B) श्रीगीता जयन्ती, (C) तक, गुरु धनि. 4 में 8/10, (D) श्रीसत्यनारायण व्रत, (E) उत्तरायण एवं शिशिर ऋतु प्रारम्भ,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. 2078 **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** **जनवरी, सन् 2022 ई.**

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौ.कृ.	1	14	श.	27	42	ज्येष्ठा	19	17	गं.	13	54	धनु	19	17	7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	48	17	15	1	भ. 17/29 तक, इंग्लिश नववर्ष (2022 ई.) प्रारम्भ,
	2	30	र.	24	3	मूल	16	23	वृ./	9	41	धनु			7	24	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	गुरु शत. 1 में 15/46,
									ध्रु.	29	28																					
पौष शुक्ल	3	1	चं.	20	32	पू.षा.	13	32	व्या.	25	24	मकर	18	52	7	25	17	29	7	18	17	32	7	20	17	42	6	48	17	16	3	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 17/31,
	4	2	मं.	17	19	उ.षा.	10	56	ह.	21	36	मकर			7	25	17	30	7	19	17	33	7	20	17	43	6	48	17	17	4	चन्द्रदर्शन, मु. 30,
	5	3	बु.	14	35	श्रवण/	8	46	व.	18	14	कुम्भ	19	53	7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	48	17	18	5	भ. 25/32 बाद, पंचक प्रारम्भ 19/53, बुध श्रव. में 18/12, वक्री (A)
						धनि.	31	11																								शुक्र अस्त 6 जनवरी
	6	4	गु.	12	29	शत.	30	20	सि.	15	23	कुम्भ			7	25	17	31	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	6	भ. 12/29 तक, शुक्र पश्चिम में अस्त 17/31,
	7	5	शु.	11	10	पू.भा.	30	19	व्य.	13	11	मीन	24	15	7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	45	6	49	17	19	7	
	8	6	श.	10	43	उ.भा.	31	10	व.	11	39	मीन			7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	
	9	7	र.	11	9	रेवती	—	—	प.	10	48	मीन			7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	भ. 11/9 से 23/47 तक, नेप्च्यून पू.भा. 3 में 9/17, जन्मदिन (B)
	10	8	चं.	12	24	रेवती	8	49	शि.	10	35	मेष	8	49	7	25	17	34	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	21	10	पंचक समाप्त 8/49,
	11	9	मं.	14	22	अश्वि.	11	9	सि.	10	54	मेष			7	25	17	35	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	22	11	सूर्य उ.षा. में 7/57, शुक्र उदित 12 जनवरी
	12	10	बु.	16	49	भरणी	13	59	सा.	11	37	वृष	20	45	7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	49	6	49	17	23	12	भ. 30/11 बाद, शुक्र पूर्व में उदित 7/25,
	13	11	गु.	19	33	कृत्ति.	17	6	शु.	12	33	वृष			7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	24	13	भ. 19/33 तक, वक्री यूरेनस भर. 1 में 28/56, पुत्रदा एकादशी (C)
	14	12	शु.	22	19	रोहि.	20	17	शु.	13	35	वृष			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	सं. सूर्य मकर में 14/29, मु. 45, पुण्यकाल सारा दिन, बुध (D)
	15	13	श.	24	57	मृग.	23	21	ब्र.	14	32	मिथुन	9	50	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	शुक्र बाल्य समाप्त 7/25, शनि प्रदोष व्रत, बुध पश्चिम में अस्त 17/41,
	16	14	र.	27	18	आर्द्रा	26	9	ऐं.	15	19	मिथुन			7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	16	भ. 27/18 बाद, मंगल मूल धनु में 16/31,
	17	15	चं.	29	18	पुन.	28	37	वै.	15	52	कर्क	22	2	7	24	17	41	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	27	17	भ. 16/18 तक, पौषी पूर्णिमा, श्री सत्यनारायण व्रत, माघ स्नान प्रारम्भ,
माघ कृष्ण	18	1	मं.	30	54	पुष्य	30	42	वि.	16	7	कर्क			7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गुरु शत. 2 में 15/34, यूरेनस मार्गी (E)
	19	2	बु.	—	—	आश्ले.	—	—	प्री.	16	5	कर्क			7	24	17	42	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	
	20	2	गु.	8	5	आश्ले.	8	24	आ.	15	44	सिंह	8	24	7	24	17	43	7	18	17	46	7	20	17	55	6	49	17	29	20	भ. 20/28 बाद, शनि श्रव. 4 में 26/38, सूर्य सायन कुम्भ में 8/9,
	21	3	शु.	8	52	मघा	9	42	सौ.	15	4	सिंह			7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	56	6	48	17	30	21	भ. 8/52 तक, श्री गणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय देखें पृ. 11),
	22	4	श.	9	14	पू.फा.	10	38	शो.	14	6	कन्या	16	48	7	23	17	45	7	18	17	48	7	20	17	56	6	48	17	31	22	वक्री बुध उ.षा. में 25/13,
	23	5	र.	9	12	उ.फा.	11	9	अ.	12	48	कन्या			7	23	17	46	7	17	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	23	यूरेनस भर. 2 में 15/36,
	24	6	चं.	8	44	हस्त	11	15	सु.	11	11	तुला	23	8	7	22	17	47	7	17	17	49	7	19	17	58	6	48	17	32	24	भ. 8/44 से 20/17 तक, सूर्य श्रव. में 10/19,
	25	7/	मं.	7	49	चित्रा	10	54	धृ./	9	12	तुला			7	22	17	48	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	जन्मदिन स्वामी विवेकानन्दजी,
		8		30	25				शू.	30	51																					अष्टमी तिथिक्षय,
	26	9	बु.	28	34	स्वाती	10	6	गं.	28	8	वृश्चिक	27	12	7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	26	भारत गणतन्त्र दिवस,
	27	10	गु.	26	17	विशा./	8	51	वृ.	25	3	वृश्चिक			7	21	17	49	7	16	17	52	7	18	18	0	6	47	17	34	27	भ. 15/25 से 26/17 तक,
						अनु.	31	10																								
	28	11	शु.	23	36	ज्येष्ठा	29	7	ध्रु.	21	40	धनु	29	7	7	20	17	50	7	15	17	53	7	18	18	1	6	47	17	35	28	षट्तिला एकादशी व्रत (स),
	29	12	श.	20	38	मूल	26	49	व्या.	18	2	धनु			7	20	17	51	7	15	17	54	7	18	18	2	6	46	17	36	29	शुक्र मार्गी 14/17,
	30	13	र.	17	29	पू.षा.	24	22	ह.	14	15	मकर	29	45	7	19	17	52	7	14	17	54	7	17	18	3	6	46	17	37	30	भ. 17/29 से 27/54 तक, प्रदोष व्रत (देखें पृ. 16), (F)
	31	14	चं.	14	18	उ.षा.	21	57	व./	10	25	मकर			7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	4	6	45	17	37	31	बुध पूर्व में उदित 7/20,
									सि.	30	40																					

(A) शुक्र पू.षा. में 18/37, (B) श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी, (C) व्रत (स.), लोहड़ी (पं. हरि., हि.प्र., ज.क.), (D) वक्री 17/10, मकर संक्रान्ति, (E) 20/58, शनि अस्त 17/41, (F) श्रीमेरु त्रयोदशी (जैन),

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. 2078 **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** **फरवरी, सन् 2022 ई.**

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि		घं.	मि		घं.	मि	घं.	मि.	घं.	मि	घं.	मि.	घं.	मि	घं.	मि	घं.	मि	घं.	मि.	घं.	मि.		
मा.कृ.	1	30	मं.	11	15	श्रवण	19	44	व्य	27	8	कुम्भ	30	45	7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	पचंक प्रारम्भ 30/45, भौमवती अमा, मौनी अमा, महोदय योग (A)
माघ शुक्ल	2	1/	बु.	8	31	धनि.	17	52	व.	23	58	कुम्भ			7	17	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	44	17	39	2	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15, गुरु शत. 3 में 10/54, (B)
		2		30	16																											द्वितीया तिथिक्षय,
	3	3	गु.	28	38	शत.	16	34	प.	21	16	कुम्भ			7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	39	3	मंगल पू.षा. में 25/19, गौरी तृतीया (गोंतरी),
	4	4	शु.	27	47	पू.भा.	15	57	शि.	19	9	मीन	10	2	7	16	17	57	7	12	17	59	7	15	18	7	6	43	17	40	4	भ. 16/13 से 27/47 तक, बुध मार्गी 9/43, वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी,
	5	5	श.	27	47	उ.भा.	16	8	सि.	17	41	मीन			7	15	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	श्री पंचमी, वसन्त पंचमी, श्रीलक्ष्मी-सरस्वती पूजन,
	6	6	र.	28	38	रेवती	17	9	सा.	16	52	मेष	17	9	7	15	17	58	7	10	18	0	7	13	18	8	6	42	17	42	6	पंचक समाप्त 17/9, सूर्य धनि.में 13/23,
	7	7	चं.	30	16	अश्वि.	18	58	शु.	16	42	मेष			7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	भ. 30/16 बाद, रथ सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी, (C)
	8	8	मं.	–	–	भरणी	21	27	शु.	17	4	वृष	28	9	7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	भ. 19/24 तक, राहु कृत्ति. 2, केतु विशा. 4 में 17/38, भीष्माष्टमी,
	9	8	बु.	8	31	कृत्ति.	24	23	ब्र.	17	50	वृष			7	12	18	1	7	8	18	3	7	11	18	10	6	41	17	44	9	
	10	9	गु.	11	8	रोहि.	27	31	ऐं.	18	48	वृष			7	12	18	2	7	7	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	माघ गुप्त नवरात्र समाप्त,
	11	10	शु.	13	52	मृग.	30	37	वै.	19	48	मिथुन	17	5	7	11	18	3	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	भ. 27/10 बाद, नवरात्र-पारणा,
	12	11	श.	16	27	आर्द्रा	–	–	वि.	20	39	मिथुन			7	10	18	3	7	6	18	5	7	9	18	13	6	39	17	46	12	भ. 16/27 तक, सं. सूर्य कुम्भ में 27/27, मु. 15, पुण्यकाल अगले(D)
	13	12	र.	18	42	आर्द्रा	9	27	प्री.	21	14	कर्क	29	18	7	9	18	4	7	5	18	6	7	9	18	13	6	38	17	46	13	भीष्म द्वादशी,
	14	13	चं.	20	28	पुन.	11	52	आ.	21	27	कर्क			7	8	18	5	7	4	18	6	7	8	18	14	6	37	17	47	14	सोम प्रदोष व्रत,
	15	14	मं.	21	43	पुष्य	13	48	सौ.	21	17	कर्क			7	7	18	6	7	3	18	7	7	7	18	15	6	36	17	48	15	भ. 21/43 बाद,
	16	15	बु.	22	26	आश्ले.	15	13	शो.	20	43	सिंह	15	13	7	6	18	7	7	3	18	8	7	6	18	15	6	36	17	48	16	भ. 10/5 तक, गुरु शत. 4 में 14/41, श्रीसत्यनारायण व्रत, माघी (E)
फाल्गुन कृष्ण	17	1	गु.	22	40	मघा	16	10	अ.	19	46	सिंह			7	5	18	8	7	2	18	9	7	5	18	16	6	35	17	49	17	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शनि धनि. 1 में 25/19,
	18	2	शु.	22	29	पू.फा.	16	41	सु.	18	29	कन्या	22	46	7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	17	6	34	17	50	18	बुध श्रव. में 30/22, प्लूटो उ.षा. 3 में 28/5, सूर्य सायन मीन में (F)
	19	3	श.	21	57	उ.फा.	16	51	धृ.	16	56	कन्या			7	4	18	9	7	0	18	10	7	4	18	17	6	33	17	50	19	भ. 10/13 से 21/57 तक, सूर्य शत. में 17/57,
	20	4	र.	21	5	हस्त	16	42	शू.	15	7	तुला	28	31	7	3	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	33	17	51	20	गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 18/12, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
	21	5	चं.	19	58	चित्रा	16	16	गं.	13	5	तुला			7	2	18	11	6	58	18	11	7	2	18	19	6	32	17	51	21	मंगल उ.षा. में 28/2,
	22	6	मं.	18	35	स्वाती	15	36	वृ.	10	51	तुला			7	1	18	11	6	57	18	12	7	1	18	19	6	31	17	52	22	भ. 18/35 से 29/47 तक, शुक्र उ.षा. में 22/36, शनि उदित 7/1,
	23	7	बु.	16	57	विशा.	14	40	ध्रु./	8	25	वृश्चिक	8	55	7	0	18	12	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	23	गुरु अस्त 18/12,
									व्या.	29	47																					
	24	8	गु.	15	4	अनु.	13	30	ह.	26	58	वृश्चिक			6	58	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	24	
	25	9	शु.	12	58	ज्येष्ठा	12	7	व.	23	58	धनु	12	7	6	57	18	14	6	54	18	14	6	58	18	21	6	28	17	54	25	भ. 23/49 बाद,
	26	10	श.	10	39	मूल	10	32	सि.	20	50	धनु			6	56	18	15	6	53	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	भ. 10/39 तक, मंगल मकर में 15/50, विजया एकादशी व्रत (स्मा.),
	27	11.	र.	8	13	पू.षा.	8	48	व्य.	17	38	मकर	14	21	6	55	18	15	6	52	18	16	6	57	18	22	6	27	17	55	27	शुक्र मकर में 10/17, विजया एकादशी व्रत (वै.),
		12		29	43																											द्वादशी तिथिक्षय,
	28	13	चं.	27	16	उ.षा./	7	2	व.	14	24	मकर			6	54	18	16	6	51	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	भ. 27/16 बाद, सोम प्रदोष व्रत,
						श्रव.	29	19																								

गुरु अस्त 23 फरवरी

(A) (सूर्योदय से 11/15 तक), (B) माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, (C) मर्यादा महोत्सव (जैन), (D) दिन मध्याह्न तक, जया एकादशी व्रत (स.), (E) पूर्णिमा, माघ-स्नान समाप्त, श्री गुरु रविदास जयन्ती, (F) 22/13, वसन्त ऋतु प्रारम्भ,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. 2078 | तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) | मार्च, सन् 2022 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
फा.कृ.	1	14	मं.	25	0	धनि.	27	47	प.	11	16	कुम्भ	16	31	6	53	18	17	6	50	18	17	6	55	18	24	6	25	17	56	1	भ. 14/8 तक, पंचक प्रारम्भ 16/31, बुध धनि. में 20/29, (A)
	2	30	बु.	23	4	शत.	26	37	शि./	8	20	कुम्भ			6	52	18	17	6	49	18	18	6	54	18	24	6	24	17	56	2	गुरु पू.भा. 1 में 11/5,
									सि.	29	41																					
फाल्गुन शुक्ल	3	1	गु.	21	37	पू.भा.	25	56	सा.	27	28	मीन	20	3	6	51	18	18	6	48	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	4	2	शु.	20	45	उ.भा.	25	51	शु.	25	44	मीन			6	50	18	19	6	47	18	19	6	52	18	25	6	22	17	57	4	चन्द्रदर्शन, मु. 45, सूर्य पू.भा. में 24/11, अवतार दिन श्रीरामकृष्ण परमहंस,
	5	3	श.	20	36	रेवती	26	29	शु.	24	34	मेष	26	29	6	49	18	20	6	46	18	19	6	51	18	26	6	21	17	58	5	पंचक समाप्त 26/29,
	6	4	र.	21	12	अश्वि.	27	50	ब्र.	24	0	मेष			6	47	18	20	6	45	18	20	6	50	18	27	6	20	17	58	6	भ. 8/54 से 21/12 तक, बुध कुम्भ में 11/20,
	7	5	चं.	22	32	भरणी	29	54	ऐं.	23	59	मेष			6	46	18	21	6	44	18	21	6	49	18	27	6	19	17	59	7	होलाष्टक प्रारम्भ
	8	6	मं.	24	31	कृत्ति.	—	—	वै.	24	27	वृष	12	30	6	45	18	22	6	43	18	21	6	48	18	28	6	18	18	0	8	10 से 18 मार्च
	9	7	बु.	26	57	कृत्ति.	8	31	वि.	25	15	वृष			6	44	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	17	18	0	9	भ. 26/57 बाद,
	10	8	गु.	29	34	रोहि.	11	30	प्री.	26	13	मिथुन	25	2	6	43	18	23	6	41	18	23	6	45	18	29	6	16	18	0	10	भ. 16/16 तक, बुध शत. में 19/41, शुक्र श्रव. में 27/53, (B)
	11	9	शु.	—	—	मृग.	14	35	आ.	27	9	मिथुन			6	41	18	24	6	39	18	23	6	44	18	29	6	15	18	1	11	मंगल श्रव. में 25/34,
	12	9	श.	8	8	आर्द्रा	17	31	सौ.	27	54	मिथुन			6	40	18	24	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	1	12	गुरु उदित 26 मार्च
	13	10	र.	10	22	पुन.	20	5	शो.	28	17	कर्क	13	29	6	39	18	25	6	37	18	24	6	42	18	30	6	13	18	2	13	भ. 23/14 बाद,
	14	11	चं.	12	6	पुष्य	22	7	अ.	28	13	कर्क			6	38	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	2	14	भ. 12/6 तक, सं. सूर्य मीन में 24/16, मु. 15, पुण्यकाल अगले (C)
	15	12	मं.	13	12	आश्ले.	23	32	सु.	27	40	सिंह	23	32	6	37	18	26	6	35	18	26	6	40	18	31	6	11	18	3	15	गुरु पू.भा. 2 में 30/19, गोविन्द द्वादशी, भौम प्रदोष व्रत,
	16	13	बु.	13	40	मघा	24	20	धृ.	26	37	सिंह			6	35	18	27	6	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	
	17	14	गु.	13	30	पू.फा.	24	34	शू.	25	7	कन्या	30	32	6	34	18	28	6	33	18	27	6	38	18	32	6	9	18	4	17	भ. 13/30 से 25/8 तक, श्री सत्यनारायण व्रत, होलिकादहन (D)
	18	15	शु.	12	47	उ.फा.	24	17	गं.	23	13	कन्या			6	33	18	28	6	31	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	सूर्य उ.भा. में 8/37, बुध पू.भा. में 21/5, होलाष्टक समाप्त, (E)
चैत्र कृष्ण	19	1	श.	11	37	हस्त	23	37	वृ.	21	0	कन्या			6	32	18	29	6	30	18	28	6	36	18	33	6	7	18	5	19	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शनि धनि. 2 में 20/7, वसन्तोत्सव, होला- (F)
	20	2	र.	10	7	चित्रा	22	40	ध्रु.	18	32	तुला	11	10	6	31	18	30	6	29	18	28	6	35	18	34	6	6	18	5	20	भ. 21/13 बाद, सूर्य सायन मेष में 21/4, उत्तर गोल प्रारम्भ, (G)
	21	3/	चं.	8	20	स्वाती	21	30	व्या.	15	54	तुला			6	29	18	30	6	28	18	29	6	34	18	34	6	5	18	6	21	भ. 8/20 तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत,
		4		30	24																											चतुर्थी तिथिक्षय,
	22	5	मं.	28	22	विशा.	20	13	ह.	13	8	वृश्चिक	14	33	6	28	18	31	6	27	18	30	6	32	18	35	6	4	18	6	22	शक संवत् 1944 प्रारम्भ,
	23	6	बु.	26	16	अनु.	18	52	व.	10	19	वृश्चिक			6	27	18	32	6	26	18	30	6	31	18	35	6	3	18	7	23	भ. 26/16 बाद,
	24	7	गु.	24	10	ज्येष्ठा	17	29	सि./	7	28	धनु	17	29	6	26	18	32	6	24	18	31	6	30	18	36	6	2	18	7	24	भ. 13/8 तक, बुध मीन में 10/56, शुक्र धनि. में 21/48, मेला (H)
									व्य.	28	36																					
	25	8	शु.	22	4	मूल	16	7	व.	25	45	धनु			6	24	18	33	6	23	18	31	6	29	18	36	6	1	18	7	25	बुध उ.भा. में 29/42, श्री शीतलाष्टमी,
	26	9	श.	20	2	पू.षा.	14	47	प.	22	58	मकर	20	28	6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	6	0	18	8	26	गुरु उदित 6/23,
	27	10	र.	18	4	उ.षा.	13	32	शि.	20	14	मकर			6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	37	5	59	18	8	27	भ. 7/3 से 18/4 तक,
	28	11	चं.	16	15	श्रव.	12	24	सि.	17	38	कुम्भ	23	54	6	21	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	58	18	9	28	पंचक प्रारम्भ 23/54, पाप मोचिनी एकादशी व्रत (स.),
	29	12	मं.	14	38	धनि.	11	28	सा.	15	12	कुम्भ			6	19	18	35	6	19	18	33	6	25	18	38	5	56	18	9	29	मंगल धनि. में 19/20, गुरु पू.भा. 3 में 29/38, गुरु बाल्य समाप्त। (I)
	30	13	बु.	13	19	शत.	10	48	शु.	13	1	मीन	28	32	6	18	18	36	6	18	18	34	6	24	18	39	5	55	18	10	30	भ. 13/19 से 24/50 तक, वारुणी योग (सूर्योदय से 10/48 तक), (J)
	31	14	गु.	12	22	पू.भा.	10	30	शु.	11	7	मीन			6	17	18	37	6	16	18	35	6	23	18	39	5	54	18	10	31	सूर्य रेव. में 19/25, शुक्र कुम्भ में 8/39,
चै.कृ.	अ.1	30	शु.	11	54	उ.भा.	10	39	ब्र.	9	35	मीन			6	16	18	37	6	15	18	35	6	22	18	40	5	53	18	10	अ.1	बुध रेव. में 24/53, चान्द्र संवत्सर 2078 वि. पूर्ण, अप्रैल प्रारम्भ

(A) श्रीमहाशिवरात्रि व्रत (शिवयोग), (B) होलाष्टक प्रारम्भ, (C) मध्याह्न तक, आमलकी एकादशी व्रत (स.), (D) (21/1 से 22/13 के मध्य) (देखें पृ. 16), (E) जन्मदिन श्री चैतन्य महाप्रभु, (F) महल्ला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), (G) महाविषुव दिन, बुध पूर्व में अस्त 6/31, (H) श्री शीतला माता कुराली (पं.), (I) 6/23, भौम प्रदोष व्रत, (J) मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.) (देखें पृ. 17),

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2021 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2021 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	पुष्य	19	48	1	57	8	5	14	11
1/2	आश्ले.	20	15	2	17	8	18	14	18
2/3	मघा	20	16	2	13	8	9	14	3
3/4	पू.फा.	19	56	1	48	7	38	13	28
4/5	उ.फा.	19	16	1	4	6	50	12	36
5/6	हस्त	18	20	0	3	5	46	11	28
6/7	चित्रा	17	9	22	49	4	28	10	7
7/8	स्वाती	15	45	21	23	3	0	8	36
8/9	विशा.	14	12	19	47	1	22	6	57
9/10	अनु.	12	32	18	6	23	40	5	15
10/11	ज्येष्ठा	10	49	16	23	21	58	3	33
11/12	मूल	9	9	14	45	20	21	1	59
12/13	पू.षा.	7	37	13	16	18	57	0	38
13	उ.षा.	6	21	12	5	17	51	23	38
14	श्रव.	5	27	11	18	17	11	23	6
15	धनि.	5	4	11	3	17	5	23	9
16	शत.	5	16	11	25	17	37	23	52
17/18	पू.भा.	6	9	12	28	18	51	1	15
18/19	उ.भा.	7	42	14	12	20	44	3	18
19/20	रेव.	9	54	16	32	23	12	5	53
20/21	अश्वि.	12	36	19	20	2	4	8	50
21/22	भर.	15	36	22	22	5	8	11	54
22/23	कृत्ति.	18	39	1	24	8	8	14	51
23/24	रोहि.	21	32	4	12	10	50	17	26
25	मृग.	0	0	6	32	13	2	19	30
26	आर्द्रा	1	55	8	18	14	38	20	56
27	पुन.	3	11	9	24	15	35	21	43
28	पुष्य	3	49	9	52	15	53	21	53
29	आश्ले.	3	50	9	45	15	39	21	30
30	मघा	3	21	9	9	14	57	20	43
31	पू.फा.	2	27	8	11	13	54	19	36

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2021 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	उ.फा.	1	18	6	58	12	38	18	18
1/2	हस्त	23	57	5	36	11	15	16	53
2/3	चित्रा	22	32	4	10	9	49	15	28
3/4	स्वाती	21	7	2	46	8	25	14	5
4/5	विशा.	19	45	1	25	7	5	12	46
5/6	अनु.	18	28	0	9	5	52	11	34
6/7	ज्येष्ठा	17	17	23	1	4	45	10	29
7/8	मूल	16	14	22	0	3	46	9	33
8/9	पू.षा.	15	20	21	9	2	58	8	47
9/10	उ.षा.	14	38	20	30	2	23	8	16
10/11	श्रव.	14	11	20	8	2	5	8	4
11/12	धनि.	14	4	20	6	2	10	8	15
12/13	शत.	14	22	20	31	2	42	8	55
13/14	पू.भा.	15	11	21	28	3	47	10	8
14/15	उ.भा.	16	32	22	58	5	26	11	56
15/16	रेव.	18	28	1	2	7	38	14	16
16/17	अश्वि.	20	56	3	37	10	20	17	3
17/18	भर.	23	46	6	34	13	20	20	7
19	कृत्ति.	2	54	9	39	16	26	23	12
20/21	रोहि.	5	57	12	41	19	23	2	4
21/22	मृग.	8	43	15	20	21	55	4	27
22/23	आर्द्रा	10	57	17	25	23	49	6	11
23/24	पुन.	12	30	18	46	0	59	7	9
24/25	पुष्य	13	17	19	21	1	22	7	21
25/26	आश्ले.	13	17	19	10	1	0	6	49
26/27	मघा	12	35	18	18	0	0	5	40
27/28	पू.फा.	11	18	16	54	22	29	4	2
28/1	उ.फा.	9	35	15	6	20	37	2	7

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2021 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1/2	हस्त	7	36	13	5	18	34	0	3
2	चित्रा	5	31	11	0	16	29	21	58
3	स्वाती	3	28	8	59	14	30	20	2
4	विशा.	1	35	7	9	12	44	18	20
4/5	अनु.	23	57	5	35	11	14	16	55
5/6	ज्येष्ठा	22	37	4	20	10	5	15	50
6/7	मूल	21	37	3	26	9	15	15	6
7/8	पू.षा.	20	58	2	52	8	47	14	43
8/9	उ.षा.	20	40	2	38	8	38	14	39
9/10	श्रव.	20	41	2	44	8	49	14	55
10/11	धनि.	21	2	3	11	9	21	15	32
11/12	शत.	21	45	3	59	10	14	16	32
12/13	पू.भा.	22	50	5	11	11	32	17	56
14	उ.भा.	0	21	6	48	13	17	19	47
15	रेव.	2	19	8	52	15	28	22	5
16/17	अश्वि.	4	43	11	23	18	4	0	47
17/18	भर.	7	30	14	15	21	1	3	47
18/19	कृत्ति.	10	34	17	21	0	9	6	56
19/20	रोहि.	13	44	20	30	3	16	10	1
20/21	मृग.	16	45	23	28	6	8	12	47
21/22	आर्द्रा	19	24	1	59	8	31	15	0
22/23	पुन.	21	27	3	51	10	12	16	30
23/24	पुष्य	22	45	4	56	11	5	17	10
24/25	आश्ले.	23	12	5	10	11	6	16	59
25/26	मघा	22	48	4	35	10	19	16	0
26/27	पू.फा.	21	39	3	15	8	49	14	21
27/28	उ.फा.	19	51	1	19	6	46	12	11
28/29	हस्त	17	35	22	58	4	20	9	41
29/30	चित्रा	15	1	20	22	1	41	7	1
30/31	स्वाती	12	21	14	41	23	2	4	23
31/1	विशा.	9	45	15	7	20	31	1	55

(शेष पृष्ठ 198 पर)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2021 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2021 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	विशा.	9	45	15	7	20	31	1	56
1	अनु.	7	21	12	48	18	17	23	47
2	ज्येष्ठा	5	19	10	52	16	27	22	04
3	मूल	3	43	9	24	15	07	20	51
4	पू.षा.	2	38	8	27	14	18	20	10
5	उ.षा.	2	05	8	2	14	01	20	02
6	श्रव.	2	04	8	9	14	15	20	24
7	धनि.	2	34	8	46	15	00	21	15
8	शत.	3	32	9	51	16	11	22	33
9/10	पू.भा.	4	57	11	22	17	48	00	16
10/11	उ.भा.	6	46	13	16	19	48	2	22
11/12	रेव.	8	57	15	33	22	10	4	49
12/13	अश्वि.	11	29	18	10	0	52	7	35
13/14	भर.	14	19	21	3	3	49	10	35
14/15	कृत्ति.	17	22	0	9	6	57	13	44
15/16	रोहि.	20	32	3	19	10	7	16	53
16/17	मृग.	23	39	6	25	13	9	19	52
18	आर्द्रा	2	33	9	13	15	51	22	27
19/20	पुन.	5	1	11	33	18	2	0	28
20/21	पुष्य	6	52	13	13	19	31	1	46
21/22	आश्ले.	7	58	14	7	20	13	2	15
22/23	मघा	8	15	14	11	20	4	1	54
23/24	पू.फा.	7	41	13	25	19	7	0	46
24	उ.फा.	6	22	11	55	17	27	22	56
25	हस्त	4	23	9	48	15	12	20	34
26	चित्रा	1	54	7	13	12	31	17	49
26/27	स्वाती	23	5	4	21	9	37	14	52
27/28	विशा.	20	8	1	24	6	39	11	55
28/29	अनु.	17	12	22	30	3	49	9	8
29/30	ज्येष्ठा	14	29	19	51	1	15	6	40

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मई 2021 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/1	मूल	12	7	17	36	23	7	4	40
1/2	पू.षा.	10	15	15	52	21	32	3	14
2/3	उ.षा.	8	58	14	45	20	35	2	27
3/4	श्रव.	8	22	14	19	20	19	2	21
4/5	धनि.	8	26	14	33	20	43	2	55
5/6	शत.	9	10	15	27	21	46	4	8
6/7	पू.भा.	10	32	16	57	23	25	5	54
7/8	उ.भा.	12	26	18	58	1	33	8	9
8/9	रेव.	14	46	21	25	4	5	10	46
9/10	अश्वि.	17	28	0	11	6	55	13	40
10/11	भर.	20	25	3	11	9	57	16	44
11/12	कृत्ति.	23	31	6	18	13	5	19	52
13	रोहि.	2	39	9	26	16	13	22	59
14/15	मृग.	5	44	12	29	19	13	1	56
15/16	आर्द्रा	8	38	15	19	21	59	4	37
16/17	पुन.	11	13	17	48	0	21	6	52
17/18	पुष्य	13	21	19	48	2	13	8	35
18/19	आश्ले.	14	55	21	12	3	26	9	38
19/20	मघा	15	48	21	54	3	58	9	59
20/21	पू.फा.	15	57	21	52	3	45	9	35
21/22	उ.फा.	15	22	21	6	2	48	8	28
22/23	हस्त	14	5	19	40	1	13	6	43
23/24	चित्रा	12	12	17	38	23	3	4	27
24/25	स्वाती	9	49	15	9	20	29	1	48
25	विशा.	7	5	12	22	17	39	22	55
26	अनु.	4	11	9	26	14	42	19	59
27	ज्येष्ठा	1	15	6	32	11	50	17	9
27/28	मूल	22	29	3	50	9	12	14	36
28/29	पू.षा.	20	2	1	29	6	58	12	30
29/30	उ.षा.	18	3	23	39	5	17	10	58
30/31	श्रव.	16	41	22	27	4	15	10	7

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जून 2021 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	धनि.	16	1	21	58	3	58	10	1
1/2	शत.	16	7	22	16	4	27	10	42
2/3	पू.भा.	16	59	23	19	5	42	12	7
3/4	उ.भा.	18	34	1	4	7	36	14	10
4/5	रेव.	20	46	3	24	10	4	16	45
5/6	अश्वि.	23	27	6	11	12	55	19	41
7	भर.	2	27	9	13	16	0	22	48
8/9	कृत्ति.	5	35	12	23	19	10	1	57
9/10	रोहि.	8	43	15	30	22	15	5	0
10/11	मृग.	11	44	18	27	1	9	7	50
11/12	आर्द्रा	14	30	21	9	3	46	10	22
12/13	पुन.	16	57	23	30	6	2	12	32
13/14	पुष्य	19	0	1	27	7	52	14	15
14/15	आश्ले.	20	36	2	55	9	13	15	28
15/16	मघा	21	41	3	53	10	2	16	9
16/17	पू.फा.	22	14	4	17	10	18	16	16
17/18	उ.फा.	22	13	4	7	9	59	15	49
18/19	हस्त	21	37	3	23	9	6	14	48
19/20	चित्रा	20	28	2	6	7	42	13	16
20/21	स्वाती	18	49	0	20	5	50	11	18
21/22	विशा.	16	45	22	11	3	35	8	59
22/23	अनु.	14	22	19	44	1	6	6	27
23/24	ज्येष्ठा	11	47	17	8	22	29	3	49
24/25	मूल	9	10	14	32	19	54	1	16
25	पू.षा.	6	40	12	4	17	30	22	57
26	उ.षा.	4	25	9	55	15	27	21	0
27	श्रव.	2	36	8	14	13	54	19	36
28	धनि.	1	21	7	9	12	59	18	52
29	शत.	0	48	6	47	12	49	18	54
30	पू.भा.	1	1	7	12	13	26	19	43

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2021 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जुलाई 2021 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	उ.भा.	2	2	8	25	14	50	21	18
2	रेव.	3	49	10	22	16	57	23	34
3/4	अश्वि.	6	13	12	54	19	36	2	20
4/5	भर.	9	5	15	51	22	37	5	24
5/6	कृत्ति.	12	11	18	59	1	46	8	33
6/7	रोहि.	15	20	22	6	4	51	11	35
7/8	मृग.	18	18	1	0	7	41	14	20
8/9	आर्द्रा	20	58	3	34	10	9	16	42
9/10	पुन.	23	13	5	43	12	11	18	37
11	पुष्य	1	1	7	24	13	45	20	4
12	आश्ले.	2	21	8	37	14	51	21	3
13	मघा	3	14	9	23	15	30	21	36
14	पू.फा.	3	40	9	43	15	44	21	44
15	उ.फा.	3	42	9	39	15	34	21	28
16	हस्त	3	21	9	12	15	1	20	50
17	चित्रा	2	37	8	22	14	7	19	50
18	स्वाती	1	32	7	13	12	52	18	30
19	विशा.	0	8	5	44	11	19	16	53
19/20	अनु.	22	27	3	59	9	31	15	2
20/21	ज्ये.	20	32	2	2	7	31	13	0
21/22	मूल	18	29	23	58	5	27	10	56
22/23	पू.षा.	16	25	21	54	3	24	8	54
23/24	उ.षा.	14	25	19	57	1	30	7	4
24/25	श्रव.	12	40	18	17	23	55	5	35
25/26	धनि.	11	17	17	1	22	47	4	35
26/27	शत.	10	26	16	19	22	14	4	12
27/28	पू.भा.	10	13	16	17	22	23	4	33
28/29	उ.भा.	10	45	17	0	23	18	5	38
29/30	रेव.	12	2	18	28	0	57	7	28
30/31	अश्वि.	14	2	20	38	3	16	9	56

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अगस्त 2021 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	भर.	16	37	23	20	6	4	12	50
1/2	कृत्ति.	19	36	2	22	9	9	15	56
2/3	रोहि.	22	43	5	29	12	15	18	59
4	मृग.	1	43	8	26	15	7	21	46
5/6	आर्द्रा	4	24	11	0	17	34	0	7
6/7	पुन.	6	37	13	4	19	30	1	54
7/8	पुष्य	8	15	14	34	20	51	3	6
8/9	आश्ले.	9	19	15	29	21	38	3	45
9/10	मघा	9	50	15	53	21	54	3	54
10/11	पू.फा.	9	52	15	49	21	44	3	38
11/12	उ.फा.	9	31	15	23	21	14	3	3
12/13	हस्त	8	52	14	40	20	27	2	13
13/14	चित्रा	7	59	13	44	19	28	1	12
14/15	स्वाती	6	55	12	38	18	20	0	2
15	विशा.	5	44	11	25	17	5	22	45
16	अनु.	4	25	10	5	15	44	21	23
17	ज्ये.	3	2	8	40	14	19	19	57
18	मूल	1	35	7	13	12	51	18	29
19	पू.षा.	0	7	5	45	11	23	17	2
19/20	उ.षा.	22	42	4	21	10	1	15	42
20/21	श्रव.	21	24	3	7	8	50	14	35
21/22	धनि.	20	21	2	8	7	57	13	47
22/23	शत.	19	39	1	33	7	28	13	26
23/24	पू.भा.	19	25	1	27	7	31	13	38
24/25	उ.भा.	19	47	1	58	8	12	14	28
25/26	रेव.	20	47	3	9	9	33	16	0
26/27	अश्वि.	22	28	5	0	11	33	18	9
28	भर.	0	47	7	26	14	8	20	50
29	कृत्ति.	3	34	10	19	17	5	23	51
30/31	रोहि.	6	38	13	25	20	12	2	58

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
सितम्बर 2021 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	मृग.	9	43	16	28	23	11	5	53
1/2	आर्द्रा	12	34	19	13	1	49	8	24
2/3	पुन.	14	56	21	26	3	54	10	19
3/4	पुष्य	16	41	23	1	5	18	11	33
4/5	आश्ले.	17	44	23	54	6	0	12	5
5/6	मघा	18	6	0	6	6	3	11	58
6/7	पू.फा.	17	51	23	42	5	31	11	19
7/8	उ.फा.	17	5	22	49	4	32	10	14
8/9	हस्त	15	55	21	35	3	14	8	52
9/10	चित्रा	14	30	20	8	1	44	7	21
10/11	स्वाती	12	57	18	33	0	10	5	46
11/12	विशा.	11	22	16	59	22	35	4	12
12/13	अनु.	9	50	15	27	21	6	2	44
13/14	ज्येष्ठा	8	23	14	3	19	43	1	23
14/15	मूल	7	4	12	46	18	28	0	11
15	पू.षा.	5	55	11	39	17	24	23	9
16	उ.षा.	4	55	10	42	16	30	22	19
17	श्रव.	4	8	9	58	15	50	21	42
18	धनि.	3	35	9	30	15	25	21	22
19	शत.	3	20	9	20	15	21	21	24
20	पू.भा.	3	28	9	33	15	41	21	50
21	उ.भा.	4	1	10	14	16	30	22	47
22/23	रेव.	5	6	11	27	17	50	0	16
23/24	अश्वि.	6	43	13	13	19	44	2	18
24/25	भर.	8	53	15	31	22	10	4	50
25/26	कृत्ति.	11	33	18	16	1	0	7	46
26/27	रोहि.	14	32	21	19	4	6	10	54
27/28	मृग.	17	41	0	28	7	14	13	59
28/29	आर्द्रा	20	43	3	26	10	8	16	47
29/30	पुन.	23	25	6	0	12	34	19	4

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2021 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अक्तूबर 2021 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	पुष्य	1	32	7	58	14	20	20	40
2	आश्ले.	2	57	9	11	15	22	21	29
3	मघा	3	34	9	36	15	35	21	32
4	पू.फा.	3	25	9	16	15	5	20	51
5	उ.फा.	2	35	8	16	13	56	19	34
6	हस्त	1	10	6	44	12	17	17	49
6/7	चित्रा	23	19	4	49	10	17	15	45
7/8	स्वाती	21	12	2	39	8	6	13	32
8/9	विशा.	18	59	0	25	5	52	11	19
9/10	अनु.	16	47	22	15	3	44	9	13
10/11	ज्येष्ठा	14	43	20	15	1	47	7	21
11/12	मूल	12	55	18	31	0	8	5	46
12/13	पू.षा.	11	26	17	7	22	49	4	33
13/14	उ.षा.	10	18	16	5	21	54	3	43
14/15	श्रव.	9	35	15	28	21	22	3	18
15/16	धनि.	9	15	15	15	21	15	3	17
16/17	शत.	9	21	15	27	21	33	3	42
17/18	पू.भा.	9	52	16	4	22	17	4	32
18/19	उ.भा.	10	49	17	7	23	27	5	49
19/20	रेव.	12	12	18	37	1	3	7	31
20/21	अश्वि.	14	1	20	33	3	6	9	40
21/22	भर.	16	16	22	54	5	33	12	13
22/23	कृत्ति.	18	55	1	38	8	22	15	7
23/24	रोहि.	21	52	4	39	11	26	18	13
25	मृग.	1	1	7	49	14	36	21	23
26/27	आर्द्रा	4	10	10	56	17	41	0	25
27/28	पुन.	7	8	13	49	20	28	3	5
28/29	पुष्य	9	41	16	14	22	44	5	12
29/30	आश्ले.	11	38	18	1	0	20	6	37
30/31	मघा	12	51	19	2	1	10	7	14

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
नवम्बर 2021 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	पू.फा.	13	16	19	14	1	10	7	2
1/2	उ.फा.	12	52	18	39	0	23	6	5
2/3	हस्त	11	44	17	20	22	55	4	27
3/4	चित्रा	9	57	15	26	20	53	2	18
4	स्वाती	7	42	13	5	18	26	23	47
5	विशा.	5	7	10	26	15	45	21	4
6	अनु.	2	22	7	41	12	59	18	19
6/7	ज्येष्ठा	23	38	4	58	10	19	15	41
7/8	मूल	21	4	2	28	7	53	13	20
8/9	पू.षा.	18	49	0	19	5	50	11	24
9/10	उ.षा.	16	59	22	36	4	16	9	57
10/11	श्रव.	15	41	21	27	3	15	9	6
11/12	धनि.	14	58	20	54	2	51	8	51
12/13	शत.	14	53	20	57	3	4	9	13
13/14	पू.भा.	15	24	21	38	3	53	10	11
14/15	उ.भा.	16	30	22	52	5	16	11	41
15/16	रेव.	18	8	0	37	7	8	13	40
16/17	अश्वि.	20	14	2	49	9	26	16	3
17/18	भर.	22	42	5	22	12	4	18	46
19	कृत्ति.	1	29	8	13	14	57	21	43
20/21	रोहि.	4	28	11	15	18	1	0	48
21/22	मृग.	7	35	14	22	21	9	3	56
22/23	आर्द्रा	10	43	17	29	0	15	7	0
23/24	पुन.	13	44	20	27	3	9	9	49
24/25	पुष्य	16	29	23	6	5	42	12	17
25/26	आश्ले.	18	49	1	19	7	47	14	13
26/27	मघा	20	36	2	56	9	15	15	30
27/28	पू.फा.	21	43	3	53	10	0	16	4
28/29	उ.फा.	22	5	4	3	9	59	15	51
29/30	हस्त	21	41	3	28	9	13	14	54

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
दिसम्बर 2021 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/1	चित्रा	20	34	2	10	7	45	13	16
1/2	स्वाती	18	46	0	14	5	40	11	4
2/3	विशा.	16	27	21	48	3	8	8	26
3/4	अनु.	13	44	19	1	0	17	5	32
4/5	ज्येष्ठा	10	47	16	2	21	17	2	32
5	मूल	7	47	13	2	18	19	23	36
6	पू.षा.	4	54	10	13	15	33	20	55
7	उ.षा.	2	19	7	44	13	11	18	40
8	श्रव.	0	11	5	44	11	20	16	59
8/9	धनि.	22	39	4	23	10	9	15	58
9/10	शत.	21	50	3	45	9	43	15	44
10/11	पू.भा.	21	47	3	54	10	4	16	16
11/12	उ.भा.	22	31	4	49	11	10	17	33
12/13	रेव.	23	59	6	27	12	58	19	30
14	अश्वि.	2	4	8	41	15	19	21	58
15/16	भर.	4	39	11	22	18	5	0	49
16/17	कृत्ति.	7	34	14	20	21	6	3	53
17/18	रोहि.	10	40	17	27	0	14	7	1
18/19	मृग.	13	48	20	35	3	21	10	7
19/20	आर्द्रा	16	52	23	36	6	20	13	3
20/21	पुन.	19	45	2	27	9	7	15	46
21/22	पुष्य	22	24	5	1	11	37	18	11
23	आश्ले.	0	44	7	16	13	46	20	14
24	मघा	2	41	9	6	15	29	21	50
25	पू.फा.	4	9	10	26	16	41	22	54
26	उ.फा.	5	5	11	13	17	20	23	23
27	हस्त	5	25	11	24	17	21	23	15
28	चित्रा	5	7	10	56	16	43	22	28
29	स्वाती	4	11	9	51	15	29	21	4
30	विशा.	2	38	8	10	13	39	19	7
31	अनु.	0	34	5	58	11	21	16	43

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2022 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2022 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	ज्येष्ठा	22	4	3	23	8	42	14	0
1/2	मूल	19	17	0	34	5	50	11	6
2/3	पू.षा.	16	23	21	40	2	57	8	14
3/4	उ.षा.	13	32	18	52	0	12	5	33
4/5	श्रव.	10	56	16	21	21	47	3	15
5/6	धनि.	8	46	14	18	19	53	1	31
6/7	शत.	7	11	12	54	18	40	0	28
7/8	पू.भा.	6	20	12	15	18	13	0	15
8/9	उ.भा.	6	19	12	27	18	38	0	52
9/10	रेव.	7	10	13	30	19	53	2	20
10/11	अश्वि.	8	49	15	20	21	54	4	31
11/12	भर.	11	9	17	49	0	31	7	15
12/13	कृत्ति.	13	59	20	45	3	31	10	19
13/14	रोहि.	17	6	23	54	6	42	13	30
14/15	मृग.	20	17	3	4	9	50	16	36
15/16	आर्द्रा	23	21	6	4	12	47	19	28
17	पुन.	2	9	8	48	15	25	22	2
18/19	पुष्य	4	37	11	10	17	42	0	13
19/20	आश्ले.	6	42	13	10	19	36	2	0
20/21	मघा	8	24	14	46	21	6	3	25
21/22	पू.फा.	9	42	15	58	22	13	4	26
22/23	उ.फा.	10	37	16	48	22	56	5	3
23/24	हस्त	11	9	17	12	23	15	5	15
24/25	चित्रा	11	14	17	12	23	8	5	2
25/26	स्वाती	10	54	16	44	22	33	4	20
26/27	विशा.	10	6	15	50	21	32	3	12
27/28	अनु.	8	51	14	28	20	3	1	37
28	ज्येष्ठा	7	10	12	41	18	11	23	40
29	मूल	5	7	10	34	15	59	21	24
30	पू.षा.	2	49	8	12	13	36	18	59
31	उ.षा.	0	22	5	45	11	9	16	33

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2022 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	श्रव.	21	57	3	22	8	48	14	15
1/2	धनि.	19	44	1	13	6	45	12	18
2/3	शत.	17	53	23	30	5	9	10	50
3/4	पू.भा.	16	34	22	21	4	10	10	2
4/5	उ.भा.	15	57	21	55	3	56	10	1
5/6	रेव.	16	8	22	19	4	32	10	49
6/7	अश्वि.	17	9	23	32	5	58	12	27
7/8	भर.	18	58	1	32	8	8	14	46
8/9	कृत्ति.	21	27	4	9	10	52	17	37
10	रोहि.	0	23	7	9	13	56	20	44
11	मृग.	3	31	10	19	17	5	23	51
12/13	आर्द्रा	6	37	13	21	20	4	2	46
13/14	पुन.	9	27	16	6	22	43	5	18
14/15	पुष्य	11	52	18	24	0	54	7	22
15/16	आश्ले.	13	48	20	12	2	34	8	55
16/17	मघा	15	13	21	30	3	45	9	58
17/18	पू.फा.	16	10	22	20	4	29	10	36
18/19	उ.फा.	16	41	22	46	4	49	10	50
19/20	हस्त	16	51	22	50	4	48	10	46
20/21	चित्रा	16	42	22	37	4	31	10	24
21/22	स्वाती	16	16	22	7	3	58	9	47
22/23	विशा.	15	35	21	23	3	10	8	55
23/24	अनु.	14	40	20	24	2	7	7	49
24/25	ज्येष्ठा	13	30	19	11	0	50	6	29
25/26	मूल	12	7	17	44	23	21	4	56
26/27	पू.षा.	10	32	16	6	21	41	3	15
27/28	उ.षा.	8	48	14	21	19	55	1	28
28	श्रव.	7	1	12	35	18	9	23	44

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2022 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	धनि.	5	19	10	54	16	31	22	9
2	शत.	3	47	9	27	15	9	20	52
3	पू.भा.	2	37	8	23	14	12	20	3
4	उ.भा.	1	56	7	51	13	48	19	48
5	रेव.	1	51	7	56	14	4	20	15
6	अश्वि.	2	29	8	45	15	4	21	26
7	भर.	3	50	10	18	16	47	23	19
8/9	कृत्ति.	5	54	12	30	19	9	1	49
9/10	रोहि.	8	31	15	14	21	58	4	44
10/11	मृग.	11	30	18	16	1	2	7	49
11/12	आर्द्रा	14	35	21	20	4	5	10	49
12/13	पुन.	17	31	0	12	6	52	13	29
13/14	पुष्य	20	5	2	39	9	11	15	40
14/15	आश्ले.	22	7	4	32	10	55	17	15
15/16	मघा	23	32	5	48	12	1	18	12
17	पू.फा.	0	20	6	27	12	31	18	33
18	उ.फा.	0	34	6	32	12	29	18	24
19	हस्त	0	17	6	9	12	0	17	49
19/20	चित्रा	23	37	5	24	11	10	16	55
20/21	स्वाती	22	40	4	23	10	6	15	49
21/22	विशा.	21	30	3	12	8	52	14	33
22/23	अनु.	20	13	1	53	7	33	13	13
23/24	ज्येष्ठा	18	52	0	31	6	11	11	50
24/25	मूल	17	29	23	9	4	48	10	27
25/26	पू.षा.	16	7	21	47	3	26	9	7
26/27	उ.षा.	14	47	20	28	2	8	7	50
27/28	श्रव.	13	31	19	14	0	56	6	40
28/29	धनि.	12	24	18	8	23	54	5	40
29/30	शत.	11	28	17	16	23	5	4	56
30/31	पू.भा.	10	48	16	41	22	36	4	32

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2021 ई. को अयनांश 24° 8' 45"

जनवरी	साम्पातिक काल 0 0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ	मि	से	रा	अं	क	वि	रा.	अं	क	वि.	रा	अं	क.	वि	रा	अ	क	वि	रा.	अं	क	वि	रा.	अं	क.	वि.	रा	अं	क	वि	रा	अं	क.	वि.	रा	अं	क	वि	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	6	43	29	8	16	38	2	3	8	35	32	0	3	12	41	8	23	34	6	9	8	38	12	7	26	15	57	9	7	28	44	1	24	43	0	1	25	44	40	-23	0	23	1	3	[illegible]
2	6	47	25	8	17	39	10	3	21	46	30	0	3	38	44	8	25	11	53	9	8	51	55	7	27	31	6	9	7	35	34	1	24	39	50	1	25	41	15	-22	55	20	13	4	[illegible]
3	6	51	22	8	18	40	19	4	5	10	29	0	4	5	3	8	26	49	53	9	9	5	39	7	28	46	15	9	7	42	27	1	24	36	39	1	25	37	41	-22	49	16	18	4	[illegible]
4	6	55	18	8	19	41	27	4	18	46	30	0	4	31	39	8	28	28	5	9	9	19	26	8	0	1	24	9	7	49	20	1	24	33	28	1	25	34	30	-22	43	11	30	5	[illegible]
5	6	59	15	8	20	42	36	5	2	33	30	0	4	58	30	9	0	6	26	9	9	33	15	8	1	16	34	9	7	56	15	1	24	30	17	1	25	32	12	-22	37	6	5	5	[illegible]
6	7	3	12	8	21	43	45	5	16	30	26	0	5	25	37	9	1	44	55	9	9	47	6	8	2	31	45	9	8	3	12	1	24	27	6	1	25	31	4	-22	30	0	17	4	[illegible]
7	7	7	8	8	22	44	55	6	0	36	9	0	5	52	59	9	3	23	27	9	10	0	59	8	3	46	56	9	8	10	9	1	24	23	56	1	25	31	9	-22	22	-5	35	4	[illegible]
8	7	11	5	8	23	46	4	6	14	49	15	0	6	20	36	9	5	1	58	9	10	14	54	8	5	2	7	9	8	17	8	1	24	20	45	1	25	32	13	-22	14	-11	14	3	[illegible]
9	7	15	1	8	24	47	14	6	29	7	46	0	6	48	28	9	6	40	25	9	10	28	51	8	6	17	19	9	8	24	8	1	24	17	34	1	25	33	43	-22	6	-16	20	2	[illegible]
10	7	18	58	8	25	48	23	7	13	29	2	0	7	16	34	9	8	18	39	9	10	42	50	8	7	32	32	9	8	31	9	1	24	14	23	1	25	34	58	-21	57	-20	30	1	6
11	7	22	54	8	26	49	33	7	27	49	28	0	7	44	54	9	9	56	34	9	10	56	50	8	8	47	44	9	8	38	12	1	24	11	12	1	25	35	18	-21	48	-23	24	-0	12
12	7	26	51	8	27	50	42	8	12	4	45	0	8	13	28	9	11	34	1	9	11	10	52	8	10	2	57	9	8	45	15	1	24	8	1	1	25	34	10	-21	38	-24	46	-1	29
13	7	30	47	8	28	51	52	8	26	10	12	0	8	42	15	9	13	10	49	9	11	24	55	8	11	18	10	9	8	52	19	1	24	4	51	1	25	31	17	-21	28	-24	32	-2	39
14	7	34	44	8	29	53	0	9	10	1	21	0	9	11	15	9	14	46	44	9	11	39	0	8	12	33	23	9	8	59	24	1	24	1	40	1	25	26	45	-21	18	-22	45	-3	39
15	7	38	41	9	0	54	9	9	23	34	30	0	9	40	27	9	16	21	33	9	11	53	6	8	13	48	37	9	9	6	29	1	23	58	29	1	25	20	58	-21	7	-19	43	-4	25
16	7	42	37	9	1	55	17	10	6	47	23	0	10	9	52	9	17	54	56	9	12	7	13	8	15	3	50	9	9	13	35	1	23	55	18	1	25	14	35	-20	56	-15	44	-4	55
17	7	46	34	9	2	56	24	10	19	39	24	0	10	39	30	9	19	26	34	9	12	21	21	8	16	19	3	9	9	20	42	1	23	52	7	1	25	8	22	-20	44	-11	7	-5	9
18	7	50	30	9	3	57	31	11	2	11	38	0	11	9	18	9	20	56	2	9	12	35	31	8	17	34	16	9	9	27	49	1	23	48	57	1	25	3	1	-20	32	-6	10	-5	8
19	7	54	27	9	4	58	36	11	14	26	43	0	11	39	18	9	22	22	53	9	12	49	41	8	18	49	29	9	9	34	57	1	23	45	46	1	24	59	5	-20	20	-1	5	-4	53
20	7	58	23	9	5	59	41	11	26	28	26	0	12	9	30	9	23	46	37	9	13	3	52	8	20	4	42	9	9	42	5	1	23	42	35	1	24	56	51	-20	7	3	57	-4	25
21	8	2	20	9	7	0	45	0	8	21	24	0	12	39	51	9	25	6	39	9	13	18	4	8	21	19	55	9	9	49	13	1	23	39	24	1	24	56	17	-19	54	8	48	-3	46
22	8	6	16	9	8	1	48	0	20	10	42	0	13	10	23	9	26	22	20	9	13	32	16	8	22	35	7	9	9	56	22	1	23	36	13	1	24	57	2	-19	40	13	19	-2	57
23	8	10	13	9	9	2	51	1	2	1	34	0	13	41	5	9	27	32	57	9	13	46	29	8	23	50	19	9	10	3	30	1	23	33	3	1	24	58	31	-19	26	17	20	-2	1
24	8	14	10	9	10	3	52	1	13	59	8	0	14	11	57	9	28	37	44	9	14	0	43	8	25	5	31	9	10	10	39	1	23	29	52	1	24	59	56	-19	12	20	41	-0	59
25	8	18	6	9	11	4	52	1	26	8	2	0	14	42	58	9	29	35	54	9	14	14	57	8	26	20	43	9	10	17	47	1	23	26	41	1	25	0	28	-18	58	23	11	0	6
26	8	22	3	9	12	5	51	2	8	32	8	0	15	14	8	10	0	26	34	9	14	29	11	8	27	35	55	9	10	24	56	1	23	23	30	1	24	59	23	-18	43	24	37	1	13
27	8	25	59	9	13	6	49	2	21	14	11	0	15	45	27	10	1	8	55	9	14	43	26	8	28	51	7	9	10	32	4	1	23	20	19	1	24	56	10	-18	27	24	49	2	17
28	8	29	56	9	14	7	46	3	4	15	34	0	16	16	55	10	1	42	8	9	14	57	40	9	0	6	18	9	10	39	13	1	23	17	9	1	24	50	40	-18	12	23	40	3	15
29	8	33	52	9	15	8	43	3	17	36	6	0	16	48	30	10	2	5	26	9	15	11	55	9	1	21	29	9	10	46	21	1	23	13	58	1	24	43	9	-17	56	21	11	4	5
30	8	37	49	9	16	9	38	4	1	13	58	0	17	20	14	10	2	18	13	9	15	26	10	9	2	36	40	9	10	53	28	1	23	10	47	1	24	34	17	-17	39	17	28	4	41
31	8	41	45	9	17	10	33	4	15	6	0	0	17	52	6	10	2	20	0	9	15	40	25	9	3	51	52	9	11	0	35	1	23	7	36	1	24	25	2	-17	23	12	46	5	2

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2021 ई. को अयनांश 24° 8' 50"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	8	45	42	9	18	11	26	4	29	8	13	0	18	24	5	10	2	10	31	9	15	54	40	9	5	7	3	9	11	7	42	1	23	4	26	1	24	16	28	-17	6	7	20	5	5
2	8	49	39	9	19	12	19	5	13	16	24	0	18	56	12	10	1	49	49	9	16	8	55	9	6	22	13	9	11	14	49	1	23	1	15	1	24	9	33	-16	49	1	29	4	49
3	8	53	35	9	20	13	11	5	27	26	50	0	19	28	27	10	1	18	13	9	16	23	10	9	7	37	24	9	11	21	54	1	22	58	4	1	24	4	54	-16	31	-4	28	4	16
4	8	57	32	9	21	14	2	6	11	36	36	0	20	0	48	10	0	36	26	9	16	37	24	9	8	52	35	9	11	28	59	1	22	54	53	1	24	2	38	-16	13	-10	11	3	27
5	9	1	28	9	22	14	53	6	25	43	48	0	20	33	17	9	29	45	29	9	16	51	38	9	10	7	46	9	11	36	4	1	22	51	42	1	24	2	18	-15	55	-15	22	2	25
6	9	5	25	9	23	15	42	7	9	47	16	0	21	5	53	9	28	46	47	9	17	5	51	9	11	22	56	9	11	43	7	1	22	48	32	1	24	2	39	-15	37	-19	42	1	16
7	9	9	21	9	24	16	31	7	23	46	15	0	21	38	35	9	27	41	59	9	17	20	4	9	12	38	6	9	11	50	10	1	22	45	21	1	24	3	30	-15	18	-22	52	0	2
8	9	13	18	9	25	17	18	8	7	39	56	0	22	11	25	9	26	32	58	9	17	34	17	9	13	53	16	9	11	57	12	1	22	42	10	1	24	2	39	-14	59	-24	38	-1	12
9	9	17	14	9	26	18	5	8	21	27	5	0	22	44	20	9	25	21	44	9	17	48	29	9	15	8	26	9	12	4	13	1	22	38	59	1	23	59	27	-14	40	-24	51	-2	21
10	9	21	11	9	27	18	50	9	5	5	55	0	23	17	23	9	24	10	15	9	18	2	40	9	16	23	36	9	12	11	12	1	22	35	49	1	23	53	26	-14	21	-23	34	-3	20
11	9	25	8	9	28	19	35	9	18	34	10	0	23	50	31	9	23	0	26	9	18	16	50	9	17	38	45	9	12	18	11	1	22	32	38	1	23	44	40	-14	1	-20	57	-4	8
12	9	29	4	9	29	20	18	10	1	49	29	0	24	23	46	9	21	53	57	9	18	30	59	9	18	53	54	9	12	25	8	1	22	29	27	1	23	33	42	-13	41	-17	16	-4	41
13	9	33	1	10	0	20	59	10	14	49	48	0	24	57	7	9	20	52	15	9	18	45	7	9	20	9	2	9	12	32	4	1	22	26	16	1	23	21	31	-13	21	-12	49	-4	59
14	9	36	57	10	1	21	40	10	27	33	58	0	25	30	34	9	19	56	29	9	18	59	14	9	21	24	10	9	12	38	59	1	22	23	6	1	23	9	18	-13	1	-7	54	-5	1
15	9	40	54	10	2	22	18	11	10	1	59	0	26	4	6	9	19	7	30	9	19	13	19	9	22	39	17	9	12	45	52	1	22	19	55	1	22	58	10	-12	40	-2	46	-4	49
16	9	44	50	10	3	22	55	11	22	15	10	0	26	37	44	9	18	25	52	9	19	27	24	9	23	54	24	9	12	52	44	1	22	16	44	1	22	49	2	-12	20	2	23	-4	24
17	9	48	47	10	4	23	30	0	4	16	6	0	27	11	27	9	17	51	55	9	19	41	27	9	25	9	30	9	12	59	34	1	22	13	33	1	22	42	24	-11	59	7	22	-3	47
18	9	52	43	10	5	24	4	0	16	8	29	0	27	45	15	9	17	25	43	9	19	55	28	9	26	24	35	9	13	6	23	1	22	10	23	1	22	38	23	-11	38	12	3	-3	1
19	9	56	40	10	6	24	36	0	27	56	54	0	28	19	9	9	17	7	14	9	20	9	28	9	27	39	40	9	13	13	9	1	22	7	12	1	22	36	36	-11	16	16	15	-2	7
20	10	0	37	10	7	25	6	1	9	46	36	0	28	53	7	9	16	56	16	9	20	23	26	9	28	54	44	9	13	19	54	1	22	4	1	1	22	36	18	-10	55	19	50	-1	8
21	10	4	33	10	8	25	34	1	21	43	7	0	29	27	9	9	16	52	31	9	20	37	22	10	0	9	47	9	13	26	37	1	22	0	50	1	22	36	27	-10	33	22	37	-0	5
22	10	8	30	10	9	26	0	2	3	51	58	1	0	1	16	9	16	55	40	9	20	51	17	10	1	24	50	9	13	33	19	1	21	57	40	1	22	35	56	-10	12	24	25	1	0
23	10	12	26	10	10	26	24	2	16	18	12	1	0	35	28	9	17	5	17	9	21	5	10	10	2	39	52	9	13	39	58	1	21	54	29	1	22	33	43	-9	50	25	3	2	2
24	10	16	23	10	11	26	47	2	29	5	57	1	1	9	43	9	17	21	1	9	21	19	1	10	3	54	53	9	13	46	35	1	21	51	18	1	22	29	2	-9	28	24	24	3	0
25	10	20	19	10	12	27	7	3	12	17	51	1	1	44	2	9	17	42	26	9	21	32	49	10	5	9	53	9	13	53	10	1	21	48	7	1	22	21	34	-9	5	22	23	3	51
26	10	24	16	10	13	27	26	3	25	54	32	1	2	18	26	9	18	9	9	9	21	46	36	10	6	24	53	9	13	59	43	1	21	44	57	1	22	11	33	-8	43	19	3	4	30
27	10	28	12	10	14	27	43	4	9	54	9	1	2	52	53	9	18	40	47	9	22	0	21	10	7	39	52	9	14	6	14	1	21	41	46	1	21	59	45	-8	20	14	35	4	54
28	10	32	9	10	15	27	58	4	24	12	26	1	3	27	24	9	19	16	59	9	22	14	3	10	8	54	51	9	14	12	42	1	21	38	35	1	21	47	20	-7	58	9	12	5	0

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2021 ई. को अयनांश 24° 8' 54"

	साम्पातिक काल 0 0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	।	मि	से	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	अं	क	अं	क	अं	क
		36	6	10	16	28	12	5	8	43	8	1	4	1	58	9	19	57	26	9	22	27	43	10	10	9	49	9	14	19	8	1	21	35	24	1	21	35	37	-7	35	3	15	4	47
		40	2	10	17	28	24	5	23	19	7	1	4	36	36	9	20	41	49	9	22	41	21	10	11	24	46	9	14	25	32	1	21	32	14	1	21	25	48	-7	12	-2	55	4	16
		43	59	10	18	28	34	6	7	53	28	1	5	11	17	9	21	29	50	9	22	54	56	10	12	39	43	9	14	31	53	1	21	29	3	1	21	18	43	-6	49	-8	56	3	27
		47	55	10	19	28	43	6	22	20	37	1	5	46	2	9	22	21	15	9	23	8	29	10	13	54	39	9	14	38	12	1	21	25	52	1	21	14	33	-6	26	-14	26	2	26
		51	52	10	20	28	51	7	6	36	52	1	6	20	50	9	23	15	50	9	23	21	59	10	15	9	34	9	14	44	28	1	21	22	41	1	21	12	53	-6	3	-19	4	1	16
		55	48	10	21	28	56	7	20	40	26	1	6	55	41	9	24	13	22	9	23	35	26	10	16	24	29	9	14	50	42	1	21	19	31	1	21	12	41	-5	40	-22	32	0	3
		59	45	10	22	29	0	8	4	31	1	1	7	30	36	9	25	13	38	9	23	48	51	10	17	39	23	9	14	56	52	1	21	16	20	1	21	12	37	-5	17	-24	36	-1	10
		3	41	10	23	29	3	8	18	9	7	1	8	5	34	9	26	16	30	9	24	2	13	10	18	54	17	9	15	3	0	1	21	13	9	1	21	11	18	-4	53	-25	9	-2	17
		7	38	10	24	29	4	9	1	35	32	1	8	40	35	9	27	21	47	9	24	15	32	10	20	9	10	9	15	9	6	1	21	9	58	1	21	7	35	-4	30	-24	12	-3	16
		11	35	10	25	29	3	9	14	50	53	1	9	15	39	9	28	29	20	9	24	28	48	10	21	24	2	9	15	15	8	1	21	6	48	1	21	0	52	-4	6	-21	55	-4	3
	1	15	31	10	26	29	1	9	27	55	17	1	9	50	46	9	29	39	3	9	24	42	0	10	22	38	54	9	15	21	7	1	21	3	37	1	20	51	7	-3	43	-18	31	-4	37
	1	19	28	10	27	28	56	10	10	48	31	1	10	25	57	10	0	50	48	9	24	55	10	10	23	53	45	9	15	27	3	1	21	0	26	1	20	38	54	-3	19	-14	16	-4	56
	1	23	24	10	28	28	50	10	23	30	5	1	11	1	10	10	2	4	29	9	25	8	16	10	25	8	35	9	15	32	56	1	20	57	15	1	20	25	13	-2	55	-9	28	-5	0
	1	27	21	10	29	28	43	11	5	59	35	1	11	36	26	10	3	20	1	9	25	21	19	10	26	23	24	9	15	38	46	1	20	54	5	1	20	11	20	-2	32	-4	22	-4	49
	11	31	17	11	0	28	33	11	18	17	7	1	12	11	45	10	4	37	18	9	25	34	18	10	27	38	12	9	15	44	33	1	20	50	54	1	19	58	27	-2	8	0	51	-4	25
	11	35	14	11	1	28	21	0	0	23	28	1	12	47	7	10	5	56	18	9	25	47	14	10	28	52	59	9	15	50	16	1	20	47	43	1	19	47	35	-1	44	5	57	-3	49
	11	39	10	11	2	28	7	0	12	20	23	1	13	22	31	10	7	16	55	9	26	0	6	11	0	7	46	9	15	55	56	1	20	44	33	1	19	39	23	-1	21	10	48	-3	3
	11	43	7	11	3	27	50	0	24	10	33	1	13	57	57	10	8	39	7	9	26	12	54	11	1	22	31	9	16	1	32	1	20	41	22	1	19	34	4	-0	57	15	12	-2	10
	11	47	4	11	4	27	32	1	5	57	35	1	14	33	26	10	10	2	50	9	26	25	38	11	2	37	15	9	16	7	5	1	20	38	11	1	19	31	20	-0	33	19	1	-1	11
	11	51	0	11	5	27	11	1	17	45	58	1	15	8	58	10	11	28	4	9	26	38	18	11	3	51	58	9	16	12	34	1	20	35	0	1	19	30	32	-0	9	22	4	-0	9
	11	54	57	11	6	26	48	1	29	40	48	1	15	44	31	10	12	54	46	9	26	50	55	11	5	6	40	9	16	18	0	1	20	31	50	1	19	30	41	0	14	24	11	0	54
	11	58	53	11	7	26	22	2	11	47	33	1	16	20	7	10	14	22	54	9	27	3	27	11	6	21	21	9	16	23	22	1	20	28	39	1	19	30	41	0	38	25	14	1	56
	12	2	50	11	8	25	55	2	24	11	40	1	16	55	44	10	15	52	27	9	27	15	55	11	7	36	1	9	16	28	40	1	20	25	28	1	19	29	29	1	2	25	3	2	53
	12	6	46	11	9	25	25	3	6	58	8	1	17	31	23	10	17	23	23	9	27	28	19	11	8	50	40	9	16	33	54	1	20	22	17	1	19	26	15	1	25	23	33	3	44
5	12	10	43	11	10	24	53	3	20	10	49	1	18	7	5	10	18	55	43	9	27	40	38	11	10	5	17	9	16	39	5	1	20	19	7	1	19	20	35	1	49	20	45	4	25
6	12	14	39	11	11	24	18	4	3	51	47	1	18	42	48	10	20	29	25	9	27	52	53	11	11	19	53	9	16	44	12	1	20	15	56	1	19	12	36	2	12	16	44	4	52
7	12	18	36	11	12	23	41	4	18	0	28	1	19	18	33	10	22	4	30	9	28	5	3	11	12	34	29	9	16	49	14	1	20	12	45	1	19	2	53	2	36	11	40	5	3
28	12	22	33	11	13	23	3	5	2	33	15	1	19	54	19	10	23	40	56	9	28	17	9	11	13	49	3	9	16	54	13	1	20	9	35	1	18	52	28	2	59	5	49	4	55
29	12	26	29	11	14	22	22	5	17	23	34	1	20	30	7	10	25	18	45	9	28	29	11	11	15	3	36	9	16	59	8	1	20	6	24	1	18	42	31	3	23	-0	29	4	26
30	12	30	26	11	15	21	39	6	2	22	48	1	21	5	57	10	26	57	56	9	28	41	7	11	16	18	8	9	17	3	58	1	20	3	13	1	18	34	9	3	46	-6	49	3	40
31	12	34	22	11	16	20	54	6	17	21	39	1	21	41	48	10	28	38	29	9	28	52	59	11	17	32	39	9	17	8	45	1	20	0	2	1	18	28	8	4	9	-12	47	2	38

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अप्रैल 2021 ई. को अयनांश 24° 8' 57''

अप्रैल	साम्पातिक काल 0 0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	12	38	19	11	17	20	7	7	2	11	42	1	22	17	41	11	0	20	26	9	29	4	46	11	18	47	9	9	17	13	27	1	19	56	52	1	18	24	43	4	33	-17	57	1	25
2	12	42	15	11	18	19	19	7	16	46	40	1	22	53	35	11	2	3	46	9	29	16	28	11	20	1	38	9	17	18	5	1	19	53	41	1	18	23	37	4	56	-21	56	0	9
3	12	46	12	11	19	18	28	8	1	2	46	1	23	29	31	11	3	48	31	9	29	28	4	11	21	16	7	9	17	22	39	1	19	50	30	1	18	23	59	5	19	-24	28	-1	7
4	12	50	8	11	20	17	36	8	14	58	42	1	24	5	28	11	5	34	40	9	29	39	36	11	22	30	34	9	17	27	8	1	19	47	19	1	18	24	44	5	42	-25	24	-2	17
5	12	54	5	11	21	16	42	8	28	34	54	1	24	41	27	11	7	22	15	9	29	51	2	11	23	45	0	9	17	31	33	1	19	44	9	1	18	24	42	6	4	-24	47	-3	18
6	12	58	2	11	22	15	47	9	11	52	54	1	25	17	28	11	9	11	15	10	0	2	23	11	24	59	26	9	17	35	53	1	19	40	58	1	18	22	54	6	27	-22	44	-4	6
7	13	1	58	11	23	14	49	9	24	54	40	1	25	53	30	11	11	1	43	10	0	13	39	11	26	13	50	9	17	40	9	1	19	37	47	1	18	18	48	6	50	-19	33	-4	41
8	13	5	55	11	24	13	50	10	7	42	11	1	26	29	34	11	12	53	37	10	0	24	49	11	27	28	14	9	17	44	20	1	19	34	36	1	18	12	20	7	12	-15	29	-5	1
9	13	9	51	11	25	12	49	10	20	17	13	1	27	5	39	11	14	46	59	10	0	35	53	11	28	42	36	9	17	48	26	1	19	31	26	1	18	3	54	7	35	-10	49	-5	6
10	13	13	48	11	26	11	47	11	2	41	11	1	27	41	46	11	16	41	48	10	0	46	52	11	29	56	58	9	17	52	28	1	19	28	15	1	17	54	15	7	57	-5	47	-4	56
11	13	17	44	11	27	10	42	11	14	55	13	1	28	17	54	11	18	38	3	10	0	57	44	0	1	11	18	9	17	56	25	1	19	25	4	1	17	44	21	8	19	-0	35	-4	33
12	13	21	41	11	28	9	35	11	27	0	27	1	28	54	3	11	20	35	45	10	1	8	31	0	2	25	38	9	18	0	17	1	19	21	53	1	17	35	9	8	41	4	35	-3	57
13	13	25	37	11	29	8	27	0	8	58	5	1	29	30	14	11	22	34	51	10	1	19	11	0	3	39	56	9	18	4	4	1	19	18	43	1	17	27	27	9	3	9	33	-3	12
14	13	29	34	0	0	7	16	0	20	49	42	2	0	6	26	11	24	35	19	10	1	29	46	0	4	54	13	9	18	7	47	1	19	15	32	1	17	21	48	9	25	14	8	-2	18
15	13	33	31	0	1	6	3	1	2	37	26	2	0	42	40	11	26	37	6	10	1	40	14	0	6	8	29	9	18	11	24	1	19	12	21	1	17	18	23	9	46	18	10	-1	19
16	13	37	27	0	2	4	48	1	14	24	2	2	1	18	55	11	28	40	7	10	1	50	36	0	7	22	44	9	18	14	56	1	19	9	11	1	17	17	5	10	7	21	28	-0	16
17	13	41	24	0	3	3	31	1	26	12	58	2	1	55	10	0	0	44	19	10	2	0	51	0	8	36	57	9	18	18	24	1	19	6	0	1	17	17	25	10	29	23	53	0	48
18	13	45	20	0	4	2	12	2	8	8	19	2	2	31	27	0	2	49	32	10	2	10	59	0	9	51	10	9	18	21	46	1	19	2	49	1	17	18	45	10	50	25	16	1	51
19	13	49	17	0	5	0	50	2	20	14	42	2	3	7	45	0	4	55	41	10	2	21	1	0	11	5	21	9	18	25	3	1	18	59	38	1	17	20	15	11	11	25	28	2	49
20	13	53	13	0	5	59	27	3	2	37	0	2	3	44	4	0	7	2	36	10	2	30	56	0	12	19	30	9	18	28	15	1	18	56	28	1	17	21	10	11	31	24	25	3	41
21	13	57	10	0	6	58	1	3	15	20	3	2	4	20	24	0	9	10	4	10	2	40	45	0	13	33	39	9	18	31	21	1	18	53	17	1	17	20	52	11	52	22	7	4	24
22	14	1	6	0	7	56	32	3	28	28	6	2	4	56	45	0	11	17	54	10	2	50	26	0	14	47	46	9	18	34	22	1	18	50	6	1	17	19	0	12	12	18	37	4	55
23	14	5	3	0	8	55	2	4	12	4	7	2	5	33	6	0	13	25	52	10	3	0	1	0	16	1	51	9	18	37	19	1	18	46	55	1	17	15	33	12	32	14	1	5	10
24	14	9	0	0	9	53	30	4	26	9	4	2	6	9	28	0	15	33	40	10	3	9	28	0	17	15	56	9	18	40	9	1	18	43	44	1	17	10	53	12	52	8	33	5	7
25	14	12	56	0	10	51	55	5	10	41	3	2	6	45	51	0	17	41	3	10	3	18	48	0	18	29	59	9	18	42	55	1	18	40	34	1	17	5	36	13	12	2	27	4	45
26	14	16	53	0	11	50	19	5	25	35	6	2	7	22	15	0	19	47	42	10	3	28	1	0	19	44	1	9	18	45	35	1	18	37	23	1	17	0	29	13	31	-3	57	4	4
27	14	20	49	0	12	48	40	6	10	43	20	2	7	58	40	0	21	53	18	10	3	37	7	0	20	58	2	9	18	48	9	1	18	34	12	1	16	56	13	13	50	-10	15	3	5
28	14	24	46	0	13	47	0	6	25	56	7	2	8	35	5	0	23	57	32	10	3	46	5	0	22	12	1	9	18	50	39	1	18	31	1	1	16	53	21	14	9	-15	58	1	52
29	14	28	42	0	14	45	18	7	11	3	31	2	9	11	31	0	26	0	7	10	3	54	56	0	23	26	0	9	18	53	2	1	18	27	51	1	16	52	3	14	28	-20	39	0	32
30	14	32	39	0	15	43	35	7	25	56	53	2	9	47	58	0	28	0	44	10	4	3	39	0	24	39	57	9	18	55	21	1	18	24	40	1	16	52	11	14	46	-23	54	-0	50

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 मई 2021 ई. को अयनांश 24° 9' 1"

ता.	साम्पातिक काल 0.0.h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्र शर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	14 36 35	0 16 41 50	8 10 29 55	2 10 24 26	0 29 59 6	10 4 12 14	0 25 53 53	9 18 57 33	1 18 21 29	1 16 53 18	15 5	-25 27	-2 6
2	14 40 32	0 17 40 3	8 24 39 4	2 11 0 55	1 1 54 58	10 4 20 41	0 27 7 49	9 18 59 40	1 18 18 18	1 16 54 45	15 23	-25 18	-3 13
3	14 44 29	0 18 38 15	9 8 23 23	2 11 37 24	1 3 48 6	10 4 29 1	0 28 21 43	9 19 1 42	1 18 15 8	1 16 55 54	15 41	-23 35	-4 6
4	14 48 25	0 19 36 25	9 21 43 49	2 12 13 54	1 5 38 16	10 4 37 13	0 29 35 36	9 19 3 38	1 18 11 57	1 16 56 11	15 58	-20 36	-4 44
5	14 52 22	0 20 34 34	10 4 42 39	2 12 50 25	1 7 25 19	10 4 45 16	1 0 49 26	9 19 5 28	1 18 8 46	1 16 55 19	16 15	-16 40	-5 7
6	14 56 18	0 21 32 41	10 17 22 50	2 13 26 57	1 9 9 4	10 4 53 11	1 2 3 20	9 19 7 13	1 18 5 35	1 16 53 15	16 32	-12 5	-5 14
7	15 0 15	0 22 30 47	10 29 47 31	2 14 3 30	1 10 49 23	10 5 0 58	1 3 17 10	9 19 8 51	1 18 2 25	1 16 50 12	16 49	-7 5	-5 6
8	15 4 11	0 23 28 52	11 11 59 46	2 14 40 4	1 12 26 10	10 5 8 36	1 4 30 59	9 19 10 24	1 17 59 14	1 16 46 32	17 5	-1 55	-4 44
9	15 8 8	0 24 26 55	11 24 2 25	2 15 16 39	1 13 59 17	10 5 16 5	1 5 44 48	9 19 11 52	1 17 56 3	1 16 42 44	17 22	3 16	-4 10
10	15 12 4	0 25 24 57	0 5 57 56	2 15 53 14	1 15 28 41	10 5 23 26	1 6 58 35	9 19 13 13	1 17 52 52	1 16 39 15	17 37	8 18	-3 26
11	15 16 1	0 26 22 57	0 17 48 35	2 16 29 51	1 16 54 17	10 5 30 38	1 8 12 21	9 19 14 29	1 17 49 41	1 16 36 28	17 53	13 0	-2 32
12	15 19 58	0 27 20 56	0 29 36 30	2 17 6 28	1 18 16 0	10 5 37 42	1 9 26 6	9 19 15 38	1 17 46 31	1 16 34 36	18 8	17 13	-1 32
13	15 23 54	0 28 18 53	1 11 23 49	2 17 43 6	1 19 33 47	10 5 44 36	1 10 39 51	9 19 16 42	1 17 43 20	1 16 33 46	18 23	20 46	-0 28
14	15 27 51	0 29 16 48	1 23 12 52	2 18 19 45	1 20 47 33	10 5 51 21	1 11 53 34	9 19 17 40	1 17 40 9	1 16 33 51	18 38	23 27	0 37
15	15 31 47	1 0 14 42	2 5 6 11	2 18 56 24	1 21 57 16	10 5 57 57	1 13 7 15	9 19 18 32	1 17 36 58	1 16 34 40	18 52	25 7	1 41
16	15 35 44	1 1 12 34	2 17 6 44	2 19 33 4	1 23 2 51	10 6 4 23	1 14 20 56	9 19 19 18	1 17 33 47	1 16 35 55	19 6	25 38	2 41
17	15 39 40	1 2 10 25	2 29 17 49	2 20 9 45	1 24 4 15	10 6 10 40	1 15 34 35	9 19 19 59	1 17 30 37	1 16 37 16	19 20	24 56	3 35
18	15 43 37	1 3 8 14	3 11 43 4	2 29 46 27	1 25 1 24	10 6 16 48	1 16 48 13	9 19 20 33	1 17 27 26	1 16 38 25	19 33	23 0	4 20
19	15 47 33	1 4 6 1	3 24 26 14	2 21 23 9	1 25 54 14	10 6 22 46	1 18 1 50	9 19 21 2	1 17 24 15	1 16 39 7	19 46	19 54	4 54
20	15 51 30	1 5 3 46	4 7 30 54	2 21 59 52	1 26 42 41	10 6 28 34	1 19 15 26	9 19 21 25	1 17 21 4	1 16 39 16	19 59	15 45	5 13
21	15 55 27	1 6 1 30	4 20 59 55	2 22 36 35	1 27 26 40	10 6 34 13	1 20 29 0	9 19 21 41	1 17 17 54	1 16 38 53	20 11	10 42	5 16
22	15 59 23	1 6 59 12	5 4 54 55	2 23 13 18	1 28 6 8	10 6 39 42	1 21 42 33	9 19 21 52	1 17 14 43	1 16 38 7	20 23	4 59	5 1
23	16 3 20	1 7 56 53	5 19 15 34	2 23 50 3	1 28 41 1	10 6 45 1	1 22 56 5	9 19 21 58	1 17 11 32	1 16 37 10	20 35	-1 11	4 27
24	16 7 16	1 8 54 32	6 3 59 4	2 24 26 47	1 29 11 17	10 6 50 10	1 24 9 35	9 19 21 57	1 17 8 21	1 16 36 16	20 46	-7 27	3 35
25	16 11 13	1 9 52 10	6 18 59 55	2 25 3 33	1 29 36 51	10 6 55 10	1 25 23 4	9 19 21 50	1 17 5 10	1 16 35 35	20 57	-13 27	2 27
26	16 15 9	1 10 49 46	7 4 10 13	2 25 40 18	1 29 57 42	10 6 59 59	1 26 36 32	9 19 21 38	1 17 2 0	1 16 35 14	21 8	-18 40	1 8
27	16 19 8	1 11 47 21	7 19 20 45	2 26 17 5	2 0 13 49	10 7 4 38	1 27 49 59	9 19 21 20	1 16 58 49	1 16 35 11	21 18	-22 40	-0 15
28	16 23 2	1 12 44 55	8 4 22 9	2 26 53 52	2 0 25 12	10 7 9 6	1 29 3 25	9 19 20 56	1 16 55 38	1 16 35 21	21 28	-25 3	-1 37
29	16 26 59	1 13 42 28	8 19 6 22	2 27 30 39	2 0 31 52	10 7 13 25	2 0 16 49	9 19 20 26	1 16 52 27	1 16 35 37	21 37	-25 37	-2 51
30	16 30 56	1 14 40 0	9 3 27 33	2 28 7 27	2 0 33 54	10 7 17 33	2 1 30 13	9 19 19 51	1 16 49 16	1 16 35 49	21 46	-24 26	-3 52
31	16 34 52	1 15 37 31	9 17 22 33	2 28 44 16	2 0 31 22	10 7 21 30	2 2 43 35	9 19 19 9	1 16 46 5	1 16 35 55	21 55	-21 46	-4 38

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 जून 2021 ई. को अयनांश 24° 9' 5"

तारीख	साम्पातिक काल 0.0.h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्र शर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	16 38 49	1 16 35 1	10 0 50 43	2 29 21 5	2 0 24 24	10 7 25 17	2 3 56 56	9 19 18 22	1 16 42 55	1 16 35 53	22 3	-17 59	-5 6
2	16 42 45	1 17 32 30	10 13 53 33	2 29 57 55	2 0 13 10	10 7 28 53	2 5 10 17	9 19 17 30	1 16 39 44	1 16 35 47	22 11	-13 27	-5 17
3	16 46 42	1 18 29 59	10 26 33 57	3 0 34 46	1 29 57 54	10 7 32 18	2 6 23 36	9 19 16 31	1 16 36 33	1 16 35 43	22 19	-8 28	-5 13
4	16 50 38	1 19 27 27	11 8 55 42	3 1 11 38	1 29 38 53	10 7 35 33	2 7 36 54	9 19 15 27	1 16 33 22	1 16 35 46	22 26	-3 16	-4 54
5	16 54 35	1 20 24 54	11 21 2 57	3 1 48 30	1 29 16 25	10 7 38 36	2 8 50 11	9 19 14 17	1 16 30 11	1 16 36 1	22 33	1 57	-4 22
6	16 58 31	1 21 22 21	0 2 59 48	3 2 25 23	1 28 50 53	10 7 41 29	2 10 3 28	9 19 13 1	1 16 27 1	1 16 36 27	22 39	7 2	-3 39
7	17 2 28	1 22 19 47	0 14 50 9	3 3 2 17	1 28 22 44	10 7 44 10	2 11 16 43	9 19 11 40	1 16 23 50	1 16 37 1	22 45	11 51	-2 48
8	17 6 25	1 23 17 12	0 26 37 26	3 3 39 12	1 27 52 26	10 7 46 40	2 12 29 57	9 19 10 14	1 16 20 39	1 16 37 37	22 51	16 12	-1 49
9	17 10 21	1 24 14 37	1 8 24 46	3 4 16 7	1 27 20 29	10 7 48 59	2 13 43 10	9 19 8 41	1 16 17 28	1 16 38 4	22 56	19 56	-0 46
10	17 14 18	1 25 12 0	1 20 14 49	3 4 53 3	1 26 47 27	10 7 51 7	2 14 56 23	9 19 7 4	1 16 14 17	1 16 38 13	23 1	22 51	0 20
11	17 18 14	1 26 9 23	2 2 9 58	3 5 30 0	1 26 13 53	10 7 53 3	2 16 9 34	9 19 5 20	1 16 11 7	1 16 37 56	23 5	24 48	1 25
12	17 22 11	1 27 6 46	2 14 12 18	3 6 6 58	1 25 40 21	10 7 54 48	2 17 22 43	9 19 3 32	1 16 7 56	1 16 37 9	23 9	25 37	2 27
13	17 26 7	1 28 4 7	2 26 23 46	3 6 43 57	1 25 7 25	10 7 56 21	2 18 35 52	9 19 1 38	1 16 4 45	1 16 35 52	23 13	25 13	3 23
14	17 30 4	1 29 1 27	3 8 46 17	3 7 20 56	1 24 35 40	10 7 57 43	2 19 48 59	9 18 59 39	1 16 1 34	1 16 34 14	23 16	23 34	4 10
15	17 34 0	1 29 58 47	3 21 21 51	3 7 57 56	1 24 5 37	10 7 58 54	2 21 2 5	9 18 57 34	1 15 58 23	1 16 32 28	23 18	20 44	4 46
16	17 37 57	2 0 56 6	4 4 12 30	3 8 34 56	1 23 37 47	10 7 59 53	2 22 15 10	9 18 55 25	1 15 55 12	1 16 30 50	23 21	16 52	5 9
17	17 41 54	2 1 53 24	4 17 20 18	3 9 11 57	1 23 12 39	10 8 0 40	2 23 28 13	9 18 53 10	1 15 52 2	1 16 29 38	23 23	12 7	5 16
18	17 45 50	2 2 50 41	5 0 47 1	3 9 48 59	1 22 50 37	10 8 1 16	2 24 41 15	9 18 50 50	1 15 48 51	1 16 29 4	23 24	6 42	5 7
19	17 49 47	2 3 47 57	5 14 33 55	3 10 26 1	1 22 32 4	10 8 1 41	2 25 54 15	9 18 48 25	1 15 45 40	1 16 29 12	23 25	0 49	4 39
20	17 53 43	2 4 45 12	5 28 41 16	3 11 3 4	1 22 17 19	10 8 1 53	2 27 7 13.	9 18 45 56	1 15 42 29	1 16 29 58	23 26	-5 15	3 55
21	17 57 40	2 5 42 27	6 13 7 52	3 11 40 7	1 22 6 40	10 8 1 55	2 28 20 11	9 18 43 22	1 15 39 18	1 16 31 4	23 26	-11 12	2 54
22	18 1 36	2 6 39 41	6 27 50 39	3 12 17 11	1 22 0 18	10 8 1 45	2 29 33 6	9 18 40 42	1 15 36 7	1 16 32 6	23 26	-16 38	1 41
23	18 5 33	2 7 36 54	7 12 44 32	3 12 54 16	1 21 58 25	10 8 1 23	3 0 46 1	9 18 37 59	1 15 32 57	1 16 32 39	23 26	-21 7	0 21
24	18 9 29	2 8 34 7	7 27 42 38	3 13 31 21	1 22 1 8	10 8 0 50	3 1 58 53	9 18 35 10	1 15 29 46	1 16 32 21	23 25	-24 12	-1 1
25	18 13 26	2 9 31 19	8 12 36 58	3 14 8 27	1 22 8 32	10 8 0 5	3 3 11 44	9 18 32 17	1 15 26 35	1 16 30 59	23 23	-25 34	-2 19
26	18 17 23	2 10 28 31	8 27 19 29	3 14 45 34	1 22 20 41	10 7 59 9	3 4 24 34	9 18 29 20	1 15 23 24	1 16 28 36	23 21	-25 7	-3 26
27	18 21 19	2 11 25 43	9 11 43 15	3 15 22 41	1 22 37 37	10 7 58 1	3 5 37 22	9 18 26 18	1 15 20 13	1 16 25 26	23 19	-22 59	-4 19
28	18 25 16	2 12 22 55	9 25 43 21	3 15 59 49	1 22 59 20	10 7 56 42	3 6 50 9	9 18 23 12	1 15 17 3	1 16 21 55	23 17	-19 30	-4 54
29	18 29 12	2 13 20 7	10 9 17 17	3 16 36 58	1 23 25 49	10 7 55 12	3 8 2 54	9 18 20 2	1 15 13 52	1 16 18 35	23 14	-15 5	-5 12
30	18 33 9	2 14 17 19	10 22 25 2	3 17 14 8	1 23 57 3	10 7 53 29	3 9 15 38	9 18 16 48	1 15 10 41	1 16 15 55	23 10	-10 5	-5 12

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 जुलाई 2021 ई. को अयनांश 24° 9' 27"

जुलाई	साम्पातिक काल 0.0.h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्र शर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क
1	18 37 5	2 15 14 30	11 5 8 38	3 17 51 18	1 24 32 59	10 7 51 36	3 10 28 20	9 18 13 29	1 15 7 30	1 16 14 16	23 6	-4 49	-4 57
2	18 41 2	2 16 11 42	11 17 31 37	3 18 28 30	1 25 13 35	10 7 49 31	3 11 41 1	9 18 10 7	1 15 4 19	1 16 13 47	23 2	0 30	-4 2
3	18 44 58	2 17 8 55	11 29 38 24	3 19 5 42	1 25 58 46	10 7 47 15	3 12 53 41	9 18 6 41	1 15 1 8	1 16 14 23	22 57	5 42	-3 48
4	18 48 55	2 18 6 7	0 11 33 51	3 19 42 56	1 26 48 30	10 7 44 47	3 14 6 19	9 18 3 11	1 14 57 58	1 16 15 46	22 52	10 37	-2 59
5	18 52 52	2 19 3 20	0 23 22 49	3 20 20 10	1 27 42 42	10 7 42 8	3 15 18 56	9 17 59 37	1 14 54 47	1 16 17 26	22 47	15 6	-2 2
6	18 56 48	2 20 0 33	1 5 9 55	3 20 57 25	1 28 41 21	10 7 39 18	3 16 31 31	9 17 56 0	1 14 51 36	1 16 18 50	22 41	19 1	-1 1
7	19 0 45	2 20 57 46	1 16 59 18	3 21 34 41	1 29 44 21	10 7 36 17	3 17 44 5	9 17 52 19	1 14 48 25	1 16 19 24	22 35	22 10	0 4
8	19 4 41	2 21 54 59	1 28 54 32	3 22 11 59	2 0 51 41	10 7 33 5	3 18 56 38	9 17 48 35	1 14 45 14	1 16 18 39	22 28	24 23	1 8
9	19 8 38	2 22 52 13	2 10 58 27	3 22 49 17	2 2 3 15	10 7 29 42	3 20 9 8	9 17 44 47	1 14 42 4	1 16 16 17	22 21	25 31	2 10
10	19 12 34	2 23 49 26	2 23 13 14	3 23 26 36	2 3 19 2	10 7 26 8	3 21 21 37	9 17 40 57	1 14 38 53	1 16 12 14	22 14	25 24	3 7
11	19 16 31	2 24 46 40	3 5 40 15	3 24 3 56	2 4 38 58	10 7 22 23	3 22 34 5	9 17 37 3	1 14 35 42	1 16 6 42	22 6	24 2	3 56
12	19 20 27	2 25 43 54	3 18 20 18	3 24 41 17	2 6 2 58	10 7 18 28	3 23 46 31	9 17 33 7	1 14 32 31	1 16 0 11	21 58	21 26	4 34
13	19 24 24	2 26 41 8	4 1 13 39	3 25 18 39	2 7 30 57	10 7 14 22	3 24 58 54	9 17 29 8	1 14 29 20	1 15 53 24	21 49	17 45	4 59
14	19 28 20	2 27 38 23	4 14 20 22	3 25 56 2	2 9 2 51	10 7 10 7	3 26 11 16	9 17 25 6	1 14 26 9	1 15 47 7	21 40	13 10	5 9
15	19 32 17	2 28 35 37	4 27 40 21	3 26 33 26	2 10 38 34	10 7 5 41	3 27 23 36	9 17 21 2	1 14 22 59	1 15 42 4	21 31	7 53	5 3
16	19 36 14	2 29 32 51	5 11 13 36	3 27 10 50	2 12 17 58	10 7 1 5	3 28 35 54	9 17 16 55	1 14 19 48	1 15 38 45	21 21	2 8	4 39
17	19 40 10	3 0 30 5	5 25 0 5	3 27 48 16	2 14 0 55	10 6 56 20	3 29 48 10	9 17 12 46	1 14 16 37	1 15 37 16	21 11	-3 48	4 0
18	19 44 7	3 1 27 20	6 8 59 38	3 28 25 42	2 15 47 17	10 6 51 24	4 1 0 24	9 17 8 35	1 14 13 26	1 15 37 22	21 1	-9 40	3 5
19	19 48 3	3 2 24 34	6 23 11 40	3 29 3 9	2 17 36 50	10 6 46 20	4 2 12 35	9 17 4 22	1 14 10 15	1 15 38 21	20 50	-15 7	1 58
20	19 52 0	3 3 21 49	7 7 34 43	3 29 40 37	2 19 29 24	10 6 41 6	4 3 24 45	9 17 0 7	1 14 7 5	1 15 39 18	20 39	-19 48	0 43
21	19 55 56	3 4 19 4	7 22 6 9	4 0 18 6	2 21 24 43	10 6 35 44	4 4 36 51	9 16 55 50	1 14 3 54	1 15 39 18	20 28	-23 18	-0 35
22	19 59 53	3 5 16 19	8 6 41 52	4 0 55 36	2 23 22 32	10 6 30 12	4 5 48 56	9 16 51 32	1 14 0 43	1 15 37 32	20 16	-25 17	-1 51
23	20 3 49	3 8 13 35	8 21 16 26	4 1 33 7	2 25 22 32	10 6 24 32	4 7 0 58	9 16 47 12	1 13 57 32	1 15 33 36	20 4	-25 31	-3 0
24	20 7 46	3 7 10 51	9 5 43 32	4 2 10 38	2 27 24 26	10 6 18 44	4 8 12 58	9 16 42 50	1 13 54 21	1 15 27 32	19 52	-24 1	-3 56
25	20 11 43	3 8 8 8	9 19 56 56	4 2 48 11	2 29 27 55	10 6 12 47	4 9 24 56	9 16 38 28	1 13 51 11	1 15 19 49	19 39	-21 1	-4 37
26	20 15 39	3 9 5 26	10 3 51 18	4 3 25 45	3 1 32 38	10 6 6 42	4 10 36 51	9 16 34 4	1 13 48 0	1 15 11 16	19 26	-16 51	-5 0
27	20 19 36	3 10 2 44	10 17 23 6	4 4 5 20	3 3 38 16	10 6 0 30	4 11 48 44	9 16 29 40	1 13 44 49	1 15 2 51	19 12	-11 57	-5 6
28	20 23 32	3 11 0 3	11 0 30 56	4 4 40 56	3 5 44 30	10 5 54 10	4 13 0 34	9 16 25 14	1 13 41 38	1 14 55 28	18 59	-6 38	-4 55
29	20 27 29	3 11 57 23	11 13 15 37	4 5 18 33	3 7 51 1	10 5 47 42	4 14 12 22	9 16 20 48	1 13 38 27	1 14 49 48	18 45	-1 11	-4 30
30	20 31 25	3 12 54 44	11 25 39 44	4 5 58 11	3 9 57 32	10 5 41 8	4 15 24 8	9 16 16 21	1 13 35 17	1 14 46 9	18 30	4 10	-3 52
31	20 35 22	3 13 52 6	0 7 47 15	4 6 33 50	3 12 3 48	10 5 34 27	4 16 35 51	9 16 11 54	1 13 32 6	1 14 44 27	18 16	9 15	-3 5

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 अगस्त 2021 ई. को अयनांश 24° 9' 16"

अगस्त	साम्पातिक काल 0.0.h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्र शर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	20 39 18	3 14 49 29	0 19 43 0	4 7 11 31	3 14 9 34	10 5 27 39	4 17 47 32	9 16 7 26	1 13 28 55	1 14 44 14	18 1	13 56	-2 10
2	20 43 15	3 15 46 53	1 1 32 17	4 7 49 13	3 16 14 39	10 5 20 45	4 18 59 11	9 16 2 58	1 13 25 44	1 14 44 47	17 45	18 3	-1 10
3	20 47 12	3 16 44 19	1 13 20 25	4 8 26 56	3 18 18 52	10 5 13 45	4 20 10 47	9 15 58 30	1 13 22 34	1 14 45 11	17 30	21 26	-0 8
4	20 51 8	3 17 41 45	1 25 12 29	4 9 4 40	3 20 22 3	10 5 6 39	4 21 22 21	9 15 54 2	1 13 19 23	1 14 44 33	17 14	23 56	0 56
5	20 55 5	3 18 39 13	2 7 13 1	4 9 42 26	3 22 24 5	10 4 59 27	4 22 33 52	9 15 49 34	1 13 16 12	1 14 42 6	16 58	25 23	1 57
6	20 59 1	3 19 36 42	2 19 25 43	4 10 20 13	3 24 24 53	10 4 52 11	4 23 45 21	9 15 45 7	1 13 13 1	1 14 37 19	16 42	25 38	2 54
7	21 2 58	3 20 34 12	3 1 53 16	4 10 58 2	3 26 24 22	10 4 44 50	4 24 56 47	9 15 40 40	1 13 9 50	1 14 30 5	16 25	24 36	3 44
8	21 6 54	3 21 31 43	3 14 37 8	4 11 35 51	3 28 22 27	10 4 37 24	4 26 8 11	9 15 36 13	1 13 6 40	1 14 20 40	16 8	22 18	4 23
9	21 10 51	3 22 29 15	3 27 37 33	4 12 13 42	4 0 19 7	10 4 29 54	4 27 19 32	9 15 31 48	1 13 3 29	1 14 9 46	15 51	18 49	4 50
10	21 14 47	3 23 26 48	4 10 53 31	4 12 51 35	4 2 14 20	10 4 22 21	4 28 30 50	9 15 27 23	1 13 0 18	1 13 58 25	15 33	14 20	5 2
11	21 18 44	3 24 24 23	4 24 23 7	4 13 29 28	4 4 8 3	10 4 14 43	4 29 42 5	9 15 23 0	1 12 57 7	1 13 47 45	15 16	9 5	4 57
12	21 22 41	3 25 21 58	5 8 3 58	4 14 7 23	4 6 0 17	10 4 7 3	5 0 53 17	9 15 18 37	1 12 53 57	1 13 38 49	14 58	3 20	4 36
13	21 26 37	3 26 19 34	5 21 53 39	4 14 45 19	4 7 51 1	10 3 59 20	5 2 4 26	9 15 14 16	1 12 50 46	1 13 32 21	14 40	-2 39	3 58
14	21 30 34	3 27 17 11	6 5 50 8	4 15 23 16	4 9 40 15	10 3 51 35	5 3 15 32	9 15 9 57	1 12 47 35	1 13 28 34	14 21	-8 34	3 5
15	21 34 30	3 28 14 49	6 19 51 57	4 16 1 14	4 11 28 0	10 3 43 48	5 4 26 34	9 15 5 39	1 12 44 24	1 13 27 6	14 3	-14 7	2 2
16	21 38 27	3 29 12 28	7 3 58 2	4 16 39 14	4 13 14 15	10 3 35 59	5 5 37 33	9 15 1 23	1 12 41 14	1 13 27 3	13 44	-18 56	0 50
17	21 42 23	4 0 10 8	7 18 7 30	4 17 17 15	4 14 59 2	10 3 28 8	5 6 48 29	9 14 57 9	1 12 38 3	1 13 27 11	13 25	-22 40	-0 25
18	21 46 20	4 1 7 49	8 2 19 8	4 17 55 17	4 16 42 22	10 3 20 17	5 7 59 21	9 14 52 56	1 12 34 52	1 13 26 13	13 6	-25 2	-1 38
19	21 50 16	4 2 5 31	8 16 31 2	4 18 33 20	4 18 24 15	10 3 12 25	5 9 10 9	9 14 48 46	1 12 31 41	1 13 23 3	12 46	-25 46	-2 46
20	21 54 13	4 3 3 14	9 0 40 22	4 19 11 25	4 20 4 42	10 3 4 33	5 10 20 54	9 14 44 39	1 12 28 30	1 13 17 7	12 26	-24 48	-3 42
21	21 58 10	4 4 0 58	9 14 43 24	4 19 49 31	4 21 43 44	10 2 56 40	5 11 31 35	9 14 40 33	1 12 25 20	1 13 8 23	12 7	-22 18	-4 25
22	22 2 6	4 4 58 44	9 28 35 51	4 20 27 38	4 23 21 21	10 2 48 48	5 12 42 12	9 14 36 30	1 12 22 9	1 12 57 26	11 46	-18 31	-4 51
23	22 6 3	4 5 56 31	10 12 13 37	4 21 5 47	4 24 57 35	10 2 40 57	5 13 52 46	9 14 32 30	1 12 18 58	1 12 45 16	11 26	-13 49	-5 1
24	22 9 59	4 6 54 19	10 25 33 25	4 21 43 57	4 26 32 25	10 2 33 7	5 15 3 15	9 14 28 32	1 12 15 47	1 12 33 5	11 6	-8 34	-4 53
25	22 13 56	4 7 52 9	11 8 33 27	4 22 22 8	4 28 5 52	10 2 25 18	5 16 13 40	9 14 24 37	1 12 12 37	1 12 22 4	10 45	-3 3	-4 30
26	22 17 52	4 8 50 1	11 21 13 34	4 23 0 21	4 29 37 56	10 2 17 31	5 17 24 2	9 14 20 45	1 12 9 26	1 12 13 7	10 24	2 27	-3 55
27	22 21 49	4 9 47 54	0 3 35 21	4 23 38 35	5 1 8 37	10 2 9 45	5 18 34 20	9 14 16 57	1 12 6 15	1 12 6 42	10 3	7 44	-3 8
28	22 25 45	4 10 45 49	0 15 41 50	4 24 16 51	5 2 37 54	10 2 2 3	5 19 44 33	9 14 13 11	1 12 3 4	1 12 2 49	9 42	12 38	-2 15
29	22 29 42	4 11 43 46	0 27 37 12	4 24 55 9	5 4 5 47	10 1 54 22	5 20 54 43	9 14 9 29	1 11 59 54	1 12 1 2	9 21	17 0	-1 15
30	22 33 39	4 12 41 44	1 9 26 26	4 25 33 28	5 5 32 16	10 1 46 45	5 22 4 49	9 14 5 50	1 11 56 43	1 12 0 32	9 0	20 39	-0 14
31	22 37 35	4 13 39 45	1 21 14 56	4 26 11 49	5 6 57 19	10 1 39 12	5 23 14 50	9 14 2 14	1 11 53 32	1 12 0 19	8 38	23 27	0 49

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं 30 मि., भा.स्टैं.टा.),1 सितंबर 2021 ई. को अयनांश 24° 9' 20"

सितंबर	साम्पातिक काल 0.0.h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्र शर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	22 41 32	4 14 37 47	2 3 8 15	4 26 50 11	5 8 20 55	10 1 31 41	5 24 24 48	9 13 58 42	1 11 50 21	1 11 59 19	8 17	25 14	1 50
2	22 45 28	4 15 35 51	2 15 11 39	4 27 28 35	5 9 43 3	10 1 24 15	5 25 34 41	9 13 55 14	1 11 47 11	1 11 56 37	7 55	25 52	2 46
3	22 49 25	4 16 33 57	2 27 29 46	4 28 7 1	5 11 3 40	10 1 16 54	5 26 44 30	9 13 51 50	1 11 44 0	1 11 51 34	7 33	25 15	3 36
4	22 53 21	4 17 32 5	3 10 6 14	4 28 45 28	5 12 22 43	10 1 9 37	5 27 54 15	9 13 48 30	1 11 40 49	1 11 43 55	7 11	23 21	4 17
5	22 57 18	4 18 30 15	3 23 3 16	4 29 23 57	5 13 40 11	10 1 2 25	5 29 3 55	9 13 45 13	1 11 37 39	1 11 33 56	6 48	20 12	4 45
6	23 1 14	4 19 28 27	4 6 21 24	5 0 2 28	5 14 56 1	10 0 55 18	6 0 13 31	9 13 42 1	1 11 34 28	1 11 22 18	6 26	15 57	5 0
7	23 5 11	4 20 26 41	4 19 59 14	5 0 41 1	5 16 10 7	10 0 48 17	6 1 23 2	9 13 38 53	1 11 31 17	1 11 10 5	6 4	10 48	4 57
8	23 9 8	4 21 24 56	5 3 53 38	5 1 19 35	5 17 22 27	10 0 41 23	6 2 32 29	9 13 35 50	1 11 28 6	1 10 58 31	5 41	5 1	4 37
9	23 13 4	4 22 23 13	5 18 0 13	5 1 58 10	5 18 32 55	10 0 34 34	6 3 41 50	9 13 32 51	1 11 24 56	1 10 48 42	5 19	-1 7	4 0
10	23 17 1	4 23 21 31	6 2 14 2	5 2 36 47	5 19 41 26	10 0 27 52	6 4 51 6	9 13 29 56	1 11 21 45	1 10 41 28	4 56	-7 15	3 8
11	23 20 57	4 24 19 52	6 16 30 32	5 3 15 26	5 20 47 54	10 0 21 18	6 6 0 18	9 13 27 6	1 11 18 34	1 10 37 5	4 33	-13 4	2 4
12	23 24 54	4 25 18 13	7 0 45 59	5 3 54 7	5 21 52 10	10 0 14 50	6 7 9 23	9 13 24 21	1 11 15 23	1 10 35 13	4 10	-18 9	0 52
13	23 28 50	4 26 16 37	7 14 57 53	5 4 32 49	5 22 54 8	10 0 8 30	6 8 18 23	9 13 21 41	1 11 12 13	1 10 35 0	3 47	-22 12	-0 23
14	23 32 47	4 27 15 2	7 29 4 44	5 5 11 32	5 23 53 37	10 0 2 17	6 9 27 18	9 13 19 6	1 11 9 2	1 10 35 13	3 24	-24 52	-1 36
15	23 36 43	4 28 13 28	8 13 5 39	5 5 50 18	5 24 50 29	9 29 56 13	6 10 36 6	9 13 16 35	1 11 5 51	1 10 34 33	3 1	-25 58	-2 43
16	23 40 40	4 29 11 56	8 26 59 58	5 6 29 4	5 25 44 33	9 29 50 17	6 11 44 48	9 13 14 10	1 11 2 40	1 10 31 54	2 38	-25 24	-3 40
17	23 44 37	5 0 10 26	9 10 46 46	5 7 7 53	5 26 35 35	9 29 44 29	6 12 53 24	9 13 11 49	1 10 59 30	1 10 26 39	2 15	-23 17	-4 23
18	23 48 33	5 1 8 57	9 24 24 44	5 7 46 43	5 27 23 22	9 29 38 50	6 14 1 54	9 13 9 34	1 10 56 19	1 10 18 43	1 52	-19 52	-4 51
19	23 52 30	5 2 7 30	10 7 52 7	5 8 25 35	5 28 7 40	9 29 33 20	6 15 10 17	9 13 7 24	1 10 53 8	1 10 8 36	1 29	-15 27	-5 2
20	23 56 26	5 3 6 5	10 21 6 58	5 9 4 28	5 28 48 12	9 29 27 59	6 16 18 33	9 13 5 19	1 10 49 58	1 9 57 15	1 5	-10 22	-4 57
21	0 0 23	5 4 4 42	11 4 7 33	5 9 43 23	5 29 24 41	9 29 22 43	6 17 26 42	9 13 3 20	1 10 46 47	1 9 45 46	0 42	-4 54	-4 36
22	0 4 19	5 5 3 20	11 16 52 42	5 10 22 20	5 29 56 47	9 29 17 46	6 18 34 44	9 13 1 26	1 10 43 36	1 9 35 20	0 19	0 40	-4 2
23	0 8 16	5 6 2 1	11 29 22 17	5 11 1 19	6 0 24 10	9 29 12 53	6 19 42 39	9 12 59 37	1 10 40 25	1 9 26 48	-0 5	6 6	-3 16
24	0 12 12	5 7 0 43	0 11 37 14	5 11 40 19	6 0 46 27	9 29 8 11	6 20 50 27	9 12 57 54	1 10 37 15	1 9 20 42	-0 28	11 13	-2 22
25	0 16 9	5 7 59 28	0 23 39 42	5 12 19 22	6 1 3 16	9 29 3 38	6 21 58 7	9 12 56 16	1 10 34 4	1 9 17 7	-0 51	15 49	-1 23
26	0 20 6	5 8 58 15	1 5 32 56	5 12 58 26	6 1 14 14	9 28 59 16	6 23 5 39	9 12 54 44	1 10 30 53	1 9 15 44	-1 15	19 46	-0 20
27	0 24 2	5 9 57 4	1 17 21 1	5 13 37 32	6 1 18 55	9 28 55 3	6 24 13 4	9 12 53 18	1 10 27 42	1 9 15 53	-1 38	22 53	0 43
28	0 27 59	5 10 55 55	1 29 8 47	5 14 16 41	6 1 16 58	9 28 51 2	6 25 20 22	9 12 51 57	1 10 24 32	1 9 16 41	-2 1	25 1	1 45
29	0 31 55	5 11 54 49	2 11 1 29	5 14 55 51	6 1 8 0	9 28 47 11	6 26 27 31	9 12 50 42	1 10 21 21	1 9 17 11	-2 25	26 2	2 42
30	0 35 52	5 12 53 45	2 23 4 31	5 15 35 3	6 0 51 43	9 28 43 31	6 27 34 31	9 12 49 32	1 10 18 10	1 9 16 32	-2 48	25 51	3 33

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 अक्तूबर 2021 ई. को अयनांश 24° 9' 23"

अक्टूबर	साम्पातिक काल 0.0.h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्र शर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	0 39 48	5 13 52 43	3 5 23 3	5 16 14 17	6 0 27 54	9 28 40 1	6 28 41 24	9 12 48 29	1 10 14 59	1 9 14 7	-3 11	24 24	4 15
2	0 43 45	5 14 51 43	3 18 1 38	5 16 53 33	5 29 56 25	9 28 36 43	6 29 48 8	9 12 47 31	1 10 11 49	1 9 9 38	-3 34	21 43	4 46
3	0 47 41	5 15 50 46	4 1 3 39	5 17 32 52	5 29 17 18	9 28 33 36	7 0 54 43	9 12 46 39	1 10 8 38	1 9 3 12	-3 58	17 53	5 4
4	0 51 38	5 16 49 51	4 14 30 43	5 18 12 12	5 28 30 49	9 28 30 41	7 2 1 9	9 12 45 53	1 10 5 27	1 8 55 20	-4 21	13 2	5 5
5	0 55 35	5 17 48 58	4 28 22 21	5 18 51 34	5 27 37 25	9 28 27 57	7 3 7 26	9 12 45 13	1 10 2 16	1 8 46 50	-4 44	7 23	4 49
6	0 59 31	5 18 48 8	5 12 35 33	5 19 30 58	5 26 37 52	9 28 25 24	7 4 13 33	9 12 44 39	1 9 59 6	1 8 38 40	-5 7	1 14	4 15
7	1 3 28	5 19 47 19	5 27 5 10	5 20 10 24	5 25 33 12	9 28 23 4	7 5 19 30	9 12 44 11	1 9 55 55	1 8 31 47	-5 30	-5 8	3 24
8	1 7 24	5 20 46 32	6 11 44 33	5 20 49 52	5 24 24 47	9 28 20 55	7 6 25 17	9 12 43 49	1 9 52 44	1 8 26 49	-5 53	-11 18	2 19
9	1 11 21	5 21 45 48	6 26 26 32	5 21 29 22	5 23 14 13	9 28 18 57	7 7 30 53	9 12 43 33	1 9 49 34	1 8 24 4	-6 16	-16 52	1 4
10	1 15 17	5 22 45 5	7 11 4 38	5 22 8 54	5 22 3 19	9 28 17 12	7 8 36 18	9 12 43 23	1 9 46 23	1 8 23 19	-6 39	-21 25	-0 15
11	1 19 14	5 23 44 24	7 25 33 43	5 22 48 28	5 20 54 3	9 28 15 39	7 9 41 31	9 12 43 19	1 9 43 12	1 8 23 58	-7 1	-24 34	-1 32
12	1 23 10	5 24 43 44	8 9 50 24	5 23 28 4	5 19 48 24	9 28 14 18	7 10 46 32	9 12 43 21	1 9 40 1	1 8 25 8	-7 24	-26 5	-2 42
13	1 27 7	5 25 43 7	8 23 52 55	5 24 7 42	5 18 48 15	9 28 13 8	7 11 51 21	9 12 43 29	1 9 36 51	1 8 25 52	-7 46	-25 53	-3 42
14	1 31 4	5 26 42 31	9 7 40 43	5 24 47 21	5 17 55 22	9 28 12 11	7 12 55 57	9 12 43 44	1 9 33 40	1 8 25 21	-8 9	-24 5	-4 27
15	1 35 0	5 27 41 57	9 21 13 54	5 25 27 3	5 17 11 11	9 28 11 26	7 14 0 20	9 12 44 4	1 9 30 29	1 8 23 6	-8 31	-20 56	-4 57
16	1 38 57	5 28 41 25	10 4 32 58	5 26 6 46	5 16 36 50	9 28 10 53	7 15 4 29	9 12 44 31	1 9 27 18	1 8 19 1	-8 53	-16 45	-5 10
17	1 42 53	5 29 40 55	10 17 38 24	5 26 46 31	5 16 13 6	9 28 10 32	7 16 8 23	9 12 45 3	1 9 24 8	1 8 13 25	-9 15	-11 51	-5 6
18	1 46 50	6 0 40 26	11 0 30 42	5 27 26 19	5 16 0 25	9 28 10 23	7 17 12 3	9 12 45 42	1 9 20 57	1 8 6 55	-9 37	-6 31	-4 47
19	1 50 46	6 1 39 59	11 13 10 14	5 28 6 8	5 15 58 54	9 28 10 27	7 18 15 27	9 12 46 26	1 9 17 46	1 8 0 16	-9 59	-0 59	-4 14
20	1 54 43	6 2 39 34	11 25 37 30	5 28 45 59	5 16 8 21	9 28 10 42	7 19 18 35	9 12 47 17	1 9 14 35	1 7 54 14	-10 20	4 30	-3 30
21	1 58 39	6 3 39 11	0 7 53 12	5 29 25 53	5 16 28 22	9 28 11 9	7 20 21 27	9 12 48 14	1 9 11 25	1 7 49 25	-10 42	9 44	-2 36
22	2 2 36	6 4 38 50	0 19 58 27	6 0 5 48	5 16 58 20	9 28 11 49	7 21 24 3	9 12 49 16	1 9 8 14	1 7 46 13	-11 3	14 33	-1 36
23	2 6 33	6 5 38 31	1 1 54 57	6 0 45 46	5 17 37 33	9 28 12 40	7 22 26 20	9 12 50 25	1 9 5 3	1 7 44 42	-11 24	18 45	-0 32
24	2 10 29	6 6 38 14	1 13 45 6	6 1 25 46	5 18 25 11	9 28 13 44	7 23 28 20	9 12 51 40	1 9 1 52	1 7 44 43	-11 45	22 10	0 33
25	2 14 28	6 7 38 0	1 25 31 59	6 2 5 48	5 19 20 25	9 28 14 59	7 24 30 1	9 12 53 0	1 8 58 42	1 7 45 51	-12 5	24 38	1 36
26	2 18 22	6 8 37 47	2 7 19 20	6 2 45 52	5 20 22 24	9 28 16 27	7 25 31 23	9 12 54 27	1 8 55 31	1 7 47 36	-12 26	26 1	2 35
27	2 22 19	6 9 37 37	2 19 11 27	6 3 25 59	5 21 30 19	9 28 18 6	7 26 32 26	9 12 56 0	1 8 52 20	1 7 49 23	-12 47	26 13	3 28
28	2 26 15	6 10 37 29	3 1 13 3	6 4 6 7	5 22 43 24	9 28 19 57	7 27 33 8	9 12 57 38	1 8 49 9	1 7 50 39	-13 7	25 12	4 13
29	2 30 12	6 11 37 23	3 13 29 2	6 4 46 18	5 24 0 56	9 28 22 0	7 28 33 29	9 12 59 23	1 8 45 58	1 7 51 1	-13 27	22 59	4 47
30	2 34 8	6 12 37 19	3 26 4 10	6 5 26 32	5 25 22 15	9 28 24 15	7 29 33 28	9 13 1 13	1 8 42 48	1 7 50 18	-13 47	19 37	5 8
31	2 38 5	6 13 37 18	4 9 2 36	6 6 6 47	5 26 46 47	9 28 26 42	8 0 33 5	9 13 3 9	1 8 39 37	1 7 48 29	-14 6	15 13	5 15

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 नवंबर 2021 ई. को अयनांश 24° 9' 27"

नवंबर	साम्पातिक काल 0.0.h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्र शर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	2 42 2	6 14 37 18	4 22 27 20	6 6 47 5	5 28 13 59	9 28 29 20	8 1 32 18	9 13 5 11	1 8 36 26	1 7 45 51	-14 26	9 58	5 5
2	2 45 58	6 15 37 21	5 6 19 31	6 7 27 25	5 29 43 25	9 28 32 11	8 2 31 8	9 13 7 19	1 8 33 15	1 7 42 47	-14 45	4 2	4 37
3	2 49 55	6 16 37 26	5 20 37 50	6 8 7 47	6 1 14 41	9 28 35 13	8 3 29 32	9 13 9 33	1 8 30 5	1 7 39 47	-15 3	-2 16	3 51
4	2 53 51	6 17 37 32	6 5 18 19	6 8 48 12	6 2 47 25	9 28 38 26	8 4 27 30	9 13 11 52	1 8 26 54	1 7 37 18	-15 22	-8 39	2 49
5	2 57 48	6 18 37 41	6 20 14 26	6 9 28 38	6 4 21 20	9 28 41 51	8 5 25 1	9 13 14 18	1 8 23 43	1 7 35 40	-15 40	-14 39	1 34
6	3 1 44	6 19 37 51	7 5 17 52	6 10 9 7	6 5 56 11	9 28 45 28	8 6 22 4	9 13 16 49	1 8 20 32	1 7 35 0	-15 59	-19 50	0 13
7	3 5 41	6 20 38 4	7 20 19 44	6 10 49 38	6 7 31 44	9 28 49 16	8 7 18 37	9 13 19 26	1 8 17 21	1 7 35 12	-16 16	-23 42	-1 10
8	3 9 37	6 21 38 17	8 5 11 52	6 11 30 12	6 9 7 50	9 28 53 16	8 8 14 40	9 13 22 8	1 8 14 11	1 7 36 2	-16 34	-25 53	-2 27
9	3 13 34	6 22 38 33	8 19 47 50	6 12 10 47	6 10 44 18	9 28 57 26	8 9 10 11	9 13 24 56	1 8 11 0	1 7 37 7	-16 51	-26 14	-3 33
10	3 17 31	6 23 38 50	9 4 3 31	6 12 51 24	6 12 21 1	9 29 1 48	8 10 5 8	9 13 27 50	1 8 7 49	1 7 38 4	-17 8	-24 50	-4 24
11	3 21 27	6 24 39 8	9 17 57 4	6 13 32 4	6 13 57 53	9 29 6 21	8 10 59 31	9 13 30 49	1 8 4 38	1 7 38 38	-17 25	-21 56	-4 59
12	3 25 24	6 25 39 28	10 1 28 32	6 14 12 46	6 15 34 50	9 29 11 5	8 11 53 17	9 13 33 53	1 8 1 28	1 7 38 38	-17 41	-17 55	-5 15
13	3 29 20	6 26 39 49	10 14 39 15	6 14 53 29	6 17 11 46	9 29 16 0	8 12 46 25	9 13 37 3	1 7 58 17	1 7 38 5	-17 58	-13 7	-5 15
14	3 33 17	6 27 40 12	10 27 31 22	6 15 34 15	6 18 48 38	9 29 21 6	8 13 38 54	9 13 40 19	1 7 55 6	1 7 37 7	-18 13	-7 52	-4 58
15	3 37 13	6 28 40 36	11 10 7 23	6 16 15 4	6 20 25 25	9 29 26 22	8 14 30 42	9 13 43 40	1 7 51 55	1 7 35 55	-18 29	-2 24	-4 28
16	3 41 10	6 29 41 1	11 22 29 52	6 16 55 54	6 22 2 4	9 29 31 49	8 15 21 47	9 13 47 5	1 7 48 44	1 7 34 45	-18 44	3 5	-3 45
17	3 45 6	7 0 41 28	0 4 41 15	6 17 36 46	6 23 38 33	9 29 37 26	8 16 12 7	9 13 50 37	1 7 45 34	1 7 33 45	-18 59	8 22	-2 53
18	3 49 3	7 1 41 56	0 16 43 45	6 18 17 41	6 25 14 51	9 29 43 14	8 17 1 41	9 13 54 13	1 7 42 23	1 7 33 4	-19 13	13 18	-1 53
19	3 53 0	7 2 42 25	0 28 39 26	6 18 58 38	6 26 50 58	9 29 49 12	8 17 50 26	9 13 57 55	1 7 39 12	1 7 32 44	-19 27	17 41	-0 49
20	3 56 56	7 3 42 56	1 10 30 18	6 19 39 37	6 28 26 54	9 29 55 20	8 18 38 21	9 14 1 41	1 7 36 1	1 7 32 40	-19 41	21 20	0 17
21	4 0 53	7 4 43 29	1 22 18 24	6 20 20 39	7 0 2 38	10 0 1 38	8 19 25 23	9 14 5 33	1 7 32 50	1 7 32 47	-19 55	24 6	1 21
22	4 4 49	7 5 44 3	2 4 6 1	6 21 1 43	7 1 38 10	10 0 8 6	8 20 11 31	9 14 9 29	1 7 29 40	1 7 32 57	-20 8	25 48	2 22
23	4 8 46	7 6 44 39	2 15 55 43	6 21 42 49	7 3 13 32	10 0 14 44	8 20 56 43	9 14 13 31	1 7 26 29	1 7 33 4	-20 20	26 20	3 18
24	4 12 42	7 7 45 16	2 27 50 29	6 22 23 58	7 4 48 42	10 0 21 31	8 21 40 56	9 14 17 37	1 7 23 18	1 7 33 4	-20 33	25 40	4 5
25	4 16 39	7 8 45 55	3 9 53 43	6 23 5 9	7 6 23 42	10 0 28 29	8 22 24 7	9 14 21 48	1 7 20 7	1 7 32 56	-20 45	23 48	4 42
26	4 20 35	7 9 46 36	3 22 9 13	6 23 46 23	7 7 58 33	10 0 35 36	8 23 6 15	9 14 26 5	1 7 16 56	1 7 32 44	-20 56	20 49	5 7
27	4 24 32	7 10 47 18	4 4 40 57	6 24 27 39	7 9 33 15	10 0 42 52	8 23 47 16	9 14 30 25	1 7 13 46	1 7 32 33	-21 7	16 50	5 18
28	4 28 29	7 11 48 2	4 17 32 54	6 25 8 57	7 11 7 50	10 0 50 18	8 24 27 9	9 14 34 51	1 7 10 35	1 7 32 33	-21 18	12 0	5 13
29	4 32 25	7 12 48 48	5 0 48 33	6 25 50 18	7 12 42 17	10 0 57 53	8 25 5 50	9 14 39 21	1 7 7 24	1 7 32 46	-21 28	6 28	4 52
30	4 36 22	7 13 49 35	5 14 30 24	6 26 31 41	7 14 16 38	10 1 5 37	8 25 43 17	9 14 43 56	1 7 4 13	1 7 33 16	-21 38	0 28	4 14

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 दिसंबर 2021 ई. को अयनांश 24° 9' 32"

दिसंबर	साम्पातिक काल 0.0.h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्र शर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	4 40 18	7 14 50 23	5 28 39 15	6 27 13 7	7 15 50 54	10 1 13 31	8 26 19 26	9 14 48 35	1 7 1 2	1 7 33 57	-21 48	-5 46	3 20
2	4 44 15	7 15 51 13	6 13 13 35	6 27 54 35	7 17 25 5	10 1 21 33	8 26 54 14	9 14 53 19	1 6 57 52	1 7 34 40	-21 57	-11 54	2 11
3	4 48 11	7 16 52 4	6 28 9 4	6 28 36 5	7 18 59 13	10 1 29 45	8 27 27 39	9 14 58 7	1 6 54 41	1 7 35 12	-22 6	-17 30	0 52
4	4 52 8	7 17 52 57	7 13 18 39	6 29 17 37	7 20 33 18	10 1 38 5	8 27 59 35	9 15 2 59	1 6 51 30	1 7 35 19	-22 14	-22 5	-0 32
5	4 56 4	7 18 53 50	7 28 33 10	6 29 59 12	7 22 7 22	10 1 46 34	8 28 30 1	9 15 7 56	1 6 48 19	1 7 34 51	-22 22	-25 8	-1 54
6	5 0 1	7 19 54 45	8 13 42 40	7 0 40 50	7 23 41 24	10 1 55 11	8 28 58 51	9 15 12 57	1 6 45 8	1 7 33 47	-22 29	-26 19	-3 7
7	5 3 58	7 20 55 40	8 28 37 49	7 1 22 29	7 25 15 27	10 2 3 57	8 29 26 3	9 15 18 3	1 6 41 57	1 7 32 14	-22 36	-25 34	-4 7
8	5 7 54	7 21 56 37	9 13 11 22	7 2 4 11	7 26 49 30	10 2 12 51	8 29 51 32	9 15 23 12	1 6 38 47	1 7 30 28	-22 43	-23 5	-4 49
9	5 11 51	7 22 57 34	9 27 18 52	7 2 45 55	7 28 23 34	10 2 21 54	9 0 15 14	9 15 28 25	1 6 35 36	1 7 28 48	-22 49	-19 15	-5 12
10	5 15 47	7 23 58 32	10 10 58 46	7 3 27 41	7 29 57 41	10 2 31 4	9 0 37 5	9 15 33 43	1 6 32 25	1 7 27 36	-22 54	-14 31	-5 16
11	5 19 44	7 24 59 30	10 24 12 2	7 4 9 29	8 1 31 49	10 2 40 23	9 0 57 1	9 15 39 4	1 6 29 14	1 7 27 8	-23 0	-9 15	-5 3
12	5 23 40	7 26 0 29	11 7 1 23	7 4 51 20	8 3 6 0	10 2 49 49	9 1 14 58	9 15 44 29	1 6 26 3	1 7 27 29	-23 4	-3 45	-4 36
13	5 27 37	7 27 1 29	11 19 30 33	7 5 33 12	8 4 40 14	10 2 59 23	9 1 30 52	9 15 49 58	1 6 22 53	1 7 28 37	-23 9	1 47	-3 55
14	5 31 33	7 28 2 29	0 1 43 44	7 6 15 7	8 6 14 31	10 3 9 5	9 1 44 38	9 15 55 30	1 6 19 42	1 7 30 14	-23 12	7 7	-3 5
15	5 35 30	7 29 3 29	0 13 45 7	7 6 57 5	8 7 48 51	10 3 18 54	9 1 56 14	9 16 1 6	1 6 16 31	1 7 31 58	-23 16	12 8	-2 8
16	5 39 27	8 0 4 31	0 25 38 36	7 7 39 4	8 9 23 13	10 3 28 51	9 2 5 34	9 16 6 46	1 6 13 20	1 7 33 19	-23 19	16 38	-1 5
17	5 43 23	8 1 5 32	1 7 27 37	7 8 21 6	8 10 57 36	10 3 38 54	9 2 12 37	9 16 12 29	1 6 10 9	1 7 33 51	-23 21	20 29	-0 1
18	5 47 20	8 2 6 34	1 19 15 9	7 9 3 10	8 12 32 0	10 3 49 5	9 2 17 18	9 16 18 16	1 6 6 58	1 7 33 12	-23 23	23 28	1 4
19	5 51 16	8 3 7 37	2 1 3 38	7 9 45 17	8 14 6 24	10 3 59 23	9 2 19 36	9 16 24 6	1 6 3 48	1 7 31 10	-23 25	25 27	2 6
20	5 55 13	8 4 8 41	2 12 55 8	7 10 27 25	8 15 40 45	10 4 9 48	9 2 19 26	9 16 29 59	1 6 0 37	1 7 27 44	-23 26	26 17	3 2
21	5 59 9	8 5 9 44	2 24 51 28	7 11 9 37	8 17 15 1	10 4 20 19	9 2 16 49	9 16 35 55	1 5 57 26	1 7 23 9	-23 26	25 54	3 51
22	6 3 6	8 6 10 49	3 6 54 24	7 11 51 50	8 18 49 10	10 4 30 58	9 2 11 42	9 16 41 55	1 5 54 15	1 7 17 49	-23 26	24 19	4 30
23	6 7 2	8 7 11 54	3 19 5 48	7 12 34 6	8 20 23 7	10 4 41 43	9 2 4 5	9 16 47 58	1 5 51 4	1 7 12 20	-23 26	21 35	4 57
24	6 10 59	8 8 13 0	4 1 27 47	7 13 16 25	8 21 56 49	10 4 52 34	9 1 53 58	9 16 54 4	1 5 47 53	1 7 7 21	-23 25	17 51	5 11
25	6 14 56	8 9 14 7	4 14 2 47	7 13 58 46	8 23 30 9	10 5 3 32	9 1 41 22	9 17 0 13	1 5 44 43	1 7 3 26	-23 24	13 17	5 10
26	6 18 52	8 10 15 14	4 26 53 30	7 14 41 9	8 25 3 2	10 5 14 37	9 1 26 18	9 17 6 24	1 5 41 32	1 7 1 1	-23 22	8 3	4 54
27	6 22 49	8 11 16 22	5 10 2 45	7 15 23 35	8 26 35 19	10 5 25 47	9 1 8 50	9 17 12 39	1 5 38 21	1 7 0 11	-23 20	2 20	4 22
28	6 26 45	8 12 17 30	5 23 33 7	7 16 6 3	8 28 6 52	10 5 37 4	9 0 49 1	9 17 18 56	1 5 35 10	1 7 0 44	-23 17	-3 38	3 35
29	6 30 42	8 13 18 39	6 7 26 30	7 16 48 34	8 29 37 29	10 5 48 27	9 0 26 55	9 17 25 16	1 5 31 59	1 7 2 6	-23 14	-9 37	2 35
30	6 34 38	8 14 19 49	6 21 43 28	7 17 31 7	9 1 6 57	10 5 59 55	9 0 2 39	9 17 31 39	1 5 28 49	1 7 3 31	-23 10	-15 16	1 23
31	6 38 35	8 15 20 58	7 6 22 28	7 18 13 43	9 2 35 2	10 6 11 30	8 29 36 20	9 17 38 5	1 5 25 38	1 7 4 8	-23 6	-20 12	0 4

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 जनवरी 2022 ई. को अयनांश 24° 9' 37"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0.h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्र शर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	6 42 31	8 16 22 9	7 21 19 21	7 18 56 20	9 4 1 24	10 6 23 10	8 29 8 4	9 17 44 33	1 5 22 27	1 7 3 13	-23 1	-23 55	-1 17
2	6 46 28	8 17 23 19	8 6 27 7	7 19 39 0	9 5 25 44	10 6 34 56	8 28 38 3	9 17 51 3	1 5 19 16	1 7 0 22	-22 56	-25 59	-2 33
3	6 50 25	8 18 24 29	8 21 36 38	7 20 21 43	9 6 47 38	10 6 46 48	8 28 6 25	9 17 57 36	1 5 16 5	1 6 55 35	-22 51	-26 7	-3 38
4	6 54 21	8 19 25 40	9 6 37 54	7 21 4 27	9 8 6 36	10 6 58 45	8 27 33 23	9 18 4 11	1 5 12 54	1 6 49 16	-22 45	-24 20	-4 28
5	6 58 18	8 20 26 50	9 21 21 39	7 21 47 14	9 9 22 9	10 7 10 47	8 26 59 8	9 18 10 49	1 5 9 44	1 6 42 12	-22 38	-20 55	-4 58
6	7 2 14	8 21 28 1	10 5 40 51	7 22 30 3	9 10 33 41	10 7 22 55	8 26 23 54	9 18 17 28	1 5 6 33	1 6 35 17	-22 31	-16 21	-5 9
7	7 6 11	8 22 29 11	10 19 31 36	7 23 12 54	9 11 40 31	10 7 35 7	8 25 47 56	9 18 24 10	1 5 3 22	1 6 29 25	-22 24	-11 3	-5 1
8	7 10 7	8 23 30 20	11 2 53 7	7 23 55 47	9 12 41 56	10 7 47 25	8 25 11 27	9 18 30 53	1 5 0 11	1 6 25 13	-22 16	-5 25	-4 37
9	7 14 4	8 24 31 30	11 15 47 18	7 24 38 43	9 13 37 8	10 7 59 47	8 24 34 42	9 18 37 39	1 4 57 0	1 6 23 0	-22 8	0 16	-3 59
10	7 18 0	8 25 32 39	11 28 17 55	7 25 21 40	9 14 25 15	10 8 12 15	8 23 57 58	9 18 44 26	1 4 53 49	1 6 22 35	-21 59	5 47	-3 11
11	7 21 57	8 26 33 47	0 10 29 48	7 26 4 40	9 15 5 25	10 8 24 47	8 23 21 29	9 18 51 16	1 4 50 39	1 6 23 27	-21 50	10 57	-2 15
12	7 25 54	8 27 34 55	0 22 28 9	7 26 47 42	9 15 36 42	10 8 37 23	8 22 45 31	9 18 58 6	1 4 47 28	1 6 24 46	-21 41	15 37	-1 15
13	7 29 50	8 28 36 2	1 4 18 10	7 27 30 46	9 15 58 15	10 8 50 4	8 22 10 19	9 19 4 59	1 4 44 17	1 6 25 36	-21 31	19 38	-0 11
14	7 33 47	8 29 37 8	1 16 4 38	7 28 13 52	9 16 9 15	10 9 2 49	8 21 36 7	9 19 11 53	1 4 41 6	1 6 25 2	-21 21	22 50	0 52
15	7 37 43	9 0 38 14	1 27 51 45	7 28 57 0	9 16 9 4	10 9 15 38	8 21 3 9	9 19 18 49	1 4 37 55	1 6 22 21	-21 10	25 4	1 53
16	7 41 40	9 1 39 19	2 9 42 55	7 29 40 11	9 15 57 16	10 9 28 32	8 20 31 37	9 19 25 46	1 4 34 45	1 6 17 6	-20 59	26 12	2 49
17	7 45 36	9 2 40 24	2 21 40 44	8 0 23 24	9 15 33 41	10 9 41 29	8 20 1 43	9 19 32 44	1 4 31 34	1 6 9 21	-20 47	26 6	3 38
18	7 49 33	9 3 41 29	3 3 47 2	8 1 6 39	9 14 58 33	10 9 54 31	8 19 33 39	9 19 39 44	1 4 28 23	1 5 59 22	-20 35	24 47	4 18
19	7 53 29	9 4 42 32	3 16 2 57	8 1 49 56	9 14 12 29	10 10 7 36	8 19 7 33	9 19 46 45	1 4 25 12	1 5 47 58	-20 23	22 16	4 46
20	7 57 26	9 5 43 36	3 28 29 11	8 2 33 16	9 13 16 33	10 10 20 45	8 18 43 34	9 19 53 47	1 4 22 1	1 5 36 9	-20 10	18 42	5 1
21	8 1 23	9 6 44 38	4 11 6 9	8 3 16 38	9 12 12 18	10 10 33 58	8 18 21 48	9 20 0 50	1 4 13 51	1 5 25 4	-19 57	14 16	5 2
22	8 5 19	9 7 45 41	4 23 54 23	8 4 0 2	9 11 1 35	10 10 47 15	8 18 2 22	9 20 7 55	1 4 15 40	1 5 15 45	-19 44	9 8	4 48
23	8 9 16	9 8 46 43	5 6 54 38	8 4 43 29	9 9 46 38	10 11 0 35	8 17 45 19	9 20 15 0	1 4 12 29	1 5 8 57	-19 30	3 32	4 19
24	8 13 12	9 9 47 44	5 20 8 2	8 5 26 57	9 8 29 45	10 11 13 59	8 17 30 43	9 20 22 6	1 4 9 18	1 5 4 54	-19 16	-2 20	3 35
25	8 17 9	9 10 48 45	6 3 36 2	8 6 10 29	9 7 13 17	10 11 27 25	8 17 18 36	9 20 29 14	1 4 6 7	1 5 3 19	-19 1	-8 12	2 39
26	8 21 5	9 11 49 46	6 17 20 6	8 6 54 2	9 5 59 26	10 11 40 56	8 17 8 59	9 20 36 22	1 4 2 57	1 5 3 21	-18 46	-13 48	1 33
27	8 25 2	9 12 50 46	7 1 21 21	8 7 37 38	9 4 50 6	10 11 54 29	8 17 1 53	9 20 43 30	1 3 59 46	1 5 3 48	-18 31	-18 49	0 20
28	8 28 58	9 13 51 45	7 15 39 50	8 8 21 16	9 3 46 52	10 12 8 6	8 16 57 16	9 20 50 39	1 3 56 35	1 5 3 21	-18 16	-22 51	-0 56
29	8 32 55	9 14 52 44	8 0 13 54	8 9 4 56	9 2 50 56	10 12 21 46	8 16 55 8	9 20 57 49	1 3 53 24	1 5 0 52	-18 0	-25 29	-2 10
30	8 36 52	9 15 53 42	8 14 59 33	8 9 48 38	9 2 3 7	10 12 35 28	8 16 55 28	9 21 5 0	1 3 50 13	1 4 55 38	-17 43	-26 22	-3 15
31	8 40 48	9 16 54 39	8 29 50 25	8 10 32 22	9 1 23 52	10 12 49 14	8 16 58 11	9 21 12 10	1 3 47 3	1 4 47 35	-17 27	-25 22	-4 8

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 फरवरी 2022 ई. को अयनांश 24° 9' 43"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0.h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्र शर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	8 44 45	9 17 55 35	9 14 38 27	8 11 16 8	9 0 53 23	10 13 3 2	8 17 3 16	9 21 19 22	1 3 43 52	1 4 37 12	-17 10	-22 37	-4 44
2	8 48 41	9 18 56 31	9 29 15 1	8 11 59 57	9 0 31 36	10 13 16 53	8 17 10 40	9 21 26 33	1 3 40 41	1 4 25 31	-16 53	-18 26	-5 0
3	8 52 38	9 19 57 25	10 13 32 31	8 12 43 47	9 0 18 16	10 13 30 46	8 17 20 19	9 21 33 45	1 3 37 30	1 4 13 48	-16 35	-13 16	-4 57
4	8 56 34	9 20 58 18	10 27 25 32	8 13 27 39	9 0 13 2	10 13 44 42	8 17 32 9	9 21 40 56	1 3 34 20	1 4 3 17	-16 18	-7 35	-4 37
5	9 0 31	9 21 59 10	11 10 51 28	8 14 11 33	9 0 15 26	10 13 58 40	8 17 46 8	9 21 48 8	1 3 31 9	1 3 54 55	-16 0	-1 42	-4 2
6	9 4 27	9 23 0 0	11 23 50 35	8 14 55 29	9 0 25 0	10 14 12 41	8 18 2 10	9 21 55 20	1 3 27 58	1 3 49 12	-15 41	4 4	-3 15
7	9 8 24	9 24 0 49	0 6 25 28	8 15 39 27	9 0 41 13	10 14 26 44	8 18 20 13	9 22 2 32	1 3 24 47	1 3 46 3	-15 23	9 30	-2 19
8	9 12 21	9 25 1 37	0 18 40 19	8 16 23 27	9 1 3 36	10 14 40 48	8 18 40 12	9 22 9 43	1 3 21 36	1 3 44 54	-15 4	14 26	-1 19
9	9 16 17	9 26 2 23	1 0 40 20	8 17 7 28	9 1 31 38	10 14 54 55	8 19 2 4	9 22 16 55	1 3 18 26	1 3 44 49	-14 45	18 43	-0 16
10	9 20 14	9 27 3 7	1 12 31 8	8 17 51 32	9 2 4 52	10 15 9 4	8 19 25 45	9 22 24 6	1 3 15 15	1 3 44 38	-14 26	22 11	0 46
11	9 24 10	9 28 3 50	1 24 18 16	8 18 35 37	9 2 42 52	10 15 23 14	8 19 51 11	9 22 31 16	1 3 12 4	1 3 43 13	-14 6	24 42	1 47
12	9 28 7	9 29 4 31	2 6 6 54	8 19 19 44	9 3 25 15	10 15 37 27	8 20 18 18	9 22 38 26	1 3 8 53	1 3 39 37	-14 46	26 9	2 42
13	9 32 3	10 0 5 11	2 18 1 32	8 20 3 54	9 4 11 38	10 15 51 40	8 20 47 4	9 22 45 36	1 3 5 43	1 3 33 16	-13 26	26 23	3 31
14	9 36 0	10 1 5 49	3 0 5 46	8 20 48 5	9 5 1 41	10 16 5 56	8 21 17 24	9 22 52 45	1 3 2 32	1 3 23 59	-13 6	25 23	4 11
15	9 39 56	10 2 6 26	3 12 22 9	8 21 32 18	9 5 55 7	10 16 20 13	8 21 49 15	9 22 59 53	1 2 59 21	1 3 12 9	-12 46	23 10	4 41
16	9 43 53	10 3 7 1	3 24 52 7	8 22 16 32	9 6 51 39	10 16 34 31	8 22 22 34	9 23 7 1	1 2 56 10	1 2 58 34	-12 25	19 49	4 57
17	9 47 50	10 4 7 35	4 7 36 1	8 23 0 49	9 7 51 3	10 16 48 51	8 22 57 17	9 23 14 8	1 2 52 59	1 2 44 21	-12 4	15 29	4 59
18	9 51 46	10 5 8 7	4 20 33 18	8 23 45 8	9 8 53 5	10 17 3 12	8 23 33 21	9 23 21 14	1 2 49 49	1 2 30 50	-11 43	10 24	4 45
19	9 55 43	10 6 8 38	5 3 42 47	8 24 29 29	9 9 57 35	10 17 17 34	8 24 10 43	9 23 28 19	1 2 46 38	1 2 19 13	-11 22	4 46	4 17
20	9 59 39	10 7 9 7	5 17 3 11	8 25 13 51	9 11 4 22	10 17 31 57	8 24 49 21	9 23 35 24	1 2 43 27	1 2 10 24	-11 0	-1 10	3 34
21	10 3 36	10 8 9 35	6 0 33 23	8 25 58 16	9 12 13 17	10 17 46 22	8 25 29 10	9 23 42 27	1 2 40 16	1 2 4 45	-10 39	-7 7	2 38
22	10 7 32	10 9 10 2	6 14 12 45	8 26 42 43	9 13 24 12	10 18 0 47	8 26 10 8	9 23 49 29	1 2 37 6	1 2 2 1	-10 17	-12 50	1 33
23	10 11 29	10 10 10 27	6 28 1 7	8 27 27 11	9 14 36 59	10 18 15 13	8 26 52 13	9 23 56 31	1 2 33 55	1 2 1 21	-9 55	-17 58	0 21
24	10 15 25	10 11 10 51	7 11 58 35	8 28 11 42	9 15 51 32	10 18 29 40	8 27 35 22	9 24 3 30	1 2 30 44	1 2 1 29	-9 33	-22 12	-0 52
25	10 19 22	10 12 11 14	7 26 5 6	8 28 56 14	9 17 7 46	10 18 44 8	8 28 19 31	9 24 10 29	1 2 27 33	1 2 1 0	-9 11	-25 8	-2 4
26	10 23 19	10 13 11 35	8 10 19 57	8 29 40 48	9 18 25 35	10 18 58 37	8 29 4 39	9 24 17 26	1 2 24 23	1 1 58 40	-8 49	-26 29	-3 8
27	10 27 15	10 14 11 55	8 24 41 7	9 0 25 23	9 19 44 55	10 19 13 6	8 29 50 43	9 24 24 22	1 2 21 12	1 1 53 40	-8 26	-26 5	-4 1
28	10 31 12	10 15 12 13	9 9 5 4	9 1 10 1	9 21 5 42	10 19 27 36	9 0 37 40	9 24 31 17	1 2 18 1	1 1 45 48	-8 3	-23 56	-4 38

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 मार्च 2022 ई. को अयनांश 24° 9' 47"

मार्च	साम्पातिक काल 0.0.h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्र शर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि	रा. अं. क वि	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	10 35 8	10 16 12 30	9 23 26 46	9 1 54 40	9 22 27 53	10 19 42 6	9 1 25 29	9 24 38 9	1 2 14 50	1 1 35 31	-7 41	-20 17	-4 58
2	10 39 5	10 17 12 45	10 7 40 22	9 2 39 20	9 23 51 24	10 19 56 37	9 2 14 7	9 24 45 1	1 2 11 40	1 1 23 47	-7 18	-15 28	-4 59
3	10 43 1	10 18 12 59	10 21 40 1	9 3 24 2	9 25 16 13	10 20 11 8	9 3 3 33	9 24 51 50	1 2 8 29	1 1 11 51	-6 55	-9 55	-4 42
4	10 46 58	10 19 13 10	11 5 20 54	9 4 8 46	9 26 42 18	10 20 25 39	9 3 53 43	9 24 58 38	1 2 5 18	1 1 0 57	-6 32	-4 1	-4 9
5	10 50 54	10 20 13 20	11 18 40 2	9 4 53 31	9 28 9 38	10 20 40 10	9 4 44 37	9 25 5 24	1 2 2 7	1 0 52 7	-6 9	1 57	-3 23
6	10 54 51	10 21 13 28	0 1 36 31	9 5 38 17	9 29 38 11	10 20 54 42	9 5 36 13	9 25 12 8	1 1 58 57	1 0 45 52	-5 46	7 40	-2 28
7	10 58 48	10 22 13 34	0 14 11 33	9 6 23 5	10 1 7 55	10 21 9 13	9 6 28 29	9 25 18 50	1 1 55 46	1 0 42 17	-5 22	12 55	-1 27
8	11 2 44	10 23 13 37	1 26 28 1	9 7 7 54	10 2 38 51	10 21 23 44	9 7 21 23	9 25 25 29	1 1 52 35	1 0 40 56	-4 59	17 33	-0 22
9	11 6 41	10 24 13 39	1 8 30 7	9 7 52 44	10 4 10 57	10 21 38 14	9 8 14 54	9 25 32 7	1 1 49 25	1 0 40 59	-4 35	21 22	0 42
10	11 10 37	10 25 13 38	2 20 22 51	9 8 37 35	10 5 44 13	10 21 52 45	9 9 9 1	9 25 38 43	1 1 46 14	1 0 41 25	-4 12	24 15	1 43
11	11 14 34	10 26 13 36	2 2 11 39	9 9 22 28	10 7 18 39	10 22 7 15	9 10 3 43	9 25 45 16	1 1 43 3	1 0 41 14	-3 48	26 3	2 40
12	11 18 30	10 27 13 31	2 14 1 58	9 10 7 23	10 8 54 15	10 22 21 44	9 10 58 57	9 25 51 47	1 1 39 52	1 0 39 31	-3 25	26 41	3 30
13	11 22 27	10 28 13 23	2 25 58 58	9 10 52 18	10 10 31 0	10 22 36 13	9 11 54 44	9 25 58 16	1 1 36 42	1 0 35 40	-3 1	26 4	4 11
14	11 26 23	10 29 13 14	3 8 7 10	9 11 37 15	10 12 8 56	10 22 50 41	9 12 51 1	9 26 4 42	1 1 33 31	1 0 29 27	-2 38	24 13	4 42
15	11 30 20	11 0 13 3	3 20 30 10	9 12 22 13	10 13 48 2	10 23 5 9	9 13 47 48	9 26 11 6	1 1 30 20	1 0 21 3	-2 14	21 12	5 0
16	11 34 17	11 1 12 49	4 3 10 25	9 13 7 12	10 15 28 20	10 23 19 36	9 14 45 4	9 26 17 27	1 1 27 9	1 0 11 6	-1 50	17 9	5 4
17	11 38 13	11 2 12 33	4 16 8 56	9 13 52 13	10 17 9 49	10 23 34 2	9 15 42 48	9 26 23 45	1 1 23 59	1 0 0 28	-1 27	12 13	4 52
18	11 42 10	11 3 12 16	4 29 25 17	9 14 37 14	10 18 52 31	10 23 48 27	9 16 40 59	9 26 30 1	1 1 20 48	0 29 50 14	-1 3	6 36	4 25
19	11 46 6	11 4 11 56	5 12 57 39	9 15 22 18	10 20 36 27	10 24 2 51	9 17 39 36	9 26 36 14	1 1 17 37	0 29 41 25	-0 39	0 35	3 43
20	11 50 3	11 5 11 34	5 26 43 14	9 16 7 22	10 22 21 36	10 24 17 14	9 18 38 38	9 26 42 25	1 1 14 26	0 29 34 49	-0 15	-5 35	2 46
21	11 53 59	11 6 11 11	6 10 38 47	9 16 52 28	10 24 8 0	10 24 31 36	9 19 38 4	9 26 48 32	1 1 11 16	0 29 30 47	0 8	-11 34	1 39
22	11 57 56	11 7 10 45	6 24 41 8	9 17 37 35	10 25 55 40	10 24 45 57	9 20 37 54	9 26 54 37	1 1 8 5	0 29 29 12	0 32	-17 1	0 26
23	12 1 52	11 8 10 18	7 8 47 33	9 18 22 43	10 27 44 35	10 25 0 17	9 21 38 6	9 27 0 38	1 1 4 54	0 29 29 26	0 56	-21 34	-0 50
24	12 5 49	11 9 9 49	7 22 55 57	9 19 7 53	10 29 34 48	10 25 14 36	9 22 38 40	9 27 6 37	1 1 1 43	0 29 30 31	1 19	-24 51	-2 3
25	12 9 46	11 10 9 19	8 7 4 44	9 19 53 3	11 1 26 17	10 25 28 53	9 23 39 35	9 27 12 33	1 0 58 33	0 29 31 21	1 43	-26 34	-3 8
26	12 13 42	11 11 8 47	8 21 12 36	9 20 38 15	11 3 19 4	10 25 43 8	9 24 40 50	9 27 18 25	1 0 55 22	0 29 30 58	2 7	26- 34	-4 2
27	12 17 39	11 12 8 12	9 5 18 4	9 21 23 27	11 5 13 8	10 25 57 23	9 25 42 25	9 27 24 14	1 0 52 11	0 29 28 42	2 30	24 51	-4 41
28	12 21 35	11 13 7 37	9 19 19 19	9 22 8 41	11 7 8 29	10 26 11 35	9 26 44 18	9 27 30 0	1 0 49 1	0 29 24 21	2 54	-21 37	-5 3
29	12 25 32	11 14 6 59	10 3 13 59	9 22 53 55	11 9 5 5	10 26 25 46	9 27 46 30	9 27 35 43	1 0 45 50	0 29 18 13	3 17	-17 11	-5 7
30	12 29 28	11 15 6 19	10 16 59 18	9 23 39 10	11 11 2 55	10 26 39 55	9 28 48 58	9 27 41 22	1 0 42 39	0 29 10 57	3 40	-11 54	-4 54
31	12 33 25	11 16 5 38	11 0 32 22	9 24 24 26	11 13 1 57	10 26 54 3	9 29 51 44	9 27 46 58	1 0 39 28	0 29 3 27	4 4	-6 8	-4 23

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 अप्रैल 2022 ई. को अयनांश 24° 9' 50"

अप्रैल	साम्पातिक काल 0.0.h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्र शर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	12 37 21	11 17 4 55	11 13 50 37	9 25 9 43	11 15 2 7	10 27 8 8	10 0 54 45	9 27 52 30	1 0 36 18	0 28 56 38	4 27	-0 11	-3 39
2	12 41 18	11 18 4 9	11 26 52 17	9 25 55 0	11 17 3 21	10 27 22 12	10 1 58 2	9 27 57 58	1 0 33 7	0 28 51 12	4 50	5 40	-2 44
3	12 45 15	11 19 3 22	0 9 36 44	9 26 40 17	11 19 5 33	10 27 36 13	10 3 1 33	9 28 3 23	1 0 29 56	0 28 47 36	5 13	11 10	-1 42
4	12 49 11	11 20 2 32	0 22 4 33	9 27 25 36	11 21 8 37	10 27 50 12	10 4 5 19	9 28 8 44	1 0 26 45	0 28 45 54	5 36	16 7	-0 36
5	12 53 8	11 21 1 41	1 4 17 34	9 28 10 54	11 23 12 24	10 28 4 9	10 5 9 19	9 28 14 1	1 0 23 35	0 28 45 52	5 59	20 18	0 30
6	12 57 4	11 22 0 47	1 16 18 44	9 28 56 13	11 25 16 44	10 28 18 3	10 6 13 32	9 28 19 15	1 0 20 24	0 28 47 0	6 22	23 34	1 34
7	13 1 1	11 22 59 50	1 28 11 52	9 29 41 32	11 27 21 27	10 28 31 55	10 7 17 58	9 28 24 24	1 0 17 13	0 28 48 40	6 44	25 47	2 34
8	13 4 57	11 23 58 52	2 10 1 30	10 0 26 52	11 29 26 18	10 28 45 45	10 8 22 36	9 28 29 30	1 0 14 2	0 28 50 13	7 7	26 48	3 26
9	13 8 54	11 24 57 51	2 21 52 32	10 1 12 12	0 1 31 4	10 28 59 32	10 9 27 27	9 28 34 31	1 0 10 52	0 28 51 2	7 29	26 37	4 10
10	13 12 50	11 25 56 48	3 3 50 0	10 1 57 32	0 3 35 26	10 29 13 16	10 10 32 29	9 28 39 28	1 0 7 41	0 28 50 42	7 52	25 11	4 44
11	13 16 47	11 26 55 42	3 15 58 49	10 2 42 52	0 5 39 7	10 29 26 58	10 11 37 44	9 28 44 22	1 0 4 30	0 28 49 2	8 14	22 35	5 5
12	13 20 44	11 27 54 35	3 28 23 22	10 3 28 13	0 7 41 48	10 29 40 36	10 12 43 9	9 28 49 11	1 0 1 19	0 28 46 4	8 36	18 55	5 13
13	13 24 40	11 28 53 25	4 11 7 14	10 4 13 34	0 9 43 7	10 29 54 12	10 13 48 45	9 28 53 56	0 29 58 9	0 28 42 7	8 58	14 18	5 5
14	13 28 37	11 29 52 12	4 24 12 43	10 4 58 55	0 11 42 45	11 0 7 45	10 14 54 32	9 28 58 36	0 29 54 58	0 28 37 39	9 19	8 56	4 42
15	13 32 33	0 0 50 58	5 7 40 32	10 5 44 17	0 13 40 19	11 0 21 15	10 16 0 29	9 29 3 13	0 29 51 47	0 28 33 16	9 41	2 59	4 3
16	13 36 30	0 1 49 42	5 21 29 34	10 6 29 38	0 15 35 30	11 0 34 42	10 17 6 35	9 29 7 44	0 29 48 36	0 28 29 31	10 2	-3 15	3 9
17	13 40 26	0 2 48 24	6 5 36 52	10 7 15 0	0 17 27 58	11 0 48 5	10 18 12 54	9 29 12 12	0 29 45 26	0 28 26 53	10 24	-9 29	2 2
18	13 44 23	0 3 47 3	6 19 58 1	10 8 0 22	0 19 17 24	11 1 1 26	10 19 19 21	9 29 16 35	0 29 42 15	0 28 25 32	10 45	-15 20	0 46
19	13 48 19	0 4 45 41	7 4 27 39	10 8 45 44	0 21 3 30	11 1 14 43	10 20 25 57	9 29 20 54	0 29 39 4	0 28 25 26	11 6	-20 24	-0 33
20	13 52 16	0 5 44 17	7 19 0 12	10 9 31 6	0 22 46 1	11 1 27 57	10 21 32 43	9 29 25 8	0 29 35 53	0 28 26 17	11 26	-24 13	-1 51
21	13 56 13	0 6 42 52	8 3 30 32	10 10 16 29	0 24 24 43	11 1 41 8	10 22 39 37	9 29 29 17	0 29 32 43	0 28 27 37	11 47	-26 26	-3 1
22	14 0 9	0 7 41 24	8 17 54 22	10 11 1 51	0 25 59 24	11 1 54 15	10 23 46 40	9 29 33 22	0 29 29 32	0 28 28 54	12 7	-26 52	-4 0
23	14 4 6	0 8 39 55	9 2 8 34	10 11 47 13	0 27 29 51	11 2 7 18	10 24 53 51	9 29 37 22	0 29 26 21	0 28 29 40	12 27	-25 31	-4 43
24	14 8 2	0 9 38 25	9 16 11 2	10 12 32 35	0 28 55 57	11 2 20 18	10 26 1 11	9 29 41 17	0 29 23 10	0 28 29 38	12 47	-22 35	-5 8
25	14 11 59	0 10 36 53	10 0 0 30	10 13 17 57	1 0 17 31	11 2 33 14	10 27 8 38	9 29 45 7	0 29 20 0	0 28 28 44	13 7	-18 25	-5 15
26	14 15 55	0 11 35 19	10 13 36 20	10 14 3 19	1 1 34 28	11 2 46 6	10 28 16 13	9 29 48 53	0 29 16 49	0 28 27 5	13 26	-13 22	-5 5
27	14 19 52	0 12 33 44	10 26 58 12	10 14 48 40	1 2 46 39	11 2 58 54	10 29 23 55	9 29 52 33	0 29 13 38	0 28 24 59	13 46	-7 46	-4 37
28	14 23 48	0 13 32 7	11 10 6 5	10 15 54 1	1 3 54 0	11 3 11 39	11 0 31 44	9 29 56 9	0 29 10 27	0 28 22 50	14 5	-1 55	-3 56
29	14 27 45	0 14 30 28	11 23 0 5	10 16 19 21	1 4 56 26	11 3 24 19	11 1 39 39	9 29 59 39	0 29 7 17	0 28 20 56	14 23	3 55	-3 3
30	14 31 42	0 15 28 48	0 5 40 30	10 17 4 40	1 5 53 50	11 3 36 55	11 2 47 41	10 0 3 5	0 29 4 6	0 28 19 34	14 42	9 31	-2 2

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशभेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें (सं. 2078 वि.)

मास	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्वि.	कार्त्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (2021 ई.)	चन्द्रदर्शन (2021 ई.)	चन्द्रदर्शन (2021 ई.)	चन्द्रदर्शन (2021 ई.)	चन्द्रदर्शन (2021 ई.)	चन्द्रदर्शन (2021 ई.)	चन्द्रदर्शन (2021 ई.)	चन्द्रदर्शन (2021 ई.)	चन्द्रदर्शन (2021 ई.)	चन्द्रदर्शन (2022 ई.)	चन्द्रदर्शन (2022 ई.)	चन्द्रदर्शन (2022 ई.)
+ 5°	13 अप्रैल	13 मई	11 जून	11 जुलाई	9 अगस्त	8 सितं.	7 अक्तू.	6 नवंबर	5 दिसं.	4 जनवरी	2 फरवरी	4 मार्च
+ 15°	13 अप्रैल	13 मई	11 जून	11 जुलाई	9 अगस्त	8 सितं.	7 अक्तू.	6 नवंबर	5 दिसं.	4 जनवरी	2 फरवरी	4 मार्च
+ 25°	13 अप्रैल	13 मई	[n] 11 जून	11 जुलाई	[p] 9 अग.	8 सितं.	[a] 8 अक्तू.	6 नवंबर	5 दिसं.	4 जनवरी	2 फरवरी	4 मार्च
+ 35°	13 अप्रैल	13 मई	11 जून	11 जुलाई	10 अगस्त	8 सितं.	8 अक्तू.	6 नवंबर	[s] 6 दिसं.	4 जनवरी	2 फरवरी	4 मार्च

[n] चंडीगढ़, दिल्ली, नागालैण्ड, प.बं. के कुछ भागों, राज., मेघालय, सिक्किम, हरियाणा, हि.प्र., उ.खं., बिहार व झारखण्ड के कुछ भागों, अरुणाचल प्रदेश, आसाम, उ.प्र., पंजाब, मणिपुर व म.प्र. के कुछेक भागों में 12 जून को चंद्रदर्शन की प्रबल संभावना है।

[p] + 25° एवं इसके समीपवर्ती अधिकतर परवर्ती अक्षांश स्थलों पर 10 अगस्त को चंद्रदर्शन की संभावना है। चंडीगढ़ में यह 10 अगस्त को शायद होगा।

[a] चंडीगढ़, पंजाब, हरियाणा, हि. प्र. आदि में चंद्रदर्शन की संभावना 7 अक्तू. को बिल्कुल नहीं है।

[s] कश्मीर से परवर्ती स्थलों पर चंद्रदर्शन 6 दिसं. को होगा और चंडीगढ़, पंजाब, हि. प्र. आदि में भी 6 दिसं. को ही इस की प्रबल संभावना है।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, सम्पादक—'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांगम्' द्वारा लिखित संग्रहणीय प्रकाशन

भारतीय लग्ननिर्णय

भारत के सभी (31) प्रदेशों के प्रसिद्ध लगभग 1000 नगर, उपनगरों में अभीष्ट तारीख का लग्नारम्भ-समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) इस पुस्तक से केवल तीन सामान्य मौखिक जोड़-घटाव द्वारा ही तुरन्त (30-40 सेकण्डों में ही) जाना जा सकता है। यहां एक ऐसा सहायक कोष्ठक भी दिया गया है, जिसकी सहायता से भारत के अन्य किसी भी नगर, ग्राम में आप अभीष्ट तारीख का लग्नारम्भ-समाप्तिकाल तुरन्त जान सकते हैं। यह पुस्तक हमारी 'लघु लग्नसारणी' का ही एक भाग है।

पुस्तक का मूल्य Rs. 75/- + डाकव्यय Rs. 35/- है। हमारी अन्य किसी भी पुस्तक के साथ इसे मंगवाने पर इसका डाकव्ययसहित मूल्य केवल Rs. 65/- ही लिया जाएगा।

पता:—श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., कोठी नं. 59, सैक्टर-6, P.O. पंचकूला-(हरियाणा)

Pin-134 109, PHONE-0172-2565303

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.) (सन् 2021 ई.)

तारीख	जनवरी 2021 ई.		फरवरी 2021 ई.		मार्च 2021 ई.		अप्रैल 2021 ई.		मई 2021 ई.		जून 2021 ई.		जुलाई 2021 ई.		अगस्त 2021 ई.		तारीख
	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	
01	19 40	09 07	21 45	09 43	20 38	08 16	22 56	8 42	23 59	09 09	00 17	11 09	-- --	11 53	-- --	13 22	01
02	20 43	09 51	22 49	10 17	21 44	08 51	-- --	09 30	-- --	10 11	00 54	12 09	00 25	12 48	00 23	14 17	02
03	21 46	10 31	23 54	10 51	22 52	09 27	00 04	10 22	00 53	11 15	01 26	13 06	00 53	13 42	00 58	15 13	03
04	22 49	11 08	-- --	11 27	24 00	10 05	01 09	11 20	01 39	12 18	01 55	14 01	01 21	14 36	01 38	16 09	04
05	23 52	11 42	01 00	12 06	-- --	10 48	02 06	12 22	02 19	13 19	02 23	14 55	01 51	15 31	02 23	17 03	05
06	-- --	12 15	02 07	12 49	01 07	11 35	02 56	13 24	02 53	14 16	02 51	15 48	02 24	16 26	03 13	17 55	06
07	00 56	12 50	03 14	13 39	02 13	12 28	03 39	14 25	03 23	15 12	03 20	16 43	03 01	17 22	04 09	18 42	07
08	02 01	13 27	04 18	14 34	03 14	13 27	04 16	15 24	03 52	16 06	03 50	17 37	03 42	18 18	05 09	19 25	08
09	03 08	14 08	05 19	15 34	04 08	14 28	04 49	16 21	04 19	17 00	04 24	18 33	04 29	19 11	06 10	20 03	09
10	04 16	14 54	06 12	16 37	04 56	15 30	05 19	17 17	04 47	17 54	05 02	19 29	05 22	20 01	07 13	20 39	10
11	05 25	15 47	06 59	17 40	05 38	16 31	05 48	18 11	05 17	18 48	05 45	20 24	06 19	20 46	08 15	21 12	11
12	06 30	16 46	07 40	18 42	06 14	17 30	06 16	19 05	05 48	19 43	06 34	21 16	07 18	21 27	09 17	21 44	12
13	07 29	17 49	08 15	19 41	06 47	18 28	06 44	19 59	06 23	20 39	07 28	22 03	08 19	22 03	10 20	22 17	13
14	08 22	18 53	08 47	20 38	07 16	19 23	07 14	20 54	07 03	21 34	08 25	22 47	09 21	22 37	11 24	22 52	14
15	09 06	19 56	09 16	21 33	07 45	20 18	07 47	21 49	07 48	22 28	09 24	23 26	10 22	23 10	12 30	23 30	15
16	09 44	20 57	09 45	22 27	08 13	21 12	08 24	22 44	08 38	23 18	10 25	-- --	11 24	23 42	13 38	-- --	16
17	10 18	21 54	10 13	23 20	08 43	22 06	09 05	23 39	09 32	-- --	11 26	00 02	12 26	-- --	14 46	00 15	17
18	10 49	22 50	10 43	-- --	09 14	23 01	09 51	-- --	10 31	00 05	12 28	00 35	13 31	00 15	15 53	01 06	18
19	11 17	23 43	11 15	00 15	09 48	23 56	10 43	00 32	11 31	00 47	13 31	01 08	14 39	00 51	16 54	02 04	19
20	11 45	-- --	11 51	01 10	10 26	-- --	11 40	01 22	12 33	01 25	14 36	01 41	15 48	01 32	17 49	03 08	20
21	12 14	00 37	12 32	02 06	11 10	00 52	12 40	02 07	13 36	02 01	15 44	02 16	16 58	02 20	18 36	04 14	21
22	12 45	01 30	13 19	03 02	11 59	01 46	13 43	02 49	14 40	02 35	16 55	02 55	18 05	03 15	19 16	05 21	22
23	13 19	02 25	14 12	03 57	12 54	02 39	14 48	03 29	15 46	03 09	18 08	03 40	19 06	04 17	19 51	06 25	23
24	13 57	03 21	15 10	04 49	13 54	03 28	15 54	04 04	16 55	03 44	19 19	04 33	19 58	05 24	20 22	07 26	24
25	14 41	04 18	16 13	05 38	14 55	04 14	17 01	04 39	18 07	04 22	20 24	05 32	20 43	06 32	20 52	08 24	25
26	15 31	05 14	17 18	06 22	16 03	04 55	18 10	05 14	19 20	05 05	21 21	06 38	21 21	07 38	21 21	09 21	26
27	16 27	06 09	18 25	07 03	17 09	05 34	19 21	05 51	20 33	05 54	22 09	07 46	21 54	08 41	21 50	10 17	27
28	17 27	07 00	19 31	07 40	18 17	06 10	20 34	06 32	21 42	06 51	22 60	08 52	22 24	09 40	22 21	11 12	28
29	18 31	07 47			19 25	06 45	21 47	07 18	22 42	07 54	23 25	09 56	22 53	10 37	22 55	12 08	29
30	19 36	08 29			20 35	07 22	22 56	08 11	23 34	08 59	23 56	10 56	23 22	11 33	23 32	13 03	30
31	20 41	09 08			21 45	08 00			-- --	10 05			23 51	12 27	-- --	13 59	31

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.) (सन् 2021-2022 ई.)

तारीख	सितंबर 2021 ई.		अक्तूबर 2021 ई.		नवंबर 2021 ई.		दिसंबर 2021 ई.		जनवरी 2022 ई.		फरवरी 2022 ई.		मार्च 2022 ई.		अप्रैल 2022 ई.		तारीख
	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	उदय घं. मिं.	अस्त घं. मिं.	
01	00 15	14 54	00 40	15 13	02 28	15 36	03 20	15 11	05 39	15 58	07 30	18 06	06 07	16 54	06 22	18 51	01
02	01 03	15 46	01 40	15 54	03 32	16 09	04 28	15 48	06 51	17 00	08 15	19 15	06 47	18 01	06 52	19 50	02
03	01 57	16 35	02 41	16 32	04 37	16 43	05 39	16 31	07 57	18 09	08 53	20 21	07 22	19 04	07 22	20 48	03
04	02 55	17 19	03 45	17 07	05 44	17 19	06 53	17 21	08 55	19 21	09 26	21 23	07 54	20 06	07 53	21 46	04
05	03 56	18 00	04 48	17 41	06 55	17 59	08 07	18 20	09 43	20 31	09 57	22 22	08 24	21 05	08 28	22 44	05
06	04 59	18 37	05 53	18 14	08 08	18 45	09 17	19 26	10 24	21 37	10 26	23 20	08 53	22 03	09 06	23 41	06
07	06 03	19 11	06 59	18 49	09 21	19 39	10 18	20 35	10 59	22 39	10 56	-- --	09 24	23 01	09 49	-- --	07
08	07 06	19 44	08 08	19 26	10 31	20 40	11 09	21 44	11 30	23 38	11 26	00 16	09 56	23 58	10 37	00 35	08
09	08 11	20 17	09 18	20 08	11 35	21 45	11 52	22 50	11 59	-- --	12 00	01 13	10 32	-- --	11 30	01 26	09
10	09 16	20 52	10 29	20 56	12 29	22 52	12 28	23 52	12 27	00 35	12 37	02 09	11 12	00 55	12 26	02 13	10
11	10 23	21 30	11 38	21 51	13 15	23 57	13 00	-- --	12 56	01 30	13 18	03 05	11 57	01 51	13 24	02 55	11
12	11 31	22 13	12 44	22 51	13 54	-- --	13 29	00 50	13 28	02 26	14 05	04 00	12 47	02 44	14 23	03 32	12
13	12 39	23 01	13 42	23 55	14 27	01 00	13 57	01 47	14 02	03 21	14 57	04 52	13 41	03 33	15 24	04 06	13
14	13 46	23 57	14 32	-- --	14 57	01 59	14 25	02 42	14 40	04 17	15 53	05 39	14 39	04 18	16 24	04 38	14
15	14 49	-- --	15 14	01 00	15 26	02 56	14 55	03 37	15 24	05 13	16 52	06 23	15 39	04 59	17 26	05 09	15
16	15 44	00 58	15 51	02 04	15 54	03 52	15 27	04 32	16 12	06 07	17 52	07 02	16 39	05 35	18 30	05 40	16
17	16 32	02 03	16 24	03 05	16 22	04 47	16 02	06 25	17 06	06 57	18 52	07 37	17 40	06 09	19 37	06 13	17
18	17 14	03 08	16 54	04 04	16 52	05 42	16 42	06 24	18 03	07 44	19 52	08 10	18 41	06 40	20 46	06 50	18
19	17 50	04 12	17 22	05 01	17 26	06 38	17 28	07 19	19 01	08 26	20 52	08 41	19 43	07 11	21 58	07 31	19
20	18 22	05 13	17 50	05 57	18 03	07 34	18 18	08 12	20 01	09 03	21 53	09 11	20 47	07 43	23 08	08 19	20
21	18 52	06 12	18 20	06 53	18 44	08 30	19 12	09 01	21 00	09 37	22 56	09 42	21 53	08 16	-- --	09 15	21
22	19 20	07 10	18 51	07 49	19 31	09 24	20 09	09 46	21 59	10 08	-- --	10 16	23 01	08 53	00 14	10 18	22
23	19 49	08 06	19 26	08 45	20 22	10 16	21 07	10 26	22 58	10 38	00 01	10 54	-- --	09 36	01 13	11 25	23
24	20 19	09 02	20 04	09 41	21 17	11 04	22 06	11 02	23 59	11 08	01 09	11 38	00 10	10 25	02 03	12 33	24
25	20 52	09 57	20 48	10 37	22 15	11 47	23 05	11 34	-- --	11 40	02 17	12 30	01 17	11 22	02 46	13 39	25
26	21 28	10 54	21 36	11 30	23 14	12 26	-- --	12 05	01 02	12 15	03 24	13 29	02 20	12 26	03 22	14 42	26
27	22 08	11 49	22 29	12 21	-- --	13 01	00 04	12 36	02 09	12 56	04 25	14 35	03 16	13 33	03 55	15 43	27
28	22 54	12 44	23 26	13 07	00 14	13 34	01 05	13 07	03 18	13 44	05 20	15 45	04 04	14 40	04 25	16 42	28
29	23 45	13 37	-- --	13 49	01 14	14 05	02 08	13 41	04 29	14 40			04 45	15 46	04 53	17 40	29
30	-- --	14 27	00 25	14 28	02 16	14 37	03 15	14 20	05 36	15 44			05 20	16 50	05 22	18 37	30
31			01 26	15 03			04 26	15 05	06 37	16 54			05 52	17 51			31

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (सन् 2021 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि.) (भा.स्टैं.टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेप्च्यून			प्लूटो			मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
										क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
2021 ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जनवरी 1	0	12	39	10	24	20	9	0	02	11 21	0 52	-24 21	-2 06	-20 01	-0 29	-22 26	0 39	-20 10	-0 23	13 21	-0 27	-5 33	-1 5	-22 27	-1 12
4	0	12	37	10	24	23	9	0	08	11 52	0 56	-23 39	-2 09	-19 51	-0 30	-22 47	0 32	-20 06	-0 23	13 21	-0 27	-5 32	-1 5	-22 26	-1 12
7	0	12	36	10	24	27	9	0	14	12 24	0 59	-22 44	-2 07	-19 42	-0 30	-23 01	0 24	-20 02	-0 24	13 21	-0 27	-5 30	-1 5	-22 25	-1 12
10	0	12	35	10	24	31	9	0	20	12 56	1 02	-21 34	-2 01	-19 32	-0 30	-23 09	0 17	-19 57	-0 24	13 20	-0 27	-5 29	-1 5	-22 25	-1 12
13	0	12	35	10	24	35	9	0	26	13 28	1 04	-20 12	-1 49	-19 22	-0 30	-23 11	0 09	-19 52	-0 24	13 20	-0 27	-5 27	-1 5	-22 24	-1 13
16	0	12	35	10	24	40	9	0	32	14 00	1 07	-18 38	-1 31	-19 12	-0 30	-23 06	0 01	-19 48	-0 24	13 20	-0 27	-5 25	-1 5	-22 23	-1 13
19	0	12	35	10	24	44	9	0	38	14 33	1 09	-16 56	-1 06	-19 01	-0 31	-22 55	-0 06	-19 43	-0 24	13 21	-0 26	-5 23	-1 4	-22 22	-1 13
22	0	12	36	10	24	49	9	0	44	15 05	1 11	-15 10	-0 33	-18 51	-0 31	-22 37	-0 14	-19 38	-0 25	13 21	-0 26	-5 21	-1 4	-22 21	-1 13
25	0	12	37	10	24	54	9	0	56	15 37	1 13	-13 28	0 09	-18 40	-0 31	-22 13	-0 21	-19 33	-0 25	13 22	-0 26	-5 19	-1 4	-22 20	-1 14
28	0	12	39	10	25	00	9	0	56	16 08	1 15	-12 01	0 57	-18 29	-0 31	-21 44	-0 28	-19 28	-0 25	13 22	-0 26	-5 17	-1 4	-22 20	-1 14
31	0	12	42	10	25	05	9	1	02	16 39	1 17	-10 59	1 49	-18 18	-0 32	-21 08	-0 35	-19 23	-0 25	13 23	-0 26	-5 15	-1 4	-22 19	-1 14
फरवरी 1	0	12	43	10	25	07	9	1	04	16 50	1 17	-10 46	2 06	-18 14	-0 32	-20 55	-0 37	-19 21	-0 25	13 23	-0 26	-5 14	-1 4	-22 19	-1 14
4	0	12	46	10	25	13	9	1	09	17 20	1 19	-10 32	2 54	-18 03	-0 32	-20 11	-0 44	-19 17	-0 26	13 25	-0 26	-5 12	-1 4	-22 18	-1 15
7	0	12	49	10	25	19	9	1	15	17 50	1 20	-10 57	3 28	-17 51	-0 32	-19 23	-0 50	-19 12	-0 26	13 26	-0 26	-5 09	-1 4	-22 17	-1 15
10	0	12	53	10	25	25	9	1	21	18 20	1 21	-11 49	3 41	-17 40	-0 33	-18 29	-0 56	-19 07	-0 26	13 27	-0 26	-5 07	-1 4	-22 16	-1 15
13	0	12	57	10	25	31	9	1	26	18 49	1 22	-12 55	3 34	-17 28	-0 33	-17 31	-1 01	-19 02	-0 26	13 29	-0 26	-5 04	-1 4	-22 16	-1 16
16	0	13	02	10	25	38	9	1	31	19 17	1 23	-13 59	3 11	-17 16	-0 33	-16 28	-1 06	-18 57	-0 27	13 30	-0 26	-5 02	-1 4	-22 15	-1 16
19	0	13	07	10	25	44	9	1	37	19 44	1 24	-14 53	2 37	-17 04	-0 33	-15 21	-1 10	-18 52	-0 27	13 32	-0 26	-4 59	-1 4	-22 14	-1 16
22	0	13	13	10	25	51	9	1	42	20 11	1 25	-15 33	1 59	-16 52	-0 34	-14 10	-1 14	-18 47	-0 27	13 34	-0 25	-4 57	-1 4	-22 14	-1 17
25	0	13	19	10	25	57	9	1	47	20 37	1 26	-15 57	1 20	-16 40	-0 34	-12 55	-1 17	-18 42	-0 27	13 36	-0 25	-4 54	-1 4	-22 13	-1 17
28	0	13	25	10	26	04	9	1	51	21 01	1 26	-16 07	0 42	-16 28	-0 35	-11 38	-1 20	-18 37	-0 28	13 38	-0 25	-4 51	-1 4	-22 13	-1 17
मार्च 1	0	13	27	10	26	06	9	1	53	21 09	1 26	-16 06	0 31	-16 24	-0 35	-11 11	-1 21	-18 35	-0 28	13 39	-0 25	-4 51	-1 4	-22 13	-1 17
4	0	13	34	10	26	13	9	1	57	21 33	1 27	-15 56	-0 03	-16 12	-0 35	-09 50	-1 23	-18 31	-0 28	13 41	-0 25	-4 48	-1 4	-22 12	-1 18
7	0	13	41	10	26	20	9	2	02	21 55	1 27	-15 32	-0 33	-16 00	-0 35	-08 26	-1 25	-18 26	-0 28	13 43	-0 25	-4 45	-1 4	-22 12	-1 18
10	0	13	49	10	26	27	9	2	06	22 16	1 28	-14 55	-1 00	-15 49	-0 36	-07 01	-1 26	-18 22	-0 29	13 46	-0 25	-4 43	-1 4	-22 11	-1 18
13	0	13	56	10	26	34	9	2	10	22 36	1 28	-14 05	-1 23	-15 37	-0 36	-05 34	-1 26	-18 17	-0 29	13 48	-0 25	-4 40	-1 4	-22 11	-1 19
16	0	14	04	10	26	40	9	2	13	22 55	1 28	-13 02	-1 43	-15 25	-0 37	-04 05	-1 26	-18 13	-0 29	13 51	-0 25	-4 37	-1 4	-22 10	-1 19
19	0	14	13	10	26	47	9	2	17	23 13	1 29	-11 48	-1 58	-15 13	-0 37	-02 35	-1 25	-18 09	-0 30	13 54	-0 25	-4 35	-1 4	-22 10	-1 20
22	0	14	21	10	26	54	9	2	20	23 29	1 29	-10 23	-2 10	-15 01	-0 38	-01 05	-1 24	-18 04	-0 30	13 57	-0 25	-4 32	-1 4	-22 10	-1 20
25	0	14	30	10	27	01	9	2	23	23 44	1 29	-08 46	-2 18	-14 50	-0 38	0 26	-1 22	-18 00	-0 30	14 00	-0 25	-4 29	-1 4	-22 10	-1 20
28	0	14	39	10	27	07	9	2	26	23 51	1 29	-06 59	-2 21	-14 38	-0 38	1 56	-1 20	-17 57	-0 31	14 03	-0 25	-4 27	-1 4	-22 09	-1 21
31	0	14	49	10	27	14	9	2	28	24 10	1 29	-05 01	-2 21	-14 27	-0 39	3 27	-1 17	-17 53	-0 31	14 06	-0 25	-4 24	-1 4	-22 09	-1 21

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेप्च्यून			प्लूटो			मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				यूरेनस				नेप्च्यून				प्लूटो			
										क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर	
2021 ई	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.
अप्रैल 1	0	14	52	10	27	16	9	2	29	24	13	1	29	-4	20	-2	20	-14	23	-0	39	3	57	-1	16	-17	52	-0	31	14	7	-0	25	-4	23	-1	4	-22	9	-1	21
4	0	15	1	10	27	23	9	2	31	24	24	1	29	-2	9	-2	13	-14	12	-0	40	5	26	-1	12	-17	48	-0	31	14	10	-0	25	-4	21	-1	4	-22	9	-1	22
7	0	15	11	10	27	29	9	2	33	24	32	1	29	0	11	-2	3	-14	2	-0	40	6	55	-1	8	-17	45	-0	32	14	13	-0	25	-4	18	-1	5	-22	9	-1	22
10	0	15	21	10	27	35	9	2	35	24	40	1	29	2	39	-1	47	-13	51	-0	41	8	22	-1	3	-17	42	-0	32	14	16	-0	25	-4	16	-1	5	-22	9	-1	22
13	0	15	31	10	27	41	9	2	36	24	46	1	28	5	14	-1	27	-13	41	-0	41	9	47	-0	58	-17	39	-0	32	14	19	-0	24	-4	14	-1	5	-22	9	-1	23
16	0	15	41	10	27	47	9	2	37	24	50	1	28	7	54	-1	3	-13	31	-0	42	11	11	-0	53	-17	36	-0	33	14	22	-0	24	-4	11	-1	5	-22	10	-1	23
19	0	15	51	10	27	53	9	2	38	24	53	1	28	10	36	-0	35	-13	21	-0	42	12	32	-0	47	-17	34	-0	33	14	26	-0	24	-4	9	-1	5	-22	10	-1	24
22	0	16	1	10	27	59	9	2	39	24	54	1	28	13	16	-0	4	-13	11	-0	43	13	50	-0	41	-17	32	-0	34	14	29	-0	24	-4	7	-1	5	-22	10	-1	24
25	0	16	12	10	28	4	9	2	39	24	54	1	27	15	50	0	28	-13	2	-0	44	15	5	-0	34	-17	30	-0	34	14	32	-0	24	-4	5	-1	5	-22	10	-1	24
28	0	16	22	10	28	9	9	2	39	24	52	1	27	18	11	1	0	-12	53	-0	44	16	17	-0	28	-17	28	-0	34	14	35	-0	24	-4	3	-1	5	-22	11	-1	25
मई 1	0	16	32	10	28	14	9	2	39	24	48	1	27	20	15	1	29	-12	45	-0	45	17	25	-0	21	-17	26	-0	35	14	39	-0	24	-4	1	-1	5	-22	11	-1	25
4	0	16	43	10	28	19	9	2	39	24	43	1	26	21	57	1	54	-12	37	-0	46	18	29	-0	14	-17	25	-0	35	14	42	-0	24	-3	59	-1	5	-22	12	-1	26
7	0	16	53	10	28	24	9	2	38	24	37	1	26	23	18	2	13	-12	29	-0	46	19	29	-0	6	-17	24	-0	36	14	45	-0	24	-3	58	-1	5	-22	12	-1	26
10	0	17	3	10	28	28	9	2	37	24	29	1	26	24	16	2	24	-12	22	-0	47	20	24	0	1	-17	23	-0	36	14	48	-0	24	-3	56	-1	6	-22	13	-1	26
13	0	17	14	10	28	32	9	2	36	24	19	1	25	24	54	2	28	-12	15	-0	48	21	14	0	8	-17	22	-0	36	14	52	-0	24	-3	54	-1	6	-22	13	-1	27
16	0	17	24	10	28	36	9	2	34	24	8	1	25	25	12	2	24	-12	9	-0	48	21	59	0	16	-17	22	-0	37	14	55	-0	24	-3	53	-1	6	-22	14	-1	27
19	0	17	34	10	28	40	9	2	33	23	56	1	24	25	14	2	10	-12	3	-0	49	22	38	0	23	-17	22	-0	37	14	58	-0	24	-3	52	-1	6	-22	15	-1	28
22	0	17	44	10	28	43	9	2	31	23	41	1	24	25	1	1	49	-11	58	-0	50	23	11	0	30	-17	22	-0	38	15	1	-0	24	-3	50	-1	6	-22	16	-1	28
25	0	17	54	10	28	47	9	2	29	23	26	1	23	24	36	1	18	-11	53	-0	51	23	39	0	38	-17	22	-0	38	15	4	-0	24	-3	49	-1	6	-22	16	-1	28
28	0	18	4	10	28	50	9	2	26	23	9	1	22	24	0	0	40	-11	49	-0	51	24	0	0	44	-17	23	-0	39	15	7	-0	24	-3	48	-1	6	-22	17	-1	29
31	0	18	13	10	28	52	9	2	24	22	50	1	22	23	15	-0	5	-11	45	-0	52	24	15	0	51	-17	24	-0	39	15	10	-0	24	-3	47	-1	6	-22	18	-1	29
जून 1	0	18	16	10	28	53	9	2	23	22	44	1	22	22	58	-0	21	-11	44	-0	52	24	19	0	53	-17	24	-0	39	15	11	-0	24	-3	47	-1	7	-22	18	-1	29
4	0	18	26	10	28	55	9	2	20	22	24	1	21	22	5	-1	13	-11	41	-0	53	24	25	1	0	-17	26	-0	40	15	14	-0	24	-3	46	-1	7	-22	19	-1	30
7	0	18	35	10	28	57	9	2	17	22	2	1	20	21	10	-2	4	-11	39	-0	54	24	25	1	6	-17	27	-0	40	15	16	-0	24	-3	46	-1	7	-22	20	-1	30
10	0	18	44	10	28	59	9	2	14	21	39	1	20	20	15	-2	53	-11	37	-0	55	24	19	1	11	-17	29	-0	40	15	19	-0	24	-3	45	-1	7	-22	21	-1	30
13	0	18	52	10	29	0	9	2	11	21	15	1	19	19	27	-3	34	-11	36	-0	56	24	6	1	17	-17	31	-0	41	15	22	-0	24	-3	45	-1	7	-22	22	-1	31
16	0	19	1	10	29	1	9	2	7	20	49	1	18	18	49	-4	4	-11	35	-0	56	23	47	1	22	-17	33	-0	41	15	24	-0	24	-3	44	-1	7	-22	23	-1	31
19	0	19	9	10	29	2	9	2	3	20	22	1	18	18	25	-4	23	-11	35	-0	57	23	21	1	26	-17	35	-0	42	15	27	-0	24	-3	44	-1	7	-22	24	-1	31
22	0	19	17	10	29	3	9	2	00	19	54	1	17	18	16	-4	29	-11	36	-0	58	22	50	1	30	-17	38	-0	42	15	29	-0	24	-3	44	-1	7	-22	25	-1	32
25	0	19	24	10	29	3	9	1	56	19	25	1	16	18	22	-4	23	-11	37	-0	59	22	12	1	33	-17	41	-0	42	15	31	-0	24	-3	44	-1	8	-22	26	-1	32
28	0	19	32	10	29	3	9	1	52	18	54	1	15	18	43	-4	8	-11	39	-1	0	21	30	1	36	-17	44	-0	43	15	33	-0	24	-3	44	-1	8	-22	27	-1	32

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन	यूरेनस			नेप्च्यून			प्लूटो			मंगल क्रांति		मंगल शर		बुध क्रांति		बुध शर	
2021 ई.	रा	अ	क	रा	अ	क	रा	अ	क	अ	क	अ	क	अ	क	अ	क
जुलाई 1	0	19	39	10	29	2	9	1	48	18	23	1	15	19	14	-3	44
4	0	19	45	10	29	2	9	1	43	17	50	1	14	19	54	-3	14
7	0	19	52	10	29	1	9	1	39	17	17	1	13	20	39	-2	39
10	0	19	58	10	29	60	9	1	35	16	42	1	12	21	24	-2	1
13	0	20	3	10	28	58	9	1	31	16	7	1	11	22	4	-1	22
16	0	20	8	10	28	56	9	1	26	15	30	1	10	22	35	-0	42
19	0	20	13	10	28	54	9	1	22	14	53	1	9	22	51	-0	4
22	0	20	18	10	28	52	9	1	18	14	14	1	9	22	47	0	30
25	0	20	22	10	28	49	9	1	13	13	35	1	8	22	20	0	59
28	0	20	25	10	28	47	9	1	9	12	55	1	7	21	30	1	21
31	0	20	28	10	28	44	9	1	5	12	15	1	6	20	16	1	36
अगस्त 1	0	20	29	10	28	42	9	1	3	12	1	1	5	19	47	1	40
4	0	20	32	10	28	39	9	0	59	11	19	1	4	18	10	1	46
7	0	20	34	10	28	36	9	0	55	10	37	1	3	16	18	1	45
10	0	20	36	10	28	32	9	0	51	9	54	1	2	14	16	1	39
13	0	20	37	10	28	28	9	0	47	9	11	1	1	12	8	1	28
16	0	20	38	10	28	24	9	0	44	8	27	1	0	9	56	1	14
19	0	20	38	10	28	20	9	0	40	7	42	0	59	7	42	0	56
22	0	20	38	10	28	15	9	0	36	6	57	0	58	5	29	0	36
25	0	20	38	10	28	11	9	0	33	6	12	0	57	3	16	0	13
28	0	20	37	10	28	6	9	0	30	5	26	0	56	1	7	-0	11
31	0	20	35	10	28	1	9	0	27	4	40	0	55	-1	0	-0	36
सित 1	0	20	35	10	28	60	9	0	26	4	24	0	55	-1	41	-0	45
4	0	20	33	10	27	55	9	0	23	3	38	0	53	-3	41	-1	11
7	0	20	30	10	27	50	9	0	21	2	51	0	52	-5	34	-1	37
10	0	20	27	10	27	45	9	0	19	2	4	0	51	-7	21	-2	3
13	0	20	24	10	27	40	9	0	17	1	17	0	50	-8	58	-2	28
16	0	20	21	10	27	35	9	0	15	0	29	0	49	-10	25	-2	51
19	0	20	17	10	27	30	9	0	13	-0	18	0	47	-11	39	-3	12
22	0	20	12	10	27	25	9	0	12	-1	6	0	46	-12	36	-3	30
25	0	20	7	10	27	20	9	0	11	-1	53	0	45	-13	11	-3	42
28	0	20	2	10	27	16	9	0	10	-2	41	0	44	-13	20	-3	46

तारीख सन	गुरु क्रांति		गुरु शर		शुक्र क्रांति		शुक्र शर		शनि क्रांति		शनि शर		यूरेनस क्रांति		यूरेनस शर		नेप्च्यून क्रांति		नेप्च्यून शर		प्लूटो क्रांति		प्लूटो शर	
2021 ई.	अ	क	अ	क	अ	क	अ	क	अ	क	अ	क	अ	क	अ	क	अ	क	अ	क	अ	क	अ	क
जुलाई 1	-11	42	-1	1	20	41	1	38	-17	47	-0	43	15	35	-0	24	-3	44	-1	8	-22	28	-1	33
4	-11	45	-1	1	19	48	1	39	-17	50	-0	44	15	37	-0	24	-3	45	-1	8	-22	29	-1	33
7	-11	49	-1	2	18	49	1	40	-17	53	-0	44	15	39	-0	24	-3	45	-1	8	-22	31	-1	33
10	-11	53	-1	3	17	46	1	40	-17	57	-0	44	15	41	-0	24	-3	46	-1	8	-22	32	-1	34
13	-11	58	-1	4	16	39	1	39	-18	1	-0	45	15	43	-0	25	-3	47	-1	8	-22	33	-1	34
16	-12	4	-1	5	15	28	1	38	-18	4	-0	45	15	44	-0	25	-3	48	-1	9	-22	34	-1	34
19	-12	10	-1	5	14	14	1	36	-18	8	-0	45	15	46	-0	25	-3	48	-1	9	-22	35	-1	34
22	-12	16	-1	6	12	56	1	33	-18	12	-0	46	15	47	-0	25	-3	49	-1	9	-22	36	-1	35
25	-12	23	-1	7	11	36	1	30	-18	16	-0	46	15	48	-0	25	-3	51	-1	9	-22	37	-1	35
28	-12	30	-1	7	10	12	1	26	-18	20	-0	46	15	49	-0	25	-3	52	-1	9	-22	38	-1	35
31	-12	38	-1	8	8	47	1	21	-18	23	-0	47	15	50	-0	25	-3	53	-1	9	-22	39	-1	35
अगस्त 1	-12	40	-1	8	8	18	1	19	-18	25	-0	47	15	50	-0	25	-3	54	-1	9	-22	39	-1	36
4	-12	48	-1	9	6	50	1	13	-18	29	-0	47	15	51	-0	25	-3	55	-1	9	-22	40	-1	36
7	-12	56	-1	9	5	20	1	7	-18	32	-0	47	15	51	-0	25	-3	56	-1	9	-22	41	-1	36
10	-13	5	-1	10	3	49	1	0	-18	36	-0	47	15	52	-0	25	-3	58	-1	10	-22	42	-1	36
13	-13	13	-1	10	2	17	0	52	-18	40	-0	48	15	52	-0	25	-4	0	-1	10	-22	43	-1	36
16	-13	21	-1	11	0	45	0	43	-18	44	-0	48	15	52	-0	25	-4	1	-1	10	-22	44	-1	37
19	-13	30	-1	11	-0	48	0	34	-18	47	-0	48	15	53	-0	25	-4	3	-1	10	-22	45	-1	37
22	-13	38	-1	11	-2	21	0	25	-18	50	-0	48	15	52	-0	25	-4	5	-1	10	-22	46	-1	37
25	-13	47	-1	11	-3	53	0	15	-18	54	-0	48	15	52	-0	25	-4	7	-1	10	-22	47	-1	37
28	-13	55	-1	12	-5	25	0	4	-18	57	-0	48	15	52	-0	25	-4	9	-1	10	-22	47	-1	37
31	-14	3	-1	12	-6	56	-0	7	-19	0	-0	49	15	52	-0	25	-4	11	-1	10	-22	48	-1	38
सित 1	-14	5	-1	12	-7	26	-0	10	-19	1	-0	49	15	51	-0	25	-4	11	-1	10	-22	48	-1	38
4	-14	13	-1	12	-8	56	-0	22	-19	4	-0	49	15	51	-0	25	-4	13	-1	10	-22	49	-1	38
7	-14	20	-1	12	-10	24	-0	34	-19	6	-0	49	15	50	-0	25	-4	15	-1	10	-22	50	-1	38
10	-14	27	-1	12	-11	50	-0	46	-19	9	-0	49	15	49	-0	25	-4	17	-1	10	-22	50	-1	38
13	-14	33	-1	12	-13	14	-0	58	-19	11	-0	49	15	48	-0	25	-4	19	-1	10	-22	51	-1	38
16	-14	39	-1	12	-14	35	-1	10	-19	13	-0	49	15	47	-0	25	-4	21	-1	10	-22	51	-1	38
19	-14	45	-1	12	-15	54	-1	23	-19	14	-0	49	15	46	-0	25	-4	23	-1	10	-22	52	-1	39
22	-14	50	-1	12	-17	10	-1	35	-19	16	-0	49	15	45	-0	25	-4	25	-1	10	-22	52	-1	39
25	-14	54	-1	11	-18	22	-1	47	-19	17	-0	49	15	43	-0	25	-4	27	-1	10	-22	52	-1	39
28	-14	58	-1	11	-19	31	-2	0	-19	18	-0	49	15	42	-0	25	-4	29	-1	10	-22	53	-1	39

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्		यूरेनस			नेप्च्यून			प्लूटो			मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				यूरेनस				नेप्च्यून				प्लूटो			
											क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर	
2021 ई		रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.	अ.	क.
अक्तू.	1	0	19	57	10	27	11	9	0	9	-3	28	0	42	-12	56	-3	39	-15	1	-1	11	-20	36	-2	12	-19	19	-0	49	15	40	-0	25	-4	31	-1	10	-22	53	-1	39
	4	0	19	51	10	27	6	9	0	9	-4	15	0	41	-11	53	-3	18	-15	4	-1	11	-21	37	-2	23	-19	20	-0	49	15	38	-0	25	-4	33	-1	10	-22	53	-1	39
	7	0	19	45	10	27	2	9	0	9	-5	2	0	40	-10	11	-2	40	-15	6	-1	10	-22	33	-2	35	-19	20	-0	49	15	36	-0	25	-4	34	-1	10	-22	53	-1	39
	10	0	19	39	10	26	57	9	0	9	-5	49	0	38	-8	2	-1	48	-15	8	-1	10	-23	25	-2	46	-19	21	-0	49	15	35	-0	25	-4	36	-1	10	-22	53	-1	39
	13	0	19	32	10	26	53	9	0	9	-6	36	0	37	-5	50	-0	47	-15	9	-1	9	-24	12	-2	56	-19	21	-0	49	15	33	-0	25	-4	38	-1	10	-22	53	-1	40
	16	0	19	26	10	26	49	9	0	10	-7	22	0	35	-4	4	0	13	-15	9	-1	9	-24	53	-3	6	-19	20	-0	49	15	31	-0	25	-4	39	-1	10	-22	53	-1	40
	19	0	19	19	10	26	45	9	0	11	-8	8	0	34	-3	4	1	2	-15	9	-1	9	-25	30	-3	15	-19	20	-0	49	15	29	-0	25	-4	41	-1	10	-22	53	-1	40
	22	0	19	12	10	26	41	9	0	12	-8	54	0	33	-2	55	1	37	-15	8	-1	8	-26	1	-3	23	-19	19	-0	49	15	26	-0	25	-4	42	-1	10	-22	53	-1	40
	25	0	19	5	10	26	38	9	0	14	-9	39	0	31	-3	31	1	58	-15	7	-1	8	-26	27	-3	30	-19	18	-0	49	15	24	-0	25	-4	44	-1	10	-22	53	-1	40
	28	0	18	57	10	26	34	9	0	15	-10	24	0	30	-4	41	2	7	-15	5	-1	7	-26	47	-3	37	-19	17	-0	49	15	22	-0	25	-4	45	-1	10	-22	53	-1	40
	31	0	18	50	10	26	31	9	0	17	-11	8	0	28	-6	13	2	6	-15	2	-1	7	-27	1	-3	42	-19	16	-0	49	15	20	-0	25	-4	46	-1	10	-22	52	-1	40
नवं.	1	0	18	47	10	26	30	9	0	18	-11	22	0	28	-6	47	2	4	-15	1	-1	7	-27	5	-3	43	-19	15	-0	49	15	19	-0	25	-4	46	-1	10	-22	52	-1	40
	4	0	18	40	10	26	27	9	0	21	-12	5	0	26	-8	36	1	55	-14	58	-1	6	-27	12	-3	47	-19	13	-0	49	15	17	-0	25	-4	47	-1	10	-22	52	-1	40
	7	0	18	33	10	26	25	9	0	23	-12	48	0	25	-10	29	1	41	-14	54	-1	6	-27	14	-3	49	-19	11	-0	49	15	15	-0	25	-4	48	-1	10	-22	52	-1	41
	10	0	18	25	10	26	22	9	0	26	-13	30	0	23	-12	22	1	24	-14	49	-1	6	-27	11	-3	49	-19	9	-0	49	15	13	-0	25	-4	49	-1	10	-22	51	-1	41
	13	0	18	18	10	26	20	9	0	29	-14	10	0	21	-14	12	1	5	-14	44	-1	5	-27	3	-3	48	-19	7	-0	49	15	10	-0	25	-4	50	-1	10	-22	51	-1	41
	16	0	18	10	10	26	19	9	0	32	-14	50	0	20	-15	58	0	45	-14	39	-1	5	-26	50	-3	45	-19	4	-0	49	15	8	-0	25	-4	50	-1	9	-22	50	-1	41
	19	0	18	3	10	26	17	9	0	36	-15	30	0	18	-17	37	0	25	-14	32	-1	4	-26	33	-3	40	-19	1	-0	49	15	6	-0	25	-4	51	-1	9	-22	50	-1	41
	22	0	17	56	10	26	16	9	0	40	-16	8	0	16	-19	8	0	4	-14	26	-1	4	-26	12	-3	33	-18	58	-0	49	15	4	-0	25	-4	51	-1	9	-22	49	-1	41
	25	0	17	49	10	26	15	9	0	44	-16	45	0	15	-20	32	-0	16	-14	19	-1	4	-25	47	-3	24	-18	55	-0	49	15	2	-0	25	-4	51	-1	9	-22	49	-1	41
	28	0	17	43	10	26	15	9	0	48	-17	21	0	13	-21	46	-0	36	-14	11	-1	3	-25	18	-3	12	-18	52	-0	49	15	0	-0	25	-4	52	-1	9	-22	48	-1	42
दिस.	1	0	17	36	10	26	15	9	0	52	-17	55	0	11	-22	50	-0	54	-14	3	-1	3	-24	47	-2	57	-18	48	-0	49	14	58	-0	25	-4	52	-1	9	-22	48	-1	42
	4	0	17	30	10	26	15	9	0	57	-18	29	0	10	-23	45	-1	12	-13	54	-1	3	-24	14	-2	39	-18	44	-0	49	14	56	-0	25	-4	51	-1	9	-22	47	-1	42
	7	0	17	24	10	26	15	9	1	1	-19	1	0	8	-24	28	-1	27	-13	45	-1	2	-23	38	-2	18	-18	40	-0	49	14	54	-0	25	-4	51	-1	9	-22	46	-1	42
	10	0	17	18	10	26	16	9	1	6	-19	32	0	6	-25	0	-1	42	-13	35	-1	2	-23	2	-1	53	-18	36	-0	49	14	53	-0	25	-4	51	-1	9	-22	45	-1	42
	13	0	17	13	10	26	17	9	1	11	-20	1	0	4	-25	20	-1	54	-13	25	-1	2	-22	24	-1	25	-18	32	-0	49	14	51	-0	25	-4	50	-1	9	-22	45	-1	42
	16	0	17	8	10	26	18	9	1	17	-20	29	0	2	-25	26	-2	3	-13	15	-1	1	-21	46	-0	53	-18	27	-0	49	14	50	-0	25	-4	50	-1	9	-22	44	-1	43
	19	0	17	3	10	26	20	9	1	22	-20	55	0	0	-25	20	-2	10	-13	4	-1	1	-21	8	-0	17	-18	23	-0	49	14	48	-0	25	-4	49	-1	8	-22	43	-1	43
	22	0	16	59	10	26	22	9	1	27	-21	20	-0	1	-25	1	-2	13	-12	53	-1	1	-20	31	0	22	-18	18	-0	49	14	47	-0	25	-4	48	-1	8	-22	42	-1	43
	25	0	16	55	10	26	24	9	1	33	-21	43	-0	3	-24	27	-2	12	-12	41	-1	0	-19	54	1	5	-18	13	-0	49	14	46	-0	24	-4	47	-1	8	-22	41	-1	43
	28	0	16	52	10	26	27	9	1	39	-22	4	-0	5	-23	40	-2	6	-12	29	-1	0	-19	19	1	51	-18	8	-0	49	14	45	-0	24	-4	46	-1	8	-22	41	-1	43
	31	0	16	48	10	26	30	9	1	44	-22	24	-0	7	-22	41	-1	55	-12	17	-1	0	-18	46	2	37	-18	2	-0	49	14	44	-0	24	-4	45	-1	8	-22	40	-1	44

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति–शर (सन 2022 ई.) (प्रातः 5घं. 30 मि.) (भा. स्टै. टा.)

तारीख सन्		यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
					क्रांती	शर	क्रांती	शर	क्रांती	शर	क्रांती	शर	क्रांती	शर	क्रांती	शर	क्रांती	शर	क्रांती	शर
2022 ई.		रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जनवरी	01	0 16 48	10 26 31	09 01 46	-22 30	-0 01	-22 18	-1 49	-12 13	-01 00	-18 35	02 53	-18 01	-0 49	14 44	-0 24	-4 44	-01 08	-22 39	-01 44
	04	0 16 45	10 26 34	09 01 52	-22 47	-0 10	-21 05	-1 28	-12 00	-01 00	-18 04	03 40	-17 55	-0 50	14 43	-0 24	-4 43	-01 08	-22 38	-01 44
	07	0 16 43	10 26 37	09 01 58	-23 02	-0 12	-19 46	-0 59	-11 47	-00 59	-17 36	04 24	-17 50	-0 50	14 42	-0 24	-4 42	-01 08	-22 38	-01 44
	10	0 16 41	10 26 41	09 02 04	-23 15	-0 14	-18 26	-0 20	-11 33	-00 59	-17 12	05 04	-17 44	-0 50	14 42	-0 24	-4 40	-01 08	-22 37	-01 44
	13	0 16 40	10 26 45	09 02 10	-23 27	-0 16	-17 15	0 28	-11 11	-00 59	-16 51	05 38	-17 38	-0 50	14 42	-0 24	-4 38	-01 08	-22 36	-01 45
	16	0 16 40	10 26 49	09 02 16	-23 36	-0 18	-16 23	1 23	-11 05	-00 59	-16 34	06 06	-17 32	-0 50	14 42	-0 24	-4 37	-01 08	-22 35	-01 45
	19	0 16 39	10 26 54	09 02 22	-23 43	-0 20	-15 58	2 17	-10 51	-00 59	-16 22	06 27	-17 27	-0 50	14 42	-0 24	-4 35	-01 08	-22 34	-01 45
	22	0 16 40	10 26 59	09 02 28	-23 48	-022	-16 01	3 02	-10 36	-00 59	-16 14	06 40	-17 21	-0 50	14 42	-0 24	-4 33	-01 08	-22 33	-01 45
	25	0 16 40	10 27 04	09 02 33	-23 51	-0 24	-16 27	3 29	-10 21	-00 59	-16 10	06 48	-17 14	-0 50	14 42	-0 24	-4 31	-01 07	-22 32	-01 46
	28	0 16 42	10 27 09	09 02 39	-23 51	-0 27	-17 05	3 33	-10 06	-00 58	-16 10	06 49	-17 08	-0 51	14 43	-0 24	-4 29	-01 07	-22 31	-01 46
	31	0 16 43	10 27 14	09 02 45	-23 50	-0 29	-17 46	3 19	-09 51	-00 58	-16 13	06 46	-17 02	-0 51	14 43	-0 23	-4 26	-01 07	-22 31	-01 46
फरवरी	01	0 16 44	10 27 16	09 02 47	-23 49	-0 29	-18 00	03 11	-09 46	-00 58	-16 15	06 44	-17 00	-0 51	14 43	-00 23	-4 26	-01 07	-22 30	-01 46
	04	0 16 46	10 27 22	09 02 53	-23 45	-0 32	-18 35	02 41	-09 30	-00 58	-16 21	06 36	-16 54	-0 51	14 44	-00 23	-4 23	-01 07	-22 29	-01 47
	07	0 16 49	10 27 28	09 02 58	-23 38	-0 34	-18 04	02 00	-09 15	-00 58	-16 28	06 24	-16 48	-0 51	14 45	-00 23	-4 21	-01 07	-22 29	-01 47
	10	0 16 52	10 27 34	09 03 04	-23 30	-0 36	-18 23	01 33	-08 59	-00 58	-16 36	06 11	-16 41	-0 51	14 46	-00 23	-4 19	-01 07	-22 28	-01 47
	13	0 16 56	10 27 40	09 03 10	-23 19	-0 38	-18 32	00 58	-08 43	-00 58	-16 43	05 55	-16 35	-0 52	14 47	-00 23	-4 16	-01 07	-22 27	-01 48
	16	0 17 0	10 27 46	09 03 15	-23 06	-0 40	-18 30	00 26	-08 26	-00 58	-16 50	05 36	-16 21	-0 52	14 49	-00 23	-4 14	-01 07	-22 26	-01 48
	19	0 17 5	10 27 52	09 03 20	-22 51	-0 43	-18 17	-00 04	-08 10	-00 58	-16 55	05 19	-16 22	-0 52	14 50	-00 23	-4 11	-01 07	-22 26	-01 48
	22	0 17 10	10 27 59	09 03 25	-22 33	-0 45	-18 53	-00 31	-07 54	-00 58	-16 57	05 00	-16 16	-0 52	14 52	-00 23	-4 09	-01 07	-22 25	-01 49
	25	0 17 15	10 28 05	09 03 13	-22 14	-0 47	-17 17	-00 56	-07 37	-00 58	-16 58	04 40	-16 10	-0 53	14 54	-00 23	-4 06	-01 07	-22 24	-01 49
	28	0 17 21	10 28 12	09 03 35	-21 53	-0 49	-17 29	-01 17	-07 20	-00 59	-16 55	04 20	-16 04	-0 53	14 56	-00 23	-4 03	-01 07	-22 24	-01 49
मार्च	01	0 17 23	10 28 14	09 03 37	-21 45	-0 50	-17 11	-01 23	-07 15	-00 59	-16 53	04 13	-16 02	-0 53	14 56	-00 23	-4 03	-01 07	-22 24	-01 49
	04	0 17 29	10 28 21	09 03 41	-21 21	-0 52	-16 08	-01 41	-06 58	-00 59	-16 45	03 52	-15 56	-0 53	14 58	-00 23	-4 00	-01 07	-22 23	-01 50
	07	0 17 36	10 28 28	09 03 45	-20 55	-0 55	-14 53	-01 54	-06 41	-00 59	-16 34	03 32	-15 50	-0 54	15 00	-00 23	-3 57	-01 07	-22 23	-01 50
	10	0 17 43	10 28 35	09 03 50	-20 27	-0 57	-13 27	-02 05	-06 25	-00 59	-16 19	03 11	-15 44	-0 54	15 03	-00 22	-3 55	-01 07	-22 22	-01 51
	13	0 17 50	10 28 42	09 03 54	-19 58	-0 59	-11 15	-02 12	-06 08	-00 59	-15 59	02 51	-15 38	-0 54	15 05	-00 22	-3 52	-01 07	-22 22	-01 51
	16	0 17 58	10 28 48	09 03 57	-19 26	-1 01	-10 02	-02 14	-05 51	-00 59	-15 36	02 31	-15 32	-0 55	15 07	-00 22	-3 49	-01 07	-22 21	-01 51
	19	0 18 6	10 28 55	09 04 01	-18 53	-1 03	-08 03	-02 13	-05 34	-00 59	-15 08	02 11	-15 26	-0 55	15 10	-00 22	-3 47	-01 07	-22 21	-01 52
	22	0 18 14	10 29 02	09 04 04	-18 18	-1 06	-05 53	-02 08	-05 18	-01 00	-14 36	01 52	-15 21	-0 55	15 12	-00 22	-3 44	-01 07	-22 21	-01 52
	25	0 18 23	10 29 09	09 04 07	-17 42	-1 08	-03 34	-01 59	-05 01	-01 00	-14 00	01 33	-15 15	-0 56	15 15	-00 22	-3 41	-01 07	-22 20	-01 53
	28	0 18 31	10 29 15	09 04 10	-17 04	-1 10	-01 05	-01 44	-04 45	-01 00	-13 20	01 15	-15 10	-0 56	15 18	-00 22	-3 39	-01 07	-22 20	-01 53
	31	0 18 40	10 29 22	09 04 13	-16 24	-1 12	01 33	-01 25	-04 48	-01 00	-12 36	00 58	-15 05	-0 57	15 20	-00 22	-3 36	-01 07	-22 20	-01 53

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2021 से 1 अप्रैल, 2022 ई. तक)

सूर्य-चार (सन् 2021-2022 ई.)

तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.	तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.	तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.	तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 1		पू.षा.	2	6	16	अप्रैल 7		रेवती	3	7	36	जुलाई 16	कर्क	पुन.	4	16	53	अक्तूबर 24		स्वाती	1	6	12
4		पू.षा.	3	12	47	10		रेवती	4	16	59	20		पुष्य	1	4	44	27		स्वाती	2	14	29
7		पू.षा.	4	19	16	14	मेष	अश्वि.	1	2	31	23		पुष्य	2	16	34	30		स्वाती	3	22	35
11		उ.षा.	1	1	45	17		अश्वि.	2	12	14	27		पुष्य	3	4	21	नवम्बर 3		स्वाती	4	6	32
14	मकर	उ.षा.	2	8	15	20		अश्वि.	3	22	7	30		पुष्य	4	16	4	6		विशा.	1	14	20
17		उ.षा.	3	14	46	24		अश्वि.	4	8	10	अगस्त 3		आश्ले.	1	3	42	9		विशा.	2	22	0
20		उ.षा.	4	21	20	27		भरणी	1	18	23	6		आश्ले.	2	15	14	13		विशा.	3	5	34
24		श्रवण	1	3	59	मई 1		भरणी	2	4	45	10		आश्ले.	3	2	40	16	वृश्चिक	विशा.	4	13	2
27		श्रवण	2	10	41	4		भरणी	3	15	14	13		आश्ले.	4	14	1	19		अनु.	1	20	24
30		श्रवण	3	17	28	8		भरणी	4	1	50	17	सिंह	मघा	1	1	17	23		अनु.	2	3	40
फरवरी 3		श्रवण	4	0	18	11		कृत्तिका	1	12	33	20		मघा	2	12	28	26		अनु.	3	10	48
6		धनिष्ठा	1	7	12	14	वृष	कृत्तिका	2	23	24	23		मघा	3	23	33	29		अनु.	4	17	49
9		धनिष्ठा	2	14	9	18		कृत्तिका	3	10	23	27		मघा	4	10	31	दिसम्बर 3		ज्येष्ठा	1	0	44
12	कुम्भ	धनिष्ठा	3	21	12	21		कृत्तिका	4	21	31	30		पू.फा.	1	21	20	6		ज्येष्ठा	2	7	34
16		धनिष्ठा	4	4	21	25		रोहिणी	1	8	46	सितम्बर 3		पू.फा.	2	8	0	9		ज्येष्ठा	3	14	20
19		शत.	1	11	37	28		रोहिणी	2	20	8	6		पू.फा.	3	18	30	12		ज्येष्ठा	4	21	3
22		शत.	2	19	0	जून 1		रोहिणी	3	7	35	10		पू.फा.	4	4	52	16	धनु	मूल	1	3	44
26		शत.	3	2	32	4		रोहिणी	4	19	6	13		उ.फा.	1	15	7	19		मूल	2	10	22
मार्च 1		शत.	4	10	12	8		मृग.	1	6	40	17	कन्या	उ.फा.	2	1	13	22		मूल	3	16	58
4		पू.भा.	1	17	59	11		मृग.	2	18	18	20		उ.फा.	3	11	12	25		मूल	4	23	31
8		पू.भा.	2	1	53	15	मिथुन	मृग.	3	6	1	23		उ.फा.	4	21	2	29		पू.षा.	1	6	2
11		पू.भा.	3	9	54	18		मृग.	4	17	47	27		हस्त	1	6	42	(सन् 2022 ई.)					
14	मीन	पू.भा.	4	18	3	22		आर्द्रा	1	5	38	30		हस्त	2	16	11						
18		उ.भा.	1	2	21	25		आर्द्रा	2	17	32	अक्तूबर 4		हस्त	3	1	30	जनवरी 1		पू.षा.	2	12	30
21		उ.भा.	2	10	49	29		आर्द्रा	3	5	27	7		हस्त	4	10	38	4		पू.षा.	3	18	58
24		उ.भा.	3	19	27	जुलाई 2		आर्द्रा	4	17	22	10		चित्रा	1	19	38	8		पू.षा.	4	1	27
28		उ.भा.	4	4	16	6		पुन.	1	5	16	14		चित्रा	2	4	29	11		उ.षा.	1	7	57
31		रेवती	1	13	14	9		पुन.	2	17	9	17	तुला	चित्रा	3	13	12	14	मकर	उ.षा.	2	14	29
अप्रैल 3		रेवती	2	22	21	13		पुन.	3	5	1	20		चित्रा	4	21	47	17		उ.षा.	3	21	4

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2021 से 1 अप्रैल, 2022 ई. तक)

सूर्य-चार (सन् 2022 ई.)

तारीख 2022 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 21		उ.षा.	4	3	41
24		श्रवण	1	10	19
27		श्रवण	2	17	0
30		श्रवण	3	23	44
फरवरी 3		श्रवण	4	6	31
6		धनिष्ठा	1	13	23
9		धनिष्ठा	2	20	22
13	कुम्भ	धनिष्ठा	3	3	27
16		धनिष्ठा	4	10	39
19		शत.	1	17	57
23		शत.	2	1	21
26		शत.	3	8	51
मार्च 1		शत.	4	16	27
5		पू.भा.	1	0	11
8		पू.भा.	2	8	3
11		पू.भा.	3	16	5
15	मीन	पू.भा.	4	0	16
18		उ.भा.	1	8	37
21		उ.भा.	2	17	7
25		उ.भा.	3	1	44
28		उ.भा.	4	10	30
31		रेव.	1	19	25
अप्रैल 4		रेव.	2	4	28

मंगल-चार (सन् 2021 ई.)

तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 1		अश्वि.	2	12	16
8		अश्वि.	3	22	14
15		अश्वि.	4	21	28
22		भरणी	1	13	2
जनवरी 28		भरणी	2	23	3
फरवरी 4		भरणी	3	4	54
10		भरणी	4	7	24
16		कृत्तिका	1	7	7
22	वृष	कृत्तिका	2	4	36
28		कृत्तिका	3	0	22
मार्च 5		कृत्तिका	4	18	42
11		रोहिणी	1	11	48
17		रोहिणी	2	3	48
22		रोहिणी	3	18	54
28		रोहिणी	4	9	19
अप्रैल 2		मृग.	1	23	9
8		मृग.	2	12	27
14	मिथुन	मृग.	3	1	14
19		मृग.	4	13	36
25		आर्द्रा	1	1	38
30		आर्द्रा	2	13	25
मई 6		आर्द्रा	3	0	56
11		आर्द्रा	4	12	9
16		पुन.	1	23	7
22		पुन.	2	9	52
27		पुन.	3	20	27
जून 2	कर्क	पुन.	4	6	51
7		पुष्य	1	17	1
13		पुष्य	2	2	56
18		पुष्य	3	12	39
23		पुष्य	4	22	9
29		आश्ले.	1	7	27
जुलाई 4		आश्ले.	2	16	30
जुलाई 10		आश्ले.	3	1	15
15		आश्ले.	4	9	43
20	सिंह	मघा	1	17	55
26		मघा	2	1	50
31		मघा	3	9	26
अगस्त 5		मघा	4	16	39
10		पू.फा.	1	23	30
16		पू.फा.	2	5	59
21		पू.फा.	3	12	6
26		पू.फा.	4	17	50
31		उ.फा.	1	23	8
सितम्बर 6	कन्या	उ.फा.	2	3	58
11		उ.फा.	3	8	20
16		उ.फा.	4	12	16
21		हस्त	1	15	44
26		हस्त	2	18	44
अक्तूबर 1		हस्त	3	21	13
6		हस्त	4	23	10
12		चित्रा	1	0	37
17		चित्रा	2	1	34
22	तुला	चित्रा	3	2	1
27		चित्रा	4	1	56
नवम्बर 1		स्वाती	1	1	17
6		स्वाती	2	0	6
10		स्वाती	3	22	23
15		स्वाती	4	20	10
20		विशा.	1	17	25
25		विशा.	2	14	9
30		विशा.	3	10	19

मंगल-चार (सन् 2021-22 ई.)

तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
दिसम्बर 5	वृश्चिक	विशा.	4	5	57
10		अनु.	1	1	5
14		अनु.	2	19	44
19		अनु.	3	13	53
24		अनु.	4	7	32
29		ज्येष्ठा	1	0	40
(सन् 2022 ई.)					
जनवरी 2		ज्ये.	2	17	18
7		ज्ये.	3	9	28
12		ज्ये.	4	1	13
16	धनु	मूल	1	16	31
21		मूल	2	7	22
25		मूल	3	21	46
30		मूल	4	11	44
फरवरी 4		पू.षा.	1	1	19
8		पू.षा.	2	14	32
13		पू.षा.	3	3	23
17		पू.षा.	4	15	53
22		उ.षा.	1	4	2
26	मकर	उ.षा.	2	15	50
मार्च 3		उ.षा.	3	3	20
7		उ.षा.	4	14	34
12		श्रवण	1	1	34
16		श्रवण	2	12	20
20		श्रवण	3	22	52
25		श्रवण	4	9	11
29		धनि.	1	19	20
अप्रैल 3		धनि.	2	5	21

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2021 से 1 अप्रैल, 2022 ई. तक)

बुध-चार (सन् 2021 ई.)

तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)	तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)	तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)	तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 1		पू.षा.	4	2	2	अप्रैल 1	मीन	पू.भा.	4	0	41	जून 10		मृग.	1	10	49	अगस्त 22		पू.फा.	4	5	10
3		उ.षा.	1	3	5	2		उ.भा.	1	22	58	16		रोहिणी	4	22	29	24		उ.फा.	1	7	27
5	मकर	उ.षा.	2	3	56	4		उ.भा.	2	20	4	23	मार्गी			3	30	26	कन्या	उ.फा.	2	11	20
7		उ.षा.	3	4	40	6		उ.भा.	3	16	5	29		मृग.	1	0	13	28		उ.फा.	3	17	0
9		उ.षा.	4	5	24	8		उ.भा.	4	11	5	जुलाई 4		मृग.	2	1	24	31		उ.फा.	4	0	37
11		श्रवण	1	6	21	10		रेव.	1	5	7	7	मिथुन	मृग.	3	11	5	सितम्बर 2		हस्त	1	10	33
13		श्रवण	2	7	48	11		रेव.	2	22	13	10		मृग.	4	5	47	4		हस्त	2	23	15
15		श्रवण	3	10	15	13		रेव.	3	14	30	12		आर्द्रा	1	15	36	7		हस्त	3	15	25
17		श्रवण	4	14	28	15		रेव.	4	6	4	14		आर्द्रा	2	19	50	10		हस्त	4	12	12
19		धनि.	1	21	52	16	मेष	अश्वि.	1	20	56	16		आर्द्रा	3	19	58	13		चित्रा	1	15	56
22		धनि.	2	11	30	18		अश्वि.	2	11	18	18		आर्द्रा	4	17	3	17		चित्रा	2	7	43
25	कुम्भ	धनि.	3	16	55	20		अश्वि.	3	1	14	20		पुन.	1	11	52	22	तुला	चित्रा	3	8	19
30	वक्री			21	22	21		अश्वि.	4	14	52	22		पुन.	2	4	59	27	वक्री			10	39
फरवरी 4	मकर	धनि.	2	22	40	23		भरणी	1	4	24	23		पुन.	3	20	45	अक्तूबर 2	कन्या	चित्रा	2	2	46
8		धनि.	1	3	3	24		भरणी	2	18	0	25	कर्क	पुन.	4	11	40	6		चित्रा	1	4	38
10		श्रवण	4	22	46	26		भरणी	3	7	51	27		पुष्य	1	2	1	9		हस्त	4	3	32
14		श्रवण	3	3	59	27		भरणी	4	22	15	28		पुष्य	2	16	2	12		हस्त	3	1	15
21	मार्गी			6	21	29		कृत्तिका	1	13	26	30		पुष्य	3	5	58	16		हस्त	2	3	17
मार्च 1		श्रवण	4	6	53	मई 1	वृष	कृत्तिका	2	5	41	31		पुष्य	4	20	2	18	मार्गी			20	45
5		धनि.	1	7	14	2		कृत्तिका	3	23	32	अगस्त 2		आश्ले.	1	10	24	21		हस्त	3	14	49
8		धनि.	2	14	9	4		कृत्तिका	4	19	20	4		आश्ले.	2	1	12	25		हस्त	4	20	50
11	कुम्भ	धनि.	3	12	30	6		रोहिणी	1	17	41	5		आश्ले.	3	16	37	28		चित्रा	1	16	50
14		धनि.	4	5	30	8		रोहिणी	2	19	22	7		आश्ले.	4	8	41	31		चित्रा	2	3	35
16		शत.	1	18	31	11		रोहिणी	3	1	30	9	सिंह	मघा	1	1	34	नवम्बर 2	तुला	चित्रा	3	9	52
19		शत.	2	4	41	13		रोहिणी	4	14	2	10		मघा	2	19	22	4		चित्रा	4	13	50
21		शत.	3	12	22	16		मृग.	1	12	12	12		मघा	3	14	6	6		स्वाती	1	16	30
23		शत.	4	18	3	20		मृग.	2	4	10	14		मघा	4	9	54	8		स्वाती	2	18	29
25		पू.भा.	1	21	58	26	मिथुन	मृग.	3	8	56	16		पू.फा.	1	6	49	10		स्वाती	3	20	7
28		पू.भा.	2	0	17	30	वक्री			4	3	18		पू.फा.	2	4	57	12		स्वाती	4	21	38
30		पू.भा.	3	1	10	जून 3	वृष	मृग.	2	2	13	20		पू.फा.	3	4	23	14		विशा.	1	23	12

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2021 से 1 अप्रैल, 2022 ई. तक)

बुध-चार (सन् 2021 ई.)

तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
नवम्बर 17		विशा.	2	0	53
19		विशा.	3	2	46
21	वृश्चिक	विशा.	4	4	50
23		अनु.	1	7	8
25		अनु.	2	9	37
27		अनु.	3	12	17
29		अनु.	4	15	6
दिसम्बर 1		ज्येष्ठा	1	18	1
3		ज्येष्ठा	2	21	0
6		ज्येष्ठा	3	0	2
8		ज्येष्ठा	4	3	5
10	धनु	मूल	1	6	6
12		मूल	2	9	4
14		मूल	3	11	59
16		मूल	4	14	51
18		पू.षा.	1	17	42
20		पू.षा.	2	20	35
22		पू.षा.	3	23	36
25		पू.षा.	4	2	53
27		उ.षा.	1	6	44
29	मकर	उ.षा.	2	11	32
31		उ.षा.	3	18	0
(सन् 2022 ई.)					
जनवरी 3		उ.षा.	4	3	16
5		श्रव.	1	18	12
8		श्रव.	2	22	3
14	वक्री			17	10
20		श्रव.	1	4	1
23		उ.षा.	4	1	13

बुध-चार (सन् 2022 ई.)

तारीख 2022 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 25		उ.षा.	3	16	19
28		उ.षा.	2	17	2
फरवरी 4	मार्गी			9	43
12		उ.षा.	3	2	32
16		उ.षा.	4	0	33
19		श्रव.	1	6	22
22		श्रव.	2	4	5
24		श्रव.	3	20	45
27		श्रव.	4	9	59
मार्च 1		धनि.	1	20	29
4		धनि.	2	4	51
6	कुम्भ	धनि.	3	11	20
8		धनि.	4	16	13
10		शत.	1	19	41
12		शत.	2	21	49
14		शत.	3	22	43
16		शत.	4	22	27
18		पू.भा.	1	21	5
20		पू.भा.	2	18	40
22		पू.भा.	3	15	16
24	मीन	पू.भा.	4	10	56
26		उ.भा.	1	5	42
27		उ.भा.	2	23	34
29		उ.भा.	3	16	41
31		उ.भा.	4	9	6
अप्रैल 2		रेव.	1	0	53

गुरु-चार (सन् 2021 ई.)

तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 7		श्रव.	1	3	48
21		श्रव.	2	8	46
फरवरी 4		श्रव.	3	9	53
18		श्रव.	4	13	16
मार्च 5		धनि.	1	1	58
20		धनि.	2	8	43
अप्रैल 6	कुम्भ	धनि.	3	0	26
25		धनि.	4	8	36
मई 22		शत.	1	6	49
जून 20	वक्री			20	36
जुलाई 20		धनि.	4	10	29
अगस्त 18		धनि.	3	6	22
सितम्बर 14	मकर	धनि.	2	14	29
अक्तूबर 18	मार्गी			11	01
नवम्बर 20	कुम्भ	धनि.	3	23	21
दिसम्बर 15		धनि.	4	8	10
(सन् 2022 ई.)					
जनवरी 2		शत.	1	15	46
18		शत.	2	15	34
फरवरी 2		शत.	3	10	54
16		शत.	4	14	41
मार्च 2		पू.भा.	1	11	5
16		पू.भा.	2	6	19
30		पू.भा.	3	5	38

शुक्र-चार (सन् 2021 ई.)

तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 1		ज्येष्ठा	4	13	11
4	धनु	मूल	1	5	3
6		मूल	2	20	54
9		मूल	3	12	44
12		मूल	4	4	33
14		पू.षा.	1	20	22
17		पू.षा.	2	12	11
20		पू.षा.	3	4	0
22		पू.षा.	4	19	49
25		उ.षा.	1	11	39
28	मकर	उ.षा.	2	3	29
30		उ.षा.	3	19	20
फरवरी 2		उ.षा.	4	11	10
5		श्रव.	1	3	1
7		श्रव.	2	18	53
10		श्रव.	3	10	44
13		श्रव.	4	2	37
15		धनि.	1	18	31
18		धनि.	2	10	26
21	कुम्भ	धनि.	3	2	22
23		धनि.	4	18	20
26		शत.	1	10	20
29		शत.	2	2	21
मार्च 3		शत.	3	18	24
6		शत.	4	10	28
9		पू.भा.	1	2	34
11		पू.भा.	2	18	41
14		पू.भा.	3	10	50
17	मीन	पू.भा.	4	3	0
19		उ.भा.	1	19	14
22		उ.भा.	2	11	30
25		उ.भा.	3	3	48
27		उ.भा.	4	20	9
30		रेव.	1	12	32
अप्रैल 2		रेव.	2	4	58
4		रेव.	3	21	26

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2021 से 1 अप्रैल, 2022 ई. तक)

शुक्र-चार (सन् 2021-2022 ई.)

तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
अप्रैल 7		रेव.	4	13	56
10	मेष	अश्वि.	1	6	28
12		अश्वि.	2	23	4
15		अश्वि.	3	15	41
18		अश्वि.	4	8	22
21		भर.	1	1	5
23		भर.	2	17	51
26		भर.	3	10	41
29		भर.	4	3	33
मई 1		कृत्ति.	1	20	28
4	वृष	कृत्ति.	2	13	26
7		कृत्ति.	3	6	25
9		कृत्ति.	4	23	27
12		रोहि.	1	16	32
15		रोहि.	2	9	39
18		रोहि.	3	2	49
20		रोहि.	4	20	2
23		मृग.	1	13	19
26		मृग.	2	6	38
28	मिथुन	मृग.	3	24	0
31		मृग.	4	17	25
जून 3		आर्द्रा	1	10	52
6		आर्द्रा	2	4	22
8		आर्द्रा	3	21	54
11		आर्द्रा	4	15	29

तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जून 14		पुन.	1	9	7
17		पुन.	2	2	48
19		पुन.	3	20	33
22	कर्क	पुन.	4	14	21
25		पुष्य	1	8	13
28		पुष्य	2	2	9
30		पुष्य	3	20	9
जुलाई 3		पुष्य	4	14	12
6		आश्ले.	1	8	18
9		आश्ले.	2	2	29
11		आश्ले.	3	20	43
14		आश्ले.	4	15	2
17	सिंह	मघा	1	9	26
20		मघा	2	3	55
22		मघा	3	22	31
25		मघा	4	17	12
28		पू.फा.	1	12	0
31		पू.फा.	2	6	53
अगस्त 3		पू.फा.	3	1	53
5		पू.फा.	4	20	59
8		उ.फा.	1	16	12
11	कन्या	उ.फा.	2	11	32
14		उ.फा.	3	7	1
17		उ.फा.	4	2	38
19		हस्त	1	22	24

तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
अगस्त 22		हस्त	2	18	21
25		हस्त	3	14	29
28		हस्त	4	10	47
31		चित्रा	1	7	16
सितम्बर 3		चित्रा	2	3	57
6	तुला	चित्रा	3	0	50
8		चित्रा	4	21	56
11		स्वाती	1	19	17
14		स्वाती	2	16	54
17		स्वाती	3	14	49
20		स्वाती	4	13	3
23		विशा.	1	11	38
26		विशा.	2	10	36
29		विशा.	3	9	58
अक्तूबर 2	वृश्चिक	विशा.	4	9	46
5		अनु.	1	10	3
8		अनु.	2	10	53
11		अनु.	3	12	19
14		अनु.	4	14	27
17		ज्येष्ठा	1	17	24
20		ज्येष्ठा	2	21	18
24		ज्येष्ठा	3	2	16
27		ज्येष्ठा	4	8	29
30	धनु	मूल	1	16	10
नवम्बर 3		मूल	2	1	34

तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
नवम्बर 6		मूल	3	13	5
10		मूल	4	3	15
13		पू.षा.	1	20	49
17		पू.षा.	2	18	57
21		पू.षा.	3	23	28
26		पू.षा.	4	13	28
दिसम्बर 1		उ.षा.	1	19	34
8	मकर	उ.षा.	2	13	52
19	वक्री			16	7
30	धनु	उ.षा.	1	8	0
(सन् 2022 ई.)					
जनवरी 5		पू.षा.	4	18	37
11		पू.षा.	3	6	29
17		पू.षा.	2	6	56
29	मार्गी			14	17
फरवरी 11		पू.षा.	3	13	28
17		पू.षा.	4	20	43
22		उ.षा.	1	22	36
27	मकर	उ.षा.	2	10	17
मार्च 3		उ.षा.	3	13	25
7		उ.षा.	4	10	45
11		श्रवण	1	3	53
14		श्रवण	2	17	47
18		श्रवण	3	5	6
21		श्रवण	4	14	19

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार
(1 जनवरी, 2021 से 1 अप्रैल, 2022 ई. तक)

शुक्र-चार (सन् 2022 ई.)

मार्च 24		धनि.	1	21	48
28		धनि.	2	3	50
31	कुम्भ	धनि.	3	8	39

शनि-चार (सन् 2021-22 ई.)

जनवरी 22		श्रवण	1	17	44
फरवरी 20		श्रवण	2	5	50
मार्च 25		श्रवण	3	9	47
मई 23	वक्री			14	48
जुलाई 24		श्रवण	2	21	6
सितम्बर 13		श्रवण	1	21	1
अक्तूबर 11	मार्गी			7	48
नवम्बर 7		श्रवण	2	10	39
दिसम्बर 21		श्रवण	3	21	51
जनवरी 21		श्रवण	4	2	38
फरवरी 18		धनि.	1	1	19
मार्च 19		धनि.	2	20	7

राहु-चार (सन् 2021-22 ई.)

जनवरी 27		रोहि.	4	7	57
मार्च 31		रोहि.	3	5	47
जून 2		रोहि.	2	3	28
अगस्त 4		रोहि.	1	0	49
अक्तूबर 5		कृत्ति.	4	22	40
दिसम्बर 7		कृत्ति.	3	20	16
फरवरी 8		कृत्ति.	2	17	38

केतु-चार (सन् 2021-22 ई.)

जनवरी 27		ज्ये.	2	7	57
मार्च 31		ज्ये.	1	5	47
जून 2		अनु.	4	3	28
अगस्त 4		अनु.	3	0	49
अक्तूबर 5		अनु.	2	22	40
दिसम्बर 7		अनु.	1	20	16
फरवरी 8		विशा.	4	17	38

यूरेनस-चार (सन् 2021-22 ई.)

जनवरी 14	मार्गी			14	8
फरवरी 25		भरणी	1	21	44
मई 3		भरणी	2	10	12
जुलाई 11		भरणी	3	12	10
अगस्त 20	वक्री			7	12
सितम्बर 29		भरणी	2	12	55
जनवरी 14		भरणी	1	4	56
18	मार्गी			20	58
23		भरणी	2	15	36

नेप्च्यून-चार (सन् 2021-22 ई.)

मार्च 16		पू.भा.	3	1	1
जून 26	वक्री			0	56
अक्तूबर 23		पू.भा.	2	2	14
दिसम्बर 1	मार्गी			18	56
जनवरी 9		पू.भा.	3	9	17

प्लूटो-चार (सन् 2021-22 ई.)

अप्रैल 28	वक्री			1	30
अक्तूबर 6	मार्गी			23	56
फरवरी 19		उ.षा.	3	4	5

ग्रहों के वक्र-मार्ग/उदयास्त की तारीखें
(1 जनवरी, 2021 से 1 अप्रैल, 2022 ई. तक)

ग्रह	वक्र/मार्ग	तारीख
वि.सं. 2078 में मंगल वर्षभर मार्गी रहेगा।		
बुध	वक्री	30 जन., 2021 ई.
बुध	मार्गी	21 फर., 2021 ई.
बुध	वक्री	30 मई, 2021 ई.
बुध	मार्गी	23 जून, 2021 ई.
बुध	वक्री	27 सितं., 2021 ई.
बुध	मार्गी	18 अक्तू., 2021 ई.
बुध	वक्री	14 जनवरी, 2022 ई.
बुध	मार्गी	4 फर., 2022 ई.
गुरु	वक्री	20 जून, 2021 ई.
गुरु	मार्गी	18 अक्तू., 2021 ई.
शुक्र	वक्री	19 दिसं., 2021 ई.
शुक्र	मार्गी	29 जनवरी, 2022 ई.
शनि	वक्री	23 मई, 2021 ई.
शनि	मार्गी	11 अक्तू., 2021 ई.
यूरेनस	मार्गी	14 जनवरी, 2021 ई.
यूरेनस	वक्री	20 अगस्त, 2021 ई.
यूरेनस	मार्गी	18 जनवरी, 2022 ई.
नेप्च्यून	वक्री	25 जून, 2021 ई.
नेप्च्यून	मार्गी	1 दिसं., 2021 ई.
प्लूटो	वक्री	28 अप्रैल, 2021 ई.
प्लूटो	मार्गी	7 अक्तू., 2021 ई.

ग्रह	उदय/अस्त	तारीख
मंगल	प. में अस्त	15 अग., 2021 ई.
मंगल	पू. में उदित	30 नवं., 2021 ई.
बुध	प. में उदित	11 जन., 2021 ई.
बुध	प. में अस्त	1 फर., 2021 ई.
बुध	पू. में उदित	15 फर., 2021 ई.
बुध	पू. में अस्त	6 अप्रैल, 2021 ई.
बुध	प. में उदित	1 मई, 2021 ई.
बुध	प. में अस्त	2 जून, 2021 ई.
बुध	पू. में उदित	20 जून, 2021 ई.
बुध	पू. में अस्त	18 जुलाई, 2021 ई.
बुध	प. में उदित	15 अग., 2021 ई.
बुध	प. में अस्त	3 अक्तू., 2021 ई.
बुध	पू. में उदित	16 अक्तू., 2021 ई.
बुध	पू. में अस्त	6 नवं., 2021 ई.
बुध	प. में उदित	24 दिसं., 2021 ई.
बुध	प. में अस्त	15 जन., 2022 ई.
बुध	पू. में उदित	31 जन., 2022 ई.
बुध	पू. में अस्त	20 मार्च, 2022 ई.
गुरु	प. में अस्त	17 जन., 2021 ई.
गुरु	पू. में उदित	15 फर., 2021 ई.
गुरु	प. में अस्त	23 फर., 2022 ई.
गुरु	पू. में उदित	26 मार्च, 2022 ई.
शुक्र	पू. में अस्त	9 फर., 2021 ई.
शुक्र	प. में उदित	18 अप्रैल, 2021 ई.
शुक्र	प. में अस्त	6 जन., 2022 ई.
शुक्र	पू. में उदित	12 जन., 2022 ई.
शनि	प. में अस्त	7 जन., 2021 ई.
शनि	पू. में उदित	10 फर., 2021 ई.
शनि	प. में अस्त	18 जन., 2022 ई.
शनि	पू. में उदित	22 फर., 2022 ई.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

संक्षिप्तरूपः– अं. नि.= अण्डेमान एवं निकोबार, अरुणा.= अरुणाचल प्रदेश, आं.=आन्ध्र प्रदेश, आसा.= आसाम , उ.= उड़ीसा, उ.प्र.=उत्तरप्रदेश, उ.आं उत्तरांचल, क.= कर्णाटक , के.= केरल, गु.= गुजरात, गोवा= गोवा, का.= जम्मू–काश्मीर, ता.= तामिलनाडु, त्रि.= त्रिपुरा, दा.ना.= दादर एण्ड नागर हवेली, डा.= डामन ड्यू, ना.= नागालैण्ड, बं.= प. बंगाल, पं.= पंजाब, पां.= पाण्डिचेरी, बि.=बिहार, झा.ख.= झारखण्ड, मणि.= मणिपुर, म.प्र.= मध्यप्रदेश, छ.ग.= छत्तीसगढ़, म.= महाराष्ट्र, मिज़ो.= मिज़ोरम, मे.= मेघालय, रा.= राजस्थान, लक्ष.= लक्षद्वीप, सि.= सिक्किम, ह.= हरियाणा, हि.= हिमाचल प्रदेश,

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अकबरपुर	(उ.प्र.)	26 25	82 33	+ 0 12
अंकलेश्वर	(गु.)	21 38	73 02	–37 52
अकोला	(म.)	20 40	77 05	–21 40
अखनूर	(का.)	32 53	74 45	–31 00
अगरतला	(त्रि.)	23 48	91 15	+35 00
अगरोहा	(ह.)	29 21	75 38	–27 28
अंगुल	(उ.)	20 48	85 04	+10 16
अच्छीवाल	(का.)	33 41	75 14	–29 04
अजन्ता	(म.)	20 30	75 48	–26 48
अजनाला	(पं.)	31 51	74 48	–30 48
अजमेर	(रा.)	26 27	74 42	–31 12
अटारी	(पं.)	31 36	74 35	–31 40
अतनेर	(म.प्र.)	21 40	77 59	–18 04
अनन्तनाग	(का.)	33 44	75 10	–29 20
अनन्तपुर	(आं.)	14 42	77 36	–19 36
अनामलै	(ता.)	10 34	76 50	–22 40
अनूपगढ़	(रा.)	29 07	73 06	–37 36
अनूपशहर	(उ.प्र.)	28 22	78 16	–16 56
अबोहर	(पं.)	30 09	74 11	–33 16
अमरकंटक	(म.प्र.)	22 40	81 45	– 3 00
अमरनाथगुफा	(का.)	34 13	75 32	–27 52
अमरावती	(म.)	20 56	77 45	–19 00
अमरावती	(आं.)	16 35	80 20	– 8 40
अमरेली	(गु.)	21 36	71 18	–44 48
अमरोहा	(उ.प्र.)	28 54	78 29	–16 04
अमलापुरम्	(आं.)	16 36	82 03	– 1 48
अमलोह	(पं.)	30 37	76 14	–25 04

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अमीनगांव	(आसा.)	26 13	91 45	+37 00
अमृतसर	(पं.)	31 37	74 55	–30 20
अमेठी	(उ.प्र.)	26 08	81 50	– 2 40
अम्ब	(हि.)	31 42	76 07	–25 32
अम्बाला	(ह.)	30 21	76 52	–22 32
अम्बाह	(उ.प्र.)	26 43	78 15	–17 00
अम्बिकापुर	(छ.ग.)	23 07	83 12	+ 2 48
अयोध्या	(उ.प्र.)	26 48	82 12	– 1 12
अरकोट	(ता.)	12 54	79 20	–12 40
अरकोणम्	(ता.)	13 05	79 40	–11 20
अर्की	(हि.)	31 09	76 58	–22 08
अर्वी.	(म.)	21 00	78 18	–16 48
अरारिया	(बि.)	26 08	87 24	+19 36
अल्मोड़ा	(उ.आं.)	29 37	79 40	–11 20
अलवर	(रा.)	27 34	76 38	–23 28
अलीगंज	(उ.प्र.)	27 30	79 11	–13 16
अलीगढ़	(उ.प्र.)	27 53	78 05	–17 40
अलीपुर	(बं.)	22 32	88 20	+23 20
अलीपुर दुआर	(बं.)	26 29	89 44	+28 56
अलीबाग	(म.)	18 38	72 55	–38 20
अवनिगड्डा	(आं.)	16 03	80 59	– 6 04
अशोकनगर	(म.प्र.)	24 33	77 43	–19 08
अहमदनगर	(म.)	19 05	74 44	–31 04
अहमदाबाद	(गु.)	23 03	72 40	–39 20
अहवा	(गु.)	20 44	73 41	–35 16
आगरा	(उ.प्र.)	27 11	78 01	–17 56
आजमगढ़	(उ.प्र.)	26 04	83 11	+ 2 44

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
आडोनी	(आं.)	15 38	77 16	–20 56
आदिलाबाद	(आं.)	19 40	78 31	–15 56
आनन्द	(गु.)	22 34	73 01	–37 56
आनन्दपुरसाहिब	(पं.)	31 15	76 31	–23 56
आनी	(हि.)	31 27	77 25	–20 20
आबू	(रा.)	24 40	72 45	–39 00
आरा	(बि.)	25 34	84 40	+ 8 40
आरामबाग	(बं.)	22 53	87 47	+21 08
आसनसोल	(बं.)	23 41	86 59	+17 56
आसिन्द	(रा.)	25 42	74 21	–32 36
इच्छापुरम्	(उ.)	19 10	84 43	+ 8 52
इटारसी	(म.प्र.)	22 37	77 45	–19 00
इटावा	(उ.प्र.)	26 47	79 02	–13 52
इन्दौर	(म.प्र.)	22 44	75 50	–26 40
इन्दौरा	(हि.)	32 07	75 40	–27 20
इम्फाल	(मणि.)	24 47	93 57	+45 48
इलाहाबाद	(उ.प्र.)	देखें	प्रयाग	–
ईटानगर	(अरुणा.)	27 05	93 40	+44 40
ईसागढ़	(म.प्र.)	24 50	77 53	–18 28
उखरूल	(मणि.)	25 07	94 23	+47 32
उगाला	(ह.)	30 11	76 59	–22 04
उज्जैन	(म.प्र.)	23 09	75 43	–27 08
उड़ी	(का.)	34 05	74 01	–33 56
उडुपी	(क.)	13 23	74 45	–31 00
उत्तरकाशी	(उ.आं.)	30 44	78 27	–16 12
उदयगिरि	(उ.)	19 08	84 10	+ 6 40
उदयपुर	(त्रि.)	23 32	91 29	+35 50

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
उदयपुर	(रा.)	24 35	73 41	−35 16
उन्नाव	(उ.प्र.)	26 32	80 30	− 8 00
उपशी	(का.)	33 52	77 50	−18 40
उमरकोट	(उ.)	19 39	82 18	− 0 48
उरई	(उ.प्र.)	25 59	79 28	−12 08
उल्हासनगर	(म.)	19 13	73 07	−37 32
ऊटकमण्ड	(ता.)	11 24	76 44	−23 04
ऊधमपुर	(का.)	32 54	75 06	−29 36
ऊना	(हि.)	31 29	76 17	−24 52
एकलिंगजी	(रा.)	24 43	73 46	−34 56
एटा	(उ.प्र.)	27 38	78 40	−15 20
एरोड	(ता.)	11 20	77 46	−18 56
एर्नाकुलम्	(के.)	10 00	76 16	−24 56
एलिचपुर	(म.)	21 18	77 33	−19 48
एलुरु	(आं.)	16 43	81 09	− 5 24
एलेप्पे	(के.)	9 30	76 22	−24 32
एलोरा	(म.)	20 04	75 15	−29 00
ऐजावल	(मिज़ो.)	23 43	92 44	+40 56
ओखा	(गु.)	22 26	69 02	−53 52
ओंगोल	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36
ओरैय्या	(उ.प्र.)	26 28	79 31	−11 56
ओस्मानाबाद	(म.)	18 09	76 06	−25 36
औट	(हि.)	31 47	77 11	−21 16
औरंगाबाद	(म.)	19 52	75 22	−28 32
कटक	(उ.)	20 26	85 56	+13 44
कटनी	(म.प्र.)	23 47	80 27	− 8 12
कटरा	(का.)	32 59	74 57	−30 12
कटराई	(हि.)	32 07	77 07	−21 32
कटिहार	(बि.)	25 30	87 35	+20 20
कठुआ	(का.)	32 22	75 32	−27 52
कण्डाघाट	(हि.)	30 58	77 07	−21 32
कन्नूर	(के.)	11 52	75 25	−28 20
कन्नौज	(उ.प्र.)	27 04	79 55	−10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कपूरथला	(पं.)	31 23	75 23	−28 28
करतारपुर	(पं.)	31 27	75 30	−28 00
कर्णप्रयाग	(उ.आं.)	30 13	79 17	−12 52
करनाल	(ह.)	29 42	77 02	−21 52
करसोग	(हि.)	31 23	77 13	−21 08
कराड	(म.)	17 15	74 12	−33 12
करूर	(ता.)	10 58	78 03	−17 48
कालाअम्ब	(हि.)	30 30	77 13	−21 08
काल्पा	(हि.)	31 32	78 15	−17 00
करीमगंज	(आसा.)	24 48	92 30	+40 00
करीमनगर	(आं.)	18 27	79 06	−13 36
करौली	(रा.)	26 30	77 01	−21 56
कर्नूल	(आं.)	15 50	78 05	−17 40
कल्याण	(म.)	19 17	73 11	−37 16
कवरत्ती	(लक्ष.)	10 33	72 38	−39 28
कवार्धा	(छ.ग.)	22 00	81 15	− 5 00
कसारागोड	(के.)	12 30	75 00	−30 00
कसौली	(हि.)	30 55	76 57	−22 12
काकिनाडा	(आं.)	16 56	82 13	− 1 08
कांकेर	(म.प्र.)	20 17	81 32	− 3 52
कांगड़ा	(हि.)	32 05	76 18	−24 48
कांचीपुरम्	(ता.)	12 50	79 44	−11 04
काठगोदाम	(उ.आं.)	29 16	79 32	−11 52
काठियावाड़	(गु.)	22 00	71 00	−46 00
कादियां	(पं.)	31 49	75 23	−28 28
कानपुर	(उ.प्र.)	26 28	80 21	− 8 36
कामठी (काम्पटी)	(म.)	21 12	79 16	−12 56
कारकाल	(क.)	13 12	74 59	−30 04
कारगिल	(का.)	34 31	76 13	−25 08
कारवाड़	(क.)	14 50	74 09	−33 24
कारिकाल	(पां.)	10 55	79 50	−10 40
कालका	(ह.)	30 50	76 56	−22 16
कालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कालिकट	(के.)	11 15	75 46	−26 56
कालिम्पोंग	(बं.)	27 04	88 29	+23 56
काशी	(उ.प्र.)	देखें	वाराणसी	— —
कियारीघाट	(हि.)	31 00	77 05	−21 40
किरकी	(म.)	18 36	73 57	−34 12
किश्तवाड़	(का.)	33 19	75 48	−26 48
किशनगंज	(बि.)	26 10	87 56	+21 44
किशनगढ़ (अजमेर)	(रा.)	26 34	74 52	−30 32
कीरतपुरसाहिब	(पं.)	31 11	76 34	−23 44
कुड्डप्पा	(ता.)	14 28	78 50	−14 40
कुड्डालूर	(ता.)	11 43	79 49	−10 44
कुफरी	(हि.)	31 06	77 12	−21 12
कुंभकोणम्	(ता.)	10 59	79 24	−12 24
कुमारी अन्तरीप	(ता.)	8 05	77 34	−19 44
कुम्हारहट्टी	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
कुराली	(पं.)	30 50	76 35	−23 40
कुरुक्षेत्र	(ह.)	29 59	76 50	−22 40
कुल्लू	(हि.)	31 58	77 06	−21 36
कूच बिहार	(बं.)	26 19	89 26	+27 44
कृष्णानगर	(बं.)	23 24	88 30	+24 00
केओंजरगढ़	(उ.)	21 38	85 35	+12 20
केन्द्रपाड़ा	(उ.)	20 30	86 25	+15 40
केदारनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 04	−13 44
केप कैमोरिन	(ता.)	देखें	कुमारी	अन्तरीप
केसरी	(ह.)	30 14	76 54	−22 24
कैथल	(ह.)	29 48	76 26	−24 16
कैलाशहर	(त्रि.)	24 18	92 01	+38 04
कोचीन	(के.)	9 58	76 14	−25 04
कोटकपूरा	(पं.)	30 36	74 54	−30 24
कोटखाई	(हि.)	31 08	77 36	−19 36
कोटगढ़	(हि.)	31 19	77 29	−20 04
कोटा	(रा.)	25 10	75 52	−26 32
कोट्टागुडम्	(आं.)	17 32	80 39	− 7 24

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कोट्टायम्	(के.)	9 34	76 31	−23 56
कोटद्वारा	(उ.आं.)	29 45	78 32	−15 52
कोंटई	(बं.)	21 50	87 48	+21 12
कोडैकनाल	(ता.)	10 14	77 29	−20 04
कोणार्क	(उ.)	19 54	86 07	+14 28
कोप्पल	(क.)	15 21	76 09	−25 24
कोयम्बटूर	(ता.)	11 00	77 00	−22 00
कोरबा	(छ.ग.)	22 22	82 42	+ 0 48
कोरापुट	(उ.)	18 48	82 41	+ 0 44
कोलकाता	(बं.)	22 34	88 24	+23 36
कोल्हापुर	(म.)	16 42	74 19	−32 44
कोलार	(क.)	13 10	78 10	−17 20
कोल्लेगाल	(क.)	12 08	77 06	−21 36
कोलेबीरा	(बि.)	22 43	84 42	+ 8 48
कोहिमा	(नागा.)	25 39	94 08	+46 32
क्विलोन	(के.)	8 54	76 38	−23 28
खजियार	(हि.)	32 32	76 04	−25 44
खड़गपुर	(बं.)	22 20	87 20	+19 20
खंडवा	(म.प्र.)	21 50	76 23	−24 28
खतौली	(उ.प्र.)	29 17	77 43	−19 08
खन्ना	(पं.)	30 42	76 13	−25 08
खम्भालिया	(गु.)	22 12	69 39	−51 24
खम्मम्	(आं.)	17 16	80 13	− 9 08
खरगोन	(म.प्र.)	21 52	75 36	−27 36
खरड़	(पं.)	30 45	76 37	−23 32
खलीलाबाद	(उ.प्र.)	26 47	83 04	+ 2 16
खुर्जा	(उ.प्र.)	28 13	77 50	−18 40
खुर्दा	(उ.)	20 10	85 38	+12 32
खेड़ा	(गु.)	22 45	72 45	−39 00
खेमकरण	(पं.)	31 08	74 34	−31 44
गगरेट	(हि.)	31 40	76 04	−25 44
गंगटोक	(सि.)	27 22	88 36	+24 24
गंजम्	(उ.)	19 28	85 05	+10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
गढ़चिराली	(म.)	20 12	80 00	−10 00
गढ़मुक्तेश्वर	(उ.प्र.)	28 48	78 06	−17 36
गढ़वा (गरवा)	(झा.खं.)	24 10	83 52	+ 5 28
गढ़शंकर	(पं.)	31 13	76 08	−25 28
गदग	(क.)	15 26	75 42	−27 12
गया	(बि.)	24 49	85 01	+10 04
गाजियाबाद	(उ.प्र.)	28 40	77 26	−20 16
गाजीपुर	(उ.प्र.)	25 35	83 34	+ 4 16
गांधीधाम	(गु.)	23 06	70 08	−49 28
गिरडीह	(झा.खं.)	24 12	86 21	+15 24
गिलगित	(का.)	35 55	74 21	−32 36
गुड़गांव	(ह.)	28 27	77 04	−21 44
गुंटकल	(आं.)	15 11	77 24	−20 24
गुंटूर	(आं.)	16 20	80 27	− 8 12
गुड़ीवाड़ा	(आं.)	16 27	81 00	− 6 00
गुडूर	(आं.)	14 10	79 51	−10 36
गुना	(म.प्र.)	24 40	77 20	−20 40
गुम्मा	(हि.)	31 06	77 28	−20 08
गुरदासपुर	(पं.)	32 02	75 27	−28 12
गुलबर्गा	(क.)	17 20	76 50	−22 40
गुलमर्ग	(का.)	34 05	74 25	−32 20
गुवाहाटी	(आसा.)	26 10	91 45	+37 00
गोइन्दवाल	(पं.)	31 22	75 08	−29 28
गोंडल	(गु.)	21 56	70 50	−46 40
गोंडा	(उ.प्र.)	27 08	82 01	− 1 56
गोधरा	(गु.)	22 49	73 40	−35 20
गोपालगंज	(बि.)	26 28	84 26	+ 7 44
गोम्पा	(का.)	35 02	77 20	−20 40
गोरखपुर	(उ.प्र.)	26 45	83 22	+ 3 28
गोरस	(म.प्र.)	25 32	76 56	−22 16
गोहाना	(ह.)	29 08	76 42	−23 12
गौंडीया	(म.)	21 26	80 14	− 9 04
ग्वालियर	(म.प्र.)	26 14	78 10	−17 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
घरौण्डा	(ह.)	29 33	76 58	−22 08
घाटल	(बं.)	22 40	87 43	+20 52
घाटसिला	(झा.खं.)	22 36	86 29	+15 56
घुमारवीं	(हि.)	31 26	76 43	−23 08
चच्योट	(हि.)	31 32	77 01	−21 56
चण्डीगढ़	(यू.टी.)	30 45	76 50	−22 40
चण्डीमन्दिर कैंट	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
चन्दननगर	(बं.)	22 51	88 21	+23 24
चन्दौसी	(उ.प्र.)	28 27	78 46	−14 56
चन्द्रपुर	(म.)	19 57	79 18	−12 48
चम्बा	(हि.)	32 34	76 08	−25 28
चमौली	(उ.आं.)	30 24	79 21	−12 36
चरखी दादरी	(ह.)	28 37	76 18	−24 48
चामुण्डा जी	(हि.)	32 07	76 23	−24 28
चायल	(हि.)	30 59	77 12	−21 12
चास	(झा.खं.)	23 38	86 10	+14 40
चिक मंगलूर	(क.)	13 19	75 47	−26 52
चिंगलपुट	(ता.)	12 42	80 01	− 9 56
चित्तरंजन	(बं.)	23 52	86 52	+17 28
चित्तूर	(आं.)	13 12	79 07	−13 32
चितौड़गढ़	(रा.)	24 54	74 40	−31 20
चित्रदुर्ग	(क.)	14 14	76 24	−24 24
चित्रौद	(गु.)	23 25	70 42	−47 12
चिदम्बरम्	(ता.)	11 25	79 42	−11 12
चिन्तपूरणी	(हि.)	31 49	76 07	−25 32
चिनसुरा	(बं.)	22 53	88 25	+23 40
चिरगांव	(उ.प्र.)	25 35	78 49	−14 44
चिराला	(आं.)	15 50	80 21	− 8 36
चुंगतास	(का.)	35 37	78 37	−15 32
चुनार	(उ.प्र.)	25 08	82 56	+ 1 44
चुशुल	(का.)	33 34	78 38	−15 28
चूड़चांदपुर	(मणि.)	24 19	93 40	+44 40
चूरू	(रा.)	28 19	75 01	−29 56

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
चेन्नई	(ता.)	देखें	मद्रास	—
चेरापूंजी	(मे.)	25 17	91 42	+36 48
चौपाल	(हि.)	30 57	77 36	−19 36
छतरपुर	(उ.)	19 24	85 00	+10 00
छतरपुर	(म.प्र.)	24 54	79 38	−11 28
छपरा	(बि.)	25 47	84 45	+ 9 00
छिंदवाड़ा	(म.प्र.)	22 03	78 58	−14 08
छिब्रामऊ	(उ.प्र.)	27 09	79 31	−11 56
छोटा उदयपुर	(गु.)	22 19	74 01	−33 56
जगदलपुर	(छ.ग.)	19 05	82 04	− 1 44
जगरांव	(पं.)	30 47	75 29	−28 04
जगाधरी	(ह.)	30 10	77 18	−20 48
जंगीपुर	(बं.)	24 28	88 04	+22 16
जण्ड्याला	(पं.)	31 36	75 03	−29 48
जतोग	(हि.)	31 06	77 07	−21 32
जनगांव	(आं.प्र.)	17 44	79 10	−13 20
जबलपुर	(म.प्र.)	23 10	79 59	−10 04
जम्बूसार	(गु.)	22 00	72 50	−38 40
जमशेदपुर	(बि.)	22 50	86 10	+14 40
जमालपुर	(बि.)	25 19	86 32	+16 08
जमूई	(बि.)	24 55	86 13	+14 52
जम्मू	(का.)	32 43	74 54	−30 24
जयपुर	(आसा.)	27 14	95 24	+51 36
जयपुर	(रा.)	26 55	75 52	−26 32
जलगांव	(म.)	21 03	75 39	−27 24
जलपाईगुड़ी	(बं.)	26 31	88 44	+24 56
जलालाबाद	(उ.प्र.)	27 43	79 40	−11 20
जशपुरनगर	(छ.ग.)	22 53	84 12	+ 6 48
जसरा	(उ.प्र.)	25 17	81 48	− 2 48
जसरोटा	(का.)	32 29	75 27	−28 12
जाखल	(ह.)	29 48	75 50	−26 40
जामनगर	(गु.)	22 28	70 06	−49 36
जालना	(म.)	19 50	75 58	−26 08

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
जालन्धर	(पं.)	31 19	75 34	−27 44
जालेश्वर	(उ.)	21 48	87 14	+18 56
जालोर	(रा.)	25 22	72 38	−39 28
जालौन	(उ.प्र.)	26 09	79 21	−12 36
ज़िरो	(अरुणा.)	27 32	93 47	+45 08
जींद	(ह.)	29 19	76 19	−24 44
ज़ीरा	(पं.)	30 58	74 59	−30 04
जुब्बल	(हि.)	31 07	77 39	−19 14
जूनागढ़	(गु.)	21 32	70 34	−47 44
जेतपुर	(गु.)	21 43	70 42	−47 12
जैतों	(पं.)	30 28	74 53	−30 28
जैसलमेर	(रा.)	26 55	70 54	−46 24
जोगिन्द्रनगर	(हि.)	31 59	76 46	−22 56
जोधपुर	(रा.)	26 18	73 04	−37 44
जोरहाट	(आसा.)	26 45	94 12	+46 48
जौनपुर	(उ.प्र.)	25 44	82 41	+ 0 44
ज्वालाजी	(हि.)	31 53	76 22	−24 32
ज्वालामुखी	(हि.)	31 53	76 19	−24 44
झज्जर	(ह.)	28 37	76 39	−23 24
झाबुआ	(म.प्र.)	22 45	74 38	−31 28
झरिया	(झा.खं.)	23 45	86 24	+15 36
झांसी	(उ.प्र.)	25 26	78 35	−15 40
झालरापाटन	(रा.)	24 33	76 10	−25 20
झालावाड़	(रा.)	24 36	76 09	−25 24
झुंझुनू	(रा.)	28 06	75 25	−28 20
टांडा उरमुर	(पं.)	31 42	75 38	−27 28
टिकापाड़ा डैम	(उ.)	20 32	84 56	+ 9 44
टिथवाल	(का.)	34 24	73 47	−34 52
टिहरी	(उ.आं.)	30 20	78 30	−16 00
टीकमगढ़	(म.प्र.)	24 45	78 53	−14 28
टीहरा सुजानपुर	(हि.)	31 51	76 32	−23 52
टुंकुर	(क)	13 21	77 05	−21 40
टूटीकोरिन	(ता.)	8 40	78 11	−17 16

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
टुण्डला	(उ.प्र.)	27 12	78 17	−16 52
टोंक	(रा.)	26 11	75 50	−26 40
टोडा रायसिंह	(रा.)	26 00	75 29	−28 04
टोहाना	(ह.)	29 42	75 54	−26 24
ट्रावनकोर	(के.)	9 00	77 00	−22 00
ठयोग	(हि.)	31 07	77 21	−20 36
डगशई	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
डबवाली	(पं.)	29 58	74 45	−31 00
डमटाल	(हि.)	32 12	75 40	−27 20
डलहौज़ी	(हि.)	32 32	75 59	−26 04
डामन	(डा.)	20 25	72 53	−38 28
डायमंड हार्बर	(बं.)	22 12	88 12	+22 48
डालटनगंज	(झा.खं.)	24 02	84 04	+ 6 16
डिगबोई	(आसा.)	27 22	95 40	+52 40
डिंडीगुल	(क.)	10 22	78 00	−18 00
डिबाई	(उ.प्र.)	28 13	78 15	−17 00
डिब्रूगढ़	(आसा.)	27 29	94 56	+49 44
डीडवाना	(रा.)	27 24	74 34	−31 44
डीसा	(गु.)	24 14	72 13	−41 08
डूंगरपुर	(रा.)	23 50	73 43	−35 08
डोडा	(का.)	33 10	75 35	−27 40
ड्यू	(डा.)	20 42	71 01	−45 56
ढुबरी	(आसा.)	26 02	89 58	+29 52
तंजावर	(ता.)	10 46	79 09	−13 24
तपा	(पं.)	30 19	75 21	−28 36
तरनतारन	(पं.)	31 27	74 58	−30 08
तवांग	(अरुणा.)	27 35	91 52	+37 28
तांगला	(आसा.)	26 40	91 57	+37 48
ताड़पत्री	(आं.)	14 55	77 59	−18 04
तामलुक	(बं.)	22 18	87 55	+21 40
ताम्बरम्	(ता.)	12 55	80 07	− 9 32
तारकेश्वर	(बं.)	22 54	88 02	+22 08
तारा	(गु.)	24 00	71 51	−42 36

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
तारादेवी	(हि.)	31 03	77 08	−21 28
तिनसुकिया	(आसा.)	27 28	95 20	+51 20
तिरुवनन्तपुरम्	(के.)	8 30	76 58	−22 08
तिरुपति	(आं.)	13 39	79 25	−12 20
तिरुप्पर	(क.)	11 05	77 20	−20 40
तिरुवन्नामलै	(ता.)	12 13	79 04	−13 44
तुर्रा	(मे.)	25 30	90 13	+30 52
तेज़पुर	(आसा.)	26 38	92 49	+41 16
तेनाली	(आं.)	16 13	80 36	− 7 36
तेरुनेलवेली	(ता.)	8 45	77 43	−19 08
त्रिचुरापल्ली	(ता.)	10 49	78 41	−15 16
त्रिचूर	(के.)	10 32	76 14	−25 04
त्रिवेन्द्रम्	(के.)	देखें —	तिरुवनन्तपुरम्	
थराड़	(गु.)	24 26	71 40	−43 20
थानेधार	(हि.)	31 20	77 34	−19 44
थानेसर	(ह.)	29 58	76 56	−22 16
दतिया	(म.प्र.)	25 39	78 27	−16 12
दन्तेवाड़ा	(छ.ग.)	18 52	81 22	− 4 32
दभोई	(गु.)	22 08	73 28	−36 08
दमोह	(म.प्र.)	23 50	79 29	−12 04
दरभंगा	(बि.)	26 10	85 57	+13 48
दसूहा	(पं.)	31 49	75 38	−27 28
दादरी	(ह.)	28 34	77 33	−19 48
दानापुर	(बि.)	25 38	85 05	+10 20
दार्जिलिंग	(बं.)	27 02	88 16	+23 04
दावनगेरे	(क.)	14 30	75 52	−26 32
दिल्ली	(यू.टी.)	28 38	77 12	−21 12
दीनानगर	(पं.)	32 09	75 28	−28 08
दीमापुर	(नागा.)	25 53	93 43	+44 52
दुजाना	(ह.)	28 41	76 37	−23 32
दुमका	(झा.खं.)	24 16	87 15	+19 00
दुर्ग	(म.प्र.)	21 11	81 17	− 4 52

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
दुर्गापुर	(बं.)	23 29	87 20	+19 20
देओगढ़	(उ.)	21 32	84 46	+ 9 04
देओट सिद्ध	(हि.)	31 28	76 34	−23 44
देवघर	(बि.)	24 30	86 42	+16 48
देवप्रयाग	(उ.आं.)	30 09	78 37	−15 32
देवबन्द	(उ.प्र.)	29 42	77 41	−19 16
देवरिया	(उ.प्र.)	26 31	83 47	+ 5 08
देवलाली	(म.)	19 58	73 52	−34 32
देवास	(म.प्र.)	22 58	76 06	−25 36
देहरा गोपीपुर	(हि.)	31 54	76 13	−25 08
देहरादून	(उ.आं.)	30 19	78 02	−17 52
देहरी	(बि.)	24 52	84 11	+ 6 44
दोराहा मण्डी	(पं.)	30 49	76 02	−25 52
दौसा	(रा.)	26 51	76 21	−24 36
द्रास	(का.)	34 27	75 46	−26 56
द्वारिका	(गु.)	22 14	69 02	−53 52
धनबाद	(झा.खं.)	23 47	86 30	+16 00
धनुष्कोडी	(ता.)	9 12	79 25	−12 20
धमतरी	(छ.ग.)	20 42	81 34	− 3 44
धर्मजयगढ़	(म.प्र.)	22 28	83 13	+ 2 52
धर्मपुर	(हि.)	30 53	77 02	−21 52
धर्मशाला	(हि.)	32 16	76 23	−24 28
धांगधरा	(गु.)	22 59	71 29	−44 04
धार	(म.प्र.)	22 35	75 20	−28 40
धारवाड़	(क.)	15 30	75 04	−29 44
धुले	(म.)	20 58	74 47	−30 52
धेन कानाल	(उ.)	20 40	85 39	+12 36
धौलपुर	(रा.)	26 42	77 53	−18 28
नईहाटी	(बं.)	22 57	88 25	+23 40
नकोदर	(पं.)	31 07	75 29	−28 04
नगर	(हि.)	32 07	77 08	−21 28
नगरोटा बगवां	(हि.)	32 06	76 22	−24 32
नजीबाबाद	(उ.प्र.)	29 38	78 20	−16 40

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
नडियाद	(गु.)	22 42	72 55	−38 20
नन्दापुर	(उ.)	18 32	82 52	+ 1 28
नन्दुरबार	(म.)	21 22	74 15	−33 00
नयागढ़	(उ.)	20 10	85 08	+10 32
नरवाणा	(ह.)	29 37	76 07	−25 32
नरसिंहपुरा	(उ.)	20 28	85 08	+10 32
नरेन्द्रनगर	(उ.आं.)	30 10	78 20	−16 40
नरैना	(रा.)	26 50	74 11	−33 16
नवद्वीप	(बं.)	23 25	88 22	+23 28
नवरंगपुर	(उ.)	19 15	82 39	+ 0 36
नवलगढ़	(रा.)	27 51	75 18	−28 48
नवसारी	(गु.)	20 52	72 56	−38 16
नवांशहर	(पं.)	31 07	76 08	−25 28
नसीराबाद	(रा.)	26 18	74 46	−30 56
नागापट्टनम्	(ता.)	10 45	79 50	−10 40
नागपुर	(म.)	21 10	79 10	−13 20
नागरकोयल	(ता.)	8 10	77 26	−20 16
नागौर	(रा.)	27 11	73 44	−35 04
नाचना	(रा.)	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा	(रा.)	24 56	73 50	−34 40
नान्देड़	(म.)	19 11	77 21	−20 36
नानपाड़ा	(उ.प्र.)	27 52	81 30	− 4 00
नान्दोड़	(गु.)	21 52	73 32	−35 52
नाभा	(पं.)	30 22	76 08	−25 28
नारकण्डा	(हि.)	31 16	77 27	−20 12
नारनौल	(ह.)	28 03	76 14	−25 04
नारायणगढ़	(ह.)	30 29	77 08	−21 28
नालगोंडा	(आं.)	17 04	79 15	−13 00
नालन्दा	(बि.)	25 07	85 25	+11 40
नालागढ़	(हि.)	31 03	76 42	−23 12
नालिया	(गु.)	23 19	68 51	−54 36
नासिक	(म.)	20 00	73 52	−34 32
नाहन	(हि.)	30 33	77 21	−20 36

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
निज़ामाबाद	(आं.)	18 40	78 07	−17 40
निम्बहेड़ा	(रा.)	24 37	74 45	−31 00
निरमण्ड	(हि.)	31 27	77 34	−19 44
नीमच	(म.प्र.)	24 27	74 52	−30 32
नीलगिरि	(उ.)	21 29	86 49	+17 16
नीलोखेड़ी	(ह.)	29 51	76 55	−22 20
नूरपुर	(हि.)	32 18	75 54	−26 24
नूरपुरबेदी	(पं.)	31 09	76 29	−24 04
नैनवा	(रा.)	25 45	75 57	−26 12
नैनीताल	(उ.आं.)	29 23	79 27	−12 12
नैल्लूर	(आं.)	14 29	80 00	−10 00
नोखामण्डी	(रा.)	27 35	73 29	−36 04
नोंगस्टोइन	(मे.)	25 31	91 16	+35 04
नोहर	(रा.)	29 11	74 46	−30 56
नौशहरा	(का.)	33 10	74 15	−33 00
पचपदरा	(रा.)	25 55	72 21	−40 36
पंचकूला	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
पंचमढ़ी	(म.प्र.)	22 28	78 26	−16 16
पंजिम	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40
पटना	(बि.)	25 37	85 13	+10 52
पटियाला	(पं.)	30 20	76 25	−24 20
पट्टी	(पं.)	31 17	74 51	−30 36
पटौदी	(ह.)	28 18	76 48	−22 48
पठानकोट	(पं.)	32 17	75 42	−27 12
पंढरपुर	(म.)	17 42	75 24	−28 24
पन्ना	(म.प्र.)	24 44	80 14	− 9 04
परभानी	(म.)	19 16	76 51	−22 36
पराकसम	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36
पलवल	(ह.)	28 09	77 20	−20 40
पहलगाम	(का.)	34 01	75 20	−28 40
पाकौर	(झा.खं.)	24 38	87 54	+21 36
पाटन	(गु.)	23 50	72 09	−41 24
पाटनगढ़	(उ.)	20 43	83 09	+ 2 36

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
पाठलगांव	(म.प्र.)	22 34	83 28	+ 3 52
पाण्डिचेरी	(पां.)	11 58	79 54	−10 24
पणजी	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40
पानीपत	(ह.)	29 23	77 00	−22 00
पापड़हांडी	(उ.)	19 22	82 34	+ 0 16
पालनपुर	(गु.)	24 12	72 29	−40 04
पालमपुर	(हि.)	32 07	76 33	−23 48
पालिताणा	(गु.)	21 30	71 50	−42 40
पाली	(रा.)	25 46	73 20	−36 40
पालयंकोट्टै	(ता.)	8 42	77 46	−18 56
पांवटा साहिब	(हि.)	30 27	77 37	−19 32
पासीघाट	(अरुणा.)	28 05	95 20	+51 20
पिठोरागढ़	(उ.आं.)	29 35	80 13	− 9 08
पिपली	(ह.)	29 58	76 53	−22 28
पिहोवा	(ह.)	29 57	76 37	−23 32
पीलीभीत	(उ.प्र.)	28 38	79 48	−10 48
पुंछ	(का.)	33 51	74 06	−33 36
पुट्टापर्त्ती	(आं.)	14 15	77 45	−19 00
पुदुक्कोट्टै	(ता.)	10 23	78 49	−14 44
पुरनिया	(बि.)	25 49	87 31	+20 04
पुरी	(उ.)	19 48	85 52	+13 28
पुरुलिया	(बं.)	23 20	86 22	+15 28
पुष्कर	(रा.)	26 30	74 33	−31 48
पूना	(म.)	18 34	73 53	−34 28
पोरबन्दर	(गु.)	21 40	69 36	−51 36
पोर्टब्लेयर	(अं.नि.)	11 41	92 43	+40 52
पोलाची	(ता.)	10 38	77 00	−22 00
पौड़ी	(उ.आं.)	30 09	78 47	−14 52
प्रतापगढ़	(उ.प्र.)	25 50	81 59	− 2 04
प्रतापगढ़	(म.प्र.)	24 02	74 47	−30 52
प्रयाग	(उ.प्र.)	25 28	81 54	− 2 24
प्रोद्दातूर	(ता.)	14 45	78 35	−15 40
फगवाड़ा	(पं.)	31 14	75 46	−26 56

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
फतेहपुर	(उ.प्र.)	25 56	80 52	− 6 32
फतेहपुर सीकरी	(उ.प्र.)	27 06	77 40	−19 20
फतेहाबाद	(उ.प्र.)	27 01	78 19	−16 44
फतेहाबाद	(ह.)	29 31	75 28	−28 08
फरीदकोट	(पं.)	30 40	74 40	−31 20
फरीदाबाद	(ह.)	28 26	77 19	−20 44
फर्रुखाबाद	(उ.प्र.)	27 24	79 34	−11 44
फाज़िल्का	(पं.)	30 25	74 04	−33 44
फिरोज़पुर	(पं.)	30 55	74 40	−31 20
फिरोज़ाबाद	(उ.प्र.)	27 09	78 24	−16 24
फिल्लौर	(पं.)	31 01	75 47	−26 52
फुलेरा	(रा.)	26 52	75 16	−28 56
फूलबानी	(उ.)	20 30	84 18	+ 7 12
फैज़ाबाद	(उ.प्र.)	26 47	82 08	− 1 28
बक्सर	(बि.)	25 34	83 59	+ 5 56
बंगलौर	(क.)	13 00	77 35	−19 40
बंगा	(पं.)	31 11	75 59	−26 04
बटाला	(पं.)	31 48	75 12	−29 12
बठिण्डा	(पं.)	30 11	75 00	−30 00
बड़ानगर	(बं.)	22 38	88 22	+23 28
बड़ौदा	(गु.)	22 18	73 13	−37 08
बदायूं	(उ.प्र.)	28 03	79 07	−13 32
बद्दी	(हि.)	30 55	76 48	−22 48
बद्रीनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 29	−12 04
बनगांव	(बं.)	23 04	88 49	+25 16
बनिहाल	(का.)	33 30	75 18	−28 48
बबीना	(उ.प्र.)	25 15	78 28	−16 08
बंबई	(म.)	देखें —	मुम्बई	
बरवाला	(ह.)	29 22	75 54	−26 24
बरेली	(उ.प्र.)	28 22	79 27	−12 12
बरौनी	(बि.)	25 30	85 53	+13 52
बर्दवान	(बं.)	23 16	87 52	+21 28
बलरामपुर	(उ.प्र.)	27 26	82 11	− 1 16

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बलिया	(उ.प्र.)	25 45	84 10	+ 6 40
बल्लभगढ़	(ह.)	28 21	77 19	−20 44
बसीरहाट	(बं.)	22 40	88 53	+25 32
बस्ति	(उ.प्र.)	26 48	82 43	+ 0 52
ब्रह्मकुण्ड	(आसा.)	27 52	96 23	+55 32
बहराईच	(उ.प्र.)	27 35	81 36	− 3 36
बागलकोट	(क.)	16 14	75 47	−26 52
बाघ	(म.प्र.)	22 22	74 49	−30 44
बातल	(हि.)	32 22	77 36	−19 36
बांकीपुर	(बि.)	25 40	85 12	+10 48
बांकुरा	(बं.)	23 15	87 04	+18 16
बाघपत	(उ.प्र.)	28 57	77 13	−21 08
बाटानगर	(बं.)	22 31	88 15	+23 00
बाड़मेर	(रा.)	25 45	71 25	−44 20
बांदा	(उ.प्र.)	25 29	80 20	− 8 40
बामनघाटी	(उ.)	22 13	86 15	+15 00
बारपेटा	(आसा.)	26 20	91 02	+34 08
बारसी	(म.)	18 14	75 44	−27 04
बारागढ़	(उ.)	21 25	83 35	+ 4 20
बाराबंकी	(उ.प्र.)	26 55	81 12	− 5 12
बारामूला	(का.)	34 12	74 20	−32 40
बारासत	(बं.)	22 43	88 29	+23 56
बारीपाड़ा	(उ.)	21 56	86 44	+16 56
बालाघाट	(म.प्र.)	21 48	80 11	− 9 16
बालामऊ	(उ.प्र.)	27 15	80 23	− 8 28
बालासौर	(उ.)	21 31	86 54	+17 36
बालीपाड़ा	(आसा.)	26 09	92 09	+38 36
बालूरघाट	(बं.)	25 13	88 46	+25 04
बालेश्वर	(उ.)	21 31	86 59	+17 56
बालोतरा	(रा.)	25 49	72 14	−41 04
बांस्वाड़ा	(रा.)	23 30	74 24	−32 24
बिजनौर	(उ.प्र.)	29 22	78 08	−17 28
बिलासपुर	(छ.ग.)	22 05	82 09	− 1 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बिलासपुर	(हि.)	31 20	76 47	−22 52
बिलासीपाड़ा	(आसा.)	26 13	90 13	+30 52
बिष्णुपुर	(बं.)	23 05	87 19	+19 16
बिहारशरीफ	(बि.)	25 11	85 32	+12 08
बीकानेर	(रा.)	28 01	73 20	−36 40
बीजापुर	(क.)	16 50	75 45	−27 00
बीड़	(म.)	18 59	75 46	−28 56
बीदर	(क.)	17 56	77 35	−19 40
बुक्क पत्तनम	(आं.)	14 12	77 46	−18 56
बुढलाडा	(पं.)	29 56	75 34	−27 44
बुटाणा	(ह.)	29 11	76 38	−23 28
बुद्धगया	(बि.)	24 41	84 58	+ 9 52
बुरनपुर	(बं.)	23 42	86 58	+17 52
बुरहानपुर	(म.प्र.)	21 18	76 14	−25 04
बुलन्दशहर	(उ.प्र.)	28 24	77 51	−18 36
बुलसार	(गु.)	20 36	72 56	−38 16
बूंदी	(रा.)	25 27	75 40	−27 20
बृन्दावन	(उ.प्र.)	27 33	77 44	−19 04
बेगूसराय	(बि.)	25 25	86 08	+14 32
बेट्टिया	(बि.)	26 48	84 33	+ 8 12
बेलगांव	(क.)	15 54	74 36	−31 36
बेला	(पं.)	30 56	76 23	−24 28
बेला(प्रतापगढ़)	(उ.प्र.)	25 54	82 01	− 1 56
बेल्लारी	(क.)	15 11	76 54	−22 24
बैकुण्ठपुर	(छ.ग.)	23 15	82 33	+ 0 12
बैजनाथ	(हि.)	32 04	76 37	−23 32
बैरकपुर	(बं.)	22 46	88 24	+23 36
बोम्डिला	(अरुणा.)	27 19	92 25	+39 40
बोरसाद	(गु.)	22 24	72 59	−38 04
बोलपुर	(बं.)	23 40	87 43	+20 52
बोलानगिर	(उ.)	20 41	83 30	+ 4 00
बौडा	(उ.)	20 50	84 22	+ 7 28
ब्यावर	(रा.)	26 06	74 20	−32 40

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
ब्यास	(पं.)	31 31	75 18	−28 48
भटिण्डा	(पं.)	देखें	बठिण्डा	(पं.)
भण्डारा	(म.)	21 10	79 41	−11 16
भदोही	(उ.प्र.)	25 25	82 34	+ 0 16
भद्रक	(उ.)	21 05	86 30	+16 00
भद्रवाह	(का.)	32 59	75 43	−27 08
भद्राचलम्	(आं.)	17 42	80 53	− 6 28
भरतपुर	(रा.)	27 15	77 30	−20 00
भरमौर	(हि.)	32 27	76 32	−23 52
भरूच	(गु.)	21 40	72 58	−38 08
भवानीपत्तन	(उ.)	19 54	83 10	+ 2 40
भागलपुर	(बि.)	25 15	87 00	+18 00
भातपाड़ा	(बं.)	22 52	88 24	+23 36
भादसों	(पं.)	30 31	76 15	−25 00
भाभर	(गु.)	24 08	71 42	−43 12
भावनगर	(गु.)	21 46	72 10	−41 20
भिंड	(म.प्र.)	26 35	78 46	−14 56
भिलाई	(छ.ग.)	21 13	81 26	− 4 16
भिवंडी	(गु.)	19 18	73 04	−37 44
भिवानी	(ह.)	28 48	76 08	−25 28
भीनमाल	(रा.)	25 00	72 19	−40 44
भीमावरम्	(आं.)	16 34	81 35	− 3 40
भीलवाड़ा	(रा.)	25 21	74 40	−31 20
भुज	(गु.)	23 16	69 40	−51 20
भुवनेश्वर	(उ.)	20 13	85 50	+13 20
भुसावल	(म.)	21 01	75 50	−26 40
भोपाल	(म.प्र.)	23 16	77 24	−20 24
मऊ	(उ.प्र.)	25 17	81 23	− 4 28
मंगलोर	(क.)	12 54	74 51	−30 36
मंगलौर	(उ.आं.)	29 48	77 52	−18 32
मंगालादै	(आसा.)	26 28	92 02	+38 08
मछलीपट्टणम्	(आं.)	16 10	81 08	− 5 28
मजीठा	(पं.)	31 46	74 57	−30 12

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मण्डला	(म.प्र.)	22 37	80 22	− 8 32
मण्ड्या	(क.)	12 34	76 55	−22 20
मण्डी	(हि.)	31 43	76 58	−22 08
मणिकर्ण	(हि.)	32 02	77 21	−20 36
मथुरा	(उ.प्र.)	27 30	77 41	−19 16
मदुरै	(ता.)	9 58	78 10	−17 20
मद्रास	(ता.)	13 05	80 18	− 8 48
मधुपुर	(झा.खं.)	24 16	86 39	+16 36
मधुबनी	(बि.)	26 22	86 05	+14 20
मधीपुरा	(बि.)	25 55	86 47	+17 08
मनाली	(हि.)	32 16	77 10	−21 20
मन्दसोर	(म.प्र.)	24 05	75 06	−29 36
मन्सूरी	(उ.आं.)	30 27	78 07	−17 32
मनसादेवी	(ह.)	30 43	76 51	−22 36
मनीमाजरा	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
मलोट	(पं.)	30 13	74 29	−32 04
मवाना	(उ.प्र.)	29 06	77 55	−18 20
महबूबनगर	(आं.)	16 44	77 59	−18 04
महवा	(रा.)	27 03	76 56	−22 16
महाबलिपुरम्	(ता.)	12 37	80 12	− 9 12
महाबलेश्वर	(गु.)	17 58	73 43	−35 08
महुआ	(गु.)	21 05	71 48	−42 48
महेन्द्रगढ़	(ह.)	28 17	76 09	−25 24
महेसाणा	(गु.)	23 37	72 28	−40 08
माछीवाड़ा	(पं.)	30 55	76 11	−25 16
मांगरोल	(गु.)	21 07	70 08	−49 28
माण्डवी (कच्छ)	(गु.)	22 50	69 28	−52 08
मानसा	(पं.)	29 59	75 23	−28 28
मायूरम्	(ता.)	11 08	79 40	−11 20
मारवाड़ जं.	(रा.)	25 43	73 36	−35 36
मालदा	(बं.)	25 05	88 09	+22 36
मालेगांव(नासिक)	(म.)	20 32	74 38	−31 28
मालेरकोटला	(पं.)	30 31	75 52	−26 32

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
माहे	(पां.)	11 42	75 32	−27 52
मिदनापुर	(बं.)	22 25	87 21	+19 24
मिराज	(म.)	16 51	74 42	−31 12
मिर्जापुर	(उ.प्र.)	25 09	82 35	+ 0 20
मीरपुर	(का.)	33 32	73 51	−34 36
मुक्तसर	(पं.)	30 29	74 31	−31 56
मुकेरियां	(पं.)	31 57	75 37	−27 32
मुगलसराय	(उ.प्र.)	25 18	83 07	+ 2 28
मुंगेर	(बि.)	25 23	86 30	+16 00
मुजफ्फरनगर	(उ.प्र.)	29 28	77 41	−19 16
मुजफ्फरपुर	(बि.)	26 07	85 27	+11 48
मुजफ्फराबाद	(का.)	34 23	73 30	−36 00
मुद्रा	(म.प्र.)	24 43	77 35	−19 40
मुन्दरा	(गु.)	22 50	69 48	−50 48
मुम्बई	(म.)	19 00	72 54	−38 24
मुरवाड़ा	(म.प्र.)	23 51	80 22	− 8 32
मुरादाबाद	(उ.प्र.)	28 50	78 47	−14 52
मुरी	(झा.खं.)	23 51	82 34	+ 0 16
मुलाना	(ह.)	30 17	77 03	−21 48
मुर्शिदाबाद	(बं.)	24 11	88 16	+23 04
मेतूर	(ता.)	11 50	77 51	−18 36
मेढ़क	(आं.)	18 03	78 15	−17 00
मेरठ	(उ.प्र.)	28 59	77 42	−19 12
मेलघाट	(म.)	21 44	77 12	−21 12
मैनपुरी	(उ.प्र.)	27 14	79 01	−13 56
मैसूर	(क.)	12 18	76 37	−23 32
मैहर	(म.प्र.)	24 16	80 45	− 7 00
मोकोक चुंग	(नागा.)	26 19	94 32	+48 08
मोगा	(पं.)	30 48	75 10	−29 20
मोतीहारी	(बि.)	26 40	84 57	+ 9 48
मोरवी	(गु.)	22 50	70 50	−46 40
मोरार	(म.प्र.)	26 13	78 14	−17 04
मोरिण्डा	(पं.)	30 48	76 30	−24 00

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मोरेना (मुरैना)	(म.प्र.)	26 23	78 04	−17 44
मोहनिया	(बि.)	25 11	83 37	+ 4 28
मोहाना	(म.)	25 54	77 45	−19 00
मोहाली	(पं.)	30 43	76 42	−23 12
यनम्	(पां.)	16 44	82 13	− 1 08
यमुनानगर	(ह.)	30 07	77 18	−20 48
यवतमाल	(म.)	20 24	78 08	−17 28
योल	(हि.)	32 11	76 23	−24 28
रक्सौल	(बि.)	26 58	84 51	+ 9 24
रंगिया	(आसा.)	26 28	91 35	+36 20
रतलाम	(म.प्र.)	23 21	75 07	−29 32
रतनगढ़	(रा.)	28 05	74 39	−31 24
रत्नागिरि	(म.)	17 00	73 22	−36 32
राऊरकेला	(उ.)	22 15	84 52	+ 9 28
रांची	(झा.खं.)	23 23	85 23	+11 32
राजकोट	(गु.)	22 18	70 53	−46 28
राजगढ़	(म.प्र.)	24 01	76 45	−23 00
राजनन्दगांव	(छ.ग.)	21 05	81 05	− 5 40
राजपालैयम्	(ता.)	9 27	77 34	−19 44
राजपुरा	(पं.)	30 29	76 36	−23 36
राजमहल	(झा.खं.)	25 03	87 53	+21 32
राजमहेन्द्री	(आं.)	17 05	81 48	− 2 48
राजुला	(गु.)	21 01	71 26	−44 16
राजौरी	(का.)	33 22	74 17	−32 52
रादौर	(ह.)	30 01	77 08	−21 28
राधनपुर	(गु.)	23 52	71 36	−43 36
रानाघाट	(बं.)	23 11	88 35	+24 20
रानीखेत	(उ.आं.)	29 39	79 25	−12 20
रापर	(गु.)	23 33	70 38	−47 28
राबर्ट्सगंज	(उ.प्र.)	24 42	83 04	+ 2 16
रामनाथपुरम्	(ता.)	9 23	78 53	−14 28
रामपुर	(उ.प्र.)	28 49	79 02	−13 52
रामबन	(का.)	33 15	75 15	−29 00

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
रामपुरबुशहर	(हि.)	31 27	77 38	−19 28
रामपुराफूल	(पं.)	30 17	75 14	−29 04
रामानुजगंज	(छ.ग.)	23 48	83 42	+ 4 48
रामेश्वरम्	(ता.)	9 18	79 19	−12 44
रायकोट	(पं.)	30 39	75 36	−27 36
रायगढ़	(छ.ग.)	21 54	83 26	+ 3 44
रायचूर	(क.)	16 15	77 20	−20 40
रायपुर	(उ.प्र.)	30 19	78 06	−17 36
रायपुर	(छ.ग.)	21 15	81 41	− 3 16
रायबरेली	(उ.प्र.)	26 14	81 16	− 4 56
रायसिंहनगर	(रा.)	29 32	73 27	−36 12
रायसेन	(म.प्र.)	23 18	77 47	−18 52
रियांग	(अरुणा.)	27 32	92 55	+41 40
रिवालसर	(हि.)	31 38	76 50	−22 40
रीवां	(म.प्र.)	24 31	81 19	− 4 44
रुड़की	(उ.आं.)	29 52	77 53	−18 28
रुद्रप्रयाग	(उ.आं.)	30 16	78 59	−14 04
रिवाड़ी	(ह.)	28 12	76 40	−23 20
रेन्दू	(का.)	35 37	75 06	−29 36
रोपड़	(पं.)	30 57	76 32	−23 52
रोहडू	(हि.)	31 13	77 45	−19 00
रोहतक	(ह.)	28 54	76 38	−23 28
लक्सर	(उ.आं.)	29 48	78 02	−17 52
लखनऊ	(उ.प्र.)	26 51	80 55	− 6 20
लखपत	(गु.)	23 49	68 47	−54 52
लखीमपुर	(उ.प्र.)	27 57	80 49	− 6 44
लखीसराय	(बि.)	25 12	86 06	+14 24
ललितपुर	(उ.प्र.)	24 41	78 25	−16 20
लातूर	(म.)	18 24	76 34	−23 44
लाडवा	(ह.)	29 59	77 05	−21 40
लालसोत	(रा.)	26 34	76 23	−24 28
लिम्बड़ी	(गु.)	22 36	71 48	−42 48
लुधियाना	(पं.)	30 55	75 54	−26 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
लुम्डिंग	(आसा.)	25 46	93 10	+42 40
लूनावाड़ा	(गु.)	23 08	73 37	−35 32
लूनी	(रा.)	26 00	73 00	−38 00
लेह	(का.)	34 09	77 35	−19 40
लैंस डाऊन	(उ.आं.)	29 50	78 41	−15 16
लोहारू	(ह.)	28 27	75 49	−26 44
वर्धा	(म.)	20 42	78 40	−15 20
वलपरै	(ता.)	10 22	76 58	−22 08
वल्लभीपुर	(गु.)	20 52	71 58	−42 08
वलसाड़	(गु.)	20 40	72 55	−38 20
वारंगल	(आं.)	18 00	79 35	−11 40
वाल्टेअर	(आं.)	17 47	83 22	+ 3 28
वाराणसी	(उ.प्र.)	25 20	83 00	+ 2 00
विजयनगर	(क.)	15 20	76 30	−24 00
विजयपुरी	(आं.)	16 52	79 35	−11 40
विजयवाड़ा	(आं.)	16 31	80 39	− 7 24
विदिशा	(म.प्र.)	23 32	77 50	−18 40
विरामग्राम	(गु.)	23 08	72 04	−41 44
विरुदुनगर	(ता.)	9 36	77 58	−18 08
विल्लुपुरम्	(ता.)	11 56	79 29	−12 04
विशाखापट्टनम्	(आं.)	17 42	83 18	+ 3 12
विसनगर	(गु.)	23 41	72 36	−39 36
वेंकटपलम्	(उ.)	18 05	81 40	− 3 20
वेरावल	(गु.)	20 53	70 28	−48 08
वेल्लूर	(ता.)	12 56	79 09	−13 24
वैष्णोदेवी	(का.)	33 02	74 57	−30 12
व्यारा	(गु.)	21 09	73 28	−36 08
शहडोल	(म.प्र.)	23 20	81 22	− 4 32
शाजापुर	(म.प्र.)	23 26	76 18	−24 48
शान्ति निकेतन	(बं.)	23 40	87 42	+20 48
शान्तिपुर	(बं.)	23 15	88 26	+23 44
शामली	(उ.प्र.)	29 27	77 19	−20 44
शाहजहांपुर	(उ.प्र.)	27 53	79 55	−10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
शाहदरा	(दिल्ली)	28 41	77 17	−20 52
शाहपुर	(हि.)	32 12	76 10	−25 20
शाहाबाद	(ह.)	30 10	76 52	−22 32
शाहाबाद	(उ.प्र.)	27 39	79 57	−10 12
शिकोहाबाद	(उ.प्र.)	27 06	78 36	−15 36
शिमला	(हि.)	31 06	77 10	−21 20
शिमोग	(क.)	13 56	75 34	−27 44
शिलांग	(मे.)	25 36	91 53	+37 32
शिवपुरी	(म.प्र.)	25 26	77 40	−19 20
शिवसागर	(आसा.)	26 58	94 39	+48 36
शिवहार (शिवविहार)	(बि.)	26 35	85 18	+11 12
शिवाकाशी	(ता.)	9 26	77 50	−18 40
शेखपुरा	(बि.)	25 09	85 53	+13 32
शैलम्	(आं.)	16 02	78 56	−14 16
शोलापुर	(म.)	17 43	75 56	−26 16
श्योपुर	(म.प्र.)	25 40	76 40	−23 20
श्रीकाकुलम्	(आं.)	18 19	84 00	+ 6 00
श्रीकालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12
श्रीगंगानगर	(रा.)	29 49	73 50	−34 40
श्रीनगर	(उ.आं.)	30 13	78 47	−14 52
श्रीनगर	(का.)	34 07	74 50	−30 40
श्रीमाधोपुर	(रा.)	27 25	75 32	−27 52
श्रीरंगम्	(ता.)	10 52	78 40	−15 20
संगरूर	(पं.)	30 12	75 53	−26 28
संगारेड्डी पेठ	(आं.)	17 37	78 04	−17 44
सढौरा	(हि.)	30 23	77 13	−21 08
सतना	(म.प्र.)	24 34	80 55	− 6 20
सतारा	(म.)	17 49	74 05	−33 40
सदरा	(गु.)	23 20	72 48	−38 48
सदिया	(अरुणा.)	27 48	95 38	+52 32
सनौर	(पं.)	30 18	76 28	−24 08
सपाटू	(हि.)	30 59	76 59	−22 04
समराला	(पं.)	30 51	76 11	−25 16

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
समाना	(पं.)	30 09	76 12	−25 12
समस्तीपुर	(बि.)	25 55	85 50	+13 20
सम्बलपुर	(उ.)	21 28	84 01	+ 6 04
सरदारशहर	(रा.)	28 27	74 30	−32 00
सरहिंद	(पं.)	30 38	76 22	−24 32
सलीम	(म.)	11 39	78 12	−17 12
सवाई माधोपुर	(रा.)	25 58	76 25	−24 20
सहरसा	(बि.)	25 55	86 35	+16 20
सहसवां	(उ.प्र.)	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर	(उ.प्र.)	29 58	77 33	−19 48
सागर	(म.प्र.)	23 50	78 50	−14 40
सांगला	(हि.)	31 29	78 12	−17 12
सांगली	(म.)	16 55	74 37	−31 32
सांगानेर	(रा.)	26 49	75 49	−26 44
सांचोर	(रा.)	24 40	71 50	−42 40
साम्बा	(का.)	32 32	75 08	−29 28
सांभर	(रा.)	26 54	75 13	−29 08
सारनाथ	(उ.प्र.)	25 24	83 01	+ 2 04
सासनी	(उ.प्र.)	27 43	78 05	−17 40
सासाराम	(बि.)	24 57	84 03	+ 6 12
साहिबगंज	(झा.खं.)	25 13	87 40	+20 40
सिऊनी	(म.प्र.)	22 06	79 35	−11 40
सिऊरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सिकती	(बि.)	26 24	87 33	+20 12
सिकन्दराबाद	(आं.)	17 27	78 30	−16 00
सिकन्दराराऊ	(उ.प्र.)	27 42	78 27	−16 12
सिन्दरी	(रा.)	25 33	71 55	−42 20
सिन्दरी	(बं.)	23 45	86 42	+16 48
सिवाना	(रा.)	25 36	72 27	−40 12
सिरसा	(ह.)	29 32	75 04	−29 44
सिरोही	(रा.)	24 53	72 54	−38 24
सिल्चर	(आसा.)	24 49	92 47	+41 08
सिल्वासा	(दा.ना.)	20 17	72 59	−38 04
सिलीगुड़ी	(बं.)	26 42	88 26	+23 44
सिहोरा	(म.प्र.)	23 29	80 07	− 9 32
सिंहभूम	(झा.खं.)	22 24	85 30	+12 00
सीकर	(रा.)	27 36	75 09	−29 24
सीतापुर	(उ.प्र.)	27 34	80 41	− 7 16
सीतामढ़ी	(बि.)	26 35	85 32	+12 08
सीवां	(बि.)	26 12	84 23	+ 7 32
सुईगांव	(गु.)	24 10	71 23	−44 28
सुन्दरगढ़	(उ.)	22 07	84 02	+ 6 08
सुन्दरनगर	(हि.)	31 32	76 53	−22 28
सुनाम	(पं.)	30 08	75 48	−26 48
सुपौल	(बि.)	26 07	86 36	+16 24
सुरेन्द्रनगर	(गु.)	22 42	71 41	−43 16
सुल्तानपुर	(उ.प्र.)	26 16	82 04	− 1 44
सूरत	(गु.)	21 10	72 50	−38 40
सूरतगढ़	(रा.)	29 19	73 57	−34 12
सूरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सेरमपुर	(बं.)	22 45	88 21	+23 24
सैंज	(हि.)	31 49	77 19	−20 44
सोजत	(रा.)	25 56	73 42	−35 12
सोनगढ़	(गु.)	21 42	71 58	−42 08
सोनपुर	(बि.)	25 42	85 12	+10 48
सोनपुर	(उ.)	20 50	83 58	+ 5 52
सोनहाट	(छ.ग.)	23 29	82 30	0 00
सोनामर्ग	(का.)	34 18	75 18	−28 48
सोनीपत	(ह.)	28 59	77 01	−21 56
सोमनाथ	(गु.)	21 04	70 26	−48 16
सोलन	(हि.)	30 55	77 09	−21 24
हजारीबाग़	(झा.खं.)	23 59	85 25	+11 40
हडसर	(हि.)	32 22	76 33	−23 48
हनुमानगढ़	(रा.)	29 35	74 21	−32 36
हफलोंग	(आसा.)	25 11	93 02	+42 08
हमीरपुर	(उ.प्र.)	25 57	80 09	− 9 24
हमीरपुर	(हि.)	31 41	76 31	−23 56
हरदोई	(उ.प्र.)	27 25	80 07	− 9 32
हरसीपत्तन	(हि.)	31 53	76 39	−23 24
हरिद्वार	(उ.आं.)	29 58	78 13	−17 08
हरिपुर	(हि.)	31 59	76 05	−25 40
हरिपुरधार	(हि.)	30 52	77 28	−20 08
हरीकेपत्तन	(पं.)	31 30	74 57	−30 12
हल्द्वानी	(उ.आं.)	29 13	79 31	−11 56
हल्दिया	(बं.)	22 02	88 05	+22 20
हास्सन	(क.)	13 01	76 03	−25 48
हसनपुर	(ह.)	27 58	77 30	−20 00
हसनपुर	(उ.प्र.)	28 43	78 17	−16 52
हाजीपुर	(बि.)	25 43	85 14	+10 56
हाटकोटी	(हि.)	31 08	77 45	−19 00
हाथरस	(उ.प्र.)	27 36	78 03	−17 48
हापुड़	(उ.प्र.)	28 43	77 47	−18 52
हालीशहर	(बं.)	22 56	88 25	+23 40
हावड़ा	(बं.)	22 36	88 19	+23 16
हावेरी	(क.)	14 46	75 26	−28 16
हासपेट	(क.)	15 16	76 26	−24 16
हांसी	(हि.)	32 27	77 50	−18 40
हांसी	(ह.)	29 06	76 00	−26 00
हिंगनघाट	(म.)	20 32	78 52	−14 32
हिम्मतनगर	(गु.)	23 35	73 00	−38 00
हिसार	(ह.)	29 10	75 46	−26 56
हीराकुण्ड डैम	(उ.)	21 31	83 57	+ 5 48
हुबली	(क.)	15 20	75 14	−29 04
हैदराबाद	(आं.)	17 22	78 30	−16 00
होडल	(ह.)	27 53	77 22	−20 32
होशंगाबाद	(म.प्र.)	22 46	77 45	−19 00
होशियारपुर	(पं.)	31 32	75 57	−26 12
होसुर	(ता.)	12 45	77 51	−18 36

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख		वैशाख प्रविष्टे	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ०७	१६ २७	१८ ४४	२१ ०६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
	१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२१ ०२	२३ २२	१ २७	३ ०८	४ ३३	५ ५५
	१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ०४	४ २९	५ ५१
	१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ००	४ २५	५ ४७
	१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
	१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ०७	१८ २५	२० ४६	२३ ०६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
	१९	७	७ १२	९ ०७	११ २१	१३ ४३	१६ ०३	१८ २१	२० ४२	२३ ०२	१ ०७	२ ४८	४ १३	५ ३५
	२०	८	७ ०८	९ ०३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ०३	२ ४४	४ ०९	५ ३१
	२१	९	७ ०४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ०५	५ २८
	२२	१०	७ ००	८ ५५	११ ०९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ ०१	५ २४
	२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ०५	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
	२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
	२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
	२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ०८
	२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ १२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ०४
	२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४५	२० ०७	२२ २७	० ३२	२ १३	३ ३८	५ ००
	२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ०४	१५ २४	१७ ४१	२० ०३	२२ २३	० २८	२ ०९	३ ३४	४ ५६
	३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ०५	३ ३०	४ ५२
मई	१	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ ०१	३ २६	४ ४८
	२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
	३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ०८	१७ २६	१९ ४७	२२ ०७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
	४	२२	६ १३	८ ०८	१० २२	१२ ४४	१५ ०४	१७ २२	१९ ४३	२२ ०३	० ०८	१ ४९	३ १४	४ ३६
	५	२३	६ ०९	८ ०४	१० १८	१२ ४०	१५ ००	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ०४	१ ४५	३ १०	४ ३२
	६	२४	६ ०५	८ ००	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ००	१ ४१	३ ०६	४ २९
	७	२५	६ ०१	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ ०२	४ २५
	८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ०६	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
	९	२७	५ ५३	७ ४८	१० ०२	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
	१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
	११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ०९
	१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ०५
	१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ०९	१४ २९	१६ ४६	१९ ०८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ ०१
	१४	आर	५ ३४											

अंग्रेज़ी तारीख		ज्येष्ठ प्रविष्टे	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मई	१४	१	७ २८	९ ४३	१२ ०५	१४ २५	१६ ४२	१९ ०४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
	१५	२	७ २४	९ ३९	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१९ ००	२१ २०	२३ २५	१ ०६	२ ३१	३ ५३	५ २६
	१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ ०२	२ २७	३ ४९	५ २२
	१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
	१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ४८	२१ ०८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४१	५ १४
	१९	६	७ ०९	९ २३	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ ४४	२१ ०४	२३ ०९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
	२०	७	७ ०५	९ १९	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ ४०	२१ ०१	२३ ०५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ०६
	२१	८	७ ०१	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ ०१	० ४२	२ ०७	३ ३०	५ ०२
	२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२ ०३	३ २६	४ ५८
	२३	१०	६ ५३	९ ०७	११ २९	१३ ४९	१६ ०७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
	२४	११	६ ४९	९ ०३	११ २५	१३ ४५	१६ ०३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
	२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २१	२० ४१	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
	२६	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४२	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
	२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ०६	४ ३९
	२८	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ०९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ ०२	४ ३५
	२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ०६	१३ २६	१५ ४३	१८ ०५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
	३०	१७	६ २५	८ ४०	११ ०२	१३ २२	१५ ४०	१८ ०१	२० २१	२२ २६	० ०७	१ ३२	२ ५४	४ २७
	३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ०३	१ २८	२ ५०	४ २३
जून	१	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ५३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
	२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ०९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
	३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ०६	१५ २४	१७ ४५	२० ०५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
	४	२२	६ ०६	८ २०	१० ४२	१३ ०२	१५ २०	१७ ४१	२० ०२	२२ ०६	२३ ४७	१ १२	२ ३५	४ ०७
	५	२३	६ ०२	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ ०२	२३ ४३	१ ०८	२ ३१	४ ०३
	६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ०४	२ २७	३ ५९
	७	२५	५ ५४	८ ०८	१० ३०	१२ ५०	१५ ०८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ००	२ २३	३ ५५
	८	२६	५ ५०	८ ०४	१० २६	१२ ४६	१५ ०४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
	९	२७	५ ४६	८ ००	१० २३	१२ ४३	१५ ००	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
	१०	२८	५ ४२	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
	११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ०७	३ ४०
	१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ०३	३ ३६
	१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ०७	१२ २७	१४ ४५	१७ ०६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२
	१४	आर	५ २६											

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

आषाढ़

अंग्रेज़ी तारीख		आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.
जून	१४	१	७ ४१	१० ०३	१२ २३	१४ ४१	१७ ०२	१९ २२	२१ २७	२३ ०८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
	१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ०४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
	१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ००	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
	१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
	१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ०७	१४ २५	१६ ४६	१९ ०६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ०७
	१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ०३	१४ २१	१६ ४२	१९ ०३	२१ ०७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ०८	५ ०३
	२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४४	० ०९	१ ३२	३ ०४	४ ५९
	२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ०५	१ २८	३ ००	४ ५५
	२२	९	७ ०९	९ ३१	११ ५१	१४ ०९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० ०१	१ २४	२ ५६	४ ५१
	२३	१०	७ ०५	९ २७	११ ४७	१४ ०५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
	२४	११	७ ०१	९ २४	११ ४४	१४ ०१	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
	२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २५	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
	२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ०८	२ ४१	४ ३५
	२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ०४	२ ३७	४ ३१
	२८	१५	६ ४६	९ ०८	११ २८	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ००	२ ३३	४ २७
	२९	१६	६ ४२	९ ०४	११ २४	१३ ४२	१६ ०३	१८ २३	२० २८	२२ ०९	२३ ३४	० ५६	२ २९	४ २४
	३०	१७	६ ३८	९ ००	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ०५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
जुलाई	१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ ०१	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
	२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
	३	२०	६ २६	८ ४८	११ ०८	१३ २६	१५ ४७	१८ ०८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ०८
	४	२१	६ २२	८ ४४	११ ०४	१३ २२	१५ ४३	१८ ०४	२० ०८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ०९	४ ०४
	५	२२	६ १८	८ ४०	११ ००	१३ १८	१५ ४०	१८ ००	२० ०४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ०५	४ ००
	६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ००	२१ ४१	२३ ०६	० २९	२ ०१	३ ५६
	७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५७	३ ५२
	८	२५	६ ०६	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
	९	२६	६ ०२	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
	१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
	११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ०९	१ ४२	३ ३६
	१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ०५	१ ३८	३ ३२
	१३	३०	५ ४७	८ ०९	१० २९	१२ ४७	१५ ०८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० ०१	१ ३४	३ २९
	१४	३१	५ ४३	८ ०५	१० २५	१२ ४३	१५ ०४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
	१५	३२	५ ३९	८ ०१	१० २१	१२ ३९	१५ ००	१७ २०	१९ २५	२१ ०६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१
	१६	श्रा.१	५ ३५											

श्रावण

अंग्रेज़ी तारीख		श्रावण प्रविष्टे	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.
जुलाई	१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ ०२	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
	१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
	१८	३	७ ४९	१० ०९	१२ २७	१४ ४८	१७ ०९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ०९	५ २३
	१९	४	७ ४५	१० ०५	१२ २३	१४ ४५	१७ ०५	१९ ०९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ०५	५ १९
	२०	५	७ ४१	१० ०१	१२ १९	१४ ४१	१७ ०१	१९ ०५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ०६	३ ०१	५ १५
	२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ ०१	२० ४२	२२ ०७	२३ ३०	१ ०२	२ ५७	५ ११
	२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ०३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ०७
	२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ०७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ०३
	२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ०३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
	२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
	२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
	२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ०६	० ३९	२ ३३	४ ४८
	२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ ०२	० ३५	२ ३०	४ ४४
	२९	१४	७ ०६	९ २६	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
	३०	१५	७ ०२	९ २२	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २६	२० ०७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
	३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ०३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३१
अगस्त	१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
	२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
	३	१९	६ ४६	९ ०६	११ २४	१३ ४६	१६ ०६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ०६	४ २०
	४	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४२	१६ ०२	१८ ०६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ०७	२ ०२	४ १६
	५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०८	२२ ३१	० ०३	१ ५८	४ १२
	६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २७	० ००	१ ५४	४ ०८
	७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ०८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ ०१	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
	८	२४	६ २७	८ ४७	११ ०४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ००
	९	२५	६ २३	८ ४३	११ ००	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
	१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
	११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ०७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
	१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ०३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
	१३	२९	६ ०७	८ २७	१० ४५	१३ ०६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
	१४	३०	६ ०३	८ २३	१० ४१	१३ ०२	१५ २२	१७ २७	१९ ०८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
	१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ०४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३
	१६	भा.१	५ ५५											

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

भाद्रपद

अंग्रेज़ी तारीख (मास)	अंग्रेज़ी तारीख	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.
अगस्त	१६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
अगस्त	१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
अगस्त	१८	३	८ ०७	१० २५	१२ ४७	१५ ०७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
अगस्त	१९	४	८ ०३	१० २१	१२ ४३	१५ ०३	१७ ०७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
अगस्त	२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०३	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३६
अगस्त	२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३२
अगस्त	२२	७	७ ५२	१० ०९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० ०२	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २८
अगस्त	२३	८	७ ४८	१० ०५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०२	५ २४
अगस्त	२४	९	७ ४४	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
अगस्त	२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
अगस्त	२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ०८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
अगस्त	२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
अगस्त	२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ०७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ००	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
अगस्त	२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ०३	१४ २३	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
अगस्त	३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
अगस्त	३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर	१	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
सितम्बर	२	१८	७ ०८	९ २६	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
सितम्बर	३	१९	७ ०४	९ २२	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ०९	० ०४	२ १८	४ ४०
सितम्बर	४	२०	७ ००	९ १८	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३७
सितम्बर	५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३३
सितम्बर	६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ०३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २९
सितम्बर	७	२३	६ ४९	९ ०६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०३	४ २५
सितम्बर	८	२४	६ ४५	९ ०२	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
सितम्बर	९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
सितम्बर	१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ०९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
सितम्बर	११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ०५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ०९
सितम्बर	१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० ०१	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ०५
सितम्बर	१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ ०१
सितम्बर	१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ००	१३ २१	१५ २५	१७ ०६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
सितम्बर	१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ ०२	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
सितम्बर	१६	आ.१	६ १३											

आश्विन

अंग्रेज़ी तारीख (मास)	अंग्रेज़ी तारीख	आश्विन प्रविष्टे	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.
सितम्बर	१६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ०९
सितम्बर	१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ०९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ०९	१ २३	३ ४५	६ ०५
सितम्बर	१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ०५	१ १९	३ ४२	६ ०१
सितम्बर	१९	४	८ १९	१० ४१	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ०७	२३ ०१	१ १५	३ ३८	५ ५८
सितम्बर	२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ ०२	१६ ४२	१८ ०८	१९ ३०	२१ ०३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
सितम्बर	२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ०४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ०७	३ ३०	५ ५०
सितम्बर	२२	७	८ ०७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ००	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ०४	३ २६	५ ४६
सितम्बर	२३	८	८ ०३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ००	३ २२	५ ४२
सितम्बर	२४	९	८ ००	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
सितम्बर	२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
सितम्बर	२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ०६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
सितम्बर	२७	१२	७ ४८	१० ०९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ ०२	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ०६	५ २६
सितम्बर	२८	१३	७ ४४	१० ०५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ ०२	५ २२
सितम्बर	२९	१४	७ ४०	१० ०१	१२ २२	१४ २६	१६ ०७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
सितम्बर	३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ०३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्टूबर	१	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
अक्टूबर	२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ०६
अक्टूबर	३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ०६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ०६	० २०	२ ४३	५ ०३
अक्टूबर	४	१९	७ २०	९ ४२	१२ ०२	१४ ०६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ०८	२२ ०२	० १६	२ ३९	४ ५९
अक्टूबर	५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ०३	१५ ४३	१७ ०९	१८ ३१	२० ०४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
अक्टूबर	६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ०५	१८ २७	२० ००	२१ ५४	० ०८	२ ३१	४ ५१
अक्टूबर	७	२२	७ ०८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ ०१	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ०५	२ २७	४ ४७
अक्टूबर	८	२३	७ ०५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० ०१	२ २३	४ ४३
अक्टूबर	९	२४	७ ०१	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ५३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
अक्टूबर	१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
अक्टूबर	११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ०७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
अक्टूबर	१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ०३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ०७	४ २७
अक्टूबर	१३	२८	६ ४५	९ ०६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ०३	४ २३
अक्टूबर	१४	२९	६ ४१	९ ०२	११ २३	१३ २७	१५ ०८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
अक्टूबर	१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ०४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
अक्टूबर	१६	का.१	६ ३३											

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

	अंग्रेज़ी तारीख	कार्तिक प्रविष्टे	कार्तिक तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अक्तूबर	१६	१	८ ५५	११ १५	१३ १९	१५ ००	१६ २५	१७ ४८	१९ २०	२१ १५	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ २९
	१७	२	८ ५१	११ ११	१३ १५	१४ ५६	१६ २१	१७ ४४	१९ १६	२१ ११	२३ २५	१ ४७	४ ०७	६ २५
	१८	३	८ ४७	११ ०७	१३ ११	१४ ५२	१६ १७	१७ ४०	१९ १३	२१ ०७	२३ २१	१ ४४	४ ०४	६ २१
	१९	४	८ ४३	११ ०३	१३ ०८	१४ ४८	१६ १४	१७ ३६	१९ ०९	२१ ०३	२३ १७	१ ४०	४ ००	६ १७
	२०	५	८ ३९	१० ५९	१३ ०४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ०५	२० ५९	२३ १३	१ ३६	३ ५६	६ १३
	२१	६	८ ३५	१० ५५	१३ ००	१४ ४१	१६ ०६	१७ २८	१९ ०१	२० ५५	२३ ०९	१ ३२	३ ५२	६ ०९
	२२	७	८ ३१	१० ५१	१२ ५६	१४ ३७	१६ ०२	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ०६	१ २८	३ ४८	६ ०६
	२३	८	८ २७	१० ४७	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ ०२	१ २४	३ ४४	६ ०२
	२४	९	८ २३	१० ४३	१२ ४८	१४ २९	१५ ५४	१७ १६	१८ ४९	२० ४४	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ५८
	२५	१०	८ १९	१० ३९	१२ ४४	१४ २५	१५ ५०	१७ १२	१८ ४५	२० ४०	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ५४
	२६	११	८ १५	१० ३५	१२ ४०	१४ २१	१५ ४६	१७ ०८	१८ ४१	२० ३६	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ५०
	२७	१२	८ ११	१० ३१	१२ ३६	१४ १७	१५ ४२	१७ ०४	१८ ३७	२० ३२	२२ ४६	१ ०८	३ २८	५ ४६
	२८	१३	८ ०७	१० २८	१२ ३२	१४ १३	१५ ३८	१७ ०१	१८ ३३	२० २८	२२ ४२	१ ०४	३ २४	५ ४२
	२९	१४	८ ०३	१० २४	१२ २८	१४ ०९	१५ ३४	१६ ५७	१८ २९	२० २४	२२ ३८	१ ००	३ २०	५ ३८
	३०	१५	८ ००	१० २०	१२ २४	१४ ०५	१५ ३०	१६ ५३	१८ २५	२० २०	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ ३४
	३१	१६	७ ५६	१० १६	१२ २०	१४ ०१	१५ २६	१६ ४९	१८ २१	२० १६	२२ ३०	० ५२	३ १२	५ ३०
नवम्बर	१	१७	७ ५२	१० १२	१२ १६	१३ ५७	१५ २२	१६ ४५	१८ १७	२० १२	२२ २६	० ४८	३ ०९	५ २६
	२	१८	७ ४८	१० ०८	१२ १२	१३ ५३	१५ १८	१६ ४१	१८ १३	२० ०८	२२ २२	० ४५	३ ०५	५ २२
	३	१९	७ ४४	१० ०४	१२ ०९	१३ ४९	१५ १५	१६ ३७	१८ ०९	२० ०४	२२ १८	० ४१	३ ०१	५ १८
	४	२०	७ ४०	१० ००	१२ ०५	१३ ४६	१५ ११	१६ ३३	१८ ०६	२० ००	२२ १४	० ३७	२ ५७	५ १४
	५	२१	७ ३६	९ ५६	१२ ०१	१३ ४२	१५ ०७	१६ २९	१८ ०२	१९ ५६	२२ ११	० ३३	२ ५३	५ १०
	६	२२	७ ३२	९ ५२	११ ५७	१३ ३८	१५ ०३	१६ २५	१७ ५८	१९ ५२	२२ ०७	० २९	२ ४९	५ ०७
	७	२३	७ २८	९ ४८	११ ५३	१३ ३४	१४ ५९	१६ २१	१७ ५४	१९ ४९	२२ ०३	० २५	२ ४५	५ ०३
	८	२४	७ २४	९ ४४	११ ४९	१३ ३०	१४ ५५	१६ १७	१७ ५०	१९ ४५	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ५९
	९	२५	७ २०	९ ४०	११ ४५	१३ २६	१४ ५१	१६ १३	१७ ४६	१९ ४१	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ५५
	१०	२६	७ १६	९ ३६	११ ४१	१३ २२	१४ ४७	१६ ०९	१७ ४२	१९ ३७	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ५१
	११	२७	७ १२	९ ३२	११ ३७	१३ १८	१४ ४३	१६ ०५	१७ ३८	१९ ३३	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ४७
	१२	२८	७ ०८	९ २९	११ ३३	१३ १४	१४ ३९	१६ ०२	१७ ३४	१९ २९	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ ४३
	१३	२९	७ ०५	९ २५	११ २९	१३ १०	१४ ३५	१५ ५८	१७ ३०	१९ २५	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ ३९
	१४	३०	७ ०१	९ २१	११ २५	१३ ०६	१४ ३१	१५ ५४	१७ २६	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३५
	१५	मा. १	६ ५७											

	अंग्रेज़ी तारीख	मार्गशीर्ष प्रविष्टे	मार्गशीर्ष वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
नवम्बर	१५	१	९ १७	११ २१	१३ ०२	१४ २७	१५ ५०	१७ २२	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ ३१	६ ५३
	१६	२	९ १३	११ १७	१२ ५८	१४ २३	१५ ४६	१७ १८	१९ १३	२१ २७	२३ ५०	२ १०	४ २७	६ ४९
	१७	३	९ ०९	११ १३	१२ ५४	१४ १९	१५ ४२	१७ १५	१९ ०९	२१ २३	२३ ४६	२ ०६	४ २३	६ ४५
	१८	४	९ ०५	११ १०	१२ ५०	१४ १६	१५ ३८	१७ ११	१९ ०५	२१ १९	२३ ४२	२ ०२	४ १९	६ ४१
	१९	५	९ ०१	११ ०६	१२ ४७	१४ १२	१५ ३४	१७ ०७	१९ ०१	२१ १६	२३ ३८	१ ५८	४ १५	६ ३७
	२०	६	८ ५७	११ ०२	१२ ४३	१४ ०८	१५ ३०	१७ ०३	१८ ५७	२१ १२	२३ ३४	१ ५४	४ १२	६ ३३
	२१	७	८ ५३	१० ५८	१२ ३९	१४ ०४	१५ २६	१६ ५९	१८ ५३	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	४ ०८	६ २९
	२२	८	८ ४९	१० ५४	१२ ३५	१४ ००	१५ २२	१६ ५५	१८ ५०	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	४ ०४	६ २५
	२३	९	८ ४५	१० ५०	१२ ३१	१३ ५६	१५ १८	१६ ५१	१८ ४६	२१ ००	२३ २२	१ ४२	४ ००	६ २१
	२४	१०	८ ४१	१० ४६	१२ २७	१३ ५२	१५ १४	१६ ४७	१८ ४२	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ५६	६ १७
	२५	११	८ ३७	१० ४२	१२ २३	१३ ४८	१५ १०	१६ ४३	१८ ३८	२० ५२	२३ १४	१ ३४	३ ५२	६ १३
	२६	१२	८ ३३	१० ३८	१२ १९	१३ ४४	१५ ०७	१६ ३९	१८ ३४	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ४८	६ ०९
	२७	१३	८ ३०	१० ३४	१२ १५	१३ ४०	१५ ०३	१६ ३५	१८ ३०	२० ४४	२३ ०६	१ २६	३ ४४	६ ०६
	२८	१४	८ २६	१० ३०	१२ ११	१३ ३६	१४ ५९	१६ ३१	१८ २६	२० ४०	२३ ०२	१ २२	३ ४०	६ ०२
	२९	१५	८ २२	१० २६	१२ ०७	१३ ३२	१४ ५५	१६ २७	१८ २२	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ ३६	५ ५८
	३०	१६	८ १८	१० २२	१२ ०३	१३ २८	१४ ५१	१६ २३	१८ १८	२० ३२	२२ ५४	१ १४	३ ३२	५ ५४
दिसम्बर	१	१७	८ १४	१० १८	११ ५९	१३ २४	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ २८	५ ५०
	२	१८	८ १०	१० १५	११ ५५	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ २४	५ ४६
	३	१९	८ ०६	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ०६	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ २०	५ ४२
	४	२०	८ ०२	१० ०७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ०८	१८ ०२	२० १७	२२ ३९	० ५९	३ १६	५ ३८
	५	२१	७ ५८	१० ०३	११ ४४	१३ ०९	१४ ३१	१६ ०४	१७ ५८	२० १३	२२ ३५	० ५५	३ १३	५ ३४
	६	२२	७ ५४	९ ५९	११ ४०	१३ ०५	१४ २७	१६ ००	१७ ५४	२० ०९	२२ ३१	० ५१	३ ०९	५ ३०
	७	२३	७ ५०	९ ५५	११ ३६	१३ ०१	१४ २३	१५ ५६	१७ ५१	२० ०५	२२ २७	० ४७	३ ०५	५ २६
	८	२४	७ ४६	९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४७	२० ०१	२२ २३	० ४३	३ ०१	५ २२
	९	२५	७ ४२	९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४३	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ५७	५ १८
	१०	२६	७ ३८	९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३९	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ५३	५ १४
	११	२७	७ ३५	९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ०८	१५ ४०	१७ ३५	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ४९	५ १०
	१२	२८	७ ३१	९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ०४	१५ ३६	१७ ३१	१९ ४५	२२ ०७	० २७	२ ४५	५ ०७
	१३	२९	७ २७	९ ३१	११ १२	१२ ३७	१४ ००	१५ ३२	१७ २७	१९ ४१	२२ ०३	० २३	२ ४१	५ ०३
	१४	३०	७ २३	९ २७	११ ०८	१२ ३३	१३ ५६	१५ २८	१७ २३	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ ३७	४ ५९
	१५	पौ. १	७ १९											

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

पौष

अंग्रेज़ी तारीख	पौष प्रविष्टे	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.
दिसम्बर १५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
१६	२	९ १९	११ ००	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ०८	२ २५	४ ४७	७ ०७
१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ०७	१९ २२	२१ ४४	० ०४	२ २१	४ ४३	७ ०३
१९	५	९ ०८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ०९	१७ ०३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
२०	६	९ ०४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ०५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
२१	७	९ ००	१० ४१	१२ ०६	१३ २८	१५ ०१	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ ०२	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	२ ०६	४ २७	६ ४७
२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	२ ०२	४ २३	६ ४३
२४	१०	८ ४८	१० २९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ०९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ०५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ४६	४ ०८	६ २८
२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ ०१	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ ४२	४ ०४	६ २४
२९	१५	८ २८	१० ०९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ ३८	४ ००	६ २०
३०	१६	८ २४	१० ०५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
३१	१७	८ २०	१० ०१	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी १	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ ४७	६ ०७
२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २२	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ ४३	६ ०३
३	२०	८ ०८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १८	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ ३९	५ ५९
४	२१	८ ०४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
५	२२	८ ००	९ ४१	११ ०६	१२ २८	१४ ०१	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
६	२३	७ ५६	९ ३७	११ ०२	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ०६	२० २८	२२ ४८	१ ०६	३ २७	५ ४७
७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ ०२	२० २४	२२ ४४	१ ०२	३ २३	५ ४३
८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ०९	१३ ४१	१५ ३६	१७ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ०५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ०८	२२ २८	० ४६	३ ०८	५ २८
१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ ०१	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ०४	२२ २४	० ४२	३ ०४	५ २४
१३	माघ १	७ २८											

माघ

अंग्रेज़ी तारीख	माघ प्रविष्टे	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.
जनवरी १३	१	९ ०९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ००	२२ २०	० ३८	३ ००	५ २०	७ २४
१४	२	९ ०५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
१५	३	९ ०१	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ०९	० २६	२ ४८	५ ०८	७ १३
१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ०८	१७ २३	१९ ४५	२२ ०५	० २२	२ ४४	५ ०४	७ ०९
१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ०४	१७ १९	१९ ४१	२२ ०१	० १९	२ ४०	५ ००	७ ०५
१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ०६	१५ ०१	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ ०१
२०	८	८ ४२	१० ०७	११ २९	१३ ०२	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
२१	९	८ ३८	१० ०३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ०७	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ २८	४ ४८	६ ५३
२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ०३	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ २४	४ ४४	६ ४९
२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ०६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	२ ०९	४ २९	६ ३३
२७	१५	८ १४	९ ३९	११ ०२	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	२ ०५	४ २५	६ २९
२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ ०२	२१ २२	२३ ३९	२ ०१	४ २१	६ २५
२९	१७	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
३०	१८	८ ०२	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ०९	६ १४
फ़रवरी १	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ०९	१६ २४	१८ ४६	२१ ०६	२३ २३	१ ४५	४ ०५	६ १०
२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ०५	१६ २०	१८ ४२	२१ ०२	२३ २०	१ ४१	४ ०१	६ ०६
३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ०७	१४ ०२	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ ०२
४	२३	७ ४३	९ ०८	१० ३०	१२ ०३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
५	२४	७ ३९	९ ०४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ०८	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २९	३ ४९	५ ५४
६	२५	७ ३५	९ ००	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ०४	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २५	३ ४५	५ ५०
७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ००	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ २१	३ ४२	५ ४६
८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ०७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
११	३०	७ १५	८ ४०	१० ०३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ०६	३ २६	५ ३०
१२	फा.१	७ ११											

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

फाल्गुन

मास	अंग्रेज़ी तारीख	फाल्गुन प्रविष्टे	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.
फरवरी	१२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ०३	२० २३	२२ ४०	१ ०२	३ २२	५ २६	७ ०७
	१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ०४
	१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ००
	१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
	१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ०७	२२ २५	० ४६	३ ०६	५ ११	६ ५२
	१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ०६	१५ २१	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ४२	३ ०२	५ ०७	६ ४८
	१८	७	८ १३	९ ३५	११ ०८	१३ ०३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	५ ०३	६ ४४
	१९	८	८ ०९	९ ३१	११ ०४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
	२०	९	८ ०५	९ २७	११ ००	१२ ५५	१५ ०९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
	२१	१०	८ ०१	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ०५	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
	२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ ०१	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
	२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
	२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
	२५	१४	७ ४५	९ ०८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
	२६	१५	७ ४१	९ ०४	१० ३६	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०७	२ २७	४ ३१	६ १२
	२७	१६	७ ३७	९ ००	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ०४	१९ २४	२१ ४१	० ०३	२ २३	४ २८	६ ०८
	२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ००	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ०५
मार्च	१	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ ०१
	२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
	३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ०८	२१ २६	२३ ४७	२ ०७	४ १२	५ ५३
	४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ०८	१४ २२	१६ ४४	१९ ०४	२१ २२	२३ ४३	२ ०३	४ ०८	५ ४९
	५	२२	७ १४	८ ३६	१० ०९	१२ ०४	१४ १८	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ०४	५ ४५
	६	२३	७ १०	८ ३२	१० ०५	१२ ००	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३५	१ ५५	४ ००	५ ४१
	७	२४	७ ०६	८ २८	१० ०१	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
	८	२५	७ ०२	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ०६	१६ २८	१८ ४८	२१ ०६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
	९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ ०२	१६ २४	१८ ४४	२१ ०२	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
	१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
	११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	२० ५४	२३ १६	१ ३६	३ ४०	५ २१
	१२	२९	६ ४६	८ ०९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
	१३	३०	६ ४२	८ ०५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०९	१८ २९	२० ४६	२३ ०८	१ २८	३ ३२	५ १३
	१४	चैत्र	६ ३८											

चैत्र

मास	अंग्रेज़ी तारीख	चैत्र प्रविष्टे	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.
मार्च	१४	१	८ ०१	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०५	१८ २५	२० ४२	२३ ०४	१ २४	३ २९	५ ०९	६ ३५
	१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ ०१	१८ २१	२० ३८	२३ ००	१ २०	३ २५	५ ०६	६ ३१
	१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३५	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ ०२	६ २७
	१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
	१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ०९	२० २७	२२ ४८	१ ०८	३ १३	४ ५४	६ १९
	१९	६	७ ४१	९ १४	११ ०९	१३ २३	१५ ४५	१८ ०५	२० २३	२२ ४४	१ ०४	३ ०९	४ ५०	६ १५
	२०	७	७ ३७	९ १०	११ ०५	१३ १९	१५ ४१	१८ ०१	२० १९	२२ ४०	१ ००	३ ०५	४ ४६	६ ११
	२१	८	७ ३३	९ ०६	११ ०१	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ ०१	४ ४२	६ ०७
	२२	९	७ २९	९ ०२	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ०३
	२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ०७	१५२९	१७ ४९	२० ०७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
	२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ०३	१५ २५	१७ ४५	२० ०३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
	२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
	२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
	२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
	२८	१५	७ ०६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ०९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
	२९	१६	७ ०२	८ ३४	१० २९	१२ ४३	१५ ०६	१७ २६	१९ ४३	२२ ०५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
	३०	१७	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ ०२	१७ २२	१९ ४०	२२ ०१	० २१	२ २६	४ ०७	५ ३२
	३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३६	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ०३	५ २८
अप्रैल	१	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
	२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ०९	२ १४	३ ५५	५ २०
	३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ०६	१९ २४	२१ ४५	० ०५	२ १०	३ ५१	५ १६
	४	२२	६ ३८	८ ११	१० ०६	१२ २०	१४ ४२	१७ ०२	१९ २०	२१ ४१	० ०१	२ ०६	३ ४७	५ १२
	५	२३	६ ३४	८ ०७	१० ०२	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ ०२	३ ४३	५ ०८
	६	२४	६ ३०	८ ०३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ०४
	७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ०८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ००
	८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ०४	१४ २६	१६ ४६	१९ ०४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
	९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ००	१४ २२	१६ ४२	१९ ००	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
	१०	२८	६ १५	७ ४७	९ ४२	११ ५६	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
	११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
	१२	३०	६ ०७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३५	३ १५	४ ४१
	१३	वै.१	६ ०३											

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

यहां पीछे जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :-दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे-मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास, के आगे मिथुन के नीचे +१९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मिनट में जोड़ने पर १२ घं. १९ मिनट मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	-१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	-२	-५	-६	-६	-३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	-१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	-१	-४	-८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	-१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	-२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	-१	-२	-२	-२	-१	-१	०
कलकत्ता	-३२	-२८	-३०	-३६	-४५	-५३	-६०	-६५	-६३	-५६	-४७	-४०
कांगड़ा	०	-१	-१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
काशी	-१५	-१३	-१४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२५	-२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	-१	-१	-१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	-५	-८	-७	-२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	-२	-४	-५	-५	-३	-१	+१
गुरदासपुर	+३	+२	+२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	-२
चम्बा	-१	-२	-१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	-३	-५	-४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	-१	-१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
दिल्ली	+३	+३	±३	+१	-१	३	-५	-६	-६	-४	-२	०
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	-७	-१७	-२६	-३१	-३९	-२०	-११	-२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	[illegible]	+३	+२

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१२	-११	-९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	[illegible]	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	-२४	-२२	-२३	-२७	-३२	-३८	-४२	-४५	-४४	-३९	-३४	-२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	-४	-१०	-८	+३	+१४	+२५
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११	-९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	-१६	-३२	-४०	-३७	-२२	-६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	-२	-६	-९	-११	-११	-७	४	०
भुवनेश्वर	-१८	-१४	-१६	-२४	-३४	-४४	-५४	-५८	-५७	-४८	-३८	-२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-१	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	-११	-२७	-४३	-५१	-४८	-३३	-१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	०
मण्डी (हि.प्र.)	-२	-३	-३	-२	-१	०	+२	+२	+२	+१	०	-१
मलेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२
रोपड	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	-२	-३	-३	-१	+१	+२
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-२
श्रीनगर (का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हिलार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	-५	-१७	-२९	-३५	-३३	-२२	-९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीयकाल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश–रेखांशों की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए, किन्च भिन्न–भिन्न अक्षांशों की लग्नसारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्नसारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्टकालिक सूर्य की ज़रुरत नहीं होती, जबकि प्रचीन विधि में इनकी ज़रूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न साधनविधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदयकाल ज्ञात कीजिए। सूर्योदयकाल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचांग में दी गई **"अक्षांशादि सारणी"** से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कर लीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए:–

आगे 29, 30, 31 अक्षांशों की तीन लग्नसारणियां दी गई हैं, जो दिल्ली, पंजाब, तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी में इष्टकालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी, पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी–पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी, पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को **"सहायक सारणी"** (जो अगले पृष्ठ पर दी गई है) के बाईं ओर पहले कॉलम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला–विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला–विकलाएं लिखी हों, उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखे हों, उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घड़ी, पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्टकाल के घड़ीपल भी जोड़ दीजिए। इसे हम **"अभीष्ट घड़ी–पल"** कहेंगे। "अभीष्ट घड़ी–पल" यदि 60 घडी से अधिक हों तो उनमें से 60 घडी घटाकर, शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी– पलों" के बराबर (बराबर न मिलें तो उनसे कुछ कम) घड़ी, पल लग्नसारणी में ढूंढिये, जिन्हें **"सारणीस्थ घड़ी–पल"** कहा जाएगा। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" के बाईं ओर लग्नसारणी के पहले कॉलम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घड़ी–पलों का "सारणीस्थ घडी–पलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" और "अभीष्ट घड़ी–पलों "का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहां लिखे हैं, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला– विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि, अंशों में जोड़ दें। अब इसमें अगले पृष्ठ पर दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिन्ह के अनुसार जोडने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण– मान लीजिए– वि. सं. 2029 के वैशाख प्रविष्टे 3 को 58 घ. 45 प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य 0 रा., 2 अंश 37 क. 47 वि. है। शिमला के अक्षांश 31 अंश 6 क. (उत्तर) हैं, अतः 31 अक्षांश वाली लग्नसारणी में स्पष्ट सूर्य की 0 (मेष) राशि के आगे 2 अंश के नीचे 2 घ. 55 प. हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में 2 घ. 55 प. के दाईं ओर 3 अंश के नीचे 3 घ. 2 प. लिखे हैं। इनका 2 घ. 55 प. से अन्तर 7 पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहले कॉलम में लिखे हुए 7 पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की 37 क. 47 वि. नहीं मिलीं। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर 34 क. 17 वि. देखें, जिनके बिल्कुल ऊपर 4 पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे 2 घ. 55 पल में जोड़ा और इष्टकाल के घ. प. भी इसमें जोड़े तो 61 घ. 44 प. (60 घ. घटाने पर 1 घ. 44 प.) 'अभीष्ट घड़ी--पल' हुए। लग्नसारणी में 'अभीष्ट घड़ी–पल' 1 घ. 44 प. नहीं हैं, अत इससे कुछ कम 1 घ. 40 प. सारणी में देखें, जो "सारणीस्थ घड़ी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहले कॉलम में 11 राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में 21 अंश लिखे हैं। इन 11 रा. 21 अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी–पलों" (1 घ. 40 प.) के दाईं ओर 22 अंश के नीचे 1 घ. 46 प. का 1 घ. 40 प. से अन्तर 6 पल 'सारणीस्थ अन्तर' है। "अभीष्ट घड़ी–पल" (1 घ. 44 प.) और सारणीस्थ घड़ी–पल (1 घ. 40 प.) का अन्तर 4 पल है। 'सहायक सारणी' की ऊपर वाली लाईन में लिखे गए 4 पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर 6 पल के आगे 40क. 00वि. लिखा है। इन्हें 11रा. 21 अं. में जोड़ने पर 11 रा. और 21अं. 40क. 00 वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. 2029 के आगे +1 कला लिखा है। इसे चिन्हानुसार 11 रा. 21 अं. 40 क. 0 वि. में जोड़ने पर 11 रा. 21 अं. 41 क. 00 वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्नसाधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्यस्पष्ट जानने की अवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सब की आवश्यकता रहती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३९।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़ , जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मि. घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
क. घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिं. घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
क. घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तु. घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृ. घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
म. घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कु. घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मीं. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मि. घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
क. घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिं. घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
क. घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तु. घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृ. घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
म. घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कु. घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मीं. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दशमलग्न साधनविधि

इष्टकाल के घ. प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्नसारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए जैसे कि ऊपर लग्नसारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्नसारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

दशमलग्न साधन का उदाहरणः— वि. सं. २०२६ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५६ प. है, अतः दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है। दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ०६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क. ०० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प. 'अमीष्ट घड़ी–पल' हुए। "दशम लग्नसारणी" में इन "अभीष्ट घड़ी–पलों" से कुछ कम घ. प. ४६।४२ 'सारणीस्थ घड़ी पल' धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं। अतः ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल का "सारणीस्थ अन्तर" हुआ। 'सारणीस्थ घड़ी–पल' ४६।४२ और अभीष्ट घड़ीपल ४६।४७ का अन्तर ५ पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३० क. ०० वि. मिली। इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं. में जोड़ने पर ८ रा.१६ अं. में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ० वि. हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२६ के आगे दिया गया अयनांश संस्कार + १क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ०० वि. निरयण दशमलग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल	१		२		३		४		५		६		७		८		९		१०		११		१२		१३	
→ ↓	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.
६	१०	०	२०	०	३०	०	४०	०	५०	०	६०	०														
७	८	३४	१७	९	२५	४३	३४	१७	४२	५१	५१	२६	६०	०												
८	७	३०	१५	०	२२	३०	३०	०	३७	३०	४५	०	५२	३०	६०	०										
९	६	४०	१३	२०	२०	०	२६	४०	३३	२०	४०	०	४६	४०	५३	२०	६०	०								
१०	६	०	१२	०	१८	०	२४	०	३०	०	३६	०	४२	०	४८	०	५४	०	६०	०						
११	५	२७	१०	५५	१६	२२	२१	४९	२७	१६	३२	४४	३८	११	४३	३८	४९	५	५४	३३	६०	०				
१२	५	०	१०	०	१५	०	२०	०	२५	०	३०	०	३५	०	४०	०	४५	०	५०	०	५५	०	६०	०		
१३	४	३७	९	१४	१३	५१	१८	२८	२३	५	२७	४२	३२	१९	३६	५६	४१	३३	४६	१०	५०	४७	५५	२३	६०	०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला
२०२३	+ ७	२०३१	०	२०३९	– ७	२०४७	– १३	२०५५	– २०	२०६३	–२६	२०७१	–३३
२०२४	+ ६	२०३२	– १	२०४०	– ८	२०४८	– १४	२०५६	– २१	२०६४	–२७	२०७२	–३४
२०२५	+ ५	२०३३	– २	२०४१	– ९	२०४९	– १५	२०५७	– २२	२०६५	–२८	२०७३	–३५
२०२६	+ ४	२०३४	– ३	२०४२	– ९	२०५०	– १६	२०५८	–२२	२०६६	–२९	२०७४	–३६
२०२७	+ ३	२०३५	– ४	२०४३	–१०	२०५१	– १७	२०५९	–२३	२०६७	–३०	२०७५	–३६
२०२८	+ २	२०३६	– ४	२०४४	–११	२०५२	– १८	२०६०	–२४	२०६८	–३१	२०७६	–३७
२०२९	+ १	२०३७	– ५	२०४५	–१२	२०५३	– १८	२०६१	–२५	२०६९	–३१	२०७७	–३८
२०३०	+ १	२०३८	– ६	२०४६	– १३	२०५४	– १९	२०६२	–२६	२०७०	–३२	२०७८	–३९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधी दे रहे है । स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पस्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने साम्पातिककाल' की पद्धति को अपनाया है । यहां हम ''साम्पातिककाल क्या है''- इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक- विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट-करने की सर्व- साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं ।

विधि:- सां. का. (साम्पतिककाल)से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों)से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है , तैयार करें

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर(+या-)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी 'से उठाइये।

विशेष- यदि ''अक्षांशादि सारणी ''में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है ।

ध्यान रहे- भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही है ।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीयमध्यमकाल- जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड - टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड - अन्तर के मिनटादि(या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का ''**स्थानीयमध्यमकाल**'' बन जाता है + यह चिह्न जोड़ने की एवं- यह चिह्न घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है ।

जैसे- चण्डीगढ में दोपहर के १२घं. ५७ मि. (भा. स्टैं टा.) पर स्थानीयमध्यकाल जानने के लिए इस (भा. स्टैं टा.)में से चण्डीगढ का स्टैण्डर्ड अन्तर -२२ मिनट ३२ सेकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सें. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१सितं.१९४२ ई. से १५ अक्तू १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थी । अत: इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे- सन्१९४४ की २० अग. को काई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन में १२ बज कर ४५ मि. पर पैदा हुआ । इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्म काल भा. स्टै.टा. के अनुसार ११ घं ४५ मि. मानना होगा ।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश - आगे दो [नं.(१) और नं.(२)]अयनांशसारणियां दी गई है । अयनांशसारणी नं.(१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखाअंशादि अयनांश लें, और अयनांशसारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें; - यह अभीष्ट तारीख का अयनांश होगा ।

जैसे - १५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए अयनांशसारणी नं.(१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३अं.२५ क २६ वि. प्राप्त किया । इसमें अयनांशसारणी नं.(२)से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोडने पर २३ अं.२५क. ५६ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल - आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गये है । इनके आधार पर इष्टकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है-

सां. का. कोष्ठक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिक काल कोष्ठक नं.(२)से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीप ईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें । इसमें सां. का. कोष्ठक नं.(३)से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार ठठा कर चिन्हानुसार जोडें या घटाएं । इस प्रकार मिले सां. का के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल(जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा- मिनटादि जोडें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा- मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं.(४)से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का बन जाएगा । इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं. से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए ।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण - यहां हम १५ जुलाई १९६९ को भा. स्टै.टा. के अनुसार प्रात: १०घं.४५मि. पर चम्बा (हि. प्र.)में सां. का. स्पष्ट करेगें । अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १०क.(पूर्व)एंव स्टैं. अन्तर - २५ मि. २० से. है । स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है, अत: इसे १० घण्टे४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ । सां. का . कोष्ठक नं. (१)से सन् १९६९ ई. का सां. का. (६घं.४१ मि. २ से.) लिया । इसमें कोष्ठक नं.(२)सें लिया गया १५ जुला. का सां का. (१२घं. ४८ मि. ४९ से.)जोड़ा तो १९ घं.२९ मि. ५१ सै. हुआ । चम्बा के रेखांश ७६अं.१० क. के लिए कोष्टक नं.(३)वाला संस्कार तो० है। अब १९घं. २९ मि. ५१सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १०घं.१९मि ४० सै. जोडा तो २९घं. ४९मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक न. (४)से स्थानीयमध्यमकाल के १०घं. २० मि. उठाए गए १ मि. ४२सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुए । क्योंकि यहां घण्टे२४से अधिक हैं अत:२४ घं. घटाए तो ५घं. ५१मि. १३से. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन बातों को भी ध्यान में रखें:-

(१)यदि धन (+)चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.)के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें से २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में ४ मि. जोड कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें । जैसे - कलकता में २जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बज कर ५५ मि.)भा. स्टै. टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । कलकत्ता का रेखांश ८८अं. २४ क, (पूर्व)और स्टै अन्तर +२३ मि. ३६ से. है। स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए२३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि. ३६ से. हुए यह २४ घ. से ज्यादा हो गया है , अत: इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ से.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्थानीयमध्यमकाल हुआ । अब सां. का. बनाने के लिए कोष्टक नं.(१) से १९७४ केआगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ से. में कोष्ठक नं.(२) से लिए गए २ जन. के ० घं. ३ मि. ५७ से. जोडने पर ६ घं. ४४ मि. ९ से. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (३) से कलकता के रेखांश ८८ से प्राप्त −८ से. चिह्न के अनुसार घटाए, तो ६ घं. ४४ मि. १ से. हुए । इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं. , २ मि. ३७ से. हुए । इसमें कोष्ठक नं.(४)से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ से. जोडने पर ७घं. २ मि. ४० से. हुए । क्योंकि स्टैं .टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोडने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अत: उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० से. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. को प्रयोग में लाइए ।

(२)सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें कि यदि स्टैं. टा. से ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सा.का. कोष्ठक नं. (४)का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे- जयपुर में १५ मार्च १९७० को ०घं. १५ मि.(भा. स्टै. टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व)और स्टैं अं.- २६ मि. ३२ से. है । यहां स्टैं टा. के घं. मि. में से स्टैं. अं. ज्यादा है, अत: स्टै. टा. में २४ घं. जोड़ कर स्टैं अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ से. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं.(१)से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ से. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ३७ मि. ४९ से जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ से. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. ३ वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ से. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ से. हुए । क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं. अं. से कम था अत:-यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(४)का प्रयोग हम नहीं करेगें । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११घं. १६ मि. २२ से. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए हैं।

(३)जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं - लीप इयर (२९ फरवरी वाले साल)में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे -मान लीजिए, १५ मार्च सन् १९४४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१) में सन् १९४४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ से. मिलें । क्योंकि हमारा सन् लीप इयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च)फरवरी के बाद की भी है, इसलिए ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)'' में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं.५१ मि. ४५ से.)ही लेगें और इन्हें ही ६ घं. ३७मि. १७ से. में जोड़ेंगे । ध्यान रहे- यदि सन् १९४४ की १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(२)''से १० फर.के ही घं. मि. से. उठाने होगें ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधिः-

उपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाईं और वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश कला लिखी हैं, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अत: अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्न सारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मिं. न मिले और यह भी अधिकतर सभव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ठ सां का. के घं. मि. न मिलें और यह भी सम्भव है कि अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी भी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम)सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम(अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखीं लग्न की अंश - कलाएं नोट करें - यह ''स्थूलतम लग्न''है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३०मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''स्थूलतम लग्न'' में जोड़ देने से ''स्थूललग्न'' बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश-कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति '' की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' के धन,ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :- लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न)दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात् -दशम स्पष्ट करने के लिए अंक्षाशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं. मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न)की अंश-कलाएं उठा लें। यह ''स्थूलदशमलग्न'' है। सां.का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३०से भाग देने पर कलाएं मिलेगी। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा । इसमें से इसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरण:-चम्बा (हि.प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रातः १० घंटे ४५मि. (भा. स्टै. टा.)पर सां.का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अं.२९ क. है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है । यह ''स्थूलतम लग्न''है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घ. ३० मि. के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का.६घं. ० मि. के आगें १८० अं.० क. लिखा है । इन दोनों का अन्तर ६अं. २६ क. (=३८६क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घं. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सा.का.के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मिनट की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७० क. (= ४ अं. ३० क.) मिलीं। इन्हें '' स्थूलतम लग्न '' में जोड़ने पर १७८ अं. ४ क. ''स्थूल लग्न ''हुआ ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग १ म}

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश १७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४
०	३०	८	१०	१००	३	१०१	१५	१०२	२७	१०३	४१	१०४	५७
१	०	१६	१७	१०६	५४	१०८	३	१०९	१३	११०	२४	१११	३६
१	३०	२४	१८	११३	४७	११४	५३	११५	५९	११७	६	११८	१४
२	०	३२	११	१२०	४३	१२१	४५	१२२	४७	१२३	५०	१२४	५२
२	३०	३९	५५	१२७	४५	१२८	४३	१२९	४०	१३०	३६	१३१	३३
३	०	४७	२८	१३४	५४	१३५	४५	१३६	३६	१३७	२७	१३८	१८
३	३०	५४	५१	१४२	१०	१४२	५५	१४३	३९	१४४	२२	१४५	६
४	०	६२	५	१४९	३३	१५०	१०	१५०	४६	१५१	२३	१५१	५८
४	३०	६९	१२	१५७	३	१५७	३१	१५८	०	१५८	२७	१५८	५५
५	०	७६	११	१६४	३८	१६४	५८	१६५	१७	१६५	३६	१६५	५४
५	३०	८३	७	१७२	१८	१७२	२८	१७२	३८	१७२	४७	१७२	५७
६	०	९०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८७	४२	१८७	३२	१८७	२२	१८७	१३	१८७	३
७	०	१०३	४९	१९५	२२	१९५	२	१९४	४३	१९४	२४	१९४	६
७	३०	११०	४८	२०२	५७	२०२	२९	२०२	०	२०१	३३	२०१	५
८	०	११७	५५	२१०	२७	२०९	५०	२०९	१४	२०८	३७	२०८	२
८	३०	१२५	९	२१७	५०	२१७	५	२१६	२१	२१५	३८	२१४	५४
९	०	१३२	३२	२२५	६	२२४	१५	२२३	२४	२२२	३३	२२१	४२
९	३०	१४०	५	२३२	१५	२३१	१७	२३०	२०	२२९	२४	२२८	२७
१०	०	१४७	४९	२३९	१७	२३८	१५	२३७	१३	२३६	१०	२३५	८
१०	३०	१५५	४२	२४६	१३	२४५	७	२४४	१	२४२	५४	२४१	४६
११	०	१६३	४३	२५३	६	२५१	५७	२५०	४७	२४९	३६	२४८	२४
११	३०	१७१	५०	२५९	५७	२५८	४५	२५७	३३	२५६	१९	२५५	३
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश १७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६
१२	३०	१८८	१०	२७३	४१	२७२	२७	२७१	११	२६९	५३	२६८	३३
१३	०	१९६	१७	२८०	३९	२७९	२५	२७८	९	२७६	५०	२७५	२९
१३	३०	२०४	१८	२८७	४३	२८६	३०	२८५	१५	२८३	५७	२८२	३५
१४	०	२१२	११	२९४	५७	२९३	४६	२९२	३३	२९१	१६	२८९	५५
१४	३०	२१९	५५	३०२	२१	३०१	१४	३००	४	२९८	५०	२९७	३२
१५	०	२२७	२८	३०९	५८	३०८	५६	३०७	५१	३०६	४२	३०५	२८
१५	३०	२३४	५१	३१७	४९	३१६	५४	३१५	५५	३१४	५३	३१३	४५
१६	०	२४२	५	३२५	५४	३२५	७	३२४	१७	३२३	२३	३२२	२५
१६	३०	२४९	१२	३३४	१२	३३३	३५	३३२	५५	३३२	१२	३३१	२६
१७	०	२५६	११	३४२	४१	३४२	१५	३४१	४८	३४१	१८	३४०	४५
१७	३०	२६३	७	३५१	१८	३५१	५	३५०	५१	३५०	३६	३५०	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	८	४१	८	५५	९	९	९	२४	९	४१
१९	०	२८३	४९	१७	११	१७	४५	१८	१२	१८	४२	१९	१५
१९	३०	२९०	४८	२५	४८	२६	२५	२७	५	२७	४८	२८	३४
२०	०	२९७	५५	३४	६	३४	५३	३५	४३	३६	३७	३७	३५
२०	३०	३०५	९	४२	११	४३	६	४४	५	४५	७	४६	१४
२१	०	३१२	३२	५०	२	५१	४	५२	९	५३	१८	५४	३२
२१	३०	३२०	५	५७	३९	५८	४६	५९	५६	६१	१०	६२	२८
२२	०	३२७	४९	६५	३	६६	१४	६७	२७	६८	४४	७०	५
२२	३०	३३५	४२	७२	१७	७३	३०	७४	४५	७६	३	७७	२५
२३	०	३४३	४३	७९	२१	८०	३५	८१	५१	८३	१०	८४	३१
२३	३०	३५१	५०	८६	१९	८७	३३	८८	४९	९०	७	९१	२७
२४	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५घं. ३० मि. के आगे क्रमश: १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अत: यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्न गति धन है अत: इसे "स्थूल लग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३अं. २६क. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (= ५ रा ४ अं. ३९ क.) निरयणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का उदाहरण- १५ जुला. १९६९ ई. को प्रात: १० घं. ४५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर ही चम्बा, हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां का ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालमें में सां.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशमलग्न८३ अं.७क. है, यह "स्थूल दशमलग्न" है। सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमश: ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (= ४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.- ५घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४अं.४९क.) मिली। इन्हें "स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं. ३० क. (=२ रा.४अं. ३०क.) इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें-यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुत: अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "गणकमार्तण्ड" में हमने किया है वहाँ पढ़ें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग २ य}

सम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए दशम		अंक्षाश २३° (उ.) लग्न		अंक्षाश २६° (उ.) लग्न		अंक्षाश २९° (उ.) लग्न		अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न		अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९९	३५	१००	५९	१०२	२६	१०३	५७	१०५	३४
०	३०	८	१०	१०६	१४	१०७	३४	१०८	५७	११०	२४	१११	५३
१	०	१६	१७	११२	४९	११४	४	११५	२२	११६	४३	११८	७
१	३०	२४	१८	११९	२२	१२०	३३	१२१	४५	१२३	०	१२४	१७
२	०	३२	११	१२५	५६	१२७	०	१२८	७	१२९	१७	१३०	२५
२	३०	३९	५५	१३२	३१	१३३	२९	१३४	२९	१३५	३०	१३६	३२
३	०	४७	२८	१३९	३	१४०	००	१४०	५२	१४१	४५	१४२	४०
३	३०	५४	५१	१४५	५०	१४६	३४	१४७	१८	१४८	४	१४८	५०
४	०	६२	५	१५२	३४	१५३	१०	१५३	४७	१५४	२४	१५५	१
४	३०	६९	१२	१५९	२२	१५९	४०	१६०	१७	१६०	४६	१६१	१४
५	०	७६	११	१६६	१३	१६६	३२	१६६	५०	१६७	९	१६७	२८
५	३०	८३	७	१७३	६	१७३	१५	१७३	२५	१७३	३४	१७३	४४
६	०	९०	०	१८०	००	१८०	००	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८६	५४	१८६	४५	१८६	३५	१८६	२६	१८६	१६
७	०	१०३	४९	१९३	४७	१९३	२८	१९३	१०	१९२	५१	१९२	३२
७	३०	११०	४८	२००	३८	२००	१०	१९९	४३	१९९	१४	१९८	४६
८	०	११७	५५	२०७	२६	२०६	५०	२०६	१३	२०५	३६	२०४	५९
८	३०	१२५	४९	२१४	१०	२१३	२६	२१२	४२	२११	५६	२११	१०
९	०	१३२	३३	२२०	५१	२२०	००	२१९	८	२१८	१५	२१७	२०
९	३०	१४०	५	२२७	२९	२२६	३१	२२५	३१	२२४	३०	२२३	२८
१०	००	१४७	४९	२३४	४	२३३	०	२३१	५३	२३०	४५	२२९	३५
१०	३०	१५५	४२	२४०	३८	२३९	२७	२३८	१५	२३७	०	२३५	४३
११	०	१६३	४३	२४७	११	२४५	५६	२४४	३८	२४३	१७	२४१	५३
११	३०	१७१	५०	२५३	४६	२५२	२६	२५१	३	२४९	३६	२४८	७
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	३	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६

सम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए दशम		अंक्षाश २३° (उ.) लग्न		अंक्षाश २६° (उ.) लग्न		अंक्षाश २९° (उ.) लग्न		अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न		अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	कं.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	१	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६
१२	३०	१८८	१०	२६७	१०	२६५	४३	२६४	१२	२६२	३६	२६०	५४
१३	०	१९६	१७	२७४	३	२७२	३४	२७१	०	२६९	२१	२६७	३३
१३	३०	२०४	१८	२८१	९	२७९	३९	२७८	२	२७६	१९	२७४	२९
१४	०	२१२	११	२८८	३०	२८६	५९	२८५	२२	२८३	३६	२८१	४५
१४	३०	२१९	५५	२९६	९	२९४	४०	२९३	४	२९१	२०	२८९	२६
१५	००	२२७	२८	३०४	१०	३०२	४४	३०१	१२	२९९	२८	२९७	३८
१५	३०	२३४	५१	३१२	३३	३११	१५	३०९	४८	३०८	१३	३०६	२५
१६	०	२४२	५	३२१	२२	३२०	१३	३१८	५६	३१७	३०	३१५	५४
१६	३०	२४९	१२	३३०	३५	३२९	३९	३२८	३६	३२७	२५	३२६	४
१७	०	२५६	११	३४०	९	३३९	३०	३३८	४५	३३७	५४	३३६	५५
१७	३०	२६३	७	३५०	००	३४९	४०	३४९	१६	३४८	४९	३४८	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	१०	०	१४	२०	१०	४४	११	११	११	४१
१९	०	२८३	४९	१९	५१	२०	३०	२१	१५	२२	६	२३	४
१९	३०	२९०	४८	२९	२५	३०	२१	३१	२४	३२	३५	३३	५६
२०	०	२९७	५५	३८	३८	३९	४७	४१	४	४२	३०	४४	६
२०	३०	३०५	९	४७	२७	४८	४५	५०	१२	५१	४७	५३	३५
२१	०	३१२	३२	५५	५०	५७	१६	५८	४८	६०	३२	६२	२२
२१	३०	३२०	५	६३	५१	६५	२०	६६	५६	६८	४०	७०	३७
२२	०	३२७	४९	७१	३०	७३	१	७४	३८	७६	२४	७८	१५
२२	३०	३३५	४२	७८	५१	८०	२१	८१	५८	८३	४१	८५	३१
२३	०	३४३	४३	८५	४६	८७	२६	८९	०	९०	३९	९२	२६
२३	३०	३५१	५०	९२	५०	९४	१७	९५	४८	९७	२४	९९	६
२४	०	०००	०	९९	३५	१००	५९	१०२	२६	१०३	५७	१०५	३४

सम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सनु	घं.	मि.	से.	सनु	घं.	मि.	से.	सनु	घं.	मि.	से.	सनु	घं.	मि.	से.	सनु	घं.	मि.	से.	सनु	घं.	मि.	से.	सनु	घं.	मि.	से.	सनु	घं.	मि.	से.
१९७१	६	३९	०७	१९७८	६	४०	१६	१९८५	६	४१	३२	१९९२	६	३८	४७	१९९९	६	३९	५६	२००६	६	४१	११	२०१३	६	४२	२३	२०२०	६	३९	३९
१९७२	६	३८	१०	१९७९	६	३९	२२	१९८६	६	४०	३५	१९९३	६	४१	४६	२०००	६	३९	०२	२००७	६	४०	१४	२०१४	६	४१	२६	२०२१	६	४२	३८
१९७३	६	४१	१०	१९८०	६	३८	२४	१९८७	६	३९	३८	१९९४	६	४०	४९	२००१	६	४२	०१	२००८	६	३९	१७	२०१५	६	४०	२९	२०२२	६	४१	४०
१९७४	६	४०	१२	१९८१	६	४१	२३	१९८८	६	३८	४०	१९९५	६	३९	५२	२००२	६	४१	०४	२००९	६	४२	१६	२०१६	६	३९	३१	२०२३	६	४०	४३
१९७५	६	३९	१५	१९८२	६	४०	२६	१९८९	६	४१	३९	१९९६	६	३८	५४	२००३	६	४०	०७	२०१०	६	४१	१९	२०१७	६	४२	३१	२०२४	६	३९	४६
१९७६	६	३८	१७	१९८३	६	३९	२६	१९९०	६	४०	४१	१९९७	६	४१	५३	२००४	६	३९	०९	२०११	६	४०	२१	२०१८	६	४१	३३	२०२५	६	४२	४५
१९७७	६	४१	१६	१९८४	६	३८	३२	१९९१	६	३९	४४	१९९८	६	४०	५६	२००५	६	४२	०९	२०१२	६	३९	२४	२०१९	६	४०	३६	२०२६	६	४१	४८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० २

ता.	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून			जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसम्बर			ता.
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	↓
१	०	०	०	२	२	१३	३	५२	३७	५	५४	५१	७	५३	७	९	५५	२१	११	५३	३८	१३	५५	५०	१५	[illegible]	४	१७	५६	२१	१९	५८	३४	२१	५६	५०	१
२	०	३	५७	२	६	९	३	५६	३३	५	५८	४७	७	५७	४	९	५९	१७	११	५७	३४	१३	५९	४७	१६	२	०	१८	०	१७	२०	२	३१	२२	०	४७	२
३	०	७	५३	२	१०	६	४	०	३०	६	२	४३	८	१	०	१०	३	१४	१२	१	३१	१४	३	४४	१६	५	५७	१८	४	१४	२०	६	२७	२२	४	४३	३
४	०	११	५०	२	१४	२	४	४	२६	६	६	४०	८	४	५७	१०	७	१०	१२	५	२७	१४	७	४०	१६	९	५३	१८	८	९	२०	१०	२४	२२	८	४०	४
५	०	१५	४६	२	१७	५९	४	८	२३	६	१०	३६	८	८	५३	१०	११	७	१२	९	२४	१४	११	३६	१६	१३	५०	१८	१२	७	२०	१४	२०	२२	१२	३६	५
६	०	१९	४३	२	२१	५५	४	१२	१९	६	१४	३३	८	१२	५०	१०	१५	३	१२	१३	२१	१४	१५	३३	१६	१७	४६	१८	१६	३	२०	१८	१७	२२	१६	३३	६
७	०	२३	३९	२	२५	५२	४	१६	१६	६	१८	२९	८	१६	४६	१०	१९	०	१२	१७	१७	१४	१९	२९	१६	२१	४३	१८	२०	०	२०	२२	१३	२२	२०	३०	७
८	०	२७	३६	२	२९	४८	४	२०	१२	६	२२	२६	८	२०	४३	१०	२२	५६	१२	२१	१४	१४	२३	२६	१६	२५	४०	१८	२३	५७	२०	२६	१०	२२	२४	२७	८
९	०	३१	३२	२	३३	४५	४	२४	९	६	२६	२२	८	२४	३९	१०	२६	५३	१२	२५	१०	१४	२७	२३	१६	२९	३७	१८	२७	५४	२०	३०	६	२२	२८	२३	९
१०	०	३५	२९	२	३७	४२	४	२८	५	६	३०	१९	८	२८	३६	१०	३०	४९	१२	२९	६	१४	३१	२०	१६	३३	३३	१८	३१	५०	२०	३४	३	२२	३२	२०	१०
११	०	३९	२५	२	४१	३९	४	३२	२	६	३४	१६	८	३२	३२	१०	३४	४६	१२	३३	३	१४	३५	१६	१६	३७	३०	१८	३५	४७	२०	३८	०	२२	३६	१६	११
१२	०	४३	२२	२	४५	३५	४	३५	५९	६	३८	१३	८	३६	२९	१०	३८	४२	६६	३६	५९	१४	३९	१३	१६	४१	२६	१८	३९	४३	२०	४१	५६	२२	४०	१३	१२
१३	०	४७	१८	२	४९	३२	४	३९	५६	६	४२	९	८	४०	२५	१०	४२	३९	१२	४०	५६	१४	४३	९	१६	४५	२३	१८	४३	४०	२०	४५	५२	२२	४४	९	१३
१४	०	५१	१५	२	५३	२८	४	४३	५२	६	४६	६	८	४४	४२	१०	४६	३५	१२	४४	५२	१४	४७	६	१६	४९	१९	१८	४७	३७	२०	४९	४९	२२	४८	६	१४
१५	०	५५	१२	२	५७	२५	४	४७	४९	६	५०	२	८	४८	१८	१०	५०	३२	१२	४८	४९	१४	५१	२	१६	५३	१६	१८	५१	३३	२०	५३	४५	२२	५२	२	१५
१६	०	५९	८	३	१	२१	४	५१	४५	६	५३	५९	८	५२	१५	१०	५४	२८	१२	५२	४५	१४	५४	५९	१६	५७	१२	१८	५५	३०	२०	५७	४२	२२	५५	५९	१६
१७	१	३	४	३	५	१८	४	५५	४२	६	५७	५५	८	५६	११	१०	५८	२५	१२	५६	४२	१४	५८	५५	१७	१	९	१८	५९	२६	२१	१	३९	२२	५९	५६	१७
१८	१	७	१	३	९	१४	४	५९	३८	७	१	५२	९	०	८	११	२	२१	१३	०	३८	१५	२	५२	१७	५	५	१९	३	२२	२१	५	३६	२३	३	५३	१८
१९	१	१०	५७	३	१३	११	५	३	३५	७	५	४८	९	४	४	११	६	१८	१३	४	३५	१५	६	४८	१७	९	२	१९	७	१९	२१	९	३२	२३	७	४९	१९
२०	१	१४	५४	३	१७	८	५	७	३१	७	९	४५	९	८	१	११	१०	१५	१३	८	३२	१५	१०	४५	१७	१२	५८	१९	११	१५	२१	१३	२९	२३	११	४६	२०
२१	१	१८	५१	३	२१	५	५	११	२८	७	१३	४१	९	११	५८	११	१४	१२	१३	१२	२९	१५	१४	४१	१७	१६	५५	१९	१५	१२	२१	१७	२५	२३	१५	४२	२१
२२	१	२२	४८	३	२५	१	५	१५	२५	७	१७	३८	९	१५	५५	११	१८	८	१३	१६	२५	१५	१८	३८	१७	२०	५१	१९	१९	८	२१	२१	२२	२३	१९	३९	२२
२३	१	२६	४४	३	२८	५८	५	१९	२२	७	२१	३४	९	१९	५१	११	२२	५	१३	२०	२२	१५	२२	३४	१७	२४	४८	१९	२३	५	२१	२५	१८	२३	२३	३५	२३
२४	१	३०	४१	३	३२	५४	५	२३	१८	७	२५	३१	९	२३	४८	११	२६	१	१३	२४	१८	१५	२६	३१	१७	२८	४४	१९	२७	१	२१	२९	१५	२३	२७	३२	२४
२५	१	३४	३७	३	३६	५१	५	२७	१५	७	२९	२८	९	२७	४४	११	२९	५८	१३	२८	१५	१५	३०	२७	१७	३२	४१	१९	३०	५८	२१	३३	११	२३	३१	२८	२५
२६	१	३८	३४	३	४०	४७	५	३१	११	७	३३	२४	९	३१	४१	११	३३	५४	१३	३२	११	१५	३४	२४	१७	३६	३७	१९	३४	५४	२१	३७	८	२३	३५	२५	२६
२७	१	४२	३०	३	४४	४४	५	३५	८	७	३७	२०	९	३५	३७	११	३७	५१	१३	३६	८	१५	३८	२०	१७	४०	३४	१९	३८	५१	२१	४१	४	२३	३९	२१	२७
२८	१	४६	२७	३	४८	४०	५	३९	५	७	४१	१७	९	३९	३४	११	४१	४७	१३	४०	४	१५	४२	१७	१७	४४	३१	१९	४२	४८	२१	४५	१	२३	४३	१८	२८
२९	१	५०	२३	३	५२	३७	५	४३	१	७	४५	१३	९	४३	३०	११	४५	४४	१३	४४	१	१५	४६	१४	१७	४८	२८	१९	४६	४५	२१	४८	५७	२३	४७	१४	२९
३०	१	५४	२०				५	४६	५८	७	४९	१०	९	४७	२७	११	४९	४१	१३	४८	५७	१५	५०	११	१७	५२	२४	१९	५०	४१	२१	५२	५४	२३	५१	११	३०
३१	१	५८	१६				५	५०	५४				९	५१	२४				१३	५१	५४	१५	५४	७				१९	५४	३८				२३	५५	७	३१
३२																																		२३	५९	३	३२

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए ।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

रेखांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
संस्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-२	-१५	-२८	-४१	-५४
रेखांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-६७/+१६९	+१५६	+१४३	+१३०	+११६	+१०३	+८९	+७७	+६३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ४

मि.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५
घं.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २१	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	० ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५२	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं० १

ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश
	अं. क. वि.		अं. क. वि.		अं. क. वि.
१९५१	२३ १० २१	१९७५	२३ ३० २८	१९९९	२३ ५० ३४
१९५२	२३ ११ १२	१९७६	२३ ३१ १७	२०००	२३ ५१ २४
१९५३	२३ १२ ०२	१९७७	२३ ३२ ०८	२००१	२३ ५२ १५
१९५४	२३ १२ ५२	१९७८	२३ ३२ ५९	२००२	२३ ५३ ०५
१९५५	२३ १३ ४२	१९७९	२३ ३३ ४९	२००३	२३ ५३ ५५
१९५६	२३ १४ ३३	१९८०	२३ ३४ ३९	२००४	२३ ५४ ४६
१९५७	२३ १५ २३	१९८१	२३ ३५ २९	२००५	२३ ५५ ३६
१९५८	२३ १६ १३	१९८२	२३ ३६ २०	२००६	२३ ५६ २६
१९५९	२३ १७ ०३	१९८३	२३ ३७ १०	२००७	२३ ५७ १७
१९६०	२३ १७ ५४	१९८४	२३ ३८ ००	२००८	२३ ५८ ०७
१९६१	२३ १८ ४४	१९८५	२३ ३८ ५१	२००९	२३ ५८ ५७
१९६२	२३ १९ ३५	१९८६	२३ ३९ ४१	२०१०	२३ ५९ ४८
१९६३	२३ २० २५	१९८७	२३ ४० ३१	२०११	२४ ०० ३[illegible]
१९६४	२३ २१ १५	१९८८	२३ ४१ २१	२०१२	२४ ०१ २८
१९६५	२३ २२ ०५	१९८९	२३ ४२ १२	२०१३	२४ ०२ १८
१९६६	२३ २२ ५५	१९९०	२३ ४३ ०२	२०१४	२४ ०३ ०९
१९६७	२३ २३ ४६	१९९१	२३ ४३ ५२	२०१५	२४ ०३ ५९
१९६८	२३ २४ ३६	१९९२	२३ ४४ ४२	२०१६	२४ ०४ ४९
१९६९	२३ २५ २६	१९९३	२३ ४५ ३३	२०१७	२४ ०५ ४०
१९७०	२३ २६ १६	१९९४	२३ ४६ २३	२०१८	२४ ०६ ३०
१९७१	२३ २७ ०७	१९९५	२३ ४७ १३	२०१९	२४ ०७ २०
१९७२	२३ २७ ५७	१९९६	२३ ४८ ०३	२०२०	२४ ०८ १०
१९७३	२३ २८ ४७	१९९७	२३ ४८ ५४	२०२१	२४ ०९ ०१
१९७४	२३ २९ ३७	१९९८	२३ ४९ ४४	२०२२	२४ ०९ ५१

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४२	४२
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

महर्षि–पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान–चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घड़ी में ३६ दिन	चंद्रदशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन	भौम दशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	राहु दशा वर्ष १८ एक घड़ी में १०८ दिन	गुरु दशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन	शनिदशा वर्ष १९ एक घड़ी में ११४ दिन	बुधदशा वर्ष १७ एक घड़ी में १०२ दिन	केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन
कृ. उ.फा. उ.षा.	रो. ह. श्रव.	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. श.	पुन. वि. पू.भा.	पु. अनु. उ.भा.	आश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अश्वि.	पू.फा. पूषा. भ.
तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्
ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
र. ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	बृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	बृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	र. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	बृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	र. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	बृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	र. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
बृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	र. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	र. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	बृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	र. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	बृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	र. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ०६	रा. २ १० ६	बृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	र. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	बृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

शिवोक्त योगिनी–दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व. १	पिंगला व. २	धान्या व. ३	भ्रामरी व. ४	भद्रा व. ५	उल्का व. ६	सिद्धा व. ७	संकटा व. ८	दशा तथा वर्ष
चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	केतु	दशेश ग्रह
आर्द्रा चि. श्रव.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य वि. श.	अश्वि आश्ले अनु पूभा	भ. म. ज्ये. उ.भा.	कृ. पूफा. मू. रे.	रो. उ.फा. पूषा.	मृ. ह. उ.षा.	जन्म नक्षत्र
मं. ० १०	पिं. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	
पिं. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	मं. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ. ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पिं. ५ १०	
भ्रा. १ १०	भ. ३ १०	उ. ६ ०	सि. ९ १०	सं. १३ १०	मं. २ ०	पिं. ४ २०	धा. ८ ०	अन्तर्दशा के
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	सं. १० २०	मं. १ २०	पिं. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा. १० २०	मास, दिन
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पिं ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ. १३ १०	
सि. २ १०	सं. ५ १०	मं. १ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
सं. २ २०	मं. ० २०	पिं. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा. ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	

वर्षकुण्डली में १२ भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृपभय	धनलाभ	हानि	कष्ट	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्ट	धर्मनाश	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष	शत्रुनाश	सुख	पीड़ा	कष्ट	दुःख	भाग्योदय	विजय	धनलाभ	व्यय
भौम	ज्वर	धननाश	जय	व्यसन	दुर्गति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुध	सुख	धनलाभ	सुख	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुख	मानलाभ	सुखलाभ	विग्रह
गुरु	सुख	धनलाभ	जय	वाहनलाभ	पुत्रलाभ	कष्ट	सुख	रोग	धर्मलाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोक
शुक्र	मानप्राप्ति	धनप्राप्ति	कीर्तिलाभ	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभीति	स्त्रीसुख	कष्ट	धर्मोदय	मानलाभ	धनलाभ	व्यय
शनि	वायुरोग	पीड़ा	धनलाभ	दुःख	पुत्रप्राप्ति	जय	स्त्रीकष्ट	रोग	भाग्यहानि	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहु	सिरदर्द	राजभय	सुख	दुःख	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभय	दुःख	हानि	विजय	सुखलाभ	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभय	दुर्बुद्धि	सुख	कलेश	पीड़ा	भाग्यनाश	धनलाभ	लाभ	शोक
मुन्था	सुख	यश, अर्थ	पुष्टि	दुःख	सुखप्राप्ति	कष्ट	व्यसन	दुःख	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभ	कष्ट

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट–घटीपल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष; फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास; फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध दिन; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्धांक घटी; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश–सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७
विपल.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
विपल.	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०	५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना– वेधसिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८.५पल कम है। अतः सूक्ष्म–वर्षप्रवेशकालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म–वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफलसाधन–प्रकारः– (१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे उसे गतवर्ष, (गताब्द) जानें। स्मरण रहे, कि–मेषार्कप्रवेश से प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनंतर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना होगा–वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्– इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी में जो वारादि अंक हैं, उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी, पल जोड़ने से वर्षप्रवेशकालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आ जाए तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से शेष को वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट समझें।

(२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यतुल्य वर्ष में सूर्य मिले, उसी दिन वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी–कभी वार नहीं मिलता। वहां पर गणितागत वार को ठीक जाने। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्नसारणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाएं।

मुन्थानयनप्रकार– गताब्दसंख्या में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे उसे मुन्था जानें। यह मुन्था प्रति दिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा– गत वर्ष में जन्मनक्षत्र जोड़कर, उसमें से दो घटाएं, ९ का भाग देने से जो शेष बचे उसे दशा समझें। १ शेष से सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, और ९ शेष से शुक्र की दशा जानें।

दशा के दिन– सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० – ये दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल– सूर्य वर्ष लग्न से ९, चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें और शनि १२ वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल– सू. १।५, चं. २।४, मं. १।८।१०, बुध ३।६, गुरु ९।१२।४, शु. २।७।१२ तथा श. १०।११ ७ राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुषस्त्री–ग्रह–बल– स्त्रीग्रह (चं., बु., शु., श.) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू., मं., बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रि बल–**दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिनलग्नपति→	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु..	च.
रात्रिलग्नपति→	गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

वर्ष में दृष्टि–ज्ञान और फल

⁂ वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो उस भाव से ५वें, ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। ⁂ तीसरे ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य कठिनता से एवं गुप्त भाव से सफल हो।⁂ पहले, सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। फल– शत्रुता करे, मित्र से बैर, धनहानि, बनते काम को बिगड़ना आदि फल होते हैं।⁂ ४–१०वें गुप्तशत्रु दृष्टि से देखता है। फल– कार्य बड़ी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः– जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५ (दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी समयेश होता है।) इन पांच अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होता है। यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह और बल, दृष्टि, अधिकार– तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश हो। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो। फल– वर्षेश ६।८।१२ वें व अस्तंगत, हीनबली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भयविशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग– वर्षकुण्डली में लग्नेश– तृतीयेश वा चतुर्थेश–नवमेश एक घर में हों या एक–दूसरे को मित्रदृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्षलग्नेश वक्री हो और वह मित्रग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली का योग बनेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेशकाल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि– सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से १/२ मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष–प्रवेश–सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए।

इस सारणी में घं. मि. का प्रयोग है, अतः इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टैं. टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे– मान लीजिए, किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा. स्टैं. टा.) ८घं. २०मि. (प्रातः) है। उसके वारादि जन्मकाल (2 वा. 8 घं. 20 मि.) में सारणी से गताब्द 9 द्वारा प्राप्त वारादि काल 4 वा. 7 घं. 22 मि. जोड़ने पर 6 वा. 15 घं. 42 मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को 15 घं. 42 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर होगा।

ध्यान रहे– इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के 12 बजे बदलने वाला होगा। अतः यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार होना चाहिए।

सूक्ष्म वर्षप्रवेश सारणी

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
१	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९	६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
२	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८	६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
३	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७	६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
४	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६	६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
५	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०/२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/०६	६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
६	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५	६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
७	१/१९/०४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४	६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
८	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३	६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
९	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२	६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
१०	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१	७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
११	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/०३/१	७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
१२	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०	७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय जातक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना चाहिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क (अमेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली (भारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए। इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश–रेखांशानुसार ही होना चाहिए। क्योंकि प्राचीनकाल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अतः ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रवेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है।

इस विषय को स्पष्टता से जानने के लिए 'सं. 2052 वि. के' "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृ. 41/42 पर मेरा लेख "वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए?" पढ़ें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न–भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब–जब जातक के जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, विकलाओं के तुल्य अंश, कला, विकलाओं पर आता है, तब–तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मासप्रवेश) होता है। उदाहरणार्थ– यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य 2 रा. 10 अं. 25 क. 40 वि. है, तो जब जब (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों में मेष आदि राशियों के 10 अं. 25 क. 40 वि. पर पहुँचेगा– इसका निर्णय सूर्य की मास–प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास–प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है। (इसके लिए सं. 2050 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृष्ठ 41 पर दिया गया मेरा लेख "स्पष्टमान से मास–प्रवेशकाल" पढ़ें।)

–प्रियव्रत शर्मा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	०	३/१०	३/१०	एकपाददृष्टिः
५/९	५/९	५/९	५/९	०	५/९	५/९	५/९	५/९	द्विपाददृष्टिः
४/८	४/८	०	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४/७/८	७	५/७/९	७	३/७/१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
चं. मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बुध	मित्र–ग्रहाः
बु.	मं.श.गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु	उच्चराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	परमोच्चांशाः
तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन	नीचराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे., वृश्चि.	मि., क.	ध., मी.	वृष, तुला	म., कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्णः
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुरुष, स्त्री, नपुंसकः
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लौह	लौह	लौह	धातु
चतुष्पद्	बहुपद	चतुष्पद्	द्विपद	द्विपद्	द्विपद्	भुजंगपद्	अपद्	अपद्	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी,स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू.	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल.	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर.	विवर	स्थानम्

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म-नक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़ें, 3 और जोड़ें, 8 से भाग दें, तो शेष मंगलादि योगिनी दशा होती है।

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा (मास–दिन)

मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

गर्भयोग— वर्ष–कुण्डली में लग्नेश पांचवें या सातवें पड़ा हो व पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े हों तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवें हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्नलग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करें, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ) का भाग दें। लब्ध, जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्नलग्न की राशि के अंक मिलाएं। प्राप्तांक को मुन्था का स्पष्ट लग्न समझें और प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि के स्वामी को जन्मलग्नेश जानें अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्मलग्नपति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि का स्वामी जो हो उसे लग्नेश समझिए। प्रश्नपत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष है। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग

यदि जन्मलग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्मनक्षत्र भी वर्ष में आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ न हों तो अशुभ, कष्टभय होता है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ हों तो अशुभ फल नहीं होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आवश्यक मुहूर्त्त

कोई भी कार्य यदि शास्त्र–सम्मत शुभ–मुहूर्त्त में किया जाए तो वह अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गया–गोदावरी–यात्रा में, नवरात्रकृत्य में एवम् चातुर्मास्य व्रत में गुरु–शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभ तिथियां– १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३। **शुभ नक्षत्र**–तीनों उत्तरा, मृ., ह., अनु., रो., स्वा., श्र., ध., श.। **शुभ लग्न**– जब लग्न और ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; सूर्य, मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांश में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में हो तो कन्या होती है।

चित्रा, पुन. पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभकाल

भद्रा; ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां; संक्रान्ति का दिन, सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां; ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो–दो घड़ी; मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २–२ घड़ी; ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी–आधी घड़ी; ५, ९, १ लग्नों की आधी–आधी घड़ी; ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक–एक घड़ी; ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक–एक घड़ी; निर्बल तारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र एवम् ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृति योग; माता–पिता के श्राद्ध का दिन; दिन का समय; परिघ योग का आधा भाग; उत्पात से हत नक्षत्र; जन्मराशि से अष्टमलग्न; पापयुक्त लग्न तथा पापाकान्त नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भमासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री–पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए और अन्यकार्यों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए– यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन संस्कार का मुहूर्त्त

यह संस्कार गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृग., पुन., पु., ह., मू. और श्रवण नक्षत्रों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तो शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमान्त संस्कार का मुहूर्त्त

गर्भाधान के छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है। **"सीमान्त जातकादीनि प्राशनान्तानि यानि वै। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः।।"**

गर्भ–रक्षा के लिए विष्णुपूजा

गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में; शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब गर्भ की रक्षा के लिए विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधाजनन संस्कार

बालक के उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर **"ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भू र्भुवः स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्व त्वयि दधामि"**– इन पांचों मन्त्रों से बालक को थोड़ा–थोड़ा चार बार मधु चटावें– ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिकापथ्य का मुहूर्त

रिक्ता., अमा, भद्रा, व्यतिपात एवं वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों; वार चं. बु. गु. श. हों; नक्षत्र मृग., पुन., पु., श्र., रे., म. हों– तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि, नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त्त

रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृग., ह., स्वा., अश्वि. और अनु. नक्षत्रों में; रवि, गुरु और भोम वारों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में शुभ हैं। आर्द्रा, पुन., पु., श्र., म., भ., कृ., वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री द्वारा जलपूजन का मुहूर्त्त

मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९, १४, तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु., नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में; चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त्त

संक्रान्तिदिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११ १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ., रे., चि., अनु., तीनों उत्तरा, रो., ह., अश्विनी, पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त्त

जन्म दिन से १०, १२, १६, १८, ३२वें दिन शुक्रवार में; मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि., तीनों उत्तरा, रो. नक्षत्रों में ४, ९, १४, ३० तिथियों के अलावा अन्य तिथियों में; १, ४, ७, १० लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर एवं १, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११ वें शुभग्रह हों तथा ३, ६, ११ वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण का मुहूर्त्त

स्वा., अश्वि., पुन., ह., मृ., पु., अनु., श्र., रो., ध. नक्षत्रों में; भौम एवं शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता, अमा, भद्रादि से रहित शुभ दिन में; तीसरे, चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होने पर १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें; इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करा दें।

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५ नैरोग्य	५ मरण	५ कृषता	५ व्याधि	७ सौख्य

भूम्युपवेशन–मुहूर्त्त

पांचवें महीने में पृथ्वी, वाराह का पूजन करके भौम के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा, रो., मृग., ज्ये., अनु., अश्वि., हस्त, पुष्य, अभि– इन नक्षत्रों में; ४, ९, १४, ३०– इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न एवं शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र बांधकर पृथ्वी पर बैठाएं।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्र– " रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये।" इति।।

इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें। जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त्त

जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें मास में कन्या का भद्रादि दोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में; सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पु., अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में; जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष, वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर शेष लग्नों में; १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह की दृष्टि हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; दशम स्थान पापग्रहरहित हो; १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी–किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु., शततारिका (शतभिषा) और स्वाती अशुभ हैं।

कर्णवेध का मुहूर्त्त

चैत्र, पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्त्तिक शुक्ल ११ तक), जन्ममास, जन्मनक्षत्र, ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा, क्षयतिथि और सम वर्षों को छोड़कर जन्म के १२वें या १६वें दिन; ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को श्र., ध., पुन., मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो; १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पतिवार हो तो कर्णच्छेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या के नासिकाच्छेदन का मुहूर्त्त

कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक, शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मुण्डनमुहूर्त्त

गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोडकर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़कर; २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रान्तिदिन को छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित) हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; ज्ये., मृ., रे., चि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., ह., अश्वि., पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में मुण्डन शुभ है।

ध्यान रहे– लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डनकर्म में विशेष–स्वकुल–शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र, तिथ्यादि; शुभ समय में अपने–अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, जो **"यथा कुलधर्मं वः"**– इस स्मृति के अनुसार से ठीक ही है।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त्त

मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गए हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं– वर्जित काल–शनि, रवि, भौमवार; हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्तिदिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल– यज्ञ, विवाह, मृतककर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय(बिना मुहूर्त्त के भी) हजामत बनवाई जा सकती है। किसी–किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी (जैसे– नट–भांड-आदि) किसी भी दिन हज़ामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार– ब्राह्मण रविवार को,, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त्त

जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., श्र., स्वा., रे., पुन., आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोडकर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है; लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए।

विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

उत्तरायण में (कुम्भ के सूर्य को छोडकर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को; २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में; भ.., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., म., तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में; जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेज़ी विद्यारम्भ का मुहूर्त

सूर्य, भौम, शनिवार हों; ४, ९, १४ तिथि हों; ज्ये., आश्ले., म., तीनों पूर्वा, भ., कृ., वि., आर्द्रा, उ. षा., शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने–पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त्त

अश्वि., पु., चि., अनु., ध. नक्षत्र; सूर्य, बुध, चन्द्र, गुरु, शनि वार एवम् १; २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त्त

यज्ञ और उपवीत– इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हों, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है– पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु–धागाविशेष)– यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से **(गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः)** ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, वर्ष में करें। यदि इन वर्षों में न किया जा सके तो ब्राह्मण १६, क्षत्रिय २२ और वैश्य २५वें वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्रीपतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह., अश्वि., पुष्य, अभि., ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृग., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित, इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय, वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं., बु., (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श., गुरुवार को शुक्ल २, ३, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि (जैसे– आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२), संक्रान्तिदिन तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु., गु., चं. और लग्नेश ६, ८ स्थानों में चं., शु. १२वें स्थान में और १, ५, ८वें भावों में पापग्रह अशुभ है। शुभ ग्रह ६, ८, १२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में; पाप ग्रह ३, ६, ११ स्थानों; वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र के बाल्य–वृद्धत्त्व–अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है। **यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिए समयशुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र मे उपनयन संस्कार किया जा सकता है–ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेलापक सारणी देखने की रीति और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखकः- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है । इसके बाई ओर पहिले,दूसरे कालमों में लड़की की और सबसे ऊपर वाली पहिली,दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं । लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है । वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए	= ब	राशीश दोष के लिए	= र
वश्य दोष के लिए	= व	गण दोष के लिए	= ग
तारा दोष के लिए	= त	भकूट दोष के लिए	= भ
योनि दोष के लिए	= य	नाडी दोष के लिए	= न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ र्थ चरण में और लड़के का पू. भा. के ३ य चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापक सारणीसे अष्टकूटों के गुण १८ ½ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं ।

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों , नवशांशेशों की एकता द्वारा नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है । राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) वर्ण दोष का परिवार:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है । लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है । सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार हैं:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय,चन्द्र का वैश्य,मंगल का क्षत्रिय,बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है ।

(२) वश्य दोष का परिहार:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है ।

(३) तारा दोष का परिहार:-वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है ।

(४) योनि दोष का परिहार:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ(ठीक) हों तो योनिदोष का परिहार हो जाता है ।

(५) राशीश दोष का परिहार:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और षडष्टक का अभाव होने पर) राशीश दोष दूर हो जाता है ।

(६) गण दोष का परिहार:- वर -कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों या भकूट दोष न हों तो गण दोष दूर हो जाता है।

(७) भकूट दोष का परिहार :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है। यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है ।

(८) नाड़ी दोष का परिहार :- वर,कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है । दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है ।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है । लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता । इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ ३४ पर दिया गया मेरा लेख **''पाद वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति''** पढ़ना चाहिए । यह लेख मेरी पुस्तक **'ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन'** में भी है ।

ध्यान दें:-जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं,वर,कन्या के राशीशों,नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण,वश्य,तारा,योनि,राशीश,गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है,लेकिन नाड़ी दोष का परिहार इनसे नहीं होता । नाड़ी दोष का परिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है ।

दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए,कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाईस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है ।

'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्'-वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है । 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की है,अतः इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है । एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर,कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो । 'मुहूर्तचिन्तामणि' का वाक्य है -**'नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्'** (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है,जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों)। **ध्यान रहे,** दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है। एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता ।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के ,परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं,उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक **''ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन''** में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह कोष्ठक देखें :-

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो ।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
योनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्भकूट हो।
राशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
गण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों ।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाडी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों । २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों । ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों । ४ पाद वेध न हो।

* यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि , वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।

परिहृत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुनः स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए-ऐसा कुछ आचार्यों का मत है । कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूरा नहीं, अपितु आंशिक निवारण होता है,अतः परिहृत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह (दूसरा)मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहृत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग)मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है ।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहृत कूटों की आधी गुणसख्या को मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़ने. पर मिली गुणसंख्या यदि १६ $\frac{1}{2}$ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । ध्यान रहे- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है ।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है । इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है । लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है । साधाराण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है । नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध बेरोक-टोक किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपूर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नृदूर का भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा हैं,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-।

वर्गमैत्री का विचार वर कन्या के नाम के आदिम वर्णों से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर अवर्ग क आदि पांच वर्ण 'कवर्ग च' आदि पांच वर्ण चवर्ग ट आदि पाँच वर्ण टवर्ग त आदि पाच वर्ण तवर्ग प आदि पांच वर्ण 'पवर्ग य आदि पांच वर्ण यवर्ग तथा श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमशः प्रथम वर्ग द्वितीय वर्ग आदि संज्ञाएं दी गई हैं। इन आठ वर्गों केस्वामी क्रमशः गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वान,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्प, मूषक, मृग और मेष माने गये हैं । प्रत्येक वर्गेश अपने से पंचम वर्ग के स्वामी का शत्रु माना गया है । जैसे :- गरुड़ और सर्प तथा मूषक और मार्जार परस्पर शत्रु हैं ।

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

वर्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्ग के	अ, इ,	क, ख, ग,	च,छ,ज,	ट,ठ,ड,	त,थ,द,	प, फ,ब,	य,र,	श,ष,
वर्ण	उ,ए	घ,ङ	झ,ञ	ढ,ण	ध,न	भ,म	ल,व	स,ह
वर्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गों के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना जाता, उनका जीवन दुःखमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त- गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना चाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश की एकता (अभिन्नता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा। 'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तो नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ $\frac{१}{२}$,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाड़ी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्तकार अच्छा नहीं मानते । १८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' की उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अबकहडा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते।

कुज (मंगली) दोष-

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।
(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।
(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है । कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष दूर हो जाता है

(१) कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह) उच्चस्थ स्वराशिस्थ, स्वनवांशस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश या मित्रनवांश में हो।
(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।
(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है । दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों) में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है । इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है- सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का ही [illegible] है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	१, २ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	म.	म.	म.	शु.	शु.	शु.	ब.	बु.	बु.	चं.	च.	च.	सू.	सू.	सू.	तु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	म.	द.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अ.	अ.	अ.	म.	म	आ.	आ.	आ.	म.	अ.	अ.	म.	आ.	आ.	आ.	म.

राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.	न.	वा.	सि.	सि.	अ.	सि.	सि	गौ.	ग.
राशीश	शु.	शु.	शु.	म.	म.	म.	गु.	गु.	गु.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू = मूषक,म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश-सू=सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य, म=मध्य, अं=अन्त्य

ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन

अब प्रकाशित है

अब प्रकाशित है

(मिलान सम्बन्धी सभी समस्याओं का आमूलचूड़ समाधान)

वर्ण आदि अष्टकूट, मंगली दोष, विवाहमुहूर्त साधन आदि विवाह सम्बन्धी सभी ज्ञातव्य विषयों का सरल-सुबोध शैली में पूरा विस्तृत विवेचन इसमें आपको मिलेगा। गुण मिलान में घटित होने वाले अष्टकूट दोषों एवं उनके परिहारों का सप्रमाण सुस्पष्ट निर्देश करने वाली, वर-कन्या के जन्मनक्षत्रों के चरणों के अनुसार बनाई गई ३६ पृष्ठों पर फैली अद्वितीय मौलिक 'मेलापक सारणी' तथा मंगलीक दोष का बलाबल बतलाने वाले कोष्ठक इस पुस्तक की अपनी विशेषता है। सन् १९७० ई. से सन् २००० ई. तक पैदा हुए वर कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र-चरण और जन्मकुण्डली बिना किसी पुराने पंचांग की सहायता के आप इस पुस्तक में दिए गए अद्भुत कोष्ठकों द्वारा १०-१५ मिनटों में ही स्वयं जानकर वर-कन्या की ग्रहस्थितियों का मिलान कर सकते हैं। मिलान सम्बन्धी सभी विवादास्पद विषयों का शास्त्रीय समाधान किया गया है। दूसरा संस्करण उपलब्ध है।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, कोठी नं. 59, सैक्टर-6.पो. पंचकूला-134109

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

मेलापक सारणी (भाग 1)

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	28 न	33	28½ त	18½ ब भ त	21½ ब भ त	22½ ब भ त	26 ब त र	17 ब न त र	19 ब न त र	23½ न त	31½ त	28 ग	21 व भ ग	25 व भ	15½ व भ न त	11 ब भ नतर	9 तबभ यनर	13 व भ त र
	भर. 1,2,3,4	34	28 न	29 ग	19 ब ग भ	21½ ब भ त	14½ ब भ त न	18 न ब त र	26 ब त र	27 ब त र	31½ त	23½ न त	25½ ग त	20 ग व भ	18 व भ न	26 व भ	21½ ब भ र	20 ब भ र त	4 बभग नतर
	कृत्ति. 1	27½ ग त	29 ग	28 न	18 ब भ न	10 ग ब न भ	16½ ग ब भ त	20 ग ब त	20 ग ब त	21 ग ब त र	25½ ग त	26½ ग त	23½ न त	16½ व भ न त	20 ग व भ	20 ग व भ	15½ ग व भ	15½ ग व भ र	18 ब भ त
वृष	कृत्ति. 2,3,4	18½ ग भ त	20 ग भ	19 भ न	28 न	20 ग न	26½ ग त	17½ ग ब भ त	17½ ब ग भ त	18½ ग ब भ त	22 ग त र	23 ग त र	20 न त र	18½ न व त र	22 र व ग	22 र व ग	21 ग भ	21 ग भ	23½ भ त
	रोहि. 1,2,3,4	23½ भ त	23½ भ त	11 ग भ न	20 ग न	28 न	36	27½ ब भ	23½ ब भ त	22½ भ ब त य	26 त र य	27 त र	12 ग न तरय	10½ रवग नतय	24½ र व त य	27 र व	26 भ	26 भ	20 ग भ
	मृग. 1,2	23½ भ त	14½ भ न त	18½ भ त ग	27½ त ग	35	28 न	19 ब भ न	24 ब भ	22½ ब भ त य	26 त य र	19 त र न	21 त र य ग	19½ गरव त य	15½ र व नतय	24½ र व त	23½ भ त	26 भ	13 भ न ग
मिथुन	मृग. 3,4	27 तर	18 न त र	22 त र ग	19½ भ ग त	27 भ	20 भ न	28 न	33	31½ त य	19 भ व तयर	12 भ न वतर	14 भवत यगर	23½ व त य ग	19½ व न त य	28½ व त	31½ त	34	21 न ग
	आर्द्रा 1,2,3,4	19 त र न	27 त र	21 त र ग	18½ ग भ त	24½ भ त	26 भ	34	28 न	25 न य	12½ भ न तयर	20 भ व त र	13 गभर वतय	23½ ग त व	29½ व त	21½ न व त	24½ न त	24½ न त	27 ग य
	पुन. 1,2,3	20 न त र	27 त र	23 त र	20½ भ त ग	22½ भ त	23½ भ त य	31½ त य	24 न य	28 न	15½ न भ व र	22½ भ व र	17 भ व तरग	22½ य व त ग	26½ य व त	21½ न व त	24½ न त	25½ न त	27½ त ग
कर्क	पुन. 4	22½ ब न त	29½ ब त	25½ ब त ग	22 ज ग त र	24 ब त य र	25 ब त य र	18 बभव रतय	10½ बभव नयर	14½ ब भ रनत	28 न	35	29½ त ग	16½ बभय ग त	20½ ब भ त य	15½ ब भ न त	18 न भ त र	19 न ब वतर	21 ब ग वतर
	पुष्य 1,2,3,4	30½ ब त	21½ ब न त	26½ ब त ग	23 ब त र ग	25 ब त र	18 ब न त र	11 बभन वतर	18 ब भ वतर	21½ ब भ व र	35	28 न	30 ग	19½ ब भ ग त	15½ ब भ न त	23½ ब भ त	26 ब व त र	27 ब व त र	12 नबवय तरग
	आश्ले. 1,2,3,4	26 ब ग	24½ ब ग त	22½ न ब त	19 न ब त र	11 गबत नयर	19 ग ब तयर	12 गबत भवयर	12 गबभ वतयर	15 गबत भवर	28½ ग त	29 ग	28 न	15 य ब भ न	15½ गबय भ त	18½ ग द भ त	21 ग ब वतर	21 ग ब वतर	26 ब व त र
सिंह	मघा 1,2,3,4	20 ग व भ	20 ग व भ	16½ व भ न त	17½ वब रनत	9½ वबत गरनय	17½ वबत गरय	21½ व ब गतय	22½ व ब ग त	20½ व ब गयत	16½ ग भ य त	19½ ग भ त	16 न भ य	28 न	30 ग	27½ ग त	16½ व ब गभत	16½ व ब गभत	21½ व ब भ त
	पू.फा. 1,2,3,4	26 व भ	18 व भ न	20 ग व भ	21 ब व र ग	23½ व ब रतय	15½ वबन रतय	19½ व ब नतय	28½ व ब त	26½ व ब त य	22½ य भ त	17½ भ न त	16½ ग भ य त	30 ग	28 न	35	24 व ब भ	22½ व ब भ त	7½ वबत गनभ
	उ.फा. 1	16½ व भ त न	26 व भ	20 व ग भ	21 व ब ग र	26 व ब र	24½ व ब र त	28½ व ब त	20½ व ब न त	21½ व ब न त	17½ भ न त	25½ भ त	19½ ग भ त	27½ ग त	35	28 न	17 व ब भ न	16 व ब भ न	13½ वयब तगभ
कन्या	उ.फा. 2,3,4	13 भ न त र	22½ भ र	16½ ग भ र	21 ग भ	26 भ	24½ भ त	31½ ब त	23½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	22 ग व त र	17½ ग व भ त	25 भ व	18 व भ न	28 न	27 न	24½ य ग त
	हस्त 1,2,3,4	10 य भ नतर	20 भ त र	17½ भ र ग	22 भ ग	25 भ	26 भ	33 ब	22½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	23 व त र ग	18½ व भ त ग	22½ व भ त	16 व भ न	26 न	28 न	28 य ग
	चित्रा 1,2	13 गभत यर	5 गभन तयर	19 भ त य र	23½ भ त य	.20 ग भ	12 ग भ न	19 ग ब न	26 ग ब य	25½ ग ब त	21 ग व त र	12 गनव तयर	27 व त र	22½ व भ त	8½ ग व भनत	14½ व य गभत	24½ ग य त	27 ग य	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेलापक सारणी (भाग 2)

वर / कन्या		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2,3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2,3,4	ज्ये. 1,2,3,4	मूल 1,2,3,4	पू.षा. 1,2,3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2,3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2,3,4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1,2,3,4	रेव. 1,2,3,4
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	22½ बयतग	26½ बयत	22½ तबयग	18½ गभतय	25½ भत	14 भनग	13½ भनग	25 भ	23½ भत	25 बतर	26 बतर	20 बतयरग	20 बतयरग	15 बनतरग	16 बनतयर	14½ नभतय	24½ भत	26 भ
	भर. 1,2,3,4	13½ बगनतय	29½ बत	21½ गबतय	17½ गभतय	17½ नभत	19½ गभत	20 गभ	18 नभ	26 भ	27½ बर	26 बतर	10 बयगनतर	10 बयगनतर	20 गबतर	24 बयतर	22½ तभय	17½ नभत	26½ भत
	कृत्ति. 1	27½ बतय	15½ बगनत	19½ बनतय	15½ भनतय	19½ गभत	25½ भत	24½ भत	18 गभय	12 गभन	13½ बगनर	11½ बयरगन	25 बतयर	25 बतयर	27 बतर	19 बगतयर	17½ गभतय	19½ गभत	11½ गभतन
वृष	कृत्ति. 2,3,4	22½ बभतय	10½ गबभनत	14½ बभतनय	20½ नतय	24½ गत	30½ त	20 भतर	13½ यगभर	7½ गभनर	12 गभन	10 यगभन	23½ भतय	29½ बतय	31½ बत	23½ गबतय	20 गतयर	22 गतर	14 गनतर
	रोहि. 1,2,3,4	19 गबभ	15½ बभनत	9½ तबगनभ	15½ गनत	29½ त	23½ गत	14 गभतर	19 रभतय	11½ यभनर	16 भयन	17 नभय	20 गभ	26½ गब	24½ गबत	30½ बत	27 तर	27 तर	19 न
	मृग. 1,2	12 बभनग	25 बभ	18½ बभतग	24½ तग	21½ नत	24½ तग	15 भतरग	10 नभतयर	17 यभतर	21½ भयत	25 भय	13 नभग	19 बगन	27 बग	29½ बत	26 तर	18 नतर	[illegible]
मिथुन	मृग. 3,4	14 नभग	27 भ	20½ भतग	14 भवतरग	11 भवनतर	14 भवतरग	23 तरग	18 नतयर	25 यतर	20 भयवत	23½ भवय	11½ नभवग	13 नभग	21 भग	23½ भत	25½ तवर	17½ नवतर	[illegible]
	आर्द्रा 1,2,3,4	20 गभय	27 भ	20 गभय	13½ रगवभय	17 तभवयर	3 यतगवभनर	16 गनतर	28 तर	28 तर	23 भवत	23 भवत	17½ गभवय	19 गभय	12 गभन	17 नभय	19 नरवय	26½ वतर	[illegible]
	पुन. 1,2,3	20½ भतग	28 भ	22 भग	15½ वभरग	21½ वभर	7 रगवभनत	14 यरतनग	27 तर	27 तर	22 वतभ	23 वतभ	17 वतभयग	18½ भगतय	14 नभग	16 नभय	18 रनयव	28 रव	[illegible]
कर्क	पुन. 4	20½ बतरग	28 वरब	22 वरबग	20 गभ	26 भ	11½ तगभन	8 वतबभगनय	21 बभवत	21 बभवत	26 बतर	27 बतर	21 बगतयर	12½ बभवतयगर	8 बभवनगर	10 बभरनवय	16 नभय	26 भ	[illegible]
	पुष्य 1,2,3,4	11½ गनबवतयर	26½ बवतर	21 रबगवय	19 भयग	18 भन	21 भग	17 गबभवत	11 यबभतनव	21 बभवत	26 बतर	25 बयतर	13 गबनतयर	4½ भबगयवनतर	14½ बवतरगभ	18 बभवयर	24 भय	18 नभ	[illegible]
	आश्ले. 1,2,3,4	25½ बवतर	12½ गबवतरन	17½ नबवतर	15½ नभत	20 गभ	26 भ	22½ बभवय	16 गबवभत	8 गबवभनत	13 गबरनत	13 बगतनर	26 बतयर	17½ बभवतरय	19½ बभवतर	11½ गबभवतयर	17½ गभतय	21 गभ	[illegible]
सिंह	मघा 1,2,3,4	24½ बवतर	11½ बवतरगन	16½ बवतरन	22½ नवत	25½ गवत	33 व	25 भव	19 गवभ	8½ वगभनतय	3½ बरतयगभन	4½ बरतगभन	18½ बरतभ	24½ बवतर	25½ बवतर	18½ बवरगत	18½ गभत	19½ गभत	[illegible] गभन
	पू.फा. 1,2,3,4	10½ बवतरगन	25½ बवतर	18½ बवरगत	24½ गवत	23½ नवत	25½ गवत	19 गवभ	17 भवन	24 भवन	17 बरभय	18½ बतभत	4½ बरतगभन	10½ बवतरगन	19½ बवरगत	24½ बवरत	24½ भत	17½ नभत	25½ भत
	उ.फा. 1	16½ बवतयगर	25½ बवतर	16½ बवयगतर	22½ यवगत	31½ वत	17½ गवतन	9½ गवनभत	25 भव	25 भव	20 बरभ	20 बरभ	11½ बरतगभय	17½ बवतगरय	11½ बवतगनर	15½ बवतनरय	15½ नभतय	26½ भत	25½ भत
कन्या	उ.फा. 2,3,4	16½ गबयभत	25½ बभत	16½ गबयभत	18 यवतगर	27 वतर	13 गवतनर	14 गनतर	29½ र	29½ र	24½ भव	24½ भव	16 गभवतय	16½ गबभतय	10½ गबनभत	14½ बभनतय	17½ तनवयर	28½ वतर	27½ वतर
	हस्त 1,2,3,4	20 बभयग	26½ बभत	18½ बभतयग	20 वगतयर	26 वतर	13 नवतरग	15 नतरग	27 तर	28½ र	23½ भव	24½ भव	18½ भगवय	19 बभयग	8½ यभनतग	13½ बभनतय	16½ वनतयर	26½ वतर	27½ वतर
	चित्रा 1,2	20 बभन	19 गबभय	26½ बभत	28 वतर	11 गवनतयर	25 वतयर	27 तयर	14 गनतर	22 गतर	17 गभत	18½ गभव	15½ भवनय	16 बयभन	24 बभय	16½ गबतभय	19½ गवतयर	10½ गयवनतर	19½ वगतयर

(ब = गर्गदोष। व = दशयदोष। त = तारादोष। य = योनिदोष। र = राशीशदोष। ग = गणदोष। भ = भकूट दोष। न = नाड़ी दोष।)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

मेलापक सारणी (भाग 3)

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
	चित्रा 3,4	22½ ग त य	14½ ग न त य	28½ त य	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	21 ग भ	19½ ग भ त	20½ ग र व त	11½ गनय वरत	26½ व त र	25½ व र त	11½ वरग न त	17½ व य गरत	17½ य ग भ त	20 ग भ य	21 भ न
तुला	स्वाती 1,2,3,4	27½ य त	29½ त	17½ न त	12½ भ न त	15½ भ न त	26 भ	27 भ	26 भ	28 भ	29 व र	27½ व त र	14½ न व त र	13½ व न त ग	25½ व र त	25½ व र त	25½ भ त	27½ भ त	21 भ य ग
	विशा. 1, 2,3	22½ त य ग	22½ त य ग	20½ त य न	15½ त भ न य	10½ ग भ त न	18½ ग भ त	19½ ग भ त	20 ग भ य	21 ग भ	22 ग व र	21 ग त र	18½ न व त र	17½ व र त न	19½ व र त ग	17½ वयर ग त	17½ य ग भ त	18½ ग भ त य	27½ भ त
	विशा. 4	16½ बगभ य त	16½ बगभ य त	14½ ब भ नयत	19½ ब न य त	14½ ब ग न त	22½ ब ग त	12 बवर गभत	12½ वबय गभर	13½ ब व गभर	19 ग भ	18 ग भ य	15½ भ न त	21½ ब व न त	23½ ब व ग त	21½ ब व गयत	17 तबव गयर	18 बवग तयर	27 ब व त र
वृश्चिक	अनु. 1,2,3,4	24½ ब भ त	15½ ब भ न त	19½ ब भ ग त	24½ ब त ग	27½ ब त	20½ ब न त	10 बवत नभर	15½ तबव रभय	20½ ब व भ र	26 भ	18 भ न	21 भ ग	24½ ब व त ग	20½ ब व त न	29½ ब व त	25 ब व त र	26 ब व त	11 [illegible]
	ज्येष्ठा 1,2, 3,4	12 ब ग भ न	18½ ब ग त भ	24½ ब भ त	29½ ब त	22½ ब ग त	22½ ब ग त	12 तबव गभर	2 तवबय गभनर	5 तबवर गभन	10½ त ग भ न	20 ग भ	26 भ	31 ब व	23½ ब व ग त	16½ तबव ग न	12 तबव गनर	12 तबव गनर	24 [illegible]
	मूल 1,2,3,4	12 ग भ न	20 ग भ	24½ भ त	19 ब भ त र	13 ब ग तभर	13 रबग त भ	21 ब ग त र	15 बगन त र	12 रबग तनय	8 यगभ वनत	17 ग भ व त	23½ भ व य	25 व भ	19 व ग भ	9½ तवग भ न	13 तरब ग न	13 तरब ग न	[illegible] र त
धनु	पू.षा. 1,2,3,4	26 भ	18 भ न	18 ग भ य	12½ ब य गभर	18 ब भ तयर	10 रबभ तनय	18 ब न तयर	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	13 य भ नवत	17 ग भ व त	19 व ग भ	17 व भ न	25 व भ	28½ ब र	27 ब त र	[illegible]
	उ.षा 1	24½ भ त	26 भ	12 ग भ न	6½ रबय भ न	10½ बयर भ न	17 ब य तभर	25 ब य त र	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	23 भ व त	9 ग भ वनत	8½ तगव यभन	24 व भ य	25 व भ	28½ ब र	28½ ब र	[illegible]
	उ.षा. 2,3,4	27 त र	28½ र	14½ ग न र	12 ग भ न	16 भ न य	22½ य भ त	20 ब य त भ	22 ब भ त	22 ब भ व त	28 त र	28 त र	14 ग न त र	4½ तयर गभन	20 र भ य	21 र भ	24½ भ त	24½ व भ	[illegible] ग भ व त
मकर	श्रव. 1,2,3,4	27 त र	26 त र	13½ य न र	11 य भ ग न	16 भ न य	25 भ य	22½ ब भ व य	21 ब भ व त	22 ब भ व त	28 त	26 य त र	15 न त र	6½ तगर भ न	18½ र भ त	20 भ र	23½ भ व	24½ भ व	19½ [illegible]
	धनि. 1,2	20 ग त य र	11 यगन त र	26 त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	9½ वबग भ न	16½ वयब ग भ	16 बगव त भ	22 ग त र	13 रगन तय	28 त र	19½ र भ त	5½ तगर भ न	12½ तयर ग भ	16 गभव त य	17½ ग भ व	15½ [illegible]
	धनि. 3,4	20 ग त य र	11 यगत न र	26 त य र	30½ त य	27 ग	19 ग न	12 ग भ न	19 ग भ य	18½ ग भ त	13½ ग भ वतर	4½ तयर गभनव	19½ भ व त र	25½ व त र	11½ वतर ग न	18½ वरग त य	17½ ग भ त य	19 ग भ य	[illegible] य भ न
कुम्भ	शत. 1,2,3,4	15 ग न त र	21 ग त र	28 त र	32½ त	25½ ग त	27 ग	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	8 गभव न र	14½ गभव त र	20½ व भ त र	26½ व र त	20½ व र ग त	12½ वरत ग न	11½ त ग न भ	8½ तयग न भ	25 भ य
	पू.भा. 1,2,3	18 न त य र	25 य त र	20 ग र त य	24½ ग त य	31½ त	31½ त	24½ भ त	17 भ न य	18 भ न	13 भ न व	20 भ र व य	13½ गभव त र	19½ व र त ग	25½ व र त	16½ वरय न त	15½ भ न त	15½ भ न त य	17½ ग भ त य
	पू.भा. 4	14½ बभत न य	21½ ब य त भ	16½ गबत भ य	19 गबत य र	26 ब त र	26 ब त र	25½ ब व त र	18 बनव य र	19 न ब व र	18 न भ	25 भ य	18½ ग भ त	17½ ब ग त भ	23½ ब भ त	14½ बभत न य	16½ रबन वतय	16½ रबन वतय	18½ रबग वतय
मीन	उ.भा. 1,2,3,4	24½ ब भ त	16½ ब भ त न	18½ ग ब त भ	21 ग ब त र	26 ब त र	18 न ब त र	17½ न ब वतर	25½ ब र व त	28 ब व र	27 भ	19 भ न	21 ग भ	18½ ग ब त भ	16½ ब भ न	25½ ब भ त	27½ ब व त र	26½ ब व त र	9½ बतर वयगन
	रेव. 1,2,3,4	25 ब भ	24½ ब भ त	11½ तगब भ न	14 गबन त र	17 व न त र	26 ब त र	25½ ब र व त	24½ र ब व त	26½ र र व त	25½ भ त	27 भ	14 भ न ग	13 ब भ ग न	23½ ब भ त	23½ ब भ त	25½ ब र व त	26½ ब र व त	19½ बयर वतग

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेलापक सारणी (भाग 4)

कन्या \ वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2, 3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2, 3,4	ज्ये. 1,2, 3,4	मूल 1,2, 3,4	पू.षा. 1,2, 3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2, 3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2, 3,4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1,2, 3,4	रेव. 1,2, 3,4
तुला	चित्रा 3,4	28 न	27 ग य	34½ त	23½ भ द त	6½ यगव तनभ	20½ भ व त य	27 त य र	14 ग भ त र	22 ग त र	25 ग त व	26½ ग व	23½ न व य	18 न भ य	26 भ य	18½ ग भ त य	12½ गभव तयर	3½ वतयग भनर	12½ यरग भवत
	स्वाती 1,2,3,4	28 य ग	28 न	20 न य ग	9 भवय न ग	21½ भ व त	16½ भ व त ग	23 त र ग	27 त र ग	19 त न र	22 न व त	23 न व त	26½ व य ग	21 य ग भ	20 ग य भ	25 य भ	19 व भ य र	19½ व त भ र	12½ वतभ न र
	विशा. 1,2,3	34½ त	19 ग न य	28 न	17 भ व न	16 ग व भ य	20½ भ व त य	27 त य र	22 ग त र	14 ग न त र	17 ग न व त	17 ग न व त	30 व त य	24½ भ त य	26 भ य	20 ग भ य	14 गभव य र	13 गयभ त र	4½ गभव नतयर
वृश्चिक	विशा. 4	22½ ब व भ त	7 बवग नभय	16 ब व न भ	28 न	27 ग य	31½ त य	21½ बवत य भ	16½ बवग भ त	8½ दवग नभत	12 गबन त र	12 बनग त र	25 ब त य र	24 बवत य र	25½ ब व य र	19½ बवग य र	19 ग भ य	18 ग य भ	9½ गभन त य
	अनु. 1,2,3,4	6½ बवतभ यगन	21½ ब व भ त	16 बवभ य ग	28 य ग	28 न	31 ग	15½ बवत गयभ	13½ तबव न भ	21½ ब व त भ	25 ब त र	26 ब त र	12 तयब नरग	11 तयबव नरग	21 बवत र ग	24½ ब व य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	ज्येष्ठा 1,2,3,4	19½ बवत भ य	15½ तबव ग भ	19½ बवभ त य	31½ त य	30 ग	28 न	14 बवन भ य	16½ बवत ग भ	16½ बवत ग भ	20 ग व त र	20 ग ब त र	25 ब त य र	24 बवत य र	18 बवन र त	10 तबवय गनर	9½ गभत न य	21 ग भ	21 ग [illegible]
धनु	मूल 1,2,3,4	26 त ब य र	21 ग ब त र	26 त ब य र	22½ भ व त य	15½ गवभ य त	15 य व न भ	28 न	28 ग	26½ ग त	15 गबभ व त	15 गबभ व त	20 बभव त य	28½ ब व य	21½ ब न त	14½ गनब त य	16 गनव त य	25 ग व त	26 ग [illegible]
	पू.षा. 1,2,3,4	13 गबत न र	27 ब त र	21 ग ब त र	17½ ग व भ त	15½ भ व न त	17½ ग व भ त	28 ग	28 न	34	22½ ब भ व	23 ब भ व त	6 गबवभ नतय	14½ गबत न य	23½ ग ब त	28½ ब त य	30 व त य	23 न व त	31 व [illegible]
	उ.षा 1	21 ग ब त र	19 न ब त र	13 गबन त र	9½ गवभ न त	23½ भ व त	17½ ग व भ त	26½ ग त	34	28 न	16½ ब भ व न	14½ ब भ व न	15 गबव भ त	23½ ग ब त	23½ ग ब त	29½ ब त	31 व त	31 व त	23 न त
मकर	उ.षा. 2,3,4	24 ग ब त	22 न ब व त	16 ग ब न त	13 ग न त र	27 त र	21 ग त र	16 ग भ व त	23½ भ व	17½ न भ व	28 न	26 न	26½ ग त	17 गबभ व त	17 गबव भ त	23 ब भ व त	30½ त	30½ त	22 न
	श्रव. 1,2,3,4	26½ ब व ग	22 न ब व त	17 नबग व त	14 न त र	27 त र	22 त र	17 भ व त ग	23 भ व त	14½ न भ व	25 न	28 न	28 य ग	18½ बभव य ग	18 बभव त ग	21 बभव त य	28½ त य	29½ त	22 न
	धनि. 1,2	22½ न ब व य	24½ ग ब व य	29 ब व त य	26 त य र	12 गनत य र	26 त य र	21 भ व त य	7 गभय वनत	16 ग भ व त	26½ ग त	27 ग य	28 न	18½ ब भ न व	23½ ब भ व य	19 गबव त भ	26½ ग त	15½ ग न त य	22 ग त
कुम्भ	धनि. 3,4	18 न भ य	20 ग भ य	24½ भ त य	25 त व य र	11 गवय तनर	25 त व य र	29½ त य	15½ ग त न य	24½ त ग	18 ग भ व त	18½ ग भ व य	19½ भ व न	28 न	33 य	28½ ग त	18 ग भ व त	7 तगभ वनय	1[illegible] गयव भ त
	शत. 1,2,3,4	26 भ य	19 भ य ग	26 भ य	26½ य व र	21 ग व त र	19 न व त र	22½ न त	24½ ग त	24½ ग त	18 ग भ व त	18 ग भ व त	24½ भ व य	33 य	28 न	19 ग न य	8½ गभव न य	17 ग भ व त	16 ग भ व त
	पू.भा. 1,2,3	18½ ग भ त य	26 भ य	20 ग भ य	20½ ग व य र	26½ व य र	11 गवत यनर	15½ न ग त य	29½ त य	30½ त	24 भ व त	23 भ व त य	20 भ ग व त	28½ ग त	19 न ग य	28 न	17½ न भ व	22½ भ व य	20 भ य व त
मीन	पू.भा. 4	11½ गबवभ तयर	19 बभव य र	13 गबव भयर	19 ग भ य	25 भ य	9½ गभन त य	15 गबत न य	29 ब व त य	30 ब व त	29½ ब त	28½ ब त य	25½ ग ब त	17 ग ब भ त	7½ गबय भतन	16½ ब भ त न	28 न	33 य	30½ य त
	उ.भा. 1,2,3,4	2½ यवबर गभनत	19½ भवब त र	12 गवर भयब	18 ग य भ	19 न भ	21 ग भ	24 ग ब व त	22 न ब व त	30 ब व त	29½ ब त	29½ ब त	14½ गबत न य	6 गबवन भतय	16 गबव भ त	21½ ब भ त य	33 य	28 न	35
	रेव. 1,2,3,4	12½ बभव तयर	11½ बभत दनर	4½ बभवन तगयर	10½ नभत य ग	27 भ	22 भ ग	26½ ब ग व	29 ब व त	21 न ब व त	20½ न ब त	21½ न ब त	22½ ब य त ग	14 बवय भतग	16 बभव त ग	18 बयभ वत	29½ य त	34	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

लग्न–गण्डान्त

कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन और मेष के अन्त एवम् आदि की आधी–आधी घड़ी लग्नगण्डान्त होता है। वह जन्म में ही भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासाः–आचार्य चूड़ामणौ–"माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या–संवरणेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र–पौष–विवर्जिताः॥" वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद्वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥

अथ जन्म–मासादिषु निषेधः– सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्मतिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं है। **अत्यावश्यके परिहारः**– जातं दिनं दूषयते वशिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो– एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग–अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका हो, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः– ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका के सूर्य को छोड़कर दानादि पूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय– दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करें तो निस्संदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें, अर्थात् पहले कर लें और मंगलकार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध, तिलतर्पण भी न करें। मुण्डन भी विवाह, जनेऊ के पीछे न करें। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभकार्य कर लें। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच– साहे चिट्ठी (कुंकम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चित हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १½ मास, कुल वालों के मरण से २२½ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

त्रिबल शुद्धि विचार

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पंचांग के अन्त में दिए गए हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य, चन्द्र देखिए तथा कन्या राशि से चन्द्र, गुरु देखिए। बस, इसी को त्रिबलशुद्धि कहते है। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह–दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हों तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा–ऐसा समझें। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं.) शुद्धि प्रथम देखें– **"झष–चाप–कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥ (बृहस्पतिः)॥** अत्यावश्यकता में **"द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत्॥"**

तुलाराशौ अपूज्यःरविः–धर्म–धी–धनगतो दिवाकरस्तौलिराशि–जनितस्य शोभनः।।

आवश्यके पूज्यरवि–परिहारः– **गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्याः मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः॥ (मु.प्र.सा.)।**

विवाहादौ त्रिबल–शोधनम्
पूज्यगुरुः– १०/६/३/१
श्रेष्ठगुरुः–९/५/११/२/७
नेष्टगुरुः– ४/८/१२
श्रेष्ठरविः– ३/६/१०/११
पूज्यरविः– २/५/९
विशेष पूज्य रविः– १/७
नेष्टरविः– ४/८/१२
नेष्टचन्द्रः– ४/८
श्रेष्ठचन्द्रः–१/२/३/५/६/७/९/१०/११/१२

कन्या–वरयोःतैलादि–लापन (बन्न)–दिन–संख्या

राशि →	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल सं.	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि–वार–नक्षत्राणि–रो., मृ., उत्तरा. ३, म., ह., स्वा., अनु., मू., रे. एतद्वेध–रहितेषु शुभेऽह्नि। अमाक्षय–रहित–तिथिषु कात्यायनमते अश्वि., चि., श्र., धनिष्ठास्वपि शुभम्॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्त्तः

वर, कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहिले ३/६/९– इन दिनों को छोडकर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगनसफाई, भूषण घढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह–मुहूर्त्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चवाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि– इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त्त लग्न दिए हुए हैं। इन दसों दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त्त में हैं, वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किए गए हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष–ज्ञान चक्र

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	← लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	← दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणम्	← फलम्

यथा–सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो। सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वां हुआ, यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो.	मृ.	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.	विवाह नक्षत्र
आर्द्रा पुन. श. पू.फा. चि. मू.	मृ. आ. ज्ये ध. म. ह.	अ. मृ. ज्ये. पुष्य ह. रे.	कृ. आ. वि. पू.फा. उ.भा. पू.भा.	भ. मृ. श. पू.भा. स्वा. म.	कृ. श्र. ध. पुष्य ह. रे.	अ. आ. उ.षा. पू.भा. पू.षा. पू.फा.	रो. ज्ये. ध. आश्ले. मू. उ.भा.	भ. पुन. श. वि. अनु. उ.षा.	भ. श. वि. उ.फा. पू.फा. मू.	अ. ज्ये. ध. म. पू.फा. स्वा.	सूर्यस्थित नक्षत्र

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों मे विवाह करने से पात दोष होता है।

(३) युतिदोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो वहां उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू., मं., शु., श., रा., के. की युति दारिद्र्य, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोषचक्र

अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
पू. फा.	अभि.	उ. षा.	श्रव.	रेव.	उ. भा.	पू. भा.	शत.	भर.	पुन.	मृग.	मघा	आश्ले.	हस्त	उ. फा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग देना चाहिए।

(५) जामित्र दोषचक्र

विवाह नक्षत्र→	रो.	मृग.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.
ग्रह नक्षत्र→	अनु.	ज्ये.	ध.	पू.भा.	उ.भा.	अ.	कृ.	मृग.	पुन.	उ.फा.	ह.

विवाहलग्न से सातवें ग्रह होने से जामित्रदोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं। यानी 14वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्रदोष वर्जनीय है।

(६) बाणज्ञान–चक्र

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारे वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोगः	८/१७/२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्निः	२/११/२०/२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृपः	४/१३/२२	नृपसेवायम्	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चौरः	६/१५/२४	यात्रायाम्	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्युः	१/१०/१९/२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः वर्ज्यम्

(७) एकार्गल दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड–ये योग हो और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रहदोष

सूर्य के नक्षत्र से ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE IKS

(९) स्थूल–क्रान्तिसाम्य–दोषचक्र

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनु	वृश्चि.	मीन	कुम्भ

नीचे और ऊपर की राशि पर कहीं भी सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे–मेष के सूर्य और सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य और मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(१०) दग्धातिथि–दोषचक्र

९	२	४	६	५	१०	← सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	← तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्यप्रदेश में ही वर्ज्य हैं।

"भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन–विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्।। *–कश्यपः*

लत्तादि–दोषाणां परिहारवाक्यानि

लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्ते) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रबांगरे) जांगले (फिरोज़पुर–भटिण्डाप्रान्ते)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्।। उपग्रहर्क्ष कुरुवाह्लिकेषु (कुरुक्षेत्र, आगराप्रान्ते) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी–बंगाल–अयोध्यायां) च पातितं भम्। सौराष्ट्रे (काठियावाड़े) शाल्वे (उज्जैनप्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे।। युतिदोषो भवेद्गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुराप्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः।।

विशेष परिहारः— चित्रांगते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः।।

युतिपरिहारः—स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥

अत्यावश्यके वेध–परिहारः–"पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः।" –(नारदः)

ग्रह प्रथम चरण में हो तो चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणमात्र का त्याग किया जाता है– भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥

अस्यापवादः— ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।।

एकार्गलोपग्रह-पात-लत्ता-जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥ - (मु.चिं.)

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा।।

विवाहे लग्न–शुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	←भावाः
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	← त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यञ्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभञ्च				← गोधूलौ त्याज्याः

लग्नभंगयोगा :– व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविर्ग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरु समौ)॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नन्त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नंगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः। बादरायणः मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः।।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कर्तरी दोषः— लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यपि द्रष्टव्या। **केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहाराः** —पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तंगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषेऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद्: भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे— दोषाश्च बहव सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह॥

अपवादान्तरम्— उक्तानुक्ताश्च ये दोषस्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्र-संस्थः सितो वापि पन्नगान्गारुडो यथा॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगःशशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्त्थाः पक्षतिथ्युक्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोष–शतत्रयम्। घूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिरा॥ स्मरण रहे कि— पूवोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१/४/१०) ही ग्रहण करना चाहिए।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद–स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्त्त गणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३		लग्नं शुभं विवाहे स्याद्
६	३	६	२	२	२	६	६	६		दशविंशोपकाधिकंम्।
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकबलम्

अथ गोधूलि लग्नविचारः— लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग., माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चैत्र, वैशाख में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रावण भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्या दोषाः— कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तथा गोधूलिके त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम्। अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के। **अर्थात्** बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे।क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारबेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिकं मुहूर्त्त होगा) गोधूलि समझना चाहिए।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त

कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र य़ोगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र आयु प्रीती लाभ देता है। ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्

नक्षत्र→	३	३	३	३	३	३	३	३
फल→	मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति

अन्यच्च— सूर्यभात् ४/११/१८/२५ संख्यकसाभिजिदभेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथि–मासवेध भृगु–गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधू प्रवेश का मुहूर्त्त

जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधू प्रवेश कहा जाता है। विवाह के १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन; इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में; एकवर्ष के भीतर विषम मास में; एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। ५वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि, चन्द्रबल, गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना— **व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा अमासंक्रान्ति–तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्॥** रेव., अश्वि., रोहि., मृग., श्रव., धनि., हस्त, चित्रा, स्वा., मघा, मूल, उत्तरा ३, पुष्य, अनु., इन नक्षत्रों में और चं., बु., बृ. शु. श. इन वारों में १/२/३/५/६/७/८/१०/११/१२/१३/१५ तिथियों में, ५/८/११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हों तो वधू प्रवेश शुभ है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वधू-प्रवेश-समय

वधूप्रवेशो न दिवा–प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि–प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथम वर्षे वधू–निवासफलम्– विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को और अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं होता।

द्विरागमन का मुहूर्त

प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में हस्त, अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रोहि. स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत., मूल, मृग., रेव., चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः— द्विरागमं षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम्।।

शुक्र सम्मुख व दक्षिण में निषेध– सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह–राजपीड़न आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवम् विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः— सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे।।

अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः— राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते।। निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम्। महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त

रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त, ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो., मृ., पुष्य, ह., चि. अनु., ध., उत्तरा. ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर। शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर, प्रथम दिन स्त्री संगम करें।

मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य–स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करें, आदर सत्कार करें। विशेष गुप्त बात न कहें और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक–दो हो सकती है। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उसका दिल और दिमाग़ तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े, हाथी, सांड, भैंसा आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववधू द्वारा पाककर्म मुहूर्त्त

द्विरागमनोत्तरं मृग., उत्तरा. ३, पुष्य, कृ., ज्ये., श्रव., धनि., श., रो., वि., रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २/५/८/११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम्।

सधवा स्त्री का वस्त्र, सुवर्णरत्नभूषणादिधारण करने का मुहूर्त्त

हस्त., चित्रा., स्वा., अनु., धनि., रेवती., अश्वि. एषु भेषु, बु., गु., शु., वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत–दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम्।।

चूड़ीचक्र में विशेषः– सूर्य नक्षत्र से गणना करने पर ८ अशुभ। ३ शुभ। २ अशुभ। ७ शुभ। २ अशुभ। ४ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः— विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्षमापालने समर्पितम्। निन्द्येपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

आभूषण बनवाने का मुहूर्त्त

हस्त., अ., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत., उत्तरा.३, रोहि. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्।।

दुकान खेलने का मुहूर्त्त

हस्त, चित्रा, रोहि., रेव., उत्तरा. ३, पुष्य, अश्वि., अभि. इन नक्षत्रों में ४। ९। १४। ३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्यवारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २। १०। ११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३। ६ में पापग्रह हों, ८। १२ वां स्थान पाप रहित हो, शुभ दशा भी हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृगृह से पितृ गृहागमन मुहूर्त्त

पूर्वा.३, भ., मू., म. ज्ये., आर्द्रा, आश्ले. एतदभिन्नेषु, चं., बु., शु., वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः।।

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त्त

भ., आर्द्रा, आश्ले., म., पूर्वा. 3, ज्ये., मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर, शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्रः— सूर्य नक्षत्र से दुकान खेलने के दिन तक, नक्षत्र गिन कर चक्र से शुभाशुभ फल जानें।

हट्टचक्र

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सम्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त्त

अ., मृ., चि., ह., पुष्य, अनु., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र., बु., बृ., शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०, ११ सूर्ये–भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीश–योनि–मैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त्त

अश्वि., रो., मू., पुन., पु., उत्तरा. ३, ह., चि., अनु., श्रव., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू., चं., बु., बृ., श. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्यायाप्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात्।।

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्त

पुन., स्वा., मृग., रे., चि., अनु., वि., पुष्य., श्रव., ध., श., अश्वि. एषु नक्षत्रेषु १। ४। ७। १०, लग्नेषु ९। ८। ५ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९। ५ शुभः, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।।

ऋण लेने के लिए वर्जितकाल

मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिए। कृ., रो., आर्द्रा, आश्ले., उत्तरा ३, वि., ज्ये., मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथ के मत से क्रयविक्रय मुहूर्त्त

पुष्य, पूभा., अनु., श्रव., ह., म., स्वा., उत्तरा.३, आश्ले., रे., एषु भेषु सत्तिथौ, शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्रः— रे., शत., अश्वि., स्वा., श्रव., चि., वारों में, बुध, रवि श्रेष्ठ माने गए हैं।

वस्तु बेचने के नक्षत्रः— पू. फा., पू. षा., पू. भा., वि., कृ., आश्ले., भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गए हैं।

नोटः— बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने–बेचने के नक्षत्र दिखाए गए हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना। ऐसे व्यापारी क्या करेंगे, इन नक्षत्रों को।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये, बात कहा तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

प्रार्थनापत्र (अर्जी) देने का मुहूर्त्त

४। ९। १४ तिथि हों, मं., श. वार हों, कृ., आर्द्रा, भ., अश्वि., आश्ले., म., ज्ये., मू., वि., पूर्वा. ३ नक्षत्र हों, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई को परस्परगुणाकर, आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धुम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और २ आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शुद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

ग्रामभात् वासकर्तुः नक्षत्रं यावद् साभिजित् गणना कार्या

स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर केक्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे, तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवें। शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय से व्यय कम हो तो शुभ, अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भुमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा और एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर, उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय यदि ज़मीन में पत्थर निकले तो धन–आयु की वृद्धि हो; अगर गुठली निकले तो धननाश हो और अगर अस्थि, राख, बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि–पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त्त

वैशा., श्रा., मार्ग., माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं; भाद्रपद और कार्त्तिक मास मध्यम हैं। २। ३। ५। ६। ७। १०। ११। १२। १३। १५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, इन तिथियों में चं., बु., गु., शु., श. वारों में; रो., मृ., चि., ह., स्वा., अनु., उत्तरा. ३, ध., श., रे. वेधरहित नक्षत्रों में; २। ३। ५। ६। ८। ११। १२ लग्नों में; पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में; लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३। ६। ११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः— पुष्य, उत्तरा. ३, रो., म., आश्ले., पूषा., इनमें से जिस पर बृहस्पति हो, उस नक्षत्र में बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो., ह., अ., उ. फा., चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि., अ., चि., ध., श., आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्ः— "संक्रान्ति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१०। २१। २४ में षड्दिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७। ६। २। १० एताः घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः।" **अन्यच्च–** सूर्य के नक्षत्र से ५। ७। ९। १२। १९। २६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्य में कूपविचार								
मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
र्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्र–विचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्रपीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर–सुख–भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावें तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ–फाल्गुन–वैशाख–ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.)कार्तिक मासयोः।। (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३, अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में। चं., बृ., श. इन वारों में। २। ५। ८। ११ लग्नों में; **अत्यावश्यके** ३। ६। ९। १२ लग्नों में भी; लग्न से १। २। ३। ५। ७। ९। १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३। ६। ११ में क्रूर हों १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा न हो; चौथा, ८वां स्थान शुद्ध हो; जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो; चन्द्र–तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो, तो आगे गौ, कन्या, जलपूर्ण–पुष्पमाला युक्तकलश, शंखध्वनि व मंगलगान के साथ दम्पति का गृह प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त्त

पुराने अर्थात् जीर्ण या तृणकुटीर अथवा अग्नि–वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वैशाख., श्रावण, कार्तिक., मार्गशीर्ष और फाल्गुन मास में शत., पुष्य, स्वा. और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु, शुक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्				
खाते राहोर्मुखातपृष्ठदिग्भागःशुभदो भवेत्।				
राहुमुखम्	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्यः	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क,सिंह	कन्या,तुला, वृश्चिक	धनु,मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष,	वृष, मिथुन, कर्क
जलाशयारम्भे सूर्यः	मकर,कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला,वृश्चि., धनु
खातदिशाज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्		
सूर्यनक्षत्रात्		
स्थान.	न	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यमं
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्			
सूर्यभात्			
५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त

अनु., हस्त., उत्तरा. ३, रोहि., धनि., शत., भरणी, पू.षा., रेवती, पुष्य, मृग. नक्षत्र हों व चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २। १०। ४। ११। १२ लग्न हों तो अत्यउत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप–नलचक्रम्			सूर्यभात्तड़ागचक्रम्		
ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल	ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्ने. २ जलाधिक्य
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल	उत्तर २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्यां ३ अमृतजल	वायव्य ३ जलनाश	पश्चिम २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृतजल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गणनाक्रमः—मध्य—पूर्व—आग्नेय—दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्— अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिः। **गणनाक्रमः**— पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, मध्य में वारिवाह।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अश्विनी, भरणी, कृत्तिका मध्यजलम्	पूर्व पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा जलाभावः	आग्ने. मघा, पू.फा., उ.षा. मध्यजलम्
उत्तर पू.भा., उ.भा., रेवती मिष्ठजलम्	मध्य रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण हस्त, चित्रा., स्वाती जलाभाव
वायव्य श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा. क्षारजलम्	पश्चिम मूल, ,पू.,षा., उ.षा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्यां विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त्त

"देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने।।
मातृ—भैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः। महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।।"

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, धनि., शत., उत्तरा. ३, रेवती एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८। १०। ११। १२। १३ तिथिषु शुक्ले १। २। ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्ब—लास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२। ५। ८। ११) लग्नेषु लग्नात् १। ४। ७। १०। ९। ५। २। ११ स्थानेषु शुभैः, ६। ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्ने देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता—विशेषेण लग्नम्:— सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः।। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः।।

वास्तुशान्ति मुहूर्त्त

श्रव., धनि., मृग., मूल, अनु., रेवती, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा. ३, पुन., पुष्य, रोहि., अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है

जिस दिन हवन करना हो, उस दिन तिथि और वार क संख्या जोड़कर एक ओर जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए, (०—शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे, तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार की गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र ज़रूर देखिए।

विशेषः— यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्याखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।। दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्।। लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणेमहाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः।। दुर्भंगे गृहे वापि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्।।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

ग्रहाः	सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फलम्	नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट

पापग्रहमुखे—हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्तिं विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेतामधोमुखीम्। गोमूत्र—मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते।।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ ऋणी–धनी विचार– स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्।।(अर्थात् अपने वर्ग को दूना कर, दूसरे के वर्ग में जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके, अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। जिसका शेषांक अधिक बचे, वह दूसरे का ऋणी होगा।), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे, वह दूसरे का ऋणी होता है– यही प्रामाणिक है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त

मृग., रेव., चित्रा, अनु., रोहि., उत्तरा.३, हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., श., मूल, मघा, विशा. एषु भेषु रिक्तामाषष्ट्यष्ठमीरहित सत्तिथौ शुभ–ग्रहस्य वासरे, १। ५। ७। १०। ११ लग्नेषु भूमिशयन–भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्					बीजवपने राहुचक्रम्								
सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें					राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
नक्षत्र	३	७	९	८	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्त

हस्त, अश्वि., पुष्य, उत्तरा. 3, चित्रा, अनु., मृग., रेवती, स्वा., धनि., मघा, मूल एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तिवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः– रवौ रौद्रा(आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्।।

नवान्न–भक्षण–मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत. एवम् विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है, नन्दा–रिक्ता तिथियों और पौष–चैत्र को छोड़कर अन्य मासों में सू., बु., गु., शुक्रवार शुभ है।

गौ, बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त्त

अश्वि., पुन., पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत., रेव. नक्षत्र में गौ लेना–बेचना। अन्य पशु पुन., पूर्वा. 3, हस्त, अनु., ज्ये., मूल, धनि., रेवती में लेना–बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ.फा. से दिन नक्षत्र तक गिने। ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक; फिर दो–दो के क्रम से गाय के समानफल जानें। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल हेतु सूर्य नक्षत्र तक गिनें– नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हान करे घर आया।।

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्							
नक्षत्र	६	२	४	४	४	४	४
संख्या	उत्तमपाक	शवदहन	सर्पभय	मित्रलाभ	रोगभय	क्वाथकर्म	सुख
फल	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., उत्तरा. 3, रोहि., हस्त., पुष्य, अश्वि., शत., मूल, विशा. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं., बु., बृ., शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४। १०। ११। १२ लग्न में शुभ हैं।

तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः – तृण–काष्ठ का सञ्चय और पलंग बनवाना आदि कर्म कुम्भ–मीन के चन्द्रमा (पञ्चककाल) में नहीं करना चाहिए।

औषधसेवन का मुहूर्त्त

हस्त, अ., पुष्य, अभि., मृग., रेवती, चित्रा, अनु., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत. व मूल में जन्मनक्षत्र को छोड़कर, इन नक्षत्रों में ४। ९। १४ को छोड़कर, शुभ तिथियों में, भौम–शनि को छोड़कर, अन्यवारों में शुभ है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ यात्रा–मुहूर्त्त–विचारः

हस्त, मृग., श्रव., अश्वि., पुष्य, पुन., धनि., अनु., रेवती, एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रोहि., उत्तरा. ३, पूर्वा. ३, एषु भेषु मध्या; भरणी, कृत्ति., आर्द्रा, आश्ले., मघा, चित्रा, स्वा., विशा., ज्ये., एतद्भेषु निन्द्याः। तत्रात्यावश्यकेऽपि यात्रायां भरण्यादि भानां क्रमात् ७। २१। १४। १४। ११। ४०। १४। १४। १४ एता घटिकाः गमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। २। ३। ५। ७। १०। ११। १२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

द्विग्द्वारलग्नानि				
दिशा→	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
शुभम्→	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११	४। ८। १२
मध्यमम्→	२। ६ १०	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९
भयम्→	४। ८ १२	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११
महद्भयम्→	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९	२। ६। १०

यात्रा में शुभाशुभ लग्नः– जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न वह है, जब १। ४। ५। ७। ९। १० स्थानों में शुभ ग्रह और ३। ६। १०। ११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है– जब १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा, १०वें शनि, ६वें शुक्र, १२। ६। ८वें लग्नेश हो। **अन्यच्च–** यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने।।

जन्मलग्नेश, दशेश अस्त हों व मारकदशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरु–शुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
दिशा	पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	पू.	द.	प.	उ.
वार	चं.,श.	चं.,बृ.	गुरु	सू.,शु.	सू.,शु.	भौम	मं.	बु.,श.	ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः– न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे पयस्तथा। गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषान्भुक्त्वा शनेर्वारे शूले गच्छञ्छूले न दोषभाक् ॥२॥

यात्रायां कालज्ञान चक्रम्							
सम्मुखे	शनौ	शुक्रे	गुरौ	बुधे	भौमे	चन्द्रे	रवौ
नेष्टः	पूर्वे	आग्नेय्यां	दक्षिणे	नैर्ऋत्यां	पश्चिमे	वायव्ये	उत्तरे

योगिनीवास–चक्रम्								
दिशा	पूर्व	आग्ने.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.
तिथि	१। ६	३। ११	५। १३	४। १२	६। १४	७। १५	२। १०	८। ३०

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ किंवा युद्ध यात्रा में बाएं ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है।

समयशूलः– उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए।

गर्ग–गुरु–अङ्गिरामत– गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे तो गमन करें। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करें। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। **पंच–पंच (५५) उषाकालः सप्तपञ्चाशद (५७) रुणोदयः। अष्ट पंच (५८) भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयो भवेत्।।**

चन्द्रवासचक्रम्			
पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक–यात्रायां घट्यात्मकं चन्द्रवासचक्रम्								
दिशा	पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.
घटी	१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४

घट्यात्मक चन्द्रवास
जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जाएं।

चन्द्रफलम्ः– सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख–सम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—भगणदोषं वार–संक्रान्ति–दोषं कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादि दोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः॥

सर्वाङ्कसिद्धियोग—यात्राकालिक शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोड़कर तीन जगह रखें। क्रमशः ७। ८। ३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य, जयलाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वाकादि मुहूर्त्त के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाएं, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो भी कदापि न जाएं, क्योंकि मुहूर्त्त एवम् शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्ण के क्रम से प्रस्थान का विधान— यदि यात्रा मुहूर्त्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय, तो उसी मुहूर्त्त में ब्राह्मण जनेऊ, माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु–घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध, किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रखे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तुः— यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन और समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य ही करें।

दिने चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्		रात्रौ चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि	घटि.	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३।।।	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ
चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ	७।।	अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग
लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग	११।	चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ
अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग	१५	रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत
काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर	१८।।।	काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर,
शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ	२२।।	लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग
रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत	२६।	उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३०	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ

सूचनाः— यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी–पल ज्ञात होंगे।

यात्रा में शुभ शकुन— मृग बाएं ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहू मिले चलते प्रातःकाल॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुत–स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्तघट यात्रा के समय देखने में शुभ है।

यात्रा में अशुभ शकुन :— बन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलह, विधवास्त्री, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

आवश्यके रामदैवज्ञोक्त यात्रामुहूर्त्तचक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चि.	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया–त्रयोदशी, चतुर्थी–चतुर्दशी, पञ्चमी–पूर्णमासी का फल समान जानना। अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े। कार्य सिद्ध हो, यात्रा सफल होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नौकायात्रा–मुहूर्त्तः

चित्रा, हस्त, पु., मृग., पूर्वा. 3, अनु., श्रव., धनि.–एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र–तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त्तः

मृग., रेवती, अनु., रोहि., उत्तरा. 3, हस्त, अश्वि., पुष्य, स्वा., श्रवण, धनि. –एषु भेषु; चं., बु., बृ., शु., श. वारेषु; १। २। ३। ५। ७। १०। ११। १३ तिथिषु; ३। ५। ८। ९। ११। १२ एषु लग्नेषु; १। ४। ७। १०। ५। ९ स्थानेषु शुभैः; ३। ६। ११ स्थानेषु पापैः; ४। ८ शुद्धौ शुभः। विशा., कृत्ति., पूर्वा. ३, भरणी, मघा, मूल, ज्ये., आर्द्रा, आश्ले., नक्षत्राणि; ४। ९। १४। ६। १२। ८। ३० तिथयः; सू., मं. वारौ; १। ४। ७। १० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि।

मंगलवार को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है।

विशेषः– प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति।।

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घात चन्द्र	मे.	क.	कु.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुम्भ
घात वार	र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
घात नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	आश्ले.
स्त्री चन्द्रघात	मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष
घात मास	का.	मार्ग.	आषा.	पौ.	ज्ये.	भाद्र.	माघ	आश्वि.	श्राव.	वैशा.	चैत्र	फाल्गु.
घातयोग	वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	अ.गं.	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.
घातलग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घाततिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घाततिथिं	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
घाततिथि	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	४	१३	१५

युद्ध, विवाद, राजसेवा,वाहन, रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती। **"घाततिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।।"**

वाम–दक्षिणनिर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ, भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का समझें। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्ग विभाग में पल्ली–(छिपकली, कोढ़किरली) पतन का फल

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि

यदि छिपकली १। २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १३– इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है तथा चं., बु., गु., शु.– इन वारों में भी शुभ फल देती है। पुष्य, अश्वि., रोहि., मूल, पुन., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., धनि., रेवती, अनु., शत– ये नक्षत्र शुभफलदायक हैं। इसके अलावा अन्य नक्षत्रों में गिरे तो शुभ नहीं– अतोऽन्यद्भेषु निन्द्याः।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पल्ली (किरली) पतनोपरान्त कर्तव्य—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्रसहित स्नान करें। जन्मनक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा–तिथि, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय जाप एवम् तिल, स्वर्ण, दान और पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्

छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है– 'मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठी की कुशवाल उचारे; बाईं कारज सवै सवारे॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भापै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥

कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्काः– आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक से दो छींक भी शुभ मानी जाती है– **एक नाक दो छींक; काम बने सब ठींक॥**

तीर्थ में मुण्डनविचार

मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीथेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनीं) गिरिजां गयाम्।।

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं–विधिश्च							
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
तापम्	सुकीर्ति	मृतिः	श्री.	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्
पुष्पं	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०	पातनम्

तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि

तदत्राह–
रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ वैधृतावपि । षष्ट्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।।

विशेष– यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

अंग–स्फुरण का फल

पुरुषों का दायां और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फरकना) स्त्री–पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तुप्राप्ति
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग्य
स्कन्ध	भोगवृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधोभाग	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभप्राप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनप्राप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्ष	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वस्तिदेश	भाग्योन्नति
नेत्रपक्षम	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोर्ध्व	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व–बुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानें। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल व खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

काकस्पर्श का फल

मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति–पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दहीं आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट व इच्छितकार्य का नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मय (मिट्टी के) पात्र में स्थापित कर उडद, चावल, घी, मीठे का नैवेद्य देवें। ग्राम में दक्षिण की ओर बाहर चौराहे पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय मन्त्र का यथाशक्ति जप करें (या करावें), घृतच्छाया–पात्र दान, पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नष्ट होते हैं।

काकविष्ठा विचार :– शिरसि–मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः रोगः। भुजयोः प्रियार्तिः। उदरे शोकः। गुह्ये सन्तानकष्टम्। जंघयोः वाहनपीड़ा। पादयोः प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ किंवा पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किए किसी के ऊपर काली बीठ कर दे तो अशुभ होता है। यदि किसी हरे–भरे या फूले–फले पीपल, बड़ आदि श्रेष्ठ पेड़ पर बैठा हुआ सफेद बीठ कर दे तो शुभ जानिए।

....

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०७८ वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), P.O. पंचकूला-134 109;

(इन विवाहादि मुहूर्त्तों के शोधन में नालाबलोग (पंचकूला) निवासी, मेरे योग्य शिष्य चि. सुरेशानन्द शर्मा, B.A. का पर्याप्त सहयोग मिला है।)

—: समयशुद्धि :—

शुक्र-अस्त :- शुक्र संवत् २०७८ में वर्षारम्भ से चैत्र शु. ६ र. (१८ अप्रैल, २०२१ ई.) तक अस्त रहेगा। इसके बाद पौष शु. ४ गु. से पौष शु. १० बु. (६ से १२ जनवरी, २०२२ ई.) तक भी शुक्र अस्त रहेगा।

गुरु-अस्त :- गुरु इस वर्ष फाल्गुन कृ. ७ बु. से चैत्र कृ. ९ श. (२३ फर. से २६ मार्च, २०२२ ई.) तक अस्त रहेगा।

गुरु-शुक्र के अस्त का यह उपरोक्त काल पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि के लिए है। क्योंकि, अक्षांशभेद से इन ग्रहों के उदय-अस्त की तारीखें भिन्न-भिन्न होती हैं, इसलिए अपने अभीष्ट स्थल के अक्षांशानुसार उस स्थल के गुरु-शुक्र की उदय-अस्त की तारीख नीचे दिये गये कोष्ठक से जानकर विवाहादि मुहूर्त्तों का दैवज्ञ को निर्णय करना चाहिए।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु-शुक्र का उदय-अस्त 'सं. २०७८ वि.'

अक्षांश →	+५°	+१५°	+२५°	+३५°
शुक्र पश्चिम में उदित	१९ अप्रै., '२१	१८ अप्रै., '२१	१७ अप्रै., '२१	१८ अप्रै., '२१
शुक्र पश्चिम में अस्त	५ जन., '२२	६ जन., '२२	६ जन., '२२	६ जन., '२२
शुक्र पूर्व में उदित	१२ जन., '२२	१२ जन., '२२	१२ जन., '२२	१२ जन., '२२
गुरु अस्त	२३ फर. '२२	२३ फर. '२२	२३ फर. '२२	२३ फर., '२२
गुरु उदित	१९ मार्च., '२२	२१ मार्च, '२२	२४ मार्च, '२२	२९ मार्च, '२२

ध्यान रहे :- गुरु-शुक्र के अस्तकाल में तो शुभकृत्य वर्जित रहते ही हैं, इनके अस्तदिन से ३ दिन पहले वार्धक्यदोष और उदयदिन के ३ दिन बाद तक भी बाल्यदोष के कारण शुभकृत्य नहीं किये जाते। **ध्यान दें :-** मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि—इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्त्त में स्वीकार करें।

दैवज्ञ ध्यान दें—

(विवाहलग्नों की संख्या में वृद्धि)

इन आगे दिये जा रहे शुद्ध विवाहमुहूर्त्तों को देखने से आपको ज्ञात होगा कि—**शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या अब हमारे पंचांग में पहले की अपेक्षा अधिक हो गयी है। दैवज्ञों के लिए इस अधिक संख्या का कारण यहां स्पष्ट कर देना आवश्यक है।**

भारत के अधिकतर पंचांगों में लग्नस्थ चन्द्र-पापग्रह, षष्ठस्थ चन्द्र-शुक्र-लग्नेश, सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु-केतु तथा अष्टमस्थ चन्द्र-मंगल-लग्नेश या शुभग्रह होने पर परम्परया लग्नभंग माना जा रहा है। ऐसी स्थिति में उस लग्न को पंचांगकार तभी विवाहयोग्य मानते हैं, जबकि वहां लग्नभंग का परिहार हो। इस परम्परा में लग्नस्थ चन्द्र और पापीग्रह तथा षष्ठस्थ लग्नेश और सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु-केतु एवं अष्टमस्थ लग्नेश का परिहार बिल्कुल नहीं माना जाता और इन स्थितियों में उस लग्न को विवाह में सर्वथा अयोग्य दैवज्ञ लोग मानते चले आते रहे हैं। लेकिन संहिताओं में अनेक ऐसे विशेष स्पष्टवाक्य हमें मिलते हैं, जो सप्तमहीन केन्द्र-त्रिकोणस्थ बुध-शुक्र- गुरु, एकादशस्थ सूर्य-चन्द्र, सप्तमहीन केन्द्रस्थ या एकादशस्थ लग्नेश आदि दस ग्रहादि- स्थितियों को सभी प्रकार के लग्नभंगों का परिहारक घोषित करते हैं। लग्नभंग के इन संहितोक्त विशेष परिहारों में से यदि केवल एक भी परिहार लग्नकुण्डली में प्राप्त हो जाये तब संहिताकारों का कहना है कि—उस एकमात्र परिहार से ही वहां लग्नभंगकारक सभी दोष पूरी तरह नष्ट हो जाते हैं। **ये परिहार दशमस्थ मंगल, चतुर्थस्थ राहु, तृतीयस्थ शुक्र, सप्तमस्थ गुरु-चन्द्र और द्वादशस्थ शनि की पूजा वाले दोषों का भी पूरी तरह निवारण करते हैं। यह भी इन परिहार-वाक्यों से सुस्पष्ट है।** संहिताओं के इन्हीं प्रबल प्रमाणवाक्यों के आधार पर अब हम लग्नभंगकारक दोषों के इन संहितोक्त विशेष परिहारों को भी दृष्टि में रखते हुए विवाहार्थ शुद्ध लग्नों का निर्णय करते हैं, जिससे शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या में यह वृद्धि हुई है।

ध्यान दें—पहले शुद्धविवाहलग्नों के आगे कोष्ठक में लग्नभंगकारक उन ग्रहों का निर्देश किया रहता था, जिनका वहां परिहार हुआ है। अब यह निर्देश अनावश्यक समझकर हमने छोड़ दिया है। विशेष स्पष्टता के लिए मेरी पुस्तक **"मुहूर्त्तगजानन"** के पृष्ठ १५१ पर दिया लेख **'लग्नभंगपरिहार (एक संशोधन)'** अवश्य पढ़िये। यह लेख सं. २०७० वि. के पंचांग में भी प्रकाशित हुआ है।

त्रयोदश दिन-पक्ष—ध्यान दें—इस वर्ष **भाद्रपद शुक्ल त्रयोदश दिनपक्ष है।** मुहूर्त्तलग्न के समय केन्द्र या त्रिकोण में कोई शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध) हो, तो इस दोष का परिहार हो जाता है—**"अब्दायर्तु-मासोत्स्थाः पक्ष-तिथ्यृक्ष-सम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥"—(कश्यप)।** 'मुहूर्त्त चिंतामणिकार' भी इस परिहार का समर्थन करते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७८ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२१ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाहलग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
चैत्र शु. १२ श.	वैशा. १२	अप्रै. २४	उ.फा.	कन्या	मेष	कुम्भ	ल. गोधू., १०, ११, (मृत्यु-परिहार),
चैत्र शु. १३ र.	वैशा. १३	अप्रै. २५	हस्त	कन्या	मेष	कुम्भ	दि.ल. ५, गोधू., १० (२५/५४ तक),
चैत्र शु. १३ र.	वैशा. १३	अप्रै. २५	चित्रा	कन्या	मेष	कुम्भ	ल. १० (२५/५४ बाद), ११,
चैत्र शु. १४ चं.	वैशा. १४	अप्रै. २६	स्वा.	तुला	मेष	कुम्भ	ल. १०, ११,
चैत्र शु. १५ मं.	वैशा. १५	अप्रै. २७	स्वा.	तुला	मेष	कुम्भ	दि.ल. ५,
वैशा. कृ. ४ शु.	वैशा. १८	अप्रै. ३०	मूल	धनु	मेष	कुम्भ	दि.ल. ५, गोधू., १०, ११,
वैशा. कृ. ६ र.	वैशा. २०	मई २	उ.षा.	धनु	मेष	कुम्भ	दि.ल. ५ (१४/४५ तक), (२६/२७ बाद राहुवेध),
वैशा. कृ. ८ मं.	वैशा. २२	मई ४	धनि.	मकर/कुम्भ	मेष	कुम्भ	दि.ल. ५, ६, गोधू., १०, (मृत्यु-परिहार), (२८/५५ बाद क्रां.सा.),
वैशा. कृ. ११ शु.	वैशा. २५	मई ७	उ.भा.	मीन	मेष	कुम्भ	ल. १०, ११,
वैशा. कृ. १२ श.	वैशा. २६	मई ८	उ.भा.	मीन	मेष	कुम्भ	दि.ल. ५ (१४/४६ तक),
वैशा. शु. ९ शु.	ज्ये. ८	मई २१	उ.फा.	सिंह	वृष	कुम्भ	दि.ल. ६ (१५/२२ बाद), ७, गोधू.,
वैशा. शु. १० श.	ज्ये. ९	मई २२	उ.फा.	कन्या	वृष	कुम्भ	दि.ल. ५,
वैशा. शु. १० श.	ज्ये. ९	मई २२	हस्त	कन्या	वृष	कुम्भ	दि.ल. ७, गोधू.,
वैशा. शु. ११ र.	ज्ये. १०	मई २३	हस्त	कन्या	वृष	कुम्भ	दि.ल. ५ (१२/१२ तक),
वैशा. शु. ११ र.	ज्ये. १०	मई २३	चित्रा	कन्या	वृष	कुम्भ	दि.ल. ५ (१२/१२ बाद),
वैशा. शु. १३ चं.	ज्ये. ११	मई २४	स्वा.	तुला	वृष	कुम्भ	दि.ल. ५, ६, गोधू., १०, ११ (२५/४८ तक), (२५/४८ बाद गुरु-पादवेध),
वैशा. शु. १५ बु.	ज्ये. १३	मई २६	अनु.	वृश्चिक	वृष	कुम्भ	दि.ल. ५, ६, ७, रा.ल. १०, ११ (२५/१५ तक), (९/४६ तक मृत्युबाण),
ज्ये. कृ. ३ श.	ज्ये. १६	मई २९	उ.षा.	धनु	वृष	कुम्भ	ल.गोधू., १० (२३/३९ तक), (२३/३९ बाद बुध-शुक्र-पादवेध),
ज्ये. कृ. ६ चं.	ज्ये. १८	मई ३१	धनि.	मकर	वृष	कुम्भ	दि.ल. ७ (१६/१ बाद), गोधू., ११ (२५/६ तक),
ज्ये. कृ. ९ गु.	ज्ये. २१	जून ३	उ.भा.	मीन	वृष	कुम्भ	ल.गोधू., ११, १ (निर्बल लग्न), (मृत्यु-परिहार),
ज्ये. कृ. १० शु.	ज्ये. २२	जून ४	उ.भा.	मीन	वृष	कुम्भ	दि.ल. ३, ५, ६ (१५/१५ तक), (मृत्यु-परिहार),
ज्ये. कृ. ११ श.	ज्ये. २३	जून ५	रेव.	मीन	वृष	कुम्भ	दि.ल. ३, ५, ६, ७, गोधू.,
ज्ये. कृ. ११ श.	ज्ये. २३	जून ५	अश्वि.	मेष	वृष	कुम्भ	ल. ११, १२,
ज्ये. कृ. ११ र.	ज्ये. २४	जून ६	अश्वि.	मेष	वृष	कुम्भ	दि.ल. ३, ५, ६, ७, ११, १२ (२६/२७ तक),
ज्ये. शु. ८ शु.	आषा. ४	जून १८	हस्त	कन्या	मिथुन	कुम्भ	ल. १ (२६/४६ बाद) (निर्बल लग्न),
ज्ये. शु. ९ श.	आषा. ५	जून १९	हस्त	कन्या	मिथुन	कुम्भ	दि.ल. ५, ७, गोधू.,
ज्ये. शु. ९ श.	आषा. ५	जून १९	चित्रा	कन्या	मिथुन	कुम्भ	ल. ११ (२४/४ तक),

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७८ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२१ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
ज्ये. शु. १० र.	आषा. ६	जून २०	चित्रा	तुला	मिथुन	कुम्भ	दि.ल. ५ (१०/३१ बाद), ६,
ज्ये. शु. १० र.	आषा. ६	जून २०	स्वा.	तुला	मिथुन	कुम्भ	ल. गोधू., ११, १२, १ (२६/५७ तक) (निर्बल लग्न),
ज्ये. शु. १५ गु.	आषा. १०	जून २४	मूल	धनु	मिथुन	कुम्भ	दि.ल. ७ (१४/३२ बाद), रा.ल. ११, १२, १, (१४/३२ तक शुक्र-पादवेध),
आषा. कृ. २ श.	आषा. १२	जून २६	उ.षा.	धनु/मकर	मिथुन	कुम्भ	दि.ल. ५, ६, ७, (मृत्यु-परिहार),
आषा. कृ. ३ र.	आषा. १३	जून २७	धनि.	मकर	मिथुन	कुम्भ	ल. १ (२५/२१ बाद),
आषा. कृ. ४ चं.	आषा. १४	जून २८	धनि.	मकर/कुम्भ	मिथुन	कुम्भ	दि.ल. ५, ६, ७, गोधू., ११, १२ (२४/४८ तक),
आषा. कृ. ६ बु.	आषा. १६	जून ३०	उ.भा.	मीन	मिथुन	कुम्भ	ल. १ (२६/३ बाद),
आषा. कृ. ७ गु.	आषा. १७	जुला. १	उ.भा.	मीन	मिथुन	कुम्भ	दि.ल. ५, ६, ७, गोधू. ११, १,
आषा. कृ. ८ शु.	आषा. १८	जुला. २	रेव.	मीन	मिथुन	कुम्भ	दि.ल. ५ (१०/५२ तक), ६ (१३/१६ बाद), ७, गोधू., ११, १,
आषा. कृ. ९ श.	आषा. १९	जुला. ३	अश्वि.	मेष	मिथुन	कुम्भ	दि.ल. ५, ६, ७, गोधू., ११, १२,
आषा. कृ. १२ मं.	आषा. २२	जुला. ६	रोहि.	वृष	मिथुन	कुम्भ	ल. गोधू., ११, १२, १ (२५/२ तक), (राहु-युति-परिहार),
आषा. शु. ८ श.	श्राव. २	जुला. १७	चित्रा	तुला	कर्क	कुम्भ	ल. गोधू., १२, १, (मृत्यु-परिहार),
आषा. शु. ८ श.	श्राव. २	जुला. १७	स्वा.	तुला	कर्क	कुम्भ	ल. ३, (मृत्यु-परिहार),
आषा. शु. ९ र.	श्राव. ३	जुला. १८	स्वा.	तुला	कर्क	कुम्भ	दि.ल. ५, ६, (१८/३० बाद गुरु-पादवेध), (मृत्यु-परिहार),
आषा. शु. १२ बु.	श्राव. ६	जुला. २१	मूल	धनु	कर्क	कुम्भ	ल. गोधू., १२, १, ३,
आषा. शु. १३ गु.	श्राव. ७	जुला. २२	मूल	धनु	कर्क	कुम्भ	दि.ल. ६, ७ (१२/४५ तक),
आषा. शु. १४ शु.	श्राव. ८	जुला. २३	उ.षा.	मकर	कर्क	कुम्भ	ल. १२, १, ३,
श्राव. कृ. १ र.	श्राव. १०	जुला. २५	धनि.	मकर/कुम्भ	कर्क	कुम्भ	दि.ल. ६ (११/१७ बाद), ७, ९, रा.ल. १२, १, ३,
श्राव. कृ. ३ चं.	श्राव. ११	जुला. २६	धनि.	कुम्भ	कर्क	कुम्भ	दि.ल. ६ (१०/२६ तक),
श्राव. कृ. ५ बु.	श्राव. १३	जुला. २८	उ.भा.	मीन	कर्क	कुम्भ	दि.ल. ६ (१०/४५ बाद), ७, ९, गोधू., १, ३,
श्राव. कृ. ६ गु.	श्राव. १४	जुला. २९	उ.भा.	मीन	कर्क	कुम्भ	दि.ल. ६, ७ (१२/२ तक),
श्राव. कृ. ६ गु.	श्राव. १४	जुला. २९	रेव.	मीन	कर्क	कुम्भ	दि.ल. ७ (१२/२ बाद), ९, गोधू., १, ३ (२७/५४ तक),
श्राव. कृ. ७ शु.	श्राव. १५	जुला. ३०	अश्वि.	मेष	कर्क	कुम्भ	दि.ल. ९ (१६/४७ बाद), गोधू., १२ (२२/१८ बाद), ३,
श्राव. कृ. ८ श.	श्राव. १६	जुला. ३१	अश्वि.	मेष	कर्क	कुम्भ	दि.ल. ६ (९/५६ बाद), ७, ९ (१६/३७ तक), (६/५३ से ९/५६ तक शुक्र-पादवेध),
श्राव. कृ. ९ चं.	श्राव. १८	अग. २	रोहि.	वृष	कर्क	कुम्भ	ल. १ (२२/४३ से २३/४४ तक), (राहुयुति-परिहार),
श्राव. कृ. १० मं.	श्राव. १९	अग. ३	रोहि.	वृष	कर्क	कुम्भ	दि.ल. ७ (१३/० बाद), ९, गोधू., १२, १ (२४/५ तक), (राहुयुति-परिहार),
श्राव. कृ. ११ बु.	श्राव. २०	अग. ४	मृग.	वृष/मिथुन	कर्क	कुम्भ	दि.ल. ६, ७, ९, रा.ल. १२, १ (८/२६ तक चन्द्र-पादवेध),

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७८ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२१ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	
श्राव. शु. ३ बु.	श्राव. २७	अग. ११	उ.फा.	सिंह/कन्या	कर्क	कुम्भ	दि.ल. ६ (९/३१ बाद) (निर्बल लग्न), ७, ९, गोधू., १, ३,
श्राव. शु. ४ गु.	श्राव. २८	अग. १२	हस्त	कन्या	कर्क	कुम्भ	दि.ल. ९ (१५/२५ बाद), गोधू., १, ३,
श्राव. शु. ५ शु.	श्राव. २९	अग. १३	चित्रा	कन्या/तुला	कर्क	कुम्भ	दि.ल. ७, ९, गोधू., १, ३,
श्राव. शु. ६ श.	श्राव. ३०	अग. १४	स्वा.	तुला	कर्क	कुम्भ	दि.ल. ६, ९, गोधू., १, ३ (२७/० तक), (मृत्यु-परिहार), (२७/० बाद क्रां.सा.),
श्राव. शु. १० मं.	भाद्र. २	अग. १७	मूल	धनु	सिंह	कुम्भ	ल. ३ (२५/३५ बाद), (मृत्यु-परिहार),
श्राव. शु. १२ गु.	भाद्र. ४	अग. १९	उ.षा.	धनु	सिंह	कुम्भ	ल. १ (२२/४२ बाद), ३,
श्राव. शु. १३ शु.	भाद्र. ५	अग. २०	उ.षा.	मकर	सिंह	कुम्भ	दि.ल. ६, ७, ९ (१५/४२ तक), (१५/४२ बाद राहुवेध),
श्राव. शु. १५ र.	भाद्र. ७	अग. २२	धनि.	कुम्भ	सिंह	कुम्भ	दि.ल. ६, ७ (१०/३३ तक), ९,
भाद्र. कृ. २ मं.	भाद्र. ९	अग. २४	उ.भा.	मीन	सिंह	कुम्भ	ल. १, ३,
भाद्र. कृ. ३ बु.	भाद्र. १०	अग. २५	उ.भा.	मीन	सिंह	कुम्भ	दि.ल. ९ (१६/१९ बाद), गोधू.,
भाद्र. कृ. ८ चं.	भाद्र. १५	अग. ३०	रोहि.	वृष	सिंह	कुम्भ	दि.ल. ६, ७, ९, गोधू., ३, (राहुयुति-परिहार),
भाद्र. कृ. ९ मं.	भाद्र. १६	अग. ३१	रोहि.	वृष	सिंह	कुम्भ	दि.ल. ६ (८/४७ तक), (राहुयुति-परिहार),
भाद्र. कृ. ९ मं.	भाद्र. १६	अग. ३१	मृग.	वृष	सिंह	कुम्भ	दि.ल. ७ (९/५९ बाद), ९, गोधू.,
भाद्र. कृ. १० बु.	भाद्र. १७	सितं. १	मृग.	मिथुन	सिंह	कुम्भ	दि.ल. ६, ७,
भाद्र. शु. २ बु.	भाद्र. २४	सितं. ८	उ.फा.	कन्या	सिंह	कुम्भ	दि.ल. ७, ९, (भौमयुति-परिहार),
भाद्र. शु. २ बु.	भाद्र. २४	सितं. ८	हस्त	कन्या	सिंह	कुम्भ	ल. ३,
भाद्र. शु. ३ गु.	भाद्र. २५	सितं. ९	हस्त	कन्या	सिंह	कुम्भ	दि.ल. ७, ९ (१४/३० तक),
भाद्र. शु. ३ गु.	भाद्र. २५	सितं. ९	चित्रा	कन्या/तुला	सिंह	कुम्भ	दि.ल. ९ (१४/३० बाद), रा.ल. ३, (१८/५८ से २२/४७ तक क्रां.सा.),
भाद्र. शु. ४ शु.	भाद्र. २६	सितं. १०	स्वा.	तुला	सिंह	कुम्भ	ल. ३,
भाद्र. शु. ८ मं.	भाद्र. ३०	सितं. १४	मूल	धनु	सिंह	कुं./मकर	दि.ल. ७, गोधू., ३, (मृत्यु-परिहार),
भाद्र. शु. ११ शु.	आश्वि. २	सितं. १७	धनि.	मकर	कन्या	मकर	ल. ५ (निर्बल लग्न), (मृत्यु-परिहार),
भाद्र. शु. १२ श.	आश्वि. ३	सितं. १८	धनि.	मकर/कुम्भ	कन्या	मकर	दि.ल. ७, ९, ११, गोधू., ३,
आश्वि. शु. १ गु.	आश्वि. २२	अक्तू. ७	स्वा.	तुला	कन्या	मकर	ल. ५ (२६/५१ बाद),
आश्वि. शु. २ शु.	आश्वि. २३	अक्तू. ८	स्वा.	तुला	कन्या	मकर	दि.ल. ९, ११, रा.ल. १ (१८/५९ तक),
आश्वि. शु. ६ चं.	आश्वि. २६	अक्तू. ११	मूल	धनु	कन्या	मकर	दि.ल. ११, गोधू., १, ३, ५,
आश्वि. शु. ७ मं.	आश्वि. २७	अक्तू. १२	मूल	धनु	कन्या	मकर	दि.ल. ७ (८/५० तक),

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७८ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२१ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
आश्वि. शु. ८ बु.	आश्वि. २८	अक्तू. १३	उ.षा.	धनु/मकर	कन्या	मकर	दि.ल. ११, गोधू., १, ३, ५,
आश्वि. शु. ९ गु.	आश्वि. २९	अक्तू. १४	उ.षा.	मकर	कन्या	मकर	दि.ल. ७,
आश्वि. शु. १३ चं.	कार्त्ति. २	अक्तू. १८	उ.भा.	मीन	तुला	मकर	दि.ल. ९, ११, गोधू., (मृत्यु-परिहार), (२३/२७ बाद बुध-पादवेध),
आश्वि. शु. १४ मं.	कार्त्ति. ३	अक्तू. १९	उ.भा.	मीन	तुला	मकर	दि.ल. ९ (१२/१२ तक), (मृत्यु-परिहार),
आश्वि. शु. १४ मं.	कार्त्ति. ३	अक्तू. १९	रेव.	मीन	तुला	मकर	दि.ल. ९ (१२/१२ बाद), ११, गोधू.,
आश्वि. शु. १५ बु.	कार्त्ति. ४	अक्तू. २०	रेव.	मीन	तुला	मकर	दि.ल. ९,
आश्वि. शु. १५ बु.	कार्त्ति. ४	अक्तू. २०	अश्वि.	मेष	तुला	मकर	दि.ल. ११, रा.ल. ३ (२१/५० बाद), ५,
कार्त्ति. कृ. १ गु.	कार्त्ति. ५	अक्तू. २१	अश्वि.	मेष	तुला	मकर	दि.ल. ९, ११,
कार्त्ति. कृ. ३ श.	कार्त्ति. ७	अक्तू. २३	रोहि.	वृष	तुला	मकर	ल. ५ (२७/१ बाद), ६,
कार्त्ति. कृ. ४ र.	कार्त्ति. ८	अक्तू. २४	रोहि.	वृष	तुला	मकर	दि.ल. ९, ११, गोधू., ३,
कार्त्ति. कृ. ५ चं.	कार्त्ति. ९	अक्तू. २५	मृग.	वृष/मिथुन	तुला	मकर	दि.ल. ९ (१२/४ बाद), ११, गोधू., ५, ६ (२८/१० तक),
कार्त्ति. कृ. ११ चं.	कार्त्ति. १६	नवं. १	उ.फा.	सिंह/कन्या	तुला	मकर	ल. गोधू.,
कार्त्ति. शु. ३ र.	कार्त्ति. २२	नवं. ७	मूल	धनु	तुला	मकर	ल. ५ (२६/५० तक),
कार्त्ति. शु. ४ चं.	कार्त्ति. २३	नवं. ८	मूल	धनु	तुला	मकर	दि.ल. ११, १२, गोधू.,
कार्त्ति. शु. ७ गु.	कार्त्ति. २६	नवं. ११	धनि.	मकर/कुम्भ	तुला	मकर	ल. ५, ६ (२८/१ तक), (२८/१ बाद क्रां. सा.),
कार्त्ति. शु. ९ शु.	कार्त्ति. २७	नवं. १२	धनि.	कुम्भ	तुला	मकर	दि.ल. ९, १२ (१४/५३ तक), (९/१३ तक क्रां. सा.),
कार्त्ति. शु. ११ र.	कार्त्ति. २९	नवं. १४	उ.भा.	मीन	तुला	मकर	ल. गोधू., (मृत्यु-परिहार),
मार्ग. कृ. १ श.	मार्ग. ५	नवं. २०	रोहि.	वृष	वृश्चिक	मकर/कुं.	दि.ल. ९, ११, १२, रा.ल. ५, ६,
मार्ग. कृ. २ र.	मार्ग. ६	नवं. २१	मृग.	वृष/मिथुन	वृश्चिक	कुम्भ	दि.ल. ९, ११, १२, रा.ल., ५, ६,
मार्ग. कृ. ३ चं.	मार्ग. ७	नवं. २२	मृग.	मिथुन	वृश्चिक	कुम्भ	दि.ल. ९ (९/७ तक),
मार्ग. कृ. ९ र.	मार्ग. १३	नवं. २८	उ.फा.	सिंह	वृश्चिक	कुम्भ	ल. ६,
मार्ग. कृ. १० चं.	मार्ग. १४	नवं. २९	उ.फा.	कन्या	वृश्चिक	कुम्भ	दि.ल. ९, ११, १२,
मार्ग. कृ. ११ मं.	मार्ग. १५	नवं. ३०	हस्त	कन्या	वृश्चिक	कुम्भ	दि.ल. ९, ११, १२, गोधू.,
मार्ग. कृ. ११ मं.	मार्ग. १५	नवं. ३०	चित्रा	कन्या	वृश्चिक	कुम्भ	ल. ५,
मार्ग. कृ. १२ बु.	मार्ग. १६	दिसं. १	चित्रा	तुला	वृश्चिक	कुम्भ	दि.ल. ९, ११, १२,
मार्ग. कृ. १२ बु.	मार्ग. १६	दिसं. १	स्वा.	तुला	वृश्चिक	कुम्भ	ल. ५(२३/३६ तक),

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७८ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२१-२२ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय: चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
मार्ग. शु. ३ चं.	मार्ग. २१	दिसं. ६	उ.षा.	धनु	वृश्चिक	कुम्भ	ल. ६ (२६/१९ बाद), ७,
मार्ग. शु. ४ मं.	मार्ग. २२	दिसं. ७	उ.षा.	मकर	वृश्चिक	कुम्भ	दि.ल. ९, ११ (१३/६ तक), रा.ल. ५ (२३/४१ से २४/११ तक),
मार्ग. शु. ५ बु.	मार्ग. २३	दिसं. ८	धनि.	मकर	वृश्चिक	कुम्भ	ल. ६, ७,
मार्ग. शु. ६ गु.	मार्ग. २४	दिसं. ९	धनि.	कुम्भ	वृश्चिक	कुम्भ	दि.ल. १२ (निर्बल लग्न), १, गोधू., ३,
मार्ग. शु. ८ श.	मार्ग. २६	दिसं. ११	उ.भा.	मीन	वृश्चिक	कुम्भ	ल. ५ (२२/३१ बाद), ६, ७,
मार्ग. शु. १० चं.	मार्ग. २८	दिसं. १३	रेव.	मीन	वृश्चिक	कुम्भ	दि.ल. ९, ११, १, गोधू., ५, ६, (२६/४ तक),
मार्ग. शु. १० चं.	मार्ग. २८	दिसं. १३	अश्वि.	मेष	वृश्चिक	कुम्भ	दि.ल. ६ (२६/४ बाद), ७, (मृत्यु-परिहार),
माघ कृ. ४ श.	माघ ९	जन. २२	उ.फा.	सिंह/कन्या	मकर	कुम्भ	दि.ल. १२ (१०/३८ बाद), १, गोधू., ५, ७,
माघ कृ. ५ र.	माघ १०	जन. २३	उ.फा.	कन्या	मकर	कुम्भ	दि.ल. ११, १२ (११/९ तक),
माघ कृ. ५ र.	माघ १०	जन. २३	हस्त	कन्या	मकर	कुम्भ	दि.ल. १२ (११/९ बाद), १, गोधू., ५, ७,
माघ कृ. ६ चं.	माघ ११	जन. २४	हस्त	कन्या	मकर	कुम्भ	दि.ल. ११ (८/४४ तक),
माघ कृ. ६ चं.	माघ ११	जन. २४	चित्रा	कन्या	मकर	कुम्भ	ल. ५ (२०/१७ बाद), (मृत्यु-परिहार),
माघ कृ. ७ मं.	माघ १२	जन. २५	चित्रा	तुला	मकर	कुम्भ	दि.ल. ११ (९/१२ तक), (मृत्यु-परिहार),
माघ शु. ५ श.	माघ २३	फर. ५	उ.भा.	मीन	मकर	कुम्भ	दि.ल. ११, १,
माघ शु. ५ श.	माघ २३	फर. ५	रेव.	मीन	मकर	कुम्भ	ल. गोधू., ५, ६, ७,
माघ शु. ६ र.	माघ २४	फर. ६	रेव.	मीन	मकर	कुम्भ	दि.ल. ११, १,
माघ शु. ६ र.	माघ २४	फर. ६	अश्वि.	मेष	मकर	कुम्भ	ल. गोधू., ५, ६, ७,
माघ शु. ७ चं.	माघ २५	फर. ७	अश्वि.	मेष	मकर	कुम्भ	दि.ल. ११, १२, गोधू., ५ (१८/५८ तक),
माघ शु. ८ बु.	माघ २७	फर. ९	रोहि.	वृष	मकर	कुम्भ	ल. ७ (२४/२३ बाद),
माघ शु. ९ गु.	माघ २८	फर. १०	रोहि.	वृष	मकर	कुम्भ	दि.ल. ११, १२, १, गोधू., ५ (१८/४८ तक),
फाल्गु. कृ. २ शु.	फाल्गु. ७	फर. १८	उ.फा.	सिंह/कन्या	कुम्भ	कुम्भ	ल. गोधू. ६, ७,
फाल्गु. कृ. ३ श.	फाल्गु. ८	फर. १९	उ.फा.	कन्या	कुम्भ	कुम्भ	दि.ल. १२, १ (१०/१३ तक),
फाल्गु. कृ. ४ र.	फाल्गु. ९	फर. २०	चित्रा	कन्या	कुम्भ	कुम्भ	ल. गोधू.,

आगामी सं. २०७९ वि. में गुरु-शुक्रास्त—आगामी सं. २०७९ वि. में शुक्र लगभग ३० सितं., २०२२ ई. को पूर्व में अस्त होकर लगभग २५ नवं., २०२२ ई. को पश्चिम में उदित हो जायेगा। ध्यान रहे—गुरु सं. २०७९ वि. में पूरे वर्ष उदित रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विवाहमुहूर्त्तों के शोधन में मृत्युबाण-वेध-युति आदि दोषों के शास्त्रीय परिहार

इस पंचांग में दिये जाने वाले विवाहमुहूर्त्तों में जहां वेध, युति, कर्त्तरी, दग्धातिथि, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र, भौम, शुक्र के दोषों के परिहार मिल जाते हैं, वहां उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध मान लिया जाता है और विवाहलग्न लगा दिये जाते हैं। इन दोषों के परिहार निम्नांकित स्थितियों में माने गये हैं— ***मृत्युबाण का परिहार***—यहां विवाहमुहूर्त्तों में मृत्युबाण को तभी दोषकारक (त्याज्य) माना गया है, जबकि वह बुधवार को घटित हो, क्योंकि मुहूर्त्तकारों ने इसे इसी वार को त्याज्य लिखा है—**"बुधे मृत्युं परित्यजेत्।"** ***सौम्यग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के दोष का परिहार***—मुहूर्त्तकारों ने क्रूरग्रह का वेध होने पर पूर्णनक्षत्र को त्याज्य लिखा है, लेकिन शुभ ग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के एक चरण को ही विद्ध माना गया है। जैसे—**वेधक नक्षत्र** के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ चरण में स्थित शुभ ग्रह **विद्ध नक्षत्र** के क्रमशः चतुर्थ, तृतीय, द्वितीय, प्रथम चरण को ही वेधता है। लेकिन '**मुहूर्त्तमार्त्तण्ड**' कार एवं वसिष्ठ का मत है कि—यदि लग्नेश एकादश में हो, चन्द्र पर शुभग्रह की दृष्टि हो, लग्न में चन्द्ररहित कोई शुभग्रह हो या कालहोरा शुभग्रह की हो तो वेधदोष समाप्त हो जाता है—**"लग्नेशे भवगेऽथवा शशिनि सद्दृष्टे शुभे वांऽगगे। होरायां च शुभस्य वा व्यधमयं नास्तीति पूर्वे जगुः॥"** हमने शुभग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के मुहूर्त्तशोधन में इस मत का भी प्रयोग किया है। वैसे तो क्रूरग्रह-विद्ध नक्षत्र-दोष का भी परिहार इस मतानुसार युक्तिसंगत सिद्ध होता है। ***युतिदोष का परिहार***—नक्षत्र के साथ सौम्यग्रह की युति का दोष सामान्य माना जाता है, लेकिन क्रूरग्रह की युति बहुत ही अशुभ फलप्रद मानी जाती है। यदि चन्द्रमा अपनी उच्च राशि (वृष) या मित्रराशि (सिंह, मिथुन, कन्या) में हो तो क्रूरग्रह की युति का दोष भी समाप्त हो जाता है। ***कर्त्तरीदोष का परिहार***—मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध स्थित हो तो कर्त्तरीदोष का परिहार हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले ग्रह यदि शत्रुराशि या अपनी नीचराशि में हों या दोनों अस्त हों तो भी लग्न का कर्त्तरीदोष नहीं रहता। यदि मुहूर्त्तलग्न से द्वितीय भाव में कोई शुभ ग्रह बैठा हो अथवा बारहवें भाव में गुरु बैठा हो तो भी कर्त्तरीदोष निष्प्रभाव हो जाता है और ऐसा कर्त्तरीदोष विवाहमुहूर्त्त को अग्राह्य नहीं बना सकता। चन्द्र-कत्तरीदोष का परिहार भी चन्द्रमा के स्थान को लग्न समझकर, इन्हीं योगों से देखना चाहिए। ***दग्धातिथि का परिहार***—मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध बैठा हो तो दग्धातिथि का परिहार हो जाता है, इस परिहार की स्थिति में दग्धातिथि में विवाहलग्न शुद्ध माना जाता है। ***षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र का परिहार***—नीचराशि (वृश्चिक) में चन्द्रमा हो तो वह लग्न से छठे या आठवें भाव में होने पर भी दोषकारक नहीं होता। यदि चन्द्रमा लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो तब तो उसका कोई परिहार शास्त्रों में नहीं मिलता। ***अष्टमस्थ मंगल का परिहार***—मंगल अस्त (अदृश्य) हो या वह नीचराशि (कर्क) अथवा शत्रु राशि (मिथुन या कन्या) में हो तो लग्न से अष्टमस्थ होने पर भी वह दोषकारक नहीं होता। यदि मंगल लग्नेश होकर अष्टम में हो तो किसी भी स्थिति में उसके दोष का परिहार नहीं माना जाता। ***षष्ठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार***—शुक्र यदि नीचराशि (कन्या) अथवा शत्रुराशि (कर्क या सिंह) में हो तो वह षष्ठाष्टमस्थ होने पर भी अशुभ फल नहीं करता। यदि शुक्र लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो तो उसका भी कोई परिहार नहीं है।

ध्यान रहे—उपरोक्त लग्नभंग के सामान्य (अपूर्ण) परिहार हैं, जिन्हें पंचांगकार परम्परया प्रयोग में लाते रहे हैं। लेकिन इनसे अतिरिक्त अन्य लग्नभंग के विशेष परिहार भी हैं, जिनका हमने सं. २०७० वि. से लग्नशोधन में प्रयोग करना प्रारम्भ किया है। इसकी विस्तृत जानकारी के लिए मेरी पुस्तक **"मुहूर्त्तगजानन"** में दिया **"लग्नभंग-परिहार (एक संशोधन)"** लेख पढ़ना चाहिए। यह लेख सं. २०७० वि. के पंचांग में भी प्रकाशित हुआ है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. सं. 2079 में (2 अप्रैल, 2022 ई. से 21 मार्च, 2023 ई. तक) सम्भावित शुद्ध विवाहमुहूर्त्त

प्रतिवर्ष हमें ऐसे दैवज्ञों एवं अन्य अनेक लोगों के Phone Calls/पत्र आते हैं, जो यह जानना चाहते हैं कि—आगामी वर्ष में *शुद्ध विवाहमुहूर्त्त* किन-किन दिनों में सम्भावित हैं। उनकी इस जिज्ञासा की शान्ति के लिए यह स्तम्भ प्रारम्भ किया गया है। इससे यह पर्याप्त स्पष्टता से ज्ञात हो जाता है कि—आगमी वर्ष के किन-किन दिनों में *शुद्ध विवाहमुहूर्त्त* सम्भावित हैं और किन-किन दिनों में नहीं। यहां जिन तारीखों के आगे गुणनचिह्न (×) दिया गया है, उन दिनों में शुद्ध विवाहमुहूर्त्त बिल्कुल नहीं बनते। इनके अतिरिक्त जहां गुणनचिह्न नहीं दिया है, उन दिनों में शुद्ध मुहूर्त्त बनने की पर्याप्त सम्भावना है। हालांकि इनमें कुछेक पदार्थों का विचार समयाभाव के कारण नहीं कर पाते, जिससे इनमें कुछ अंतर भी संभव है। अभीष्ट वर्षीय पंचांग में तो सभी पदार्थों का विचार सूक्ष्मेक्षिकया किया जाता है- यह ध्यान रखें। —प्रियव्रत शर्मा

तारीख	अप्रै.'22	मई '22	जून '22	जुला. '22	अग.'22	सितं.'22	अक्तू.'22	नवं.'22	दिसं.'22	जन.'23	फर. '23	मार्च '23	तारीख
1	—	×		×			×	×	×	×		×	1
2	×	×	×	×			×	×		×	×	×	2
3	×		×			×	×	×		×	×	×	3
4	×		×				×	×		×	×	×	4
5	×		×				×	×		×	×	×	5
6	×	×					×	×	×	×		×	6
7	×	×					×	×		×		×	7
8	×	×			×		×	×		×			8
9	×						×	×		×			9
10	×					×	×	×	×	×			10
11	×					×	×	×	×	×			11
12	×					×	×	×	×	×	×		12
13	×	×			×	×	×	×	×	×	×	×	13
14	×	×	×			×	×	×		×		×	14
15			×	×		×	×	×	×			×	15
16				×	×	×	×	×	×			×	16
17				×	×	×	×	×	×			×	17
18					×	×	×	×	×			×	18
19						×	×	×	×			×	19
20			×			×	×	×	×			×	20
21						×	×	×	×		×	×	21
22				×		×	×	×	×			–	22
23		×			×	×	×	×	×	×		–	23
24					×	×	×	×	×	×		–	24
25			×		×	×	×	×	×			–	25
26	×						×	×	×		×	–	26
27				×		×	×		×		×	–	27
28				×		×	×		×		×	–	28
29		×	×	×		×	×		×	×	–	–	29
30			×			×	×		×		–	–	30
31	–		–			–	×	–	×		–	–	31

इस वर्ष (सं. 2079 वि. में) इन निम्नांकित प्रमुख दोषों के कारण निम्नांकित ये तारीखें विवाहकृत्य तथा अन्य सभी मंगलकृत्यों में स्पष्टरूप में सर्वथा वर्जित होंगी—

मीनस्थ सूर्यदोष

(संवत् के प्रारम्भ से 13 अप्रैल, 2022 ई. तक)

ग्रहण-वेधदोष

(24 से 28 अक्तूबर, 2022 ई. तक)

(7 से 11 नवम्बर, 2022 ई. तक)

श्राद्ध (महालय) दोष

(10 से 25 सितंबर, 2022 ई. तक)

शुक्रपूर्वलोप-दोष

(27 सितंबर से 27 नवम्बर, 2022 ई. तक)

धनुःस्थ सूर्यदोष

(16 दिसं., 22 से 13 जन., 2023 ई. तक)

होलाष्टक दोष

(27 फरवरी से 7 मार्च, 2023 ई. तक)

मीनस्थ सूर्यदोष

(14 मार्च से वर्षांत (21 मार्च, 2023 ई. तक)

ध्यान दें—इन उपरोक्त तारीखों तथा अन्य उन तारीखों को भी जो विवाहकृत्य में वर्जित हैं, इस बायीं ओर दिये कोष्ठक में गुणनचिह्न से अंकित किया गया है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सं. २०७८ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०७८ वि. में कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को शुद्ध (ग्राह्य) बनते हैं?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाहमुहूर्त्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाहमुहूर्त्तों में जगह-जगह त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए हम यहां नीचे 'त्रिबलशुद्धि कोष्ठक' दे रहे हैं। संवत् २०७८ वि. के शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त इस पंचांग में पृ 253 पर दिये गये हैं। किस-किस महीने में किस-किस तारीख वाले विवाहमुहूर्त्त में, किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिये गये 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' में लिख दिया गया है। अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं—इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में यह तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है, कि अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्तों में हो सकता है। वर के लिए 'सूर्य की पूजा' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा' वाला समय भी इस कोष्ठक में दिया गया है।

लड़का-लड़की की राशियों वाले कॉलमों/कोष्ठकों में जो-जो तारीखें समानरूप से मिलती हों, उन तारीखों वाले विवाहमुहूर्तों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे—**मेषराशि वाले लड़के और सिंह राशि वाली लड़की** का विवाह सं. २०७८ वि. में अगस्त (२०२१ ई.) के महीने में किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है?—यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें,—लड़के वाले कॉलम में जन्मराशि मेष के आगे अगस्त, २०२१ ई. की १७, १९, २०, २२, २४, २५, ३०, ३१ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कॉलम में जन्मराशि सिंह के आगे अगस्त की २, ३, ४, ११, १२, १३, १४, १७, १९, २०, २२, ३०, ३१ तारीखें हैं। इसलिए यह समझना चाहिए कि अगस्त, २०२१ ई. में मेष राशि वाले लड़के और सिंह राशि वाली लड़की का विवाह त्रिबलशुद्धि के अनुसार अगस्त की केवल १७, १९, २०, २२, ३०, ३१ तारीखों वाले विवाहमुहूर्तों में ही हो सकता है, क्योंकि अगस्त की केवल यही तारीखें, दोनों (लड़का-लड़की) की राशियां (मेष-सिंह) वाले कॉलमों (कोष्ठकों) में एक-सी मिलती हैं। इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाहमुहूर्त्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिये। क्योंकि, आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अत: चतुर्थ-अष्टम-द्वादश गुरु को शास्त्रनिर्देशानुसार नेष्ट न मानकर पूज्य ही माना गया है। **ध्यान दें**—लड़के की राशि से १, २, ५, ७, ९ वें स्थित सूर्य एवं कन्या की राशि से १, ३, ६, १०वें स्थित गुरु यदि स्वराशि, मित्रराशि या स्वोच्चराशि में हों तो उन्हें शास्त्र-निर्देशानुसार यहां पूज्य न मानकर शुभ ही माना जाता है। इस वर्ष गुरु मकर और कुम्भ राशियों में विचरण करेगा, अत: लड़की के कॉलम के आगे दी गयी राशि में स्थित गुरु उस राशि वाली लड़की के लिए पूज्य रहेगा।

नाम/ जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७८ वि.) (१३ अप्रैल, सन् २०२१ ई. से १ अप्रै., सन् २०२२ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)			इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है—
	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है—	लड़की	
मेष	अप्रैल २४, २५, २६, २७, ३०; मई २, ४, ७, ८, २१, २२, २३, २४, २९, ३१; जून ३, ४, ५, ६, १८, १९, २०, २४, २६, २७, २८, ३०; जुला. १, २, ३, ६; अग. १७, १९, २०, २२, २४, २५, ३०, ३१; सितं. १, ८, ९, १०, १४, १७, १८; अक्तू. ७, ८, ११, १२, १३, १४, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५; नवं. १, ७, ८, ११, १२, १४; जन. २२, २३, २४, २५; फर. ५, ६, ७, ९, १०, १८, १९, २०,	ज्येष्ठ, कार्त्तिक,	अप्रैल २४, २५, २६, २७, ३०; मई २, ४, ७, ८, २१, २२, २३, २४, २९, ३१; जून ३, ४, ५, ६, १८, १९, २०, २४, २६, २७, २८, ३०; जुला. १, २, ३, ६, १७, १८, २१, २२, २३, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१; अग. २, ३, ४, ११, १२, १३, १४, १७, १९, २०, २२, २४, २५, ३०, ३१; सितं. १, ८, ९, १०, १४, १७, १८; अक्तू. ७, ८, ११, १२, १३, १४, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५; नवं. १, ७, ८, ११, १२, १४, २०, २१, २२, २८, २९, ३०; दिसं. १, ६, ७, ८, ९, ११, १३; जन. २२, २३, २४, २५; फर. ५, ६, ७, ९, १०, १८, १९, २०,	मकर
वृष	मई २२, २३, २४, २६, ३१; जून ३, ४, ५, ६, १८, १९, २०, २६ (९/५५ बाद), २७, २८, ३०; जुलाई १, २, ३, ६, १७, १८, २३, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१; अग. २, ३, ४, ११ (१५/२३ बाद), १२, १३, १४; सितं. १७, १८; अक्तू. ७, ८, १३ (१६/५ बाद), १४, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५; नवं. १ (१८/३९ बाद), ११, १२, १४, २०, २१, २२, २९, ३०; दिसं. १, ७, ८, ९, ११, १३; जन. २२ (१६/४८ बाद), २३, २४, २५; फर. ५, ६, ७, ९, १०, १८ (२२/४६ बाद), १९, २०,	ज्येष्ठ, आषाढ़, आश्विन, माघ,	अप्रैल २४, २५, २६, २७; मई ४, ७, ८, २२, २३, २४, २६, ३१; जून ३, ४, ५, ६, १८, १९, २०, २६ (९/५५ बाद), २७, २८, ३०; जुलाई १, २, ३, ६, १७, १८, २३, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१; अग. २, ३, ४, ११ (१५/२३ बाद), १२, १३, १४, २०, २२, २४, २५, ३०, ३१; सितं. १, ८, ९, १०, १७, १८; अक्तू. ७, ८, १३ (१६/५ बाद), १४, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५; नवं. १ (१८/३९ बाद), ११, १२, १४, २०, २१, २२, २९, ३०; दिसं. १, ७, ८, ९, ११, १३; जन. २२ (१६/४८ बाद), २३, २४, २५; फर. ५, ६, ७, ९, १०, १८ (२२/४६ बाद), १९, २०,	कुम्भ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७८ वि.) (१३ अप्रैल, सन् २०२१ ई. से १ अप्रै., सन् २०२२ ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)

नाम/ जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है—	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है—
मिथुन	अप्रै. २६, २७, ३०; मई २, ४ (२०/४३ बाद), ७, ८; जून २०, २४, २६ (९/५५ तक), २८ (१२/५९ बाद), ३०; जुला. १, २, ३, ६, १७, १८, २१, २२, २५ (२२/४७ बाद), २६, २८, २९, ३०, ३१; अग. २, ३, ४, ११ (१५/२३ तक), १३ (१९/२८ बाद), १४, १७, १९, २२, २४, २५, ३०, ३१; सितं. १, ९ (२५/४४ बाद), १०, १४; अक्तू. १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५; नवं. १ (१८/३९ तक), ७, ८, ११ (२६/५१ बाद), १२, १४, २०, २१, २२, २८; दिसं. १, ६, ९, ११, १३; फर. १८ (२२/४६ तक),	आषाढ़, कार्तिक, फाल्गुन,	अप्रै. २६, २७, ३०; मई २, ४ (२०/४३ बाद), ७, ८, २१, २४, २६, २९; जून ३, ४, ५, ६, २०, २४, २६ (९/५५ तक), २८ (१२/५९ बाद), ३०; जुला. १, २, ३, ६, १७, १८, २१, २२, २५ (२२/४७ बाद), २६, २८, २९, ३०, ३१; अग. २, ३, ४, ११ (१५/२३ तक), १३ (१९/२८ बाद), १४, १७, १९, २२, २४, २५, ३०, ३१; सितं. १, ९ (२५/४४ बाद), १०, १४, १८ (१५/२५ बाद); अक्तू. ७, ८, ११, १२, १३ (१६/५ तक), १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५; नवं. १ (१८/३९ तक), ७, ८, ११ (२६/५१ बाद), १२, १४, २०, २१, २२, २८; दिसं. १, ६, ९, ११, १३; जन. २२ (१६/४८ तक), २५; फर. ५, ६, ७, ९, १०, १८ (२२/४६ तक),	मकर
कर्क	अप्रैल २४, २५, ३०; मई २, ४ (२०/४३ तक), ७, ८, २१, २२, २३, २६, २९, ३१; जून ३, ४, ५, ६; जुला. २१, २२, २३, २५ (२२/४७ तक), २८, २९, ३०, ३१; अग. २, ३, ४, ११, १२, १३ (१९/२८ तक), १७, १९, २०, २४, २५, ३०, ३१; सितं. १, ८, ९ (२५/४४ तक), १४, १७, १८ (१५/२५ तक); अक्तू. ११, १२, १३, १४; नवं. २०, २१, २२, २८, २९, ३०; दिसं. ६, ७, ८, ११, १३; जन. २२, २३, २४, फर. ५, ६, ७, ९, १०,	माघ,	अप्रैल २४, २५, ३०; मई २, ४ (२०/४३ तक), ७, ८, २१, २२, २३, २६, २९, ३१; जून ३, ४, ५, ६, १८, १९, २४, २६, २७, २८ (१२/५९ तक), ३०; जुला. १, २, ३, ६, २१, २२, २३, २५ (२२/४७ तक), २८, २९, ३०, ३१; अग. २, ३, ४, ११, १२, १३ (१९/२८ तक), १७, १९, २०, २४, २५, ३०, ३१; सितं. १, ८, ९ (२५/४४ तक), १४, १७, १८ (१५/२५ तक); अक्तू. ११, १२, १३, १४, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५; नवं. १, ७, ८, ११ (२६/५१ तक), १४, २०, २१, २२, २८, २९, ३०; दिसं. ६, ७, ८, ११, १३; जन. २२, २३, २४, फर. ५, ६, ७, ९, १०, १८, १९, २०,	कुम्भ
सिंह	अप्रैल २४, २५, २६, २७, ३०; मई २, ४, २१, २२, २३, २४, २९, ३१; जून ५ (२३/२७ बाद), ६, १८, १९, २०, २४, २६, २७, २८; जुला. ३, ६ ;अग. १७, १९, २०, २२, ३०, ३१; सितं. १, ८, ९, १०, १४, १७, १८; अक्तू. ७, ८, ११, १२, १३, १४, २० (१४/१ बाद), २१, २३, २४, २५; नवं. १, ७, ८, ११, १२; जन. २२, २३, २४, २५; फर. ६ (१७/९ बाद), ७, ९, १०, १८, १९, २०,	आश्विन, फाल्गुन,	अप्रैल २४, २५, २६, २७, ३०; मई २, ४, २१, २२, २३, २४, २९, ३१; जून ५ (२३/२७ बाद), ६, १८, १९, २०, २४, २६, २७, २८; जुला. ३, ६, १७, १८, २१, २२, २३, २५, २६, ३०, ३१; अग. २, ३, ४, ११, १२, १३, १४, १७, १९, २०, २२, ३०, ३१; सितं. १, ८, ९, १०, १४, १७, १८; अक्तू. ७, ८, ११, १२, १३, १४, २० (१४/१ बाद), २१, २३, २४, २५; नवं. १, ७, ८, ११, १२, २०, २१, २२, २८, २९, ३०; दिसं. १, ६, ७, ८, ९, १३ (२६/४ बाद); जन. २२, २३, २४, २५; फर. ६ (१७/९ बाद), ७, ९, १०, १८, १९, २०,	मकर
कन्या	मई २१, २२, २३, २४, २६, ३१; जून ३, ४, ५ (२३/२७ तक), १८, १९, २०, २६ (९/५५ बाद), २७, २८, ३०; जुला. १, २, ६, १७, १८, २३, २५, २६, २८, २९; अग. २, ३, ४, ११, १२, १३, १४; सितं. १७, १८; अक्तू. ७, ८, १३ (१६/५ बाद), १४, १८, १९, २० (१४/१ तक), २३, २४, २५; नवं. ११, १२, १४, २०, २१, २२, २८, २९, ३०; दिसं. १, ७, ८, ९, ११, १३ (२६/४ तक); जन. २२, २३, २४, २५; फर. ५, ६ (१७/९ तक), ९, १०, १८, १९, २०,	ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक, माघ,	अप्रैल २४, २५, २६, २७; मई ४, ७, ८, २१, २२, २३, २४, २६, ३१; जून ३, ४, ५ (२३/२७ तक), १८, १९, २०, २६ (९/५५ बाद), २७, २८, ३०; जुला. १, २, ६, १७, १८, २३, २५, २६, २८, २९; अग. २, ३, ४, ११, १२, १३, १४, २०, २२, २४, २५, ३०, ३१; सितं. १, ८, ९, १०, १७, १८; अक्तू. ७, ८, १३ (१६/५ बाद), १४, १८, १९, २० (१४/१ तक), २३, २४, २५; नवं. १, ११, १२, १४, २०, २१, २२, २८, २९, ३०; दिसं. १, ७, ८, ९, ११, १३ (२६/४ तक); जन. २२, २३, २४, २५; फर. ५, ६ (१७/९ तक), ९, १०, १८, १९, २०,	कुम्भ
तुला	अप्रैल २४, २५, २६, २७, ३०; मई २, ४ (२०/४३ बाद), ७, ८; जून १८, १९, २०, २४, २६ (९/५५ तक), २८ (१२/५९ बाद), ३०; जुला. १, २, ३, १७, १८, २१, २२, २५ (२२/४७ बाद), २६, २८, २९, ३०, ३१; अग. ४ (१५/७ बाद), ११, १२, १३, १४, १७, १९, २२, २४, २५; सितं. १, ८, ९, १०, १४; अक्तू. १८, १९, २०, २१, २५ (१४/३६ बाद); नवं. १, ७, ८, ११ (२६/५१ बाद), १२, १४, २१ (२१/९ बाद), २२, २८, २९, ३०; दिसं. १, ६, ९, ११, १३; फर. १८, १९, २०,	आषाढ़, कार्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल २४, २५, २६, २७, ३०; मई २, ४ (२०/४३ बाद), ७, ८, २१, २२, २३, २४, २६, २९; जून ३, ४, ५, ६, १८, १९, २०, २४, २६ (९/५५ तक), २८ (१२/५९ बाद), ३०; जुला. १, २, ३, १७, १८, २१, २२, २५ (२२/४७ बाद), २६, २८, २९, ३०, ३१; अग. ४ (१५/७ बाद), ११, १२, १३, १४, १७, १९, २२, २४, २५; सितं. १, ८, ९, १०, १४, १८ (१५/२५ बाद); अक्तू. ७, ८, ११, १२, १३ (१६/५ तक), १८, १९, २०, २१, २५ (१४/३६ बाद); नवं. १, ७, ८, ११ (२६/५१ बाद), १२, १४, २१ (२१/९ बाद), २२, २८, २९, ३०; दिसं. १, ६, ९, ११, १३; जन. २२, २३, २४, २५; फर. ५, ६, ७, १८, १९, २०,	मकर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७८ वि.) (१३ अप्रैल, सन् २०२१ ई. से १ अप्रै., सन् २०२२ ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)

नाम/ जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है—	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है—
वृश्चिक	अप्रैल २४, २५, २६, २७, ३०; मई २, ४ (२०/४३ तक), ७, ८, २१, २२, २३, २४, २६, २९, ३१; जून ३, ४, ५, ६; जुला. १७, १८, २१, २२, २३, २५ (२२/४७ तक), २८, २९, ३०, ३१; अग. २, ३, ४ (१५/७ तक), ११, १२, १३, १४, १७, १९, २०, २४, २५, ३०, ३१; सितं. ८, ९, १०, १४, १७, १८ (१५/२५ तक); अक्तू. ७, ८, ११, १२, १३, १४; नवं. २०, २१ (२१/९ तक), २८, २९, ३०; दिसं. १, ६, ७, ८, ११, १३; जन. २२, २३, २४, २५; फर. ५, ६, ७, ९, १०,	ज्येष्ठ,	अप्रैल २४, २५, २६, २७, ३०; मई २, ४ (२०/४३ तक), ७, ८, २१, २२, २३, २४, २६, २९, ३१; जून ३, ४, ५, ६, १८, १९, २०, २४, २६, २७, २८ (१२/५९ तक), ३०; जुला. १, २, ३, ६, १७, १८, २१, २२, २३, २५ (२२/४७ तक), २८, २९, ३०, ३१; अग. २, ३, ४ (१५/७ तक), ११, १२, १३, १४, १७, १९, २०, २४, २५, ३०, ३१; सितं. ८, ९, १०, १४, १७, १८ (१५/२५ तक); अक्तू. ७, ८, ११, १२, १३, १४, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५ (१४/३६ तक); नवं. १, ७, ८, ११ (२६/५१ तक), १४, २०, २१ (२१/९ तक), २८, २९, ३०; दिसं. १, ६, ७, ८, ११, १३; जन. २२, २३, २४, २५; फर. ५, ६, ७, ९, १०, १८, १९, २०,	मकर, कुम्भ
धनु	अप्रैल २४, २५, २६, २७, ३०; मई २, ४, २१, २२, २३, २४, २६, २९, ३१; जून ५ (२३/२७ बाद), ६, १८, १९, २०, २४, २६, २७, २८; जुला. ३, ६; अग. १९, २०, २२, ३०, ३१; सितं. १, ८, ९, १०, १४, १७, १८; अक्तू. ७, ८, ११, १२, १३, १४, २० (१४/१ बाद), २१, २३, २४, २५; नवं., १, ७, ८, ११, १२; जन. २२, २३, २४, २५; फर. ६ (१७/९ बाद), ७, ९, १०, १८, १९, २०,	आषाढ़, माघ,	अप्रैल २४, २५, २६, २७, ३०; मई २, ४, २१, २२, २३, २४, २६, २९, ३१; जून ५ (२३/२७ बाद), ६, १८, १९, २०, २४, २६, २७, २८; जुला. ३, ६, १७, १८, २१, २२, २३, २५, २६, ३०, ३१; अग. २, ३, ४, ११, १२, १३, १४, १७, १९, २०, २२, ३०, ३१; सितं. १, ८, ९, १०, १४, १७, १८; अक्तू. ७, ८, ११, १२, १३, १४, २० (१४/१ बाद), २१, २३, २४, २५; नवं. १, ७, ८, ११, १२, २०, २१, २२, २८, २९, ३०; दिसं. १, ६, ७, ८, ९, १३ (२६/४ बाद); जन. २२, २३, २४, २५; फर. ६ (१७/९ बाद), ७, ९, १०, १८, १९, २०,	कुम्भ
मकर	मई २२, २३, २४, २६, २९, ३१; जून ३, ४, ५ (२३/२७ तक), १८, १९, २०, २४, २६, २७, २८, ३०; जुला. १, २, ६, १७, १८, २१, २२, २३, २५, २६, २८, २९; अग. २, ३, ४, ११ (१५/२३ बाद), १२, १३, १४; सितं. १७, १८; अक्तू. ७, ८, ११, १२, १३, १४, १८, १९, २० (१४/१ तक), २३, २४, २५; नवं. १ (१८/३९ बाद), ७, ८, ११, १२, १४, २०, २१, २२, २९, ३०; दिसं. १, ६, ७, ८, ९, ११, १३ (२६/४ तक); जन. २२ (१६/४८ बाद), २३, २४, २५; फर. ५, ६ (१७/९ तक), ९, १०, १८ (२२/४६ बाद), १९ २०,	ज्येष्ठ, आश्विन, माघ, फाल्गुन,	अप्रै. २४, २५, २६, २७, ३०; मई २, ४, ७, ८, २२, २३, २४, २६, २९, ३१; जून ३, ४, ५ (२३/२७ तक), १८, १९, २०, २४, २६, २७, २८, ३०; जुला. १, २, ६, १७, १८, २१, २२, २३, २५, २६, २८, २९; अग. २, ३, ४, ११ (१५/२३ बाद), १२, १३, १४, १७, १९, २०, २२, २४, २५, ३०, ३१; सितं. १, ८, ९, १०, १४, १७, १८; अक्तू. ७, ८, ११, १२, १३, १४, १८, १९, २० (१४/१ तक), २३, २४, २५; नवं. १ (१८/३९ बाद), ७, ८, ११, १२, १४, २०, २१, २२, २९, ३०; दिसं. १, ६, ७, ८, ९, ११, १३ (२६/४ तक); जन. २२ (१६/४८ बाद), २३, २४, २५; फर. ५, ६ (१७/९ तक), ९, १०, १८ (२२/४६ बाद), १९ २०,	मकर
कुम्भ	अप्रैल २६, २७, ३०; मई २, ४, ७, ८; जून २०, २४, २६, २७, २८, ३०; जुला. १, २, ३, १७, १८, २१, २२, २३, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१; अग. ४ (१५/७ बाद), ११ (१५/२३ तक), १३ (१९/२८ बाद), १४, १७, १९, २०, २२, २४, २५; सितं. १, ९ (२५/४४ बाद), १० १४; अक्तू. १८, १९, २०, २१ २५ (१४/३६ बाद); नवं. १ (१८/३९ तक), ७, ८, ११, १२, १४, २१ (२१/९ तक), २२, २८; दिसं. १, ६, ७, ८, ९, ११, १३; फर. १८ (२२/४६ तक),	आषाढ़, कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल २६, २७, ३०; मई २, ४, ७, ८, २[illegible], २४, २६, २९, ३१; जून ३, ४, ५, ६, २०, २४, २६, २७, २८, ३०; जुला. १, २, ३, १७, १८, २१, २२, २३, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१; अग. ४ (१५/७ बाद), ११ (१५/२३ तक), १३ (१९/२८ बाद), १४, १७, १९, २०, २२, २४, २५; सित. १, ९ (२५/४४ बाद), १०, १४, १७, १८; अक्तू. ७, ८, ११, १२, १३, १४, १८, १९, २०, २१ २५ (१४/३६ बाद); नवं. १ (१८/३९ तक), ७, ८, ११, १२, १४, २१ (२१/९ तक), २२, २८; दिसं. १, ६, ७, ८, ९, ११, १३; जन. २२ (१६/४८ तक), २५; फर. ५, ६, ७, १८ (२२/४६ तक),	मकर, कुम्भ
मीन	अप्रैल २४, २५, ३०; मई २, ४, ७, ८, २१, २२, २३, २६, २९, ३१; जून ३, ४, ५, ६; जुला. २१, २२, २३, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१; अग. २, ३, ४ (१५/७ तक), ११, १२, १३ (१९/२८ तक), १७, १९, २०, २२, २४, २५, ३०, ३१; सितं. ८, ९ (२५/४४ तक), १४, १७, १८; अक्तू. ११, १२, १३, १४; नवं. २०, २१ (२१/९ तक), २८, २९, ३०; दिसं. ६, ७, ८, ९, ११, १३; जन. २२, २३, २४; फर. ५, ६, ७, ९, १०,	आश्विन,	अप्रैल २४, २५, ३०; मई २, ४, ७, ८, २१, २२, २३, २६, २९, ३१; जून ३, ४, ५, ६, १८, १९, २४, २६, २७, २८, ३०; जुला. १, २, ३, ६, २१, २२, २३, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१; अग. २, ३, ४ (१५/७ तक), ११, १२, १३ (१९/२८ तक), १७, १९, २०, २२, २४, २५, ३०, ३१; सित. ८, ९ (२५/४४ तक), १४, १७, १८; अक्तू. ११, १२, १३, १४, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २५ (१४/३६ तक); नवं. १, ७, ८, ११, १२, १४, २०, २१ (२१/९ तक), २८, २९, ३०; दिसं. ६, ७, ८, ९, ११, १३; जन. २२, २३, २४; फर. ५, ६, ७, ९, १०, १८, १९, २०,	कुम्भ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अशुद्ध विवाह-मुहूर्त्त (सं. २०७८ वि.)

प्रतिवर्ष हमें ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र उपलब्ध होते हैं, जिनमें वे ऐसे अनेक विवाहमुहूर्त्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्ध विवाहमुहूर्त्त मानकर, उनमें विवाहलग्न लगाये होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं। यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त-सम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ सिद्ध हुआ है और इससे ज्योतिषी लोग स्वयं यह भलीभांति जान सकते हैं कि—अमुक नक्षत्र, अमुक दिन, अमुक समय या अमुक लग्न में विवाह करना शास्त्रविरुद्ध क्यों है? यहां साथ-साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाहनक्षत्र होते हुए भी, वहां विवाह नहीं किया जा सकता। जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूरग्रहवेध आदि दोषों से रहित होने से विवाहनक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी लग्नभंग-परिहार नहीं हो सकता, वहां '**लग्नाभाव**' दोष लिखा गया है। ***ध्यान रहे***—यहां जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं, जिनका कोई परिहार नहीं है। नीचे सं. २०७८ वि. के अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त दिये जा रहे हैं।— **प्रियव्रत शर्मा**।

तिथि-वार				तारीख २०२१ ई.		विवाह नक्षत्र	दोष
वर्षारम्भ से चैत्र शु. ९ बु. (१३ से २१ अप्रै., २०२१ ई.) तक शुक्रास्त एवं बाल्यदोष।							
चैत्र	शु.	१०	गु.	अप्रैल	२२	मघा	शनिवेध,
चैत्र	शु.	११	शु.	अप्रैल	२३	मघा	शनिवेध,
चैत्र	शु.	१२	श.	अप्रैल	२४	हस्त	लग्नाभाव,
चैत्र	शु.	१४	चं.	अप्रैल	२६	चित्रा	लग्नाभाव,
वैशा.	कृ.	२	बु.	अप्रैल	२८	अनु.	सूर्यवेध,
वैशा.	कृ.	३	गु.	अप्रैल	२९	अनु.	सूर्यवेध,
वैशा.	कृ.	५	श.	मई	१	मूल	लग्नाभाव,
वैशा.	कृ.	७	चं.	मई	३	उ.षा.	राहुवेध,
वैशा.	कृ.	७	चं.	मई	३	श्रव.	शनियुति अपरिहार्य,
वैशा.	कृ.	८	मं.	मई	४	श्रव.	शनियुति अपरिहार्य,
वैशा.	कृ.	९	बु.	मई	५	धनि.	क्रान्तिसाम्य,
वैशा.	कृ.	१२	श.	मई	८	रेव.	लग्नाभाव,
वैशा.	शु.	१	बु.	मई	१२	रोहि.	मृत्युबाण,
वैशा.	शु.	२	गु.	मई	१३	रोहि.	मासान्त,
वैशा.	शु.	२	शु.	मई	१४	रोहि.	संक्रान्ति,
वैशा.	शु.	२	शु.	मई	१४	मृग.	संक्रान्ति,
वैशा.	शु.	३	श.	मई	१५	मृग.	लग्नाभाव,
वैशा.	शु.	७	बु.	मई	१९	मघा	शनिवेध,
वैशा.	शु.	८	गु.	मई	२०	मघा	शनिवेध,
वैशा.	शु.	१३	चं.	मई	२४	चित्रा	व्यतीपात,
वैशा.	शु.	१४	मं.	मई	२५	स्वा.	गुरु-पादवेध.

तिथि-वार				तारीख २०२१ ई.		विवाह नक्षत्र	दोष
वैशा.	शु.	१४	मं.	मई	२५	अनु.	भद्रा,
ज्ये.	कृ.	१	गु.	मई	२७	मूल	भौमवेध,
ज्ये.	कृ.	२	शु.	मई	२८	मूल	भौमवेध,
ज्ये.	कृ.	५	र.	मई	३०	उ.षा.	लग्नाभाव, १०/५८ बाद सूर्य-राहुवेध
ज्ये.	कृ.	५	र.	मई	३०	श्रव.	शनियुति अपरिहार्य,
ज्ये.	कृ.	६	चं.	मई	३१	श्रव.	शनियुति अपरिहार्य,
ज्ये.	कृ.	७	मं.	जून	१	धनि.	भद्रा, वैधृति,
ज्ये.	कृ.	१०	शु.	जून	४	रेव.	लग्नाभाव,
ज्ये.	शु.	१	शु.	जून	११	मृग.	क्षीणचन्द्र, भुजंगपात,
ज्ये.	शु.	५	मं.	जून	१५	मघा	संक्रान्ति, शनिवेध,
ज्ये.	शु.	६	बु.	जून	१६	मघा	शनिवेध, मृत्युबाण,
ज्ये.	शु.	७	गु.	जून	१७	उ.फा.	भद्रा,
ज्ये.	शु.	८	शु.	जून	१८	उ.फा.	भद्रा, व्यतीपात,
ज्ये.	शु.	११	चं.	जून	२१	स्वा	गुरु-पादवेध,
ज्ये.	शु.	१२	मं.	जून	२२	अनु.	केतुयुति अपरिहार्य,
ज्ये.	शु.	१३	बु.	जून	२३	अनु.	केतुयुति अपरिहार्य,
आषा.	कृ.	१	शु.	जून	२५	मूल	लग्नाभाव,
आषा.	कृ.	१	शु.	जून	२५	उ.षा.	लग्नाभाव,
आषा.	कृ.	२	श.	जून	२६	श्रव.	शनियुति अपरिहार्य, वैधृति, भद्रा,
आषा.	कृ.	३	र.	जून	२७	श्रव.	शनियुति अपरिहार्य,
आषा.	कृ.	७	गु.	जुलाई	१	रेव.	लग्नाभाव,

तिथि-वार				तारीख २०२१ ई.		विवाह नक्षत्र	दोष
आषा.	कृ.	९	श.	जुलाई	३	रेव.	लग्नाभाव,
आषा.	कृ.	१०	र.	जुलाई	४	अश्वि.	लग्नाभाव,
आषा.	शु.	२	चं.	जुलाई	१२	मघा	शनिवेध,
आषा.	शु.	३	मं.	जुलाई	१३	मघा	शनिवेध,
आषा.	शु.	४	बु.	जुलाई	१४	उ.फा.	मृत्युबाण,
आषा.	शु.	५	गु.	जुलाई	१५	उ.फा.	मासान्त,परिघार्ध,
आषा.	शु.	५	गु.	जुलाई	१५	हस्त	मासान्त,
आषा.	शु.	५	गु.	जुलाई	१५	हस्त	मासान्त,
आषा.	शु.	६	शु.	जुलाई	१६	हस्त	संक्रान्ति,
आषा.	शु.	६	शु.	जुलाई	१६	चित्रा	संक्रान्ति, भद्रा,
आषा.	शु.	१०	चं.	जुलाई	१९	अनु.	केतुयुति अपरिहार्य,
आषा.	शु.	११	मं.	जुलाई	२०	अनु.	केतुयुति अपरिहार्य,
आषा.	शु.	१५	श.	जुलाई	२४	उ.षा.	राहुवेध, लग्नाभाव,
आषा.	शु.	१५	श.	जुलाई	२४	श्रव.	शनियुति अपरिहार्य, भौमवेध,
श्राव.	कृ.	१	र.	जुलाई	२५	श्रव.	शनियुति अपरिहार्य, भौमवेध,
श्राव.	कृ.	७	शु.	जुलाई	३०	रेव.	भद्रा,
श्राव.	कृ.	१०	मं.	अग.	३	मृग.	चन्द्र-पादवेध,
श्राव.	शु.	१	चं.	अग.	९	मघा	शनिवेध,
श्राव.	शु.	२	मं.	अग.	१०	मघा	शनिवेध,
श्राव.	शु.	४	गु.	अग.	१२	उ.फा.	भद्रा,
श्राव.	शु.	५	शु.	अग.	१३	हस्त	लग्नाभाव,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अशुद्ध विवाह-मुहूर्त्त (सं. २०७८ वि.)

तिथि-वार				तारीख २०२१ ई.		विवाह नक्षत्र	दोष
श्राव.	शु.	६	श.	अग.	१४	चित्रा	लग्नाभाव,
श्राव.	शु.	७	र.	अग.	१५	अनु.	मासान्त,
श्राव.	शु.	८	चं.	अग.	१६	अनु.	संक्रान्ति,
श्राव.	शु.	११	बु.	अग.	१८	मूल	मृत्युबाण,
श्राव.	शु.	१३	शु.	अग.	२०	श्रव.	शनियुति अपरिहार्य, सूर्यवेध,
श्राव.	शु.	१४	श.	अग.	२१	श्रव.	शनियुति अपरिहार्य, सूर्यवेध,
श्राव.	शु.	१४	श.	अग.	२१	धनि.	भद्रा,
भाद्र.	कृ.	३	बु.	अग.	२५	रेव.	भुजंगपात,
भाद्र.	कृ.	४	गु.	अग.	२६	रेव.	भुजंगपात,
भाद्र.	कृ.	४	गु.	अग.	२६	अश्वि.	भौमवेध,
भाद्र.	कृ.	५	शु.	अग.	२७	अश्वि.	भौमवेध, क्रां.सा.,
भाद्र.	शु.	४	शु.	सितं.	१०	चित्रा	लग्नाभाव,
भाद्र.	शु.	५	श.	सितं.	११	स्वा.	लग्नाभाव,
भाद्र.	शु.	६	र.	सितं.	१२	अनु.	केतुयुति अपरिहार्य,
भाद्र.	शु.	७	चं.	सितं.	१३	अनु.	केतुयुति अपरिहार्य,
भाद्र.	शु.	९	बु.	सितं.	१५	उ.षा.	मासान्त,
भाद्र.	शु.	१०	गु.	सितं.	१६	उ.षा.	संक्रान्ति, भद्रा,
भाद्र.	शु.	१०	गु.	सितं.	१६	श्रव.	संक्रान्ति, भद्रा,
भाद्र.	शु.	११	शु.	सितं.	१७	श्रव.	शनियुति अपरिहार्य,
भाद्र.	शु.	१५	चं.	सितं.	२०	उ.भा.	प्रोष्ठपदी श्राद्ध,

आश्विन कृष्ण (महालय श्राद्ध) पक्ष—२१ सितं. से ६ अक्तू., २०२१ ई. तक।

तिथि-वार				तारीख २०२१-२२ ई.		विवाह नक्षत्र	दोष
आश्वि.	शु.	१	गु.	अक्तू.	७	चित्रा	क्षीणचन्द्र, वैधृति,
आश्वि.	शु.	३	श.	अक्तू.	९	अनु.	केतुयुति अपरिहार्य,
आश्वि.	शु.	५	र.	अक्तू.	१०	अनु.	केतुयुति अपरिहार्य,
आश्वि.	शु.	९	गु.	अक्तू.	१४	श्रव.	शनियुति अपरिहार्य,
आश्वि.	शु.	१०	शु.	अक्तू.	१५	श्रव.	शनियुति अपरिहार्य,
आश्वि.	शु.	१०	शु.	अक्तू.	१५	धनि.	भुजंगपात,
आश्वि.	शु.	११	श.	अक्तू.	१६	धनि.	मासान्त, भद्रा, भुजंगपात,
कार्त्ति.	कृ.	४	र.	अक्तू.	२४	मृग.	परिघार्ध,
कार्त्ति.	कृ.	९	श.	अक्तू.	३०	मघा	शनिवेध,
कार्त्ति.	कृ.	१०	र.	अक्तू.	३१	मघा	भद्रा, क्रां.सा., शनिवेध
कार्त्ति.	कृ.	१२	मं.	नवं.	२	उ.फा.	वैधृति,
कार्त्ति.	कृ.	१२	मं.	नवं.	२	हस्त	वैधृति, क्षीणचन्द्र,
कार्त्ति.	शु.	१	शु.	नवं.	५	अनु.	केतुयुति अपरिहार्य,
कार्त्ति.	शु.	२	श.	नवं.	६	अनु.	केतुयुति अपरिहार्य,
कार्त्ति.	शु.	५	मं.	नवं.	९	उ.षा.	भुजंगपात,
कार्त्ति.	शु.	६	बु.	नवं.	१०	उ.षा.	भुजंगपात,
कार्त्ति.	शु.	६	बु.	नवं.	१०	श्रव.	शनियुति अपरिहार्य,
कार्त्ति.	शु.	७	गु.	नवं.	११	श्रव.	भद्रा, शनियुति अपरिहार्य,
कार्त्ति.	शु.	१२	चं.	नवं.	१५	उ.भा.	मासान्त,
कार्त्ति.	शु.	१२	चं.	नवं.	१५	रेव.	मासान्त,
कार्त्ति.	शु.	१२	मं.	नवं.	१६	रेव.	संक्रान्ति,
कार्त्ति.	शु.	१२	मं.	नवं.	१६	अश्वि.	संक्रान्ति,
कार्त्ति.	शु.	१३	बु.	नवं.	१७	अश्वि.	व्यतीपात, मृत्युबाण,
कार्त्ति.	शु.	१५	शु.	नवं.	१९	रोहि.	लग्नाभाव,
मार्ग.	कृ.	२	र.	नवं.	२१	रोहि.	लग्नाभाव,
मार्ग.	कृ.	७	शु.	नवं.	२६	मघा	शनिवेध,
मार्ग.	कृ.	८	श.	नवं.	२७	मघा	शनिवेध,
मार्ग.	कृ.	१०	चं.	नवं.	२९	हस्त	लग्नाभाव,
मार्ग.	शु.	१	र.	दिसं.	५	मूल	भुजंगपात,
मार्ग.	शु.	४	मं.	दिसं.	७	श्रव.	शनियुति अपरिहार्य,
मार्ग.	शु.	५	बु.	दिसं.	८	श्रव.	शनियुति अपरिहार्य,
मार्ग.	शु.	९	र.	दिसं.	१२	उ.भा.	व्यतीपात,
मार्ग.	शु.	९	र.	दिसं.	१२	रेव.	लग्नाभाव,

तिथि-वार				तारीख २०२२ ई.		विवाह नक्षत्र	दोष
मार्ग.	शु.	११	मं.	दिसं.	१४	अश्वि.	मासान्त, परिघार्ध, भद्रा,

मार्ग. शु. १२ बु. से पौष शु. ११ गु. (१५ दिसं., २०२१ से १३ जन., २०२२ ई.) तक सूर्य धनुःस्थ रहेगा। इसी अवधि में ३ से १४ जन. (२०२२ ई.) तक शुक्र-वार्धक्य, अस्त एवं बाल्यदोष।

तिथि-वार				तारीख २०२२ ई.		विवाह नक्षत्र	दोष
पौष	शु.	१३	श.	जन.	१५	मृग.	सूर्यवेध,
माघ	कृ.	२	गु.	जन.	२०	मघा	शनिवेध,
माघ	कृ.	३	शु.	जन.	२१	मघा	शनिवेध,
माघ	कृ.	७	मं.	जन.	२५	स्वा.	भुजंगपात,
माघ	कृ.	९	बु.	जन.	२६	स्वा.	भुजंगपात,
माघ	कृ.	१०	गु.	जन.	२७	अनु.	केतुयुति अपरिहार्य,
माघ	कृ.	११	शु.	जन.	२८	मूल	भौमयुति अपरिहार्य,
माघ	कृ.	१२	श.	जन.	२९	मूल	भौमयुति अपरिहार्य,
माघ	शु.	१	बु.	फर.	२	धनि.	मृत्युबाण,
माघ	शु.	४	शु.	फर.	४	उ.भा.	लग्नाभाव,
माघ	शु.	९	गु.	फर.	१०	मृग.	वैधृति,
माघ	शु.	१०	शु.	फर.	११	मृग.	वैधृति, मासान्त,
माघ	शु.	१५	बु.	फर.	१६	मघा	शनिवेध,
फाल्गु.	कृ.	१	गु.	फर.	१७	मघा	शनिवेध,
फाल्गु.	कृ.	३	श.	फर.	१९	हस्त	भुजंगपात,
फाल्गु.	कृ.	४	र.	फर.	२०	हस्त	भुजंगपात,

गुरु अस्त—फाल्गुन कृ. ५ चं से चैत्र कृ. ११ चं. (२१ फर. से २८ मार्च, २०२२ ई.) तक गुरु-वार्धक्य, अस्त एवं बाल्यदोष।

होलाष्टक—१० से १८ मार्च, २०२२ ई. तक।

मीनस्थ रवि—फाल्गु. शु. ११ चं. (१४ मार्च, २०२२ ई.) से वर्षान्त तक।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मुण्डनादि अन्य मुहूर्त्त (सं. २०७८ वि.) (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

(मुण्डन, उपनयन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश आदि के शुद्ध मुहूर्त्त प्रतिवर्ष इतने कम क्यों होते हैं?)

मुण्डनादि इन मुहूर्त्तों के शोधन में हम भद्रा, क्रूरग्रहयुति, क्रूरग्रहवेध, क्रान्तिसाम्य, कलशचक्रदोष, वृषवास्तुचक्रदोष, व्यतीपात, अतिगण्ड आदि योग तथा अन्य मुहूर्त्तशास्त्रोक्त निरवशेष निषिद्ध पदार्थों का पूरी तरह विचार कर शुद्धकाल का निर्णय करते हैं, जिससे कई बार तो इनके शुद्ध मुहूर्त्त वर्ष में असह्यरूप से कम (एक-एक या दो-दो भी) हो जाते हैं। सर्वथा दोषमुक्त शास्त्रीय मुहूर्त्तसाधन के आग्रह के कारण इन मुहूर्त्तों की संख्या हमारे पंचांग में अन्य पंचांगों से, जिनके सम्पादक इन विचार्य विषयों की उपेक्षा करके मुहूर्त्तों की संख्या बढ़ाने की शास्त्रविरुद्ध प्रवृत्ति लिये हैं; काफी कम होती है। विश्वास रखिये, हमारे 'मार्त्तण्ड पंचांग' में दिये गये शुद्ध मुहूर्त्तों के अतिरिक्त जो मुहूर्त्त अन्य पंचांगों में आपको मिलते हैं, उनकी मुहूर्त्तशास्त्रीय शुद्धता वस्तुत: विचारणीय है। **ध्यान रहे**—मुण्डनादि इन मुहूर्त्तों के शोधन में हमने केवल शुद्धकाल का निर्णय किया है, शुद्ध लग्नों का नहीं। अत: दैवज्ञों को चाहिए कि—आवश्यक मुहूर्त्त के लिए दिये गये शुद्धकाल की अवधि में गुरु, शुक्र, बुध, सूर्य एवं लग्नेश आदि की शुभस्थानों में स्थिति को ध्यान में रखते हुए बलवान् लग्न का वे स्वयं निर्णय करें। यदि शुद्ध काल के समय 'अभिजित्-मुहूर्त्त' भी उपलब्ध हो तो शुभकार्य के लिए लग्न के स्थान पर 'अभिजित्-मुहूर्त्त' का प्रयोग करना चाहिए; क्योंकि 'अभिजित्-मुहूर्त्त' में बलवान् लग्न की शक्ति मानी गयी है।

मुण्डन-मुहूर्त्त (सन् २०२१-२२ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. ९ बु.	मई ५	शत.	१३/२२ बाद,
वैशा. शु. ५ चं.	मई १७	पुन.	११/३५ तक,
वैशा. शु. १३ चं.	मई २४	स्वा.	११/१२ बाद,
माघ कृ. ११ शु.	जन. २८	ज्ये.	
माघ शु. १ बु.	फर. २	धनि.	८/३१ बाद,
माघ शु. ३ गु.	फर. ३	शत.	१०/३७ से १६/३४ तक,
माघ शु. ७ चं.	फर. ७	अश्वि.	
माघ शु. १३ चं.	फर. १४	पुन.	११/५२ तक,
माघ शु. १३ चं.	फर. १४	पुष्य	११/५२ बाद,

मुण्डन में विशेष—किसी देवस्थल/तीर्थ पर बिना मुहूर्त्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों (देवी-मन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हिमाचल आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

अक्षरारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०२१-२२ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. ३ गु.	अप्रै. २९	अनु.	११/४७ तक,
वैशा. शु. ५ चं.	मई १७	पुन.	१३/२१ तक,
माघ कृ. ६ चं.	जन. २४	हस्त	८/४४ तक,
माघ कृ. ११ शु.	जन. २८	ज्ये.	

विद्यारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०२१-२२ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. १० गु.	अप्रै. २२	आश्ले.	८/१५ तक,
वैशा. कृ. ३ गु.	अप्रै. २९	अनु.	११/४७ तक,
वैशा. कृ. ६ र.	मई २	उ.षा.	८/५९ से १४/५० तक,
वैशा. कृ. ९ बु.	मई ५	शत.	१३/२२ बाद,
वैशा. कृ. १० गु.	मई ६	पू.भा.	१४/११ बाद,
वैशा. शु. ४ र.	मई १६	आर्द्रा	१०/१ से ११/१३ तक,
वैशा. शु. ४ र.	मई १६	पुन.	११/१३ बाद,
वैशा. शु. ५ चं.	मई १७	पुन.	१३/२१ तक,
वैशा. शु. ९ शु.	मई २१	पू.फा.	११/११ से १५/२२ तक,
वैशा. शु. ९ शु.	मई २१	उ.फा.	१५/२२ बाद,
वैशा. शु. ११ र.	मई २३	हस्त	६/४३ से १२/१२ तक,
वैशा. शु. ११ र.	मई २३	चित्रा	१२/१२ से १४/५६ तक,
ज्ये. कृ. ५ र.	मई ३०	उ.षा.	१६/४१ तक, (बुध-शुक्र पादवेधविचार्य)
ज्ये. कृ. १० शु.	जून ४	उ.भा.	१५/१५ तक,
ज्ये. कृ. ११ र.	जून ६	अश्वि.	
ज्ये. शु. ३ र.	जून १३	पुन.	११/० तक,
ज्ये. शु. १० र.	जून २०	चित्रा	१०/३१ से १८/४१ तक,
माघ कृ. ५ र.	जन. २३	उ.फा.	११/१ तक,
माघ कृ. ५ र.	जन. २३	हस्त	११/१ बाद,
माघ कृ. ६ चं.	जन. २४	हस्त	८/४४ तक,
माघ शु. १ बु.	फर. २	धनि.	८/३१ बाद,
माघ शु. ३ गु.	फर. ३	शत.	१०/३७ से १६/३४ तक,
माघ शु. ६ र.	फर. ६	रेव.	१७/१ तक,
माघ शु. ९ गु.	फर. १०	रोहि.	११/८ बाद,
माघ शु. १२ र.	फर. १३	पुन.	९/२७ बाद,
फाल्गु. कृ. २ शु.	फर. १८	पू.फा.	१६/४१ तक,
फाल्गु. कृ. २ शु.	फर. १८	उ.फा.	१६/४१ बाद,

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग—बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवाने के लिए अक्षरारम्भ के और संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, रसायन आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग करना चाहिए।

द्विरागमन-मुहूर्त्त (सन् २०२१-२२ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
मार्ग. शु. ६ गु.	दिसं. ९	शत.	२१/५० बाद,
मार्ग. शु. ७ शु.	दिसं. १०	शत.	८/२१ तक, ९/३३ से ११/१ तक,
मार्ग. शु. १० चं.	दिसं. १३	रेव.	२६/४ तक,
माघ शु. १३ चं.	फर. १४	पुन.	११/५२ तक,
माघ शु. १३ चं.	फर. १४	पुष्य	११/५२ से २०/२८ तक,

द्विरागमन में विशेष—विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के इन मुहूर्त्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहिता वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो तो अच्छा माना जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उपनयन-मुहूर्त्त (सन् २०२१-२२ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. १० गु.	अप्रै. २२	आश्ले.	६/५६ तक, (६/५६ बाद रोगबाण),
वैशा. कृ. ३ गु.	अप्रै. २९	अनु.	११/४७ तक,
वैशा. शु. ४ र.	मई १६	आर्द्रा	१०/१ से ११/१३ तक,
वैशा. शु. ४ र.	मई १६	पुन.	११/१३ बाद,
वैशा. शु. ५ चं.	मई १७	पुन.	११/३५ तक,
वैशा. शु. ९ शु.	मई २१	पू.फा.	११/११ बाद,
ज्ये. कृ. ५ र.	मई ३०	उ.षा.	(बु.शु. पादवेधविचार्य),
ज्ये. शु. ३ र.	जून १३	पुन.	
ज्ये. शु. १० र.	जून २०	चित्रा	१०/३१ बाद,
माघ शु. १ बु.	फर. २	धनि.	८/३१ बाद,
माघ शु. ३ गु.	फर. ३	शत.	१०/३७ बाद,
माघ शु. ९ गु.	फर. १०	रोहि.	११/८ बाद,
फाल्गु. कृ. २ शु.	फर. १८	पू.फा.	

उपनयन संस्कार पूर्वाह्णकाल में ही करने की शास्त्राज्ञा है। मध्याह्नकाल इसके लिए सामान्य माना जाता है। अपराह्णकाल में उपनयन संस्कार करने का निषेध है। **"त्रेधाविभक्तदिनमानस्य प्रथमोभागः पूर्वाह्णः।"**

गृहारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०२१ ई.)

वैशा कृ. ३ गु.	अप्रै. २९	अनु.	११/४७ तक,
*वैशा. कृ. ७ चं.	मई ३	उ.षा.	८/२२ तक,
*वैशा. कृ. १२ श.	मई ८	उ.भा.	१४/४६ तक,
*वैशा. शु. ३ श.	मई १५	मृग.	८/० तक,
वैशा. शु. ९ शु.	मई २१	उ.फा.	१५/२२ बाद,

गृहारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०२१-२२ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. १० श.	मई २२	उ.फा.	१४/५ तक,
वैशा. शु. १० श.	मई २२	हस्त	१४/५ बाद,
वैशा. शु. १३ चं.	मई २४	स्वा.	११/१२ बाद,
वैशा. शु. १५ बु.	मई २६	अनु.	६/३७ से ९/४५ तक,
श्राव. कृ. ३ चं.	जुला. २६	धनि.	१०/२६ तक,
श्राव. कृ. ३ चं.	जुला. २६	शत.	१०/२६ से १५/२९ तक
*श्राव. कृ. ६ गु.	जुला. २९	रेव.	१२/२ बाद,
*श्राव. कृ. ११ बु.	अग. ४	मृग.	
*श्राव. शु. ३ बु.	अग. ११	उ.फा.	९/३१ से १६/५४ तक,
*श्राव. शु. ६ श.	अग. १४	चित्रा	६/५६ तक,
*कार्त्ति. कृ. ५ चं.	अक्तू. २५	मृग.	१२/४ बाद,
*कार्त्ति. कृ. ७ गु.	अक्तू. २८	पुष्य	९/४१ से १४/५ तक, (१४/५ बाद अग्निबाण),
*कार्त्ति. कृ. ११ चं.	नवं. १	उ.फा.	१२/५२ बाद,
*कार्त्ति. शु. ६ बु.	नवं. १०	उ.षा.	९/९ तक, ११/३३ से १५/४१ तक,
मार्ग. कृ. १ श.	नवं. २०	रोहि.	
मार्ग. कृ. ३ चं.	नवं. २२	मृग.	९/७ तक,
*मार्ग. कृ. १० चं.	नवं. २९	उ.फा.	१६/५२ तक,
*मार्ग. कृ. १२ बु.	दिसं. १	चित्रा	
मार्ग. शु. १० चं.	दिसं. १३	रेव.	
*माघ कृ. ६ चं.	जन. २४	हस्त	८/४४ तक,
*माघ शु. १ बु.	फर. २	धनि.	८/३१ से १७/५२ तक,
*माघ शु. ५ श.	फर. ५	रेव.	१६/८ बाद,
माघ शु. १३ चं.	फर. १४	पुष्य	११/५२ बाद,
फाल्गु. कृ. ३ श.	फर. १९	उ.फा.	१०/३ तक,

*(तारा) अंकित मुहूर्त्तों में केवल वृष-वास्तुचक्र शुद्धि नहीं है, अन्यथा ये मुहूर्त्त सर्वथा शुद्ध हैं।

नूतन गृहप्रवेश-मुहूर्त्त (सन् २०२१-२२ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
*वैशा. कृ. ३ गु.	अप्रै. २९	अनु.	११/४७ तक,
*वैशा. कृ. ७ चं.	मई ३	उ.षा.	८/२२ तक,
वैशा. कृ. १२ श.	मई ८	उ.भा.	१४/४६ तक,
वैशा. कृ. १२ श.	मई ८	रेव.	१४/४६ बाद,
*वैशा. शु. ३ श.	मई १५	मृग.	८/० तक,
वैशा. शु. ९ शु.	मई २१	उ.फा.	१५/२२ बाद,
वैशा. शु. १० श.	मई २२	उ.फा.	१४/५ तक,
*वैशा. शु. १५ बु.	मई २६	अनु.	६/३७ बाद,
ज्ये. कृ. १० शु.	जून ४	उ.भा.	१५/१५ तक,
ज्ये. कृ. ११ श.	जून ५	रेव.	
*ज्ये. शु. १ शु.	जून ११	मृग.	८/३७ तक, ११/१ से १४/३० तक,
*माघ कृ. ४ श.	जन. २२	उ.फा.	१०/३८ से १४/६ तक,
*माघ शु. ५ श.	फर. ५	उ.भा.	१६/८ तक,
माघ शु. ५ श.	फर. ५	रेव.	१६/८ बाद,
माघ शु. ९ गु.	फर. १०	रोहि.	११/८ बाद,

*(तारा) अंकित मुहूर्त्तों में कलशचक्र-शुद्धि नहीं है, अन्यथा ये निर्दोष हैं।

सर्वदेव प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त (सन् २०२१ ई.)
(उत्तरायणकाल)

चैत्र शु. १२ श.	अप्रै. २४	उ.फा.	६/२२ से ११/४१ तक,
चैत्र शु. १३ र.	अप्रै. २५	हस्त	
वैशा. कृ. ३ गु.	अप्रै. २९	अनु.	११/४७ तक,
वैशा. कृ. ६ र.	मई २	उ.षा.	८/५९ बाद,
वैशा. कृ. ७ चं.	मई ३	उ.षा.	८/२२ तक,
वैशा. कृ. १२ श.	मई ८	उ.भा.	
वैशा. कृ. १३ र.	मई ९	रेव.	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्वदेव प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त (सन् २०२१-२२ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
(उत्तरायणकाल)			
वैशा. शु. ३ श.	मई १५	मृग.	८/३८ तक,
वैशा. शु. ५ चं.	मई १७	पुन.	
वैशा. शु. १० श.	मई २२	उ.फा.	
वैशा. शु. ११ र.	मई २३	हस्त	६/४३ बाद,
वैशा. शु. १५ बु.	मई २६	अनु.	६/३७ बाद,
ज्ये. कृ. ५ र.	मई ३०	उ.षा.	(बु.शु. पादवेधविचार्य),
ज्ये. कृ. ८ बु.	जून २	शत.	
ज्ये. कृ. १० शु.	जून ४	उ.भा.	
ज्ये. कृ. ११ श.	जून ५	रेव.	
ज्ये. कृ. ११ र.	जून ६	अश्वि.	
ज्ये. शु. १ शु.	जून ११	मृग.	८/३७ तक,
ज्ये. शु. ३ र.	जून १३	पुन.	
माघ कृ. ५ र.	जन. २३	उ.फा.	
माघ कृ. ६ चं.	जन. २४	हस्त	८/४४ तक,
माघ शु. १ बु.	फर. २	धनि.	
माघ शु. ५ श.	फर. ५	उ.भा.	
माघ शु. ६ र.	फर. ६	रेव.	
माघ शु. ७ चं.	फर. ७	अश्वि.	
माघ शु. १२ र.	फर. १३	पुन.	९/२७ बाद,
माघ शु. १३ चं.	फर. १४	पुन.	
फाल्गु. कृ. ३ श.	फर. १९	उ.फा.	१०/१३ तक,

तामसदेव प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त (सन् २०२१ ई.)

(दक्षिणायनकाल)			
आषा. कृ. २ श.	जून २६	उ.षा.	
आषा. कृ. ७ गु.	जुला. १	उ.भा.	
आषा. कृ. ८ शु.	जुला. २	रेव.	
आषा. कृ. १० र.	जुला. ४	अश्वि.	६/४३ तक,

तामसदेव प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त (सन् २०२१ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
(दक्षिणायनकाल)			
आषा. शु. १ र.	जुला. ११	पुष्य	
मार्ग. कृ. १ श.	नवं. २०	रोहि.	
मार्ग. कृ. २ र.	नवं. २१	रोहि.	७/३५ तक,
मार्ग. कृ. २ र.	नवं. २१	मृग.	७/३५ बाद,
मार्ग. कृ. ३ चं.	नवं. २२	मृग.	९/७ तक,
मार्ग. कृ. ५ बु.	नवं. २४	पुन.	
मार्ग. कृ. ६ गु.	नवं. २५	पुष्य	
मार्ग. कृ. १० चं.	नवं. २९	उ.फा.	
मार्ग. कृ. १२ बु.	दिसं. १	चित्रा	
मार्ग. कृ. १३ गु.	दिसं. २	स्वा.	
मार्ग. शु. ७ शु.	दिसं. १०	शत.	८/२१ तक, ९/३३ से १०/३४ तक,
मार्ग. शु. १० चं.	दिसं. १३	रेव.	

देवप्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्त्तों के बारे में स्पष्टीकरण

श्री विष्णु, राम, कृष्ण, शिव, गणेश, गौरी आदि सात्त्विक देवता हैं, इसलिए इनकी प्रतिष्ठा यद्यपि उपरोक्त "सात्त्विक देवप्रतिष्ठा" वाले मुहूर्त्तों में हो सकती है, फिर भी मुहूर्त्तशास्त्रों में इनकी प्रतिष्ठा के लिए विशेष मुहूर्त्तकाल बताए गए हैं, जिनका निर्देश हमने यहां अलग से किया है। यहां यह समझ लेना चाहिए कि— सात्त्विक देवप्रतिष्ठा वाले मुहूर्त्त श्री विष्णु, राम, कृष्ण, गणेश, शिव, सरस्वती आदि सभी सत्त्वप्रधान प्रकृति वाले देवी-देवताओं के लिए समानरूप से प्रयोग में लाये जा सकते हैं, जबकि श्री गणेश, दुर्गा, गौरी, शिव आदि देवी-देवताओं के लिए यहां पृथक् रूप से लिखे गए प्रतिष्ठामुहूर्त्त केवल इन्हीं के लिए हैं। सभी देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्णकाल में (मध्याह्न से पूर्व) ही की जाती है— "पूर्वाह्ण एव प्रतिष्ठाकालः।"

विपणि-मुहूर्त्त (सन् २०२१ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. १२ श.	अप्रै. २४	उ.फा.	६/२२ से ११/४१ तक, १५/१७ बाद,
चैत्र शु. १३ र.	अप्रै. २५	हस्त	१६/१३ तक,
वैशा. कृ. ३ गु.	अप्रै. २९	अनु.	११/४७ तक,
वैशा. कृ. ६ र.	मई २	उ.षा.	८/५९ से १४/५० तक,
वैशा. कृ. ७ चं.	मई ३	उ.षा.	८/२२ तक,
वैशा. कृ. १२ श.	मई ८	उ.भा.	१४/४६ तक,
वैशा. कृ. १२ श.	मई ८	रेव.	१४/४६ बाद,
वैशा. कृ. १३ र.	मई ९	रेव.	१७/२८ तक,
वैशा. शु. ३ श.	मई १५	मृग.	८/३८ तक,
वैशा. शु. १० श.	मई २२	उ.फा.	१४/५ तक,
वैशा. शु. ११ र.	मई २३	हस्त	६/४३ से १२/१२ तक,
वैशा. शु. १५ बु.	मई २६	अनु.	६/३७ बाद,
ज्ये. कृ. ५ र.	मई ३०	उ.षा.	१६/४१ तक, (बु.शु. पादवेधविचार्य),
ज्ये. कृ. १० शु.	जून ४	उ.भा.	१५/१५ तक,
ज्ये. कृ. ११ श.	जून ५	रेव.	
ज्ये. कृ. ११ र.	जून ६	अश्वि.	
ज्ये. शु. १ शु.	जून ११	मृग.	८/३७ तक, ११/१ से १४/३० तक,
ज्ये. शु. १० र.	जून २०	चित्रा	१०/३१ बाद,
आषा. कृ. २ श.	जून २६	उ.षा.	
आषा. कृ. ७ गु.	जुला. १	उ.भा.	
आषा. कृ. ८ शु.	जुला. २	रेव.	१०/५२ तक, १३/१६ से १५/२९ तक,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विपणि-मुहूर्त्त (सन् २०२१-२२ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
आषा. कृ. १० र.	जुला. ४	अश्वि.	६/४३ तक,
आषा. कृ. १३ बु.	जुला. ७	रोहि.	१३/५२ बाद, (१३/५२ तक क्रां.सा.),
आषा. शु. १ र.	जुला. ११	पुष्य	१६/३० तक,
आषा. शु. ८ श.	जुला. १७	चित्रा	१५/३७ बाद,
आषा. शु. १५ श.	जुला. २४	उ.षा.	१२/४० तक,
श्राव. कृ. ५ बु.	जुला. २८	उ.भा.	१०/४५ बाद,
श्राव. कृ. ६ गु.	जुला. २९	उ.भा.	१२/२ तक,
श्राव. कृ. ६ गु.	जुला. २९	रेव.	१२/२ बाद,
श्राव. कृ. ८ श.	जुला. ३१	अश्वि.	१६/३७ तक, (शुक्र-पादवेध विचार्य),
श्राव. कृ. ११ बु.	अग. ४	मृग.	
श्राव. शु. ३ बु.	अग. ११	उ.फा.	९/३१ से १६/५४ तक,
श्राव. शु. ५ शु.	अग. १३	हस्त	७/५९ तक,
श्राव. शु. ५ शु.	अग. १३	चित्रा	७/५९ बाद,
श्राव. शु. १३ शु.	अग. २०	उ.षा.	
भाद्र. कृ. १० बु.	सितं. १	मृग.	१२/३४ तक,
भाद्र. कृ. १२ श.	सितं. ४	पुष्य	९/३७ तक,
आश्वि. शु. ८ बु.	अक्तू. १३	उ.षा.	१०/११ बाद,
आश्वि. शु. १५ बु.	अक्तू. २०	रेव.	७/४४ से १४/१ तक,
कार्त्ति. कृ. १ गु.	अक्तू. २१	अश्वि.	१६/१६ तक,
कार्त्ति. कृ. ५ चं.	अक्तू. २५	मृग.	१२/४ बाद,

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
कार्त्ति. कृ. ८ शु.	अक्तू. २९	पुष्य	११/३८ तक, (शुक्र'पादवेध विचार्य),
कार्त्ति. कृ. ११ चं.	नवं. १	उ.फा.	१२/५२ बाद,
कार्त्ति. कृ. १३ बु.	नवं. ३	हस्त	९/२ तक,
कार्त्ति. शु. ६ बु.	नवं. १०	उ.षा.	९/९ तक, ११/३३ से १५/४१ तक,
मार्ग. कृ. १ श.	नवं. २०	रोहि.	
मार्ग. कृ. २ र.	नवं. २१	रोहि.	७/३५ तक,
मार्ग. कृ. २ र.	नवं. २१	मृग.	७/३५ बाद,
मार्ग. कृ. ३ चं.	नवं. २२	मृग.	९/७ तक,
मार्ग. कृ. ६ गु.	नवं. २५	पुष्य	
मार्ग. कृ. १०, चं.	नवं. २९	उ.फा.	१६/५२ तक,
मार्ग. कृ. १२ बु.	दिसं. १	चित्रा	
मार्ग. शु. १० चं.	दिसं. १३	रेव.	
माघ कृ. ५ र.	जन. २३	उ.फा.	११/९ तक,
माघ कृ. ५ र.	जन. २३	हस्त	११/९ बाद,
माघ कृ. ६ चं.	जन. २४	हस्त	८/४४ तक,
माघ शु. ५ श.	फर. ५	उ.भा.	१६/८ तक,
माघ शु. ६ र.	फर. ६	रेव.	१७/९ तक,
माघ शु. ७ चं.	फर. ७	अश्वि.	
माघ शु. ९ गु.	फर. १०	रोहि.	११/८ बाद,
माघ शु. १३ चं.	फर. १४	पुष्य	११/५२ बाद,
फाल्गु. कृ. ३ श.	फर. १९	उ.फा.	१०/३ तक,

अभिजित् मुहूर्त्त

स्थानीय दिनमानार्ध के घं.मि. को स्थानीय सूर्योदयकाल में जोड़ने पर 'स्पष्ट दिनार्ध' होता है। दिनमान का 30वां भाग 'मुहूर्त्तार्ध' कहलाता है। मुहूर्त्तार्ध को स्पष्ट दिनार्ध में से घटाने और जोड़ने पर अभिजित् मुहूर्त्त का क्रमशः प्रारम्भ और समाप्तिकाल ज्ञात हो जाता है। इस काल में लगभग सभी दोषों को समाप्त कर डालने की अद्भुत शक्ति मानी गयी है। जब मुण्डन, अक्षराम्भ आदि मुहूर्त्तों में शुद्ध लग्न न मिल रहा हो, तब 'अभिजित् मुहूर्त्त' को प्रयोग में लाना चाहिए।

स्वयंसिद्ध मुहूर्त्त

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, अक्षय तृतीया, विजयादशमी, धनतेरस, दीपावली और वसन्त पंचमी—ये स्वयंसिद्ध मुहूर्त्त कहलाते हैं। **'स्वयंसिद्ध मुहूर्त्तों'** में भद्रा, व्यतीपात, क्षीणचन्द्र, गुरु-शुक्र अस्तादि दोषों का विचार नहीं किया जाता। ये मुहूर्त्त मुहूर्त्तशास्त्रीय विधि-निषेधों के बन्धन से सर्वथा मुक्त हैं। इनमें कोई भी शुभकृत्य किसी शास्त्रोक्त गुण-दोष को विचारे बिना यथेच्छकाल में करने की परम्परा है।

ध्यान रहे—'गोधूलि लग्न' भी मूलतः 'स्वयंसिद्ध मुहूर्त्त' ही है। 'ज्योतिर्विदाभरण' और 'विवाह पटल' आदि ग्रन्थों में इसके लिए तिथि, नक्षत्र, योग, लग्नादि सभी पदार्थों के विचार को सर्वथा उपेक्ष्य बतलाया गया है। 'सर्वार्थसिद्धि' आदि योग भी स्वयंसिद्ध मुहूर्त्तों की कोटि में आते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रीगणेश, शिव, गौरी, दुर्गा, विष्णु, कृष्ण, राम, भैरव, हनुमान्, स्कन्द, नाग और परशुराम की मूर्ति-प्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्त्त (सं. २०७८ वि.) (सन् २०२१-२२ ई.) (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

पृष्ठ-267 पर सर्वदेव एवं तामसदेवों की प्रतिष्ठा के मुहूर्त दिये गये हैं। यद्यपि इन श्रीगणेश आदि 12 देवों की प्रतिष्ठा उन मुहूर्तों में निःशंक की जा सकती है, पुनरपि मुहूर्त्तशास्त्र में इन देवों की प्रतिष्ठा इनकी अपनी-अपनी तिथियों, नक्षत्रों एवं वारों में भी करने का विशेष निर्देश है। तदनुसार हम यहां इन गणेशादि देवों की प्रतिष्ठा के मुहूर्त इनकी अपनी-अपनी तिथियों, नक्षत्रों, वारों के अनुसार भी साधित कर निर्दिष्ट करना हमने विगत वर्षों से प्रारम्भ किया है। श्रद्धालु लोग इन 12 देवों के इन अतिरिक्त प्रतिष्ठा-मुहूर्तों को भी अपेक्षानुसार उपयोग में ला सकते हैं। जान लीजिये—**गणेश की तिथि कृ. चतुर्थी, शिव की तिथि कृ. चतुर्दशी और नक्षत्र आर्द्रा, गौरी की तिथि शु. तृतीया, दुर्गा की तिथि शु. नवमी और नक्षत्र मूल, विष्णु की तिथि शु. द्वादशी और नक्षत्र श्रवण, कृष्ण की तिथि कृ. अष्टमी, राम की तिथि शु. नवमी, हनुमान् की तिथि कृ. चतुर्दशी और वार मंगल, स्कन्द की तिथि शु. षष्ठी, नाग की तिथि शु. पंचमी, भैरव की तिथि कृ. अष्टमी तथा परशुराम की तिथि शु. तृतीया है।** **ध्यान दें**—यहां इन सभी देवताओं की अपनी-अपनी तिथियां तो हैं, लेकिन अपना नक्षत्र कुछ ही देवताओं का है। **किञ्च**—अपना वार श्री हनुमान् जी का ही है। शेष देवताओं का कोई अपना वार भी नहीं है। **ध्यान दें**—कुछ नक्षत्र ऐसे भी हैं, जिनमें किसी भी देवता की प्रतिष्ठा की जा सकती है, जिनका प्रयोग हमने गत पृष्ठों पर **"सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्तों"** में किया है। यदि कहीं उन नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र हमें इन गणेशादि देवों के मुहूर्तकाल में प्राप्त हुआ है, उसका भी यहां हमने निर्देश नक्षत्र वाले कॉलम में किया है, अर्थात् उस नक्षत्र का यहां प्रयोग किया गया है।

यहां यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि—इन 12 देवताओं की प्रतिष्ठा के ये मुहूर्तकाल गत पृष्ठ पर दिये सर्वदेव और तामसदेवों के प्रतिष्ठा-मुहूर्तकालों की ही तरह युति, वेध, क्रान्तिसाम्य, गुरु-शुक्रास्त, भद्रा आदि सभी दोषों से सर्वथा मुक्त हैं। ये सर्वथा शुद्ध हैं। इन्हें निःशंक प्रयोग में लाइये। **अपि च**—दैवज्ञ को यह भी जान लेना चाहिए कि—देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्नकाल में (मध्याह्न से पूर्व) ही की जाती है। यहां **"शुद्धकाल"** वाले कॉलम में अनेकत्र शुद्धकाल नहीं दिया गया है।ऐसे स्थलों पर समझना चाहिए कि वहां प्रतिष्ठा के लिए पूरा पूर्वाह्न काल दोषमुक्त है।

श्रीगणेश-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. चतुर्थी)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. कृ. ३ श.	मई २९		६/३४ बाद,
माघ कृ. ३ शु.	जन. २१		८/५२ बाद,

श्रीगौरी-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ३)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ३ श.	मई १५	मृग.	८/० तक,
ज्ये. शु. ३ र.	जून १३	पुन.	

श्रीशिव-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. १४, आर्द्रा)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. १४ चं.	मई १०	अश्वि.	८/४३ बाद,
ज्ये. कृ. १४ बु.	जून ९	रोहि.	८/४४ बाद, (राहुयुति-परिहार),
माघ कृ. १४ चं.	जन. ३१	उ.षा.	

श्रीस्कन्द-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ६)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. शु. ६ बु.	जून १६		८/७ तक, ९/१९ से १०/० तक,
माघ शु. ६ र.	फर. ६	रेव.	

श्रीराम-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ९)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ९ शु.	मई २१		११/११ तक,
ज्ये. शु. ९ श.	जून १९	हस्त	
माघ शु. ९ गु.	फर. १०	रोहि.	११/८ तक,

श्रीहनुमान्-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. १४, मंगल)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. १४ चं.	मई १०	अश्वि.	८/४३ बाद,
ज्ये. कृ. १४ बु.	जून ९	रोहि.	८/४४ बाद, (राहुयुति-परिहार),
माघ कृ. १४ चं.	जन. ३१	उ.षा.	

श्रीदुर्गा-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ९, मूल)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ९ शु.	मई २१		११/११ तक,
ज्ये. शु. ९ श.	जून १९	हस्त	
माघ शु. ९ गु.	फर. १०	रोहि.	११/८ तक,

श्रीभैरव-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. ८)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. ८ मं.	मई ४	धनि.	८/२६ बाद,
ज्ये. कृ. ८ बु.	जून २	शत.	
आषा. कृ. ८ शु.	जुला. २	रेव.	
मार्ग. कृ. ८ श.	नवं. २७		७/३६ तक, (श्रीभैरवाष्टमी)
माघ कृ. ७ मं.	जन. २५	चित्रा	७/४९ से ९/१२ तक,

श्रीनाग-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ५)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ५ चं.	मई १७	पुन.	(भौमयुति-परिहार),
माघ शु. ५ श.	फर. ५	उ.भा.	

श्रीपरशुराम-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ३)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ३ श.	मई १५	मृग.	८/० तक,
ज्ये. शु. ३ र.	जून १३	पुन.	

श्रीकृष्ण-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. ८)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. ८ मं.	मई ४	धनि.	८/२६ बाद,
ज्ये कृ. ८ बु.	जून २	शत.	
माघ कृ. ७ मं.	जन. २५	चित्रा	७/४९ से ९/१२ तक,

श्रीविष्णु-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. १२, श्रवण)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. १२ श.	अप्रै. २४	उ.फा.	६/२२ से १०/९ तक,
वैशा. शु. ११ र.	मई २३	हस्त	६/४३ बाद,
माघ शु. १२ र.	फर. १३	पुन.	९/२७ बाद,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्वार्थसिद्धि आदि योग (सं. २०७८ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

इन सर्वार्थसिद्धि योग, रवियोग आदि के प्रारम्भ-समाप्तिकालों के साधन में श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय—कुराली (पं.) के सुयोग्य कार्यकर्त्ता श्रीकृष्ण शर्मा, शास्त्री, M.A., साहित्याचार्य, वेदाचार्य द्वारा पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। तदर्थ मेरा इन्हें सधन्यवाद आशीर्वाद है।—प्रियव्रत शर्मा

इस स्तम्भ के अन्तर्गत हम पाठकों की सुविधा के लिए सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, सिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर एव रवि—इन तिथि-भ-वार से बनने वाले एवं सूर्य और चन्द्र के नक्षत्र-संयोग से उत्पन्न सुयोगों के शास्त्रोक्त काल का सूक्ष्म निर्णय करते हैं। अत्यन्त शीघ्रता की स्थिति में किसी भी शुभकार्य को सम्पन्न करने के लिए यदि गुरु-शुक्रास्त आदि दोषों के कारण शुभ (शुद्ध) समय न मिल पा रहा हो तो वहां इन शुभ (सर्वार्थसिद्धि आदि) योगों का प्रश्रय लेना चाहिए—ऐसी शास्त्राज्ञा है। अत: इन सुयोगों के काल में आप किसी भी शुभकार्य को नि:संकोच सम्पन्न कर सकते हैं। ध्यान रहे—इन सुयोगों के कालनिर्णय में भद्रा, गुरु-शुक्रास्तादि दोषों का विचार नहीं होता।

सर्वार्थसिद्धि एवं अमृतसिद्धि योग—जैसा कि इनके नाम से ही स्पष्ट है, इन योगों के समय कोई भी शुभ कार्य किया जाये तो वह सफल होता है। यात्रा, गृहप्रवेश, नूतन-कार्यारम्भ आदि सभी कार्यों के लिए शीघ्रता या अन्य किसी अपरिहार्य कारणवश गुरु-शुक्रास्त आदि का विचार असम्भव होने पर इन सर्वार्थसिद्धि आदि सुयोगों का आश्रय लेना चाहिए। **यहां ब्रैकेटों (Brackets) में दिये गये अमृतसिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष फलदायक माने गये हैं।** ये योग (अमृतसिद्धि संज्ञक सर्वार्थसिद्धि योग) जिन-जिन वारों में घटित हुए हैं, उनका निर्देश भी हमने यहां साथ-साथ कर दिया है। **ध्यान रहे—गुरुवार वाले अमृतसिद्धि योगों (जिन्हें गुरुपुष्यामृत योग भी कहा जाता है) के समय विवाह, मंगलवार वाले अमृतसिद्धि योगों के समय नये घर में प्रवेश तथा शनिवार वाले अमृतसिद्धि योगों के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए। शेष सभी कार्यों के लिए इन्हें नि:संकोच प्रयोग में लाइये।**

रवियोग—रवियोग भी सर्वार्थसिद्धि योगों की भांति ही सभी कार्यों के लिए शुभ माने जाते हैं। रवियोग सभी बुरे योगों को नष्ट करने की अद्‌भुत शक्ति रखता है—**"कुयोगविध्वंस-करा: शुभेषु।"**

सिद्धियोग—सिद्धियोग भी **सर्वार्थसिद्धि** और **रवियोगों** की भांति ही प्रत्येक कार्य के लिए महत्त्वशाली एवं शुभ माने गये हैं। सिद्धियोग में **यमघण्ट, विष** आदि कुयोगों का प्रभाव प्राय: समाप्त हो जाता है—ऐसा शास्त्रनिर्देश है।

त्रिपुष्करयोग—मुहूर्त्तविदों का कथन है कि—इस योग में सम्पन्न किया गया या घटित कोई शुभकार्य अथवा कोई शुभाशुभ घटना कालान्तर में त्रिगुणित (तीन गुणा) हो जाती है। इसमें बहुमूल्य वस्तुओं (आभूषण, भूमि, गाड़ी आदि) का क्रय (खरीदना) त्रिगुणकारी माना जाता है। **द्विपुष्करयोग**—ये योग त्रिपुष्करयोगों की ही भांति शुभाशुभ सभी घटनाओं को द्विगुणित (दो गुना) करते हैं। त्रिपुष्कर एवं द्विपुष्कर—इन सुयोगों का सत्यापक शास्त्रवचन इस तरह है—**"त्रिपुष्करस्त्रिगुणदो द्विगुणो यमलांघ्रिभे।"**

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०२१ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२१ ई.	घं.	मि.	२०२१ ई.	घं.	मि.
(अप्रै. १३	सू.	उ.	अप्रै. १३	१४	१९)मं
अप्रैल १४	१७	२३	अप्रैल १५	सू.	उ.
अप्रैल २३	७	४२	अप्रैल २४	सू.	उ.
(अप्रै. २५	सू.	उ.	अप्रै. २६	१	५४)र.
(अप्रै. २८	१७	१३	अप्रै. २९	सू.	उ.)बु
अप्रैल २९	सू.	उ.	अप्रैल २९	१४	२९
मई २	९	०	मई ३	सू.	उ.
मई ३	८	२३	मई ४	सू.	उ.
मई ९	१७	२९	मई १०	सू.	उ.

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२१ ई.	घं.	मि.	२०२१ ई.	घं.	मि.
मई ११	२३	३२	मई १३	सू.	उ.
मई १७	१३	२२	मई १८	सू.	उ.
मई १८	१४	५६	मई १९	सू.	उ.
मई २१	सू.	उ.	मई २१	१५	२२
(मई २३	सू.	उ.	मई २३	१२	१२)र.
(मई २६	सू.	उ.	मई २७	१	१५)बु
मई ३०	सू.	उ.	मई ३०	१६	४१
मई ३१	सू.	उ.	मई ३१	१६	९
जून ४	२०	४८	जून ५	४	८

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२१ ई.	घं.	मि.	२०२१ ई.	घं.	मि.
(जून ५	४	९	जून ५	सू.	उ.)शु
जून ६	सू.	उ.	जून ७	२	२७
जून ८	५	३६	जून १०	सू.	उ.
जून १३	१९	९	जून १४	२०	३६
जून १५	सू.	उ.	जून १५	२१	४२
(जून २३	सू.	उ.	जून २३	११	४८)बु
जून २७	२	३७	जून २७	सू.	उ.
जुला. २	३	५०	जुला. २	सू.	उ.
(जुला. २	सू.	उ.	जुला. ३	सू.	उ.)शु

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२१ ई.	घं.	मि.	२०२१ ई.	घं.	मि.
जुला. ४	सू.	उ.	जुला. ४	९	५
जुला. ६	सू.	उ.	जुला. ६	१५	२०
जुला. ७	सू.	उ.	जुला. ८	सू.	उ.
जुला. ९	२३	१५	जुला. १०	सू.	उ.
जुला. ११	सू.	उ.	जुला. १२	२	२१
जुला. १८	१	३३	जुला. १८	सू.	उ.
जुला. १९	२२	२८	जुला. २०	सू.	उ.
जुला. २४	१२	४१	जुला. २५	सू.	उ.
जुला. २९	१२	३	जुला. ३०	सू.	उ.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०२१-२२ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ २०२१ ई.	घं.	मि.	समाप्त २०२१ ई.	घं.	मि.
(जुला. ३०	सू.	उ.	जुला. ३०	१४	२)शु.
जुला. ३०	१४	३	जुला. ३१	सू.	उ.
अग. २	२२	४४	अग. ३	सू.	उ.
अग. ४	सू.	उ.	अग. ५	४	२४
अग. ६	६	३८	अग. ७	सू.	उ.
अग. ८	सू.	उ.	अग. ८	९	१९
अग. १४	६	५७	अग. १५	५	४४
अग. १६	सू.	उ.	अग. १७	३	२
अग. २०	२१	२५	अग. २१	२०	२१
अग. २४	१९	४८	अग. २५	सू.	उ.
अग. २६	सू.	उ.	अग. २८	०	४७
अग. ३०	६	३९	अग. ३१	सू.	उ.
सितं. १	सू.	उ.	सितं. १	१२	३४
सितं. २	१४	५८	सितं. ३	१६	४१
सितं. ८	१५	५६	सितं. ९	सू.	उ.
सितं. ११	सू.	उ.	सितं. ११	११	२२
सितं. १३	सू.	उ.	सितं. १३	८	२३
सितं. १७	सू.	उ.	सितं. १८	३	३५
सितं. २१	सू.	उ.	सितं. २२	५	६
सितं. २३	सू.	उ.	सितं. २४	८	५३
सितं. २७	सू.	उ.	सितं. २७	१७	४१
(सितं. २७	१७	४२	सितं. २८	सू.	उ.)चं.
सितं. ३०	सू.	उ.	अक्तू. १	१	३३
(अक्तू. १	१	३४	अक्तू. १	सू.	उ.)गु.
अक्तू. ६	सू.	उ.	अक्तू. ६	२३	१९
अक्तू. १५	सू.	उ.	अक्तू. १५	९	१६
अक्तू. १९	सू.	उ.	अक्तू. १९	१२	१२
अक्तू. २१	सू.	उ.	अक्तू. २१	१६	१६
(अक्तू. २३	२१	५३	अक्तू. २४	सू.	उ.)श.
(अक्तू. २५	सू.	उ.	अक्तू. २६	४	१०)चं.
अक्तू. २८	सू.	उ.	अक्तू. २८	९	४१
(अक्तू. २८	९	४२	अक्तू. २९	सू.	उ.)गु.

प्रारम्भ २०२१ ई.	घं.	मि.	समाप्त २०२१ ई.	घं.	मि.
नवं. ३	सू.	उ.	नवं. ३	९	५८
नवं. ७	२१	५	नवं. ८	सू.	उ.
नवं. १४	१६	३२	नवं. १५	सू.	उ.
(नवं. १६	२०	१५	नवं. १७	सू.	उ.)मं.
(नवं. २०	सू.	उ.	नवं. २१	सू.	उ.)श.
(नवं. २२	सू.	उ.	नवं. २२	१०	४३)चं.
(नवं. २५	सू.	उ.	नवं. २५	१८	४९)गु.
नवं. २८	२२	६	नवं. २९	सू.	उ.
दिसं. ५	७	४८	दिसं. ६	४	५४
दिसं. १२	सू.	उ.	दिसं. १२	२३	५९
(दिसं. १४	सू.	उ.	दिसं. १५	४	४०)मं.
(दिसं. १८	सू.	उ.	दिसं. १८	१३	४८)श.
दिसं. २५	४	१०	दिसं. २५	सू.	उ.
दिसं. २६	सू.	उ.	दिसं. २७	५	२५
(दिसं. २७	५	२६	दिसं. २७	सू.	उ.)र.
दिसं. ३१	०	३५	दिसं. ३१	सू.	उ.
(सन् २०२२ ई.)					
जन. २	सू.	उ.	जन. २	१६	२३
जन. ११	सू.	उ.	जन. ११	११	९)मं.
जन. १२	१४	०	जन. १३	सू.	उ.
जन. १८	४	३८	जन. १८	सू.	उ.
जन. १९	६	४३	जन. १९	सू.	उ.
जन. २१	९	४३	जन. २२	सू.	उ.
जन. २३	सू.	उ.	जन. २३	११	९
(जन. २३	११	१०	जन. २४	सू.	उ.)र.
जन. २७	८	५२	जन. २८	७	१०
जन. ३१	०	२३	जन. ३१	सू.	उ.
जन. ३१	२१	५८	फर. १	सू.	उ.
फर. ६	१७	१०	फर. ७	सू.	उ.
फर. ८	२१	२८	फर. १०	सू.	उ.
फर. १४	११	५३	फर. १५	सू.	उ.

प्रारम्भ २०२२ ई.	घं.	मि.	समाप्त २०२२ ई.	घं.	मि.
फर. १५	१३	४९	फर. १६	सू.	उ.
फर. १८	सू.	उ.	फर. १८	१६	४१
(फर. २०	सू.	उ.	फर. २०	१६	४२)र.
(फर. २३	१४	४१	फर. २३	१६	५७)बु.
फर. २३	१६	५८	फर. २४	१३	३०
फर. २७	८	४९	फर. २८	सू.	उ.
फर. २८	७	३	मार्च १	५	१९
(मार्च ५	१	५२	मार्च ५	सू.	उ.)शु.
मार्च ६	सू.	उ.	मार्च ७	३	५०
मार्च ८	सू.	उ.	मार्च १०	सू.	उ.
मार्च १३	२०	६	मार्च १४	२२	७
मार्च १५	सू.	उ.	मार्च १५	२३	३२
(मार्च २३	सू.	उ.	मार्च २३	१८	५२)बु.
मार्च २७	सू.	उ.	मार्च २७	१३	३२
मार्च २८	सू.	उ.	मार्च २८	१२	२४
(अप्रै. १	१०	४०	अप्रै. २	सू.	उ.)शु.

रवियोग (सन् २०२१ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ २०२१ ई.	घं.	मि.	समाप्त २०२१ ई.	घं.	मि.
अप्रैल १५	२०	३३	अप्रैल १६	२३	३९
अप्रैल १८	२	३४	अप्रैल १९	५	१
अप्रैल २१	७	५९	अप्रैल २३	७	४१
अप्रैल २५	४	२४	अप्रैल २६	१	५४
मई २	९	०	मई ३	८	२२
मई १५	८	३९	मई १६	११	१३
मई १७	१३	२२	मई १८	१४	५५
मई २०	१५	५८	मई २२	१४	५
मई २४	९	५०	मई २५	७	५
मई २५	८	४६	मई २६	४	११
मई ३१	१६	२	जून १	१६	७
जून १३	१९	१	जून १४	२०	३६
जून १५	२१	४३	जून १६	२२	१४
जून १८	२१	३८	जून २०	१८	४९
जून २३	११	४९	जून २४	९	१०
जून ३०	१	२	जुलाई १	२	३
जुलाई १३	३	१५	जुलाई १४	३	४०
जुलाई १५	३	४३	जुलाई १६	३	२१
जुलाई १८	१	३३	जुलाई २०	२०	३२
जुलाई २२	१६	२६	जुलाई २३	१४	२५
जुलाई २९	१२	३	जुलाई ३०	१४	२
अग. ११	९	३२	अग. १२	८	५२
अग. १३	८	०	अग. १४	६	५६
अग. १६	४	२६	अग. १७	१	१६
अग. १७	३	३	अग. १९	०	७
अग. २०	२१	२५	अग. २१	२०	२१
अग. २८	०	४८	अग. २९	३	३४
सितं. ९	१४	३१	सितं. १०	१२	५७
सितं. ११	११	२३	सितं. १२	९	५०
सितं. १५	५	५६	सितं. १७	४	८
सितं. १९	३	२२	सितं. २०	३	२८
सितं. २६	१४	३३	सितं. २७	६	४१
सितं. २७	१७	४२	सितं. २८	२०	४४
अक्तू. ८	१९	०	अक्तू. ९	१६	४७
अक्तू. १०	१४	४५	अक्तू. १०	१९	३७
अक्तू. ११	१२	५६	अक्तू. १२	११	२६
अक्तू. १४	९	३६	अक्तू. १६	९	२१
अक्तू. १८	१०	५०	अक्तू. १९	१२	१२
अक्तू. २७	७	९	अक्तू. २८	९	४१
नवं. ७	२१	५	नवं. ८	१८	४९
नवं. ९	१७	०	नवं. १०	१५	४१
नवं. १२	१४	५४	नवं. १४	१६	३१
नवं. १६	२०	१५	नवं. १७	२२	४२
नवं. २५	१८	५०	नवं. २६	२०	३६
दिसं. ७	२	२०	दिसं. ८	०	११

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रवियोग

(सन् २०२१-२२ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२१ ई.	घं.	मि.	२०२१ ई.	घं.	मि.
दिसं. ८	२२	४०	दिसं. ९	२१	५०
दिसं. ११	२२	३२	दिसं. १४	२	४
दिसं. १७	१०	४१	दिसं. १८	१३	४८
दिसं. २५	४	१०	दिसं. २६	५	५
(सन् २०२२ ई.)					
जन. ५	८	४७	जन. ६	७	११
जन. ७	६	२१	जन. ८	६	१९
जन. १०	८	५०	जन. ११	७	५६
जन. ११	११	१०	जन. १३	१७	६
जन. १५	२३	२२	जन. १७	२	९
जन. २३	११	१०	जन. २४	१०	१८
जन. २४	११	१६	जन. २५	१०	५४
फर. ३	१६	३५	फर. ४	१५	५७
फर. ५	१६	९	फर. ६	१३	२२
फर. ६	१७	१०	फर. ७	१८	५८
फर. १०	०	२४	फर. १२	६	३७
फर. १४	११	५३	फर. १५	१३	४८
फर. २२	१५	३७	फर. २३	१४	४०
मार्च ६	२	३०	मार्च ७	३	५०
मार्च ८	५	५५	मार्च ९	८	३१
मार्च ११	१४	३६	मार्च १३	२०	५
मार्च १५	२३	३३	मार्च १७	०	२०
मार्च २३	१८	५३	मार्च २४	१७	२९

सिद्धियोग

(सन् २०२१ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

अप्रैल १४	१७	२३	अप्रैल १५	सू.	उ.
अप्रैल २३	७	४२	अप्रैल २४	सू.	उ.
मई ३	८	२३	मई ४	सू.	उ.
मई १२	सू.	उ.	मई १३	२	३९
मई २१	सू.	उ.	मई २१	१५	२२

सिद्धियोग

(सन् २०२१-२२ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२१ ई.	घं.	मि.	२०२१ ई.	घं.	मि.
मई ३१	सू.	उ.	मई ३१	१६	१
जून ९	सू.	उ.	जून ९	८	४४
जुलाई १८	१	३३	जुलाई १८	सू.	उ.
अग. १४	६	५७	अग. १५	५	४४
अग. २४	१९	४८	अग. २५	सू.	उ.
सितं. २	१४	५८	सितं. ३	सू.	उ.
सितं. ११	सू.	उ.	सितं. ११	११	२२
सितं. २१	सू.	उ.	सितं. २२	५	६
सितं. ३०	सू.	उ.	अक्तू. १	१	३३
अक्तू. ११	सू.	उ.	अक्तू. ११	१२	१२
अक्तू. २८	सू.	उ.	अक्तू. २८	९	४१
नवं. ७	२१	५	नवं. ८	सू.	उ.
दिसं. ५	७	४८	दिसं. ६	४	५४
दिसं. २५	४	१०	दिसं. २५	सू.	उ.
(सन् २०२२ ई.)					
जन. २	सू.	उ.	जन. २	१६	२३
जन. १२	१४	०	जन. १३	सू.	उ.
जन. २१	९	४३	जन. २२	सू.	उ.
जन. ३१	२१	५८	फर. १	सू.	उ.
फर. ९	सू.	उ.	फर. १०	०	२३
फर. १८	सू.	उ.	फर. १८	१६	४१
फर. २८	७	३	मार्च १	५	१९
मार्च ९	सू.	उ.	मार्च ९	८	३१
मार्च २८	सू.	उ.	मार्च २८	१२	२४

द्विपुष्करयोग

(सन् २०२१ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

मई २३	१२	१३	मई २४	३	३९
जून १	सू.	उ.	जुन १	१६	७
जुला. २५	११	१८	जुला. २६	४	४
सितं. १८	सू.	उ.	सितं. १८	६	५४

द्विपुष्करयोग

(सन् २०२१-२२ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२१ ई.	घं.	मि.	२०२१ ई.	घं.	मि.
सितं. २८	सू.	उ.	सितं. २८	१८	१७
नवं. २१	७	३६	नवं. २१	१९	४७
दिसं. १	२	१५	दिसं. १	सू.	उ.
(सन् २०२२ ई.)					
जन. २५	सू.	उ.	जन. २५	७	४९
मार्च १९	२३	३८	मार्च २०	१०	७
मार्च २९	सू.	उ.	मार्च २९	११	२८

त्रिपुष्करयोग

(सन् २०२१-२२ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

अप्रैल १९	५	२	अप्रैल १९	सू.	उ.
अप्रैल २४	६	२३	अप्रैल २४	१९	१७
अप्रैल २८	५	१६	अप्रैल २८	सू.	उ.
मई २	१४	५१	मई ३	सू.	उ.
जून १२	१६	५८	जून १२	२०	१८
जून २२	सू.	उ.	जून २२	१०	२२
जून २६	सू.	उ.	जून २६	१८	११
जुला. ६	सू.	उ.	जुला. ६	१५	२०
अग. १५	५	४५	अग. १५	९	५१
अग. २४	सू.	उ.	अग. २४	१६	५
अग. २९	३	३५	अग. २९	२३	२५
सितं. ८	४	३८	सितं. ८	सू.	उ.
अक्तू. १७	९	५३	अक्तू. १७	१७	३९
नवं. २	सू.	उ.	नवं. २	११	३१
दिसं. २१	सू.	उ.	दिसं. २१	१४	५४
दिसं. २६	५	६	दिसं. २६	२०	८
जन. ४	सू.	उ.	जन. ४	१०	५६
फर. १३	९	२८	फर. १३	१८	४२
फर. २२	१८	३६	फर. २३	सू.	उ.
फर. २७	८	४९	फर. २८	५	४३
मार्च ९	०	३२	मार्च ९	सू.	उ.

अमृतसिद्धियोग

(सन् २०२१-२२ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२१ ई.	घं.	मि.	२०२१ ई.	घं.	मि.
(अप्रै. १३	सू.	उ.	अप्रै. १३	१४	१९)मं.
(अप्रै. २५	सू.	उ.	अप्रै. २६	१	५४)र.
(अप्रै. २८	१७	१३	अप्रै. २९	सू.	उ.)बु.
(मई २३	सू.	उ.	मई २३	१२	१२)र.
(मई २६	सू.	उ.	मई २७	१	१५)बु.
(जून ५	४	९	जून ५	सू.	उ.)शु.
(जून २३	सू.	उ.	जून २३	११	४८)बु.
(जुला. २	सू.	उ.	जुला. ३	सू.	उ.)शु.
(जुला. ३०	सू.	उ.	जुला. ३०	१४	२)शु.
(सितं. २७	१७	४२	सितं. २८	सू.	उ.)चं.
(अक्तू. १	१	३४	अक्तू. १	सू.	उ.)गु.
(अक्तू. २३	२१	५३	अक्तू. २४	सू.	उ.)श.
(अक्तू. २५	सू.	उ.	अक्तू. २६	४	१०)चं.
(अक्तू. २८	९	४२	अक्तू. २९	सू.	उ.)गु.
(नवं. १६	२०	१५	नवं. १७	सू.	उ.)मं.
(नवं. २०	सू.	उ.	नवं. २१	सू.	उ.)श.
(नवं. २२	सू.	उ.	नवं. २२	१०	४३)चं.
(नवं. २५	सू.	उ.	नवं. २५	१८	४९)गु.
(दिसं. १४	सू.	उ.	दिसं. १५	४	४०)मं.
(दिसं. १८	सू.	उ.	दिसं. १८	१३	४८)श.
(दिसं. २७	५	२६	दिसं. २७	सू.	उ.)र.
(सन् २०२२ ई.)					
(जन. ११	सू.	उ.	जन. ११	११	९)मं.
(जन. २३	११	१०	जन. २४	सू.	उ.)र.
(फर. २०	सू.	उ.	फर. २०	१६	४२)र.
(फर. २३	१४	४१	फर. २३	१६	५७)बु.
(मार्च ५	१	५२	मार्च ५	सू.	उ.)शु.
(मार्च २३	सू.	उ.	मार्च २३	१८	५२)बु.
(अप्रैल. १	१०	४०	अप्रैल. २	सू.	उ.)शु.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

साईज़ 28 x 21 सें. मी. (एटलस साईज़), पृष्ठसंख्या 722

THE PLANETARY EPHEMERIS FOR HUNDRED YEARS (1951 To 2050 A.D.)

चिरस्थायी **Imported** पेपर आकर्षक **Colourful** टाईटल

शताब्दी ग्रहभोगांश

(सन् 1951 से 2050 ई. तक के सूक्ष्म स्पष्ट दैनिक ग्रह एवं उनका राशि–नक्षत्रप्रवेश व वक्र–मार्गकाल)

(इंग्लिश एवं हिन्दी–दोनों भाषाओं में) (इस समय उपलब्ध है।)

बड़े साईज़ के 722 पृष्ठों के इस विशाल ग्रन्थ में सन् 1951 से 2050 ई. तक के प्रातः 5 घं. 30 मि. (भा.स्टैं.टा.) कालिक विकलान्त सूक्ष्म दृक्सिद्ध दैनिक स्पष्ट सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, मध्यम राहु, स्पष्ट राहु, यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो दिए गए हैं। चन्द्र के अलावा सभी ग्रहों का भा. स्टैं. टा. में राशि, नक्षत्र–प्रवेशकाल तथा वक्र–मार्गकाल भी दिया गया है। चन्द्र का केवल राशि–प्रवेशकाल ही दिया है। प्रत्येक मास की पहली तारीख का स्पष्ट अयनांश भी दिया गया है।

इसकी गणित एवं मुद्रण दोनों **Computer Program** द्वारा ही किए गए हैं, जिससे यह किसी भी प्रकार की अशुद्धि से सर्वथा मुक्त है।

ज्योतिर्विदों का मन्तव्य है कि– यह प्रकाशन ज्योतिषजगत् के लिए वरदान है। इसमें वह सभी कुछ है, जिसका चिरकाल से हमारे पञ्चांगों में अभाव खटकता था। भारत के अब तक के ज्योतिषजगत् के इतिहास में यह अपने ढंग का पहला प्रकाशन है, जिसकी तुलना इस विषय के किसी भी पाश्चात्य प्रकाशन से की जा सकती है।

पुस्तक **English** एवं हिन्दी– एक साथ दोनों भाषाओं में है, जिससे इन दोनों भाषाओं के वेत्ता इस एक ही ग्रन्थ से समानरूप से लाभान्वित होंगे।

मूल्य **Rs.**1000/- + डाकव्यय **Rs.** 60/-

विशेष छूट– ज्योतिषशिक्षण संस्थाओं में पढ़ने वाले छात्रों, ज्योतिष अनुसंधानरत संस्थाकेन्द्रों एवम् सभी पुस्तकालयों के लिए इसका डाकव्ययसहित मूल्य Rs. 800/- है।

साईज़ 24 x 18½ सें. मी. पृष्ठसंख्या 280

शताब्दी विश्व कुण्डली दर्पण

मनोहारी बहुरंगा टाईटल पुस्तक उपलब्ध है।

[एक ऐसी पुस्तक, जिसकी मदद से आप जातक के जन्मकालिक लग्न का निर्णय और उसकी जन्मकुण्डली का निर्माण कम्प्यूटर की सी द्रुतगति से कर सकते हैं।]

विश्व के किसी भी नगर/ग्राम में सन् 1951 से 2050 ई. के मध्य उत्पन्न हुए/होने वाले जातक की जन्मकुण्डली 3–4 मिनट में ही बनाइए।

इस अद्भुत पुस्तक में 100 वर्ष (1951 से 2050 A.D. तक) का चन्द्रसहित सभी ग्रहों का सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) दिया गया है, जिसे पुस्तक में दिए गए एक कोष्ठक की मदद से विश्व के किसी भी देश के स्टैं. टा. में तुरन्त बदला जा सकता है। 0° से 66½° अक्षांश तक प्रत्येक अक्षांश–कला के अन्तर पर (अर्थात् 0°–1′, 0°–2′, 0°–3′, 0°–4′, 0°–5′ अक्षांश .... इस प्रकार विश्व के प्रत्येक अक्षांश–कला के लिए) मेषादि 12 लग्नों का दैनिक उदयकाल सेकण्ड तक सूक्ष्मता से बतला देने वाली 136 पृष्ठों की अपूर्व मौलिक सारणियां Computer द्वारा तैयार करके दी गई हैं, जिनकी मदद से आप विश्व के किसी भी दक्षिण या उत्तर अक्षांशीय नगर/ग्राम में उत्पन्न जातक की जन्मकालिक लग्नराशि अत्यन्त सूक्ष्मतापूर्वक वस्तुतः सिर्फ एक मिनट में ही जान सकते हैं। ध्यान रहे – बच्चे का जन्म जिस ग्राम में हुआ हो, उसी के अक्षांशों (अक्षांश–कलाओं) के अनुसार ही उसके जन्मकालिक लग्न का निर्णय करना चाहिए। उस ग्राम के पार्श्ववर्ती किसी बड़े नगर के अक्षांशों को वहां प्रयोग में लाने पर लग्न के निर्णय में स्थूलता रहती है। इस पुस्तक में विश्व के हर ग्राम की अक्षांशकला की सूक्ष्मतम लग्नसारणी दी गई है, जिसके प्रयोग से यह सथूलता नहीं रहती।

यदि जातक का जन्म लग्नसन्धि में हुआ हो तो इस पुस्तक में दी गई दैनिक लग्नारम्भकाल बतलाने वाली जन्मस्थलीय अक्षांश की सारणी से आप तुरन्त (बिना गुणा–भाग किए, साधारण 2–3 मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही) अधिक से अधिक 1½ मिनट (90 सेकण्ड) में ही यह जान लेंगे कि– यह सन्धिगत लग्न (सन्देहास्पद लग्न) जातक के जन्मस्थल पर कब (कितने बजकर, कितने मिनट और कितने सेकण्ड पर) प्रारम्भ या समाप्त हो रहा है। भूगोल के किसी भी स्थल पर स्थित छोटे से छोटे ग्राम में भी (उस ग्राम के अपने कला तक शुद्ध वास्तविक अक्षांश के आधार पर) लग्नराशि का सेकण्ड तक शुद्ध प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल आश्चर्यजनक सरलता से चुटकियों में बतलाने वाली ऐसी अद्भुत पुस्तक आपको विश्व की किसी भी भाषा में नहीं मिलेगी–यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं।

1951 से 2050 A.D. तक दुनिया के किसी भी कोने में उत्पन्न हुए अथवा उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली इस विलक्षण पुस्तक द्वारा आप सिर्फ 3–4 मिनटों में ही बिना गुणा–भाग किए आसानी से बना सकते हैं।

स्पष्टता के लिए देश–विदेश के विभिन्न नगरों में उत्पन्न जातकों के जन्मकालिक लग्न एवम् जन्मकुण्डलियां बनाने के 28 उदाहरण दिए गए हैं। भारत के प्रसिद्ध–प्रसिद्ध लगभग 1000 तथा विश्व के अन्य सभी देशों के लगभग सभी महानगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैं. अं. (स्था. म. का. और क्षेत्रीय स्टैं. टा. का अन्तर) तथा G.M.T. एवं भा.स्टैं.टा. से उनके क्षेत्रीय स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर दिया गया है।

मूल्य **Rs.** 500/- + डाकव्यय **Rs.** 50/-

इन दोनों पुस्तकों का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. से भेजने की व्यवस्था नहीं है।

पुस्तकों का प्राप्तिस्थान :– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन, कोठी नं. 59, सैक्टर–6, **P.O.** पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग (सं. 2078 वि.) का 'शोधनिबन्ध' विशेषांक

(लेखक एवं सम्पादक—इन्दुशेखर शर्मा)

इस विशेषांक के विषय :-

विषय	पृष्ठ
(i) प्रणय विवाह का मुहूर्त्त	277-278
(ii) शकुन शास्त्र-विचार	279-280
(iii) चन्द्रमा का उपच्छाया ग्रहण	281-282
(iv) तिथि से अंग्रेजी तारीख का ज्ञान	283-288
(v) भारत में लग्नों का प्रारम्भकाल	289-301

इन नीचे लिखी ' अभिजित् प्रकाशन ' द्वारा प्रकाशित प्रो. प्रियव्रत द्वारा लिखित दैवज्ञ-प्रिय पुस्तकों के प्रतिपाद्य विषय एवं मूल्य आदि जानने के लिए हमें नीचे लिखे पते पर पत्र दीजिए। हम आपको एतदर्थ अपना विस्तृत पुस्तक-सूचीपत्र (Catalouge) बिना मूल्य भेजेंगे। चाहे तो आप नीचे दिए फोन नं. पर भी इन प्रकाशनों के बारे में अपेक्षित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

पुस्तक	पुस्तक
(i) ग्रहोदयास्त-निर्णय....................	(vi) मुहूर्त्त-गजानन............................
(ii) गणक मार्त्तण्ड..........................	(vii) ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन..............
(iii) शताब्दी ग्रहभोगांश....................	(viii) विश्व लग्नसारणी..........................
(iv) शताब्दी विश्वकुण्डली दर्पण.......	(ix) लघु लग्नसारणी............................
(v) व्रत-पर्व-विवेक........................	(x) भारतीय लग्ननिर्णय...........

ग्राहकों के लिए हर्षप्रद समाचार

अभिजित् प्रकाशन' की उपरोक्त इन सभी पुस्तकों में से Rs. 1000/- या इससे अधिक मूल्य की पुस्तकें मंगवाने वाले ग्राहक को पुस्तक मूल्य पर 10 प्रतिशत की छूट दी जायेगी और डाकखर्च भी माफ किया जायेगा।

पुस्तकों का डाकव्ययसहित मूल्य आप हमारे (अभिजित् प्रकाशन, पंचकूला—हरियाणा के) O.B.C. Bank (ORIENTAL BANK OF COMMERCE) के Account no. 09 88 11 31 00 13 92 (IFSC- ORBC- 0100988) में भी जमा करवा सकते हैं। हमारे इस बैंक खाता में पैसे जमा करवाने के बाद हमारे फोन नं. 090413 30161 पर हमें अपना नाम, पता, फोन नं. और पुस्तकें, जो आप मंगवाना चाहते हैं, SMS द्वारा सूचित करना न भूलें।

भवदीया :-

श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., 'अभिजित् प्रकाशन',

कोठी नं. 59, सैक्टर 6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) - 134 109

Phone: 0172-2565 303, (M.) 09041330161

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

110 वर्ष का सर्वप्रथम खगोलसिद्ध सूक्ष्मतम पंचांग (दो भागों में)

(द्वितीय संस्करण उपलब्ध)

पृष्ठ संख्या 826

गणकमार्त्तण्ड

साईज 24x18 सें. मी.

कम्प्यूटर द्वारा तैयार और मुद्रित किया गया भारत का सबसे पहिला 110 वर्ष (सन् 1941 से 2050 ई. तक) का सूक्ष्मतम पंचांग, जिसकी तुलना विश्व के किसी भी प्रामाणिक Ephemeris से की जा सकती है।

लेखक– प्रियव्रत शर्मा, एम.ए., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य, साहित्याचार्य (सम्पादक – श्रीमार्त्तण्डपंचांग),

---

दो भागों (जिल्दों) में विभाजित इस महाग्रन्थ में जन्मपत्र आदि निर्माण के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, ज्योतिषियों के लिए नितान्त उपयोगी अनेक विषयों में से कुछेक इस प्रकार हैं –

1–भारत के सभी (35) प्रान्तों के प्रसिद्ध 4,000 से भी अधिक नगर–उपनगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैण्डर्ड अन्तर (स्था. म. का. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर)।

2–विश्व के प्रमुख 230 नगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैण्डर्ड अन्तर तथा G.M.T. और भा. स्टैं. टा. से उनके स्टैं.टा. का अन्तर।

3–विश्व के लगभग 120 देशों की स्टैण्डर्ड मेरिडियन्स, उनके स्टैं. टा. का G.M.T. और भा. स्टैं. टा. से अन्तर ।

4–0° से 60° अक्षांश तक के दैनिक सूर्योदयास्तकाल तथा सेकण्ड तक सूक्ष्म सूर्योदयास्तसाधन की विधि।

5–विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री बनाने की सोदाहरण विस्तृत, सरल विधि तथा भारतीय पंचांग के तिथि–नक्षत्र–योग आदि को अन्य देशों के स्टैं. टा. में परिवर्तित करने की सोदाहरण विधियां और Summer Time का विवेचन।

6–इष्टकालिक सूर्यादि ग्रह स्पष्ट करने की अनेक सरल पद्धतियों का सोदाहरण निर्देश एवम् तदर्थ अनेक मौलिक सारणियां।

7–'अन्तर्न्यासपद्धति' द्वारा चन्द्र एवम् बुध जैसे द्रुतगति ग्रहों को सूक्ष्मतापूर्वक इष्टकालिक बनाने की नवीन प्रकिया को अत्यन्त सरल बना देने वाली सारणियां और उनका सोदाहरण स्पष्टीकरण।

8–प्राचीनपद्धति (इष्टकाल और स्पष्टसूर्य) से इष्टकालिक लग्न स्पष्ट करने के लिए सम्पूर्ण भारत (8° से 35° अक्षांश तक) की आधा–आधा अक्षांशान्तर पर लग्नसारणियां एवम् उनसे इष्टकालिक लग्नसाधन का सोदाहरण विस्तृत स्पष्टीकरण।

9–नवीन पद्धति (साम्पातिककाल पद्धति) से लग्नसाधन के लिए अखिल भारतीय लग्नसारणियां, तदनुसार इष्टकालिक लग्नसाधन की सोदाहरण विधि तथा सन् 1941 से 2050 ई. तक का सूक्ष्म साम्पातिक काल और अयनांश।

10– समस्त भारत के नगरों (अक्षांशों) के लिए मेषादि लग्नों का प्रारम्भकाल बतलाने वाली अद्भुत सारणियां, जिनकी मदद से किसी भी नगर में किसी भी दिन अभीष्ट लग्न का प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.) केवल एक मिनट में ही बिना गणित किए जाना जा सकता है।

11– सन् 1941 से 2050 ई. तक (110 वर्षों) का चन्द्रसहित सभी ग्रहों का सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा.स्टैं. टा.) 92 पृष्ठों पर दिया गया है, जिससे जातक की जन्मकुण्डली 2–3 मिनट में ही बनाई जा सकती है।

12– 220 पृष्ठों पर सन् 1941 से 2050 ई. तक के तिथि, नक्षत्र, योगों का दैनिक समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) है।

13– 220 पृष्ठों पर सूक्ष्म दैनिक स्पष्ट सूर्य और चन्द्रमा दिए गए हैं।

14– 110 पृष्ठों पर सन् 1941 से 2050 ई. तक के साप्ताहिक स्पष्ट मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एवम् राहु दिए गए हैं। यहां एक विशेष कोष्ठक भी दिया गया है, जिसकी मदद से साप्ताहिक स्पष्टग्रह को तुरन्त ही इष्टकालिक बना सकते हैं। ग्रहों के वक्री–मार्गी होने की तारीखें भी दी गई हैं।

15– 2001 से 2050 ई. तक के सूर्य–चन्द्रग्रहणों की सूची, गुरु–शुक्र के अस्तोदय की तारीखें, श्रीरामनवमी, जन्माष्टमी, दीपमाला आदि प्रमुख–प्रमुख सभी मासिक पर्व तथा हरिद्वार आदि के चारों महाकुम्भों की तारीखें दी गई हैं।

ध्यान रहे– 110 वर्ष के इस पंचांग की गणित और मुद्रण–दोनों Electronic Computer द्वारा ही किए गए है, जिससे इसमें गणित एवम् मुद्रणसम्बन्धी किसी भी प्रकार की अशुद्धि की तनिक भी गुंजायश नहीं है।

पुस्तक के दोनों भाग उत्कृष्ट Imported Paper पर मुद्रित एवम् आकर्षक टाईटलों में निबद्ध हैं।

मूल्य Rs. 1150/– + डाकव्यय Rs. 60/–

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य **M.O.**या **D.D.** द्वारा नीचे लिखे पते पर भेजिए।

पुस्तक मिलने का पता :– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,

कोठी नं. 59, सैक्टर–6, **P.O.** पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

ध्यान दें– हमारी पुस्तकों को बेचने का अधिकार केवल "अभिजित् प्रकाशन" 59/6, पंचकूला को ही है, अन्य किसी भी विक्रेता को इन्हें बेचने का अधिकार नहीं है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रणयविवाह का मुहूर्त्त

लेखक—प्रियव्रत शर्मा

प्रणयविवाह (Love-Marriage), जिसे शास्त्रों में गन्धर्व-विवाह की संज्ञा दी गयी है, यद्यपि उत्कृष्टकोटि की विवाह प्रणाली के रूप में शास्त्रकारों द्वारा समर्थित नहीं है, तथापि इस प्रणाली का पर्याप्त प्रचलन अब भारत में भी पाश्चात्य सभ्यता और उच्च शिक्षा के प्रभाव के कारण दिखाई पड़ने लगा है। प्रणयविवाह करने वाले प्रेमी-प्रेमिका विवाहबन्धन में बंधने के लिए अक्सर इतनी शीघ्रता में होते हैं कि—वे शास्त्रप्रतिपादित मुहूर्त्तकाल की प्रतीक्षा नहीं कर पाते, कुण्डली मिलान की बात तो दूर रही। बिना कुण्डली मिलान करवाये, बिना मुहूर्त के ही मन्दिर आदि में जाकर एक दूसरे के गले में वर-माला डालकर पति-पत्नी बन जाना ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से यद्यपि अपराध है, फिर भी **"प्रेमावेश किसी भी प्रकार के नियन्त्रण को सहन नहीं करता"**—इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को दृष्टि में रखकर हम यहां मुहूर्त्तसम्बन्धी दो आवश्यक बातें बतला रहे हैं, जिन्हें यदि प्रणयविवाह के समय ध्यान में रखा जाये तो प्रेमी-प्रेमिका का दाम्पत्य-जीवन कुछ दृष्टियों से पर्याप्त सुख-समृद्धिमय हो सकता है। वे दो आवश्यक बातें ये हैं—

1. प्रेमविवाह के समय मृत्युबाण के समय को सावधानीपूर्वक छोड़ देना चाहिए। इससे दोनों जीवनसाथी अकाल मृत्यु से बचे रहेंगे।

हम यहां दो कोष्ठक (1), (2) दे रहे हैं, इनकी सहायता से बड़ी आसानी से यह जाना जा सकता है कि—मृत्युबाण किस दिन कब से कब तक रहेगा।

मृत्युबाण एक वर्ष में 48 बार आता है। जब भी यह आता है, तब यह लगभग 25½ घण्टे तक रहता है। कोष्ठक (1) में **"मृत्युबाण की लगभग तारीखें"** (जिन तारीखों के आसपास मृत्युबाण प्रतिवर्ष आया करता है) दी गयी हैं। यदि प्रणयविवाह की तारीख का कोष्ठक (1) में दी गयी **"मृत्युबाण की लगभग तारीख"** से अन्तर आगे या पीछे तीन दिन से अधिक हो, तब उस दिन प्रणयविवाह नि:शंक होकर किया जा सकता है। क्योंकि कोष्ठक (1) में दी गयी इन **"मृत्युबाण की लगभग तारीखों"** से मृत्युबाण के काल का अन्तर आगे या पीछे तीन दिन से ज्यादा कभी नहीं होता। यदि प्रणय-विवाह का दिन कोष्ठक (1) में दी गयी **"मृत्युगाण की लगभग तारीख"** से एक, दो या तीन दिन आगे या पीछे हो, तब सम्भव है कि—उस दिन मृत्युबाण हो। ऐसी स्थिति में मृत्युबाण की वास्तविक तारीख और टाईम का ज्ञान कोष्ठक (1) और कोष्ठक (2) की सहायता से इस प्रकार कर लीजिये—

जिस दिन/तारीख के आसपास प्रणयविवाह करने की इच्छा है, उस तारीख के समीप वाली **"मृत्युबाण की लगभग तारीख"** के आगे कोष्ठक (1) में लिखे वार घं. मि. उठा लें। इन्हें अपने ईस्वी सन् के आगे कोष्ठक (2) में दिये गये वार घं. मि. में जोड़ दें;—यह मृत्युबाण शुरु होने का वार और टाईम (भा.स्टै.टा.) होगा। इस वार के अनुसार मृत्युबाण के शुरु होने की ठीक तारीख का निर्णय किया जा सकता है। यह तारीख (मृत्युबाण शुरु होने की तारीख) **"मृत्युबाण की लगभग तारीख"** (जो हमें कोष्ठक (1) से मिली है) से दो दिन से ज्यादा आगे-पीछे नहीं हो सकती, जैसा कि पहले भी बतला चुके हैं, मृत्युबाण 25 घं. 30 मि. (अर्थात् 1 दिन 1 घं. 30 मि.) रहता है। अत: मृत्युबाण शुरु होने के वार और टाईम में 1 दिन (वार), 1 घं. 30 मि. जोड़ देने पर इसकी समाप्ति का वार घं. मि. (भा. स्टै. टा.) मालूम हो जायेंगे।

मान लीजिये—7 जनवरी 1983 ई. के दिन मृत्युबाण ज्ञात करना है। कोष्ठक (1) में जनवरी की 3 और 12 तारीखें **"मृत्युबाण की लगभग तारीखें"** लिखी हैं, जो हमारी 7 जनवरी के समीप की तारीखें हैं। इन दोनों तारीखों से 7 जनवरी का अन्तर तीन दिन से ज्यादा है, अत: स्पष्ट है कि—इस दिन मृत्युबाण नहीं होगा।

मान लीजिये—4 जनवरी, 1983 ई. को मृत्युबाण मालूम करना है, इस तारीख के समीप वाली **"मृत्युबाण की लगभग तारीख"** कोष्ठक (1) में 3 जनवरी है। इस कोष्ठक में 3 जन. के आगे 4 वार, 18 घं., 28 मि. लिखा है। कोष्ठक (2) में ई. सन् 1983 के आगे लिखे 5 वार, 0 घं. 37 मि. हैं। इसमें 4/18/28 जोड़ने पर 9 वार (2 वार)

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

19 घं. 5 मि. मिले। यह मृत्युबाण के प्रारम्भ होने का वार और भा.स्टै.टा. है। 1983 ई. में 3 जनवरी को सोमवार है, अत: स्पष्ट हुआ कि—मृत्युबाण 1983 ई. को 3 जनवरी के दिन 19 घं. 5 मि. (भा.स्टैं. टा.) अर्थात् शाम के 7 बजकर 5 मि. पर प्रारम्भ होगा। क्योंकि मृत्युबाण 1 दिन, 1 घं. 30 मि. तक रहता है, अत: इसकी समाप्ति 2 वार, 19 घं. 5 मि.+1 वार, 1 घं. 30 मि.=3 वार, 20 घं. 35 मि. पर (अर्थात् मंगलवार (4 जन.) को 20 घं. 35 मि. पर) होगी। सारांश यह हुआ कि—यह मृत्युबाण 3 जनवरी, 1983 ई. को 19 घं. 5 मि. से प्रारम्भ होकर 4 जनवरी, 1983 ई. को 20 घं. 35 मि. तक चलेगा। अत: इस अवधि में प्रणयविवाह नहीं करना चाहिए।

ध्यान रहे, इन कोष्ठकों से जाना गया मृत्युबाण का वार अंग्रेजी पद्धति के अनुसार रात के बारह बजे शुरु होने वाला है। 1 संख्या से रविवार, 2 से सोमवार इत्यादि समझें। 0 या 7 संख्या में शनिवार समझना चाहिए।

2. मृत्युबाण का विचार करने के बाद प्रणयविवाह (परस्पर वर माला डालने) के समय लग्न का विचार कर लेना भी नितान्त आवश्यक है। विवाह के समय लग्नेश यदि लग्न, चतुर्थ, पंचम, नवम, दशम या ग्यारहवें भाव में हो अथवा गुरु, शुक्र या बुध में से कोई भी ग्रह लग्न, चतुर्थ, पंचम, नवम या दशम भाव में पड़ा हो तो उस समय किया गया विवाह-सम्बन्ध अटूट, पारस्परिक प्रेम का पोषक एवं अनेकविध सुख सम्पदाओं को देने वाला माना जाता है। मुहूर्त्तकारों का कहना है कि—इस प्रकार की ग्रहस्थिति वाले लग्न के समय यदि विवाह किया जाये तो मुहूर्त्त-सम्बन्धी अनेक महादोष लगभग समाप्त हो जाते हैं।

कोष्ठक (1)			
मृत्युबाण की लगभग तारीख	वा. घं. मि.	मृत्युबाण की लगभग तारीख	वा. घं. मि.
जन. 3	4 18 28	जुला. 5	5 09 29
12	6 14 27	14	0 20 07
15	2 13 09	17	3 23 37
24	4 09 23	27	6 09 47
फर. 2	6 05 54	अग. 5	1 19 36
11	1 03 04	15	4 04 54
14	4 02 18	18	0 07 47
23	6 00 27	27	2 15 55
मार्च 3	0 23 30	सितं. 5	4 23 13
12	2 23 16	15	0 05 30
15	5 23 31	18	4 07 20
25	1 00 54	27	5 12 04
अप्रै. 3	3 03 20	अक्तू. 6	0 15 44
12	5 07 00	15	2 18 14
15	1 08 29	18	5 18 49
24	3 13 38	27	0 19 47
मई 3	5 19 49	नवं. 5	2 19 47
13	1 05 08	14	4 18 48
16	4 05 47	17	0 18 14
25	6 14 14	26	2 16 01
जून 3	1 23 25	दिसं. 5	4 13 14
13	4 09 18	14	6 09 53
16	0 12 43	17	2 08 38
25	2 22 59	26	4 04 43

कोष्ठक (2)					
ई. सन्	वा. घं. मि.	ई. सन्	वा. घं. मि.	ई. सन्	वा. घं. मि.
1980	1 06 09	2010	3 22 44	2040	6 15 19
1981	2 12 18	2011	5 04 53	2041	0 21 28
1982	3 18 27	2012	6 11 02	2042	2 03 37
1983	5 00 37	2013	0 17 11	2043	3 09 46
1984	6 06 46	2014	1 23 21	2044	4 15 56
1985	0 12 55	2015	3 05 30	2045	5 22 05
1986	1 19 04	2016	4 11 39	2046	0 04 14
1987	3 01 13	2017	5 17 48	2047	1 10 23
1988	4 07 22	2018	6 23 57	2048	2 16 32
1989	5 13 32	2019	1 06 06	2049	3 22 41
1990	6 19 41	2020	2 12 16	2050	5 04 50
1991	1 01 50	2021	3 18 25	2051	6 11 00
1992	2 07 59	2022	5 00 34	2052	0 17 09
1993	3 14 08	2023	6 06 43	2053	1 23 18
1994	4 20 17	2024	0 12 52	2054	3 05 27
1995	6 02 27	2025	1 19 01	2055	4 11 36
1996	0 08 36	2026	3 01 11	2056	5 17 45
1997	1 14 45	2027	4 07 20	2057	6 23 55
1998	2 20 54	2028	5 13 29	2058	1 06 04
1999	4 03 03	2029	6 19 38	2059	2 12 13
2000	5 09 12	2030	1 01 47	2060	3 18 22
2001	6 15 22	2031	2 07 56	2061	5 00 31
2002	0 21 31	2032	3 14 06	2062	6 06 40
2003	2 03 40	2033	4 20 15	2063	0 12 50
2004	3 09 49	2034	6 02 24	2064	1 18 59
2005	4 15 58	2035	0 08 33	2065	3 01 08
2006	5 22 07	2036	1 14 42	2066	4 07 17
2007	0 04 17	2037	2 20 51	2067	5 13 26
2008	1 10 26	2038	4 03 01	2068	6 19 35
2009	2 16 35	2039	5 09 10	2069	1 01 45

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शकुन-शास्त्र

भारतीय शास्त्रों में शकुन-शास्त्र की चर्चा का महत्त्व हम पुरातनकाल से ही पढ़ते एवं अनुभव करते आये हैं। कवि कालिदास ने भी कण्व ऋषि के आश्रम में प्रवेश से पहले '**अभिज्ञान शाकुन्तलम्**' नामक नाटक में दुष्यन्त राजा के अंगस्फुरण की चर्चा करते समय लिखा है;–"**दक्षिणस्पन्दते बाहुः फलाकांक्षा न मे क्वचित्। न च मिथ्या मुनिवचः कथयिष्यति किंन्विदम्॥**" इसी प्रकार महाभारतकालीन घटनाओं में भी युद्धक्षेत्र में शकुनसम्बन्धी विचार लिखे गये हैं। शकुन एवं अपशकुन हमारे जीवन में गहराई तक घर कर चुके हैं। आधुनिक युग में वैज्ञानिक बौद्धिकता भी शकुनशास्त्र के अस्तित्व के लिए संकट नहीं बन सकी है। अतः शकुनशास्त्र की चर्चा यहां कर रहे हैं। **ध्यान दें;**–अंगस्फुरण, पल्ली (छिपकली/किरले) का शरीरांग पर गिरना, शुभाशुभ स्वप्न देखना, पशु-पक्षियों की चेष्टा–ये सब शकुन-शास्त्र के ही अंग हैं।

शकुनशास्त्र का महत्त्व

यात्रा के समय दृश्यमान चिह्न 'शकुन-संज्ञक' होते हैं। इनके दर्शन से यात्रा की शुभाशुभता की ठीक-ठीक सूचना मिल जाती है। अतः यात्रा करते समय विचारणीय शकुन को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है;–

"तिथिर्धिष्ण्यं च वारञ्च लग्नं ग्रहबलं तथा।
पञ्चानामपि सर्वेषां शकुनो दण्ड-नायकः॥"

शुभ शकुन समीचीन (अच्छा) फल प्रदान करते हैं। अशुभ शकुन विपरीत (कष्टप्रद) फलदायक होते हैं। भयानक मुसीबतों के सूचक दुःशकुन कदापि शुभ फलप्रद नहीं होते;–

"वरं शुभं दुर्जन-कृष्णसर्पो वरं क्षिपेत् सिंहमुखे स्वमंगम्।
वरं तरेद्वारि-निधिं भुजाभ्यां नो लंघयेद् दुःशकुनं कदापि॥"

शुभ शकुन

मनुष्य वर्ग–पुत्रवान् किंवा सौभाग्यवती स्त्री, वैश्या, समृद्ध तथा यशस्वी व्यक्ति, कुमारी, वणिक् पुत्र, विश्वस्त व्यक्ति, स्नेही (आत्मीय) जन, सुवेषधारी मनुष्य, वस्त्रालंकृता स्त्री, एक या दो ब्राह्मण, ज्योतिषी, चरित्रवान् विद्वान्, धोबी, पगड़ी बांधा हुआ व्यक्ति, राजा, शिक्षक किंवा कुलगुरु यदि यात्रा के प्रारम्भ में मिलें तो यात्रा सुखद रहे।

पशु-पक्षी वर्ग–हाथी, घोड़ा, अकेली या सवत्सा गाय, मोर, नीलकण्ठ, न्योला, सफेद वृषभ, भेड़, हिरण, हंस, कोयल, तोता, मुर्गा, रंग-बिरंगी चिड़ियां किंवा बकरी के दर्शन शुभ हैं।

वनस्पति वर्ग–अन्न, सफेद सरसों, फल, कमल, ईख, हल्दी, पुष्प, अंगूर, जौ, द्राक्षा, दूर्वा, ताम्बूल, चन्दन किंवा उद्यान आदि के दर्शन यात्रा के समय शुभ माने गये हैं।

उपयोग्य वर्ग–दूध, चांदी या स्वर्ण के आभूषण, पताका, पालकी, खाद्य पदार्थ, दीपक, रथ, सुगन्धित द्रव्य, मृदंग, वीणा, मंगल वचन सुनाई देना, शय्या किंवा आनन्ददायक सामग्री यात्रा के प्रारम्भ में मिले तो शुभ समझें।

प्रकीर्ण वर्ग–जलपूरित कलश, छाता, गीली (चिकनी) मिट्टी, प्रज्वलित हवनवह्नि, देव-सिंहासन, जयघोष, प्रीतिप्रद वचन, वेदध्वनि, धार्मिक पुस्तकप्राप्ति, पूजा, सम्भार किंवा तीर्थोदकप्राप्ति यात्रारम्भ में शुभ हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नोट—शुभ शकुनों की चर्चा में श्रवण-दर्शन तथा स्पर्श उत्तमोत्तम समझें। यात्रा से पूर्व दधि-चावल-सेवन भी शुभ है। शुभाकांक्षी व्यक्ति यथासम्भव शकुन-शास्त्र का विचार करे तथा शकुनप्रद वस्तुओं को दायीं ओर रखकर यात्रा करें। यथोक्तम्—

"कीर्तनाच्छ्रवणं श्रेष्ठं श्रवणात्तु विलोकनम्।
दर्शनात् स्पर्शनं चैषां दध्यादीनां गमादिषु।
कृत्वा दक्षिणतः चैषां सर्वान् गच्छन् सिद्धिमवाप्नुयात्॥"

अपशकुन

मनुष्य वर्ग—यात्रा प्रारम्भ करने पर यदि नग्न व्यक्ति, चोर, सिर मुण्डाया हुआ, संन्यासी, लंगड़ा ब्रह्मचारी, कुबड़ा, नपुंसक, अन्धा, बधिर, दरिद्री, विमुक्तकेशी विधवा, क्रोधी, मूत्र किंवा मलोत्सर्ग करता व्यक्ति, गधा, भैंसे पर चढ़ा हुआ व्यक्ति, रुदन करता व्यक्ति, विधवा, शराबी, पागल, पतिताचरण ब्राह्मण, विकलांग, गेरुए वस्त्र धारण किये हुए भिखारी, तेलमर्दन करता व्यक्ति, सूखी लकड़ियों का वाहन, पाखण्डी, हजाम, लुहार, चर्मकार, सुनार, मांसोपजीवी, मोची, कुम्हार, जल्लाद, गीले कपड़े पहना व्यक्ति, हथकड़ी या सैक्योरिटी कर्मचारी, अंगकम्पनग्रस्त व्यक्ति, यात्री का स्वयं ठोकर खाना, आकस्मिक दुर्घटना के दर्शन व श्रवण तथा नंगे सिर वाले कुरूप व्यक्ति के दर्शन अशुभ हैं।

पशु-पक्षी वर्ग—यात्रा के समय ऊंट, गधा, भैंसा, बिल्लियों की लड़ाई, उल्लू, गीध, बांझ गाय, सूअर, छिपकली, काला सांप, कौआ, गाय की छींक, भैंसों का युद्ध, चूहों की लड़ाई, यात्रा में बिल्ली का रास्ता काटना, कुत्ते द्वारा कान फड़फड़ाना, कुत्तों की लड़ाई, लोमड़ी, तीतर एवं बगुला आदि के दर्शन अशुभ माने गये हैं।

वनस्पति वर्ग—यात्रा के समय काले धान, लकड़ी, काले तिल, धान की भूसी, आक-धतूरा, कंटीली झाड़ियां, उन्मूलित वृक्ष एवं सुगन्धरहित पुष्प अशुभ लिखे गये हैं।

यात्रा के समय अपशकुन-परिहार

यात्रा प्रारम्भ करते समय उल्लिखित अपशकुनों का नीचे दिये प्रकार से परिहार करने के उपरान्त प्रसन्नमन से पुनः यात्रा प्रारम्भ करे।

1. दुःशकुन होने पर यात्री 5 बार सव्य-अपसव्य प्राणायाम करके भगवान् शंकरजी की पूजा-अर्चना तथा अर्द्ध प्रदक्षिणा करके यात्रा करे, अभीष्ट-सिद्धि प्राप्त होगी;—

**"अपि प्रहीणस्य समस्त-लक्षणैः क्रिया-विहीनस्य निकृष्ट-जन्मनः।
प्रदक्षिणीकृत्य शशांक-शेखरम् प्रयास्यतः कस्य न सिद्धिरिष्यते॥"**

2. यात्रा से पूर्व स्नान-दान एवं पुण्य का आचरण करने से अशुभ शकुन भी निष्प्रभावी हो जाते हैं;—

**"दुःस्वप्न-दुर्निमित्तापशकुना ययुः।
स्नान-दान-जपैः पुण्यैरित्याह भगवान् भृगुः॥"**

———

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा का उपच्छाया ग्रहण

(जो वस्तुतः ग्रहण नहीं होता)

विगत वर्ष सं. 2076 वि. में 10 जन., 2020 ई. को पौषी पूर्णिमा और सं. 2077 वि. में 5 जुला., 2020 ई. को आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन चन्द्रग्रहण नहीं था, फिर भी कई समाचारपत्रों एवं टी.वी. चैनलों ने इसका मिथ्या प्रचार किया, जिससे सामान्य जनता में इस बारे में भारी भ्रांति फैली। इन समाचारपत्र एवं टी.वी. चैनल्स वालों को इस दिन ग्रहण होने का भ्रम किस कारण पैदा हुआ—इसका स्पष्टीकरण हम यहां दे रहे हैं।

जब प्रकाशक (जिससे प्रकाश आ रहा है, वह पदार्थ) प्रकाश्य (जिस पर प्रकाश पड़ रहा है, उस) पदार्थ से बड़ा होता है, तब प्रकाश्य पदार्थ की दो छायाएं बनती हैं, एक छोटी और दूसरी बड़ी। सूर्य (प्रकाशक) से पृथ्वी (प्रकाश्य) काफी छोटी है। जिससे इस पृथ्वी की दो छायाएं सूर्य से विपरीत दिशा में आकाश में सूर्य की गति से निरन्तर घूमती रहती हैं। इनमें से एक छाया आकार में अपेक्षाकृत छोटी और घनी (काफी काली) है। सूर्य के विपरीत दिशा में उत्तरोत्तर कम होती हुई यह शंकु (Cone) के आकार की है। जबकि दूसरी छाया आकार में बड़ी, लेकिन काफी धुंधली (मन्द) है। यह सूर्य से विपरीत दिशा में उत्तरोत्तर फैलती जा रही है (अगले पृष्ठ पर भूभा और उपच्छाया-बोधक चित्र देखें)। आकार में उत्तरोत्तर क्षीयमाण पृथ्वी की घनी छाया को ज्योतिषशास्त्र में भूभा (Umbra) की संज्ञा से पुकारा जाता है। आकार में उत्तरोत्तर वर्धमान दूसरी धुंधली छाया को उपच्छाया (पृथ्वी की उपच्छाया = Penumbra) कहते हैं।* भूभा ही पृथ्वी की वास्तविक छाया है। इसमें चन्द्रमा के स्थितिकाल को ही चन्द्रग्रहणकाल कहा जाता है, क्योंकि इसमें प्रविष्ट होने पर ही चन्द्रबिम्ब काला पड़ता है। उपच्छाया में प्रविष्ट होने पर तो यह कुछ (अलक्ष्यरूप में) मन्द हो जाता है और तब इसकी चांदनी भी थोड़ी मन्दप्रभ हो जाती है। चांदनी और चन्द्रबिम्ब का यह धुंधलापन अत्यल्प होने के कारण सामान्यतः दृष्टिग्राह्य नहीं होता। चन्द्र कब उपच्छाया में प्रविष्ट हुआ, वह उससे कब बाहर हुआ, चन्द्रग्रहणसाधन-प्रसंग में इसे जानने की भी गणितप्रक्रिया है, जिसे पंचांगकार अनावश्यक समझकर उपेक्षित करते हैं। उपच्छाया में चन्द्र की स्थिति को ग्रहण नहीं माना जाता, लेकिन ज्योतिषशास्त्रीय भाषा में इसे 'उपच्छाया ग्रहण' (मांद्यग्रहण=Penumbral Eclipse) अवश्य कहा गया है। हमारे प्राचीन भारतीय ज्योतिष-सिद्धान्त-करणग्रन्थों में उपच्छाया की चर्चा बिल्कुल नहीं है। उन्होंने भूभा में चन्द्रमा के स्थितिकाल को ही चन्द्रग्रहण माना है और हमारे धर्मग्रन्थों में भी स्नान-दान-जपादि के लिए इसी काल का माहात्म्य लिखा है। उपच्छाया (पृथ्वी की उपच्छाया) में प्रवेश से उत्पन्न चन्द्रबिम्ब एवं चन्द्रप्रकाश के धुंधलेपन की चर्चा भी हमारे इन प्राचीन ज्योतिषग्रन्थों में नहीं है। यह तो आधुनिक प्रकाशसिद्धान्तीय उपलब्धि है। यहां यह भी जान लेना चाहिए—भूभा उपच्छाया के बिल्कुल मध्य में रहती है। इसके चारों ओर समानान्तर पर उपच्छाया फैली होती है। इन दोनों से उत्पन्न शंकुओं के अक्ष (मध्यगत ऊर्ध्वाधर रेखाएं) एक ही (अभिन्न) हैं। चन्द्र के भ्रमणवृत्त में इस भूभा का व्यास मध्यममानेन 81 कला और उपच्छाया का व्यास भूभा के व्यास से लगभग दोगुना है (आगे चित्र देखें)। (ध्यान रहे—इस चित्र में उपच्छाया का चन्द्रमार्ग में व्यास स्पष्टता के लिए वास्तविक से ज्यादा दिखाया गया है)। उपच्छाया में प्रविष्ट होने पर ही चन्द्रमा भूभा में प्रवेश कर सकता है और भूभा से निकलने पर ही उसे कुछ दूरी तक उपच्छाया में से गुजरना पड़ता है। इससे स्पष्ट है—चन्द्रग्रहण-प्रारम्भ (भूभा में चन्द्रप्रवेश) होने से पूर्व ही 'उपच्छाया ग्रहण' प्रारम्भ हो जाता है और उसके समाप्त होने के कुछ समय बाद तक वह बना रहता है। कई बार तो अधिक शर के कारण (कक्षावृत्त के धरातल से इधर-उधर अधिक हटा होने के कारण) पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा भूभा में प्रवेश किये बिना ही एक ओर से उपच्छाया में प्रविष्ट होकर दूसरी ओर

---

* *किसी अंधेरे कमरे के अन्दर छत से गेंद को लटकाइये। ऐसे गोलाकार बल्ब आदि से, जो आकार में गेंद से बड़ा हो, उस (गेंद) पर कुछ दूरी से प्रकाश डालिये और उस (गेंद) की दीवार पर पड़ती छाया देखिये। आप यहां गेंद की दो छायाएं पायेंगे—एक छोटी घनी छाया और दूसरी उसके चारों ओर फैली बड़ी धुंधली छाया। घनी छोटी छाया को हम 'भूभा' (Umbra) और बड़ी धुंधली छाया को 'उपच्छाया' (Penumbra) कह सकते हैं।*

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उपच्छाया में से निकल जाता है। यह स्थिति अक्सर प्रतिवर्ष घटती रहती है, जिसे टी.वी. चैनलों और समाचारपत्रों के ज्ञानलव-दुर्विदग्ध ये 'नक्षत्रविद्' चन्द्रग्रहण घोषित कर जनसामान्य में भ्रांति फैला देते हैं। अतः सामान्यजन को हमारा परामर्श है कि—वे ऐसे अन्य सभी ज्योतिषशास्त्रीय विषयों के बारे में स्तरीय पंचांगों व Almanacs को ही प्रमाण मानें और इस प्रकार के भ्रामक प्रचार से वे प्रभावित न हों। ऐसे विषयों पर आप हमसे टेलीफोन या पत्र द्वारा समाधान मांग सकते हैं। समय होने पर हम आपकी समस्या का यथाशक्य निश्चित समाधान करेंगे।

भूभा एवं उपच्छाया-बोधक चित्र

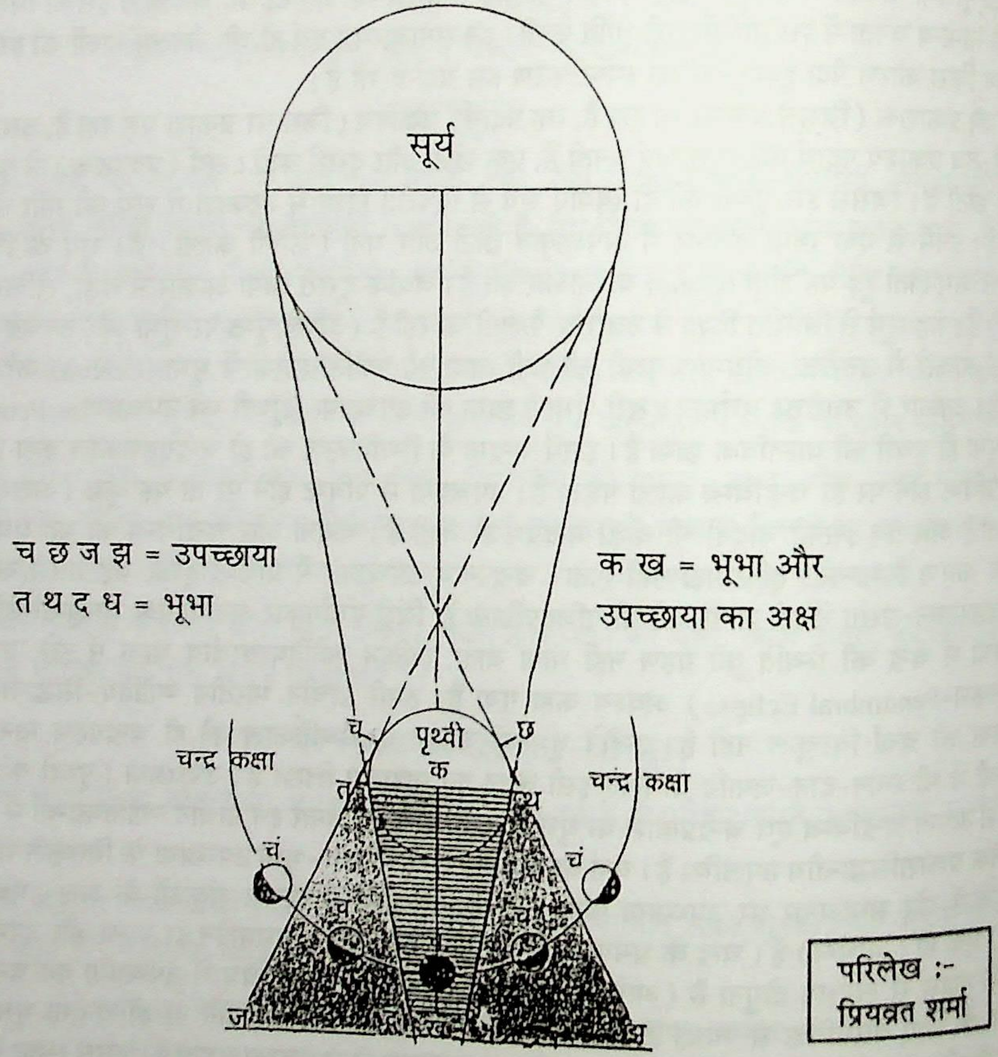

भूभा और उपच्छाया के बारे में कुछ तथ्य

1. भूभा चन्द्रकक्षा से कुछ लाख किलोमीटर की दूरी पर शून्य हो जाती है। जहां यह शून्य होती है, उसी स्थान पर उपच्छाया भी समाप्त हो जाती है।

2. चन्द्रग्रहण के समय चन्द्रकक्षा में भूभा एवं उपच्छाया के व्यास का मान चन्द्रगति की न्यूनाधिकता पर निर्भर करता है। चन्द्रगति की परमाल्पता पर भूभा और उपच्छाया के व्यास परमाल्प (क्रमशः लगभग 75 कला और 168 कला) तथा इसकी परमता पर इसके व्यास परम (क्रमशः लगभग 92 कला और 190 कला) होते हैं।

3. भूभा और उपच्छाया—दोनों क्रान्तिवृत्त में सूर्य से 180 अंश की दूरी पर प्रति चार मिनट में एक अंश की दर से पूर्व से पश्चिम की ओर निरन्तर घूमती रहती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तिथि से अंग्रेज़ी तारीख का ज्ञान

[यह लेख पहले भी श्रीमार्त्तण्ड पंचांग(सं. 2037 वि.) में प्रकाशित हो चुका है। बहुत से लोगों को प्राचीन जन्मपत्र आदि में दी गई जन्मतिथि के दिन अंग्रेज़ी तारीख जानने की समस्या उपस्थित होती है। उनके अनुरोध पर यह लेख यहां पुनः प्रकाशित किया जा रहा है।]

आज से लगभग 50–60 वर्ष पूर्व तक भारत में अंग्रेज़ी (Gregorian) तारीखों के स्थान पर देसी प्रविष्टे एवं तिथियों का ही अधिकतर प्रयोग होता था। किसी देसी प्रविष्टे के दिन अंग्रेज़ी तारीख निकालने की विधि सं. 2036 वि. के पंचांग में दे चुके हैं। अब हम यहां किसी तिथि की अंग्रेज़ी तारीख ज्ञात करने की अत्यन्त सरल विधि दे रहे हैं। आगामी पृष्ठों पर तीन सारणियां दी जा रही हैं। इनकी सहायता से शकाब्द[1] (शक संवत्) 1801 से शकाब्द 1927 तक की किसी भी तिथि की अंग्रेज़ी तारीख बहुत ही सरलता से जानी जा सकती है। विधि इस प्रकार है–

पृष्ठ 285 पर दी गई सारणी नं. (1) में शकाब्द के आगे चैत्रशुक्ल प्रतिपदा का ईस्वी सन् लिखा गया है। इसके आगे 'दिनगण' दिया गया है, जो चैत्रशुक्ल प्रतिपदा के दिन ईस्वी सन् की बीती तारीखों को बतलाता है। इसके आगे 'अधिकमास' कॉलम में अधिकमास लिखा गया है। यदि इस कॉलम में कुछ नहीं लिखा हो तो समझना चाहिए, वह शकाब्द 'सामान्यवर्ष' (अर्थात् जिसमें कोई अधिकमास नहीं, ऐसा वर्ष) है।

जैसे– 1801 शकाब्द के आगे ई. सन् 1879, दिनगण 81 और अधिकमास आश्विन लिखा है। इसका अर्थ है कि–शकाब्द 1801 की चैत्रशुक्ल प्रतिपदा को ई. सन् 1879 था और इस दिन सन् 1879 की 81 तारीखें बीत चुकी थीं। किंच– शकाब्द 1801 में आश्विन अधिकमास था।

सारणी नं. (1) से अपने अभीष्ट शकाब्द के आगे लिखा ईस्वी सन्, दिनगण और अधिकमास ज्ञात करें।

पृष्ठ 286 पर दी गई सारणी नं. (2) से अपनी अभीष्ट तिथि के आगे और अभीष्ट मास के नीचे लिखी संख्या लेकर उसे सारणी नं. (1) से लिए गए दिनगण में जोड़ दें। जोड़ने पर जो संख्या मिले, उसे पृष्ठ 287 पर दी गई सारणी नं. (3) में देखें। जिस तारीख को यह संख्या सारणी नं. (3) में लिखी है, वह उस तिथि की लगभग अंग्रेज़ी तारीख है। इस अंग्रेज़ी तारीख में एक या दो दिन का अन्तर हो सकता है। इस अन्तर को जानने के लिए पृष्ठ 288 पर दिए गए '200 वर्ष का कैलेण्डर' की सहायता से इस अंग्रेज़ी तारीख का वार ज्ञात कीजिए। अगर यह वार आपकी तिथि के वार से मेल खाता है तो इस अंग्रेज़ी तारीख को ठीक समझना चाहिए, नहीं तो अपनी तिथि के वार के अनुसार इस अंग्रेज़ी तारीख में 1 या 2 दिन (जितने वारों का अन्तर हो, उतने दिन) जोड़ या घटाकर ठीक अंग्रेज़ी तारीख मालूम कर लेनी चाहिए।

ध्यान दें– शकाब्द 1885 और 1904 क्षयमास वाले वर्ष हैं। क्षयमास होने पर क्षयमास से लगभग 2–3 मास पहले और बाद में दो असंक्रान्ति मास हुआ करते हैं। शास्त्रकारों ने क्षयमास से पूर्ववर्ती असंक्रान्त (संक्रान्ति-रहित) मास को 30 दिन का मास ही माना है। उसे अधिकमास नहीं माना। क्षय से उत्तरवर्ती मास को ही उन्होंने 60 दिन का मास (अर्थात् अधिकमास) माना है। हमने इसी के अनुसार सारणी नं. (1) में इन शकाब्दों में क्षयमास से पूर्ववर्ती असंक्रान्तमास को अधिकमास न लिखकर उत्तरवर्ती असंक्रान्तमास को ही अधिकमास लिखा है।

सारणी नं. (2) का प्रयोग करते समय यह ध्यान रखें–

आपका शकाब्द यदि 'सामान्य वर्ष' (बिना अधिकमास वाला) है तो अपना महीना सबसे पहली ('सामान्यवर्ष' वाली) पंक्ति में देखें, अन्यथा आपके शकाब्द में जो अधिकमास हो, उसी अधिकमास(अधिमास) वाली पंक्ति में उसे देखना होगा।

किंच– यह सारणी [सारणी नं. (2)] दो भागों में विभक्त की गई है। शुक्लपक्ष की तिथियों के लिए भाग–1 और कृष्णपक्ष की तिथियों के लिए भाग–2 प्रयोग में लाइए। यह भी ध्यान में रखिए– यहां हमने

[1] *शकाब्द में 135 जोड़ने पर विक्रम संवत् बन जाता है।*

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कृष्णादि मास ही लिए हैं, जो उत्तर भारत में प्रचलित हैं, शुक्लादि मास नहीं।

आगे दिए गए उदाहरण देखिए–

उदाहरण (1)– शकाब्द 1802 (विक्रम सं. 1937) की भाद्रपद शुक्ल पंचमी (5) गुरुवार को अंग्रेज़ी तारीख मालूम कीजिए ?

सारणी नं. (1) में शकाब्द 1802 के आगे ई. सन् 1880, दिनगण 100 लिखा है। अधिकमास वाला कॉलम खाली है, अतः यह शकाब्द 'सामान्य वर्ष' है। सारणी नं. (2) (भाग–1, शुक्लपक्ष) में सामान्यवर्ष वाली पंक्ति के आगे लिखे भाद्रपद के नीचे तिथि 5 के आगे 153 लिखा है। इसे (153 को) दिनगण (100) में जोड़ने पर 253 हुए। सारणी नं. (3) में 253 संख्या सितम्बर की 10 तारीख में लिखी है। अतः शकाब्द 1802 की भाद्र. शुक्ल पंचमी गुरुवार को ई. सन् 1880 के सितम्बर की लगभग 10 तारीख थी। '200 वर्ष का कैलेण्डर' से पता चला, कि– सन् 1880 ई. की 10 सितम्बर को शुक्रवार था। अतः स्पष्ट हो गया कि– शकाब्द 1802 की भाद्रपद शुक्ल पंचमी गुरुवार को सन् 1880 ई. के सितम्बर की 9 तारीख थी।

उदाहरण (2)– शकाब्द 1850 (वि. सं. 1985) की आश्वि. कृष्ण 8 (अष्टमी) शनिवार की अंग्रेज़ी तारीख ज्ञात कीजिए ?

सारणी नं. (1) में शकाब्द 1850 के आगे ई. सन् 1928, दिनगण 81 और अधिकमास श्रावण लिखा है। सारणी नं. (2) (भाग–2, कृष्णपक्ष) में "श्रावणाधिमास वर्ष"वाली पंक्ति में लिखे गए आश्विन के नीचे तिथि 8 के आगे 200 मिले। इन्हें दिनगण 81 में जोड़ने पर 281 हुए। सारणी नं. (3) में 281 संख्या 8 अक्तूबर को लिखी है। इस प्रकार शकाब्द 1850 की आश्विन कृष्ण 8 शनिवार को ई. सन् 1928 की 8 अक्तूबर मिली। यह 'लगभग तारीख' है। '200 वर्ष का कैलेण्डर' से पता चलता है, कि– ई. सन् 1928 की 8 अक्तूबर को चन्द्रवार था। क्योंकि, शकाब्द 1850 की आश्विन कृष्ण 8 को शनिवार था, अतः स्पष्ट है, कि– इस तिथि के दिन 6 अक्तूबर था।

इधर भी ध्यान दें– शकाब्द के प्रारम्भ में (चैत्रशुक्ल प्रतिपदा को) जो ई. सन् होता है, वह शकाब्द के अन्त तक नहीं रहता। लगभग पौष मास में यह बदल जाता है। अतः जब सारणी नं. (1) से लिए गए 'दिनगण' में सारणी नं. (2) से मिली संख्या जोड़ने पर योगफल 365 से अधिक हो जाए तो उस (योगफल) में से 365 घटाकर शेष-संख्या को सारणी नं. (3) में देखकर अंग्रेज़ी तारीख का निर्णय करना चाहिए। इस स्थिति में सारणी नं. (1) में आपके शकाब्द के आगे लिखे ई. सन् में एक जोड़कर, उसे अपना ई. सन् समझना चाहिए।

यहां एक बात और ध्यान में रखिए– यदि 365 घटाने पर शेष बची संख्या सारणी नं. (3) में फरवरी के बाद के महीनों (1 मार्च से 31 दिसम्बर तक) की किसी तारीख में मिल रही हो तो लीप इयर होने पर* इस (शेष बची) संख्या में से एक घटाकर सारणी नं. (3) से अंग्रेज़ी तारीख ज्ञात करनी चाहिए। इस स्थिति वाले ये दो उदाहरण (उदाहरण 3 और 4) देखिए–

उदाहरण (3)– शकाब्द 1877 की माघकृष्ण 10 (दशमी) चन्द्रवार को अंग्रेज़ी तारीख ज्ञात करें ?

सारणी नं. (1) में शकाब्द 1877 के आगे ई. सन् 1955, दिनगण 83 और अधिकमास भाद्रपद है। सारणी नं. (2) (भाग–2, कृष्णपक्ष) में 'भाद्रपदाधिमास–वर्ष' वाली पंक्ति में लिखे माघ के नीचे लिखी तिथि 10 के आगे 320 है। इसे दिनगण 83 में जोड़ने पर 403 हुए। क्योंकि, यह संख्या 365 से अधिक है, इसलिए इसमें से 365 घटाने पर शेष बची संख्या 38 को सारणी नं. (3) में देखा तो वह 7 फरवरी मिली। यह तारीख 'लगभग' है। कैलेण्डर से 1956 की 7 फरवरी को मंगलवार मिला, अतः स्पष्ट है, शकाब्द 1877 की माघ कृ. 10 चन्द्रवार को सन् 1956 की 6 फरवरी थी।

ध्यान दें– इस उदाहरण में हमने सारणी नं. 1 से मिले ई. सन् में एक जोड़कर उसे स्वीकार किया है, क्योंकि यहां सारणी नं. (1) से मिले दिनगण और सारणी नं. (2) से मिली संख्या का योग 365 से अधिक था।

(इससे सम्बद्ध एक और उदाहरण आगे पृष्ठ **287** पर देखें।)

* *अर्थात् – सारणी नं. (1) में आपके शकाब्द के आगे लिखे ईस्वी सन् में एक जोड़ने पर जो आपका ईस्वी सन् बना है, यदि वह लीप इयर हो तो।*

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सारणी नं. (1)

(तिथि से तारीखज्ञान)

शकाब्द	ईस्वी सन्	दिनगण	अधिक मास	शकाब्द	ईस्वी सन्	दिनगण	अधिक मास	शकाब्द	ईस्वी सन्	दिनगण	अधिक मास
1801	1879	81	आश्विन	1844	1922	87		1887	1965	91	
1802	1880	100		1845	1923	76	ज्येष्ठ	1888	1966	81	श्रावण
1803	1881	88		1846	1924	95		1889	1967	99	
1804	1882	78	श्रावण	1847	1925	83		1890	1968	88	
1805	1883	97		1848	1926	73	चैत्र	1891	1969	77	आषाढ
1806	1884	87		1849	1927	92		1892	1970	96	
1807	1885	75	ज्येष्ठ	1850	1928	81	श्रावण	1893	1971	85	
1808	1886	94		1851	1929	99		1894	1972	75	वैशाख
1809	1887	83		1852	1930	89		1895	1973	93	
1810	1888	72	चैत्र	1853	1931	78	आषाढ	1896	1974	82	भाद्रपद
1811	1889	90		1854	1932	96		1897	1975	101	
1812	1890	79	भाद्रपद	1855	1933	85		1898	1976	90	
1813	1891	98		1856	1934	74	वैशाख	1899	1977	78	श्रावण
1814	1892	88		1857	1935	93		1900	1978	97	
1815	1893	77	आषाढ	1858	1936	82	भाद्रपद	1901	1979	86	
1816	1894	96		1859	1937	101		1902	1980	76	ज्येष्ठ
1817	1895	85		1860	1938	90		1903	1981	94	
1818	1896	74	ज्येष्ठ	1861	1939	80	श्रावण	1904	1982	84	फाल्गुन
1819	1897	92		1862	1940	98		1905	1983	103	
1820	1898	81	आश्विन	1863	1941	86		1906	1984	92	
1821	1899	100		1864	1942	75	ज्येष्ठ	1907	1985	80	श्रावण
1822	*1900	89		1865	1943	94		1908	1986	99	
1823	1901	79	श्रावण	1866	1944	84		1909	1987	88	
1824	1902	98		1867	1945	73	चैत्र	1910	1988	77	ज्येष्ठ
1825	1903	88		1868	1946	92		1911	1989	95	
1826	1904	77	ज्येष्ठ	1869	1947	81	श्रावण	1912	1990	85	
1827	1905	94		1870	1948	100		1913	1991	75	वैशाख
1828	1906	83		1871	1949	88		1914	1992	94	
1829	1907	73	चैत्र	1872	1950	77	आषाढ	1915	1993	82	भाद्रपद
1830	1908	92		1873	1951	96		1916	1994	100	
1831	1909	80	श्रावण	1874	1952	85		1917	1995	90	
1832	1910	99		1875	1953	74	वैशाख	1918	1996	79	आषाढ
1833	1911	89		1876	1954	93		1919	1997	97	
1834	1912	78	आषाढ	1877	1955	83	भाद्रपद	1920	1998	86	
1835	1913	96		1878	1956	102		1921	1999	76	ज्येष्ठ
1836	1914	85		1879	1957	90		1922	2000	95	
1837	1915	74	वैशाख	1880	1958	79	श्रावण	1923	2001	84	आश्विन
1838	1916	93		1881	1959	98		1924	2002	102	
1839	1917	82	भाद्रपद	1882	1960	87		1925	2003	91	
1840	1918	101		1883	1961	75	ज्येष्ठ	1926	2004	80	श्रावण
1841	1919	90		1884	1962	94		1927	2005	98	
1842	*1920	80	श्रावण	1885	1963	84					
1843	1921	98		1886	1964	73	चैत्र				

*ध्यान रहे– यद्यपि 4 से पूरी तरह विभाजित होने वाले ईस्वी सन् 'लीप इयर' होते हैं, लेकिन विशेष नियम के अनुसार सन् 1900 ई. लीप इयर नहीं है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सारणी नं. (2) (तिथि से तारीखज्ञान) भाग–1 (शुक्लपक्ष के लिए)

सामान्य वर्ष		चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	......
चैत्राधिमास वर्ष		प्र. चैत्र	द्वि चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
वैशाखाधिमास वर्ष		चैत्र	प्र वैशा	द्वि वैशा.	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
ज्येष्ठाधिमास वर्ष		चैत्र	वैशाख	प्र.ज्येष्ठ	द्वि.ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
आषाढाधिमास वर्ष		चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	प्र आषा.	द्वि.आषा.	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
श्रावणाधिमास वर्ष		चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	प्र.श्राव.	द्वि.श्राव	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
भाद्रपदाधिमास वर्ष		चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	प्र.भाद्र.	द्वि.भाद्र.	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
आश्विनाधिमास वर्ष		चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	प्र.आश्वि.	द्वि आश्वि	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
फाल्गुनाधिमास वर्ष		चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	प्र.फाल्गु	द्वि.फाल्गु
तिथि	1	1	31	60	90	119	149	178	208	237	267	296	326	355
"	2	2	32	61	91	120	150	179	209	238	268	297	327	356
"	3	3	33	62	92	121	151	180	210	239	269	298	328	357
"	4	4	34	63	93	122	152	181	211	240	270	299	329	358
"	5	5	35	64	94	123	153	182	212	241	271	300	330	389
"	6	6	36	65	95	124	154	183	213	242	272	301	331	360
"	7	7	37	66	96	125	155	184	214	243	273	302	332	361
"	8	8	38	67	97	126	156	185	215	244	274	303	333	362
"	9	9	39	68	98	127	157	186	216	245	275	304	334	363
"	10	10	40	69	99	128	158	187	217	246	276	305	335	364
"	11	11	41	70	100	129	159	188	218	247	277	306	336	365
"	12	12	42	71	101	130	160	189	219	248	278	307	337	366
"	13	13	43	72	102	131	161	190	220	249	279	308	338	367
"	14	14	44	73	103	132	162	191	221	250	280	309	339	368
"	15	15	45	74	104	133	163	192	222	251	281	310	340	369

सारणी नं. (2) (तिथि से तारीखज्ञान) भाग–2 (कृष्णपक्ष के लिए)

सामान्य वर्ष		वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र	– –
चैत्राधिमास वर्ष		द्वि.चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
वैशाखाधिमास वर्ष		प्र.वैशा.	द्वि.वैशा.	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
ज्येष्ठाधिमास वर्ष		वैशाख	प्र.ज्येष्ठ	द्वि.ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
आषाढाधिमास वर्ष		वैशाख	ज्येष्ठ	प्र.आषा.	द्वि.आषा.	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
श्रावणाधिमास वर्ष		वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	प्र.श्राव.	द्वि.श्राव.	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
भाद्रपदाधिमास वर्ष		वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	प्र.भाद्र.	द्वि.भाद्र.	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
आश्विनाधिमास वर्ष		वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	प्र.आश्वि.	द्वि.आश्वि	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
फाल्गुनाधिमास वर्ष		वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	प्र.फाल्गु	द्वि.फाल्गु	चैत्र
तिथि	1	16	46	75	105	134	164	193	223	252	282	311	341	370
"	2	17	47	76	106	135	165	194	224	253	283	312	342	371
"	3	18	48	77	107	136	166	195	225	254	284	313	343	372
"	4	19	49	78	108	137	167	196	226	255	285	314	344	373
"	5	20	50	79	109	138	168	197	227	256	286	315	345	374
"	6	21	51	80	110	139	169	198	228	257	287	316	346	375
"	7	22	52	81	111	140	170	199	229	258	288	317	347	376
"	8	23	53	82	112	141	171	200	230	259	289	318	348	377
"	9	24	54	83	113	142	172	201	231	260	290	319	349	378
"	10	25	55	84	114	143	173	202	232	261	291	320	350	379
"	11	26	56	85	115	144	174	203	233	262	292	321	351	380
"	12	27	57	86	116	145	175	204	234	263	293	322	352	381
"	13	28	58	87	117	146	176	205	235	264	294	323	353	382
"	14	29	59	88	118	147	177	206	236	265	295	324	354	383
"	30	30	60	89	119	148	178	207	237	266	296	325	355	384

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सारणी नं. (3)
(तिथि से तारीखज्ञान)

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
1	1	32	60	91	121	152	182	213	244	274	305	335
2	2	33	61	92	122	153	183	214	245	275	306	336
3	3	34	62	93	123	154	184	215	246	276	307	337
4	4	35	63	94	124	155	185	216	247	277	308	338
5	5	36	64	95	125	156	186	217	248	278	309	339
6	6	37	65	96	126	157	187	218	249	279	310	340
7	7	38	66	97	127	158	188	219	250	280	311	341
8	8	39	67	98	128	159	189	220	251	281	312	342
9	9	40	68	99	129	160	190	221	252	282	313	343
10	10	41	69	100	130	161	191	222	253	283	314	344
11	11	42	70	101	131	162	192	223	254	284	315	345
12	12	43	71	102	132	163	193	224	255	285	316	346
13	13	44	72	103	133	164	194	225	256	286	317	347
14	14	45	73	104	134	165	195	226	257	287	318	348
15	15	46	74	105	135	166	196	227	258	288	319	349
16	16	47	75	106	136	167	197	228	259	289	320	350
17	17	48	76	107	137	168	198	229	260	290	321	351
18	18	49	77	108	138	169	199	230	261	291	322	352
19	19	50	78	109	139	170	200	231	262	292	323	353
20	20	51	79	110	140	171	201	232	263	293	324	354
21	21	52	80	111	141	172	202	233	264	294	325	355
22	22	53	81	112	142	173	203	234	265	295	326	356
23	23	54	82	113	143	174	204	235	266	296	327	357
24	24	55	83	114	144	175	205	236	267	297	328	358
25	25	56	84	115	145	176	206	237	268	298	329	359
26	26	57	85	116	146	177	207	238	269	299	330	360
27	27	58	86	117	147	178	208	239	270	300	331	361
28	28	59	87	118	148	179	209	240	271	301	332	362
29	29	60	88	119	149	180	210	241	272	302	333	363
30	30	— —	89	120	150	181	211	242	273	303	334	364
31	31	— —	90	— —	151	— —	212	243	— —	304	— —	365

उदाहरण (4)— शकाब्द 1897 की फाल्गुन शुक्ल 1 (प्रतिपदा) चन्द्रवार को कौन–सी अंग्रेज़ी तारीख थी ?

सारणी नं. (1) में शकाब्द 1897 के आगे ई. सन् 1975, दिनगण 101 है। इस शकाब्द में अधिकमास नहीं है, यह 'सामान्यवर्ष ' है। सारणी नं. (2) (भाग–1, शुक्लपक्ष) में 'सामान्यवर्ष' वाली पंक्ति में लिखे फाल्गुन के नीचे तिथि 1 के आगे 326 है। इन्हें 101 में जोड़ने पर प्राप्त 427 हुए। इनमें से 365 घटाने पर शेष 62 मिले। क्योंकि, हमने 365 घटाए हैं, अतः हमारा ई. सन् 1976 हुआ। सारणी नं. (3) में 62 संख्या 3 मार्च को (अर्थात् फरवरी के बाद के महीने में) मिल रही है और हमारा ई. सन् 1976 लीप इयर भी है, अतः इस शेष बची 62 संख्या में से एक घटाकर मिली 61 संख्या को सारणी नं. (3) में देखा तो यह (61) संख्या 2 मार्च को मिली। इसका अभिप्राय हुआ कि– शकाब्द 1897 की फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा को ई. सन् 1976 की लगभग 2 मार्च थी। लेकिन कैलेण्डर बतलाता है कि– ई. सन् 1976 की 2 मार्च को मंगलवार था, अतः हमारी इस तिथि को 1 मार्च सिद्ध हुआ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

200 वर्ष का कैलेण्डर

ईस्वी सन्	ईस्वी सन्	ईस्वी सन्	ईस्वी सन्	ईस्वी सन्	ईस्वी सन्	ईस्वी सन्	ईस्वी सन्	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
1850	1878		1918	1946	1974	2002	2030	2	5	5	1	3	6	1	4	0	2	5	0
1851	1879		1919	1947	1975	2003	2031	3	6	6	2	4	0	2	5	1	3	6	1
1852	1880		1920	1948	1976	2004	2032	4	0	1	4	6	2	4	0	3	5	1	3
1853	1881		1921	1949	1977	2005	2033	6	2	2	5	0	3	5	1	4	6	2	4
1854	1882		1922	1950	1978	2006	2034	0	3	3	6	1	4	6	2	5	0	3	5
1855	1883		1923	1951	1979	2007	2035	1	4	4	0	2	5	0	3	6	1	4	6
1856	1884		1924	1952	1980	2008	2036	2	5	6	2	4	0	2	5	1	3	6	1
1857	1885		1925	1953	1981	2009	2037	4	0	0	3	5	1	3	6	2	4	0	2
1858	1886		1926	1954	1982	2010	2038	5	1	1	4	6	2	4	0	3	5	1	3
1859	1887		1927	1955	1983	2011	2039	6	2	2	5	0	3	5	1	4	6	2	4
1860	1888		1928	1956	1984	2012	2040	0	3	4	0	2	5	0	3	6	1	4	6
1861	1889	1901	1929	1957	1985	2013	2041	2	5	5	1	3	6	1	4	0	2	5	0
1862	1890	1902	1930	1958	1986	2014	2042	3	6	6	2	4	0	2	5	1	3	6	1
1863	1891	1903	1931	1959	1987	2015	2043	4	0	0	3	5	1	3	6	2	4	0	2
1864	1892	1904	1932	1960	1988	2016	2044	5	1	2	5	0	3	5	1	4	6	2	4
1865	1893	1905	1933	1961	1989	2017	2045	0	3	3	6	1	4	6	2	5	0	3	5
1866	1894	1906	1934	1962	1990	2018	2046	1	4	4	0	2	5	0	3	6	1	4	6
1867	1895	1907	1935	1963	1991	2019	2047	2	5	5	1	3	6	1	4	0	2	5	0
1868	1896	1908	1936	1964	1992	2020	2048	3	6	0	3	5	1	3	6	2	4	0	2
1869	1897	1909	1937	1965	1993	2021	2049	5	1	1	4	6	2	4	0	3	5	1	3
1870	1898	1910	1938	1966	1994	2022	2050	6	2	2	5	0	3	5	1	4	6	2	4
1871	1899	1911	1939	1967	1995	2023		0	3	3	6	1	4	6	2	5	0	3	5
1872		1912	1940	1968	1996	2024		1	4	5	1	3	6	1	4	0	2	5	0
1873		1913	1941	1969	1997	2025		3	6	6	2	4	0	2	5	1	3	6	1
1874		1914	1942	1970	1998	2026		4	0	0	3	5	1	3	6	2	4	0	2
1875		1915	1943	1971	1999	2027		5	1	1	4	6	2	4	0	3	5	1	3
1876		1916	1944	1972	2000	2028		6	2	3	6	1	4	6	2	5	0	3	5
1877	1900	1917	1945	1973	2001	2029		1	4	4	0	2	5	0	3	6	1	4	6

अपने ईस्वी सन् के आगे और अभीष्ट महीने के नीचे लिखी संख्या को अपनी अभीष्ट तारीख की संख्या में जोड़कर सात से भाग देने पर जो शेष बचेगा, वह उस तारीख का वार होगा। 1 बचे तो रविवार, 2 बचे तो सोमवार... ...इत्यादि समझें। 0 बचे तो शनिवार समझना चाहिए।

जैसे– ई. सन् 1908 की 26 अक्तूबर को वार मालूम करना है। ई. सन् 1908 के आगे अक्तूबर के नीचे 4 संख्या मिली। इसे तारीख की संख्या 26 में जोड़ने पर 30 संख्या हुई। इसे सात से भाग देने पर शेष 2 बचे। इसका अभिप्राय हुआ, – सन् 1908 ई. की 26 अक्तूबर को सोमवार था।

दैनिक व्यवहार के लिए वार के ज्ञान का सरल ढंग

सभी लोगों को हररोज वार की जरूरत पड़ती है। इसके लिए अपने वर्तमान (मौजूदा) ईस्वी सन् के आगे और वर्तमान महीने के नीचे इस कोष्ठक में दी गई संख्या को एक महीने तक (जब तक वह महीना समाप्त नहीं होता तब तक) याद रखिए। इस संख्या को हम उस मास का 'ध्रुवांक' कहते हैं। जिसदिन वार के बारे में सन्देह हो उसदिन की तारीख की संख्या को इस 'ध्रुवांक' में जोड़कर सात का भाग देकर शेष बची संख्या से उसदिन की संख्या का वार तुरन्त जाना जा सकता है।

सन्देहास्पद तारीख– जब किसी दिन का वार निश्चित रूप से ज्ञात हो, लेकिन यह निश्चय न हो सके कि आज अमुक (फलां) तारीख है या अमुक। ऐसी स्थिति में दोनों तारीखों में से किसी एक को शुद्ध मान लें और उसमें वर्तमान मास के 'ध्रुवांक' जोड़कर 7 का भाग देकर वार मालूम करें। अगर वह वार उस दिन के वार से मिलता है तो यह स्पष्ट है– उसदिन वही तारीख है, जिसे आपने शुद्ध माना है, नहीं तो वार के अनुसार उस तारीख में एक जोड़ने या घटाने से उसदिन की ठीक तारीख मालूम होगी।

****

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

एक ही समय ग्रहों के भोगांश स्थानभेद से बदलते नहीं हैं। वे भूगोल पर सर्वत्र एक–से ही रहते हैं, लेकिन लग्न स्थानभेद से प्रतिक्षण बदलता रहता है। अतः दैवज्ञ के लिए किसी स्थान पर अभीष्ट समय में लग्न जानना एक समस्या है। इस समस्या के समाधान के लिए मेरी एक पुस्तक 'भारतीय लग्ननिर्णय' है,* जो भारतीय दैवज्ञों की इस समस्या का अत्यन्त सरलता से त्वरित समाधान करती है। यहां उसी पुस्तक के दो 'कोष्ठक' आगे दिए जा रहे हैं, जिनके आधार पर भारत के प्रसिद्ध लगभग 225 नगरों में अभीष्ट लग्न का प्रारम्भकाल दो मिनट से भी कम समय में दैवज्ञ मात्र दो साधारण जोड़–घटाव द्वारा ही निम्न प्रकार से तुरन्त ज्ञात कर सकता है–

कोष्ठक (1) [लग्नसाधन–कोष्ठक (1)] से अभीष्ट तारीख के आगे लिखे अपने अभीष्ट लग्न के घं. मि. लेकर उनमें **कोष्ठक (2)** से अपने नगर के आगे अभीष्ट लग्न के नीचे लिखे मिनटों को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने पर आपके अभीष्ट नगर में अभीष्ट तारीख को अभीष्ट लग्न का प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.) ज्ञात हो जाएगा। यहां यह ध्यान रखें– यदि **कोष्ठक (1)** से प्राप्त घं. मि. में **कोष्ठक (2)** से प्राप्त धन (+) मिनट जोड़ने पर घण्टे 24 या 24 से अधिक हो जाएं तो उनमें से 24 घण्टा घटा दें। इसी तरह यदि **कोष्ठक (1)** से प्राप्त घं. मि. **कोष्ठक (2)** से प्राप्त ऋण (–) मिनट से कम हों तो उनमें 24 घं. जोड़कर घटाव करना चाहिए। **स्पष्टता के लिए नीचे दिए गए उदाहरण देखिए–**

उदाहरण (i) – 11 अक्तूबर, 1986 ई. को मुम्बई में धनु लग्न का प्रारम्भकाल ऐसे ज्ञात किया जाएगा–

घं.	मि.	
10	14	[कोष्ठक (1), 11 अक्तू.; धनु लग्न]
+	72	[कोष्ठक (2), मुम्बई; धनु लग्न]
11	**26**	**[11 अक्तूबर, 1986 को मुम्बई में धनुलग्न का प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.)]**

ध्यान दें – यदि लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों (मार्च से दिसम्बर तक के महीनों) की तारीखों में एक जोड़कर कोष्ठक (1) को प्रयोग में लाना चाहिए। **इसके लिए यह उदाहरण देखिए –**

उदाहरण (ii) – 11 सितम्बर, 1980 ई. को अहमदाबाद (गुजरात) में तुलालग्न का प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.) इस प्रकार ज्ञात किया जाएगा –

घं.	मि.	
8	04	[कोष्ठक (1), 12 (= 11 + 1) सितं.; तुलालग्न]
	+55	[कोष्ठक (2), अहमदाबाद; तुलालग्न]
8	**59**	**[11 सितंबर, 1980 को अहमदाबाद में तुलालग्न का प्रारम्भकाल(भा. स्टैं. टा.)]**

ध्यान रहे – लीपइयर में जनवरी और फरवरी मासों की तारीखों में कोष्ठक (1) के प्रयोग के लिए एक नहीं जोड़ना चाहिए। इससे सम्बद्ध यह उदाहरण देखिए –

उदाहरण (iii) – 10 फरवरी, 1980 ई. को अहमदाबाद में तुलालग्न का प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.) ऐसे मालूम कीजिए –

घं.	मि.	
22	05	[कोष्ठक (1), 10 फरवरी, तुलालग्न]
	+55	[कोष्ठक (2), अहमदाबाद, तुलालग्न]
23	**00**	**[10 फरवरी, 1980 ई. को अहमदाबाद में तुलालग्न का प्रारम्भकाल(भा. स्टैं. टा.)]**

* इस पुस्तक का विज्ञापन पृष्ठ 183 पर देखिए।

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यह भी ध्यान में रखिए– कोष्ठक (1) में दिए गए घं. मि. लग्नों का **'अस्पष्ट प्रारम्भकाल'** है। अस्पष्ट प्रारम्भकाल के इन घं. मि. में कोष्ठक (2) से प्राप्त मिनटों का जोड़ – घटाव कर देने पर जो लग्न का प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.) प्राप्त होता है, वह लग्न का **'स्पष्ट प्रारम्भकाल'** है। यदि लग्न का 'अस्पष्ट प्रारम्भकाल' [कोष्ठक (1) से प्राप्त काल] अर्धरात्रि से पहले का (यानी P.M.) और लग्न का स्पष्ट प्रारम्भकाल अर्धरात्रि के बाद का (यानी A.M.) हो तो लग्न के स्पष्ट प्रारम्भकाल में 4 मि. जोड़कर, उसे लग्न का वास्तविक स्पष्टकाल समझना चाहिए। इसी प्रकार यदि लग्न का अस्पष्ट प्रारम्भकाल अर्धरात्रि के बाद का (यानी A.M.) और स्पष्ट प्रारम्भकाल अर्धरात्रि से पहले का (यानी P.M.) हो तो स्पष्ट प्रारम्भकाल में से 4 मि. घटाकर उसे लग्न का वास्तविक प्रारम्भकाल समझना चाहिए। **इस तरह के दो उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं –**

उदाहरण (i) – 24 मार्च, 1965 ई. को अमृतसर में धनुलग्न का प्रारम्भकाल इस प्रकार जाना जाएगा–

घं.	मि.	
23	23	[कोष्ठक (1), 24 मार्च; धनुलग्न का अस्पष्ट प्रारम्भकाल]
+	92	[कोष्ठक (2), अमृतसर; धनुलग्न]
00	55	[धनुलग्न का स्पष्ट प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.)]
	+ 4	
00	**59**	**[24 मार्च,1965 ई. को अमृतसर में धनुलग्न का वास्तविक प्रारम्भकाल (भा.स्टैं.टा.)]**

क्योंकि, यहां कोष्ठक (1) से प्राप्त धनुलग्न का अस्पष्ट प्रारम्भकाल (23 घं. 23 मि.) अर्धरात्रि से पहले का (P.M.) और स्पष्ट प्रारम्भकाल (00 घं. 55 मि.) अर्धरात्रि से बाद का (A.M.) है, अतः पूर्वोक्त निर्देशानुसार इस स्पष्ट प्रारम्भकाल (00 घं. 55 मि.) में 4 मिनट जोड़कर प्राप्त काल 00 घं. 59 मि. को धनुलग्न का वास्तविक प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.) माना गया है।

अब इसके साथ वाला दूसरा उदाहरण भी लेते हैं –

उदाहरण (ii) – 2 नवम्बर, 1984 ई. को गुवाहाटी (आसाम) में सिंहलग्न का प्रारम्भकाल हम इसप्रकार ज्ञात करेंगे–

घं.	मि.	
0	56	[कोष्ठक (1), 3 (= 2 + 1) नवंबर, सिंहलग्न का अस्पष्ट प्रारम्भकाल]
–	64	[कोष्ठक (2), गुवाहाटी, सिंहलग्न]
23	52	[सिंहलग्न का स्पष्ट प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.)]
	– 4	
23	**48**	**[2 नवम्बर, 1984 को गुवाहाटी में सिंहलग्न का वास्तविक प्रारम्भकाल(भा. स्टैं. टा.)]**

यहां अस्पष्ट प्रारम्भकाल A.M. और स्पष्ट प्रारम्भकाल P.M. है, अतः पूर्वोक्त निर्देशानुसार लग्न के स्पष्ट प्रारम्भकाल में से 4 मिनट घटाकर, उसे ही सिंहलग्न का वास्तविक प्रारम्भकाल माना गया है।

इन कोष्ठकों से जाना गया लग्नारम्भकाल चित्रापक्षीय निरयणानुसारी होगा–यह भी जान लेना चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्नसाधन कोष्ठक (1)

(लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़कर इस कोष्ठक का प्रयोग करें।)

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जन. 1	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	00 46	02 43	04 50	07 00	09 01	10 54
1/2	12 44	14 41	16 48	18 58	20 59	22 52	00 42	02 39	04 46	06 56	08 57	10 50
2/3	12 40	14 37	16 44	18 54	20 55	22 48	00 38	02 35	04 42	06 52	08 53	10 46
3/4	12 36	14 33	16 40	18 50	20 51	22 44	00 34	02 31	04 38	06 48	08 49	10 42
4/5	12 32	14 29	16 36	18 46	20 47	22 40	00 30	02 27	04 34	06 44	08 45	10 38
5/6	12 28	14 25	16 32	18 42	20 43	22 36	00 26	02 23	04 30	06 40	08 41	10 34
6/7	12 24	14 21	16 28	18 38	20 39	22 32	00 22	02 19	04 26	06 36	08 37	10 30
7/8	12 20	14 17	16 24	18 34	20 35	22 28	00 18	02 15	04 22	06 32	08 33	10 26
8/9	12 16	14 13	16 20	18 30	20 31	22 24	00 14	02 11	04 18	06 28	08 29	10 22
9/10	12 12	14 09	16 16	18 26	20 27	22 20	00 10	02 07	04 14	06 24	08 25	10 18
10/11	12 09	14 06	16 13	18 23	20 24	22 17	00 07	02 04	04 11	06 21	08 22	10 15
11/12	12 05	14 02	16 09	18 19	20 20	22 13	00 03	02 00	04 07	06 17	08 18	10 11
12/13	12 01	13 58	16 05	18 15	20 16	22 09	23 59	01 56	04 03	06 13	08 14	10 07
13/14	11 57	13 54	16 01	18 11	20 12	22 05	23 55	01 52	03 59	06 09	08 10	10 03
14/15	11 53	13 50	15 57	18 07	20 08	22 01	23 51	01 48	03 55	06 05	08 06	09 59
15/16	11 49	13 46	15 53	18 03	20 04	21 57	23 47	01 44	03 51	06 01	08 02	09 55
16/17	11 45	13 42	15 49	17 59	20 00	21 53	23 43	01 40	03 47	05 57	07 58	09 51
17/18	11 41	13 38	15 45	17 55	19 56	21 49	23 39	01 36	03 43	05 53	07 54	09 47
18/19	11 37	13 34	15 41	17 51	19 52	21 45	23 35	01 32	03 39	05 49	07 50	09 43
19/20	11 33	13 30	15 37	17 47	19 48	21 41	23 31	01 28	03 35	05 45	07 46	09 39
20/21	11 29	13 26	15 33	17 43	19 44	21 37	23 27	01 24	03 31	05 41	07 42	09 35
21/22	11 25	13 22	15 29	17 39	19 40	21 33	23 23	01 20	03 27	05 37	07 38	09 31
22/23	11 21	13 18	15 25	17 35	19 36	21 29	23 19	01 16	03 23	05 33	07 34	09 27
23/24	11 17	13 14	15 21	17 31	19 32	21 25	23 15	01 12	03 19	05 29	07 30	09 23
24/25	11 13	13 10	15 17	17 27	19 28	21 21	23 11	01 08	03 15	05 25	07 26	09 19
25/26	11 09	13 06	15 13	17 23	19 24	21 17	23 07	01 04	03 11	05 21	07 22	09 15
26/27	11 06	13 03	15 10	17 20	19 21	21 14	23 04	01 01	03 08	05 18	07 19	09 12
27/28	11 02	12 59	15 06	17 16	19 17	21 10	23 00	00 57	03 04	05 14	07 15	09 08
28/29	10 58	12 55	15 02	17 12	19 13	21 06	22 56	00 53	03 00	05 10	07 11	09 04
29/30	10 54	12 51	14 58	17 08	19 09	21 02	22 52	00 49	02 56	05 06	07 07	09 00
30/31	10 50	12 47	14 54	17 04	19 05	20 58	22 48	00 45	02 52	05 02	07 03	08 56
31	10 46	12 43	14 50	17 00	19 01	20 54	22 44	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --
फर 1	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	00 41	02 48	04 58	06 59	08 52
1/2	10 42	12 39	14 46	16 56	18 57	20 50	22 40	00 37	02 44	04 54	06 55	08 48
2/3	10 38	12 35	14 42	16 52	18 53	20 46	22 36	00 33	02 40	04 50	06 51	08 44
3/4	10 34	12 31	14 38	16 48	18 49	20 42	22 32	00 29	02 36	04 46	06 47	08 40
4/5	10 30	12 27	14 34	16 44	18 45	20 38	22 28	00 25	02 32	04 42	06 43	08 36
5/6	10 26	12 23	14 30	16 40	18 41	20 34	22 24	00 21	02 28	04 38	06 39	08 32
6/7	10 22	12 19	14 26	16 36	18 37	20 30	22 20	00 17	02 24	04 34	06 35	08 28
7/8	10 18	12 15	14 22	16 32	18 33	20 26	22 16	00 13	02 20	04 30	06 31	08 24
8/9	10 14	12 11	14 18	16 28	18 29	20 22	22 12	00 09	02 16	04 26	06 27	08 20
9/10	10 10	12 07	14 14	16 24	18 25	20 18	22 08	00 05	02 12	04 22	06 23	08 16
10/11	10 07	12 04	14 11	16 21	18 22	20 15	22 05	00 02	02 09	04 19	06 20	08 13
11/12	10 03	12 00	14 07	16 17	18 18	20 11	22 01	23 58	02 05	04 15	06 16	08 09
12/13	09 59	11 56	14 03	16 13	18 14	20 07	21 57	23 54	02 01	04 11	06 12	08 05
13/14	09 55	11 52	13 59	16 09	18 10	20 03	21 53	23 50	01 57	04 07	06 08	08 01
14/15	09 51	11 48	13 55	16 05	18 06	19 59	21 49	23 46	01 53	04 03	06 04	07 57
15/16	09 47	11 44	13 51	16 01	18 02	19 55	21 45	23 42	01 49	03 59	06 00	07 53
16/17	09 43	11 40	13 47	15 57	17 58	19 51	21 41	23 38	01 45	03 55	05 56	07 49
17/18	09 39	11 36	13 43	15 53	17 54	19 47	21 37	23 34	01 41	03 51	05 52	07 45
18/19	09 35	11 32	13 39	15 49	17 50	19 43	21 33	23 30	01 37	03 47	05 48	07 41
19/20	09 31	11 28	13 35	15 45	17 46	19 39	21 29	23 26	01 33	03 43	05 44	07 37
20/21	09 27	11 24	13 31	15 41	17 42	19 35	21 25	23 22	01 29	03 39	05 40	07 33
21/22	09 23	11 20	13 27	15 37	17 38	19 31	21 21	23 18	01 25	03 35	05 36	07 29
22/23	09 19	11 16	13 23	15 33	17 34	19 27	21 17	23 14	01 21	03 31	05 32	07 25
23/24	09 15	11 12	13 19	15 29	17 30	19 23	21 13	23 10	01 17	03 27	05 28	07 21
24/25	09 11	11 08	13 15	15 25	17 26	19 19	21 09	23 06	01 13	03 23	05 24	07 17
25/26	09 07	11 04	13 11	15 21	17 22	19 15	21 05	23 02	01 09	03 19	05 20	07 13
26/27	09 03	11 00	13 07	15 17	17 18	19 11	21 01	22 58	01 05	03 15	05 16	07 09
27/28	09 00	10 57	13 04	15 14	17 15	19 08	20 58	22 55	01 02	03 12	05 13	07 06
28/29	08 56	10 53	13 00	15 10	17 11	19 04	20 54	22 51	00 58	03 08	05 09	07 02
29	08 52	10 49	12 56	15 06	17 07	19 00	20 50	22 47	-- --	-- --	-- --	-- --

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्नसाधन कोष्ठक (1)

(भाग 2)

(लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़कर इस कोष्ठक का प्रयोग करें।)

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मार्च 1	-- --	-- --	-- --	-- --	--- ---	-- --	-- --	-- --	00 58	03 08	05 09	07 02
1/2	08 52	10 49	12 56	15 06	17 07	19 00	20 50	22 47	00 54	03 04	05 05	06 58
2/3	08 48	10 45	12 52	15 02	17 03	18 56	20 46	22 43	00 50	03 00	05 01	06 54
3/4	08 44	10 41	12 48	14 58	16 59	18 52	20 42	22 39	00 46	02 56	04 57	06 50
4/5	08 40	10 37	12 44	14 54	16 55	18 48	20 38	22 35	00 42	02 52	04 53	06 46
5/6	08 36	10 33	12 40	14 50	16 51	18 44	20 34	22 31	00 38	02 48	04 49	06 42
6/7	08 32	10 29	12 36	14 46	16 47	18 40	20 30	22 27	00 34	02 44	04 45	06 38
7/8	08 28	10 25	12 32	14 42	16 43	18 36	20 26	22 23	00 30	02 40	04 41	06 34
8/9	08 24	10 21	12 28	14 38	16 39	18 32	20 22	22 19	00 26	02 36	04 37	06 30
9/10	08 20	10 17	12 24	14 34	16 35	18 28	20 18	22 15	00 22	02 32	04 33	06 26
10/11	08 17	10 14	12 21	14 31	16 32	18 25	20 15	22 12	00 19	02 29	04 30	06 23
11/12	08 13	10 10	12 17	14 27	16 28	18 21	20 11	22 08	00 15	02 25	04 26	06 19
12/13	08 09	10 06	12 13	14 23	16 24	18 17	20 07	22 04	00 11	02 21	04 22	06 15
13/14	08 05	10 02	12 09	14 19	16 20	18 13	20 03	22 00	00 07	02 17	04 18	06 11
14/15	08 01	09 58	12 05	14 15	16 16	18 09	19 59	21 56	00 03	02 13	04 14	06 07
15/16	07 57	09 54	12 01	14 11	16 12	18 05	19 55	21 52	23 59	02 09	04 10	06 03
16/17	07 53	09 50	11 57	14 07	16 08	18 01	19 51	21 48	23 55	02 05	04 06	05 59
17/18	07 49	09 46	11 53	14 03	16 04	17 57	19 47	21 44	23 51	02 01	04 02	05 55
18/19	07 45	09 42	11 49	13 59	16 00	17 53	19 43	21 40	23 47	01 57	03 58	05 51
19/20	07 41	09 38	11 45	13 55	15 56	17 49	19 39	21 36	23 43	01 53	03 54	05 47
20/21	07 37	09 34	11 41	13 51	15 52	17 45	19 35	21 32	23 39	01 49	03 50	05 43
21/22	07 33	09 30	11 37	13 47	15 48	17 41	19 31	21 28	23 35	01 45	03 46	05 39
22/23	07 29	09 26	11 33	13 43	15 44	17 37	19 27	21 24	23 31	01 41	03 42	05 35
23/24	07 25	09 22	11 29	13 39	15 40	17 33	19 23	21 20	23 27	01 37	03 38	05 31
24/25	07 21	09 18	11 25	13 35	15 36	17 29	19 19	21 16	23 23	01 33	03 34	05 27
25/26	07 17	09 14	11 21	13 31	15 32	17 25	19 15	21 12	23 19	01 29	03 30	05 23
26/27	07 13	09 10	11 17	13 27	15 28	17 21	19 11	21 08	23 15	01 25	03 26	05 19
27/28	07 10	09 07	11 14	13 24	15 25	17 18	19 08	21 05	23 12	01 22	03 23	05 16
28/29	07 06	09 03	11 10	13 20	15 21	17 14	19 04	21 01	23 08	01 18	03 19	05 12
29/30	07 02	08 59	11 06	13 16	15 17	17 10	19 00	20 57	23 04	01 14	03 15	05 08
30/31	06 58	08 55	11 02	13 12	15 13	17 06	18 56	20 53	23 00	01 10	03 11	05 04
31	06 54	08 51	10 58	13 08	15 09	17 02	18 52	20 49	22 56	— —	— —	-- --
अप्रैल 1	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	01 06	03 07	05 00
1/2	06 50	08 47	10 54	13 04	15 05	16 58	18 48	20 46	22 52	01 02	03 03	04 56
2/3	06 46	08 43	10 50	13 00	15 01	16 54	18 44	20 42	22 48	00 58	02 59	04 52
3/4	06 42	08 39	10 46	12 56	14 57	16 50	18 40	20 38	22 44	00 54	02 55	04 48
4/5	06 38	08 35	10 42	12 52	14 53	16 46	18 36	20 34	22 40	00 50	02 51	04 44
5/6	06 34	08 31	10 38	12 48	14 49	16 42	18 32	20 30	22 36	00 46	02 47	04 40
6/7	06 30	08 27	10 34	12 44	14 45	16 38	18 28	20 26	22 32	00 42	02 43	04 36
7/8	06 26	08 23	10 30	12 40	14 41	16 34	18 24	20 22	22 28	00 38	02 39	04 32
8/9	06 22	08 19	10 26	12 36	14 37	16 30	18 20	20 18	22 24	00 34	02 35	04 28
9/10	06 18	08 15	10 22	12 32	14 33	16 26	18 16	20 14	22 20	00 30	02 31	04 24
10/11	06 15	08 12	10 19	12 29	14 30	16 23	18 13	20 11	22 17	00 27	02 28	04 21
11/12	06 11	08 08	10 15	12 25	14 26	16 19	18 09	20 07	22 13	00 23	02 24	04 17
12/13	06 07	08 04	10 11	12 21	14 22	16 15	18 05	20 03	22 09	00 19	02 20	04 13
13/14	06 03	08 00	10 07	12 17	14 18	16 11	18 01	19 59	22 05	00 15	02 16	04 09
14/15	05 59	07 56	10 03	12 13	14 14	16 07	17 57	19 55	22 01	00 11	02 12	04 05
15/16	05 55	07 52	09 59	12 09	14 10	16 03	17 53	19 51	21 57	00 07	02 08	04 01
16/17	05 51	07 48	09 55	12 05	14 06	15 59	17 49	19 47	21 53	00 03	02 04	03 57
17/18	05 47	07 44	09 51	12 01	14 02	15 55	17 45	19 43	21 49	23 59	02 00	03 53
18/19	05 43	07 40	09 47	11 57	13 58	15 51	17 41	19 39	21 45	23 55	01 56	03 49
19/20	05 39	07 36	09 43	11 53	13 54	15 47	17 37	19 35	21 41	23 51	01 52	03 45
20/21	05 35	07 32	09 39	11 49	13 50	15 43	17 33	19 31	21 37	23 47	01 48	03 41
21/22	05 31	07 28	09 35	11 45	13 46	15 39	17 29	19 27	21 33	23 43	01 44	03 37
22/23	05 27	07 24	09 31	11 41	13 42	15 35	17 25	19 23	21 29	23 39	01 40	03 33
23/24	05 23	07 20	09 27	11 37	13 38	15 31	17 21	19 19	21 25	23 35	01 36	03 29
24/25	05 19	07 16	09 23	11 33	13 34	15 27	17 17	19 15	21 21	23 31	01 32	03 25
25/26	05 15	07 12	09 19	11 29	13 30	15 23	17 13	19 11	21 17	23 27	01 28	03 21
26/27	05 11	07 08	09 15	11 25	13 26	15 19	17 09	19 07	21 13	23 23	01 24	03 17
27/28	05 08	07 05	09 12	11 22	13 23	15 16	17 06	19 04	21 10	23 20	01 21	03 14
28/29	05 04	07 01	09 08	11 18	13 19	15 12	17 02	19 00	21 06	23 16	01 17	03 10
29/30	05 00	06 57	09 04	11 14	13 15	15 08	16 58	18 56	21 02	23 12	01 13	03 06
30	04 56	06 53	09 00	11 10	13 11	15 04	16 54	18 52	20 58	23 08	— —	-- --

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्नसाधन कोष्ठक (1)

(लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़कर इस कोष्ठक का प्रयोग करें।)

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मई 1	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	01 09	03 02
1/2	04 52	06 50	08 56	11 06	13 07	15 00	16 50	18 48	20 55	23 04	01 05	02 58
2/3	04 48	06 46	08 52	11 02	13 03	14 56	16 46	18 44	20 51	23 00	01 01	02 54
3/4	04 44	06 42	08 48	10 58	12 59	14 52	16 42	18 40	20 47	22 56	00 57	02 50
4/5	04 40	06 38	08 44	10 54	12 55	14 48	16 38	18 36	20 43	22 52	00 53	02 46
5/6	04 36	06 34	08 40	10 50	12 51	14 44	16 34	18 32	20 39	22 48	00 49	02 42
6/7	04 32	06 30	08 36	10 46	12 47	14 40	16 30	18 28	20 35	22 44	00 45	02 38
7/8	04 28	06 26	08 32	10 42	12 43	14 36	16 26	18 24	20 31	22 40	00 41	02 34
8/9	04 24	06 22	08 28	10 38	12 39	14 32	16 22	18 20	20 27	22 36	00 37	02 30
9/10	04 20	06 18	08 24	10 34	12 35	14 28	16 18	18 16	20 23	22 32	00 33	02 75
10/11	04 17	06 15	08 21	10 31	12 32	14 25	16 15	18 13	20 20	22 29	00 30	02 23
11/12	04 13	06 11	08 17	10 27	12 28	14 21	16 11	18 09	20 16	22 25	00 26	02 19
12/13	04 09	06 07	08 13	10 23	12 24	14 17	16 07	18 05	20 12	22 21	00 22	02 15
13/14	04 05	06 03	08 09	10 19	12 20	14 13	16 03	18 01	20 08	22 17	00 18	02 11
14/15	04 01	05 59	08 05	10 15	12 16	14 09	15 59	17 57	20 04	22 13	00 14	02 07
15/16	03 57	05 55	08 01	10 11	12 12	14 05	15 55	17 53	20 00	22 09	00 10	02 03
16/17	03 53	05 51	07 57	10 07	12 08	14 01	15 51	17 49	19 56	22 05	00 06	01 59
17/18	03 49	05 47	07 53	10 03	12 04	13 57	15 47	17 45	19 52	22 01	00 02	01 55
18/19	03 45	05 43	07 49	09 59	12 00	13 53	15 43	17 41	19 48	21 57	23 58	01 51
19/20	03 41	05 39	07 45	09 55	11 56	13 49	15 39	17 37	19 44	21 53	23 54	01 47
20/21	03 37	05 35	07 41	09 51	11 52	13 45	15 35	17 33	19 40	21 49	23 50	01 43
21/22	03 33	05 31	07 37	09 47	11 48	13 41	15 31	17 29	19 36	21 45	23 46	01 39
22/23	03 29	05 27	07 33	09 43	11 44	13 37	15 27	17 25	19 32	21 41	23 42	01 35
23/24	03 25	05 23	07 29	09 39	11 40	13 33	15 23	17 21	19 28	21 37	23 38	01 31
24/25	03 21	05 19	07 25	09 35	11 36	13 29	15 19	17 17	19 24	21 33	23 34	01 27
25/26	03 17	05 15	07 21	09 31	11 32	13 25	15 15	17 13	19 20	21 29	23 30	01 23
26/27	03 13	05 11	07 17	09 27	11 28	13 21	15 11	17 09	19 16	21 25	23 26	01 19
27/28	03 10	05 08	07 14	09 24	11 25	13 18	15 08	17 06	19 13	21 22	23 23	01 16
28/29	03 06	05 04	07 10	09 20	11 21	13 14	15 04	17 02	19 09	21 18	23 19	01 12
29/30	03 02	05 00	07 06	09 16	11 17	13 10	15 00	16 58	19 05	21 14	23 15	01 08
30/31	02 58	04 56	07 02	09 12	11 13	13 06	14 56	16 54	19 01	21 10	23 11	01 04
31	02 54	04 52	06 58	09 08	11 09	13 02	14 52	16 50	18 57	21 06	23 07	— —
जून 1	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	01 00
1/2	02 50	04 48	06 55	09 04	11 05	12 58	14 48	16 46	18 53	21 02	23 03	00 56
2/3	02 46	04 44	06 51	09 00	11 01	12 54	14 44	16 42	18 49	20 58	22 59	00 52
3/4	02 42	04 40	06 47	08 56	10 57	12 50	14 40	16 38	18 45	20 54	22 55	00 48
4/5	02 38	04 36	06 43	08 52	10 53	12 46	14 36	16 34	18 41	20 50	22 51	00 44
5/6	02 34	04 32	06 39	08 48	10 49	12 42	14 32	16 30	18 37	20 46	22 47	00 40
6/7	02 30	04 28	06 35	08 44	10 45	12 38	14 28	16 26	18 33	20 42	22 43	00 36
7/8	02 26	04 24	06 31	08 40	10 41	12 34	14 24	16 22	18 29	20 38	22 39	00 32
8/9	02 22	04 20	06 27	08 36	10 37	12 30	14 20	16 18	18 25	20 34	22 35	00 28
9/10	02 18	04 16	06 23	08 32	10 33	12 26	14 16	16 14	18 21	20 30	22 31	00 24
10/11	02 15	04 13	06 20	08 29	10 30	12 23	14 13	16 11	18 18	20 27	22 28	00 21
11/12	02 11	04 09	06 16	08 25	10 26	12 19	14 09	16 07	18 14	20 23	22 24	00 17
12/13	02 07	04 05	06 12	08 21	10 22	12 15	14 05	16 03	18 10	20 19	22 20	00 13
13/14	02 03	04 01	06 08	08 17	10 18	12 11	14 01	15 59	18 06	20 15	22 16	00 09
14/15	01 59	03 57	06 04	08 13	10 14	12 07	13 57	15 55	18 02	20 11	22 12	00 05
15/16	01 55	03 53	06 00	08 09	10 10	12 03	13 53	15 51	17 58	20 07	22 08	00 01
16	01 51	03 49	05 56	08 05	10 06	11 59	13 49	15 47	17 54	20 03	22 04	23 57
17	01 47	03 45	05 52	08 01	10 02	11 55	13 45	15 43	17 50	19 59	22 00	23 53
18	01 43	03 41	05 48	07 57	09 58	11 51	13 41	15 39	17 46	19 55	21 56	23 49
19	01 39	03 37	05 44	07 53	09 54	11 47	13 37	15 35	17 42	19 51	21 52	23 45
20	01 35	03 33	05 40	07 49	09 50	11 43	13 33	15 31	17 38	19 47	21 48	23 41
21	01 31	03 29	05 36	07 45	09 46	11 39	13 29	15 27	17 34	19 43	21 44	23 37
22	01 27	03 25	05 32	07 41	09 42	11 35	13 25	15 23	17 30	19 39	21 40	23 33
23	01 23	03 21	05 28	07 37	09 38	11 31	13 21	15 19	17 26	19 35	21 36	23 29
24	01 19	03 17	05 24	07 33	09 34	11 27	13 17	15 15	17 22	19 31	21 32	23 25
25	01 15	03 13	05 20	07 29	09 30	11 23	13 13	15 11	17 18	19 27	21 28	23 21
26	01 11	03 09	05 16	07 25	09 26	11 19	13 09	15 07	17 14	19 23	21 24	23 17
27	01 08	03 06	05 13	07 22	09 23	11 16	13 06	15 04	17 11	19 20	21 21	23 14
28	01 04	03 02	05 09	07 18	09 19	11 12	13 02	15 00	17 07	19 16	21 17	23 10
29	01 00	02 58	05 05	07 14	09 15	11 08	12 58	14 56	17 03	19 12	21 13	23 06
30	00 56	02 54	05 01	07 10	09 11	11 04	12 54	14 52	16 59	19 08	21 09	23 02

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्नसाधन कोष्ठक (1)

(भाग 4)

(लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़कर इस कोष्ठक का प्रयोग करें।)

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जुलाई 1	00 52	02 50	04 57	07 06	09 07	11 00	12 51	14 48	16 55	19 04	21 05	22 58
2	00 48	02 46	04 53	07 02	09 03	10 56	12 47	14 44	16 51	19 00	21 01	22 54
3	00 44	02 42	04 49	06 58	08 59	10 52	12 43	14 40	16 47	18 56	20 57	22 50
4	00 40	02 38	04 45	06 54	08 55	10 48	12 39	14 36	16 43	18 52	20 53	22 46
5	00 36	02 34	04 41	06 50	08 51	10 44	12 35	14 32	16 39	18 48	20 49	22 42
6	00 32	02 30	04 37	06 46	08 47	10 40	12 31	14 28	16 35	18 44	20 45	22 38
7	00 28	02 26	04 33	06 42	08 43	10 36	12 27	14 24	16 31	18 40	20 41	22 34
8	00 24	02 22	04 29	06 38	08 39	10 32	12 23	14 20	16 27	18 36	20 37	22 30
9	00 20	02 18	04 25	06 34	08 35	10 28	12 19	14 16	16 23	18 32	20 33	22 26
10	00 17	02 15	04 22	06 31	08 32	10 25	12 16	14 13	16 20	18 29	20 30	22 23
11	00 13	02 11	04 18	06 27	08 28	10 21	12 12	14 09	16 16	18 25	20 26	22 19
12	00 09	02 07	04 14	06 23	08 24	10 17	12 08	14 05	16 12	18 21	20 22	22 15
13	00 05	02 03	04 10	06 19	08 20	10 13	12 04	14 01	16 08	18 17	20 18	22 11
14	00 01	01 59	04 06	06 15	08 16	10 09	12 00	13 57	16 04	18 13	20 14	22 07
14/15	23 57	01 55	04 02	06 11	08 12	10 05	11 56	13 53	16 00	18 09	20 10	22 03
15/16	23 53	01 51	03 58	06 07	08 08	10 01	11 52	13 49	15 56	18 05	20 06	21 59
16/17	23 49	01 47	03 54	06 03	08 04	09 57	11 48	13 45	15 52	18 01	20 02	21 55
17/18	23 45	01 43	03 50	05 59	08 00	09 53	11 44	13 41	15 48	17 57	19 58	21 51
18/19	23 41	01 39	03 46	05 55	07 56	09 49	11 40	13 37	15 44	17 53	19 54	21 47
19/20	23 37	01 35	03 42	05 51	07 52	09 45	11 36	13 33	15 40	17 49	19 50	21 43
20/21	23 33	01 31	03 38	05 47	07 48	09 41	11 32	13 29	15 36	17 45	19 46	21 39
21/22	23 29	01 27	03 34	05 43	07 44	09 37	11 28	13 25	15 32	17 41	19 42	21 35
22/23	23 25	01 23	03 30	05 39	07 40	09 33	11 24	13 21	15 28	17 37	19 38	21 31
23/24	23 21	01 19	03 26	05 35	07 36	09 29	11 20	13 17	15 24	17 33	19 34	21 27
24/25	23 17	01 15	03 22	05 31	07 32	09 25	11 16	13 13	15 20	17 29	19 30	21 23
25/26	23 13	01 11	03 18	05 27	07 28	09 21	11 12	13 09	15 16	17 25	19 26	21 19
26/27	23 09	01 07	03 14	05 23	07 24	09 17	11 08	13 05	15 12	17 21	19 22	21 15
27/28	23 06	01 04	03 11	05 20	07 21	09 14	11 05	13 02	15 09	17 18	19 19	21 12
28/29	23 02	01 00	03 07	05 16	07 17	09 10	11 01	12 58	15 05	17 14	19 15	21 08
29/30	22 58	00 56	03 03	05 12	07 13	09 06	10 57	12 54	15 01	17 10	19 11	21 04
30/31	22 54	00 52	02 59	05 08	07 09	09 02	10 53	12 50	14 57	17 06	19 07	21 00
31	22 50	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —
अग. 1	— —	00 48	02 55	05 04	07 06	08 58	10 49	12 46	14 53	17 02	19 04	20 56
1/2	22 47	00 44	02 51	05 00	07 02	08 54	10 45	12 42	14 49	16 58	19 00	20 52
2/3	22 43	00 40	02 47	04 56	06 58	08 50	10 41	12 38	14 45	16 54	18 56	20 48
3/4	22 39	00 36	02 43	04 52	06 54	08 46	10 37	12 34	14 41	16 50	18 52	20 44
4/5	22 35	00 32	02 39	04 48	06 50	08 42	10 33	12 30	14 37	16 46	18 48	20 40
5/6	22 31	00 28	02 35	04 44	06 46	08 38	10 29	12 26	14 33	16 42	18 44	20 36
6/7	22 27	00 24	02 31	04 40	06 42	08 34	10 25	12 22	14 29	16 38	18 40	20 32
7/8	22 23	00 20	02 27	04 36	06 38	08 30	10 21	12 18	14 25	16 34	18 36	20 28
8/9	22 19	00 16	02 23	04 32	06 34	08 26	10 17	12 14	14 21	16 30	18 32	20 24
9/10	22 15	00 12	02 19	04 28	06 30	08 22	10 14	12 10	14 17	16 26	18 28	20 20
10/11	22 12	00 09	02 16	04 25	06 27	08 19	10 10	12 07	14 14	16 23	18 25	20 17
11/12	22 08	00 05	02 12	04 21	06 23	08 15	10 06	12 03	14 10	16 19	18 21	20 13
12/13	22 04	00 01	02 08	04 17	06 19	08 11	10 02	11 59	14 06	16 15	18 17	20 09
13/14	22 00	23 57	02 04	04 13	06 15	08 07	09 58	11 55	14 02	16 11	18 13	20 05
14/15	21 56	23 53	02 00	04 09	06 11	08 03	09 54	11 51	13 58	16 07	18 09	20 01
15/16	21 52	23 49	01 56	04 05	06 07	07 59	09 50	11 47	13 54	16 03	18 05	19 57
16/17	21 48	23 45	01 52	04 01	06 03	07 55	09 46	11 43	13 50	15 59	18 01	19 53
17/18	21 44	23 41	01 48	03 57	05 59	07 51	09 42	11 39	13 46	15 55	17 57	19 49
18/19	21 40	23 37	01 44	03 53	05 55	07 47	09 38	11 35	13 42	15 51	17 53	19 45
19/20	21 36	23 33	01 40	03 49	05 51	07 43	09 34	11 31	13 38	15 47	17 49	19 41
20/21	21 32	23 29	01 36	03 45	05 47	07 39	09 30	11 27	13 34	15 43	17 45	19 37
21/22	21 28	23 25	01 32	03 41	05 43	07 35	09 26	11 23	13 30	15 39	17 41	19 33
22/23	21 24	23 21	01 28	03 37	05 39	07 31	09 22	11 19	13 26	15 35	17 37	19 29
23/24	21 20	23 17	01 24	03 33	05 35	07 27	09 18	11 15	13 22	15 31	17 33	19 25
24/25	21 16	23 13	01 20	03 29	05 31	07 23	09 14	11 11	13 18	15 27	17 29	19 21
25/26	21 12	23 09	01 16	03 25	05 27	07 19	09 10	11 07	13 14	15 23	17 25	19 17
26/27	21 08	23 05	01 12	03 21	05 23	07 15	09 06	11 03	13 10	15 19	17 21	19 13
27/28	21 05	23 02	01 09	03 18	05 20	07 12	09 03	11 00	13 07	15 16	17 18	19 10
28/29	21 01	22 58	01 05	03 14	05 16	07 08	08 59	10 56	13 03	15 12	17 14	19 06
29/30	20 57	22 54	01 01	03 10	05 12	07 04	08 55	10 52	12 59	15 08	17 10	19 02
30/31	20 53	22 50	00 57	03 06	05 08	07 00	08 51	10 48	12 55	15 04	17 06	18 58
31	20 49	22 46	— —	— —	— —	— —	— —		— —	— —	— —	— —

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

लग्नसाधन कोष्ठक (1)

(लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़कर इस कोष्ठक का प्रयोग करें।)

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
सितं. 1	-- --	-- --	00 53	03 02	05 04	06 56	08 47	10 44	12 51	15 00	17 02	18 54
1/2	20 45	22 42	00 49	02 58	05 00	06 52	08 43	10 40	12 47	14 56	16 58	18 50
2/3	20 41	22 38	00 45	02 54	04 56	06 48	08 39	10 36	12 43	14 52	16 54	18 46
3/4	20 37	22 34	00 41	02 50	04 52	06 44	08 35	10 32	12 39	14 48	16 50	18 42
4/5	20 33	22 30	00 37	02 46	04 48	06 40	08 31	10 28	12 35	14 44	16 46	18 38
5/6	20 29	22 26	00 33	02 42	04 44	06 36	08 27	10 24	12 31	14 40	16 42	18 34
6/7	20 25	22 22	00 29	02 38	04 40	06 32	08 23	10 20	12 27	14 36	16 38	18 30
7/8	20 21	22 18	00 25	02 34	04 36	06 28	08 19	10 16	12 23	14 32	16 34	18 26
8/9	20 17	22 14	00 21	02 30	04 32	06 24	08 15	10 12	12 19	14 28	16 30	18 22
9/10	20 13	22 10	00 17	02 26	04 28	06 20	08 11	10 08	12 15	14 24	16 26	18 18
10/11	20 10	22 07	00 14	02 23	04 25	06 17	08 08	10 05	12 12	14 21	16 23	18 15
11/12	20 06	22 03	00 10	02 19	04 21	06 13	08 04	10 01	12 08	14 17	16 19	18 11
12/13	20 02	21 59	00 06	02 15	04 17	06 09	08 00	09 57	12 04	14 13	16 15	18 07
13/14	19 58	21 55	00 02	02 11	04 13	06 05	07 56	09 53	12 00	14 09	16 11	18 03
14/15	19 54	21 51	23 58	02 07	04 09	06 01	07 52	09 49	11 56	14 05	16 07	17 59
15/16	19 50	21 47	23 54	02 03	04 05	05 57	07 48	09 45	11 52	14 01	16 03	17 55
16/17	19 46	21 43	23 50	01 59	04 01	05 53	07 44	09 41	11 48	13 57	15 59	17 51
17/18	19 42	21 39	23 46	01 55	03 57	05 49	07 40	09 37	11 44	13 53	15 55	17 47
18/19	19 38	21 35	23 42	01 51	03 53	05 45	07 36	09 33	11 40	13 49	15 51	17 43
19/20	19 34	21 31	23 38	01 47	03 49	05 41	07 32	09 29	11 36	13 45	15 47	17 39
20/21	19 30	21 27	23 34	01 43	03 45	05 37	07 28	09 25	11 32	13 41	15 43	17 35
21/22	19 26	21 23	23 30	01 39	03 41	05 33	07 24	09 21	11 28	13 37	15 39	17 31
22/23	19 22	21 19	23 26	01 35	03 37	05 29	07 20	09 17	11 24	13 33	15 35	17 27
23/24	19 18	21 15	23 22	01 31	03 33	05 25	07 16	09 13	11 20	13 29	15 31	17 23
24/25	19 14	21 11	23 18	01 27	03 29	05 21	07 12	09 09	11 16	13 25	15 27	17 19
25/26	19 10	21 07	23 14	01 23	03 25	05 17	07 08	09 05	11 12	13 21	15 23	17 15
26/27	19 06	21 03	23 10	01 19	03 21	05 13	07 04	09 01	11 08	13 17	15 19	17 11
27/28	19 03	21 00	23 07	01 16	03 18	05 10	07 01	08 58	11 05	13 14	15 16	17 08
28/29	18 59	20 56	23 03	01 12	03 14	05 06	06 57	08 54	11 01	13 10	15 12	17 04
29/30	18 55	20 52	22 59	01 08	03 10	05 02	06 53	08 50	10 57	13 06	15 08	17 00
30	18 51	20 48	22 55	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --
अक्तू. 1	-- --	-- --	-- --	01 04	03 06	04 58	06 49	08 46	10 53	13 02	15 04	16 56
1/2	18 47	20 44	22 51	01 00	03 02	04 54	06 45	08 42	10 49	12 58	15 00	16 52
2/3	18 43	20 40	22 47	00 56	02 58	04 50	06 41	08 38	10 45	12 54	14 56	16 48
3/4	18 39	20 36	22 43	00 52	02 54	04 46	06 37	08 34	10 41	12 50	14 52	16 44
4/5	18 35	20 32	22 39	00 48	02 50	04 42	06 33	08 30	10 37	12 46	14 48	16 40
5/6	18 31	20 28	22 35	00 44	02 46	04 38	06 29	08 26	10 33	12 42	14 44	16 36
6/7	18 27	20 24	22 31	00 40	02 42	04 34	06 25	08 22	10 29	12 38	14 40	16 32
7/8	18 23	20 20	22 27	00 36	02 38	04 30	06 21	08 18	10 25	12 34	14 36	16 28
8/9	18 19	20 16	22 23	00 32	02 34	04 26	06 17	08 14	10 21	12 30	14 32	16 24
9/10	18 15	20 12	22 19	00 28	02 30	04 22	06 13	08 10	10 17	12 26	14 28	16 20
10/11	18 12	20 09	22 16	00 25	02 27	04 19	06 10	08 07	10 14	12 23	14 25	16 17
11/12	18 08	20 05	22 12	00 21	02 23	04 15	06 06	08 03	10 10	12 19	14 21	16 13
12/13	18 04	20 01	22 08	00 17	02 19	04 11	06 02	07 59	10 06	12 15	14 17	16 09
13/14	18 00	19 57	22 04	00 13	02 15	04 07	05 58	07 55	10 02	12 11	14 13	16 05
14/15	17 56	19 53	22 00	00 09	02 11	04 03	05 54	07 51	09 58	12 07	14 09	16 01
15/16	17 52	19 49	21 56	00 05	02 07	03 59	05 50	07 47	09 54	12 03	14 05	15 57
16/17	17 48	19 45	21 52	00 01	02 03	03 55	05 46	07 43	09 50	11 59	14 01	15 53
17/18	17 44	19 41	21 48	23 57	01 59	03 51	05 42	07 39	09 46	11 55	13 57	15 49
18/19	17 40	19 37	21 44	23 53	01 55	03 47	05 38	07 35	09 42	11 51	13 53	15 45
19/20	17 36	19 33	21 40	23 49	01 51	03 43	05 34	07 31	09 38	11 47	13 49	15 41
20/21	17 32	19 29	21 36	23 45	01 47	03 39	05 30	07 27	09 34	11 43	13 45	15 37
21/22	17 28	19 25	21 32	23 41	01 43	03 35	05 26	07 23	09 30	11 39	13 41	15 33
22/23	17 24	19 21	21 28	23 37	01 39	03 31	05 22	07 19	09 26	11 35	13 37	15 29
23/24	17 20	19 17	21 24	23 33	01 35	03 27	05 18	07 15	09 22	11 31	13 33	15 25
24/25	17 16	19 13	21 20	23 29	01 31	03 23	05 14	07 11	09 18	11 27	13 29	15 21
25/26	17 12	19 09	21 16	23 25	01 27	03 19	05 10	07 07	09 14	11 23	13 25	15 17
26/27	17 08	19 05	21 12	23 21	01 23	03 15	05 06	07 03	09 10	11 19	13 21	15 13
27/28	17 05	19 02	21 09	23 18	01 20	03 12	05 03	07 00	09 07	11 16	13 18	15 10
28/29	17 01	18 58	21 05	23 14	01 16	03 08	04 59	06 56	09 03	11 12	13 14	15 06
29/30	16 57	18 54	21 01	23 10	01 12	03 04	04 55	06 52	08 59	11 08	13 10	15 02
30/31	16 53	18 50	20 57	23 06	01 08	03 00	04 51	06 48	08 55	11 04	13 06	14 58
31	16 49	18 46	20 53	23 02	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --	-- --

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्नसाधन कोष्ठक (1)

(लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अमीष्ट तारीख में एक जोड़कर इस कोष्ठक का प्रयोग करें।) (भाग 6)

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
नव. 1	– –	– –	– –	– –	01 04	02 56	04 47	06 44	08 51	11 00	13 02	14 54
1/2	16 45	18 42	20 49	22 58	01 00	02 52	04 43	06 40	08 47	10 56	12 58	14 50
2/3	16 41	18 38	20 45	22 54	00 56	02 48	04 39	06 36	08 43	10 52	12 54	14 46
3/4	16 37	18 34	20 41	22 50	00 52	02 44	04 35	06 32	08 39	10 48	12 50	14 42
4/5	16 33	18 30	20 37	22 46	00 48	02 40	04 31	06 28	08 35	10 44	12 46	14 38
5/6	16 29	18 26	20 33	22 42	00 44	02 36	04 27	06 24	08 31	10 40	12 42	14 34
6/7	16 25	18 22	20 29	22 38	00 40	02 32	04 23	06 20	08 27	10 36	12 38	14 30
7/8	16 21	18 18	20 25	22 34	00 36	02 28	04 19	06 16	08 23	10 32	12 34	14 26
8/9	16 17	18 14	20 21	22 30	00 32	02 24	04 15	06 12	08 19	10 28	12 30	14 22
9/10	16 14	18 11	20 18	22 26	00 29	02 21	04 12	06 09	08 16	10 25	12 27	14 19
10/11	16 10	18 07	20 14	22 23	00 25	02 17	04 08	06 05	08 12	10 21	12 23	14 15
11/12	16 06	18 03	20 10	22 19	00 21	02 13	04 04	06 01	08 08	10 17	12 19	14 11
12/13	16 02	17 59	20 06	22 15	00 17	02 09	04 00	05 57	08 04	10 13	12 15	14 07
13/14	15 58	17 55	20 02	22 11	00 13	02 05	03 56	05 53	08 00	10 09	12 11	14 03
14/15	15 54	17 51	19 58	22 07	00 09	02 01	03 52	05 49	07 56	10 05	12 07	13 59
15/16	15 50	17 47	19 54	22 03	00 05	01 57	03 48	05 45	07 52	10 01	12 03	13 55
16/17	15 46	17 43	19 50	21 59	00 01	01 53	03 44	05 41	07 48	09 57	11 59	13 51
17/18	15 42	17 39	19 46	21 55	23 57	01 49	03 40	05 37	07 44	09 53	11 55	13 47
18/19	15 38	17 35	19 42	21 51	23 53	01 45	03 36	05 33	07 40	09 49	11 51	13 43
19/20	15 34	17 31	19 38	21 47	23 49	01 41	03 32	05 29	07 36	09 45	11 47	13 39
20/21	15 30	17 27	19 34	21 43	23 45	01 37	03 28	05 25	07 32	09 41	11 43	13 35
21/22	15 26	17 23	19 30	21 39	23 41	01 33	03 24	05 21	07 28	09 37	11 39	13 31
22/23	15 22	17 19	19 26	21 35	23 37	01 29	03 20	05 17	07 24	09 33	11 35	13 27
23/24	15 18	17 15	19 22	21 31	23 33	01 25	03 16	05 13	07 20	09 29	11 31	13 23
24/25	15 14	17 11	19 18	21 27	23 29	01 21	03 12	05 09	07 16	09 25	11 27	13 19
25/26	15 10	17 07	19 14	21 23	23 25	01 17	03 08	05 05	07 12	09 21	11 23	13 15
26/27	15 07	17 04	19 11	21 19	23 22	01 14	03 05	05 02	07 09	09 18	11 20	13 12
27/28	15 03	17 00	19 07	21 16	23 18	01 10	03 01	04 58	07 05	09 14	11 16	13 08
28/29	14 59	16 56	19 03	21 12	23 14	01 06	02 57	04 54	07 01	09 10	11 12	13 04
29/30	14 55	16 52	18 59	21 08	23 10	01 02	02 53	04 50	06 57	09 06	11 08	13 00
30	14 51	16 48	18 55	21 04	23 06	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –
दिसं. 1	– –	– –	– –	– –	– –	00 58	02 49	04 46	06 53	09 02	11 04	12 56
1/2	14 47	16 44	18 51	21 00	23 02	00 54	02 45	04 42	06 49	08 58	11 00	12 52
2/3	14 43	16 40	18 47	20 56	22 58	00 50	02 41	04 38	06 45	08 54	10 56	12 48
3/4	14 39	16 36	18 43	20 52	22 54	00 46	02 37	04 34	06 41	08 50	10 52	12 44
4/5	14 35	16 32	18 39	20 48	22 50	00 42	02 33	04 30	06 37	08 46	10 48	12 40
5/6	14 31	16 28	18 35	20 44	22 46	00 38	02 29	04 26	06 33	08 42	10 44	12 36
6/7	14 27	16 24	18 31	20 40	22 42	00 34	02 25	04 22	06 29	08 38	10 40	12 32
7/8	14 23	16 20	18 27	20 36	22 38	00 30	02 21	04 18	06 25	08 34	10 36	12 28
8/9	14 19	16 16	18 23	20 32	22 34	00 26	02 17	04 14	06 21	08 30	10 32	12 24
9/10	14 15	16 12	18 19	20 28	22 31	00 22	02 13	04 10	06 17	08 26	10 28	12 20
10/11	14 12	16 09	18 16	20 25	22 27	00 19	02 10	04 07	06 14	08 23	10 25	12 17
11/12	14 08	16 05	18 12	20 21	22 23	00 15	02 06	04 03	06 10	08 19	10 21	12 13
12/13	14 04	16 01	18 08	20 17	22 19	00 11	02 02	03 59	06 06	08 15	10 17	12 09
13/14	14 00	15 57	18 04	20 13	22 15	00 07	01 58	03 55	06 02	08 11	10 13	12 05
14/15	13 56	15 53	18 00	20 09	22 11	00 03	01 54	03 51	05 58	08 07	10 09	12 01
15/16	13 52	15 49	17 56	20 05	22 07	23 59	01 50	03 47	05 54	08 03	10 05	11 57
16/17	13 48	15 45	17 52	20 01	22 03	23 55	01 46	03 43	05 50	07 59	10 01	11 53
17/18	13 44	15 41	17 48	19 57	21 59	23 51	01 42	03 39	05 46	07 55	09 57	11 49
18/19	13 40	15 37	17 44	19 53	21 55	23 47	01 38	03 35	05 42	07 51	09 53	11 45
19/20	13 36	15 33	17 40	19 49	21 51	23 43	01 34	03 31	05 38	07 47	09 49	11 41
20/21	13 32	15 29	17 36	19 45	21 47	23 39	01 30	03 27	05 34	07 43	09 45	11 37
21/22	13 28	15 25	17 32	19 41	21 43	23 35	01 26	03 23	05 30	07 39	09 41	11 33
22/23	13 24	15 21	17 28	19 37	21 39	23 31	01 22	03 19	05 26	07 35	09 37	11 29
23/24	13 20	15 17	17 24	19 33	21 35	23 27	01 18	03 15	05 22	07 31	09 33	11 25
24/25	13 16	15 13	17 20	19 29	21 31	23 23	01 14	03 11	05 18	07 27	09 29	11 21
25/26	13 12	15 09	17 16	19 25	21 27	23 19	01 10	03 07	05 14	07 23	09 25	11 17
26/27	13 08	15 05	17 12	19 21	21 24	23 15	01 06	03 03	05 10	07 19	09 21	11 13
27/28	13 05	15 02	17 09	19 18	21 20	23 12	01 03	03 00	05 07	07 16	09 18	11 10
28/29	13 01	14 58	17 05	19 14	21 16	23 08	00 59	02 56	05 03	07 12	09 14	11 06
29/30	12 57	14 54	17 01	19 10	21 12	23 04	00 55	02 52	04 59	07 08	09 10	11 02
30/31	12 53	14 50	16 57	19 06	21 08	23 00	00 51	02 48	04 55	07 04	09 06	10 59
31/32	12 49	14 46	16 53	19 02	21 04	22 56	00 47	02 44	04 51	07 00	09 02	10 54
32	12 45	14 42	16 49	18 58	21 00	22 52	– –	– –	– –	– –	– –	– –

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्नसाधन कोष्ठक (2)

नगर	मेष मि. से.	वृष मि. से.	मिथुन मि. से.	कर्क मि. से.	सिंह मि. से.	कन्या मि. से.	तुला मि. से.	वृश्चिक मि. से.	धनु मि. से.	मकर मि. से.	कुम्भ मि. से.	मीन मि. से.
अकोला (म.)	+ 07 38	− 07 42	− 15 43	− 12 16	+ 00 44	+ 17 56	+ 35 42	+ 51 02	+ 59 03	+ 55 36	+ 42 36	+ 25 24
अगरतला (त्रि.)	− 51 26	− 69 25	− 78 52	− 74 48	− 59 32	− 39 23	− 18 34	− 00 35	+ 08 52	+ 04 48	− 10 28	− 30 37
अजमेर (रा.)	+ 12 43	− 07 33	− 18 12	− 13 37	+ 03 36	+ 26 16	+ 49 41	+ 69 57	+ 80 36	+ 76 01	+ 58 48	+ 36 08
अनन्तनाग (का.)	+ 04 27	− 33 00	− 37 33	− 31 16	− 07 52	+ 22 42	+ 54 13	+ 81 40	+ 96 13	+ 89 56	+ 66 32	+ 35 56
अनूपशहर (उ.प्र.)	− 03 08	− 25 10	− 36 46	− 31 46	− 13 02	+ 11 35	+ 37 00	+ 59 02	+ 70 38	+ 65 38	+ 46 54	+ 22 17
अमरावती (म.)	+ 04 47	− 10 45	− 18 53	− 15 23	− 02 13	+ 15 13	+ 33 13	+ 48 45	+ 56 53	+ 53 23	+ 40 13	+ 22 47
अमरोहा (उ.प्र.)	− 04 30	− 27 04	− 38 59	− 33 51	− 14 39	+ 10 35	+ 36 38	+ 59 12	+ 71 07	+ 65 59	+ 46 47	+ 21 33
अमृतसर (पं.)	+ 07 26	− 17 45	− 31 04	− 25 20	− 03 52	+ 24 14	+ 53 14	+ 78 25	+ 91 44	+ 86 00	+ 64 32	+ 36 26
अमेठी (उ.प्र.)	− 15 37	− 35 39	− 46 11	− 41 39	− 24 38	− 02 14	+ 20 57	+ 40 59	+ 51 31	+ 46 59	+ 29 58	+ 07 33
अम्बाला (ह.)	+ 00 45	− 23 12	− 35 51	− 30 24	− 10 01	+ 16 44	+ 44 19	+ 68 16	+ 80 55	+ 75 28	+ 55 05	+ 26 20
अयोध्या (उ.प्र.)	− 17 38	− 38 16	− 49 08	− 44 27	− 26 55	− 03 49	+ 20 02	+ 40 40	+ 51 32	+ 46 51	+ 29 19	+ 06 13
अर्की (हि.)	− 00 23	− 25 09	− 38 15	− 32 36	− 11 31	+ 16 08	+ 44 39	+ 69 25	+ 82 31	+ 76 52	+ 55 47	+ 28 08
अल्मोड़ा (उ.आं.)	− 09 48	− 33 01	− 45 16	− 39 59	− 20 14	+ 05 42	+ 32 28	+ 55 41	+ 67 56	+ 62 39	+ 42 54	+ 16 58
अलवर (रा.)	+ 04 01	− 17 18	− 28 32	− 23 42	− 05 34	+ 18 17	+ 42 55	+ 64 14	+ 75 28	+ 70 38	+ 52 30	+ 28 39
अलीगढ़ (उ.प्र.)	− 02 03	− 23 41	− 35 05	− 30 11	− 11 47	+ 17 24	+ 37 23	+ 59 01	+ 70 25	+ 65 31	+ 47 07	+ 22 56
अहमदाबाद (गु.)	+ 23 29	+ 06 08	− 02 58	+ 00 57	+ 15 40	+ 35 06	+ 55 11	+ 72 32	+ 81 38	+ 77 43	+ 63 00	+ 43 34
आगरा (उ.प्र.)	− 01 10	− 22 07	− 33 08	− 28 23	− 10 35	+12 50	+ 37 02	+ 57 59	+ 69 00	+ 64 15	+ 46 27	+ 23 02
आजमगढ़ (उ.प्र.)	− 20 57	− 40 55	− 51 25	− 46 53	− 29 56	− 07 35	+ 15 29	+ 35 27	+ 45 57	+ 41 25	+ 24 28	+ 02 07
आबू (रा.)	+ 21 55	+ 03 12	− 06 37	− 02 24	+ 13 30	+ 34 27	+ 56 05	+ 74 48	+ 84 37	+ 80 24	+ 64 30	+ 43 33
आरा (बि.)	− 26 29	− 46 00	− 56 15	− 51 50	− 35 16	− 13 25	+ 09 09	+ 28 40	+ 38 55	+ 34 30	+ 17 56	− 03 55
इटारसी (म.प्र.)	+ 03 32	− 13 24	− 22 16	− 18 27	− 04 05	+ 14 52	+ 34 28	+ 51 24	+ 60 22	+ 56 32	+ 42 11	+ 23 09
इटावा (उ.प्र.)	− 04 53	− 25 27	− 36 16	− 31 37	− 14 08	+ 08 52	+ 32 37	+ 53 11	+ 64 00	+ 59 21	+ 41 52	+ 18 52
इन्दौर (म.प्र.)	+ 11 04	− 06 00	− 14 57	− 11 06	+ 03 23	+ 22 30	+ 42 16	+ 59 20	+ 68 17	+ 64 26	+ 49 57	+ 30 50
इम्फाल (मणि.)	− 62 57	− 81 04	− 91 36	− 87 21	− 71 24	− 50 22	− 28 39	− 09 52	00 00	− 04 15	− 20 12	− 41 14
उज्जैन (म.प्र.)	+ 11 13	− 06 12	− 15 20	− 11 24	− 03 22	+ 22 53	+ 43 03	+ 60 28	+ 69 36	+ 65 40	+ 50 54	+ 31 23
उदयपुर (रा.)	+ 18 15	− 00 24	− 10 11	− 05 58	+ 09 51	+ 30 44	+ 52 17	+ 70 56	+ 80 43	+ 76 30	+ 60 41	+ 39 48
उन्नाव (उ.प्र.)	− 10 33	− 30 54	− 41 35	− 36 59	− 19 42	+ 03 03	+ 26 33	+ 46 54	+ 57 35	+ 52 59	+ 35 42	+ 12 57
ऊधमपुर (का.)	+ 05 29	− 21 04	− 35 09	− 29 04	− 06 26	+ 23 10	+ 53 43	+ 80 16	+ 94 21	+ 88 16	+ 65 38	+ 36 02
ऊना (हि.)	+ 02 03	− 23 03	− 34 20	− 30 37	− 09 14	+ 18 47	+ 47 01	+ 72 47	+ 86 04	+ 80 21	+ 58 58	+ 30 57
एटा (उ.प्र.)	− 04 11	− 25 35	− 36 51	− 32 00	− 13 48	+ 10 08	+ 34 51	+ 56 15	+ 67 31	+ 62 40	+ 44 28	+ 20 32
कटक (उ.)	− 27 35	− 42 42	− 50 37	− 47 13	− 34 23	− 17 25	+ 00 07	+ 15 14	+ 23 09	+ 19 45	+ 06 55	− 10 03
कटनी (म.प्र.)	− 08 10	− 26 05	− 35 29	− 31 26	− 16 14	+ 04 50	+ 24 34	+ 42 29	+ 51 53	+ 47 50	+ 32 38	+ 12 34
कठुआ (का.)	+ 04 18	− 21 40	− 35 24	− 29 29	− 07 22	+ 21 35	+ 51 26	+ 77 24	+ 91 08	+ 85 13	+ 63 06	+ 34 10
कन्नौज (उ.प्र.)	− 08 42	− 29 34	− 40 33	− 35 49	− 18 05	+ 05 16	+ 29 22	+ 50 14	+ 61 13	+ 56 29	+ 38 45	+ 15 24
कपूरथला (पं.)	+ 05 43	− 19 18	− 32 32	− 26 50	− 05 31	+ 22 24	+ 51 13	+ 76 14	+ 89 28	+ 83 46	+ 62 27	+ 34 32
करनाल (ह.)	+ 00 40	− 22 38	− 34 56	− 29 58	− 09 49	+ 16 13	+ 43 04	+ 66 22	+ 78 51	+ 73 22	+ 53 33	+ 27 31
कांगड़ा (हि.)	+ 01 27	− 24 15	− 37 51	− 31 59	− 10 05	+ 18 35	+ 48 09	+ 73 51	+ 87 27	+ 81 35	+ 59 01	+ 31 01
कांचीपुरम् (ता.)	+ 02 36	− 06 38	− 11 27	− 09 23	− 01 34	+ 08 49	+ 19 32	+ 28 46	+ 33 35	+ 31 31	+ 23 47	+ 13 19
काठियावाड़ (गु.)	+ 30 58	+ 14 32	+ 05 56	+ 09 38	+ 23 34	+ 42 00	+ 61 02	+ 77 28	+ 86 04	+ 82 22	+ 68 26	+ 50 00
कानपुर (उ.प्र.)	− 09 27	− 30 18	− 40 59	− 36 23	− 19 06	+ 03 39	+ 27 09	+ 47 30	+ 58 11	+ 53 35	+ 36 18	+ 13 33
कारगिल (का.)	− 00 28	− 28 43	− 43 44	− 37 15	− 13 09	+ 18 19	+ 50 44	+ 78 59	+ 94 00	+ 87 31	+ 63 25	+ 31 57
कालका (ह.)	+ 00 03	− 24 24	− 37 19	− 31 45	− 10 56	+ 16 20	+ 44 29	+ 68 56	+ 81 51	+ 76 17	+ 55 26	+ 28 12
किशनगढ़ (रा.)	+ 11 55	− 08 30	− 19 14	− 14 37	+ 02 44	+ 25 34	+ 49 09	+ 69 34	+ 80 18	+ 75 41	+ 58 20	+ 35 30

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्नसाधन कोष्ठक (2)

नगर	मेष मि. से.	वृष मि. से.	मिथुन मि. से.	कर्क मि. से.	सिंह मि. से.	कन्या मि. से.	तुला मि. से.	वृश्चिक मि. से.	धनु मि. से.	मकर मि. से.	कुम्भ मि. से.	मीन मि. से.
कुराली (पं.)	+ 01 27	− 23 00	− 35 55	− 30 21	− 09 32	+ 17 44	+ 45 53	+ 70 30	+ 83 15	+ 77 41	+ 56 52	+ 29 36
कुरुक्षेत्र (ह.)	+ 01 10	− 22 27	− 34 55	− 29 33	−09 26	+ 16 56	+ 44 10	+ 67 47	+ 80 15	+ 74 53	+ 54 46	+ 28 24
कुल्लू (हि.)	− 01 40	− 27 17	− 40 50	− 35 00	− 13 10	+ 15 24	+ 44 52	+ 70 29	+ 84 02	+ 78 12	+ 56 22	+ 27 40
कैथल (ह.)	+ 02 55	− 20 32	− 32 55	− 27 35	− 07 37	+ 18 34	+ 45 37	+ 69 04	+ 81 27	+ 76 07	+ 56 09	+ 29 58
कोटखाई (हि.)	− 02 55	− 27 41	− 40 47	− 35 08	− 14 03	+ 13 36	+ 42 07	+ 66 53	+ 79 59	+ 74 20	+ 53 15	+ 25 36
कोटा (रा.)	+ 09 03	− 10 06	− 20 09	− 15 50	+ 00 26	+ 21 52	+ 44 01	+ 63 10	+ 73 13	+ 68 54	+ 52 38	+ 31 12
कोलकाता (बं.)	− 39 04	− 56 00	− 64 52	− 61 03	− 46 41	− 27 44	− 08 08	+ 08 48	+ 17 40	+ 13 51	− 00 31	− 19 29
कोहिमा (नागा.)	− 64 25	− 84 00	− 94 18	− 89 52	− 73 14	− 51 18	− 28 39	− 09 04	+ 01 14	− 03 12	− 19 50	− 41 46
खन्ना (पं.)	+ 03 03	− 21 13	− 34 02	− 28 31	− 07 51	+ 19 15	+ 47 13	+ 71 29	+ 84 18	+ 78 47	+ 58 07	+ 31 01
खुर्जा (उ.प्र.)	− 01 20	− 23 17	− 34 51	− 29 52	− 11 12	+ 13 20	+ 38 40	+ 60 37	+ 72 11	+ 67 12	+ 48 32	+ 24 00
गंगटोक (सि.)	− 43 38	− 64 44	− 75 50	− 71 03	− 53 08	− 29 32	− 05 10	+ 15 58	+ 27 02	+ 22 15	+ 04 20	− 19 16
गया (बि.)	− 27 17	− 46 08	− 56 03	− 51 47	− 35 46	− 14 40	+ 07 05	+ 26 00	+ 35 55	+ 31 39	+ 15 38	− 05 28
गाजियाबाद (उ.प्र.)	− 00 05	− 22 25	− 34 12	− 29 08	− 10 08	+ 14 50	+ 40 37	+ 62 57	+ 74 44	+ 69 40	+ 50 40	+ 25 42
गुड़गांव (ह.)	+ 01 36	− 20 31	− 32 10	− 27 09	− 08 21	+ 16 22	+ 41 52	+ 63 59	+ 75 38	+ 70 37	+ 51 49	+ 27 06
गुरदासपुर (पं.)	+ 04 56	− 20 41	− 34 14	− 28 24	− 06 34	+ 22 00	+ 51 28	+ 77 05	+ 90 38	+ 84 48	+ 62 58	+ 34 24
गुवाहाटी (आसा.)	− 55 17	− 75 19	− 85 51	− 81 19	− 64 18	− 41 53	− 18 43	+ 01 19	+ 11 51	+ 07 19	− 09 42	− 32 07
गोरखपुर (उ.प्र.)	− 22 13	− 42 47	− 53 36	− 48 57	− 31 28	− 08 28	+ 15 17	+ 35 51	+ 46 40	+ 42 01	+ 24 32	+ 01 32
ग्वालियर (म.प्र.)	− 01 01	− 21 08	− 31 42	− 27 09	− 10 04	+ 12 26	+ 35 41	+ 55 48	+ 66 22	+ 61 49	+ 44 44	+ 22 14
चण्डीगढ़ (यू.टी.)	+ 00 31	− 23 50	− 36 43	− 31 10	− 10 26	+ 16 46	+ 44 49	+ 69 10	+ 82 03	+ 76 30	+ 55 46	+ 28 34
चम्बा (हि.)	+ 01 40	− 24 33	− 28 26	− 32 27	− 10 06	+ 19 07	+ 49 16	+ 75 29	+ 89 22	+ 83 23	+ 61 02	+ 31 49
चितौड़गढ़ (रा.)	+ 14 03	− 04 53	− 14 49	− 10 33	+ 05 32	+ 26 44	+ 48 33	+ 67 33	+ 77 19	+ 73 13	+ 57 02	+ 35 56
चूरू (रा.)	+ 09 52	− 12 10	− 23 46	− 18 46	− 00 02	+ 24 35	+ 50 00	+ 72 02	+ 83 38	+ 78 38	+ 59 54	+ 35 17
चेन्नई (ता.)	+ 00 10	− 09 15	− 14 10	− 12 03	− 04 05	+ 06 30	+ 17 26	+ 26 51	+ 31 46	+ 29 39	+ 21 41	+ 11 06
चेरापूंजी (मे.)	− 54 21	− 73 34	− 83 40	− 79 19	− 63 00	− 41 29	− 19 15	− 00 02	+ 10 04	+ 05 43	− 10 36	− 32 07
छतरपुर (म.प्र.)	− 05 49	− 24 46	− 34 41	− 30 25	− 14 20	+ 06 51	+ 28 45	+ 47 41	+ 57 37	+ 53 21	+ 37 16	+ 16 04
छपरा (बि.)	− 26 57	− 46 37	− 56 57	− 52 30	− 35 48	− 13 47	+ 08 57	+ 28 37	+ 38 57	+ 34 30	+ 17 48	− 04 13
जबलपुर (म.प्र.)	− 05 51	− 23 16	− 32 24	− 28 28	− 13 42	+ 05 49	+ 25 59	+ 43 24	+ 52 32	+ 48 36	+ 33 50	+ 14 19
जम्मू (का.)	+ 06 27	− 19 56	− 33 55	− 27 53	− 05 24	+ 24 01	+ 54 21	+ 80 44	+ 94 43	+ 88 41	+ 66 12	+ 36 47
जयपुर (रा.)	+ 07 38	− 13 05	− 23 59	− 19 17	− 01 41	+ 21 30	+ 45 26	+ 66 09	+ 77 03	+ 72 21	+ 54 45	+ 31 34
जामनगर (गु.)	+ 34 12	+ 17 20	+ 08 30	+ 12 18	+ 26 36	+ 45 29	+ 65 00	+ 81 52	+ 90 42	+ 86 54	+ 72 36	+ 53 43
जालन्धर (पं.)	+ 05 04	− 19 52	− 33 04	− 27 23	− 06 08	+ 21 41	+ 50 24	+ 75 20	+ 88 32	+ 82 51	+ 61 36	+ 33 47
जालोर (रा.)	+ 21 51	+ 02 33	− 07 35	− 03 13	+ 13 10	+ 34 46	+ 57 05	+ 76 23	+ 86 31	+ 82 09	+ 65 56	+ 44 10
जींद (ह.)	+ 03 49	− 19 10	− 31 17	− 26 03	− 06 31	+ 19 09	+ 45 39	+ 68 38	+ 80 45	+ 75 31	+ 55 59	+ 30 19
जैसलमेर (रा.)	+ 27 30	+ 06 47	− 04 07	+ 00 35	+ 18 11	+ 41 22	+ 65 18	+ 86 01	+ 96 55	+ 92 13	+ 74 37	+ 51 28
जोधपुर (रा.)	+ 19 19	− 00 52	− 11 29	− 06 55	+ 10 14	+ 32 49	+ 56 09	+ 76 20	+ 86 57	+ 82 23	+ 65 08	+ 42 38
जोरहाट (आसा.)	− 65 33	− 86 07	− 96 56	− 92 17	− 74 48	− 51 48	− 28 03	− 07 29	+ 03 20	− 01 19	− 18 48	− 41 48
झरिया (झा.खं.)	− 31 58	− 49 53	− 59 17	− 55 14	− 40 02	− 19 58	+ 00 46	+ 18 41	+ 28 05	+ 24 02	+ 08 50	− 11 14
झांसी (उ.प्र.)	− 02 01	− 21 23	− 31 34	− 27 11	− 10 44	+ 10 57	+ 33 21	+ 52 43	+ 62 54	+ 58 31	+ 41 54	+ 20 23
झालरापाटन (रा.)	+ 08 19	− 10 20	− 20 07	− 15 54	− 00 05	+ 20 48	+ 42 21	+ 61 00	+ 70 47	+ 66 34	+ 50 45	+ 29 52
झालावाड़ (रा.)	+ 08 23	− 10 16	− 20 03	− 15 50	− 00 01	+ 20 52	+ 42 25	+ 61 04	+ 70 51	+ 66 38	+ 50 49	+ 29 56
झुंझुनू (रा.)	+ 08 28	− 13 19	− 24 48	− 19 51	− 01 20	+ 23 02	+ 48 12	+ 69 59	+ 81 28	+ 76 31	+ 58 00	+ 33 38
टोंक (रा.)	+ 08 23	− 11 39	− 22 11	− 17 39	− 00 38	+ 21 47	+ 44 57	+ 64 59	+ 75 31	+ 70 59	+ 53 58	+ 31 39
डिब्रूगढ़ (आसा.)	− 69 06	− 90 22	−101 33	− 96 44	− 78 40	− 54 54	− 30 22	− 09 06	+ 02 05	− 02 44	− 20 48	− 44 34

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्नसाधन कोष्ठक (2)

नगर	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
डीडवाना (रा.)	+ 12 26	− 08 45	− 19 54	− 15 06	+ 02 54	+ 26 35	+ 51 02	+ 72 13	+ 83 22	+ 78 34	+ 60 34	+ 36 53
डूंगरपुर (रा.)	+ 18 42	+ 00 43	− 08 44	− 04 40	+ 10 36	+ 30 45	+ 51 34	+ 69 33	+ 79 00	+ 74 56	+ 59 40	+ 39 31
त्रिवेन्द्रम् (के.)	+ 16 35	+ 10 32	+ 07 23	+ 08 44	+ 13 51	+ 20 39	+ 27 41	+ 33 44	+ 36 53	+ 35 32	+ 30 25	+ 23 37
तिरुपति (आं.)	+ 03 18	− 06 34	− 11 42	− 09 30	− 01 09	+ 09 55	+ 21 22	+ 31 14	+ 36 22	+ 34 10	+ 25 49	+ 14 45
थानेसर (ह.)	+ 00 51	− 22 52	− 35 20	− 29 46	− 09 44	+ 16 33	+ 43 41	+ 67 14	+ 79 50	+ 74 29	+ 54 16	+ 27 59
दतिया (म.प्र.)	− 01 41	− 21 16	− 31 34	− 27 08	− 10 30	+ 11 26	+ 34 05	+ 53 40	+ 63 58	+ 59 32	+ 42 54	+ 20 58
दरभंगा (बि.)	− 32 05	− 52 07	− 62 39	− 58 07	− 41 06	− 18 41	+ 04 29	+ 24 31	+ 35 03	+ 30 31	+ 13 30	− 06 55
दार्जिलिंग (बं.)	− 42 02	− 62 49	− 73 46	− 69 03	− 51 23	− 28 07	− 04 06	+ 16 41	+ 27 38	+ 22 55	+ 05 15	− 18 01
दिल्ली	+ 00 51	− 21 29	− 33 16	− 28 12	− 09 12	+ 15 46	+ 41 33	+ 63 33	+ 75 40	+ 70 36	+ 51 36	+ 26 38
देवप्रयाग (उ.आं.)	− 06 06	− 29 53	− 42 27	− 37 02	− 16 48	+ 09 40	+ 37 10	+ 60 57	+ 73 31	+ 68 06	+ 47 52	+ 21 48
देवबन्द (उ.प्र.)	− 01 56	− 25 14	− 37 32	− 32 14	− 12 25	+ 13 37	+ 40 28	+ 63 46	+ 76 04	+ 70 46	+ 50 57	+ 24 55
देवरिया (उ.प्र.)	− 23 41	− 44 02	− 54 43	− 50 07	− 32 50	− 10 05	+ 13 25	+ 33 46	+ 44 27	+ 39 51	+ 22 34	− 00 11
देवास (म.प्र.)	+ 09 49	− 07 28	− 16 21	− 12 28	+ 02 08	+ 21 24	+ 41 20	+ 58 32	+ 67 33	+ 63 40	+ 49 09	+ 29 48
देहरादून (उ.आं.)	− 03 55	− 27 52	− 40 31	− 35 04	− 14 41	+ 12 04	+ 39 33	+ 63 36	+ 76 15	+ 70 48	+ 50 25	+ 23 40
द्वारिका (गु.)	+ 38 55	+ 22 16	+ 13 33	+ 17 18	+ 31 25	+ 50 05	+ 69 21	+ 86 00	+ 94 53	+ 90 58	+ 76 51	+ 58 11
धनबाद (झा.खं.)	− 32 22	− 50 17	− 59 41	− 55 38	− 40 26	− 20 23	+ 00 22	+ 18 17	+ 27 41	+ 23 38	+ 51 26	− 11 38
धर्मशाला (हि.)	+ 00 58	− 24 54	− 38 36	− 32 41	− 10 39	+ 18 12	+ 47 58	+ 73 50	+ 87 32	+ 81 37	+ 59 35	+ 30 44
नरैना (रा.)	+ 14 26	− 06 12	− 17 04	− 12 23	+ 05 09	+ 28 15	+ 52 06	+ 72 44	+ 83 36	+ 78 55	+ 61 23	+ 38 17
नवलगढ़ (रा.)	+ 09 09	− 12 25	− 23 46	− 18 53	− 00 33	+ 23 34	+48 27	+ 70 01	+ 81 22	+ 76 29	+ 58 09	+ 34 02
नागपुर (म.)	− 01 04	− 16 49	− 25 03	− 21 31	− 08 10	+ 09 30	+ 27 44	+ 43 29	+ 51 43	+ 48 11	+ 34 50	+ 17 10
नागौर (रा.)	+ 15 58	− 04 59	− 16 00	− 11 15	+ 06 33	+ 29 58	+ 54 10	+ 75 07	+ 86 08	+ 81 23	+ 63 35	+ 40 10
नाथद्वारा (रा.)	+ 17 23	− 01 33	− 11 29	− 07 13	+ 08 52	+ 30 03	+ 51 57	+ 70 53	+ 80 49	+ 76 33	+ 60 28	+ 39 17
नाभा (पं.)	+ 03 41	− 20 16	− 32 55	− 27 20	− 07 05	+ 19 40	+ 47 15	+ 71 12	+ 83 51	+ 78 24	+ 58 01	+ 31 16
नारनौल (ह.)	+ 05 12	− 16 35	− 28 04	− 23 07	− 04 36	+ 19 56	+ 44 56	+ 66 43	+ 78 12	+ 73 15	+ 54 44	+ 30 22
नालागढ़ (हि.)	+ 00 45	− 23 56	− 36 57	− 31 21	− 10 20	+ 17 13	+ 45 39	+ 70 20	+ 83 23	+ 77 45	+ 56 44	+ 29 11
नासिक (म.)	+ 21 00	+ 06 12	− 01 32	+ 01 48	+ 14 20	+ 39 55	+ 48 04	+ 62 52	+ 70 36	+ 67 16	+ 54 44	+ 38 09
नाहन (हि.)	− 01 24	− 25 36	− 38 22	− 32 52	− 12 16	+ 14 44	+ 42 36	+ 66 48	+ 79 34	+ 74 04	+ 53 28	+ 26 28
नीमच (म.प्र.)	+ 13 39	− 04 51	− 14 33	− 10 23	+ 05 19	+ 26 02	+ 47 25	+ 65 55	+ 75 37	+ 71 27	+ 55 45	+ 35 02
नैनीताल (उ.आं.)	− 08 47	− 31 51	− 44 00	− 38 46	− 19 02	+ 06 36	+ 33 11	+ 56 15	+ 68 24	+ 63 10	+ 43 33	+ 17 48
पंचकूला (ह.)	+ 00 27	− 23 49	− 36 38	− 31 07	− 10 27	+ 16 39	+ 44 37	+ 68 53	+ 81 42	+ 76 11	+ 55 31	+ 28 25
पंजिम (गोवा)	+ 24 22	+ 13 07	+ 07 14	+ 09 46	+ 19 17	+ 31 55	+ 44 58	+ 56 13	+ 62 16	+ 59 34	+ 50 03	+ 37 25
पटना (बि.)	− 28 41	− 48 12	− 58 27	− 54 02	− 37 25	− 15 31	+ 06 57	+ 26 28	+ 36 43	+ 32 18	+ 15 44	− 06 07
पटियाला (पं.)	+ 02 33	− 21 24	− 34 03	− 28 36	− 08 13	+ 18 32	+ 46 07	+ 70 04	+ 62 43	+ 77 16	+ 56 53	+ 30 08
पठानकोट (पं.)	+ 03 42	− 22 10	− 35 52	− 29 57	− 07 55	+ 20 56	+ 50 42	+ 76 34	+ 90 16	+ 84 21	+ 62 19	+ 33 28
पाण्डिचेरी (पां.)	+ 02 34	− 06 00	− 10 37	− 08 40	− 01 18	+ 08 19	+ 18 14	+ 26 58	+ 31 25	+ 29 20	+ 22 06	+ 12 29
पानीपत (ह.)	+ 01 01	− 22 03	− 34 12	− 28 58	− 09 21	+ 16 24	+ 42 59	+ 66 03	+ 78 12	+ 72 58	+ 53 21	+ 27 36
पालमपुर (हि.)	+ 00 27	− 25 15	− 38 51	− 32 59	− 11 05	+ 17 35	+ 47 09	+ 72 51	+ 86 27	+ 80 35	+ 58 41	+ 30 01
पाली (रा.)	+ 18 43	− 00 57	− 11 17	− 06 50	+ 09 52	+ 31 53	+ 54 37	+ 74 17	+ 84 37	+ 80 10	+ 63 28	+ 41 27
पुंछ (का.)	+ 08 38	− 18 54	− 33 30	− 27 12	− 03 43	+ 26 57	+ 58 34	+ 86 06	+100 42	+ 94 24	+ 70 55	+ 40 15
पुरनिया (बि.)	− 38 05	− 57 49	− 68 12	− 63 44	− 46 58	− 24 52	− 02 03	+ 17 41	+ 28 04	+ 23 36	+ 06 50	− 15 16
पुरी (उ.)	− 26 53	− 41 32	− 49 12	− 45 54	− 33 29	− 17 03	− 00 03	+ 14 36	+ 22 16	+ 18 58	+ 06 33	− 09 53
पूना (म.)	+ 21 58	+ 08 19	+ 01 10	+ 04 15	+ 15 59	+ 31 08	+ 46 58	+ 60 37	+ 67 46	+ 64 41	+ 53 07	+ 37 48
पोरबन्दर (गु.)	+ 36 49	+ 20 40	+ 12 12	+ 15 51	+ 29 33	+ 47 40	+ 66 23	+ 82 32	+ 91 00	+ 87 21	+ 73 39	+ 55 32

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्नसाधन कोष्ठक (2)

नगर	मेष मि. से.	वृष मि. से.	मिथुन मि. से.	कर्क मि. से.	सिंह मि. से.	कन्या मि. से.	तुला मि. से.	वृश्चिक मि. से.	धनु मि. से.	मकर मि. से.	कुम्भ मि. से.	मीन मि. से.
पोर्टब्लेयर (अं.नि.)	− 48 32	− 56 54	− 61 16	− 59 24	− 52 19	− 42 55	− 33 12	− 24 50	− 20 28	− 22 20	− 29 25	− 38 40
प्रतापगढ़ (उ.प्र.)	− 15 57	− 35 41	− 46 04	− 41 36	− 24 50	− 02 44	+ 20 05	+ 39 49	+ 50 12	+ 45 44	+ 28 58	+ 06 52
प्रयाग (उ.प्र.)	− 15 21	− 34 47	− 45 00	− 40 37	− 24 06	− 02 20	+ 20 09	+ 39 35	+ 49 48	+ 45 25	+ 28 54	+ 07 08
फरीदकोट (पं.)	+ 09 15	− 15 01	− 27 50	− 22 19	+ 01 39	+ 25 27	+ 53 25	+ 77 41	+ 90 30	+ 84 59	+ 64 19	+ 37 13
फरीदाबाद (ह.)	+ 00 36	− 21 31	− 33 10	− 28 09	− 09 21	+ 15 22	+ 40 52	+ 62 59	+ 74 38	+ 69 37	+ 50 49	+ 26 06
फाज़िल्का (पं.)	+ 11 53	− 12 09	− 24 50	− 19 22	+ 01 05	+ 27 54	+ 55 35	+ 79 37	+ 92 18	+ 86 50	+ 66 23	+ 39 34
फिरोज़पुर (पं.)	+ 09 02	− 15 29	− 28 27	− 22 52	− 01 59	+ 25 23	+ 53 38	+ 78 09	+ 91 07	+ 85 32	+ 64 39	+ 37 17
फुलेरा (रा.)	+ 10 06	− 10 32	− 21 24	− 16 43	+ 00 49	+ 23 55	+ 47 46	+ 68 24	+ 79 16	+ 74 35	+ 57 03	+ 33 57
बंगलौर (क.)	+ 11 05	+ 01 44	− 03 09	− 01 03	+ 06 52	+ 17 23	+ 28 15	+ 37 36	+ 42 29	+ 40 23	+ 32 28	+ 21 57
बठिण्डा (पं.)	+ 08 22	− 15 25	− 27 59	− 22 34	− 02 20	+ 24 14	+ 51 38	+ 75 25	+ 87 59	+ 82 34	+ 62 20	+ 35 46
बदायूं (उ.प्र.)	− 06 20	− 28 07	− 39 36	− 34 39	− 16 08	+ 08 14	+ 33 24	+ 55 11	+ 66 40	+ 61 43	+ 43 12	+ 18 50
बलिया (उ.प्र.)	− 24 37	− 44 17	− 54 37	− 50 10	− 33 28	− 11 17	+ 11 17	+ 30 57	+ 41 17	+ 36 50	+ 20 08	+ 01 52
बाड़मेर (रा.)	+ 26 23	+ 06 43	− 03 37	+ 00 50	+ 17 32	+ 39 33	+ 62 17	+ 81 57	+ 92 17	+ 87 50	+ 71 08	+ 49 07
बांसवाड़ा (रा.)	+ 16 14	− 01 29	− 10 46	− 06 46	+ 08 15	+ 28 05	+ 48 34	+ 66 17	+ 75 34	+ 71 34	+ 56 33	+ 36 43
बिजनौर (उ.प्र.)	− 03 27	− 26 26	− 38 33	− 33 19	− 13 47	+ 11 53	+ 38 23	+ 61 22	+ 73 29	+ 68 15	+ 48 43	+ 23 03
बिलासपुर (छ.ग.)	− 13 41	− 30 12	− 38 51	− 35 07	− 21 07	− 02 37	+ 16 29	+ 33 00	+ 41 39	+ 37 55	+ 23 55	+ 05 25
बिलासपुर (हि.)	+ 00 12	− 24 44	− 37 56	− 32 15	− 11 00	+ 16 49	+ 45 32	+ 70 28	+ 83 40	+ 77 59	+ 56 04	+ 28 55
बीकानेर (रा.)	+ 16 53	− 04 50	− 16 17	− 11 21	+ 07 07	+ 31 23	+ 56 27	+ 78 10	+ 89 37	+ 84 41	+ 66 13	+ 41 57
बीजापुर (क.)	+ 15 45	+ 03 28	− 02 56	− 00 11	+ 10 13	+ 24 00	+ 38 15	+ 50 32	+ 56 56	+ 54 11	+ 43 47	+ 30 00
बुलन्दशहर (उ.प्र.)	− 01 32	− 23 39	− 35 18	− 30 17	− 11 29	+ 13 14	+ 38 44	+ 60 51	+ 72 30	+ 67 29	+ 48 11	+ 23 58
बूंदी (रा.)	+ 09 39	− 09 43	− 19 54	− 15 31	+ 00 56	+ 22 37	+ 45 01	+ 64 23	+ 74 34	+ 70 11	+ 53 44	+ 32 03
बृन्दावन (उ.प्र.)	− 00 23	− 21 42	− 32 56	− 28 06	− 09 58	+ 13 53	+ 38 31	+ 59 50	+ 71 04	+ 66 14	+ 48 06	+ 24 15
भरतपुर (रा.)	+ 00 50	− 20 11	− 31 15	− 26 29	− 08 37	+ 14 53	+ 39 10	+ 60 11	+ 71 15	+ 66 29	+ 48 37	+ 25 07
भागलपुर (बि.)	− 35 33	− 54 46	− 64 52	− 60 31	− 44 12	− 22 11	− 00 27	+ 18 46	+ 28 52	+ 24 31	+ 08 12	− 13 19
भिवानी (ह.)	+ 04 59	− 17 31	− 29 23	− 24 17	− 05 08	+ 20 00	+ 45 57	+ 68 27	+ 80 19	+ 75 13	+ 56 04	+ 30 56
भीनमाल (रा.)	+ 23 23	+ 04 23	− 05 36	− 01 18	+ 14 50	+ 36 06	+ 58 05	+ 77 05	+ 87 04	+ 82 46	+ 66 38	+ 45 22
भुज (गु.)	+ 35 21	+ 17 52	+ 03 41	+ 12 38	+ 27 29	+ 47 04	+ 67 19	+ 84 48	+ 93 59	+ 90 02	+ 75 11	+ 55 36
भुवनेश्वर (उ.)	− 27 03	− 42 03	− 49 54	− 46 31	− 33 48	− 17 00	+ 00 23	+ 15 23	+ 23 14	+ 19 51	+ 07 08	− 09 40
भोपाल (म.प्र.)	+ 04 25	− 13 04	− 22 15	− 18 18	− 03 27	+ 16 08	+ 36 23	+ 53 52	+ 63 03	+ 59 06	+ 44 15	+ 24 40
मण्डी (हि.)	− 00 55	− 26 16	− 39 41	− 33 54	− 12 18	+ 15 59	+ 45 11	+ 70 32	+ 83 57	+ 78 10	+ 56 34	+ 28 17
मथुरा (उ.प्र.)	− 00 06	− 21 22	− 32 33	− 27 44	− 09 40	+ 14 06	+ 38 38	+ 59 54	+ 71 06	+ 66 16	+ 48 12	+ 24 26
मदुरै (ता.)	+ 10 50	+ 03 46	+ 00 04	+ 01 39	+ 07 39	+ 15 36	+ 23 50	+ 31 05	+ 34 46	+ 33 01	+ 27 01	+ 19 04
मन्दसोर (म.प्र.)	+ 12 58	− 05 14	− 14 47	− 10 41	+ 04 47	+ 25 10	+ 46 14	+ 64 26	+ 73 59	+ 69 53	+ 54 25	+ 34 02
मन्सूरी (उ.आं.)	− 04 19	− 28 21	− 41 02	− 35 34	− 15 07	+ 11 42	+ 39 23	+ 63 25	+ 76 06	+ 70 38	+ 50 11	+ 23 22
महेन्द्रगढ़ (ह.)	+ 05 24	− 16 33	− 28 07	− 23 08	− 04 28	+ 20 04	+ 45 24	+ 67 21	+ 78 55	+ 73 56	+ 55 26	+ 30 44
मारवाड़ जं. (रा.)	+ 17 39	− 02 01	− 12 21	− 7 54	+ 08 48	+ 30 49	+ 53 33	+ 73 13	+ 83 33	+ 79 06	+ 62 24	+ 40 23
मालेरकोटला (पं.)	+ 04 35	− 19 30	− 32 14	− 26 45	− 06 14	+ 20 41	+ 48 28	+ 72 34	+ 85 18	+ 79 49	+ 59 18	+ 32 23
मिर्जापुर (उ.प्र.)	− 17 49	− 36 58	− 47 01	− 42 42	− 26 26	− 05 00	+ 17 09	+ 36 18	+ 46 21	+ 42 02	+ 25 46	+ 04 20
मुंगेर (बि.)	− 33 41	− 53 03	− 63 14	− 58 51	− 42 24	− 20 43	+ 01 41	+ 21 03	+ 31 14	+ 26 51	+ 10 24	− 11 17
मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)	− 01 48	− 24 56	− 37 08	− 31 53	− 12 12	+ 13 39	+ 40 20	+ 63 28	+ 75 40	+ 70 25	+ 50 44	+ 24 53
मुम्बई (म.)	+ 25 36	+ 11 37	+ 04 18	+ 07 26	+ 19 18	+ 34 59	+ 51 12	+ 65 11	+ 72 30	+ 69 22	+ 57 30	+ 41 49
मुरादाबाद (उ.प्र.)	− 05 37	− 28 07	− 39 59	− 34 53	− 15 44	+ 09 24	+ 35 21	+ 57 11	+ 69 43	+ 64 37	+ 45 28	+ 20 20
मेरठ (उ.प्र.)	− 01 26	− 24 06	− 36 02	− 30 53	− 11 32	+ 13 42	+ 39 50	+ 62 29	+ 74 26	+ 69 17	+ 50 01	+ 24 42

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्नसाधन कोष्ठक (2)

नगर	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
मैसूर (क.)	+ 15 25	+ 06 33	+ 01 56	+ 03 55	+ 11 25	+ 21 22	+ 31 39	+ 40 31	+ 45 08	+ 43 09	+ 35 39	+ 25 42
मोगा (पं.)	+ 07 07	− 17 20	− 30 15	− 24 41	− 03 52	+ 23 24	+ 51 33	+ 76 00	+ 88 55	+ 83 21	+ 62 32	+ 35 16
रतलाम (म.प्र.)	+ 13 29	− 04 04	− 13 17	− 09 19	+ 05 35	+ 25 15	+ 45 35	+ 63 08	+ 72 21	+ 68 23	+ 53 29	+ 33 49
रतनगढ़ (रा.)	+ 11 32	− 10 15	− 21 44	− 16 47	+ 01 44	+ 26 06	+ 51 16	+ 73 03	+ 84 32	+ 79 35	+ 61 04	+ 36 42
रांची (झा.खं.)	− 27 39	− 45 17	− 54 31	− 50 33	− 35 35	− 15 50	+ 04 35	+ 22 13	+ 31 27	+ 27 29	+ 12 31	− 07 14
राजकोट (गु.)	+ 31 11	+ 14 28	+ 05 43	+ 09 29	+ 23 40	+ 42 23	+ 61 45	+ 68 28	+ 87 13	+ 83 27	+ 69 16	+ 50 33
रामपुरबुशहर (हि.)	− 03 17	− 28 18	− 41 32	− 35 50	− 14 31	+ 13 24	+ 42 13	+ 67 14	+ 80 28	+ 74 46	+ 53 27	+ 25 32
रानेश्वरम् (ता.)	+ 06 38	− 00 02	− 03 30	− 02 00	+ 03 38	+ 11 06	+ 18 50	+ 25 30	+ 28 58	+ 27 28	+ 21 50	+ 14 22
रायपुर (छ.ग.)	− 11 12	− 27 01	− 35 17	− 31 44	− 18 19	− 00 35	+ 17 44	+ 33 33	+ 41 49	+ 38 16	+ 24 51	+ 07 07
रिवाड़ी (ह.)	− 03 24	− 18 28	− 29 59	− 25 02	− 06 26	+ 18 01	+ 43 16	+ 65 08	+ 76 39	+ 71 42	+ 53 06	+ 28 39
रीवां (म.प्र.)	− 12 13	− 30 47	− 40 32	− 36 20	− 20 35	+ 00 13	+ 21 01	+ 40 15	+ 50 00	+ 45 48	+ 30 03	+ 09 15
रोपड़ (पं.)	+ 01 34	− 22 57	− 35 55	− 30 20	− 09 27	+ 17 55	+ 46 10	+ 70 41	+ 83 39	+ 78 04	+ 57 11	+ 29 49
रोहतक (ह.)	+ 02 54	− 19 40	− 31 35	− 26 27	− 07 15	+ 17 59	+ 44 02	+ 66 36	+ 78 31	+ 73 23	+ 54 11	+ 28 57
लखनऊ (उ.प्र.)	− 12 30	− 33 08	− 44 00	− 39 19	− 21 47	+ 01 19	+ 25 10	+ 45 48	+ 56 40	+ 51 59	+ 34 27	+ 11 21
लुधियाना (पं.)	+ 04 06	− 20 25	− 33 23	− 27 48	− 06 55	+ 20 27	+ 48 42	+ 73 13	+ 86 11	+ 80 36	+ 59 43	+ 32 21
वडोदरा (गु.)	+ 21 51	+ 05 08	− 03 37	+ 00 09	+ 14 20	+ 33 03	+ 52 25	+ 69 08	+ 77 53	+ 74 07	+ 59 56	+ 41 13
वाराणसी (उ.प्र.)	− 19 37	− 38 55	− 49 03	− 44 41	− 28 18	− 06 42	+ 15 37	+ 34 55	+ 45 03	+ 40 41	+ 24 18	+ 02 42
विजयवाड़ा (आं.)	− 03 37	− 15 38	− 21 54	− 19 13	− 09 02	+ 04 28	+ 18 25	+ 30 26	+ 36 42	+ 34 01	+ 23 50	+ 10 20
विशाखापट्टनम् (आं.)	− 15 02	− 27 58	− 34 44	− 31 49	− 20 52	− 06 21	+ 08 38	+ 21 34	+ 28 20	+ 25 25	+ 14 28	− 00 03
शाहदरा (दिल्ली)	+ 00 31	− 21 49	− 33 36	− 28 32	− 09 32	+ 15 26	+ 41 13	+ 63 33	+ 75 20	+ 70 16	+ 51 16	+ 26 18
शिमला (हि.)	− 01 07	− 25 48	− 38 51	− 33 13	− 12 12	+ 15 22	+ 43 47	+ 68 28	+ 81 31	+ 75 53	+ 54 52	+ 27 19
शिलांग (मे.)	− 55 21	− 74 52	− 85 07	− 80 42	− 64 08	− 42 17	− 19 43	− 00 12	+ 10 03	+ 05 38	− 10 56	− 32 47
श्रीनगर (का.)	+ 05 28	− 22 20	− 37 06	− 30 43	− 07 01	+ 23 57	+ 55 52	+ 83 40	+ 98 26	+ 92 03	+ 68 21	+ 37 23
संगरूर (पं.)	+ 04 50	− 18 57	− 31 31	− 26 06	− 05 52	+ 20 42	+ 48 06	+ 71 53	+ 84 27	+ 79 02	+ 58 48	+ 32 14
सरहिंद (पं.)	+ 02 27	− 21 49	− 34 38	− 29 07	− 08 27	+ 18 39	+ 46 37	+ 70 53	+ 83 42	+ 78 11	+ 57 31	+ 30 25
सहारनपुर (उ.प्र.)	− 01 42	− 25 19	− 37 47	− 32 25	− 12 18	+ 14 04	+ 41 18	+ 64 55	+ 77 23	+ 72 01	+ 51 54	+ 25 32
सागर (म.प्र.)	− 01 46	− 19 45	− 29 12	− 25 08	− 09 52	+ 10 17	+ 31 06	+ 49 05	+ 58 32	+ 54 28	+ 39 12	+ 19 03
सांगानेर (रा.)	+ 07 54	− 12 44	− 23 36	− 18 55	− 01 23	+ 21 43	+ 45 34	+ 66 12	+ 77 04	+ 72 23	+ 54 51	+ 31 45
सिरसा (ह.)	+ 08 40	− 14 28	− 26 40	− 21 25	− 01 44	+ 24 07	+ 50 48	+ 73 56	+ 86 08	+ 80 53	+ 61 12	+ 35 21
सीकर (रा.)	+ 09 57	− 11 22	− 22 36	− 17 46	+ 00 22	+ 24 13	+ 48 51	+ 70 10	+ 81 24	+ 76 34	+ 58 24	+ 34 35
सूरत (गु.)	+ 24 16	+ 08 31	+ 00 17	+ 03 49	+ 17 10	+ 34 50	+ 53 04	+ 68 49	+ 77 03	+ 73 31	+ 60 10	+ 42 30
सूरतगढ़ (रा.)	+ 13 17	− 09 42	− 21 49	− 16 35	+ 02 57	+ 28 37	+ 55 07	+ 78 06	+ 90 13	+ 84 59	+ 65 27	+ 39 47
सोलन (हि.)	− 00 54	− 25 25	− 38 23	− 32 48	− 11 55	+ 15 27	+ 43 42	+ 68 13	+ 81 11	+ 75 36	+ 54 43	+ 27 21
हमीरपुर (उ.प्र.)	− 08 41	− 28 30	− 38 55	− 34 26	− 17 36	+ 04 35	+ 27 29	+ 47 18	+ 57 43	+ 53 14	+ 36 24	+ 14 13
हमीरपुर (हि.)	+ 00 58	− 24 19	− 37 41	− 31 55	− 10 23	+ 17 49	+ 46 14	+ 72 11	+ 85 33	+ 79 47	+ 58 15	+ 30 03
हरिद्वार (उ.आं.)	− 04 22	− 28 00	− 40 27	− 35 05	− 15 00	+ 11 24	+ 38 38	+ 62 15	+ 74 43	+ 69 21	+ 49 14	+ 22 52
हाथरस (उ.प्र.)	− 01 37	− 23 00	− 34 12	− 29 22	− 11 14	+ 12 37	+ 37 15	+ 58 34	+ 69 48	+ 64 58	+ 46 50	+ 22 59
हापुड़ (उ.प्र.)	− 01 33	− 24 00	− 35 48	− 30 42	− 11 38	+ 13 25	+ 39 17	+ 61 42	+ 73 32	+ 68 26	+ 49 22	+ 24 19
हांसी (ह.)	+ 05 18	− 17 26	− 29 26	− 24 16	− 04 55	+ 20 30	+ 46 42	+ 69 26	+ 81 26	+ 76 16	+ 56 55	+ 31 31
हिसार (ह.)	+ 06 09	− 16 39	− 28 41	− 23 30	− 04 06	+ 21 24	+ 47 43	+ 70 31	+ 82 33	+ 77 22	+ 57 58	+ 32 28
हैदराबाद (आं.)	+ 04 24	− 08 16	− 14 53	− 12 03	− 01 19	+ 12 54	+ 27 36	+ 40 16	+ 46 53	+ 44 03	+ 33 19	+ 19 06
होशंगाबाद (म.प्र.)	+ 03 24	− 13 40	− 22 37	− 18 46	− 04 17	+ 14 50	+ 34 36	+ 51 40	+ 60 37	+ 56 46	+ 42 17	+ 23 10
होशियारपुर (पं.)	+ 03 23	− 21 43	− 35 00	− 29 17	− 07 54	+ 20 07	+ 49 01	+ 74 07	+ 87 24	+ 81 41	+ 60 18	+ 32 17

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पृष्ठ संख्या 271
चिरस्थायी बहुमूल्य काग़ज़ पर मुद्रित

साईज़-24x18½ C.M.
सुदृढ़, आकर्षक टाईटल

व्रतपर्व-विवेक

[व्रतपर्वों की तिथियों (तारीखों) के निर्णायक नियमों पर सरल-सुबोध भाषा-शैली में लिखा एक प्रामाणिक अपूर्व प्रकाशन]

[सन् 2001 से 2050 ई. तक के रामनवमी, दशहरा, दीपावली आदि सभी हिन्दु व्रतपर्वों की तारीखों की तैयार लम्बी सूची।]

इस पुस्तक में हिन्दुओं के चैत्र आदि 12 मासों के व्रतपर्वों के निर्णय का विशद विवेचन, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु आदि धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों के प्रमाण-वाक्यों के आधार पर ऐसी सरल भाषा-शैली में किया गया है कि- हिन्दी जानने वाला कोई भी इसे पढ़कर, रामनवमी आदि किसी भी व्रतपर्व की तारीख का निर्णय आसानी से कर सकता है। विभिन्न पंचांगों में किसी व्रतपर्व की तारीख के बारे में मतभेद होने पर इस पुस्तक में दिए गए नियमों के अनुसार यह निर्णय आप अधिकारपूर्वक कर सकते हैं कि- किस पंचांग की तारीख शुद्ध है।

व्रतपर्वों की तारीख का निर्णय पञ्चाङ्गकार किन नियमों के आधार पर करते हैं- यह सब शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा विस्तारपूर्वक हिन्दी में समझाया गया है। व्रतपर्वों के निर्णायक धर्मशास्त्रीय सैकड़ों संस्कृतवाक्य, श्लोक हिन्दी-अनुवादसहित उद्धृत किए गए हैं। प्रातः, संगव, मध्याह्न, अपराह्न, सायं, प्रदोष, अरुणोदय, निशीथ, पूर्वविद्धा-परविद्धा तिथि आदि सभी पारिभाषिक कठिन शब्दों की (जिनका प्रयोग व्रतपर्व-निर्णय के प्रसंग में बार-बार आता है) सुस्पष्ट व्याख्या की गई है और इन्हें जानने की गणितप्रक्रिया से मुक्ति दिलाने वाले अनेक कोष्ठक आपको यहां मिलेंगे।

इस पुस्तक में दिए गए अनेक महत्वपूर्ण विषयों में से कुछेक की ओर हम पाठकों का ध्यान यहां आकृष्ट करते हैं:-

(i) हिन्दु व्रतपर्वों के निर्णायक नियमों-सिद्धान्तों की सरल व्याख्या दी गई है।

(ii) हिन्दु व्रतपर्वों में यदा-कदा पैदा होने वाले मतभेद के कारण और उनके प्रतिकार बतलाए गए हैं।

(iii) चैत्रादि 12 चान्द्रमासों के 24 पक्षों में मनाए जाने वाले नवरात्रारम्भ, श्रीरामनवमी, अक्षयतृतीया, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, श्राद्धारम्भ-समाप्ति, दीपावली आदि सभी व्रतपर्वों के निर्णायक नियमों का विस्तृत विवेचन तथा धर्मशास्त्रों के सभी अपेक्षित व्रतपर्वनिर्धारक संस्कृत-प्रमाणवाक्यों को उद्धृत कर, इन व्रतपर्वों की तिथि (तारीख) का निर्धारण-प्रकार सोदाहरण स्पष्ट किया गया है।

(iv) किस व्रतपर्व के मनाने का शास्त्रीय-विधान क्या है ? व्रतदिन की चर्या कैसी हो ? व्रतदिन में पूजा-पाठ कैसे किया जाए ? व्रतदेवता की पञ्चोपचार या षोडशोपचार पूजा कैसे, किस मन्त्र से, किन उपकरणों (सामग्री) से की जाए, व्रत में देवता का ध्यानमन्त्र क्या है ? व्रत में क्या खाएं, क्या न खाएं ? व्रती के लिए क्या विधि-निषेध है ? व्रतपारणा (व्रत के अन्त में किए जाने वाले भोजन) का समय क्या है ? पारणा में कौन-कौन से पदार्थ भक्ष्य और कौन से वर्ज्य हैं ? सूतक-पातक में व्रत कैसे किया जाए ? रजस्वला स्त्री व्रत के दिन क्या करे ? व्रतभंग होने पर क्या प्रायश्चित्त है ? सूर्य-चन्द्रग्रहण के समय स्नान-दान-जपादि का क्या विधान है ? - इत्यादि पचासों ज्ञातव्य विषयों पर सप्रमाण पूर्ण प्रकाश डाला गया है।

(v) आधुनिक युग के व्यस्त जीवन को दृष्टि में रखते हुए व्रतदेवता की पूजादि का सारगर्भ संक्षिप्त विधान दिया गया है, जिसे 10-15 मिनटों में ही कोई भी व्यक्ति स्वयं कर्मकाण्डी विद्वान् की सहायता के बिना ही कर सकता है। नवरात्र-घटस्थापन, रामनवमी-पूजा, श्राद्ध-तर्पण, दीपावली पर महालक्ष्मी पूजनादि सभी व्रतपर्वसम्बन्धी अनुष्ठानों को आप स्वयं कर सकें- ऐसी बालबोध शैली में समझाया गया है। लगभग सभी व्रतदेवताओं के संस्कृत-स्तोत्र भी दिए गए हैं।

(vi) करवाचौथ आदि व्रतपर्वों के उद्यापन की सरल प्रक्रिया बिना किसी विशेषज्ञ की मदद के कोई भी गृहिणी स्वयं कर सके-ऐसा सरल विधानसहित निर्देश है।

(vii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के नवरात्रारम्भ, प्रदोषव्रत, एकादशीव्रत, दशहरा, दीपावली आदि लगभग सभी हिन्दु-व्रतपर्वों की अंग्रेजी तारीखों की लम्बी सूची दी गई है।

(viii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सूर्य-चन्द्रग्रहणों, हरिद्वार, प्रयाग, नासिक, उज्जैन के कुम्भपर्वों की तारीखें।

(ix) सन् 2001 से 2050 ई. तक के गुरु-शुक्रास्तकाल, गजच्छाया, अर्धोदय आदि पर्व।

(x) सन् 2001 से 2050 ई. तक के प्रमुख-प्रमुख जैन-पर्वों की तारीखें।

(xi) सन् 2001 से 2050 ई. तक के चैत्रादि मासों के चन्द्रदर्शन की तारीखें, तदनुसार मुहर्रम आदि मुस्लिम मासों की प्रारम्भ-तारीखें एवम् मुहर्रम, ईद-उल-फित्र आदि मुस्लिम त्योहारों की तारीखों का ज्ञानप्रकार।

(xii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सिक्ख-गुरुपर्वों की तारीखें।

(xiii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के ईस्टर सण्डे, गुडफ्राईडे की तारीखें और तदनुसार अन्य क्रिश्चियन पर्वों की तारीखों का तुरन्त निर्णय करने वाली अद्भुत तालिका।

(xiv) सभी प्रमुख व्रतों की माहात्म्य कथाएं।

(xv) सभी प्रमुख व्रतों के देवी-देवताओं की आरतियां एवं स्तोत्र।

इन उपरोक्त विषयों के अलावा व्रतपर्वों से सम्बद्ध अन्य बीसों विषय आपको इस पुस्तक में मिलेंगे। इसे खरीद लीजिए। बस, आगामी 43 वर्षों तक (सन् 2050 ई. तक) व्रतपर्वों की तारीखें जानने के लिए पंचांग, डायरी या कैलेण्डर खरीदने की आपको ज़रुरत नहीं होगी।

हमारी पुस्तकें केवल "अभिजित् प्रकाशन, कोठी नं. 59/6, पंचकूला से ही मिलेंगी। इन्हें बेचने का अधिकार अन्य किसी भी बुकसेलर को नहीं दिया गया है।

मूल्य Rs. 525/- + Rs. 50/- डाकव्यय

सम्पर्कसूत्र- श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil, 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर-6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा) - 134 109, Phone: 0172-2565 203

CC-0 In Public Domain. Kirtikent Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

पृष्ठ संख्या 272 साईज़ 24 X 18 सें. मी. उत्कृष्ट बहुमूल्य पेपर पर मुद्रित आकर्षक बहुरंगा आवरण

ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन

[मेलापकसम्बन्धी प्रत्येक समस्या का परिपूर्ण समाधान करने वाला अद्वितीय प्रकाशन]

[दूसरा संस्करण]

विवाह–सम्बन्ध के निर्णय के लिए वर और कन्या के अष्टकूटों के गुणों की गणना और उनकी कुण्डलियों के मिलान पर आज तक कोई प्रमाणिक पुस्तक नहीं लिखी गई है। " ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन " पुस्तक इस अभाव की शतप्रतिशत पूर्ति करती है। यह पुस्तक छः अध्यायों में विभाजित है– प्रथम अध्याय में अष्टकूट का सांगोपांग विस्तृत विवेचन, द्वितीय अध्याय में कुज (मङ्गली) दोष पर विस्तृत विमर्श, तृतीय अध्याय में विवाहमुहूर्त्त के साधन की सुबोध प्रक्रिया दी गई है। चतुर्थ अध्याय में भारत के 800 प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश तथा ऐसे अनेक मौलिक कोष्ठक दिए गए हैं, जिनकी मदद से सन् 1971 ई. से 2000 ई. तक (30 वर्षों में) पैदा हुए वर–कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र, जन्मनवांश और जन्मकुण्डली बिना पुराने पंचांगों की सहायता के 10–15 मिनटों में ही जानकर दैवज्ञ उनकी ग्रहस्थितियों का मिलान तथा अष्टकूटों के गुण आदि का निर्णय सरलता से कर सकता है। पंचम और छठे अध्याय मे फलित एवं सिद्धान्त ज्योतिषसम्बन्धी शोधपूर्ण ज्ञानवर्धक ग्यारह (11) मौलिक निबन्ध दिए गए हैं, जो ज्योतिष के चौंका देने वाले अज्ञात रहस्य उदघाटित करते हैं।

इस पुस्तक में दिए गए अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों में से इन कुछेक विषयों पर दृष्टिपात कीजिए:-

(1) वर–कन्या के नक्षत्रचरणों के आधार पर बनाई गई विस्तृत गुणमिलान-सारणी36 बड़े पृष्ठों पर फैली है, जिसमें सभी अष्टकूटों के गुण और दोष तथा उनके परिहार एक ही दृष्टि में तुरन्त देखे जा सकते हैं। इस प्रकार की परमोपयोगी विलक्षण महान् मिलानसारणी का निर्माण सचमुच एक अपूर्व ऐतिहासिक प्रयास है। नितान्त श्रमसाध्य इस विशाल सारणी के निर्माण के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग किया गया है। इस मिलानसारणी के अलावा दो और भिन्न प्रकार की मिलानसारणियां भी इस पुस्तक में दी गई हैं।

(2) वर्ण, गण, षडष्टक, नाड़ी आदि दोषपूर्ण कूटों के बारे में उपलब्ध अनेक परिहारवाक्यों का सोपपत्तिक सप्रमाण विवेचन तथा उनका तार्किक विश्लेषण एवं "नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्" और " एक नक्षत्रजातानां नाड़ीदोषो न विद्यते" आदि बीसों निराधार परिहारवाक्यों का सप्रमाण निराकरण किया गया है।

(3) मंगलदोष के बारे में प्रचलित 'द्वितीये भौमदोषस्तु युग्म-कन्यकयोर्विना" और "गुरु-मंगल संयोगे भौमदोषो न विद्यते" - आदि अनेक परिहारवाक्यों की प्रामाणिकता पर विस्तृत सप्रपञ्च विचार-विमर्श एवं इन परिहार-वाक्यों का विश्लेषण-पूर्वक सप्रमाण खण्डन-मण्डन किया गया है।

(4) कुज (मंगल) दोष की मात्रा का सूक्ष्मतापूर्वक यथार्थ निर्णय दैवज्ञों की भारी समस्या है। इसके लिए इस पुस्तक में सात 'कुजदोष कोष्ठक' दिए गए हैं, जिनकी सहायता से जोड़-घटावमात्र जानने वाला कोई भी दैवज्ञ मौखिक गणित द्वारा ही वर-कन्या के कुजदोष की मात्राओं के आंकिकमान (Numerical Values) 20-25 मिनटों में ही सरलतापूर्वक ज्ञात कर सकता है और उनकी तुलना द्वारा वह वर-कन्या के विवाहसम्बन्ध की उपयुक्तता का निर्णय प्रामाणिक रूप में कर सकता है। कुजदोषमात्रा का आंकिक मान ज्ञात करने की प्रक्रिया को अनेक उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया है।

(5) मिलान में उपयोगी अन्य बीसों मौलिक सारणियां दी गई हैं, जो लेखक के विस्तृत, गम्भीर अध्ययन एवं अथक परिश्रम का परिणाम हैं।

(6) मिलान पर मिलने वाले विभिन्न मत–मतान्तरों का विश्लेषण विस्तारपूर्वक किया गया है। प्रतिपाद्य विषयों के खण्डन–मण्डन के समर्थन में लगभग 90 मूल ग्रन्थों (संहिता, होरा, मुहूर्त्त आदि) से सैकड़ों प्रमाणवाक्य (श्लोक) पदे–पदे उदधृत किए गए हैं।

इसके अलावा इस पुस्तक में अनेक ऐसे विषय आपको मिलेंगे, जो गुणमिलान और कुण्डलीमिलान पर आपकी विशेष ज्ञानवृद्धि करेंगे। " नाड़ीदोष होने पर भी सम्बन्ध किया जा सकता है", " वर–कन्या की कुण्डलियों का मिलान न होने पर भी सम्बन्ध करने का ज्योतिषशास्त्र में निर्दिष्ट शास्त्रीय विधान क्या है?" – इस प्रकार की अनेक मिलान–सम्बन्धी समस्याओं का शास्त्रप्रतिपादित समाधान विस्तारपूर्वक इस पुस्तक में सप्रमाण प्रस्तुत किया गया है। विषकन्या योग और मंगलीक दोष के उद्गम तथा विकास पर विशेष ऐतिहासिक विवेचन दिया गया है।

यह पुस्तक आपको वह सब कुछ बतलाएगी, जो मिलान के लिए अपेक्षित है। इसे पढ़कर आपको आश्चर्य होगा कि– मिलान में अनेक मूर्धन्य दैवज्ञ भी कितनी अक्षम्य त्रुटियां करते हैं और इस विषय में उनका ज्ञान कितना अधूरा है।

मूल्य Rs. 500/– + डाकव्यय Rs. 50/–

पुस्तक मिलने का पताः– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172.2565 303

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री मार्त्तण्ड पंचांग एवं ज्योतिष कार्यालय

यह शताब्दी-पुराना उत्तरभारत का एकमात्र ऐसा ज्योतिष कार्यालय है, जिसने लोगों की जटिल से जटिलतर समस्याओं का फलितशास्त्रीय चमत्कृतिपूर्ण समाधान प्रस्तुत कर भारी अक्षुण्ण यश अर्जित किया है। इस कार्यालय के अधिष्ठाता

विश्वविख्यात ज्योतिषाचार्य पं. श्री इन्दुशेखर शर्मा एवं श्री संयमी शर्मा एम.ए., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य हैं।

त्रिस्कन्ध ज्योतिष के पारदृश्वा आप द्वारा विगत वर्षों की गरिमामय अवधि में ऐसा शोधपूर्ण चिन्तन पाठकों को दिया गया है, जिससे इस शास्त्र में परम्परागत विचारधारा से अपने आप में एक विलग क्रान्तिकारी दर्शन भारतीय ज्योतिष जगत् में प्रतिष्ठापित हुआ है। आप भारतीय आर्ष ज्योतिष विद्या के सुपरीक्षित गूढ़ दिव्य सिद्धान्तों के आधार पर आपकी समस्याओं को निरस्त कर खोई हुए शान्ति लौटाने की अद्भुत क्षमता रखते हैं।

गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

ध्यान दें—बाहर से आने वाले महानुभाव टेलीफोन द्वारा पण्डित जी से मिलने का दिन व समय निश्चित अवश्य कर लें, अन्यथा सम्भव है—आपको कार्यालय पहुंचने पर समय न मिल पाये और निराश लौटना पड़े। प्रात: कार्यालय में आकर अपना क्रमांक (Token No.) कार्यकर्ता से प्राप्त कीजिये। इसी क्रमांक के अनुसार आप पण्डित जी से मिल सकेंगे। क्रमांक निकल जाने पर कार्यकर्ता से सम्पर्क करें। आप कार्यालय में आकर व हमारे लैंड-लाईन नं. 0160-2641277 पर 7.30 A.M. के बाद फोन कर अपना क्रमांक (Token No.) प्राप्त कर सकते हैं।

हमारे यहां से चित्रापक्षीय निरयण गणनापद्धति द्वारा क्षेत्रीय (Zonal) जन्मसमय, जन्मतारीख और जन्मस्थान के शुद्ध अक्षांश आदि के आधार पर सूर्योदयास्त आदि में सभी अपेक्षित संस्कार देकर भारतीय/विदेशी जन्मपत्र, टेवा और निवासस्थानीय अक्षांश आदि से वर्षफल बनाये जाते हैं। व्यापारिक मशवरे (सोना-चांदी आदि धातुओं एवं चना, ग्वार आदि अनाजों की तेजी-मन्दी) तथा किसी भी ग्रह किंवा राशि के रत्न/उपरत्न के लिए प्रत्यक्ष मिलें अथवा फोन से सम्पर्क करें। श्री नवग्रहयन्त्र, सिद्ध श्री महालक्ष्मी आदि यन्त्र प्रत्यक्ष आकर प्राप्त करें। यदि आप प्रत्यक्ष प्राप्त करने में असमर्थ हों, तो मनिऑर्डर भेजकर रजिस्ट्री द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

"ईश्वरेच्छा से भूत-भविष्य में जो कुछ ग्रहगोचरवश अनुभव किया है, वह आपके समक्ष रख दिया है। जो घटित हो चुका है, उसके आप प्रत्यक्षदर्शी हैं। जो भविष्य है, उस पर आप भूतानुसंधान के आधार पर विश्वास करें।"

"By God's grace whatever has been experienced with regard to Past. Present and Future has been highlighted and shared with you. Whatever has so far occured has also been witnessed by the masses. Therefore. you can trust and have faith on the basis of our research. experience. expertise and level of accomplishment in the past."

Sanyami Sharma

श्री मार्त्तण्ड पंचांग एवं ज्योतिष कार्यालय

नजदीक-रेलवे स्टेशन, मु.पो. कुराली (मोहाली) पंजाब, पिन-140 103, भारत।

For Appointment - Inquiry Contact: 0160-2641277

www.shrimartand.com +91 9988407010

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सकल पदारथ है जग माही, भाग्यहीन नर पावत नाहीं।

प्राचीन भृगु संहिता महाशास्त्र

(फोटोस्टेट में) (संस्कृत-हिन्दी) (भाषा-टीका सहित)

यह ग्रंथ सभी खण्डों में हमारे यहाँ उपलब्ध है-

- कुण्डली खण्ड
- मूक प्रश्न विचार खण्ड
- सर्वारिष्ट निवारण खण्ड
- संतान उपाय खण्ड
- स्त्री फलित खण्ड
- नष्ट जन्मांग दीपिका खण्ड
- राज खण्ड
- जातक प्रकरणम खण्ड
- नरपति जयचर्या खण्ड
- फलित खण्ड

- शास्त्रों में ऐसा वर्णन है कि प्रत्येक मनुष्य के जीवनकाल में तीन ऐसे समय आते हैं जैसे दो शुभ और एक अशुभ या दो अशुभ और एक शुभ। अतः मनुष्य का यह जान पाना अत्यन्त ही कठिन है कि शुभ समय कब आयेगा, परन्तु भृगु संहिता ग्रंथ के द्वारा प्रत्येक समस्या का समाधान संभव है। महर्षि भृगु ऋषि ने प्रत्येक प्राणी के वर्तमान, भूतकाल एवम् भविष्यकाल के विषय में ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता प्रदान की है।
- प्रत्येक व्यक्ति के जीवनकाल में घटित घटना का विवरण, जातक की उम्र के मुताबिक होगा। जैसे एक वर्ष से पांच वर्ष तक, पाँच से दस वर्ष तक, पच्चीस से तीस आदि मृत्यु का कारण भी उपलब्ध है।
- कुण्डली खण्ड में अनेक कुण्डली और फलित खण्ड में उसका फलादेश अर्थात ज्योतिष शास्त्र का कोई भी विषय इस ग्रंथ में निहित है (ग्रंथ का एक-एक अक्षर अपनी जगह पर सर्वथा उपयुक्त एवम् बहुत गहरे अर्थ से युक्त है। इस महान ग्रंथ का एक-एक खण्ड अनेक ग्रंथों की बराबरी करता है।
- ग्रहों की दृष्टि का फल व नष्ट जातक का स्टीक विचार तो अनूठा एवम् अद्वितीय है ही, परस्पर राजयोगों का विस्तृत व प्रमाणिक विवेचन भी इसमें मिलेगा। भृगु संहिता महाशास्त्र को पढ़े बिना ज्योतिष स्वाध्याय आधा अधूरा सा ही रह जाता है।
- सौभाग्यशाली समुद्र सबके जीवन में एक बार आवश्यक आता है। जिसके पास जितना बड़ा पात्र होता है, उतना उसमें भर लेता है। सौभाग्य वृद्धि के समय का पूर्व ज्ञान हो तो उसका समुचित लाभ न उठा पाने का दुःख आदि की सम्यक् जानी प्राप्त की जाती है" भृगु संहिता महाशास्त्र" से।
- यह प्राचीन ग्रंथ अनेक वर्षों की खोज, हजारों मील की यात्रा सैकड़ों विद्वानों के अध्यवसाय तथा लाखों रुपये व्यय करके अत्यन्त ही जीर्ण दशा में कठिनता से, सर्वधारण जनता के हित के लिए यह महान् ग्रंथ सुलभ हो चुका है।
- सुविस्तृत व मिलावट से रहित सर्वतोभावेन अर्थ बोधक व्याख्या से युक्त एक प्रमाणिक एवम् प्राचीन ग्रंथ, जो स्वयं एक पुस्तकीय पुस्तकालय में विभाजित है और तीन सुन्दर सजिल्द (क्लाथ बाइंडिंग) में उपलब्ध है।

पुराणाकार साईज 20 X 30/6 बढ़िया सफेद लगभग 2500 पृष्ठ मूल्य 5500/- (पचपन सौ रुपये मात्र)।

सभी प्रकार की धार्मिक एवं ज्योतिष ग्रंथ आदि की पुस्तकें प्राप्त करने का एकमात्र स्थान-

अग्रवाल बुक डिपो

460, खारी बावली, दिल्ली - 110 006 ☎ 011-23943254, 23936116

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शताब्दी की सबसे महत्त्वपूर्ण विलक्षण घटना

लंकाधिपति दशानन रावण कृत ज्योतिष, औषधिविज्ञान,
रसायन शास्त्र, दार्शनिक विचारों और नीति शास्त्र के अनुपम ग्रन्थ

रावण संहिता

का हस्तलिखित रूप में प्रकाशन

लंकाधिपति महाराज रावण जहां प्रबल प्रतापी त्रिलोक्य विजेता वीर थे वहीं वे ज्योतिषशास्त्र और तन्त्रशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान भी थे। औषधि विज्ञान और रस निर्माण में वे महर्षि चरक के समकक्ष थे तो ज्योतिष में भी महाराज भृगु से कम नहीं। नीतिशास्त्र का ज्ञान तो उनका इतना अथाह था कि भगवान श्री राम ने अपने भाई लक्ष्मण को उनके पास नीति वचन श्रवण करने हेतु भेजा था।

परमपिता परमात्मा की महती कृपा, आप जैसे धर्मप्राण विज्ञजनों के अनुग्रह तथा विद्यावारिद् ब्राह्मणों एवं दर्शनशास्त्र और प्राचीन साहित्य के मर्मज्ञों के विपुल श्रम एवं सहयोग से आज लंकेश रचित प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थ रावण संहिता का प्रकाशन संभव हो सका है। बीस वर्षों से सतत् अनुसंधान, दुर्गम क्षेत्रों की यात्राओं और जहां से भी किंचित् मात्र प्रामाणिक सामग्री प्राप्त हो सकती थी वहां से उस सामग्री के संकलन और समायोजन का महकता हुआ पुष्प है पन्द्रह सौ से अधिक पुराणाकार पृष्ठों का यह हस्तलिखित असली प्राचीन ग्रन्थ संहिता।

महान् विद्वान रावण द्वारा रचित ज्योतिष, औषधि-विज्ञान और तंत्रशास्त्र का यह ज्ञान यद्यपि मूल रूप में रचित एक ग्रंथ के रुप में कहीं उपलब्ध नहीं, परन्तु ज्ञान की धारा दृष्टि से ओझल भले ही हो जाए वह विलुप्त नहीं होती। ज्ञान के यत्र-तत्र बिखरे इन बिन्दुओं, किरणों और मोतियों को एक स्थान पर संग्रहित किया गया है रावण संहिता नामक इस हस्तलिखित वृहद् ग्रंथ में। प्रस्तुत ग्रंथ पांच खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में लंकाधिपति रावण के वंश का परिचय, जन्म की कथा, उनके महान् कार्यों और ज्ञानवान स्वरूप की झांकी प्रस्तुत की गई है। द्वितीय खण्ड में लंकेश द्वारा रचित माने जाने वाले चिकित्सा विज्ञान और औषधिशास्त्र से संबंधित एक हजार एक सौ श्लोकों का हिन्दी अनुवाद तथा अनेक जटिल रोगों के निदान से संबंधित जानकारियां संग्रहित हैं। तृतीय खण्ड में तंत्रशास्त्र एवं तांत्रिक क्रियाओं से संबंधित प्राचीनतम ज्ञान का संकलन है तो चतुर्थ खण्ड में हैं सहस्राधिक कुण्डलियां। पंचम खण्ड में कुण्डलियों के फलादेश दिए गए हैं जो लगभग साढ़े छः सौ पृष्ठों में हैं।

धर्म में आस्था रखने वाले गुण ग्राहक ज्ञानीजनों, ज्योतष के गूढ़ रहस्यों को समझने के आकांक्षी ज्योतिषाचार्यों, यंत्र-मंत्र-तंत्र शास्त्र के आराधकों एवं प्राचीन चिकित्सा पद्धति के प्रेमियों के लिए तो यह हस्तलिखित ग्रंथ परम उपयोगी सिद्ध होगा ही, भक्ति भाव से इसका पाठ-पाठन और श्रद्धापूर्वक नमन करने वाले भी मनवांछित सिद्धियों की प्राप्ति कर सकेंगे, ऐसा विश्वास किया जाता है। विपुल श्रम और राशि व्यय करने पर ही इस ग्रंथ का प्रकाशन संभव हो सका है फिर भी जन-कल्याण और प्राचीन विलुप्त साहित्य को जन-जन में लोकप्रिय बनाने की भावना से मात्र 3100/- इक्तीस सौ रुपये एवं डाक खर्च 250/- रुपये अतिरिक्त रखी गई है। रु. 1000/- (एक हजार रुपये) पेशगी भेजकर शेष 2350/- (दौ हजार तीन सौ पचास रुपये) की वी.पी. द्वारा यह ग्रंथ आप घर बैठे भी प्राप्त कर सकते हैं। मंगाने का पता-

इसके अतिरिक्त हमारे यहाँ ज्योतिष, हस्तरेखा, तंत्र-मंत्र-यंत्र एवं कर्मकाण्ड संबंधी पुस्तकों का विशाल भण्डार है। कुछ दुर्लभ एवं प्राचीन ग्रंथ भी समय-समय पर आते रहते हैं। नवीन पुस्तकों के लिए भी सम्पर्क रखें।

अग्रवाल बुक डिपो

460, खारी बावली, दिल्ली - 110 006 ☎ 011-23943254

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तन्त्र पथ प्रदर्शक

लेखकः- श्री रमेश दत्त झा झक्करनाथ, झाबाबा **मूल्य : रुपये 150.00** *(डाक खर्च 50 रु. अलग)*

प्रस्तुत शोध प्रबंध में- तंत्र, मंत्र, यंत्र, ज्योतिष एवं साहित्य कर्मकाण्ड के विषय पर प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तुत-शोध-प्रबन्ध ''रूचि'' को तंत्र विद्या के विषय में आकृष्ट करना है।

''गुरुमुख'' (दीक्षा संकार) के लिये प्रारंभिक-प्रयास, धार्मिक उपासना, पूजा-पद्धति साधना-उपासना की ''आचारसंहिता'' (नियमादि) रहस्यमयी माया के गूढ़ तथा गोपनीय-विज्ञान, जोकि तंत्र विषयक-विवेचनात्मक समीक्षा के आधार पर, यह शास्त्र षट्कर्म (Six fold activity) के रूप में माना जाता है। इसके वस्तुस्थिति से यथा संभव विषय-वस्तु से परिचय कराना चाहता हूँ।

जिस प्रकार ''उपासना के ये सभी क्रियाएं-इच्छानुसार प्रार्थना द्वारा अलौकिक प्रेरक शक्ति के माध्यम से प्रगतिशील मानव, उत्तम और सही दिशा में सफलता प्राप्ति के लिए प्रगति-पथ पर अग्रसर हों एवं गति प्राप्त करने के लिये उचित दिशा की ओर संकेत करती है। यह संकेत हमारी कुछ विश्वस्त परम्परा पर आधारित है। 6 प्रकार के कर्म इस प्रकार है - मारण मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, उद्वेषण और शान्ति। मानसिक तनाव, विकलता हलचल उद्विग्नता, आदि में शान्ति कर्म के द्वारा समाधान होता है। इस प्रकार से आवश्यकतानुसार अन्य कार्यों के लिये दूसरे निर्दिष्टकर्म से समाधान संभव होता है।

कुलार्णवतंत्र के अनुसार - तांत्रिक प्रवृत्ति - सांसारिक वस्तु की उपलब्धि के लिये है। इसका फल शीघ्र होता है। महाकाव्य और पुराण में - इस रहस्यमय गूढ़ एवं गोपनीय विद्या के बारे में उपाख्यान के रूप में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। ये सभी वर्णन प्रयोग रूप में है। यह विद्या पहले राक्षसों के बीच थी ऋषि शुक्राचार्य को भी यह विद्या प्राप्त थी, परन्तु सिर्फ राक्षस ही उनके शिष्य थे।

इस प्रकार यह ब्रह्म विद्या के रूप में अवतरिक हुआ। तंत्र विद्या के विषय में - हमेशा वर्णन है कि यह एक रहस्यमयी, गूढ़ और गोपनीय मार्ग है। एक तरह से - यह साधकों के धन-सम्पत्ति हरण कर देता है। पत्नी एवं उनके जीवन को भी बर्बाद करदेता है। फिर भी - इसके प्रति आस्था विश्वास और भरोसे पर सन्देह नहीं करना एवं इसके रहस्य को दूसरों के सामने व्यक्त नहीं करना चाहिये।

किसी भी जाति के कोई भी व्यक्ति बिना कोई दिक्कत के इस शास्त्र में प्रवेश कर सकते हैं। मन्त्र ग्रहण कर सकते हैं, यदि उनकी रुचि हो। प्राप्त करने की मानसिकता हो। प्राप्त करने योग्य हो। दृढ़ संकल्पित हो। तंत्र शास्त्र एंक सुलभ व्याख्या है। वेदों की सत्यता का प्रमाण है। अल्पज्ञानी, थोड़ी आध्यात्मिक प्रवृत्ति के लोगों के लिए कलियुग के व्यस्त और बोझिल लोगों के लिए सर्वोत्तम और सर्वोच्च साधन है।

मनुष्य के कष्टों के समाधान के लिये - भगवान शिव ने इस शास्त्र को इसी युग (काल) के लिए उत्कृष्ट शैली में प्रचारित किया। धार्मिक सत्यता में प्रवेश करने का एक पारपत्र (बीजा) के रूप में तंत्र का आविष्कार किया।

इस प्रकार आगे बढ़ने के लिये - आध्यात्मिक निर्देशन भी आवश्यक होता है। सिद्धि और माया तंत्र शास्त्र में - शिव-पार्वती (कथोप-कथन) उत्कृष्ट और विशिष्ट भाषा शैली है। प्रतिमा की रचनात्मक क्रिया और पीठें की स्थापना मन्दिरों के निर्माण, जीवों के कल्याण, मानवों को दीक्षा (संस्कार) प्राप्त होने के लिये होता है। उपासना, साधना, तपस्या तथा आध्यात्मिक प्रयोगात्मक कर्म के लिये ही होता है। जिसे वांछित फल की प्राप्ति होती है, मनोरथ सिद्ध होता है। विशेष रूप से जिसकी जैसी भावना वैसा ही फल होता है।

अतः उपर्युक्त विषय वस्तुओं का विस्तृत वर्णन (संकेत) रूप में इस पुस्तक की विशेषता है।

अग्रवाल बुक डिपो

460, खारी बावली, दिल्ली - 110 006 ☎ 23943254

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री राम श्री राम

राशि रत्न भाग्य

सभी राशियों के रत्न, सभी राशियों के उपरत्न, नवरत्न लूज सेट, नवरत्न अंगूठी व पेन्डेन्ट, सभी राशियों पर लगने वाली राशि की अंगूठियां व पेन्डेन्ट शुद्ध चांदी में, पूजा के काम में आने वाले श्री यंत्र, गणेश, शिवलिंग, रुद्राक्ष के मुखदार दाने 1 से 14 मुखी व सभी प्रकार की मूर्तियाँ तथा रुद्राक्ष मालाऐं उचित रेट पर मिलती हैं।

मुफ्त मूल्य सूची के लिए स्वयं मिलें, फोन करें, पत्र व्यवहार करें अथवा हमारी वेबसाइट पर लागऑन करें।

ज्योतिषाचार्यों के लिए विशेष छूट, ज्योतिषी कृपया सम्पर्क करें।

पूरणमल शंकरलाल

हाउस नं. 150, ग्राउण्ड फ्लोर, हल्दिया हाऊस, जौहरी बाजार, जयपुर-302003

माल पार्सल या वी.पी.पी द्वारा भी भेजा जाता है।

(M) 09829019860 (Shankarlal Soni), (M) 09829069860 (Vikas Soni)
Phones- (O) 0141-2566750, 0141-4106750, (R) 0141-2296141
Email- Rashiratanbhagya@gmail.com
Website- www.rashiratanbhagya.com

"ज्योतिष रत्न"

(ज्योतिष पर आधारभूत पुस्तक)

इस पुस्तक में ज्योतिष और दर्शन शास्त्र का समन्वय कर इसे सत्य व रोचक बना दिया है। चूंकि दर्शनशास्त्र व ज्योतिष दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, अतः एक अच्छा ज्योर्तिविद् वही हो सकता है जिसे ज्योतिष के साथ-साथ दर्शनशास्त्र का भी ज्ञान हो, क्योंकि समस्त पराविद्याओं का सम्बन्ध दर्शनशास्त्र से है। यही कारण था कि हमारे ऋषि-मुनि त्रिकालदर्शी होने के साथ-साथ उच्चकोटि के दार्शनिक भी थे। इसके अलावा इस पुस्तक में खगोल गणित व फलित ज्योतिष का संक्षिप्त परिचय देते हुए षोड्षवर्ग सिद्धान्त की सरल व्याख्या की गई है तथा साथ में सभी ग्रहों का पौराणिक, वैज्ञानिक और सामान्य परिचय देते हुए भौतिक और अभौतिक स्तर पर उनके सम्पूर्ण कारकत्व की तार्किक विवेचना की गई है।

इस पुस्तक में फलादेश की ''सम्यक'' विधि की व्याख्या ठोस फलित सूत्रों के साथ की गई है तथा साथ ही इसमें एक संक्षिप्त ज्योतिष शब्द कोश व प्रश्नोत्तर माला भी दी गई है। मूल्य : 125/- रुपये + 60/-(डाक व्यय)

सुख-समृद्धि की राह : गृह-वास्तु

लेखिका- सुमन पंडित मूल्य : रुपये 125/- + 60/-

वास्तुशास्त्र मानवमात्र के अधिकतम शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण के लिए है। एक वास्तु सम्मत घर आपकी सभी कामनाओं और लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सकता है और आपको प्रदान कर सकता है :-

- सुख और समृद्धि
- उत्तम दाम्पत्य जीवन
- स्वास्थ्य और रोग से मुक्ति
- उत्तम शिक्षा और
- घर और व्यवसाय में सफलता
- एक बेहतर जीवन प्रणाली

इस पुस्तक में वास्तुशास्त्र के सिद्धांत एवम् व्यवहार दोनों पक्षों का आधुनिक संदर्भ में संश्लिष्ट रूप से विवेचन किया गगया है। भूखण्ड का चयन, भवन निर्माण प्रक्रिया, वास्तु नियोजन से लेकर आंतरिक साज-सज्जा तक प्रयोग में आने वाले वास्तु नियमों का इस पुस्तक में एक व्यवहारिक, क्रमबद्ध और सहज सुगम रूप से प्रस्तुत किया गया है। फ्लैट्स के चयन और आंतरिक साज-सज्जा द्वारा उनमें अधिकतम ऊर्जा के संचार के लिए सरल सटीक उपाय भी इस पुस्तक में दिए गये हैं जो आधुनिक संदर्भ में अत्यन्त प्रासंगिक हैं। वास्तुशास्त्र के विद्यार्थियों, विद्वानों और सुखसमृद्धि की कामना करने वाले सामान्य व्यक्तियों-सभी के लिए यह अत्यन्त उपयोगी और अनिवार्य पुस्तक है।

प्राप्ति स्थान:- **अग्रवाल बुक डिपो** 460, खारी बावली, दिल्ली - 110 006 ☎ 23943254

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय के नियम

1. 'श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय'—यह शताब्दी पुराना उत्तरभारत का एकमात्र ऐसा ज्योतिष कार्यालय है, जिसने असंख्य लोगों की जटिल से जटिलतर समस्याओं का फलितशास्त्रीय चमत्कृतिपूर्ण समाधान प्रस्तुत कर भारी अक्षुण्ण यश अर्जित किया है। हमारे यहां से चित्रापक्षीय निरयण गणनापद्धति द्वारा क्षेत्रीय (Zonal), जन्म समय, जन्म तारीख और जन्म स्थान के शुद्ध अक्षांश आदि के आधार पर अक्षांश, सूर्योदयास्त, अयनांश आदि में सभी अपेक्षित सूक्ष्म संस्कार देकर स्वनिर्मित अत्याधुनिक/कम्प्यूटरीकृत सारणियों द्वारा भारतीय/विदेशी जन्मपत्र, टेवा/दशा और निवास स्थानीय अक्षांश आदि से वर्षफल अतीव सूक्ष्मतापूर्वक बनाये जाते हैं, जिनमें स्वास्थ्य, सन्तान, स्त्री, धन-सम्पत्ति, भाग्योदय, कार्यक्षेत्र, प्रगति आदि का निर्णय किया जाता है। जन्मपत्रादि हिन्दी में सुन्दर व संक्षिप्त फलादेशसहित अत्यन्त सावधानी से बनाये जाते हैं।

नोट—प्रत्येक कार्य की पूरी फीस ऑर्डर के साथ ही भेजें। V.P.P. नहीं की जायेगी। बिना पेशगी के कोई भी कार्य नहीं किया जायेगा। डाकव्यय अलग से होगा।

(i)	भारतीय साधारण जन्मपत्र की फीस	Rs. 800/-
(ii)	भारतीय विस्तृत (बड़े) जन्मपत्र की फीस	Rs. 1500/-
(iii)	विदेशी जन्मपत्र की फीस	Rs. 1500/-
(iv)	भारतीय टेवा/दशा की फीस	Rs. 300/-
(v)	विदेशी दशा की फीस	Rs. 500/-
(vi)	भारतीय वर्षफल की फीस	Rs. 700/-
(vii)	विदेशी वर्षफल की फीस	Rs. 1100/-
(viii)	शुद्ध विवाहमुहूर्त्त/कुण्डली मिलान की फीस	Rs. 1100/-
(ix)	फोन पर मुहूर्त्त/मिलान की फीस	Rs. 2100/-
(x)	सर्वसाधारण प्रश्न की फीस	Rs. 1100/-

2. हमारे यहां मन्त्रादि साधनाकाल के विशेष समय में नवग्रहयन्त्र, महालक्ष्मी यन्त्र, सिद्धगोपाल यन्त्र आदि भी बनाये जाते हैं। जिनमें से कुछ का संक्षिप्त विवरण यह है—

(i) सिद्ध शनियन्त्र—इस यन्त्र को धारण करने से शनिजन्य अशुभ पीड़ा से मुक्ति मिलती है। फीस—Rs. 2100/-

(ii) श्रीलक्ष्मी यन्त्र—अष्टगन्ध आदि से विधिवत् शुभ वेला में बनाये इस यन्त्र को पूजास्थल या गल्ले में रखने से लक्ष्मीजी की अपार कृपा रहती है। फीस—Rs. 5100/-

(iii) अठाराहा नाशक यन्त्र—जिन औरतों के बच्चे अठाराहा, मसान दोष आदि के कारण मर जाते हैं, उनके संरक्षणार्थ यह यन्त्र वरदान रूप है। फीस—Rs. 2100/-

(iv) सिद्धगोपाल यन्त्र—इस यन्त्र को श्रद्धासहित स्त्री धारण करे तो चिरंजीवी पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है। फीस—Rs. 2100/-

व्यापारियों के लिए चांस (तेजी-मन्दी)

समय-समय पर हम रुई, बिनौला, सरसों, गुड़, खाण्ड, शेयर मार्कीट, सोना, चांदी आदि के चांस की लिखित Report देते हैं। वर्षों से अनेकों व्यापारी हमारे परामर्श से लाभ उठाते आ रहे हैं। एक जिन्स (चना, ग्वार आदि अनाज, तिल-तेल सरसों, बिनौला आदि तिलहन, रुई, गुड़, खाण्ड एवं शेयर मार्कीट तथा सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं) की लिखित Report की अडवांस फीस Rs. 5100/- प्रतिमास एवं वर्षभर की फीस Rs. 51000/- के हिसाब से चार्ज किये जाते हैं। विस्तृत विज्ञापन 'व्यापार- विमर्श' के अन्त में देखें।

नोट—Report के अतिरिक्त Phone पर प्रतिदिन बात करने की फीस अलग से होगी।

पत्रव्यवहार हेतु अपने साफ-साफ डाक पते के साथ फोन नं. एवं Pincode लिखना न भूलें।

—: पण्डित जी से मिलने हेतु :—

क्रमांक (Token) प्राप्ति का समय—7.30 से 10 A.M.

पण्डित जी से मिलने का समय—9 A.M. से

(दूर से आने वाले सज्जन टेलीफोन से पूज्य पण्डित जी से मिलने का दिन व समय निश्चित कर लें।)

गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

पत्र-व्यवहार के लिए पता—

पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,

सुपुत्र पं. इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय (नजदीक रेलवे स्टेशन),

मु.पो. कुराली, जिला मोहाली (पंजाब) पिन-140103,

फोन—0160-2641277, 09988407010

Website : www.shrimartand.com

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पृष्ठ संख्या 222
चिरस्थायी बहुमूल्य कागज़ पर मुद्रित

मुहूर्त्त गजानन

साईज़-'मार्त्तण्ड पंचांग' के बराबर

लेखकः— प्रियव्रत शर्मा,

(गर्भाधान, पुंसवन, नामकरण, मुण्डन, उपनयन एवम् विवाहादि मुहूर्त्तों के साधन का सरल भाषा/शैली में विस्तृत प्रतिपादन)

वशिष्ठादि संहिताओं, मुहूर्तमार्त्तण्ड, मुहूर्तचिन्तामणि आदि ग्रन्थो में दिया गया मुहूर्त्त का साधनप्रकार संस्कृत के विद्वान् दैवज्ञों को भी उलझाने वाला है। इस पुस्तक में सभी आवश्यक विभिन्न मुहूर्त्तों के ग्राह्य एवम् वर्ज्य काल आदि का विशद विवेचन किया गया है, जिसे पढ़कर कोई भी व्यक्ति पंचांग में दिए गए तिथ्यादि के अनुसार अभीष्टकाल में अभीष्ट मुहूर्त्त का शुद्धकाल एवम् लग्न जान सकता है। किस मुहूर्त्त में कौन–सा मास–तिथि–वार–नक्षत्र–योग ग्राह्य हैं, कौन–सा काल लग्नमुहूर्त्त के लिए शास्त्रोक्त है, मृताशौच, जननाशौच जैसी प्रतिकूल स्थिति आ पड़ने पर मंगलकृत्य का विधान कैसे हो–इत्यादि मुहूर्त्तसम्बन्धी अनेक उलझे प्रश्नों के सुस्पष्ट समाधान मुहूर्त्तशास्त्रोक्त प्रमाणों द्वारा सुलझाए गए हैं।

शुभकृत्य के मुहूर्त्त को दूषित करने वाले अधिकमास, भद्रा, गुरु–शुक्रास्त, मासान्त–संक्रान्ति, ग्रहणशूल, क्रान्तिसाम्य आदि सभी दोषों का विस्तृत विवरण तथा उनके सम्भव परिहार भी सप्रमाण दिए गए हैं।

देवप्रतिष्ठा, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, वधूप्रवेश, राज्याभिषेक, विपणि, यात्रा, पुनर्विवाह, मन्त्रदीक्षा, पशु आदि का क्रय–विक्रय आदि अनेकों आवश्यक कृत्यों के शुभमुहूर्त्त–ज्ञान का विस्तृत विवेचन शास्त्रीय प्रमाणवाक्यों–सहित किया गया है। सभी उद्धृत संस्कृत–प्रमाणवाक्यों को हिन्दी में सुस्पष्ट किया गया है।

भारतीय पंचांगों में दिए गए विवाहादि लग्न केवल भारत के लिए ही होते हैं। इन्हें भारत से अन्य देशों में प्रयोग में लाना अपराध है। इस पुस्तक में अनेक उदाहरणों द्वारा समझाया गया है कि– किसी अभीष्ट विदेशी नगर में प्रयोग में लाने के लिए इन विवाहादि लग्नों में कौन–कौन से संस्कार कैसे करने चाहिएं। विगत एक वर्ष का पूरा तिथ्यादि पंचांग भी दिया गया है। जिसकी मदद से विभिन्न मुहूर्त्तों के शुद्धकाल एवं लग्न के निर्णय–प्रकार अनेक उदाहरणों द्वारा बालबोध शैली में समझाए गए हैं।

मुहूर्त्तशास्त्रों में उपलब्ध जाति, धर्म, लिंग एवं प्रादेशिक परम्पराओं पर आधारित मतभेदों का पूर्वाग्रहमुक्त विश्लेषण किया गया है। अनेक शोधलेख, जो मुहूर्त्तसम्बन्धी अज्ञात रहस्य उद्घाटित करते हैं, इसमें आपको मिलेंगे।

यमघण्ट, क्रकच आदि कुयोग, सर्वार्थसिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर आदि सुयोग तथा गृहप्रवेश, गृहारम्भादि में अपेक्षित वृषवास्तु, भूशयन तथा कलशशुद्धि–ज्ञापक आदि बीसों मौलिक कोष्ठक दिए गए हैं।

भारत के प्रसिद्ध 200 नगरों में मेषादि लग्नों की प्रारम्भ–समाप्ति जानने के लिए दो कोष्ठक दिए गए हैं। जिनसे मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही किसी भी दिन इन नगरों में मुहूर्त्तकालिक लग्न का प्रारम्भ–समाप्तिकाल वस्तुतः 30 सेकण्ड में ही जाना जा सकता है।

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. नहीं की जाती।

मूल्य Rs. 500/– + डाकव्यय Rs. 50/–

ध्यान दें— हमारी पुस्तकों को बेचने का अधिकार केवल "अभिजित् प्रकाशन" कोठी नं. 59, सेक्टर–6, P.O. पंचकूला को ही है, अन्य किसी भी विक्रेता को इन्हें बेचने का अधिकार नहीं है।

पता— श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection